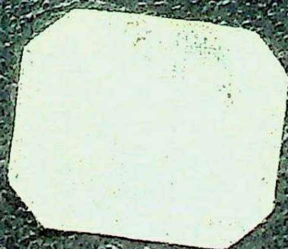
Hindi Prakashk Jan-Oct 1965 G.K.U.




STOCK VERIFICATION
Central
Library
2024-25 G.K.D.U. Hdr.

अखिल भारतीय हिंदी प्रकाशक
संघ का मुखपत्र



हिन्दी प्रकाशक

वर्ष ३ जनवरी, १९६५ अंक २

हमारे नवीनतम प्रकाशन

१. लाला लाजपतराय [जीवनी] : श्री रामनाथ 'सुमन'

हिन्दी में जीवनी कला को एक नया अर्थ और परिवेश देने वाले सुमन जी की क़लम का जादू । जो व्यक्ति ललकार कर कह सकता था—'मेरी जायदाद मेरी क़लम है' उसी भारतीय राष्ट्रीयता के सबसे बहुरंगे व्यक्तित्व का सर्वांगीण चित्र । मोनो मुद्रण । सचित्र, सजिल्द मूल्य : साढ़े पाँच रुपये ।

२. नवजीवन [उपन्यास] : श्री रामचन्द्र तिवारी

भारतीय खाद्य समस्या और भूख से मरते मानव की पुकार का समाधान करने वाला एक नवीन दिशा-दर्शन । उपन्यास-साहित्य में वैज्ञानिक चिन्तन का प्रवेश । हृदयग्राही भाषा में धरती की संवेदनाएँ । मोनो की सुंदर छपाई । सजिल्द । मूल्य : चार रुपये ।

३. डूबते मस्तूल [उपन्यास] : श्री नरेश मेहता

हिन्दी का यह पहला उपन्यास है जिसमें एक आधुनिक सुन्दरी रमणी के विपथगा-रूप को प्रस्तुत किया गया है । आधुनिक नारी का प्रतीक बनकर रंजना आयी । जिसकी महत्वाकांक्षाएँ किसी भी क्लियोपेट्रा से कम नहीं थीं — वही रंजना अपने संशोधितरूप में पुनः अपनी रूप-यात्रा पर निकली है । आपके आकाश में भी उसके मस्तूल दिखेंगे । इस उपन्यास को पढ़ना आधुनिक पाठक बनना है । सुन्दर छपाई । मन हरने वाला आवरण । सजिल्द । मूल्य : चार रुपये ।

४. एक और कहानी [कहानी संग्रह] : डा० लक्ष्मीनारायण लाल

ग्रामीण सामाजिकता के यथार्थतम और अछूते धरातल से मानवीय संवेदनाओं को कृतित्व का रूप देने वाले अत्यन्त समर्थ और सहज कथाकार की नवीन कृति । हमारी धरती का रस लेखक की कलम से टपकता है । नये हिन्दी कथा-साहित्य की एक और जय-यात्रा । आकर्षक कवर । सजिल्द मूल्य : चार रुपये ।

५. लहू पुकारेगा [कहानी संग्रह] : संपादक : गिरिराज किशोर

चीनी आक्रमण की पृष्ठभूमि पर भारतीय साहित्यकार के यौवन का उद्घोष, जिसमें केवल सामयिक प्रतिक्रिया नहीं, हमारे प्राणों का रस है । ग्यारह कहानियाँ आग के अक्षरों में लिखी हुई । तिरंगा आवरण । जिल्द सहित । मूल्य : तीन रुपये ।

६. मोतीलाल नेहरू [जीवनी] : श्री रमेश जोशी

भारतीय स्वाधीनता-संग्राम के महान नेता मोतीलालजी की श्रेष्ठ जीवनी । सचित्र । मूल्य : दो रुपये ।

साधना सदन, लूकरगंज, इलाहाबाद-१



अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष ३, अंक २ | जनवरी, १९६५ | मूल्य, वार्षिक ३.००

रोग और उसका इलाज

अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ द्वारा आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी के साथ हुई गोष्ठी में पाठकों के प्रवक्ता ने शिकायत की है कि बाज़ार में मनोनुकूल पुस्तकें प्राप्त नहीं होतीं। नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित संगोष्ठी में श्री कृष्णचन्द्र बेरी ने जो निबंध पढ़ा है उसके अनुसार उत्तर देने वाले ९० प्रतिशत पाठकों ने कहा है कि हिन्दी पुस्तकें बड़े-बड़े शहरों में भी नहीं मिलतीं। राजस्थान से आये हुए एक शुभाकांक्षी ने बताया है कि पुस्तकें तो वहाँ के बाजारों में भरी पड़ी हैं परंतु प्रसाद, पंत, निराला, प्रेमचंद, महादेवी, नगेन्द्र, हजारीप्रसाद, नंददुलारे और मैथिलीशरण आदि की कृतियाँ ग़ायब हैं। इसी तरह ऊँचे स्तर का वह साहित्य भी नहीं मिलता जो अध्यवसाय के साथ प्रस्तुत हुआ है। वहाँ के पुस्तक विक्रेता बन्धु शब्दकोश की माँग पर हल्का-फुल्का उपन्यास सप्लाई करते हैं और क्रेता उसे स्वीकार भी कर लेते हैं।

पुस्तकों की बिक्री ही जहाँ स्वल्पतम परिमाण में होती है वहाँ ऊँचे स्तर वाले साहित्य के लिए यह स्थिति और भी घातक है। सवाल यह है कि दोष को दूर करने के लिए उपाय क्या किया जाय ?

स्पष्ट है कि पुस्तक को जीवन की अनिवार्य आवश्यकता का स्थान नहीं मिला। उसकी जो थोड़ी-बहुत माँग होती है उसके साथ-साथ अधिक कमीशन भी माँगा जाता है। प्रकाशक उत्तम साहित्य के साथ मोटा कमीशन नहीं दे सकता। उधार की माँग पर उसे विक्रेता की आर्थिक-स्थिति और व्यापारिक निष्ठा पर भी विचार करना पड़ता है। विक्रेता अधिक कमीशन की माँग के साथ अपने बढ़े हुए खर्चे को भी देखकर समस्या का समाधान इस रूप में करता है कि मोटे कमीशन पर उधार मिलने वाला जैसा-तैसा माल जमा कर लेता है और उसी से ग्राहकों को संतुष्ट करने की चेष्टा करता है। दूसरों के उपयोग के लिए पुस्तकें खरीदने वाले भागे भूत की लंगोटी भली के अनुसार संतुष्ट हो भी जाते हैं। अपने लिए आवश्यकतानुसार पुस्तक ढूंढने वाले निराश होते हैं और शिकायत करते हैं।

भारत के प्रत्येक प्रमुख केन्द्र में यदि एक भी ऐसा पुस्तक-भंडार हो जहाँ सर्वोत्तम साहित्य उपलब्ध हो सके तथा क्रेतागण अधिक कमीशन के निरर्थक लोभ को संयत कर लें तो इस समस्या का कुछ समाधान हो सकता है। स्थानीय विक्रेता उस भंडार से आवश्यकतानुसार प्रकाशकीय कमीशन पर और थोड़ी पूंजी लगाकर अच्छा साहित्य ले सकता है और ग्राहकों को संतोष दे सकता है। पुस्तक व्यवसाय जब बड़ी पूंजी को आकर्षित नहीं कर पाता तब ऐसे भंडारों की व्यवस्था ही एकमात्र उपाय प्रतीत होती है। प्रकाशक संघ इस दिशा में प्रयत्नशील है। सरकार उसके प्रयास में सहायता दे तो उसे सफलता जल्दी मिल सकती है। प्रकाशक बन्धु आपस में मिल कर सहयोगी आधार पर भी आगे बढ़ सकते हैं और निजी रूप में भी ऐसे भंडार खोले जा सकते हैं।

आशा है कि प्रकाशक बन्धु इस स्थिति पर विचार करेंगे और इसी सीज़न में ऐसे दो-चार भंडार अवश्य सामने आ जायेंगे।

जूनियर बेसिक स्कूलों के लिए पुस्तकें आमन्त्रित

उत्तरप्रदेश में चालू वित्तीय वर्ष में स्थानीय निकायों द्वारा खरीदे जाने के लिए शिक्षा विभाग द्वारा जूनियर बेसिक स्कूलों की कक्षा १ से ५ तक के बालक-बालिकाओं की आवश्यकताओं के अनुरूप हिन्दी और उर्दू की पुस्तकों का चयन किया जायगा। इसके लिए जो प्रकाशक अपनी पुस्तकें विचारार्थ भेजना चाहें, वे प्रत्येक की आठ मुद्रित प्रतियाँ निःशुल्क रूप से ३० जनवरी, १९६५ तक कार्यालय में पाठ्य-पुस्तक अधिकारी, उत्तरप्रदेश, ६ माल एवेन्यू, लखनऊ को भेज दें। विचारार्थ भेजी जाने वाली पुस्तकें ऐसी होनी चाहिए जो विषय, भाषा, छपाई, टाइप और चित्रों की दृष्टि से कक्षा १ से ५ तक के बच्चों के लिए उपयोगी और प्रेरणाप्रद हों।

राजस्थान में नवसाक्षर-प्रतियोगिता

शिक्षा-विभाग द्वारा नियमों की घोषणा

राजस्थान के शिक्षा विभाग ने नवसाक्षर-साहित्य की ७वीं प्रतियोगिता के नियम प्रकाशित किये हैं। प्रतियोगिता में ५०० रु० का एक प्रथम और ३०० रु०का एक द्वितीय पुरस्कार दिया जायगा। इसके अतिरिक्त ७०० रु० की राशि निम्नतम मानदण्ड तक पहुँचने वाली कृतियों पर वितरित होगी। पुस्तकें सरल भाषा-शैली वाली तथा आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से सहायक हों, उनसे ग्रामीण जीवन को स्वस्थ और सुखी समुदाय की ओर बढ़ाने की प्रेरणा मिलती हो।

छपी पुस्तकें १६ प्वाइंट में फुलस्केप ८ या क्राउन ८ के १०० या १५० पृष्ठों की समुचित रूप में सचित्र हों। उनकी चार-चार प्रतियाँ १५ फरवरी, १९६५ तक सह-संचालक, समाजशिक्षा, बीकानेर को भेजी जायें। पुरस्कृत पुस्तकों की अच्छी संख्या खरीदी भी जा सकती है। पाण्डुलिपियों पर भी विचार किया जायगा।

ज्ञान-अर्जन के सुगम साधन

सम्मेलन द्वारा प्रकाशित कोश

१. **समाचार पत्र शब्द-कोश** — रु० १-७५

सम्पादक

डा. सत्यप्रकाश

२. **शासन शब्द-कोश**

प्रधान सम्पादक

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन (अप्राप्य)

३. **प्रत्यक्ष शारीर कोश** — रु० ८-००

सम्पादक

श्री एस. सी. सेनगुप्त

४. **जीव-रसायन कोश** — रु० ६-००

सम्पादक

डा. ब्रजकिशोर मालवीय

५. **भूतत्व विज्ञान कोश** — रु० २-५०

सम्पादक

श्री एस.सी. सेनगुप्त

६. **चिकित्सा विज्ञान कोश** — रु० ७-५०

सम्पादक

श्री एस. सी. सेनगुप्त

७. **मानक हिन्दी कोश तीन खंड** — रु० २५-००

पांचों खण्डों में पूरा प्रकाशित — प्रत्येक खण्ड

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

श्री दिनकर कृत पुस्तकों की सम्पूर्ण सूची

पद्य

१.	उर्वशी	६.००
२.	परशुराम की प्रतीक्षा	३.००
३.	चक्रवाल	१०.००
४.	सीपी और शंख	२.५०
५.	नये सुभाषित	१.५०
६.	नील कुसुम	३.००
७.	कुरुक्षेत्र	३.५०
८.	रश्मिरथी संपूर्ण	५.००
९.	रश्मिरथी संक्षिप्त पाठ्य पु०	१.५०
१०.	रेणुका	३.००
११.	रसवन्ती	२.५०
१२.	हुंकार	२.५०
१३.	द्वन्द्व गीत	१.५०
१४.	बापू	१.५०
१५.	दिल्ली	०.६२
१६.	इतिहास के आँसू	३.००
१७.	सामधेनी	२.५०

गद्य

१.	संस्कृति के चार अध्याय	१५.००
२.	मिट्टी की ओर	४.००
३.	काव्य की भूमिका	४.००
४.	पंत प्रसाद मैथिलीशरण	४.००
५.	अर्ध नारीश्वर	५.००
६.	वट पीपल	३.००
७.	उजली आग	३.००
८.	देश-विदेश	२.००
९.	रेती के फूल	२.००
१०.	वेणुवन	३.००
११.	हमारी सांस्कृतिक एकता	३.००
१२.	राष्ट्रभाषा राष्ट्रीय एकता	३.००

बाल साहित्य

१८.	धूप छाँह	१.५०
१९.	मिर्च का मजा	१.००
२०.	सूरज का ब्याह	१.००
१३.	चितौर का साका	१.५०
१४.	भारत की सांस्कृतिक कहानी	१.००

नवीन प्रकाशन

१.	आत्मा की आँखें	४.००
२.	कोयल और कवित्व	३.५०
३.	मृति तिलक	२.००
४.	दिनकर की सूक्तियाँ	२.५०

नवीन संस्करण

१. रश्मिरथी संपूर्ण

२. उर्वशी

पूरे सेट की कीमत रु० १२८.३७

मिलने का पता :

उदयाचल

१४ राजेन्द नगर मार्केट, पटना-४

पूज्य दद्दा : श्रद्धा-तर्पण

डॉ० नगेन्द्र

राष्ट्रकवि श्रद्धेय मैथिलीशरणजी गुप्त के गोलोकवास से एक युग समाप्त हो गया ! दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष आचार्य डा० नगेन्द्र की इन वाष्परुद्ध पंक्तियों में यही बात इस प्रकार कही गई है कि अखिल वैविध्य से परिपूर्ण एक महाद्वीप ही अनन्त शून्य में विलीन हो गया।

राष्ट्रकवि को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके निर्वाण की यह ऐतिहासिक विवरणी यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।—सं०

पूज्य दद्दा—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त—के स्नेह के अन्तिम सार्वजनिक वरदान का सौभाग्य जिसे मिला, उनके वियोग के प्रथम सार्वजनिक अभिशाप का दुर्भाग्य भी उसे ही भोगना चाहिए। प्रकृति के इस सहज न्याय की प्रेरणा से ही मानो चिरंजीव श्रीकण्ठ (दद्दा के पौत्र) ने दद्दा के देहत्याग के तुरन्त बाद ही दिल्ली में मेरे नम्बर पर टेलीफोन मिलाया। लगभग ३। बजे फोन मिला और मेरी माता ने जो पास के कमरे में ही सोती हैं, फोन उठाया। ट्रंक काल को सुनने में और उत्तर देने में उन्हें कुछ कठिनाई हो रही थी, अतः उनकी आवाज़ सुनकर मेरी छोटी लड़की प्रतिमा नीचे आई। इस बीच में मेरी नींद भी टूट चुकी थी और मेरे पूछने पर कि किसका फोन है, उसने बताया कि चिरगाँव से फोन आया है और आपको ही फोन पर बुलाते हैं। बात आधी से अधिक मेरी समझ में आ गई और मैं दौड़कर फोन पर आया। कण्ठजी ने भर्राई और ऊँची आवाज़ में कहा : 'डाक्टर साहब, दद्दा गत हो गये।' मैं इतने के लिए शायद तैयार न था क्योंकि शुक्रवार की सुबह को ही तो मैंने दद्दा को लिखा था—'६ दिसम्बर की रात को आपके जाने के बाद मन में यह शंका होने लगी थी कि कहीं आपकी तबियत खराब न हो जाए। आपके पत्र की प्रतीक्षा है, किन्तु यह समझकर संतोष कर लिया है कि 'नो न्यूज़ इज़ गुड न्यूज़'—अर्थात् समाचार का न आना भी अपने आपमें शुभ समाचार है।

'नो न्यूज़' तो 'गुड न्यूज़' अवश्य थी, पर स्थिति एक-साथ उलट गई। चि० कण्ठ ने बताया कि दद्दा ७ दिसम्बर को प्रातःकाल पूर्णतः स्वस्थ चिरगाँव पहुँचे थे और ७ से ११ तक खूब खुश रहे। ११ की रात को १०। बजे के लगभग उनको घबराहट हुई; तुरन्त ही डाक्टरों को बुलाया गया—दद्दा के अनुभवी चिकित्सक डा० बकरू भी आये : सभी सम्भव साधन एकत्र किये गये, पर दद्दा को नहीं बचाया जा सका और ११ तथा १२ दिसम्बर की मध्य रात्रि को १-२२ पर राम का वह अनन्य उद्गाता राम में लीन हो गया :

प्राप्त किया सत्य-शिव-सुन्दर-सा पूर्ण लक्ष,
इष्ट हम सबको इसी का आनुगत्य है।
सत्य है स्वयं ही शिव, राम सत्य-सुन्दर है,
सत्य काम सत्य और राम नाम सत्य है।

ब्राह्म मुहूर्त हो चुका था—लगभग ४ बजे आकाशवाणी के समाचार-कक्ष को फोन किया और कार्यवाहक सम्पादक को कवि से सम्बद्ध कतिपय तथ्यों के साथ इस राष्ट्रीय दुर्घटना की सूचना दी। कवि नरेन्द्र शर्मा से उसी समय सम्पर्क स्थापित करने का प्रयत्न किया, किन्तु संभव न हुआ। प्रातःकाल होते ही उनको दुःसंवाद दिया गया और उन्होंने पूछताछ कर निश्चय कर लिया, समाचार-प्रसारण की व्यवस्था हो गई है। सबसे पहले ६-४० के

अँगरेज़ी बुलेटिन ने सूचना दी और फिर हिन्दी में समाचार सुना—'राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त अब हमारे बीच नहीं रहे।'

कण्ठ कण्ठ गा उठा,
शून्य शून्य छा उठा-
सत्य काम सत्य है,
राम नाम सत्य है।

—(साकेत, १२२)

तीन-चार वर्ष पूर्व जब निराला का देहान्त हुआ था तो सबके मुंह से सहसा निकला कि हिन्दी का गौरव-शृंग ढह गया। आज ऐसा लगता है जैसे जीवन के अखिल वैविध्य से परिपूर्ण एक महाद्वीप ही अनन्त शून्य में विलीन हो गया—या मानो असंख्य प्रकाशपुंजों से जगमग आकाशगंगा ही अंधकार में समा गई।

कवि पंत के शब्दों में थोड़ा-सा परिवर्तन कर मेरी वाष्परुद्ध वाणी इस समय केवल इतना ही कहने में समर्थ है :

'सूर सूर, तुलसी शशि' लगता मिथ्यारोपण।
स्वर्गंगा तारापथ में करें आपके भ्रमण।
अंजलि क्या दूँ आज आप चिर मैथिलीशरण।
युग युग तक यह देश करेगा श्रद्धातर्पण।

दै० 'हिन्दुस्तान' से साभार

भूल सुधार

दिसंबर अंक के पृष्ठ २० पर उमेश प्रकाशन के विज्ञापन में भूल से **मनोहर के अन्य उपन्यास** छप गया है। वास्तव में **मनहर के अन्य उपन्यास** होना चाहिये था। भूल के लिए हमें खेद है। —सं०

साधना सदन के लोकप्रिय प्रकाशन

- **जीवन यज्ञ**
  श्रीरामनाथ 'सुमन' मूल्य २.००
- **चारुमित्रा**
  डा० रामकुमार वर्मा मूल्य ३.००
- **कन्या**
  श्रीरामनाथ 'सुमन' मूल्य १.५०
- **नवजीवन (उपन्यास)**
  रामचन्द्र तिवारी मूल्य ४.००
- **लाला लाजपतराय**
  श्रीरामनाथ 'सुमन' मूल्य ५.५०
- **प्राचीन कवियों की काव्य साधना**
  राजेन्द्र सिंह गौड़ मूल्य ५.००
- **नारी : गृहलक्ष्मी और कल्याणी**
  श्रीरामनाथ 'सुमन' मूल्य २.५०
- **स्त्रियों की समस्यायें**
  श्रीरामनाथ 'सुमन' मूल्य १.५०
- **गांधीवाद की रूपरेखा**
  श्रीरामनाथ 'सुमन' मूल्य २.५०
- **एशिया के दुर्गम भूखंडों में**
  राहुल सांकृत्यायन मूल्य ५.००
- **मोतीलाल नेहरू**
  रमेश जोशी मूल्य २.००
- **एक और कहानी**
  डा० लक्ष्मीनारायण लाल मूल्य ४.००
- **भाई के पत्र**
  श्रीरामनाथ 'सुमन' मूल्य ४.५०
- **निबंध कला**
  राजेन्द्र सिंह गौड़ मूल्य ३.५०
- **घर की रानी**
  श्रीरामनाथ 'सुमन' मूल्य २.००
- **निबन्धिनी**
  गंगाप्रसाद पांडेय मूल्य ३.५०
- **महामना मालवीय**
  ब्रजमोहन व्यास मूल्य ५.००
- **हमारे नेता**
  श्रीरामनाथ 'सुमन' मूल्य ३.००
- **नारी जीवन : कुछ समस्यायें**
  श्रीरामनाथ 'सुमन' मूल्य १.५०
- **योग के चमत्कार**
  श्रीरामनाथ 'सुमन' मूल्य २.००
- **हमारे राष्ट्र निर्माता**
  श्रीरामनाथ 'सुमन' मूल्य ५.००
- **विश्व की समस्याएँ**
  डा०विमलचन्द्र पाण्डेय मूल्य ८.००
- **लहू पुकारेगा**
  गिरिराज किशोर मूल्य ३.००
- **डूबते मस्तूल (उपन्यास)**
  श्रीनरेश मेहता मूल्य ४.००

साधना सदन

लूकरगंज, इलाहाबाद-१

किताबें न पढ़ते हों तो इसे पढ़िए !

'श्री वररुचि'

किताबें न पढ़ने वाले महानुभाव विनोदी श्री वररुचि के इस लेख को पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया हमें भेजेंगे तो हम उनके कृतज्ञ होंगे ।—सं०

पिछले दिनों राजधानी में एक पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया । इसमें पुस्तकों की छपाई, संख्या, साक्षरता के तुलनात्मक आंकड़े वगैरह कई चीजों का पता चला । लेकिन एक बात मालूम नहीं हो सकी और वह यह कि लोगों की रुचि कैसी पुस्तकें पढ़ने में है ।

मिसाल के तौर पर आजकल यूरोपीय देशों में लोग किस्से-कहानियाँ कम पढ़ते हैं। जीवनियाँ, यात्रा-वर्णन, संस्मरण अधिक । इसकी वजह क्या है ? सबसे बड़ा कारण टेलिविज़न बताया गया है । टेलिविज़न पर फिल्में और नाटक देखकर वे कहानी और उपन्यास पर समय नष्ट नहीं करना चाहते । जो चीजें उन्हें कहीं नहीं मिलतीं वे पुस्तकों में खोजते हैं ।

हमारे यहाँ टेलिविज़न 'नहीं' है । हैं तो घटिया फिल्में, अर्ध विकसित कथा-साहित्य, और रेडियो जिसमें हैं पुराने ढर्रे के नाटक, मशीनी सुर और घिसी-पिटी आवाज़ें । जाहिर है कि जनता के 'टेस्ट' को खराब किया जा रहा है। इसलिए यह बड़ा ज़रूरी है कि हम लोगों की रुचि न सिर्फ परखें ही, बल्कि उसका निर्माण भी करें ।

लेकिन, लोग क्या पसन्द करते हैं इसका पता लगाना आसान काम नहीं । किसी व्यक्ति से पूछ देखिये कि आपको क्या पढ़ना पसन्द है, तो वह दो-चार प्रसिद्ध लेखकों के नाम और दो-चार भारी-भरकम किताबों के नाम गिना देगा । वह उस पुस्तक का नाम नहीं बतायगा जिसे उसने अपने दफ्तर की दराज में रखा है और गाहे-बगाहे चोरी-छिपे पढ़ता है, या ऐसी रचनाओं की बात नहीं करेगा जो उसे पसन्द तो हैं, लेकिन जिन्हें अपनी इज्जत बनाये रखने के लिए नहीं बतायेगा । महापुरुषों की बात और है।

अब पता चला है कि नेहरूजी के निजी पुस्तकालय में गम्भीर विषयों के अतिरिक्त हास्य रस की पुस्तकें भी थीं । विश्व के विख्यात वैचारिक बर्टेंड रसल यह स्वीकार कर चुके हैं कि वे जासूसी नावल बड़े शौक से पढ़ते हैं । प्रसिद्ध लेखक सामर्सेट माम भी यह कह चुके हैं । इससे एक बात यह सामने आती है कि ज्यों-ज्यों इन्सान उम्र में बड़ा होता चला जाता है, वह मनोरंजन की ओर भागता है ।

मगर हमारे यहाँ के जासूसी उपन्यासों और अमरीकी तथा यूरोपीय जासूसी कहानियों में आज भी अन्तर इतना है जितना जासूस और हत्यारे में होता है । हमारे यहाँ आज भी अधिकांश जो जासूसी नावल छपते हैं, उनमें हर तीसरे पृष्ठ पर एक कत्ल होता है। हर अध्याय के अन्त में कुछ ऐसा लिखा होगा—'आखिर वह लाश किस की थी ? यह जानने के लिए अगला अध्याय अवश्य पढ़िये ।'

कोई कैसी पुस्तकें पढ़ता है, यह जान कर आप उसके चरित्र को आँक सकते हैं, यह बिल्कुल सच है । लेकिन, किसी के हाथ में जो पुस्तक है, उसे देखकर आप उस व्यक्ति के बारे में कोई फैसला भी नहीं कर सकते । इसका कारण यह है कि अब तो लोग ख्वाहमखाह का रौब जताने के लिए भारी-भरकम किताबें उठाये फिरते हैं। उन आलोचकों की हालत तो और भी खस्ता है जिन्हें पुस्तकें पढ़ने की फुरसत नहीं मिलती । दो-चार पहले अध्याय, दो बीच के और दस-बीस अंत के पृष्ठ पढ़कर जो दूसरों की छीछालेदर शुरू कर देते हैं, ऐसे लोगों के हाथों में हमेशा कोई न कोई मोटी किताब आपको नज़र आ जायगी । आप पूछ बैठे 'क्यों साहब कैसी है यह पुस्तक ?'

'सुबह हाथ लगी थी, बस शाम तक खत्म कर डाली। विषय तो सुन्दर है । लेकिन लेखक न्याय नहीं कर सका।'

और आप हैरान होंगे कि छह सौ पृष्ठों की पुस्तक इसने सुबह से शाम तक कैसे समाप्त कर डाली ? इस रहस्य का उद्घाटन हम कर ही चुके हैं ।

अगर किसी के हाथ में एक विषय-विशेष की पुस्तक

देखकर आप उसकी रुचि का पता नहीं लगा सकते तो यह भी ठीक है कि किसी के घर में रखी किताबों से भी नहीं। वह यों कि बड़े घर के ड्राइंग रूम में जो पुस्तकें रखी जाती हैं वह शायद ही कभी पढ़ी जाती हों। पढ़ने के लिए होतीं भी नहीं। उनका चयन तो उनके आकार और रंग-रूप को देखकर किया जाता है। यह जरूरी है कि पुस्तकों के कवर का वही रंग हो जो ड्राइंग रूम की दीवारों का है।

हमारे देश में पढ़ने वाले न हों, ऐसी बात नहीं। यहाँ तो एक आदमी दूसरे से, दूसरा तीसरे से, तीसरा चौथे से माँगकर पढ़ता है। लोग 'किस्सा तोता मैना' आज भी शौक से पढ़ते हैं, फिल्मी ड्रामे पढ़ते हैं, बल्कि फिल्मी गाने तक पढ़ते हैं। और तो और लोग दूसरों के खत तक खोलकर पढ़ते हैं। अजी यहाँ तो दूसरों के मन की बात तक पढ़ने का दावा करते हैं। नहीं पढ़ते, कुछ नहीं पढ़ते तो हमारे छात्र नहीं पढ़ते।

आजकल हमारा सारा ज़ोर विज्ञान पर है। राजनीतिक नेता दिन-रात रट लगाये हुए हैं विज्ञान की प्रगति करो, दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर चलो। खुद यह लोग क्या पढ़ते हैं? जो कुछ इन्होंने स्कूलों में पढ़ा था, उसे छोड़कर जिन्दगी में क्या पढ़ा? लेकिन पढ़ते हैं, बहुत पढ़ते हैं—अखबारों में छपे अपने भाषण।

बचपन में पढ़ने की बात हुई तो हमें एक घटना याद आ गयी। एक लेखक पर मुकदमा चला। आरोप यह था कि उसने अपने एक लेख में महाभारत का मज़ाक उड़ाया था। सरकारी पक्ष की ओर से एक लीडर को बतौर गवाह पेश किया गया। यह नेताजी अखबारों में खूब लेख-वेख लिखते थे। गवाह के कटघरे में जिरह के दौरान बचाव पक्ष के वकील ने पूछा—"आपके विचार में इस लेखक ने महाभारत का मज़ाक उड़ाया है?"

'जी हाँ।'

'आपने महाभारत पढ़ा है?'

'जी, पढ़ने की तो बात क्या, किया भी है।'

'अच्छा बताइये नकुल कौन था?' वकील ने पूछा।

'जी, नकुल?' नेताजी की सिट्टी-पिट्टी गुम, 'जी रामायण मैंने बचपन में पढ़ी थी।'

'नवभारत टाइम्स' से साभार

संग्रह करने योग्य कुछ पुस्तकें

कोश

वृहत् हिन्दी कोश	कालिकाप्रसाद आदि	३०.००
ज्ञान शब्द कोश	मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव	१५.००
पारिभाषिक शब्द कोश (समाप्त)		४.००
हिन्दी-साहित्य कोश भाग २	डा० धीरेन्द्र वर्मा आदि	४५.००
वृहत् अंग्रेजी हिन्दी कोश	डा० हरदेव बाहरी	३०.००
वाङ्यार्णव	महामहोपाध्याय पाण्डेय रामावतार शर्मा	प्रेस में
भाषा विज्ञान कोश	डा० भोलानाथ तिवारी	२५.००

राजनीतिक पुस्तकें

भारतीय राजनीति :

विक्टोरिया से नेहरू तक	रामगोपाल एम० ए०	११.००
अन्तर्राष्ट्रीय विधान	डा० सम्पूर्णानन्द	११.००
चीन—कल और आज	के० एम० पणिक्कर	५.००
राजनीतिशास्त्र	प्राणनाथ विद्यालंकार	४.५०

धर्म और दर्शन

सूफीमत-साधना और साहित्य	रामपूजन तिवारी	११.००
विश्व के धर्म-प्रवर्त्तक	रघुनाथ सिंह एम० पी०	६.५०
चिद्विलास	डा० सम्पूर्णानन्द	५.००
दर्शन का प्रयोजन	डा० भगवानदास	३.५०
नीतिशास्त्र	सुश्री शान्ति जोशी	८.००

पालि ग्रन्थ

पालि व्याकरण	भिक्षु धर्मरक्षित	२.५०
महापरिनिब्बान सुत्तं	,, ,,	३.५०

पत्रकारिता

पत्र और पत्रकार	पण्डित कमलापति त्रिपाठी	६.५०
भारतीय पत्रकार कला	रौलैण्ड ई० वूलसले	६.५०
समाचार पत्रों का इतिहास	पं० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी	६.५०
आधुनिक पत्रकार कला	रा० र० खाडिलकर	४.००

मनोविज्ञान

शिक्षा मनोविज्ञान	हंसराज भाटिया	५.००
सामान्य मनोविज्ञान	,, ,,	१०.००

भ्रमण

आर्याना	रघुनाथ सिंह, एम० पी०	३.००
बदलते रूस में	रा० र० खाडिलकर	३.५०
दक्षिण पूर्व एशिया	रघुनाथ सिंह, एम० पी०	७.५०
आस्ट्रेलिया	रघुनाथ सिंह, एम० पी०	४.००
कुमाऊँ	राहुल सांकृत्यायन	१५.००

इतिहास

भारतवर्ष का इतिहास	एक इतिहास प्रेमी (भाई परमानन्द), परिवर्द्धित चौथा संस्करण	८.००
पश्चिमी यूरोप (प्र०भाग)	अनु० छबिनाथ पाण्डेय	५.००
गांधी हत्याकाण्ड	विहंगम	५.००
अशोक के अभिलेख	डा० राजबली पाण्डेय	प्रेस में

संस्मरण

जेल के वे दिन	विजयालक्ष्मी पण्डित	२.५०
कुछ स्मरणीय मुकदमे	डा० कैलाशनाथ काटजू	८.००
मेरे बचपन की कहानी	श्रीमती नयनतारा सहगल	६.००
महात्माजी और महाराज	विपिनचन्द्र झवेरी	१.५०
कुछ स्मृतियाँ और कुछ स्फुट विचार	डा० सम्पूर्णानन्द	६.००

साहित्य

वक्रोक्ति और अभिव्यंजना	रामनरेश वर्मा, एम० ए०	४.५०
गीतिकाव्य	प्रो० रामखेलावन पाण्डेय	६.५०
तुलसीदास और उनका युग	डा० राजपति दीक्षित	८.००
धरातल	शान्तिप्रिय द्विवेदी	२.७५
कल्पलता	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	३.००
काव्यप्रकाश (मम्मटकृत)	आचार्य विश्वेश्वर	१६.००
ध्वन्यालोक (श्री मदानन्दवर्द्धनाचार्य)	आचार्य विश्वेश्वर	१२.००
सामयिकी	शान्तिप्रिय द्विवेदी	६.००
विनय पत्रिका	देवनारायण द्विवेदी	६.००

कथा-साहित्य

उलूकतन्त्र	बलदेव प्रसाद मिश्र	२.००
शव साधन	बलदेव प्रसाद मिश्र	२.५०
तूफान	सर्वश्रेष्ठ कहानी लेखकों की कहानियों का संग्रह	२.५०

उपन्यास

पुनर्जीवन	महात्मा टालस्टाय	६.५०
कर्त्तव्याघात	देवनारायण द्विवेदी	४.५०
प्रणय	,, ,,	५.००
नूतन ब्रह्मचारी	स्वर्गीय पं० बालकृष्ण भट्ट	०.६३
देशभक्त और देशद्रोही		२.५०
बयालीस	प्रतापनारायण श्रीवास्तव	४.५०
गेंजी की कहानी	मुरासाकी शिकाबू	४.५०

आदर्श जीवन चरित्र

सरदार पृथ्वी सिंह	राहुल सांकृत्यायन	४.००
महर्षि कर्वे	प्रभाकर सदाशिव पण्डित	२.२५

विज्ञान

विज्ञान की प्रगति	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	३.५०
विज्ञान के चमत्कार	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	३.००
परमाणु शक्ति	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	३.००
घरेलू बिजली	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	४.००

विविध

नारीत्व	मारगरेट मूर व्हाइट	३.५०
खाद का उपयोग	दुर्गाप्रसाद सिंह	१.५०
जियो जागो	यूस्टेस चेस्टर	४.००
पुस्तक प्रकाशन	सर स्टेनले अनविन	६.००
तैरने की कला	कालिदास माणिक	०.७५

प्राप्तिस्थान :— **ज्ञानमण्डल लिमिटेड**
कबीरचौरा, वाराणसी

हिन्दी पुस्तकों की वाचनाभिरुचि का सर्वेक्षण

—श्री कृष्णचन्द्र बेरी
संचालक, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी.

नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित संगोष्ठी में प्रस्तुत यह उपयोगी निबन्ध इस आशा के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है कि इसके निष्कर्षों से लाभ उठाया जायगा जिससे वाचनाभिरुचि में विकास होगा।—सं०

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के १९६३ के आठवें अधिवेशन में संघ की साधारण सभा ने यह निश्चय किया कि राष्ट्रभाषा हिन्दी की पुस्तकों का देश में समुचित प्रचार-प्रसार हो। इसलिए आवश्यक समझा गया कि हिन्दी-पुस्तकों की बिक्री का मार्केट रिसर्च किया जाय। इसी अधिवेशन में संघ ने एक प्रस्ताव पास कर उपर्युक्त लेखक को यह निर्देश दिया कि वह संघ की ओर से हिन्दी-पुस्तकों की बिक्री का मार्केट रिसर्च करें और इसकी रिपोर्ट संघ की साधारण सभा को दें।

संघ के इस प्रस्ताव के अनुसार इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए तीन विभिन्न पहलुओं पर कार्य करने का निर्णय किया गया :

१. हिन्दी पाठकों की पाठनाभिरुचि का सर्वेक्षण

२. पुस्तक विक्रेताओं में प्रश्नावली प्रचारित कर बिकनेवाली पुस्तकों के तथ्य संग्रह करना, और

३. इन दोनों के आधार पर किसी रिसर्च स्कालर की सहायता से एक रिपोर्ट तैयार कराकर हिन्दी के प्रकाशकों तथा पुस्तक-विक्रेताओं में वितरित करवाना।

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत संघ के लिए 'हिंदी प्रचारक' मासिक पत्रिका वाराणसी ने आठ हज़ार रुपये के अपने आनुमानिक व्यय से हिंदी पाठकों की वाचनाभिरुचि का सर्वेक्षण १९६३ में आरम्भ किया और लगभग २५ हजार पाठकों को एक प्रश्नावली उत्तरदेयक लिफाफे के साथ भेजी गयी। सर्वेक्षण बहुत बड़ा और जटिल न हो इसे दृष्टिगत रख एक सामान्य स्तर की प्रश्नावली 'हिंदी प्रचारक' पत्रिका के पाठकों, देश की समस्त अहिंदीभाषी राज्यों की हिंदी प्रचार सभाओं के हिंदी प्रचारकों, साहित्यकारों, अध्यापकों, संसद सदस्यों, लाइब्रेरियों आदि में वितरित की गई। इस प्रकार के प्रयास से अब संघ के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए हिंदी पाठकों की रुचि के सर्वेक्षण की एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार की गयी है और उस रिपोर्ट का संक्षिप्त अंश यहाँ उपस्थित किया जा रहा है।

सर्वेक्षण की संलग्न विवरण तालिका (परिशिष्ट) के आंकड़ों से कुछ दिलचस्प बातें हमारे सामने आती हैं। यद्यपि बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, पंजाब का कुछ हिस्सा, दिल्ली और हिमाचल प्रदेश भारत के ऐसे क्षेत्र हैं जो कि हिंदीभाषी हैं, परन्तु इन प्रदेशों से प्राप्त उत्तरों का निकटतम प्रतिशत दक्षिण के आन्ध्र, मद्रास, मैसूर, केरल तथा पूर्व बंगाल की तुलना में कम है। यह तथ्य इस बात को प्रकट करते हैं कि राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति अहिंदीभाषी क्षेत्रों के पाठकों में अच्छी रुचि है। हिंदी के प्रति दक्षिण और बंगाल के पाठकों की रुचि से आशा की जा सकती है कि निकट भविष्य में राष्ट्रभाषा हिंदी शीघ्र ही सभी क्षेत्रीय भाषाओं के बीच एक संबंध जोड़ने वाली भाषा का स्थान (लिंक लंग्वेज) ग्रहण कर लेगी। एक महत्त्वपूर्ण तथ्य दिल्ली के सर्वेक्षण से प्रकट हुआ है। संसद के सभी सदस्यों को यह प्रश्नावली भेजी गयी थी, परन्तु यह देखकर दुख और आश्चर्य हुआ कि देश के भाग्यनिर्माता पुस्तकों के पढ़ने के विषय में बहुत ही उदासीन हैं। लगभग ५०० में से केवल पांच सदस्यों ने इस प्रश्नावली के उत्तर भेजे, जो कि उनकी संख्या का मुश्किल से एक प्रतिशत होता है। यह प्रश्नावली लगभग ३००० साहित्यकारों, लेखकों, पत्रकारों और शिक्षकों के पास भेजी गयी, परन्तु आश्चर्य की बात यह देखने में आयी कि इस वर्ग का उत्तर सामान्य पाठक वर्ग के मुकाबले बहुत ही कम रहा। अनुमानतः तीन हज़ार

में से २० बड़े लेखकों और लगभग ६५ शिक्षकों, पत्रकारों और अन्य साहित्यकारों के उत्तर आये हैं। इस तरह इस वर्ग के उत्तर की संख्या २.८३ प्रतिशत है। बड़ी प्रसन्नता की बात है कि महिलाओं ने बड़े उत्साह से इस प्रश्नावली के उत्तर भेजे हैं। ४८० महिलाओं को यह प्रश्नावली भेजी गयी थी, उनमें से १५२ महिलाओं के उत्तर आये। ये आँकड़े इस बात के प्रतीक हैं कि महिलाएँ पढ़ने में दिलचस्पी ले रही हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम उपयुक्त महिलोपयोगी साहित्य प्रस्तुत करें ताकि पाठकों का यह क्षेत्र और विस्तृत हो। उड़ीसा, त्रिपुरा, मणिपुर, गोआ और जम्मू-काश्मीर में भी यह प्रश्नावली भेजी गयी, परन्तु उत्तर बिल्कुल नहीं आये। इससे विदित होता है कि इन क्षेत्रों में हिन्दी पुस्तकों के प्रति जनता में विशेष उत्साह नहीं है।

सामान्य जनता में देश की स्वतन्त्रता के बाद पठनरुचि में काफी विकास हुआ है। इसका प्रमाण इस तरह से मिलता है कि प्रश्नावली में जिन विषयों पर पाठकों के उत्तर मांगे गये, उससे ही पाठकवर्ग सन्तुष्ट नहीं था। पाठकों ने प्रश्नावली में दिये हुए विषयों के अतिरिक्त निम्नलिखित विषयों की पुस्तकें पढ़ने की भी इच्छा प्रकट की :

यात्रा, संस्मरण, आखेट, वैज्ञानिक पुस्तकों के अनुवाद, राजनीतिक-वृत्तान्त, विदेशी भाषा के अनुवाद, संसदीय प्रणाली की अनूदित पुस्तकें, सरकारी कार्यालयों की विधि पर प्रकाश डालने वाली पुस्तकें, प्राविधिक ज्ञान की पुस्तकें और पुस्तकालय विज्ञान।

उपरोक्त पुस्तकों की माँग से एक चीज़ बहुत स्पष्ट रूप से सामने आ रही है। अब विज्ञान और टेक्निकल पुस्तकों की माँग हिन्दी में बहुत तेज़ी से हो रही है। लोग चाहते हैं कि उनकी अपनी भाषा में ही उन्हें विज्ञान और टेक्निकल विषय पढ़ने को मिलें। प्रसन्नता की बात है कि हिन्दी में काफी संख्या में विज्ञान और टेक्निकल पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं और जिस गति से हिन्दी में प्रकाशन हो रहे हैं, उससे आशा की जा सकती है कि आगे चलकर आगामी ५ वर्षों में विज्ञान और टेक्निकल शिक्षा के लिए अंग्रेज़ी के सहारे की जरूरत नहीं पड़ेगी।

हिन्दी में अनुवाद पढ़ने की रुचि पाठकों में बहुत है। बंगाल के शरत्, रविबाबू, बंकिम और विमल मित्र हिन्दी पाठकों के प्रिय हैं। मराठी के हरिनारायण आप्टे की कृतियाँ, गुजराती के के० एम० मुंशी, पंजाबी के नानकसिंह हिन्दी में बहुत प्रसिद्ध हो चुके हैं। इन लेखकों की प्रायः सभी कृतियाँ हिन्दी में अनूदित हो चुकी हैं। अनुवाद के क्षेत्र में हिन्दी भारतीय भाषाओं में अग्रगण्य है।

विदेशी लेखकों के सम्बन्ध में श्री पास्तरनाक, शेक्सपियर, गोर्की, तालस्ताय की पुस्तकों के अनुवाद पढ़ने की रुचि हिन्दी पाठकों में है।

सर्वेक्षण द्वारा प्रमाणित हुआ है कि हिन्दी लेखकों में प्रेमचन्द पुरानी पीढ़ी के होते हुए भी नेतृत्व कर रहे हैं। उनके बाद आचार्य चतुरसेन शास्त्री, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, श्री दिनकर, भगवतीचरण वर्मा, जयशंकर-प्रसाद, यशपाल, राहुल सांकृत्यायन आदि हिन्दी के लेखक बहुत जनप्रिय हैं। सबसे जनप्रिय तो अपने रामचरित मानस के कारण गोस्वामी तुलसीदास जी हैं। सर्वेक्षण में जहाँ अपनी चुनी हुई पुस्तकों के विषय में पाठकों से पूछा गया है, वहाँ अधिकांश पाठकों ने गोस्वामी तुलसीदासजी के 'रामचरित मानस' का ही नाम प्रस्तावित किया है। इस प्रसंग में यह कहा जा सकता है कि हमारे देश की संस्कृति का जो धार्मिक प्रभाव जनता पर पड़ता आया है वह अभी भी बना हुआ है। आवश्यकता इस बात की है कि ऐसी धार्मिक पुस्तकें प्रकाशित की जायें जिनमें साम्प्रदायिकता न हो, सभी धर्मों की बातें प्रकाश में लायी जायें।

देश में एक आन्दोलन नये लेखकों और कवियों को प्रोत्साहित करने के लिए चल रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि तरुण साहित्यकारों को जनता के समक्ष उपस्थित किया जाये और जनता इनमें से हंस की तरह उन मोतियों को चुन ले जो सच्चे अर्थ में साहित्यकार हैं।

सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक समीक्षा संबंधी

प्रो० भगीरथ दीक्षित, हिन्दी विभाग, (जय हिन्द कॉलेज) बम्बई विश्वविद्यालय रचित दो प्रमुख ग्रंथ

समीक्षालोक

पश्चिम के प्रायः सभी महान् समीक्षकों के प्रमुख साहित्यमतों की स्पष्ट एवं स्वतन्त्र व्याख्या, भारतीय दृष्टिकोणों की तुलनात्मक विवेचना। मूल्य : बीस रुपये

विद्वानों की सम्मतियाँ

"पाश्चात्य समीक्षा शास्त्र पर अत्यन्त परिश्रम से लिखे गये लेखक के इस ग्रंथ का आशा है हिन्दी जगत् में अच्छा स्वागत होगा। लेखक की लेखन तथा प्रतिपादन शैली प्रासादिक है।"

—डॉ० **विनय मोहन शर्मा**, अध्यक्ष हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय

"मेरा ख्याल है, छात्रों और अध्यापकों को एक बार यह ग्रंथ अवश्य देख जाना चाहिए।"

—डॉ० **रामधारी सिंह 'दिनकर'**, उपकुलपति, भागलपुर विश्वविद्यालय

"मुझे पुस्तक बहुत अच्छी लगी। लेखक के गम्भीर अध्ययन का परिचय उससे पदे-पदे मिलता है।"

—डॉ० **सम्पूर्णानन्द**, राज्यपाल, राजस्थान प्रदेश, जयपुर

"निःसन्देह 'समीक्षा लोक' में पाश्चात्य समीक्षा की विस्तृत विवेचना की गई है। स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त लाभप्रद होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।"

—डॉ० **उदयनारायण तिवारी**, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, जबलपुर विश्वविद्यालय

"हिन्दी में पाश्चात्य-समीक्षा का ऐसा व्यवस्थित और सांगोपांग विवरण प्रस्तुत करने वाला इस ढंग का दूसरा कोई ग्रन्थ अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है।"

—**'आज'** वाराणसी।

कामायनी विमर्श

'कामायनी' पर अब तक लिखे गये ग्रंथों से सर्वथा भिन्न यह कामायनी के अध्ययन को अभिनव परिप्रेक्ष्य प्रदान करती है। कामायनीकार के प्रतिपाद्य, वस्तु-परिकल्पना, वस्तु-योजना, शिल्प आदि पर आलोक डालते हुए लेखक ने अपना दृष्टिकोण तर्क सम्मत ढंग से प्रस्तुत किया है। मूल्य : १०.२०

कवि एवं कहानीकार नरेन्द्र शर्मा की दो मौलिक कृतियाँ

प्यासा निर्झर

गत दस वर्षों में कवि की समय-समय पर लिखी गई स्फुट रचनाएँ आकार में छोटी-बड़ी और प्रकार में विधायित-शैली-प्रधान की अपेक्षा, कथ्य प्रधान अधिक। मूल्य : आठ रुपये

ज्वाला परचूनी

(कहानी-संग्रह)

हल्दी की गांठ से लोग पंसारी बन जाते हैं, नरेन्द्र की 'ज्वाला परचूनी' के माध्यम से कहानीकार पंसारी बन बैठे। काव्य-वल्लरियों में जो न समा सका वह गल्पवल्लरियों में अभिव्यक्त हुआ है। नरेन्द्रजी की कविताएँ जितनी रसपूर्ण हैं कहानियाँ उतनी ही सजीव। मूल्य : दो रुपए ५० पैसे

समुदय प्रकाशन

५६४, उन्नीसवां रास्ता, खार, बम्बई ५२

हमारे प्रकाशन

कथा-साहित्य

गोमती के तट पर	भगवती प्रसाद वाजपेयी	६.५०
पाकिस्तान मेल	खुशवन्त सिंह	५.००
मिट्टी की लोथ	हरिप्रकाश	४.००
रक्षाबन्धन	रघुवीरशरण बंसल	५.००
हँसता कौन : रोता कौन	यदुनन्दन कपूर	२.५०

नाटक-एकांकी-साहित्य

शीशदान	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	३.५०
साँपों की सृष्टि	"	२.५०
कंजूस	आर० एम० डोगरा	२.००
अजय आलोक	डा० महेन्द्र भटनागर	२.४०
शाप और वर	रत्नलाल शर्मा	३.००
पुनर्जीवन	दुर्गादत्त शर्मा	२.५०

काव्य-साहित्य

प्रतिपदा	कुंवर चन्द्रप्रकाश सिंह	४.००
रसवन्ती	सूर्यभान	१.७५
कुरुक्षेत्र हिमालय	आनन्द	२.५०

विभिन्न साहित्य

मौत भी हार गई	राजेन्द्र शर्मा	२.५०
जीवन ज्योति	क्षेमचन्द्र 'सुमन'	२.५०
जय भारत विशाल	राजेन्द्र शर्मा	२.००
हमारे आदिवासी	हरिप्रकाश	२.००
कुरुक्षेत्र एक सांस्कृतिक परिचय	बालकृष्ण मुस्तर	१०.००
भारत-दर्शन	"	५.००
पंजाब-जन-जीवन और साहित्य		५.००
इंग्लैंड से पत्र	प्रो० ईशकुमार	१.००

आलोचना तथा हिन्दी साहित्य

विद्यापति	जयनाथ 'नलिन'	११.००
रामचन्द्र शुक्ल	"	६.५०
हरिकृष्ण 'प्रेमी'	विश्वप्रकाश दीक्षित	६.५०
वृन्दावनलाल वर्मा	डा० कमलेश	५.००
राधिकारमणप्रसाद सिंह	"	६.००
हिन्दी गद्य विकास और परम्परा	"	२.५०
शुक्ल एक समीक्षा	जयनाथ 'नलिन'	३.००
सूर सरोवर	डा० हरवंशलाल शर्मा	२.५०
सुगम तथा शास्त्रीय संगीत	डा० इन्द्रनाथ मदान	२.५०

बाल तथा प्रौढ़ साहित्य

धरती की पूजा	दुर्गादत्त शर्मा	१.२५
धरती का सुहाग	"	१.२५
हम आजाद हुए	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	१.२५
मैं दिल्ली हूं	रामावतार त्यागी	१.००
ईसप की नीति कथाएं १	देवर्षि सनाढ्य	१.२५
ईसप की नीति कथाएं २	"	१.२५
मीठी तानें	श्रीनाथसिंह	१.००
हमारा भारत	प्राणनाथ सेठ	१.२५
रामराज्य की ओर	राजेन्द्र शर्मा	१.००
स्वाधीनता संग्राम की कहानी	रघुवीरशरण बंसल	१.२५
ईशोपनिषद्	गोपालजी	०.६०
उपनिषद्	"	१.५०
मनोवैज्ञानिक कहानियाँ	(पंजाबी)	१.२५
हैंडफुल आफ स्टोरीज़	(अंग्रेजी)	२.५०

बंसल एण्ड कम्पनी

नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२

टेलीफोन : २१२२९२



सर्वेक्षण की इस रिपोर्ट में जो ५-७ नये हिन्दी-लेखक उभरे हैं, वे हैं धर्मवीर भारती, मोहन राकेश, हिमांशु श्रीवास्तव, अमृतराय, डा० शिवप्रसाद सिंह तथा कमलेश्वर। नये कवियों का इस सर्वेक्षण में कहीं भी स्थान नहीं है। यदि हमको उन्हें जनता के समक्ष लाना है तो इसके लिए बहुत बड़े प्रयत्न की ज़रूरत है।

परिशिष्ट वाली तालिका देखने से यह स्पष्ट विदित हो जाता है कि जनता की रुचि अभी भी कथा-साहित्य और उपन्यासों की ओर अधिक है। उपन्यासों में जासूसी साहित्य के पढ़ने वाले अब खतम हो रहे हैं। इनकी कुल संख्या इस सर्वेक्षण में लगभग २१ प्रतिशत है। इस प्रसंग में एक बात और आवश्यक है कि हमारे देश में विदेशों से अकारण क्राइम और डिटेक्टिव की पुस्तकें आ रही हैं। यह इन्हीं पुस्तकों का कुप्रभाव है जो अभी भी कुछ पाठक ऐसी पुस्तकें पढ़ना चाहते हैं। ऐसी पुस्तकों के आने पर पूरी तरह से सरकार को रोक लगा देनी चाहिये।

इस सर्वेक्षण में पाँच वर्ष से १० वर्ष तक के बच्चों के लिए बाल-साहित्य की माँग करने वाले पाठकों की संख्या ३३ प्रतिशत है और १० वर्ष से १४ वर्ष तक के बच्चों के लिए बाल-साहित्य की माँग करने वालों की ४९ प्रतिशत। ये आंकड़े उत्साहवर्द्धक हैं, परन्तु अपेक्षा यह की जाती थी कि शतप्रतिशत उत्तरदाता अपने बच्चों के लिए बाल-साहित्य की माँग करेंगे। बच्चे यह चाहते हैं कि उन्हें अपनी मातृभाषा में कथा-कहानी की पुस्तकें दी जायें। कभी-कभी देखने में आता है कि अभिभावक उनकी इच्छा न रहते हुए भी जबरदस्ती अंग्रेज़ी की पुस्तकें पढ़ने को देते हैं, क्योंकि आजकल समाज में एक फैशन-सा चल पड़ा है कि बच्चे बचपन से ही अपनी मातृभाषा न जानकर अंग्रेज़ी ज़रूर सीखें। ऐसी प्रवृत्ति देश की राष्ट्रभाषाओं के लिए घातक है। इसका मुकाबला प्रकाशक अच्छी पुस्तकें निकालकर और लाइब्रेरियन उन्हें लाइब्रेरियों में रखकर बच्चों के बीच प्रचार कर सकते हैं। यदि हम लोग प्रारम्भ से ही बच्चों को उनकी मातृभाषा में अच्छी पुस्तकें दें और उनमें पढ़ने की रुचि पैदा करें तो निश्चय है कि नयी पीढ़ी के आने वाले पाठक पुस्तकों में जबरदस्त रुचि लेंगे।

चिकित्सा और कला ये दो ऐसे विषय गिने जाते हैं जिनके विषय में कहा जाता है कि इनके पाठक ही नहीं हैं, परन्तु इस सर्वेक्षण ने यह सिद्ध कर दिया है कि बात ठीक इसके विपरीत है। परिशिष्ट के आंकड़ों के देखने से पता चलता है कि कला और संगीत विषय के पाठक २८ प्रतिशत हैं और चिकित्सा के ३० प्रतिशत।

अन्त में मुझे अपने देश के लाईब्रेरियनों से कुछ कहना है। उन्हें चाहिए कि वे देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा अन्य, क्षेत्रीय भाषाओं की पुस्तकें पढ़ने वाले पाठकों की रुचि का सर्वेक्षण वर्ष में एक बार करें और जनता में भावना जाग्रत करें कि देश की भाषाओं में छपी पुस्तकें पढ़ने में रुचि लें। अकारण अंग्रेज़ी की पुस्तकों का अम्बार लाइब्रेरियों में लगाना देश की संस्कृति और साहित्य के प्रति न्याय नहीं कहा जायेगा। आज देश में एक ऐसा मध्यवर्ग पैदा हो रहा है जो राष्ट्रीय भाषाओं का पृष्ठपोषक है। इस वर्ग की आकांक्षाओं को दृष्टिगत रख साहित्य के निर्माण की आवश्यकता है। लाइब्रेरियन अपने सर्वेक्षणों द्वारा प्रकाशकों को इस वर्ग की रुचि के सम्बन्ध में जानकारी दे सही साहित्य के प्रकाशन में परामर्श दे सकते हैं।

ज्ञान-विज्ञान दो ऐसे विषय जरूर हैं जिन्हें हमें अंग्रेजी में पढ़ना आवश्यक है परन्तु अन्य विषय उतने आवश्यक नहीं हैं जितना कि आज कहा जा रहा है।

इस सर्वेक्षण में प्रकाशकों के लिए कुछ ध्यान देने योग्य बातें हैं। उन्हें समझना होगा कि आज का पाठक पुस्तकों में विषय-वैविध्य और समाज-वैविध्य देखना चाहता है। यदि प्रकाशक लेखक की सहायता से अच्छी पुस्तकें प्रकाशित करें और पाठकों में समुचित रूप से आधुनिक युग के अनुकूल प्रचार करें तो हिन्दी-पुस्तकें अधिक बिक सकती हैं। प्रकाशकों को यह भी देखना चाहिए कि उनके प्रकाशन कम-से-कम मुख्य शहरों में पाठकों को मिलें। सर्वेक्षण के उत्तर भेजने वाले ९० प्रतिशत लोगों ने इस बात की शिकायत की है कि उनकी माँग की हिन्दी-पुस्तकें बड़े शहरों में भी नहीं मिलतीं।

परिशिष्ट—

भारत के विभिन्न राज्यों में विभिन्न विषयों की पुस्तकों में पाठकों की रुचि-तालिका

	हिमांचलप्रदेश	गुजरात	दिल्ली	मैसूर	असम	महाराष्ट्र	बिहार	केरल	राजस्थान	आन्ध्र	पंजाब	मध्य प्रदेश	मद्रास	बंगाल	उत्तर प्रदेश	उड़ीसा	अन्डमान	नागालैंड	जम्मू काश्मीर	त्रिपुरा	मणिपुर	गोवा	विदेश	कुल योग	अ० भा० प्रतिशत
कहानी	५	४	७०	८१	१९	२३	११६	१२६	२३९	१२३	५१	१७५	१३४	११३	३९३	—	३	—	—	—	—	—	६	१६७५	६१. २
नाटक	२	३	५२	७६	१७	१४	९३	१०२	१४६	११०	३५	९१	१०८	६५	२५७	—	३	—	—	—	—	—	३	११७४	४२. ९
उपन्यास सामाजिक	४	४	६५	९५	१८	२२	१२१	११५	२०५	१२४	४५	१७४	१२५	९३	३७२	१	४	—	—	—	—	—	६	१५८७	५८.००
,, ऐतिहासिक	३	३	५९	८२	१३	१८	९०	९७	१७६	९६	३८	१४८	९८	९२	३२१	१	४	—	—	—	—	—	५	१३३९	४८.०२
,, जासूसी	१	—	२७	२३	८	९	५५	४३	७६	३७	१६	६५	६९	२४	१४०	—	२	—	—	—	—	—	३	५९५	२१.७९
विज्ञान	४	२	५३	५९	११	१५	८३	६७	१४९	६५	२९	१२७	६४	५२	२२९	—	१	—	—	—	—	—	४	१०१०	३७.०२
जीवनी	४	३	५५	७५	११	१७	१०१	१०६	१६४	९५	४०	१४४	१०३	९१	२८८	—	२	—	—	—	—	—	४	१२९९	४७.४३
धार्मिक पुस्तकें	४	३	५८	६९	११	१७	१०२	७८	१७२	८९	३०	१२२	९४	५९	२८४	१	३	—	—	—	—	—	३	११९६	४३.६६
कला और संगीत	१	१	३२	५५	१३	१७	६९	५५	११७	४१	२०	८१	५३	४०	१९३	१	२	—	—	—	—	—	३	७९१	२८.८७
चिकित्सा	—	—	३०	४९	७	९	६१	४२	१३६	५६	२३	९४	६३	३३	२४०	—	२	—	—	—	—	—	१	८४५	३०.८८
महिलोपयोगी	१	१	३१	५९	१२	९	७०	७०	११३	७४	२५	१११	८०	३२	२२९	—	१	—	—	—	—	—	३	९१८	३३.५५
बाल-साहित्य ५-१० वर्ष तक	३	३	४८	५७	४	९	६२	८१	१०८	६९	२२	१०३	७४	३८	२२०	—	२	—	—	—	—	—	३	९०३	३३.००
बाल-साहित्य १०-१४ वर्ष तक	२	२	३७	६३	९	१३	८७	९७	१४०	८९	३०	११४	९७	७२	२६२	—	२	—	—	—	—	—	४	११२३	४१.३३
कोश साहित्य	३	३	२७	५४	१०	१८	६६	४७	१०७	५९	५४	१०६	६५	४९	१८८	—	३	—	—	—	—	—	४	८२९	३०. ३
प्रचारित प्रश्नावली की सं०	५००	२००	६००	४००	४००	१००	२५००	५००	३०००	५००	८००	५०००	६००	३४००	६०००	१००	२०	२०	५०	२०	१०	५	१०२	२४८२७	—
उत्तर-प्राप्ति संख्या	६	४	९१	१२	२३	२९	१७७	५९	३०८	१४९	५४	२४४	१६५	५६४	६३४	१	५	—	—	—	—	—	११	२७३६	११.०२
उत्तर-प्राप्ति प्रतिशत	१.२	२	१५.१६	२८	५.७५	२९	७.०८	११.८	१०.२६	३०	६.७५	४.८८	२७.५	१६.६	१०.५६	१	२५	—	—	—	—	—	१०	—	११.०२

duate
ncil.
5.00

eneral
, the
8.00

ating
8.00

2.00

6.00

विदेशों में प्रकाशन

पाकिस्तान में लायब्रेरियों की खरीद शिक्षा विभाग के फौजी आर्डर पर रोष स्वीकृति के लिए आठ आने प्रति पृष्ठ की फीस!

पश्चिमी पाकिस्तान के शिक्षा विभाग ने स्कूलों के पुस्तकालयों में पुस्तकों की खरीद बन्द कर देने का आदेश दिया है। प्रकाशकों, लेखकों और पुस्तकविक्रेताओं ने इस आदेश के विरुद्ध रोषपूर्ण प्रतिवाद किया है और एक आन्दोलन छेड़ दिया है। लाहौर के दैनिक 'मशरिक' ने इस संदर्भ में निम्नलिखित विचार प्रकट किये हैं। यह नेशनल प्रेस ट्रस्ट का पत्र है। यह संस्था सरकारी समझी जाती है। 'मशरिक' ने लिखा है:

कुछ दिन पहले यह इत्तला दी गई थी कि शिक्षा संस्थाएँ अपने पुस्तकालयों के लिए वही किताबें खरीद सकेंगी जो सरकार द्वारा स्वीकृत होंगी।

साधारण दृष्टि में यह एक उचित निर्णय था क्योंकि अधिकांश शिक्षा संस्थाओं में स्तर से गिरी हुई और अनैतिक किताबें खरीदने की शिकायतें आम हो गई थीं। यह भी कहा जाता था कि यह स्थिति कुछ प्रकाशकों और शिक्षण संस्थाओं के सरबराहों की मिली भगत का परिणाम है।

इस खराबी को दूर करने का निर्णय करके सरकार ने दूरदर्शी पग उठाया है लेकिन शिक्षा विभाग ने किताबों की स्वीकृति और खरीद के लिए जो प्रणाली ग्रहण की है उसे देख कर अंदेशा होता है कि एक ग़लत तरीके में सुधार के लिए जो पग उठाये जा रहे हैं उनसे कई नई खराबियाँ पैदा हो जायँगी।

शिक्षा विभाग ने जुलाई से पुस्तकालयों की खरीद बिल्कुल बन्द कर देने का आदेश दिया है। यह आदेश उन किताबों पर भी लागू होता है जिनको विभाग स्वयं इससे पहले स्वीकृति दे चुका है। हो सकता है कि पिछले दिनों में कुछ ऐसी किताबें भी मंजूर हो गई हों जो विभाग की दृष्टि में वांछित न हों परन्तु सब स्वीकृत पुस्तकों की खरीद पर पूरी पाबन्दी किसी तरह से भी उचित और मुनासिब नहीं कही जा सकती।

शिक्षा विभाग पिछले सत्रह वर्षों में लगभग १० हज़ार किताबों को अपनी स्वीकृति दे चुका है। स्पष्ट है कि इतनी किताबों की जांच-पड़ताल में कई वर्ष लग जायँगे। क्या इतने लम्बे अरसे तक पुस्तकालयों में नई किताबों की वृद्धि का काम बिल्कुल रुका रहेगा? फिर इसकी क्या जमानत है कि जो किताबें नये सिरें से मंजूर कर ली जायंगी उन्हें बाद में अवांछित करार नहीं दिया जायगा?

यह भी मालूम हुआ है कि विभाग हर किताब की जांच के लिए फीस आठ आने प्रति पृष्ठ के हिसाब से रखने के सुझाव पर विचार कर रहा है। इसका अर्थ यह है कि एक हज़ार पृष्ठ की किताब के लिए प्रकाशक को पांच सौ रुपये फीस के रूप में देने पड़ेंगे। फीस की यह दर हद से ज्यादा है।

इसी तरह यह सुझाव भी बहुत अजीब मालूम होता है कि शिक्षा विभाग ऐसी किताबों की भी सूची बनाना चाहता है जो प्रत्येक पुस्तकालय के लिए अनिवार्य होंगी। सम्भव है कि विभाग ने यह सुझाव बड़ी नेक नीयत से तैयार किया हो परन्तु इसके कारण प्रकाशकों में एक अस्वस्थ प्रतिद्वन्द्विता शुरू हो जायगी। हम तो यहाँ कहेंगे कि इससे कई तरह के भ्रष्टाचारों का भी दरवाजा खुल सकता है। शिक्षा विभाग से हमारा प्रबल अनुरोध है कि वह किताबों की ऐसी अनिवार्य सूची बनाने का विचार छोड़ दे।

प्रकाशकों ने शिक्षा विभाग के इस सुझाव पर भी गहरी चिंता प्रकट की है कि प्रत्येक पुस्तक का मूल्य शिक्षा विभाग स्वयं निश्चित करेगा। किताब की कीमत कम-से-कम रखना वास्तव में एक राष्ट्रीय आवश्यकता है परन्तु इसकी पूर्ति के लिए जो प्रणाली अपनाई जा रही है वह सही नहीं है।

हमें उम्मीद है कि शिक्षा विभाग इस पूरी समस्या पर ठंडे दिल और गम्भीरता के साथ विचार करने के बाद कोई मत स्थिर करेगा और अंतिम निर्णय करते समय विद्यार्थियों, प्रकाशकों तथा पुस्तक-विक्रेताओं में से किसी के हित दृष्टि से ओझल नहीं होने पायेंगे। ●

सन् १९६४ के महत्वपूर्ण नवीन प्रकाशन

संग्रहणीय एवं उपयोगी

रस-सिद्धांत — डा. नगेन्द्र २०.००

मनीषी आचार्य एवं मूर्धन्य आलोचक डा० नगेन्द्र का बहुप्रतीक्षित अन्यतम ग्रंथ। हिन्दी-साहित्य की एक विशिष्ट उपलब्धि।

गुसाईं गुरुबानी — [गुसाईं मत का गुरु-ग्रंथ] २०.००

गुसाई सम्प्रदाय के प्रवर्तक बाबा साईंदास के प्रेरणात्मक उपदेशों का पहली बार मुद्रित रूप में प्रकाशन। संत साहित्य की इस अज्ञात और विलुप्त निधि का सर्वत्र स्वागत हुआ है।

ध्यान सम्प्रदाय — डा. भरतसिंह उपाध्याय १०.००

हिन्दी में अपने विषय के इस पहले ग्रन्थ में ध्यान-सम्प्रदाय के इतिहास, साहित्य और उसकी साधना-पद्धति का विवेचन करते हुए भारतीय साहित्य और साधना के साथ उसकी तुलना की गई है। भारतीय साहित्य की प्रथम और विलुप्त कड़ी का उद्धार।

हिन्दी की छायावादी कविता का कला-विधान : — डा. बलबीर सिंह 'रत्न' १२.५०

छायावादी कविता के कला-विधान का गवेषणात्मक अध्ययन। हिन्दी में पहली बार छायावादी शिल्पकला की तटस्थ विवेचना।

शरत्चन्द्र : व्यक्ति और साहित्यकार — मन्मथनाथ गुप्त ६.००

शरत्चन्द्रजी के बहुमुखी जीवन का खोजपूर्ण विवरण एवं उनके साहित्य पर गम्भीर एवं व्यापक विश्लेषण। हिन्दी में पहली बार शरत् का सही एवं सम्पूर्ण मूल्यांकन।

बच्चन : व्यक्ति और कवि — सं. बांकेविहारी भटनागर ४.००

बच्चनजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक अनुपम कृति। मूर्धन्य साहित्यकारों के लेखों व बच्चनजी की श्रेष्ठतम कविताओं से समाहित।

लक्ष्मीनारायण मिश्र के सामाजिक नाटक — भारतभूषण चड्ढा ५.००

मिश्रजी के सामाजिक नाटकों का तटस्थ समालोचन। साहित्यिक पाठकों और विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से उपयोगी।

कौशिकजी की इक्कीस कहानियाँ : — सं. पीताम्बरनाथ कौशिक ४.५०

साहित्यिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण कौशिकजी की इक्कीस कहानियों का पहली बार पुस्तकाकार में प्रकाशन। अनूठा संग्रह।

विकास कार्यों में जन-सहयोग — क्लेरेंस किंग ३.५०

सामुदायिक संगठन के विशेषज्ञ और राष्ट्रसंघ में सामुदायिक विकास के परामर्शदाता क्लेरेंस किंग की महत्वपूर्ण मार्गदर्शक कृति का सरल हिन्दी अनुवाद।

आविष्कारों की सच्ची कहानी — ईगन लार्सन ३.५०

भारत सरकार की लोकप्रिय पुस्तकों की अनुवाद–प्रकाशन की योजना के अंतर्गत प्रकाशित आविष्कारों की सरल, सुबोध और रोचक भाषा–शैली में।

कविताएँ, १९६३ — सं० अजितकुमार, विश्वनाथ त्रिपाठी ४.००

सन् १९६३ में लिखित, प्रकाशित अथवा प्रसारित ११९ कविताओं का प्रतिनिधि संकलन। खड़ी बोली के समग्र काव्य की प्रतिनिधित्वपूर्ण झाँकी।

सुभद्रा — रामचन्द्र तिवारी, सिद्धि तिवारी ५.००

कृष्ण की बहन और अभिमन्यु की माता सुभद्रा के कैशोर और तारुण्य की मनोरम एवं शौर्यपूर्ण गाथा।

निर्झरिणी और पत्थर — निर्मला दर ५.००

पहाड़-जैसे कश्मीरी तरुण की उत्सर्गपूर्ण गाथा। निर्झरिणी जैसी शिक्षिता तरुणी के अद्भुत रूप। अति रोचक उपन्यास।

नाली से... — पी० केशवदेव २.५०

मलयालम के प्रतिष्ठित उपन्यासकार के 'ओटियल निन्नु' नामक अत्यन्त लोकप्रिय उपन्यास का सरस हिन्दी अनुवाद। मलयालम में अब तक इसके १३ संस्करण हो चुके हैं।

कांचन रंग — शंभु मित्र, अमित मित्र ३.००

बंगला रंगमंच के प्रसिद्ध अभिनेता और निर्देशक श्री शंभु मित्र के नाटक—कांचन रंग—का श्री नेमिचन्द्र जैन द्वारा सरस अनुवाद। अभिनेय नाटक। भारतीय नाट्य-साहित्य माला का प्रथम पुष्प।

कितने बजे ? — संतराम वत्स्य १.२५

पौधों की कहानी — ,, ,, १.२५

बाल-मित्र ज्ञान-विज्ञान माला के अन्तर्गत प्रकाशित दो नई पुस्तकें। रंगीन चित्रों से सुसज्जित। भाषा सरल, सुबोध और शैली रोचक।

कृषि उद्योगों का विकास और पंचायतें — रामनारायण उपाध्याय १.२५

खेती-उद्योगों में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने की दृष्टि से ग्राम-पंचायतें किस प्रकार अपना सहयोग प्रदान कर सकती हैं—इस पर अत्यन्त ही सरल, रोचक एवं व्यावहारिक ढंग से प्रकाश डाला गया है।

मोतीलाल नेहरू — शांतिलाल छाजेड़ १.५०

स्वाधीनता संग्राम के अमर सेनानी और अप्रतिम वाग्मी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की झाँकी—संक्षिप्त परंतु सरस, सचित्र और प्रेरणापूर्ण जीवनी।

- ये महत्त्वपूर्ण पुस्तकें आपके पुस्तकालय की स्थायी निधि सिद्ध होंगी। आज ही अपने निकटतम पुस्तक-विक्रेता से अपनी रुचि की पुस्तकें खरीदें अथवा हमें सीधे लिखें।
- पुस्तक-विक्रेताओं, पुस्तकालयों, विद्यालयों, पाठकों सभी के लिए समुचित सुविधाएं।



नेशनल पब्लिशिंग हाउस

चन्द्रलोक, जवाहरनगर, दिल्ली—७

[फोन : २२५७४२]

सम्पादक के नाम पत्र

ग्रन्थ विमोचन

दिसंबर ६४ के 'हिंदी प्रकाशक' में 'ग्रन्थ विमोचन' की चर्चा है। यह सही है कि इसमें संकट मोचन की ध्वनि आती है। 'ग्रंथी विमोचन' प्राचीन काल में प्रयुक्त होता था। तब पुस्तकें एक-एक पन्ना करके लिखी जाती थीं, जिन्हें एक धागे में पिरोते जाया करते थे और समाप्त हो जाने पर गांठ लगा दी जाती थी। जब उसे पढ़ाना आरंभ करना होता था (क्योंकि मुद्रण या प्रकाशन की सुविधा तो थी नहीं) तब एक समारोह में कोई महापुरुष वह गांठ खोलते थे। यही ग्रंथीविमोचन था। यह शब्द आजकल उपयुक्त हो सकता है, बशर्तें कि समारोह में ग्रंथिविमोचन जैसी कोई क्रिया हो।

अभी २२ दिसंबर को केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद् ने अपनी पत्रिका हिंदी परिचय का 'केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग में हिंदी विशेषांक' के. लो. नि. विभाग के मुख्य इंजीनियर श्री वीरेन्द्र कुमार गुह को भेंट किया है। उस समय समारोह में उपस्थित सभी व्यक्तियों को उसकी प्रतियाँ बांटी गईं। वास्तव में यदि एक या अधिक प्रतियाँ देने या बांटने जैसी बात समारोह में हो, तो यही 'भेंट' शब्द उपयुक्त जान पड़ता है।

—गुप्त-बन्धु
सर्वसुलभ-साहित्य प्रकाशन
असोथर फतहपुर

मंगल कामना

यह जान कर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि 'हिन्दी प्रकाशक' तीसरे वर्ष में प्रवेश कर रहा है। इतने कम समय में 'हिन्दी प्रकाशक' ने पुस्तक व्यवसाय के संबंध में जितनी उपयोगी महत्वपूर्ण एवं सामयिक सूचनाएँ दी हैं इतनी शायद ही किसी दूसरे माध्यम से पुस्तक व्यवसायियों को मिली हों। 'हिन्दी प्रकाशक' का भविष्य निश्चय ही उज्ज्वल है। मेरी शुभकामना है कि 'हिन्दी प्रकाशक' का नियमित प्रकाशन होता रहे जिससे प्रकाशकों, मुद्रकों, लेखकों को मार्ग दर्शन मिलता रहे और सरकार को भी पुस्तकों के सम्बन्ध में अपनी नीति निश्चित करने में सहायता मिले।

—सुमित्रादेवी अग्रवाल, रीवां

इस मास के प्रकाशन

अभिनव सोपान (काव्य) हरिवंश राय बच्चन १५.००

लोकप्रिय कवि बच्चन की १९२९ से लेकर १९६३ तक, पूरे पैंतीस वर्ष की चुनी हुई श्रेष्ठतम कविताओं का अपूर्व संकलन। जिसकी भूमिका हिन्दी के प्रतिनिधि कवि श्री सुमित्रानन्दन पन्त ने लिखी है। डिमाई साईज़।

प्रतिशोध (उपन्यास) गुरुदत्त ४.००

सुप्रसिद्ध उपन्यासकार गुरुदत्त के उपन्यास बहुत रोचक होते हैं और कोई न कोई उद्देश्य लिये रहते हैं साथ ही वे भारतीय परम्पराओं और आदर्शों का समर्थन भी करते हैं। प्रतिशोध आपका नवीनतम उपन्यास है, जिसमें दो सामन्तशाही परिवारों के आपसी झगड़ों और पीढ़ियों के वैर-विरोध पर करारा व्यंग्य कसा गया है।

आइना बोल उठा (निबन्ध) देवेन्द्रनाथ शर्मा २.२५

यह 'खट्टा मीठा' के ख्याति-प्राप्त रचयिता देवेन्द्रनाथ शर्मा के २० वैयक्तिक और कलात्मक निबन्धों का दूसरा संग्रह है। कुछ निबन्धों के नाम देखिये :— मैं कितना बेहया हूं, मुझ सा भला न होये, मैं सच बोलना चाहता हूँ, मैंने उस दिन जाना, एक मुझे छोड़कर………

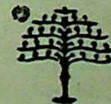
मशीन युग की कहानी (ज्ञान-विज्ञान) अनु० कान्ति मोहन २.००

यह राजैर वर्लिनगेम की सुप्रसिद्ध पुस्तक 'मैन एण्ड मैशीन्ज़' का सरस अनुवाद है—वर्तमान मशीन युग का निर्माण करने वाले ज्ञात-अज्ञात आविष्कारकों के रोमांचक संघर्ष की कहानी।

कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ सं० राजेन्द्र यादव २.५०

नये कहानीकार पुस्तक-माला के अन्तर्गत पांचवां पुष्प।

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६



राष्ट्रीय पुस्तक समारोह



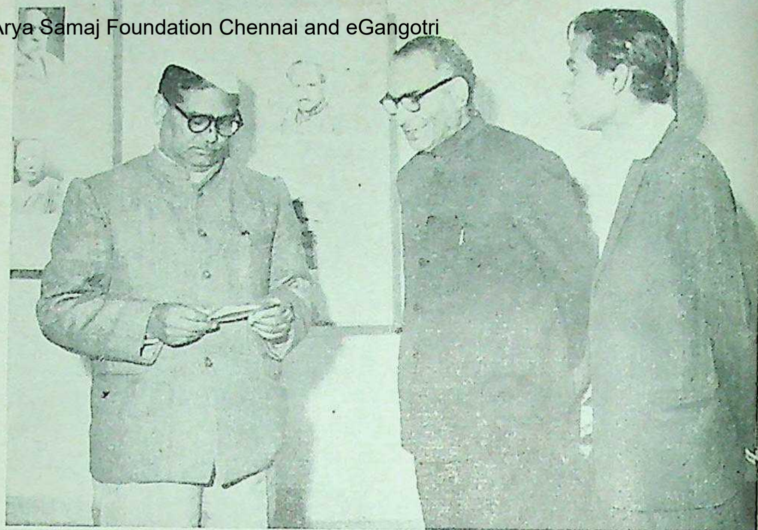
पुस्तक प्रदर्शनी

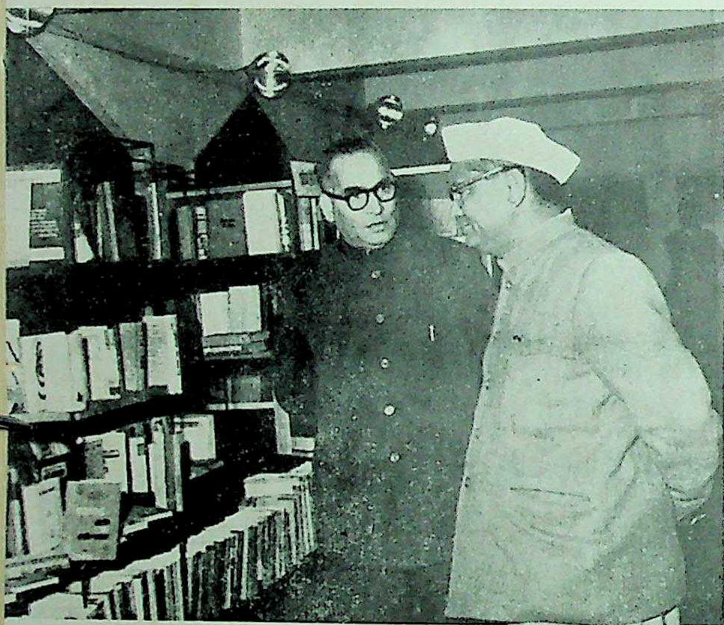


चित्र परिचय

१. 'पिछले पृष्ठ पर' केन्द्रिय शिक्षा उपमंत्री श्रीभक्तदर्शन प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं।

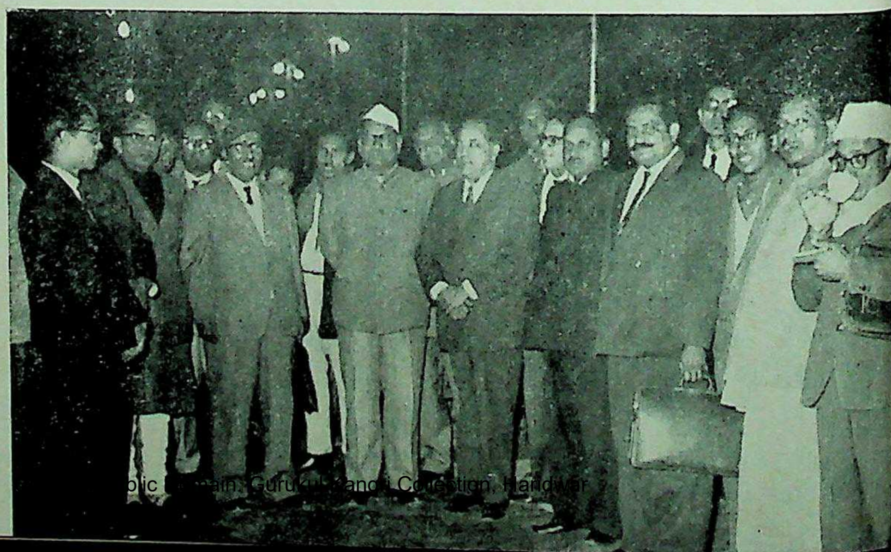
२. 'पिछले पृष्ठ पर' गोष्ठी कासमाहार करते हुए श्रीभक्तदर्शन मिल-जुल कर साहित्य को समृद्ध करने का परामर्श दे रहे हैं।





३. और ४. प्रदर्शनी में श्रीभक्तदर्शन विवरण पत्रिका और पुस्तकें देखकर प्रसन्न हो रहे हैं तथा उनके सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। प्रकाशक संघ के प्रधानमंत्री प्रश्नों के उत्तर दे रहे हैं।

५. प्रदर्शनी और गोष्ठी में उपस्थित डा० नगेन्द्र, श्रीजगदीश प्रसाद चतुर्वेदी और प्रकाशक संघ के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश आदि।





नई दिल्ली में आकर्षक पुस्तक प्रदर्शनी : केन्द्रीय शिक्षा उपमन्त्री श्री भक्तदर्शन का महत्वपूर्ण आश्वासन

अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ स्व० नेहरूजी का जन्मदिवस राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के रूप में मनाता है। हिन्दी पुस्तकों की प्रदर्शनी इस सप्ताहव्यापी समारोह का एक विशिष्ट अंग होती है। इस वर्ष भी प्रदर्शनी का आयोजन हुआ था परंतु उसे १७ दिसम्बर तक के लिए स्थगित करना पड़ा। १७ दिसम्बर को सायंकाल नई दिल्ली की राउज़ एविन्यू में, इंडियन काउंसिल फार चाइल्ड वेलफेयर के भव्य भवन में प्रदर्शनी प्रारंभ हुई, उसका उद्घाटन हिन्दी के पुराने लेखक और केन्द्रीय शिक्षा उपमंत्री श्री भक्तदर्शन ने किया।

३० विषयों की ३००० पुस्तकें

प्रदर्शनी में सन् ६२, ६३ और ६४ में प्रकाशित उपन्यास, कविता, कहानी, नाटक, आलोचना, शोधग्रन्थ, संदर्भग्रन्थ, संस्मरण, जीवनी, यात्रा-विवरण, बाल-साहित्य, प्रौढ़-साहित्य, ललितकला, सभ्यता और संस्कृति, लोक-साहित्य, मनोविज्ञान, इतिहास, धर्म और दर्शन आदि ३० विषयों की ३००० पुस्तकें व्यवस्थित वर्गीकरण के साथ सुरुचिपूर्ण ढंग से प्रदर्शित की गई थीं। दीवारों पर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी, राष्ट्र-कवि मैथिलीशरण गुप्त, महाप्राण निराला, महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, कामायनी-प्रणेता जयशंकर प्रसाद और आचार्य शिवपूजन सहाय आदि के बोलते हुए चित्र सुशोभित थे; प्रतीत होता था कि अपने सींचे हुए पौधों के सुरभित पुष्प देख कर वे प्रसन्न हो रहे हैं और आशीर्वाद दे रहे हैं। सर्व श्री वृन्दावनलाल वर्मा, लक्ष्मीनारायण मिश्र, माखनलाल चतुर्वेदी, परशुराम चतुर्वेदी, और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि के चित्र भी वहाँ थे और दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित कर रहे थे। प्रदर्शनी का वातावरण प्रफुल्ल होते हुए भी कुछ गंभीर था और यह कहता प्रतीत होता था कि 'दद्दा' आज यहाँ नहीं हैं। दो दिन पहले ही वे अपने अग्रजों में मिल कर अक्षय हो गये हैं।

वैज्ञानिक विषयों का समावेश प्रदर्शनी में इसलिए नहीं किया गया था कि नेशनल बुक ट्रस्ट की ओर से दो सप्ताह पहले उनकी पुस्तकें राजधानी में प्रदर्शित हो चुकी थीं। प्रदर्शनी चार दिन तक रही, लगभग दो हजार व्यक्तियों ने उससे लाभ उठाया। प्रदर्शित पुस्तकों में से चुनी हुई १५०० पुस्तकें क्रमशः बंबई, हैदराबाद, मद्रास, बंगलोर और एरनाकुलम में प्रदर्शित होंगी। प्रदर्शनी के आरंभ में प्रकाशक संघ के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश ने अतिथियों का स्वागत किया और प्रदर्शनी के उद्देश्य आदि का परिचय दिया।

हिन्दी पुस्तकें अधिक क्यों नहीं बिकतीं ?

प्रदर्शनी के उद्घाटन से पूर्व तक विचारोत्तेजक गोष्ठी हुई जिसमें लेखक, पाठक, प्रकाशक और पुस्तक विक्रेता की दृष्टि से इस प्रश्न पर प्रकाश डाला गया कि 'हिन्दी पुस्तकें अधिक क्यों नहीं बिकतीं ?' लेखक का पक्ष श्री मोहन राकेश ने, पाठक का पक्ष श्री बालमुकन्द अग्रवाल ने, विक्रेता का पक्ष श्री दयानंद वर्मा ने और प्रकाशक का पक्ष श्री ओमप्रकाश ने प्रस्तुत किया। अंत में श्रीभक्त-दर्शन जी ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

घर-घर पहुँचने की आवश्यकता

श्री मोहन राकेश ने इस धारणा को निरर्थक बताया कि आज का लेखक जन साधारण से अलग जा रहा है इसलिए हिन्दी पुस्तकों की बिक्री घट गई है। आपने कहा, मेरे बचपन में इंडियन प्रेस के कार्यकर्त्ता पुस्तकों के बक्से लेकर घर-घर जाते थे और लोगों को उपयोगी पुस्तकों की ओर आकर्षित करते थे। आज पुस्तकों के विज्ञापन की नई-नई प्रणालियाँ निकल आई हैं परंतु व्यक्तिगत संपर्क का मार्ग छोड़ दिया गया है।

बाजार में मनोनुकूल पुस्तकें नहीं मिलतीं

श्री बालमुकंद अग्रवाल ने कहा कि जो लोग कुछ पढ़ना चाहते हैं और खरीदकर पढ़ना चाहते हैं, उन्हें बाजार में मनोनुकूल हिन्दी पुस्तकें नहीं मिलतीं, आप समूची नई दिल्ली देख डालिए, दुनिया भर की किताबें मिल जायंगी परंतु हिन्दी की कोई पुस्तक न मिलेगी। हिन्दी पुस्तकों की जिल्दबंदी प्रायः अच्छी नहीं होती, उनसे जनजीवन की अभिव्यक्ति भी सही नहीं होती, जनरुचि को प्रभावित करने वाला साहित्य नहीं दिया जाता।

माँगकर पढ़ने का रोग

श्री दयानंद वर्मा ने कहा कि जनरुचि को प्रभावित करने वाली पुस्तकें अवश्य अधिक प्रकाशित नहीं होतीं परंतु पाठकों में खरीदने की रुचि हो तो प्रकाशकों को प्रोत्साहन मिले और पैसे तथा समय का अभाव भी दूर हो जाय। विक्रेता के नाते मेरा अनुभव यह है कि लोग माँग कर पढ़ना अधिक पसंद करते हैं।

लेखकों का दायित्व

श्री ओमप्रकाश जी ने कहा कि प्रश्न का संबंध ऊँचे स्तर की साहित्यिक पुस्तकों से है—हल्की और निम्नस्तर वाली पुस्तकें तो इस समय भी काफी छपती और काफी बिकती हैं। नवीनता के नाम पर लेखक जो कुछ दे रहे हैं वह निश्चित रूप से जनरुचि से पृथक् है। पुराने लेखक आज भी लोकप्रिय हैं और उनकी पुस्तकें अधिक संख्या में बिक जाती हैं। हिन्दी पाठकों की कमी नहीं है, लेखक अपना उत्तरदायित्व पूरा करें।

समन्वय और सहयोग की आवश्यकता

अंत में श्री भक्तदर्शन जी ने कहा : लेखक, पाठक, पुस्तक विक्रेता और प्रकाशक मिलकर हिन्दी साहित्य में न केवल अधिकाधिक विषयों की रचनाएँ लाएँ बल्कि विश्व भर के चुने हुए साहित्य का अनुवाद करके भी हिन्दी को समृद्ध बना दें।

उन्होंने कहा कि हिन्दी केवल हिन्दी भाषी क्षेत्रों की भाषा नहीं, उसे अन्य देशों में भी ऊँचा आसन मिल रहा है। परन्तु अंतिम लक्ष्य तक पहुँचने के लिये सभी को मिलकर कार्य करना है।

लेखक का विशेष उत्तरदायित्व बताते हुए श्रीभक्तदर्शन ने कहा कि उसकी रचनाएँ देश और समाज का भविष्य बनाती हैं, नई पीढ़ी को दिशा देती हैं। लेखक की रचनाएँ शाश्वत होती हैं इसीलिये लेखक का विशेष दायित्व है।

अच्छी छपाई की सजी सजाई पुस्तकें प्रकाशित करने पर बल देते हुए श्री भक्तदर्शन ने कहा कि मुद्रण में सुधार तो हुआ है परन्तु अभी और भी सुधार की गुंजाइश है। आज पुस्तकें मनन की ही नहीं, दर्शन की भी चीज मानी जाती हैं।

उन्होंने अच्छे तथा अनूदित विश्व साहित्य के प्रकाशन के लिए शिक्षामंत्रालय की ओर से पूरी सहायता का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि प्रकाशन की कोई भी व्यावहारिक योजना शिक्षामंत्रालय के सामने आयेगी तो उस पर पूरा ध्यान दिया जायगा।

श्री जैनेन्द्र के जन्म दिवस
२ जनवरी १९६५ को प्रकाशित

सुप्रसिद्ध साहित्यकार

श्री जैनेन्द्र

का नवीनतम उपन्यास

अनाम स्वामी

और अन्य कहानियाँ

२ जनवरी से १७ जनवरी १९६५ तक के लिए
पुस्तक विक्रेताओं को विशेष रियायत

२५ नये सैट पर १२॥ प्र० अतिरिक्त कमीशन

१० नये सैट पर ७॥ प्र० अतिरिक्त कमीशन

आम पाठक तथा पुस्तकालय

श्री जैनेन्द्र का

१८ रुपये का नया सैट
केवल १५ में प्राप्त करें । पोस्टेज फ्री

(उपन्यास) **अनाम स्वामी**

श्री जैनेन्द्र के विश्वप्रसिद्ध उपन्यास त्यागपत्र, जो १४ भाषाओं में अनूदित है, के नायक की अगली कहानी श्री जैनेन्द्र का ९ वर्ष बाद नया उपन्यास । बहुत गहरा, बहुत रोचक, बहुत सजीव—

और प्रबोध ? ………अनामस्वामी है ।

…………दुनियाँ के लोग जो चाहते हैं वह सभी कुछ पाया पर आज मैं ही भीतर से कितना दीन हूँ—दीखता है कि प्रबोध को वह कुछ नहीं जुटा, पर अकिंचन होकर वह कैसा ऐश्वर्यशाली है, आज उसके आगे मैं याचक हूँ और वैसा होकर धन्य हूँ ।…… **मूल्य ४.००**

(निबन्ध संग्रह) **परिप्रेक्ष**

श्री जैनेन्द्र कुमार के व्यक्ति, समाज और राज्य के आधारभूत विषयों पर ३३ निबंधों का संग्रह । संग्रहणीय पुस्तक, डिमाई आकार **मूल्य ८.००**

(विचारोत्तेजक पुस्तक) **राष्ट्र और राज्य**

राष्ट्र और राज्य पर मानवीय, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से बहुत ही गहरा और बहुत ही पैना विवेचन । प्रत्येक मनीषी के लिए पठनीय तथा संग्रहणीय पुस्तक । **मूल्य ३.००**

(संकलनकर्त्ता-हर्षचन्द्र) **सूक्ती-संचयन**

जैनेन्द्र वाङ्मय की अहिंसा : युद्ध, राज्य : नीति, काम प्रेम : सौन्दर्य, शिक्षा : साहित्य आदि ८ विभागों में सरस, प्रेरक और सचेतन सूक्तियों का अनुपम संग्रह । **मूल्य ३.००**

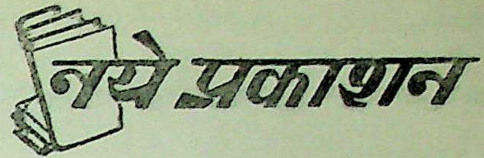
श्री जैनेन्द्र कुमार का पूरा साहित्य

भारत भर के सभी मुख्य विक्रेताओं से प्राप्त है !

अनुपलब्ध या असुविधा होने पर कृपया सम्पर्क करें ।

पूर्वोदय प्रकाशन

८, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६



साहित्य-समालोचना

तुलसीदास : ले. डा. श्री निवास शर्मा; प्र. अशोक-प्रकाशन, नयी सड़क, दिल्ली-६; सा. का.; पृ. २००; मू. २.५० ।

पाश्चात्य काव्य-शास्त्र के सिद्धान्त : ले. डा. शान्ति-स्वरूप गुप्ता; प्र. अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली-६; सा. डि.; पृ. ३५०; मू. ८.०० ।

प्रिय प्रवास की टीका : ले. लक्ष्मणदत्त गौतम; प्र. अशोक प्रकाशन, दिल्ली; सा. का.; पृ. ४१८; मू. ५.०० ।

प्रेमचन्द्र का नारी चित्रण : ले. डा. गीतालाल; प्र. हिन्दी साहित्य संसार, वैदवाडा, नई सड़क, दिल्ली; सा. रा.; पृ. ४२८; मू. २५.०० । शोधप्रबंध ।

बिहारी की काव्य साधना : ले. देशराजसिंह भाटी; प्र. अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली; सा. का.; पृ. २००; मू. २.५० ।

सूरदास : ले. शिवशंकर सारस्वत; प्र. अशोक प्रकाशन, दिल्ली; सा. का.; पृ. १७६; मू. २.५० ।

हिन्दी उपन्यास : उद्भव और विकास : ले. डा. सुरेश सिन्हा; प्र. अशोक प्रकाशन, दिल्ली; सा. डि.; पृ. ६००; मू. २०.०० ।

हिन्दी उपन्यास : सिद्धान्त और समीक्षा : ले. डा. माखनलाल शर्मा; प्र. प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली; मू. १०.०० ।

हिन्दी भाषा का इतिहास : ले. रमेशमिश्र 'अज्ञात'; प्र. अशोक प्रकाशन, दिल्ली; सा. का.; पृ. २८८; मू. ३.५० ।

हिन्दी के आदि मुद्रित ग्रन्थ : ले. कृष्णाचार्य; प्र. भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी । शोधग्रन्थ ।

काव्य

अभिनव सोपान : क. बच्चन; प्र. राजपाल एण्ड सन्ज़; दिल्ली; सा. डि.; पृ. ४७२; मू. १५.०० ।

आत्मजयी : क. कुंवरनारायण; प्र. भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी ।

चौंसठ कविताएँ : इन्दुजैन; प्र. भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी । संकलन ।

उपन्यास

प्रतिशोध : ले. गुरुदत्त ; प्र. राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली; सा. का., पृ. २४४; मू. ४.०० ।

बाईसवीं सदी : ले. राहुल सांकृत्यायन; प्र. किताबमहल प्रा. लि., इलाहाबाद; सा. का.; पृ. १२८; मू. ३.००; पु. मु. ।

वह फिर आई : ले. प्रमोदराजा; प्र. राज्यश्री प्रकाशन, दलपत स्ट्रीट, मथुरा; सा. का.; पृ. १२०; मू. २.२५ ।

सपना बिक गया : ले. भगवतीप्रसाद वाजपेयी; प्र. प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली; मू. ६.५० ।

सिकन्दर नामा : ले. सलमा सिद्दीकी; प्र. भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी ।

कहानी

कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ: सं० राजेन्द्र यादव; प्र. राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली; सा. क्रा.; पृ. १४४; मू. २.५०।

भग्न प्रतिमाएँ : ले. कृष्णमुरारी त्रिपाठी; प्र. सत्येन्द्र-प्रकाशन, इलाहाबाद; सा. क्रा. ८; पृ. १०४; मू. २.००। विक्रेता साहित्यवाणी, ५ गुसाईं टोला, इलाहाबाद ।

स्नेह बाती और लौ : ले. भगवतीप्रसाद वाजपेयी; प्र. प्रभात प्रकाशन, दिल्ली; मू. ५.०० ।

नाटक

अजीतसिंह : ले. आचार्य चतुरसेन
राजसिंह : ,, ,,
शारदोत्सव : ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर; प्र. प्रभात-प्रकाशन, दिल्ली; मू. ३.५०, ३.५०, २.००

बाल-ज्ञान-विज्ञान

मशीन युग की कहानी : अनु. कांतिमोहन; प्र. राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली; सा. क्रा.; पृ. १३४; मू. २.०० ।

रसभरे आम : ले. वेद कुलश्रेष्ठ; प्र. रामप्रसाद एण्ड संस, अस्पताल रोड, आगरा; सा. डि.; पृ. ४६; मू. ०.७५ ।

इतिहास

कुरुक्षेत्र एक सांस्कृतिक परिचय : ले. बालकृष्ण मुज़तर; प्र. विश्वविद्यालय प्रकाशन, कुरुक्षेत्र; मू. १२.५०।

खिलजी वंश का इतिहास : ले. डा. किशोरीसरनलाल; प्र. लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, अस्पताल रोड, आगरा; पृ. ३६७; मू. ८.००। १२९०-१३२०।

मानव इतिहास की रूपरेखा : ले. एस. आर. शर्मा; प्र. लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा; पृ. ४०८; मू. ८.००।

युरोप का आधुनिक इतिहास : ले. प्रो. प्रभातकुमार मजूमदार; प्र. किताब महल प्रा. लि. इलाहाबाद; सा. डि.; पृ. २५०; मू. ७.५०। १७८९-१८७१ ।

ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, तिरंगे आवरणों से सुसज्जित तथा सजिल्द बाल साहित्य

१.	रसभरी कहानियां	—	मनहर चौहान	२.००
२.	साहस और पराक्रम की कहानियां	—	मनहर चौहान	२.००
३.	चाचा के आशा दीप	—	सावित्रीदेवी वर्मा	१.५०
४.	सिपहसालार खान	—	विश्वामित्र शर्मा	१.५०
५.	अपना विकास आप कीजिए	—	श्याम कपूर	१.५०
६.	अपना चरित्र-निर्माण आप कीजिए (दो रंगों में)	—	श्याम कपूर	२.००
७.	सुन्दर सुन्दर कहानियां	—	धर्मपाल शास्त्री एम० ए०	१.५०
८.	वैज्ञानिक वरदान	—	धर्मपाल शास्त्री एम० ए०	२.५०
९.	रचनात्मक कहानियां	—	कमला गौतम एम० ए०	१.५०
१०.	नेहरू सूत्राणि	—	डॉ० के० डी० भारद्वाज श्री सुरेन्द्र कुमार गम्भीर एम. ए.	१.५०
११.	प्यारी प्यारी कहानियां	—	धर्मपाल शास्त्री एम. ए.	१.५०
१२.	अच्छी अच्छी कहानियां	—	योगराज थानी	१.५०
१३.	नयी नयी कहानियां	—	योगराज थानी	१.५०
१४.	नयी पुरानी कहानियां	—	योगराज थानी	१.५०
१५.	छोटी बड़ी कहानियां	—	योगराज थानी	१.५०
१६.	पशु पक्षियों की कहानियां	—	योगराज थानी	१.५०
१७.	हीरे की अंगूठी (बाल उपन्यास)	—	योगराज थानी	१.५०
१८.	मां की ममता (बाल उपन्यास)	—	योगराज थानी	१.५०
१९.	दादी नानी की कहानियां	—	भण्डारी	१.५०
२०.	शिक्षाप्रद एकांकी	—	नन्दलाल चत्ता	१.५०
२१.	बाल एकांकी	—	सुखपाल गुप्त	०.५६
२२.	कथा कहानी	—	नन्दलाल चत्ता	०.५६
२३.	युग युगों में दिल्ली	—	निर्भयस्वरूप वर्मा एम० ए०	२.००
२४.	जहां सुमति तहां सम्पति नाना	—	रघुवीर सिंह	०.७५
२५.	पन्नी का मुकुट	—	रमेश भैया	२.००

आशा प्रकाशन गृह

३, नाई वाला, करौल बाग, नई दिल्ली–५

अर्थशास्त्र-गणित

उच्चतर माध्यमिक बहीखाता : ले. खान व वर्मा; प्र. किताब महल प्रा. लि.; इलाहाबाद; सा. डि; मू. १०.०० ।

माध्यमिक रेखा गणित : ले. रमेशचन्द्र अग्रवाल; प्र. रामप्रसाद एण्ड संस, आगरा; सा. क्रा.; पृ. ३२०; मू. २.५० ।

मुद्रा एवं बैंकिंग : ले. जैन और कोठारी; प्र. लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा; पृ. ५८४; मू. ७.५० ।

हायर सेकेन्ड्री अर्थशास्त्र : ले. नवीनचन्द्र जैन; प्र. रामप्रसाद एण्ड संस, आगरा; सा. डि.; पृ. ४४८; मू. ६.२५५ ।

विविध

आइना बोल उठा : ले. देवेन्द्रनाथ शर्मा; प्र. राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली; सा. क्रा.; पृ.११४; मू. २.२५ । निबंध ।

आधुनिक कृषि विज्ञान : ले. चौधरी; प्र. प्रभात प्रकाशन, दिल्ली; मू. ६.०० ।

दर्शन अनुचिंतन : ले. महामहोपाध्याय गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी; प्र. भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी । दार्शनिक निबंध ।

निर्झरिणी : ले. सीतादेवी; प्र. किताब महल प्रा. लि.; इलाहाबाद; सा.क्रा.; पृ. ८०; मू. २.०० । शब्दचित्र ।

प्रतिनिधि रचनाएँ : ले. न. सी. फड़के

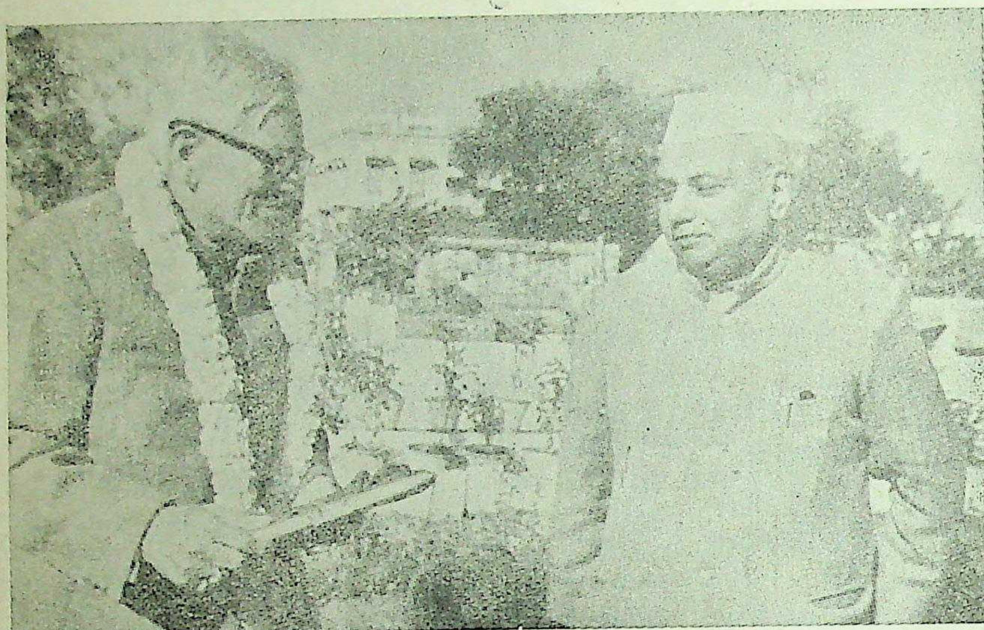
प्रतिनिधि रचनाएँ : ले. नानकसिंह; प्र. भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी । लेखकों के स्वसंकलन ।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और सामुदायिक विकास : ले. डा. विमलेश व ए. सी. भंडारी; प्र. लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा; पृ. ४८२; मू. ८.५० ।

भाषा और भाषी : ले. डा. देवीशंकर द्विवेदी; प्र. लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा; पृ. ४८८; मू. ५.०० ।

रत्न विज्ञान : ले. पुरुषोत्तमदास स्वामी; प्र. किताब महल प्रा. लि. इलाहाबाद; सा. डि.; पृ. ४१६; मू. १५.०० ।

हास्य की प्रवृत्तियाँ : ले. डा. बरसानेलाल; प्र. राज्यश्री प्रकाशन, मथुरा; सा. डि.; पृ. १२०; मू.४.५० ।



श्री गौड़जी
और
राय गोविन्दचन्द्र

ग्रन्थ-विमोचन समारोह

'प्राचीन भारत में लक्ष्मी की प्रतिमा' का अर्पण

वाराणसी में शुक्रवार को सायं हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय के कार्यालय में सुप्रसिद्ध हिन्दी कवि श्री भगवतीचरण वर्मा के सभापतित्व में पुरातत्वविद् डा० राय गोविन्दचन्द्र की कृति 'प्राचीन भारत में लक्ष्मी की प्रतिमा' का ग्रन्थ विमोजन समारोह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री कृष्णदेव प्रसाद गौड़ ने ग्रन्थ की पहली प्रति लेखक को भेंट की।

पुस्तक के प्रकाशक श्री कृष्णचन्द्र बेरी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए इस बात पर बल दिया कि हिन्दी के लेखकों और साहित्यकारों को ऐसे वातावरण का निर्माण करना चाहिए जिससे हिन्दी का प्रचार-प्रसार बढ़े तथा हिन्दी पुस्तकों के पाठकों की संख्या में वृद्धि हो। आपने कहा कि विभिन्न विषयों की बहुमूल्य पुस्तकों के प्रणयन की दिशा में प्रयास होना चाहिए जिससे राष्ट्रभाषा हिन्दी को उसका समुचित स्थान प्राप्त हो सके।

श्री भगवतीचरण वर्मा ने यह आशा व्यक्त की कि राय गोविन्दचन्द्र लिखित ग्रन्थ हिन्दी के विद्वानों, लेखकों और हिन्दी-प्रेमियों के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगा।

उक्त समारोह में पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र, श्री अमृत लाल नागर, श्री गुरुभक्त सिंह भक्त, डा० मंगलदेव शास्त्री, श्री रामचन्द्र मालवीय, डा० शिवप्रसाद सिंह आदि विद्वानों के अतिरिक्त अनेक हिन्दी-प्रेमी और साहित्यकार उपस्थित थे।

१९६४ का हिन्दी साहित्य

'हिन्दी प्रकाशक' का सूचीविशेषांक

मार्च १९६५ में प्रकाशित होगा

जिन प्रकाशकों ने अभी तक अपने प्रकाशन नहीं भेजे वे श्री रघुवीर शरण बंसल यूनिवर्सिटी कैम्पस कुरुक्षेत्र, के पते पर तुरंत भेज दें—१० फरवरी के बाद मिली पुस्तकों का समावेश संभव नहीं होगा।

—सं०

हिन्द पॉकेट बुक्स द्वारा प्रकाशित

दो रुपये सिरीज़ की पुस्तकें

वैशाली की नगर वधू (उपन्यास) : आचार्य चतुरसेन

बौद्धकालीन सर्वसुन्दरी अम्बपाली के मार्मिक जीवन पर आधारित आचार्य चतुरसेन शास्त्री के महान एवं लोकप्रिय उपन्यास का संक्षिप्त संस्करण ।

गिरती दीवारें (उपन्यास) : उपेन्द्रनाथ 'अश्क'

उपेन्द्रनाथ 'अश्क' हिन्दी के श्रेष्ठतम लेखकों में से हैं और 'गिरती दीवारें' उनका एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त उपन्यास है । हिन्दी में इसकी गणना 'गोदान' और 'शेखर : एक जीवनी' आदि गिने-चुने उपन्यासों में की जाती है ।

प्रतिशोध (उपन्यास) : गुरुदत्त

प्रतिशोध गुरुदत्त का नवीनतम उपन्यास है । इसका आधार है दो सामन्ती परिवारों के आपसी झगड़ों का परिणाम । इसमें झूठी शान-बान और झूठी इज्ज़त बनाये रखने के लिए पीढ़ियों का वैर मोल लेने वालों पर तीखा व्यंग्य किया गया है ।

विनाश के बादल (उपन्यास) : प्रताप नारायण टण्डन

चीनी आक्रमण की पृष्ठभूमि पर लिखे इस उपन्यास की कथा हमें हिमालय की दुर्गम हिमानी चोटियों और घाटियों के पार तक ले जाती है । ज्यों-ज्यों आप इसे पढ़ते जायेंगे शत्रु के छल-कपट और वंचना के पर्दे खुलते जायेंगे और आप परिस्थिति की सच्ची तस्वीर देख सकेंगे ।

भारत के क्रान्तिकारी : मन्मथनाथ गुप्त

इस पुस्तक में सन् १८५७ से लेकर स्वाधीनता प्राप्ति तक देश की आज़ादी के लिए जूझ कर मर मिटने वाले क्रान्तिकारियों के अपूर्व त्याग, बलिदान एवं साहस भरे कारनामों का रोमांचक विवरण प्रस्तुत किया गया है ।

विश्व ज्ञान कोश : अवनींद्र कुमार विद्यालंकार

विश्व इतिहास, राजनीति, विज्ञान, भूगोल, साहित्य आदि सभी विषयों की आधुनिकतम और प्रामाणिक जानकारी से भरपूर—पाठकों, विद्यार्थियों, वक्ताओं, लेखकों और पत्रकारों के लिए अत्यन्त उपयोगी संदर्भ ग्रन्थ ।

हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा० लि०, जी० टी० रोड
शाहदरा, दिल्ली-३२



हिन्दी साहित्य संसार के प्रमुख प्रकाशन

शोध-प्रबन्ध (Thesis)

प्रेमचन्द का नारी-चित्रण : डा० गीतालाल २५.००
आधुनिक हिन्दी-कवियों के काव्य-सिद्धांत : डा० सुरेशचन्द्र गुप्त २५.००
रीतिकालीन अलंकार-साहित्य का शास्त्रीय विवेचन : डा० ओम्प्रकाश शर्मा २५.००
हिन्दी के मध्यकालीन खण्डकाव्य : डा०सियाराम तिवारी २२.००
तुलसी के भक्त्यात्मक गीत : डा० वचनदेव कुमार २०.००
प्रेमचन्द-पूर्व हिन्दी उपन्यास : डा० कैलाशप्रकाश १२.५०
करुण रस : डा० ब्रजवासीलाल श्रीवास्तव १२.५०
हिन्दी साहित्य में हास्य रस : डा० बरसानेलाल १०.००
मध्ययुगीन हिंदी साहित्य में नारी-भावना डा०उषा पाण्डेय १०.००

शोध-निबन्ध (Thesis Like)

प्रेमचन्द और गाँधीवाद : प्रो० रामदीन गुप्त १३.५०
हिन्दी पद-परम्परा और तुलसीदास : डा० रामचन्द्र मिश्र १२.५०
मध्ययुगीन वैष्णव संस्कृति और तुलसीदास : डा० रामरतन भटनागर ७.५०
राजस्थान-साहित्य,परम्परा और प्रगति डा०सरनामसिंह शर्मा २.००

आलोचनात्मक

विद्यापति और उनकी पदावली : प्रो० देशराजसिंह भाटी १८.००
विमर्श और निष्कर्ष डा० सरनामसिंह शर्मा १२.५०
सूरदास और उनका भ्रमरगीत : प्रो० दामोदरदास गुप्त १२.५०
हिन्दी साहित्य और उसकी प्रमुख प्रवृत्तियाँ : डा० गोबिन्दराम शर्मा ९.५०
युगकवि पन्त की काव्य-साधना : प्रो० विनयकुमार शर्मा ७.००
अनुसंधान का विवेचन : डा० उदयभानुसिंह ६.००
कामायनी में शब्दशक्ति चमत्कार : डा०विमलकुमार जैन ५.००
जायसी : एक विवेचन : प्रो० देशराजसिंह भाटी ५.००
हिन्दी नाटक की रूपरेखा : प्रो० दशरथ झा ५.००
विद्यापति की काव्य-साधना : प्रो० देशराजसिंह भाटी ५.००
विनयपत्रिका-समीक्षा : प्रो० दानबहादुर पाठक ४.६२
चिन्तामणि-चिन्तन : प्रो० ओम्प्रकाश सिंघल २.५०
पृथ्वीराज रासो : आदिपर्व : प्रो० भारतभूषण सरोज २.२५
गुजराती-साहित्य का संक्षिप्त इतिहास : डा०बरसानेलाल २.००
काव्य-विवेचन : प्रो० देशराजसिंह भाटी १.५०
पृथ्वीराज रासो : पदमावती समय : प्रो०देशराजसिंह भाटी १.५०
जयहिन्द निबंधमाला : प्रो० भारत भूषण 'सरोज' ३.००

सरल निबंध और रचना : गौतम और शर्मा १.७

हास्यरस-साहित्य

खाट पर हजामत : रोशनलाल सुरीवाला ४.३
महासति चाणक्य राजदूत बने : बरसानेलाल ४.३
तिकड़म बनाम तिकड़म : श्यामसुन्दर घोष ४.३
बिल्लू साहेब : ओम्प्रकाश ४.३
थर्ड डिवीजन : ओम्प्रकाश शर्मा 'आदित्य' ४.३

नाटक

शाहजहां के आँसू : देवेन्द्रनाथ शर्मा ३.००
आदर्श एकांकी : सन्तराम 'विचित्र' ४.००
मुद्राराक्षस (भारतेन्दु) : सुरेशचन्द्र गुप्त २.००
शकुन्तला (लक्ष्मणसिंह) : " २.००
चन्द्रावली नाटिका (भारतेन्दु) : भूषण स्वामी १.५०
भारत दुर्दशा (भारतेन्दु) : " १.५०

कहानियाँ

घाटी की परियाँ : खलील जिब्रान ३.१२
उन्नीस कहानियाँ : सियाराम तिवारी ४.५०
हिन्दी कहानियाँ सटीक : भूषण स्वामी ३.००
पठान का हृदय : बलदेवदत्त शर्मा २.७५

काव्य

आग और आकर्षण : जीवनप्रकाश जोशी ३.००
सुदामा चरित (नरोत्तमदास) सटीक : कृष्णदेव शर्मा ०.७५
हिन्दी काव्य संग्रह सटीक : लक्ष्मणदत्त गौतम ३.५०
गंगालहरी (पद्माकर) : दीनानाथ शरण १.५०
प्रेममाधुरी और स्फुट कविताएँ (भारतेन्दु) भूषण स्वामी २.५०

संस्कृत

रघुवंशम् त्रयोदश सर्ग : सटीक : देशराजसिंह भाटी १.००
हितोपदेशस्य मित्रलाभ : सटीक : देशराजसिंह भाटी १.२५

हिन्दी के सभी प्रमुख प्रकाशकों की साहित्यिक पुस्तकें मिलने का सर्वोत्तम स्थान—

हिन्दी साहित्य संसार

दिल्ली-७ : पटना-४

सूचना सार

नव-पाठक साहित्य की चौथी प्रतियोगिता
१७ पुरस्कारों के लिए ३१ मई तक पुस्तकें आमंत्रित

भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय ने यूनेस्को के सहयोग से आयोजित नये पाठकों के लिए उपयोगी साहित्य की चौथी प्रतियोगिता घोषित की है। कुल १७ पुरस्कार दिये जायेंगे, प्रत्येक ११०० रु० का होगा। चार पुरस्कार हिन्दी को मिलेंगे, एक-एक तेरह अन्य भाषाओं को। पुस्तकें साहित्यिक तत्त्व से युक्त सुबोध हों, सामुदायिक विकास, सामान्यविज्ञान, अर्थशास्त्र, सामाजिक विकास और सामान्य संस्कृति जैसे विषयों में से किसी पर पुस्तक हो सकती है। क्लासिकों का सरल शैली में अनुवाद या रूपान्तरण भी स्वीकार्य होगा परन्तु उनमें नाम बदले न गये हों। पृष्ठ ९६ से १४४ तक हों, क्लासिक १६० से २५६ तक हो सकते हैं। पुरस्कृत पुस्तक की १५०० प्रतियाँ सरकार द्वारा उचित माने गये मूल्य पर खरीदी भी जा सकती हैं। पुस्तकें १-१-६३ से ३१-१२-६४ तक छपी हों।

५ प्रतियाँ, १० रु० के ट्रेजरी चालान के साथ ३१ मई तक सहायक शिक्षा सलाहकार, एस० डब्लू-२ शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली को पहुँच जानी चाहिए।

साहित्यकारों के जीवनचरित प्रकाशित करने की योजना

संपूर्ण भारतीय साहित्य की एकरूपता को भारतीय तथा विदेशी पाठकों के सामने प्रस्तुत करने के लिए साहित्य अकादमी ने भारत की सभी प्रान्तीय भाषाओं के प्रमुख साहित्यकारों के जीवनचरित प्रकाशित करने की योजना को शीघ्र कार्यान्वित करने का निश्चय किया है।

उक्त साहित्यिक माला पहले अंग्रेजी में प्रकाशित होगी

और बाद में क्रमशः अन्य भारतीय भाषाओं में अनूदित होगी।

उ० प्र० में हिन्दी की पाठ्य पुस्तकें तैयार करने का आदेश

उत्तर प्रदेश के शिक्षा विभाग ने हिन्दी समिति को विश्वविद्यालय स्तर की पाठ्य पुस्तकें तैयार करने का आदेश दिया है। इस कार्य में हिन्दुस्तानी अकादमी भी हिन्दी समिति को सहयोग प्रदान करेगी।

२६ जनवरी से राजकाज में केवल हिन्दी का उपयोग

उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री श्रीमती सुचेता कृपलानी ने गत २ दिसम्बर को घोषणा की कि उत्तर प्रदेश सरकार का सम्पूर्ण राजकाज आगामी २६ जनवरी से हिन्दी में प्रारम्भ कर दिया जायगा। हिन्दी का प्रयोग सन् १९५१ के पूर्व अंग्रेजी में पास हुए कानूनों में संशोधन के सीमित कार्य के लिए भी नहीं किया जायगा।

बच्चों के लिए सचित्र साहित्य

केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड देश के पूर्व प्राथमिक स्कूलों के लिए कुछ सचित्र पुस्तकें प्रकाशित करने का विचार कर रहा है जो इस प्रकार के स्कूलों को कम से कम मूल्य पर दी जा सकें। प्रकाशन आरम्भ करने से पूर्व प्रदेशों में ऐसे साहित्य का जो ६ वर्ष तक के बच्चों के लिए तैयार किया गया है, सर्वेक्षण किया जायगा।

दिल्ली में सरकारी हिंदी प्रिंटिंग प्रेस

संसद और सरकारी विभागों में हिन्दी छपाई की बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिए एक करोड़ ७७ लाख रु० की लागत से एक नया छापाखाना नई दिल्ली में खोला गया है।

छापेखाने और कर्मचारियों के रिहायशी मकान ४६ एकड़ क्षेत्र में बनाये जायेंगे। इस छापेखाने में १२०० कर्मचारी काम करेंगे और वर्ष में १,२१,००० पृष्ठों की छपाई होगी।

इस समय केन्द्रीय आवास और निर्माण मंत्रालय ११ छापेखाने चला रहा है। १९४७-४८ में इनमें एक करोड़ १८ लाख ३० हजार रु० की छपाई का काम हुआ था। १९६३-६४ में इन्हीं छापेखानों में पाँच करोड़ ४० लाख ८० हजार रु० का काम होने लगा। १९६३-६४ में सरकारी छापेखानों में १०,१६६ कर्मचारी थे, जबकि १९४७-४८ में इनकी संख्या केवल ४३०० थी।

तीसरी योजना में शिक्षा का लक्ष्य शिक्षा निदेशक श्री स्याल का भाषण

उत्तर प्रदेश के शिक्षा निदेशक श्री बलवन्त सिंह स्याल ने कहा है कि अभी हमारा प्रांत शिक्षा के क्षेत्र में अन्य प्रांतों से पीछे है और हमें तृतीय पंचवर्षीय योजना के अन्त तक ९५ प्रतिशत बालकों तथा ६५ प्रतिशत बालिकाओं को पाठशाला में भर्ती कराकर इस पिछड़ेपन के कलंक को दूर करना है।

संस्कृतज्ञ जिज्ञासुजी का देहान्त

वाराणसी में संस्कृत के उत्कृष्ट विद्वान श्री ब्रह्मदत्त जिज्ञासु का निधन हो गया है। वह संस्कृत के उच्चकोटि के विद्वानों में से एक थे। अष्टाध्यायी पर आधारित शिक्षा पद्धति संस्कृत-जगत् को उनकी अपूर्व देन थी।

पाणिनी व्याकरण और वेदों के वह पंडित थे। 'वेदवाणी' मासिक पत्रिका का भी वह संचालन करते थे और वाराणसी स्थित पाणिनी महाविद्यालय के वह संस्थापक थे। १९६४ में राष्ट्रपति ने उन्हें संस्कृत पंडितों को दिये जाने वाले सर्वोच्च सम्मान से सम्मानित किया था।

यजुर्वेद के २० अध्यायों का उन्होंने अपनी टिप्पणी के साथ सम्पादन किया और अष्टाध्यायी पर अपना मौलिक विवेचन भी प्रस्तुत किया।

श्री जिज्ञासु का जन्म जालंधर जिले में हुआ था। उनकी आयु ७३ वर्ष की थी। वह आजीवन ब्रह्मचारी रहे।

श्री मदनगोपाल सिंहल का देहान्त

१७ दिसम्बर को मेरठ में प्रसिद्ध हिन्दी लेखक श्री मदनगोपाल सिंहल का देहान्त हो गया। आपकी वय ५७ साल की थी। आपकी अनेक कृतियाँ राज्य-सरकार द्वारा पुरस्कृत हो चुकी हैं।

इस मास के नये प्रकाशन

★ **रस सिद्धान्त** — डॉ० नगेन्द्र — २०.००

सूर्धन्य आलोचक डॉ० नगेन्द्र का बहुप्रतीक्षित प्रामाणिक ग्रन्थ। हिन्दी साहित्य की एक विशिष्ट उपलब्धि।

★ **जैनेन्द्र : व्यक्ति कथाकार और चिंतक** — सं० बांकेबिहारी भटनागर — ५.००

जैनेन्द्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर उनके जन्म दिवस पर अर्पित, एक अनुपम कृति साहित्यकार अभिनंदन-ग्रंथ माला का द्वितीय पुष्प।

★ **भारत में पंचायती राज :** — भूपेन्द्रनाथ सान्याल — २.००

भारत में वैदिक काल से अब तक के पंचायती राज का इतिहास। सैद्धांतिक व व्यावहारिक पक्ष का सरल एवं सुबोध भाषा में वर्णन।

दिसम्बर मास के प्रकाशन

★ **बच्चन : व्यक्ति और कवि** — सं० बांकेविहारी भटनागर — ४.००

बच्चनजी के व्यक्तितव एवं कृतित्व पर, उनके जन्म दिवस पर अर्पित, एक अनुपम कृति। साहित्यकार अभिनंदन ग्रन्थमाला का प्रथम पुष्प।

★ **हिंदी की छायावादी कविता का कला-विधान** — डॉ० बलवीर सिंह 'रत्न' — १२.५०

छायावादी कविता के कला-विधान का गवेषणात्मक अध्ययन। हिन्दी में छायावादी शिल्प-कला की पहली तटस्थ विवेचना।

★ **लक्ष्मीनारायण मिश्र के सामाजिक नाटक** — भारतभूषण चड्ढा — ५.००

मिश्रजी के सामाजिक नाटकों की तटस्थ विवेचना। साहित्य के अध्येता एवं विद्यार्थियों के लिए समान रूप से उपयोगी।



નેશનલ પબ્લિશિંગ હાઉસ

चन्द्रलोक, जवाहरनगर, दिल्ली-७

[फो० नं० 225742]

नागरीप्रचारिणी सभा,
वाराणसी

हिंदी के पुस्तकाध्यक्ष,
हिंदी के सुधी विद्वान्,
हिंदी के विद्वान्, शोधकर्ता एवं निदेशक गण,
हिंदी के शोध छात्र,

महोदय,

व्यक्तिगत रूप से आप सबको सूचित कर सकना संभव नहीं हो पा रहा है। इसलिए विज्ञापन का सहारा लिया गया है। इसके लिए क्षमा चाहते हुए निवेदन यह है कि आप सब सभा के खोज विवरणों से अवगत हैं। वह हिन्दी शोध-जगत् का मूलाधार रही है और हिन्दी के उन्नयन एवं विकास के आकलन के लिए उसकी उपयोगिता अनन्य एवं अनिवार्य रूप से सर्वग्राह्य रही है।

सन् १६०१ से सन् १६५५ ई० तक के विस्तृत नवीन खोज का संशोधित संक्षिप्त विवरण केन्द्रीय सरकार की सहायता से दो खंडों में प्रकाशित किया जा रहा है। यह स्मरणीय है कि खोज का विस्तृत विवरण केवल सन् १६४३ ई० तक का ही प्रकाशित है। दोनों खंड लगभग रायल आकार के ६५०-६५० पृष्ठों से अधिक हैं। कपड़े की जिल्दबन्दी भी की गयी है और प्रत्येक खंड का मूल्य ३०-३० रु० है। यह अत्यन्त सीमित मात्रा में छप रहा है। इसलिए विशेष रूप से निवेदन है कि इस संबंध में अपना आदेश शीघ्रातिशीघ्र भेजकर अनुगृहीत करें।

भवदीय

(प्रकाशन मन्त्री)

नागरीप्रचारिणी सभा,
वाराणसी

देश में इस समय सात कृषि विश्वविद्यालय

खाद्य और कृषि मंत्री श्री सी० सुब्रह्मण्यम् ने लोकसभा को सूचित किया कि देश में इस समय कुल सात कृषि विश्वविद्यालय चल रहे हैं। कृषि कार्य का विस्तार करने के लिए कृषि स्नातकों की हमें बहुत आवश्यकता है, इसलिए ऐसी सम्भावना ही नहीं है कि कोई स्नातक बेरोजगार पड़ा रहे। दूसरे योजनाकाल में कृषि शिक्षा की संस्थाओं में ७९०० छात्र प्रतिवर्ष भरती करने की व्यवस्था हो गई थी।

हस्तलिखित प्राचीन ग्रन्थों का विवरण नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशन

दसवीं शताब्दि से बीसवीं शताब्दि के हिन्दी के प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों का विगत ५५ वर्षों से की गयी खोज का विवरण काशी नागरी प्रचारिणी सभा की ओर से दो खण्डों में प्रकाशित किया गया है।

सभा के प्रकाशनमंत्री श्री सुधाकर पांडे ने बताया कि सभा ने खोज सम्बन्धी कार्यों में पिछले ५५ वर्षों में एक लाख १४ हजार रुपया खर्च कर ६९५० ग्रन्थकारों एवं १५, ८८२ ग्रन्थों का विवरण एकत्र किया है। ये ग्रन्थ दसवीं शताब्दि से लेकर वर्तमान शताब्दि तक के हैं। साहित्य एवं साहित्यशास्त्र की सभी विधाओं के अतिरिक्त संगीत, नीति, वैद्यक, धनुविदया, आचार, ज्योतिष, लेखाशास्त्र, पाकशास्त्र पशु-चिकित्सा कामशास्त्र, भूगोल, तंत्र-मंत्र, यंत्र, रसायन, शिकार, वनस्पति, रत्न परीक्षण, वास्तु विद्या आदि विषयों के भी महत्वपूर्ण प्राचीन ग्रन्थों के विवरण इस ग्रन्थ में है।

सौंदरानंद का सम्मान बर्मा में

बर्मी सरकार ने १९६३ के सर्वोत्तम साहित्यिक कार्यों के लिए साहित्यकारों को विगत ५ दिसम्बर को पुरस्कृत किया। इन पुरस्कृत साहित्यकारों में ऊ पारगू नामक सज्जन भी हैं जिनका विशिष्ट अध्ययन काल काशी में बीता था। अश्वघोष रचित सौन्दरानन्द नामक संस्कृत काव्य का बर्मी वाङ्मय में रूपान्तर करने के उपलक्ष्य में आपको वर्ष का सर्वोत्तम १,५०० रुपये (च्या) का पुरस्कार प्रदान किया गया है। प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात् पारगूजी काशी चले गये थे और पाली, संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी का विशेष अध्ययन ८ वर्षों तक वहीं करते रहे।

लोकभारती के लोकप्रिय प्रकाशन

★ **सन्धिनी**
महादेवी वर्मा मूल्य : ३.००

★ **साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबन्ध**
महादेवी वर्मा मूल्य : ७.५०

★ **हिन्दी भाषा और नागरीलिपि का विकास**
डॉ० हरदेव बाहरी मूल्य : ५.००

★ **आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां**
डॉ० नामवर सिंह मूल्य : ३.५०

★ **हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग**
डॉ० नामवरसिंह मूल्य : ६.००

★ **काव्य का देवता : निराला**
विश्वम्भर 'मानव' मूल्य : ५.००

★ **हमारे प्रतिनिधि कवि**
विश्वम्भर 'मानव' मूल्य : ६.००

★ **हमारे प्रतिनिधि लेखक**
विश्वम्भर 'मानव' मूल्य : ६.००

★ **प्रसाद, निराला, पन्त, महादेवी की श्रेष्ठ रचनाएं**
सम्पादक : वाचस्पति पाठक मूल्य : ४.५०

★ **हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी**
आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी मूल्य : ६.००

★ **२३ हिन्दी कहानियां** (साहित्य अकादेमी की ओर से)
सम्पादक : जैनेन्द्र कुमार मूल्य : ५.५०

★ **दो एकान्त** (उपन्यास)
श्री नरेश मेहता मूल्य : ५.५०

★ **व्यवधान** (उपन्यास)
शान्ति कुमारी वाजपेयी मूल्य : ८.००

★ **प्यासी धरती प्यासे लोग** (उपन्यास)
कृश्नचन्दर मूल्य : ४.५०

★ **फूल की तनहाई** (कहानियां)
कृश्नचन्दर मूल्य : ३.००

★ **एक कंठ विषपायी** (काव्य नाटक)
दुष्यन्तकुमार मूल्य : ५.००

★ **ग्राम सेविका** (उपन्यास)
अमरकान्त मूल्य : ४.५०

★ **१२ बंगला श्रेष्ठ कहानियां**
अनुवादिका : पुष्पा जैन मूल्य : ७.५०

★ **सात श्रेष्ठ एकांकी**
सम्पादक : गंगाप्रसाद पाण्डेय मूल्य : ३.५०

★ **रावीपार** (उपन्यास)
बलवन्त सिंह मूल्य : ४.५०

लोकभारती प्रकाशन

१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद–१

हमारे कुछ प्रसिद्ध प्रकाशन

उपन्यास

सोना और खून भाग २ उत्तरार्द्ध
आचार्य चतुरसेन ९.००
अतीत के चित्र
मोहनलाल महतो वियोगी ४.००
कांदीद वाल्तेयर
(मूल फ्रेंच से अनूदित) २.००
पाथेय दयाशंकर मिश्र ३.५०
छोटी चाची " ३.५०
छोटी बहू " ३.५०
घातकी " ३.५०
पानी की दीवार रजनी पनिकर ३.००
अन्धेरे के दीप ओमप्रकाश शर्मा ३.५०
कान्ता ओमप्रकाश शर्मा ३.५०
ार या जीत देवदूत १.७५
अन्धेरा-सवेरा यादवचन्द्र जैन ४.००
ज्योति-किरण विमल वेद ४.००
ायसीना की लपटें
भगवद्दत्त 'शिशु' ३.००
र्तकी रूपकोसा (प्रथम भाग)
अनु० मनोहर लाल चौहान ४.५०
र्तकी रूपकोसा (द्वितीय भाग)
अनु० मनोहर लाल चौहान ४.००
ाणों की प्यास मधूलिका ३.५०

कहानी संग्रह

कुछ पैसे राम सरन शर्मा १.२५
मलयानिल नीलकण्ठ पिल्ले २.००
भाग्यरेखा भीष्म साहनी १.७५
कथा मंजरी श्री यश २.५०
सपूत शकुन्तला अग्रवाल २.००
उपनिषदों की कहानियाँ १.७५

नाटक-संग्रह

ीर-क्षीर क्षेमचन्द्र 'सुमन' २.५०

जीवनियाँ और संस्मरण

प्रवासी की आत्म-कथा
स्वामी भवानीदयाल संन्यासी ८.००
एक युग : एक प्रतीक
देवेन्द्र सत्यार्थी ४.००

लोक साहित्य, दर्शन तथा हास्य

अगुआ और बनफ्शे का फूल
खलील जिब्रान ३.००
आकाश-पाताल
श्री जी. पी. श्रीवास्तव २.२५
बेला फूले आधी रात
देवेन्द्र सत्यार्थी १०.००
नई जिन्दगी डा० लक्ष्मीनारायण ३.५०

हमारा बाल साहित्य

बड़ों का बचपन
(भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत)
विश्वमित्र शर्मा २.२५
सोने की कहानियाँ
विश्वमित्र शर्मा १.५०
अणुशक्ति की कहानी
विश्वमित्र शर्मा १.२५
सुनो कहानी विश्वमित्र शर्मा २.००
(दिल्ली शिक्षा विभाग द्वारा पुरस्कृत)
अलिफ लैला विश्वमित्र शर्मा ५.००
देश-देश के बच्चे (प्रथम भाग)
रमेशचन्द्र 'प्रेम' १.२५
देश-देश के बच्चे (द्वितीय भाग)
रमेशचन्द्र 'प्रेम' १.२५
सोनपरी (लोक कथाएँ)
जहूरबख्श १.२५
हाय नागिन (लोक कथाएं)
जहूरबख्श १.२५
राधाकृष्ण (भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत) १.२५
आकाश के अचरज अन्ना दीदी २.२५
धरती के अचरज अन्ना दीदी २.२५
घोड़ों की खेती श्री जहूरबख्श १.५०
हिन्दी बाल सखा
आ० सुन्दरसिंह ०.६५
ललारी और नाई
हरजसराय जैन १.२५
कलन्दरों की आत्मकथा " १.५०
अनजाने देश में ओम प्रकाश १.५०
रमई काका कस्तूरीलाल टण्डन १.७५
घनचक्कर रुद्रदत्त मिश्र १.५०
साहसी शेखू (भाग १)
दयाशंकर मिश्र 'दद्दाजी' १.५०
साहसी शेखू (भाग २) " १.५०
चुटियावाले चाचाजी " १.५०
बच्चों के बापू जहूरबख्श २.२५

भारत-परिचय माला

काश्मीर विश्वमित्र शर्मा १.७५
बंगाल मन्मथनाथ गुप्त १.७५
केरल प्रभाकर माचवे १.७५
महाराष्ट्र " १.७५
असम " १.७५
पंजाब लेखराम १.७५
राजस्थान शोभालाल गुप्त १.७५
उत्तरप्रदेश रामनारायण अग्रवाल १.७५
बिहार मोहनलाल महतो वियोगी १.७५
मद्रास योगराज थानी १.७५
आंध्र योगराज थानी १.७५
मैसूर " १.७५
गुजरात मनहरलाल चौहान १.७५

राजहंस पब्लिकेशन्स, मराडी रुई, सदर बाजार, दिल्ली-६

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के निमित्त, प्रधानमंत्री कन्हैयालाल मलिक द्वारा सम्पादित, उद्योगशाला प्रेस किंग्सवे, दिल्ली-९ में मुद्रित एवं २६-ए, चन्द्रलोक जवाहरनगर, दिल्ली से प्रकाशित

देश की उन्नति टैक्नीकल शिक्षा पर निर्भर है !

विद्युत सम्बन्धी

इलै० इंजीनियरिंग बुक	१५.००
इलैक्ट्रिक गाइड	१०.००
इलैक्ट्रिक वायरिंग	४.५०
इलैक्ट्रिक बैट्रीज़	४.५०
इलैक्ट्रिक लाइटिंग	८.२५
इलैक्ट्रिक सुपरवाइज़री पेपर्स	१०.५०
सुपरवाइज़र वायरमैन	४.५०
इलै० परीक्षा पेपर्स सम्पूर्ण	१५.००
ए० सी० मोटर बाइंडिंग	१५.००
इलैक्ट्रिक मोटर्स	८.२५
इलैक्ट्रिक वायरगेज	१२.००
इलैक्ट्रिक डायग्राम्स	१२.००
टाँका लगाने का ज्ञान	४.५०
छोटे डायनेमो इलै० मोटर	४.५०
ट्रांसफार्मर गाइड	६.००
इलैक्ट्रिक मोटर्स	८.२५
रेलवे ट्रेन लाईटिंग	६.००
इलै० सुपरवाइजरी शिक्षा	६.००
इलैक्ट्रीक वैल्डिंग	६.००
ए० सी० जैनरेटर्स	८.२५
इलै० मोटर्स आल्टरनेटर्स	१६.५०
इलैक्ट्रिक गैस वैल्डिंग	१२.००
इलैक्ट्रोप्लेटिंग	४.५०
बिजली मास्टर	४.५०
गैस वैल्डिंग	६.००
इलैक्ट्रीसिटी	६.००
भारतीय बिजली नियम	२.५०
इलै० लाइनमैन वायरमैन गा०	२५.५०
आल्टरनेटिंग करैंट	२५.५०
विद्युत् इंजीनियरिंग	१६.००
प्रैक्टी० आर्मेचर बाइंडिंग	८.२५
रैफरीजरेटर गाइड	८.२५
आर्मेचर बाइंडर्स गाइड	१५.००
आइसप्लाण्ट (बर्फ मशीन)	४.५०
टेक्नीकल डिक्शनरी	४.००
एयर कण्डीशनिंग गाइड	१५.००

आयल व स्टीम इन्जिन्स

आयल व गैस इंजन	१५.००
आयल इंजन गाइड	८.२५
क्रूड आयल इंजन गाइड	६.००
लोको शेड फिटर गाइड	१५.००
स्टीम वायलर्स और इंजन	८.२५
स्टीम इंजीनियर्स गाइड	१२.००
हैंडबुक आफ स्टीम इंजीनियर	२०.२५

रेडियो साहित्य

वायरलैस रेडियो गाइड	८.२५
रेडियो सर्विसिंग (मैकेनिक)	८.२५
घरेलू बिजली रेडियो मास्टर	४.५०
बृहत् रेडियो विज्ञान	१५.००
रेडियो मास्टर	४.५०
सर्किट डायग्राम्स आफ़ रेडियो	३.७५
ट्रांजिस्टर रेडियो	४.५०
सर्विसिंग ट्रांजिस्टर रेडियो	७.५०
रेडियो पथ-प्रदर्शक	५.५०
बेसिक रेडियो शिक्षक	२.००
रेडियो कम्यूनिकेशन	६.००
ट्रांजिस्टर डेटा और सर्किट	१०.५०
टेप रिकार्डर	१०.५०
ट्रांजिस्टर रिसीवर्स	६.७५

मोटरकार सम्बन्धी

मोटरकार वायरिंग	४.५०
मोटर मैकेनिक टीचर	६.००
मोटर ड्राइविंग टीचर	४.५०
मोटरकार इन्स्ट्रक्टर	१५.००
मोटर साइकिल गाइड	४.५०
मोटरकार ओवरहालिंग	६.००
मोटरकार इंजीनियर	८.२५
मोटरकार इंजन (पावर यू०)	८.२५
मोटरकार सर्विसिंग	८.२५
कम्पलीट मोटरकार ट्रे० मै०	२४.७५
मोटर प्रश्नोत्तर	६.००
स्कूटर और आटो रिक्शा	४.५०
खेती और ट्रैक्टर	६.००
आटोमोबाइल इंजीनियरिंग	१२.००
आधुनिक टिपीकल मोटर गाइड	४.५०

खराद सम्बन्धी

खराद शिक्षा (टर्नर गाइड)	४.५०
वर्कशाप गाइड (फिटर ट्रेनिंग)	४.५०
खराद तथा वर्कशाप ज्ञान	६.००
फिटिंग शाप प्रैक्टिस	७.५०
वर्कशाप प्रैक्टिस	१२.००
मशीन शाप प्रैक्टिस	१५.००
लेथ वर्क	६.७५
मिलिंग मशीन	८.२५
बैंच वर्क एण्ड डाईफिटर	८.२५
माडर्न ब्लैकस्मिथी मैनुअल	८.२५
खराद आपरेटर गाइड	८.२५
फिटर मैकेनिक	८.२५

फर्नीचर व गृह निर्माण सम्बन्धी

भवन-निर्माण कला	१२.
विश्वकर्मा प्रकाश	७.
सर्वे इंजीनियरिंग बुक	१२.
लोकास्ट हाउसिंग टेकनीक	५.
सीमेंट की जालियों के डिजायन	६.
मिस्त्री डिजायन बुक	२५.
हैंडबुक आफ़ बिल्डिंग्स	३४.
टिम्बर केल्कुलेटिंग इंगलिश	२.
जन्त्री पैमाइश चोब (हिंदी)	१.
फर्नीचर बुक	१२.
फर्नीचर डिजायन बुक	१२.
मारबल चिप्स के डिज़ायन	६.
जंत्री पैमा. चोबा (गोल लकड़ी)	३.
जंत्री पैमा० चोब (चिरी लकड़ी)	३.
मशीन वुड वर्किंग	६.

दस्तकारी

कारपेण्ट्री मास्टर	६.
कारपेण्ट्री मैनुअल	४.
प्रैक्टीकल घड़ीसाज़ी	४.
साइकिल रिपेयरिंग	२.५
हारमोनियम रिपेयरिंग	२.५
सिलाई मशीन रिपेयरिंग	२.५
ग्रामोफोन रिपेयरिंग	२.५
प्रैक्टीकल फोटोग्राफी	२.५
ब्लैकस्मिथी (लोहारी का काम)	४.५
आयरन फर्नीचर	१२.०
नक्काशी आर्ट-शिक्षा	६.०
बढ़ई का काम	६.०
राजगीरी शिक्षा	६.०
स्प्रे पेंटिंग	८.२
पोट्रीज़ गाइड	४.५

जनरल पुस्तकें

जनरल मैकेनिक गाइड	१२.०
शीट मेटल वर्क	८.
वीविंग गाइड	४.
हैण्डलूम गाइड	१५.
पावरलूम गाइड	५.
फाउण्ड्री प्रैक्टिस (ढलाई)	८.
प्लम्बिंग और सेनीटेशन	६.
एग्री० इण्डस्ट्रियल पम्पस	८.
सिनेमा मशीन आपरेटर	८.
ट्यूबवैल गाइड	३.
फाउण्ड्री वर्क	४.
मशीनिस्ट	२५.

पुस्तक विक्रेताओं व लाईब्रेरियों को पर्याप्त कमीशन !



देहाती पुस्तक भण्डार : चावड़ी बाजार, दिल्ली

(फोन २६१०३०)

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का मुखपत्र



हिन्दी प्रकाशक

वर्ष ३ फरवरी, १९६५ अंक ३

हमारे अभिनव प्रकाशन

बालकों के लिए

अमर जवाहर लाल (सचित्र : सजिल्द)	१.५०	नेहरू के हास्य विनोद (सचित्र : सजिल्द)	२.५०

कथा-साहित्य

बटवारे का तूफान (यशपाल)	३.००	टूटे पंख (गुलशन नंदा)	३.००
लन्दन के सात रंग (कृष्णचन्द्र)	३.५०	शीशे की दीवार "	३.००
निर्मल (गुरुदत्त)	३.००	विश्वासघात (यज्ञदत्त शर्मा)	२.५०
निष्णात् "	३.००	पहला वर्ष "	२.५०
भाग्य का सम्बल "	३.००	दो पथ दो राही (प्रकाश भारती)	२.५०
गृह संसद "	५.५०	प्यासे पत्थर (भारद्वाज)	२.००
बदनाम गली (कमलेश्वर)	३.००	मछेरन (आदिल रशीद)	२.२५
घेरे के अन्दर (मन्मथनाथ गुप्त)	२.५०	परछाईं "	२.२५
नंदिनी (मामा वरेरकर)	३.००	दर्देदिल "	२.५०
रक्त गान (नानक सिंह)	२.५०	रेखा "	२.२५
परायी मां "	२.२५	इश्क पर ज़ोर नहीं	४.००
अन्तिम पत्ती (ओ. हेनरी)	२.००	हिमालय के उस पार ('अख्तर')	२.५०
कैदी (विलियम फॉकनर)	२.५०	घायल (कृष्णगोपाल आबिद)	४.००
चार पत्तियां (ऐनि काल्वर)	२.५०	पर्वतों के आँचल में (ओलिवर)	२.००
आज और कल (ग्लैडिस करौल)	२.००	आने दो तूफान (रोज़ विल्डर लेन)	२.००
नये नये चाचा जो (केट सैरेडी)	२.००	नदी की लहरें (कमल शुक्ल)	२.२५
परदेसी (रणवीर)	३.००	सारा संसार मेरा (आरिग पूडि)	२.५०

पंजाबी पुस्तक भण्डार, दरीबा कलां, दिल्ली-६ (फोन २६३१३४)

भारत भर से प्रकाशित

हिन्दी पुस्तकें............

............पुस्तक विक्रेताओं के लिए
............पुस्तकालयों के लिए
............पाठकों के लिए

एक ही स्थान से प्राप्त करने के लिए
पधारें अथवा लिखें :

स्टॉर बुक सेन्टर

(दिल्ली में बाहरी प्रकाशनों का सबसे बड़ा केन्द्र)
२७१५, दरियागंज, (मोती महल के पीछे), दिल्ली-६

टेलीफोन :
२७३५८७
२७४८७४

★ विक्रेताओं के लिए प्रकाशकीय कमीशन की सुविधा

★ हर विषय की हिन्दी की सूची के लिये लिखें

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष ३, अंक ३ — फरवरी, १९६५ — मूल्य, वार्षिक ३.००

जय हिन्दी !
जय हिन्दुस्तान !!

भारत अंग्रेजों से पलासी के मैदान में या १८५७ के ही संग्राम में पराजित नहीं हुआ था। इसके पहले विदेशियों के ऐसे कितने ही तूफान आये थे परन्तु वे भारतवासियों के धर्म, सामाजिक संगठन, आचार-विचार, वेशभूषा और रीति-रिवाज आदि को बदल कर भारत की अन्तरात्मा में परिवर्तन नहीं कर सके थे। परिणामस्वरूप भारतवासियों ने उन तूफानों के साथ विदेशी विजेताओं को भी उठा कर फेंक दिया था। पलासी के मैदान और १८५७ के रणागंण में विजय प्राप्त करने वालों ने इतिहास के इस निष्कर्ष को समझा था इसीलिए लार्ड मेकाले ने वह शिक्षा पद्धति प्रचलित की जिसने भारतीयों की अन्तरात्मा में परिवर्तन शुरू किया। रंग-रूप में भारतीय और आचार-विचार, रहन-सहन आदि में अंग्रेज ढालने वाली उन फैक्टरियों की करामात देख कर कविवर अकबर ने लिखा था :

तोप खिसकी प्रोफेसर पहुंचे
जब बसूला हटा तो रंदा है।

फिर उन्होंने लम्बी सांस के साथ कहा था :

तिफ्ल में बू आये क्या मां-बाप के अतवार की
दूध तो डब्बे का है तालीम है सरकार की।

महर्षि दयानन्द, लोकमान्य तिलक, हुतात्मा श्रद्धानन्द, दूरदर्शी केशवचन्द्रसेन, नरसिंह लाला लाजपतराय, राष्ट्रपिता म० गांधी, महामना मालवीय और राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन आदि ने अंग्रेजों की राजनीतिक गुलामी के साथ-साथ इस मानसिक पराधीनता को भी ललकारा था। ये महापुरुष इतिहास के इस सत्य से परिचित थे कि राज्य काठ का एक खिलौना है जब कि राष्ट्रीयता के भाव से भरा हुआ राष्ट्र एक फौलादी स्तम्भ बन जाता है; कोई उसकी ओर उँगली उठाने का साहस भी नहीं कर सकता। वे यह भी जानते थे कि राष्ट्रीयता के भाव माँ के दूध के साथ मिली भाषा ही उत्पन्न कर सकती है। उँगलियों पर गिने जाने वाले लोगों के प्रयत्न से प्राप्त कोई विदेशी भाषा यह काम कदापि नहीं कर सकती। अत: राष्ट्रपिता ने कह दिया था कि "अंगरेजी को भी हमें उसी तरह निकाल फेंकना चाहिए जिस तरह हमने अंगरेजों के राजनीतिक शासन को सफलतापूर्वक उखाड़ फेंका है।"

अंगरेजी को उखाड़ फेंकने की वह प्रक्रिया राजनीतिक स्वाधीनता की उपलब्धि के बाद २६ जनवरी '५० के दिन प्रारम्भ हुई थी जब भारत सबसे बड़े जनतन्त्र के रूप में उदय हुआ था और इसके संविधान में हिन्दी राष्ट्र-भाषा स्वीकार की गई थी। १५ वर्ष बाद इस दिशा में दूसरा पग उठा है और हिन्दी सरकारी काम-काज की भाषा के स्थान पर प्रतिष्ठित हुई है। फूंक-फूंक कर कदम रखने वाली इस सतर्कता में लंगोटी पर फाग खेलने वाले उस प्रचण्ड उत्साह की कमी दीख पड़ती है जो मार्ग के

कुशांकुरों को कुचलता और बाधक पर्वतों को धूलिसात् कर देता है। फिर भी हम इस पग का स्वागत करते हैं और उन सबको हार्दिक बधाई देते हैं जिनकी तत्परता से मानसिक गुलामी से मुक्ति पाने का यह पर्व प्रत्यक्ष हुआ है। हम चाहते हैं कि भारत के आत्मप्रकाश की यह किरणें अहिन्दी भाषी राज्यों को भी स्पर्श करें—अंगरेजी का विषाक्त व्यामोह वहाँ भी त्यागा जाय और यह पर्व सभी भारतीय भाषाओं की मुक्ति का महापर्व बन जाय !

जागरण के इस मंगलमय अवसर पर हम प्रकाशकों, पुस्तक विक्रेताओं और पुस्तक व्यवसाय से सम्बन्धित सभी बन्धुओं से निवेदन करते हैं कि वे अपना सब काम-काज हिन्दी में ही किया करें। दुकानों और कार्यालयों के बोर्ड अब हिन्दी में हो जायं, पत्र-व्यवहार हिन्दी में किया जाय, तार हिन्दी में लिखें जायँ, हिसाब-किताब हिन्दी में रखा जाय, चैक आदि हिन्दी में भरे जायँ। बिल, वाउचर, अनुबंध-पत्र आदि सभी आवश्यक कागज-पत्र हिन्दी में कर लिये जायँ। याद रखना चाहिए कि प्रत्येक नागरिक का आचरण राष्ट्र की मर्यादा का प्रतीक माना जाता है और विदेशी इसी दर्पण में उसके दर्शन करते हैं। हमारे दैनिक कार-व्यवहारों में स्वाधीन भारत के दर्शन न हुए तो भारत की कीर्ति धूमिल रह जायगी और हिन्दी राष्ट्रभाषा बन कर भी मानसिक गुलामी के बंधन तोड़ने में असमर्थ होगी। आशा है कि हमारे निवेदन की गंभीरता हृदयंगम की जायगी और २६ जनवरी सन् ६५ का दिन स्वतन्त्रता के इतिहास में अमर हो जायगा—जयहिन्द, जयहिन्दी ! ●

पंजाब-केशरी की शताब्दी और पुस्तकालय

जनतन्त्र दिवस के समारोह में लालकिले के कवि सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए विचारक जैनेन्द्रजी ने भाव के अभाव की चर्चा की है और उसे सब व्याधियों की जड़ बताया है। एक अन्य समारोह में श्री श्रीप्रकाशजी ने इसी बात को स्पष्ट करते हुए कह दिया है कि देशभक्ति का अभाव ही हमारी दुर्दशा का कारण है।

भाव के अभाव का कारण साहित्य से विमुखता है। खेद है कि यह विमुखता नित्य प्रति बढ़ती जा रही है और आज का समाज स्वाध्याय से निरन्तर दूर होता जा रहा है। आकर्षक पुस्तकालयों की स्थापना इस दशा में कुछ सुधार कर सकती है। पंजाब-केशरी लाला लाजपतरायजी की जन्मशती के संदर्भ में इस ओर कुछ ध्यान दिया गया है, उनके जन्म स्थान पर हमारे प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने एक पुस्तकालय का उद्घाटन किया है और आंध्र की स्मारक समिति लालाजी की स्मृति में एक अच्छे पुस्तकालय का उद्घाटन करने जा रही है।

लाला जी का स्वाध्याय से गंभीर अनुराग था और वे चाहते थे कि यह अनुराग सर्वत्र फैल जाय। इसीलिए लाहौर में उन्होंने द्वारिकादास पुस्तकालय की स्थापना की थी जो अपने समय में ऐतिहासिक ग्रन्थों का अनुपम भण्डार हो गया था। ऐसे पुण्यश्लोक महापुरुष की स्मृति को ठोस रूप देने का यह मार्ग अनुकरणीय है। शती के इस वर्ष में जितने संभव हों उतने पुस्तकालय खोले जायँ जो भाव का अभाव दूर करने में भी सहायक होंगे। लाला जी की स्मृति का यह नया दान होगा और हम उनके नये सिरे से ऋणी हो जायंगे। ●

पुस्तकालयों की समृद्धि बढ़ाने वाला, तथा प्रकाशन व्यवसाय के लिए
परम उपयोगी सेवा करने वाला
अनोखा संदर्भ प्रकाशन

बृहद् हिन्दी ग्रन्थ सूची

(हिन्दी वाङ्मय के ग्रन्थ तथा ग्रन्थकारों की विस्तृत नामावली)

संपादक : यशपाल महाजन तथा कृष्णा महाजन

मूल्य ३६ रुपये मात्र

क्या आप जानना चाहते हैं कि

- अमुक लेखक की कौन-कौन सी पुस्तकें उपलब्ध हैं ?
- अमुक पुस्तक का लेखक, अनुवादक तथा संपादक कौन है ?
- अमुक पुस्तक का प्रकाशक कौन है ?
- अमुक पुस्तक का विषय क्या है ?
- अमुक पुस्तक का मूल्य क्या है ?

इन सभी जटिल प्रश्नों के उत्तर आप बृहद् हिन्दी ग्रन्थ-सूची में पायेंगे।

बृहद् हिन्दी ग्रन्थ सूची में लगभग २४,००० पुस्तकों का विवरण है। सूची के दो विभाग हैं (१) लेखक निर्देशी (२) ग्रन्थ निर्देशी। पहले विभाग में लेखक-क्रम से व्यवस्था है। इसमें लेखक, ग्रन्थ का नाम, प्रकाशक, मूल्य तथा विषय दिये गये हैं। दूसरे विभाग में ग्रन्थ का अनुक्रम है। इसमें ग्रन्थ का नाम, लेखक, प्रकाशक तथा मूल्य आदि क्रम है। इससे आपको सभी तरह की जानकारी उपलब्ध होगी। इसके अतिरिक्त जिन प्रकाशकों (लगभग ९३०)की पुस्तकों का इस बृहद् संदर्भ ग्रन्थ में समावेश है उनकी पूरी नामावली और पते भी दिये गये हैं। साथ ही अनेक तरह के निर्देशी संलेख (Cross References) भी है। यथा-सम्भव लेखकों की जन्म तिथियां भी दी गई हैं। इन अद्भुत उपकरणों से इस ग्रन्थ-सूची की उपयोगिता कहीं अधिक बढ़ गई है।

● पृष्ठ संख्या : लगभग ६००. ● आकार : डबलक्राउन. ● सुन्दर छपाई.
● उत्तम कागज़ ● मज़बूत जिल्दबंदी

पुस्तक १० फरवरी, १९६५ तक प्रकाशित हो जायेगी। विशिष्ट संदर्भ ग्रन्थ होने से इसे परिमित संख्या में प्रकाशित किया जा रहा है। इसकी प्रति अपने लिए सुरक्षित करा लेना अच्छा होगा। अपने निकटतम पुस्तक-विक्रेता से प्राप्त करें अथवा सीधे हमें लिखें।

प्रकाशक

भारतीय ग्रन्थ निकेतन

१३३ लाजपतराय मार्केट, दिल्ली-६

हि
पा
अ०

वैठक
जवा

किया
आगा
प्रस्ता
१५ प
की अ

विमर्श
प्रकाशि
जाय



हिन्दी को राजभाषा बनाने के लिए बधाई

पाठ्य पुस्तकों की प्रस्तुति के लिए सहयोग का प्रस्ताव

अ॰भा॰हिंन्दी प्रकाशक संघ की कार्य समिति के निर्णय

अ॰भा॰ हिन्दी प्रकाशक संघ की कार्य समिति की एक बैठक ३१ जनवरी, १९६५ को अपराह्न ३ बजे चन्द्रलोक जवाहर नगर में हुई। निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे :

श्री ओंमप्रकाश

श्री दीनानाथ मलहोत्रा

श्री मार्तण्ड उपाध्याय

श्री रामदत्त थानवी

श्री रघुवीर शरण बंसल

श्री दयानन्द वर्मा

श्री रामतीर्थ भाटिया

श्री कन्हैयालाल मलिक

श्री ओंमप्रकाश जी ने सभापति का आसन ग्रहण किया। पिछली बैठक की कार्यवाही की सम्पुष्टि के उपरान्त आगामी सत्र (६५-६६) के सभापति पद के लिए प्रस्तावित नामों पर विचार किया गया। निश्चय हुआ कि १५ फरवरी तक प्रस्तावित नामों पर सम्बन्धित सज्जनों की अनुमति ले ली जाय।

एजूकेशनल पुस्तकों की सूची के सम्बन्ध में विचार विमर्श के बाद निर्णय किया गया कि यह जुलाई ६५ तक प्रकाशित हो जाय। प्रकाशक सदस्यों से अनुरोध किया जाय कि वे मई तक अपने यहाँ से प्रकाशित शैक्षणिक पुस्तकों का विवरण भेज दें। सूची में उनका भी समावेश कर लिया जाय।

जून, ६५ में वाशिंगटन में होने वाली दसवीं अमरीकी अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी के सम्बन्ध में उसके संयोजक का पत्र पढ़ा गया। निश्चय हुआ कि पत्र की प्रतिलिपि प्रकाशकों में प्रचारित कर दी जाय, जो सदस्य इसमें सम्मिलित होना चाहें वे सीधा संपर्क स्थापित कर लें।

अंत में एक प्रस्ताव के द्वारा २६ जनवरी. ६५ से हिन्दी को सरकारी कामकाज की भाषा के स्थान पर प्रतिष्ठित करने के लिए हार्दिक बधाई दी गई और पुस्तक व्यवसाय से संबंधित सभी बन्धुओं से अनुरोध किया गया कि वे अपने सब काम यथाशक्ति हिन्दी में ही करें।

प्रस्ताव में ऐसी आशा प्रकट की गई कि हिन्दी भाषी राज्यों के विश्वविद्यालयों में हिंदी शीघ्र ही शिक्षा का माध्यम भी हो जायेगी। इस संदर्भ में पाठ्य पुस्तकों आदि की कठिनाई अनुभव की जाय और उसके लिए विभिन्न सरकारें कोई योजना बनायें तो अ॰ भा॰ हिन्दी प्रकाशक संघ उसकी संपूर्ति के लिए पूरा सहयोग देने को प्रस्तुत है।

सभापति को धन्यवाद देने के बाद बैठक की कार्यवाही समाप्त हो गई।

—प्रधानमंत्री

शिक्षा का महत्व

श्री प्रबोधचन्द्र

पंजाब के शिक्षा एवं स्थानीय शासन मंत्री श्री प्रबोधचन्द्र ने गण-तंत्र दिवस के उपलक्ष्य में निम्नलिखित संदेश दिया है :

इस गणतंत्र दिवस पर मैं आँकड़ों तथा खगोलीय भविष्यवाणियों की साधारण परम्परा से भिन्न एक संदेश देना चाहता हूँ क्योंकि दोनों चीजें हमारे मस्तिष्क को भ्रान्त और दृष्टिबिन्दु को आच्छन्न कर देती हैं। मैं इस संदेश में शिक्षासम्बन्धी कुछ विचारबिन्दु आपके सामने रखना चाहता हूँ।

आज का दिन लोकतंत्र के आधारभूत तत्त्वों पर विचार करने के लिए एक शुभ अवसर प्रदान करता है। हमारा देश सारे विश्व में सबसे बड़े लोकतंत्र का एक समुज्ज्वल उदाहरण है। परन्तु हमें इस पर ही गर्व नहीं करना है जब तक कि हम इस लोकतंत्र को सर्वोत्तम भी न बना दें। जो तत्त्व राष्ट्रों को महान् तथा प्रगतिशील बनाते हैं उनमें इतिहास तथा धर्म के साथ-साथ शिक्षा का भी विशिष्ट महत्त्व है। इसका विशिष्ट महत्त्व इस लिए भी है क्योंकि यह लोगों के मानसिक विचारों, उनके दृष्टिकोणों तथा उनकी प्रवृत्तियों को प्रभावित करती है और सबसे बढ़कर अधिक शिक्षा सद् और असद् को परखने का विवेक भी प्रदान करती है। मैं केवल पाठ्यग्रन्थों को पढ़ लेने मात्र को ही शिक्षा नहीं मानता अपितु मैं शिक्षा को इसके व्यापक रूप में आँक रहा हूँ, जिससे जीवन तथा चरित्र का निर्माण होता है और जिसके बिना हर प्रकार की प्राविधिक प्रगति तथा सामर्थ्य व्यर्थ है। जनता का बहुमत शिक्षा को प्राविधिक एवं व्यावसायिक क्षेत्र तक ही सीमित समझता है और आर्थिक दृष्टि से आजीविका जुटाने का एक साधन मात्र मानता है। बहुत कम लोग ऐसे हैं जो लोकतंत्र को सुदृढ़ बनाने, जीवन को स्वच्छ, प्रबुद्ध तथा निस्वार्थमय बनाने के लिए शिक्षा के महत्त्व को अंगीकार करते हैं। उचित शिक्षा का इन दोनों क्षेत्रों में बड़ा प्रभाव पड़ता है। राष्ट्र के वर्तमान वातावरण में जीवन को स्वच्छ, प्रबुद्ध और निस्वार्थमय बनाने का कार्य बहुत ही महत्त्व रहता है। परन्तु यह कार्य उपदेशों तथा अभ्यास द्वारा नहीं हो सकता। विशेष रूप से ऐसी स्थिति में, जबकि हमारे देशवासी इन उपदेशों और अभ्यासों को कोई महत्व नहीं देते। यह कार्य वर्ग (ग्रुप) विचार-विमर्श द्वारा सम्पन्न किया जा सकता है। बच्चों की ६-११ वर्ष की आयु खेलने-कूदने की होती है ११ से १३ वर्ष की आयु शरारतों की होती है और १३-१६ वर्ष की आयु साहसिक कार्य करने की होती है। अतः शिक्षा को बच्चों के विभिन्न आयु वर्गों की प्राकृतिक मनोवृत्तियों के अनुरूप ही होना चाहिए। इस तथ्य को अपने समय के महान सैनिक शिक्षाशास्त्री लार्ड बेडन पॉवल ने भली प्रकार समझा था। इन्होंने शिक्षा सम्बन्धी एक अद्वितीय ग्रन्थ लिखा। इस ग्रन्थ का नाम स्काउटिंग फार बुआइज़ है। यह हमारा दुर्भाग्य है कि नए-नए प्रयोगों के संघर्ष में हम इस ग्रन्थ के सिद्धांत को विस्मृत कर बैठे हैं।

एक लोकतंत्र को ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो अपने भले-बुरे को समझ सकें और प्रगतिपथ पर स्वतः ही अग्रसर हो सकें। हमारी शिक्षा प्रणाली को प्रत्येक व्यक्ति में ऐसी क्षमता पैदा करनी चाहिए। पुस्तकें रट लेने से बच्चों की स्वच्छता और आत्मविश्वास की भावनाएँ नष्ट हो जाती हैं। वह अपने आपको शिक्षित नहीं बना पाता। आक्सफोर्ड और केम्ब्रिज विश्वविद्यालयों में यह प्रसिद्ध है कि विश्वविद्यालय का यह दायित्व नहीं कि वह किसी छात्र को शिक्षा प्रदान करे अपितु उसका वास्तविक कार्य तो यह है कि विश्वविद्यालय छोड़ने के बाद वह अपना जीवन-यापन किस प्रकार करता है। यही बात कुछ शब्दों में सर जोन एडम्ज ने भी कही है कि अध्यापक का एक शिक्षक के नाते यह कर्त्तव्य है कि वह अपने आपको महत्त्वपूर्ण न बनाए। सर जोन एडम्ज के इन शब्दों का महत्त्व तब और भी बढ़ जाता है जबकि आज के युग में सभी दिशाओं में ज्ञान बड़ी तीव्रता से प्रगति कर रहा है। इस युग में केवल किसी वस्तु से अवगत होना ही आवश्यक नहीं है वरन् इस वस्तु को कहां

और किस प्रकार प्राप्त कर सकते हैं इसका भी ज्ञान होना चाहिए अपितु हमारी शिक्षा का यह एक विशेष अंग होना चाहिए।

मैं इस सम्बन्ध में एक क्रियात्मक सुझाव देना चाहता हूँ। मेरा सुझाव यह है कि मिडल स्तर के पश्चात् छात्र को इस प्रकार शिक्षित किया जाना चाहिए कि वह विश्व-कोष का किस प्रकार अवलोकन करे और सूचक तालिका को किस प्रकार प्रयुक्त करे। प्रत्येक परीक्षा में विश्वकोष के अवलोकन और सूचक अंक के प्रयोग की पद्धति के लिए भी अंक निश्चित होने चाहिए जिस प्रकार कि क्रियात्मक कार्य के लिए होते हैं। यदि प्रत्येक अध्यापक और पुस्तका-लयाध्यक्ष पुस्तकालय में आध घण्टा प्रति मास लगाकर छात्रों के छोटे-छोटे दलों को उपर्युक्त दोनों बातें समझाएँ तो शिक्षा प्रणालियाँ और छात्रों की मानसिक वृत्तियों में अतिमहत्वपूर्ण और मूक क्रान्ति उत्पन्न हो सकती है। इस प्रकार उनके संकुचित दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आ जाएगा और उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न होने के साथ उनका मानसिक संवर्धन भी होगा। इसके साथ ही लोकतंत्र और अनुसन्धान-कार्य परिपुष्ट और विकसित होंगे।

अन्त में मैं एक और समस्या के सम्बन्ध में भी आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। मैं इस समस्या पर बड़ी गम्भीरता से मनन कर रहा हूं। यह समस्या उन कुशाग्र बुद्धि छात्रों के सम्बन्ध में है जिनकी आर्थिक स्थिति उच्च शिक्षा प्राप्त करने के मार्ग में बड़ी बाधा बनी हुई है। बहुत विचार करने के बाद मैंने धनिकों से अपील करने का निर्णय किया है कि वे ऐसे बच्चों को गोद ले लें, ताकि ये होनहार बालक उच्च शिक्षित होकर फलें-फूलें। मेरी इस अपील का उत्साहवर्धक उत्तर मिला है। लगभग एक सौ धनिकों ने इस सम्बन्ध में सहयोग देने का वचन दिया है। मैं आशा करता हूं कि शीघ्र ही और बहुत से धनिक भी मेरी इस योजना से सहयोग करने के लिए आगे आएंगे। किसी भी राष्ट्र के जीवन में मेधावी बच्चों की अवहेलना करने से बढ़कर कोई अपराध नहीं हो सकता है। प्रायः देखने में आता है कि निर्धन परिवारों के बच्चे प्रतिभा सम्पन्न होते हैं और हमारे देश की अधिकतर जन-संख्या निर्धन ही है। अतः हमें इस महत्त्वपूर्ण समस्या की ओर पूरा ध्यान देना चाहिए।

व्यक्तिगत पुस्तकालय

डा० सुरेशचन्द्र गुप्त
पी०-एच० डी०,
३ सी/२५, रोहतक रोड,
नई दिल्ली-५

सामान्यतः यह धारणा व्यक्त की जाती है कि भारत में उन प्रबुद्ध पाठकों का अभाव है जो व्यक्तिगत पुस्तकालयों के संयोजन में विश्वास करते हैं। अधिकांश पाठक, यहाँ तक कि विद्यार्थी-वर्ग भी सार्वजनिक पुस्तकालयों पर निर्भर करता है। पुस्तकें ही नहीं, पत्र-पत्रिकाओं के संबंध में भी यही धारणा व्यक्त की जाती है। स्थिति सचमुच कुछ ऐसी ही है, किन्तु इस विषय में प्रायः एकांगी दृष्टिकोण ही अपनाया जाता है। विदेशों में साहित्य के प्रति पाठकों की जागरूकता के गुणगान में अपने यहां के साहित्य-प्रेमी सहृदयों को हम लगभग भुला बैठते हैं। यह सत्य है कि अनुपात की दृष्टि से हमारे देश में उन सहृदय पाठकों की बहुत कमी है जो साहित्यिक ग्रंथों को स्वयं खरीद कर पढ़ते हैं, किन्तु स्थिति सर्वथा शोचनीय भी नहीं है। आवश्यकता यह है कि उन कारणों को दूर करने का प्रयत्न किया जाए जिनसे साहित्य की बिक्री बाधित रहती है।

सुरुचिपूर्ण पुस्तकें

विगत दशक में हिन्दी में कथा-साहित्य का अभूतपूर्व प्रकाशन हुआ है, किन्तु यथार्थवाद के नाम पर प्रायः ऐसी सामग्री प्रकाशित की जाती है, जिसे न तो सुरुचिपूर्ण पाठक व्यक्तिगत पुस्तकालय में ही रखना पसन्द करेगा और न ही जिससे सार्वजनिक पुस्तकालयों की गरिमा बढ़ेगी। नव लेखकों की बात जाने दीजिए, प्रख्यात साहित्यकार श्री मन्मथनाथ गुप्त का उपन्यास 'होटल डी ताज' भी ऐसा ही है। स्थिति इतनी विकट है कि कुछ महिलाएं भी सस्ती ख्याति के लोभ में इस दिशा में योगदान कर रही हैं—माया गुप्ता का 'मंझधार', सुषमा भाटी का 'गेट-कीपर' और मधूलिका का 'प्राणों की प्यास' ऐसे ही उपन्यास हैं। पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कहानी-साहित्य भी कुछ अंशों में इतना ही आपत्तिजनक रहता है। प्रत्यक्ष चित्रण की अपेक्षा परोक्ष चित्रण की प्रणाली अपनाने पर अश्लीलत्व की यह समस्या नहीं रहेगी, किन्तु कभी-कभी यह लेखक द्वारा विषय को पचाने की क्षमता पर भी निर्भर करता है।

दूसरे प्रकार की रचनाएँ ऐसी हैं, जैसे कि डा० रांगेय राघव द्वारा लिखित 'महायात्रा: गाथा'। इसमें सृष्टि-विकास का चित्रण है और प्रसंगानुसार ऐसे अनेक काम-मूलक दृश्यों को उभारा गया है जो इसे परिवार में संग्रहणीय पुस्तक का गौरव नहीं दे सकते। यों, इसमें लेखक की प्रखर शोध-दृष्टि निश्चय ही सराहनीय है। हमारा प्रतिपाद्य यह है कि सुरुचिपूर्ण पुस्तकें लिखने पर ही हम इस बात की आशा कर सकते हैं कि उन्हें व्यक्तिगत पुस्तकालयों में स्थान प्राप्त हो।

विविध-विषयक पुस्तकें

हिन्दी के साहित्यकार सामान्यतः कविता, नाटक, कथा-साहित्य और आलोचना लिख लेने मात्र को अपने दायित्व की पूर्ति मान लेते हैं। विज्ञान, समाजशास्त्र, शिक्षा आदि विषयों की ओर बहुत कम लेखकों की प्रवृत्ति होती है। इसका परिणाम यह होता है कि इन विषयों पर प्रौढ़ पाठकों के लिए ही नहीं, बच्चों के लिए भी उपयुक्त साहित्य उपलब्ध नहीं हो पाता। हिन्दी के लेखक और प्रकाशक पुस्तकों की बिक्री में कमी की दुहाई तो देते हैं, किन्तु ललित साहित्य की परिधि से बाहर जा कर अन्यान्य विषयों पर उत्तमोत्तम पुस्तकें लिखने की ओर ध्यान नहीं देते। इन विषयों के विद्वानों के साथ मिलकर ऐसे ग्रंथों की रचना आज हमारा सबसे बड़ा दायित्व है। व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर मैं यह कह सकता हूँ कि इन विषयों पर उत्तम ग्रंथों के लिए पाठकों का अभाव नहीं है।

भाषा-शैली और मुद्रण

हिन्दी-साहित्य का दुर्भाग्य यह भी है कि प्रायः लेखक-गण अभिव्यंजना शैली के प्रति उतना न्याय नहीं करते जितना कि वे विषय के निर्वाह के प्रति जागरूक रहते हैं। वर्तनी की भूलों के अतिरिक्त सदोष वाक्य-रचना भी प्रायः मिल जाती है। ऐसे लेखक अपेक्षाकृत कम हैं जो शब्द की आत्मा को पहचान कर उसका यथास्थान और यथानुरूप विन्यास करते हैं। यह स्थिति तब और भी भयावह हो जाती है जब रचना में मुद्रण-सम्बन्धी भूलों की प्रचुरता मिलती है। प्रूफ-संशोधन को कुछ लेखक अपने स्तर से नीचे की बात समझते हैं, तो ऐसे प्रकाशकों का भी अभाव नहीं है जो तीन-चार बार के प्रूफ-संशोधन को धन और समय का अपव्यय मानते हैं। फल यह होता है कि हिन्दी की पुस्तकें विदेशों में प्रकाशित पुस्तकों की तुलना में मुद्रण और साज-सज्जा के क्षेत्र में भी पिछड़ी रहती हैं। इस दिशा में लेखकों की अपेक्षा प्रकाशक अधिक क्रांतिकारी योग दे सकते हैं।

पुस्तकों का मूल्य

पहले यह कहा जाता था कि हिन्दी में ऐसी पुस्तकों का प्रकाशन नहीं होता जिन्हें साधारण वित्तीय स्थिति के पाठक खरीद सकें। पाकेट बुक्स के प्रकाशन ने अब इस अभाव को दूर कर दिया है। किन्तु, मेरा सुझाव इस विषय में कुछ भिन्न है। सस्ते मूल्य की पुस्तकें प्रकाशित करने की झोंक में हलका कागज, भद्दी छपाई, प्रभावहीन चित्रों और अस्थायी जिल्दबन्दी का आश्रय लेने से क्या लाभ होगा? हिन्दी के अनेक प्रकाशकों की वृत्ति यही है कि वे सस्ते मूल्य में पुस्तक का प्रकाशन-स्तर भी हल्का कर देते हैं। यदि पुस्तकों को सामग्री और साज-सज्जा की दृष्टि से अप्रतिम बनाने का प्रयत्न किया जाएगा तो मूल्य अधिक होने पर भी पाठक उनकी ओर आकृष्ट होंगे। आखिर जिन अंग्रेजी-पुस्तकों की हम दुहाई देते हैं, वे मूल्य में हिन्दी-पुस्तकों से प्रायः महँगी ही तो होती हैं। उस मार्ग को अपनाने पर हिन्दी के प्रकाशक भी अपने आलोचकों को संतोष दे सकेंगे।

साहित्यिक पुस्तकों की बिक्री

श्री रामकृष्ण शर्मा
संचालक, हिन्दी साहित्य संसार
दिल्ली-पटना

साहित्यिक पुस्तकों से मेरा आशय Literary Criticism से है। साहित्य सम्बन्धी शोध-प्रबन्ध (Thesis), शोधपूर्ण निबन्ध (Thesis Like) शोध-निबन्ध (Desertation), किसी साहित्यकार के जीवन और कृतित्व सम्बन्धी एकत्रित किए गए विचारों के सभी ग्रंथ इसी कोटि में आते हैं। साहित्यालोचन और काव्य-सम्बन्धी सिद्धान्तों का प्रतिपादन भी जिस ग्रन्थ में होता है वह भी इसी वर्ग का समझा जाता है। कहने का तात्पर्य यह कि साहित्य के अंगों-उपांगों की आलोचना-प्रत्यालोचना जिन ग्रन्थों में होती है उन्हें साहित्यिक पुस्तकों की संज्ञा दी जा सकती है। टीका-साहित्य, कुंजी-साहित्य और प्रश्नोत्तरी-साहित्य भी इसी के अन्तर्गत आते हैं, लेकिन यह सस्ता प्रयास गिना जाता है और यह विद्यार्थी-वर्ग में ही खूब बिकता है।

शोध-प्रबन्ध और आलोचना सम्बन्धी पुस्तकों की खपत विश्वविद्यालय-पुस्तकालयों, कालेज लाइब्रेरियों, डिस्ट्रिक्ट लाइब्रेरियों अथवा बड़े-बड़े पुस्तकालयों में होती है। कुछ अच्छे कोटि के हायरसैकेण्ड्री स्कूल भी इन्हें खरीद लेते हैं। यदि कोई प्रकाशक का प्रतिनिधि किसी शोध-प्रबन्ध को लेकर किसी माध्यमिक स्कूल अथवा प्राइमरी स्कूल में जाता है और वहाँ उसे खपाने का प्रयत्न करता है तो वहाँ उसके परिश्रम के निरर्थक जाने ही की अधिक सम्भावना है। उच्चकोटि के कुछ विद्वान्, जिनमें साहित्यिक पुस्तकें पढ़ने की रुचि होती है, भी साहित्यिक पुस्तकें खरीदते हैं परन्तु ऐसे बहुत थोड़े ही लोग हैं। हिन्दी के प्राध्यापकों को साहित्यिक पुस्तकें खरीदकर पढ़नी चाहिए लेकिन खेद का विषय है कि ९९ प्रतिशत प्राध्यापक हिन्दी की पुस्तकें खरीदकर नहीं पढ़ते। मंगनी अथवा Specimen का सहारा देखते हैं। केवल एक प्रतिशत ही हिन्दी के प्राध्यापक ऐसे होंगे जो हिन्दी की साहित्यिक पुस्तकें खरीदते हैं।

समस्त भारत में लगभग डेढ़ हज़ार सरकारी और गैर-सरकारी कालेज हैं, डिस्ट्रिक्ट लाइब्रेरी और अच्छे कोटि की लाइब्रेरियाँ भी लगभग पाँच सौ के अवश्य हैं। विश्वविद्यालयों की संख्या भी अब तो ५० तक जा पहुँची है। अतः किसी भी शोध-प्रबन्ध की कम से कम एक हज़ार प्रतियाँ तो आसानी से इनमें खपत हो ही जानी चाहिए; लेकिन ऐसा होता नहीं है। एक हज़ार का संस्करण तीन-तीन चार-चार वर्ष में कठिनता से बिक पाता है। इसके कुछेक कारण निम्न प्रकार के हो सकते हैं—

(क) प्रकाशक अपने प्रकाशन की सूचना ग्राहकों तक नहीं दे पाता। पहले तो उसे अपनी उस पुस्तक के ग्राहकों का पता ही नहीं होता और यदि होता भी है तो विज्ञापन के महँगे साधनों के कारण वह असमर्थ हो जाता है। अतः पुस्तक अपने आप ही कम बिकती है।

(ख) लोगों की प्रायः शिकायत रहती है कि साहित्यिक पुस्तकों का मूल्य अधिक रहता है। लेकिन प्रकाशक भी क्या करे जब वे छपती ही एक हज़ार हैं। उनका लागत मूल्य अधिक बैठता है, फिर उनकी पूँजी लौटेगी तीन-चार वर्ष में, तो स्वभावतः उनका प्रकाशक अधिक मूल्य रखेगा ही। अतः साहित्यिक पुस्तकों के कम बिकने का कारण उनका अधिकतम मूल्य भी है।

(ग) कमीशन की होड़ में साहित्यिक पुस्तकें अन्य सस्ती प्रकार की पुस्तकों से मात खा जाती हैं और कम बिक पाती हैं।

(घ) प्रायः ऐसा भी अनुभव किया गया है कि अपेक्षित साज-सज्जा के अभाव में भी पुस्तक कम बिक पाती है। प्रकाशक सस्ती छपाई के लालच में साधन-सम्पन्न और सुमुद्रण के लिए प्रख्यात प्रेसों के दरवाज़े नहीं खटखटाते और पुस्तक-मुद्रण के नाम पर सैकड़ों-हजारों रीम कागज काले करा लेते हैं।

(ङ) एक समय था जबकि शोध-प्रबन्धों को प्रायः प्रत्येक अच्छी लाइब्रेरी बिना हिचक के रख लेती थी

लेकिन अब ऐसी बात नहीं है। सभी शोध-प्रबन्ध अच्छे होते हैं यह धारणा समाप्त हो गई है। एक ही विषय पर मिलते-जुलते एक से विभिन्न विश्वविद्यालयों से अनेक शोध-प्रबन्ध आ रहे हैं। कहीं कृष्ण काव्य में माधुर्यो-पासना, कहीं ब्रजभाषा काव्य में मधुर भावना तो कहीं कृष्णकाव्य में मधुर उपासना, हेर-फेर से हैं सब एक ही। ग्राहक सोचता है कि कौन सा उपयोगी है, कौन सा लूँ। वह तो अपनी इच्छित विषय की एक ही पुस्तक लेना चाहता है। उसके सम्मुख आर्थिक दृष्टिकोण भी तो रहता है। कुछ ग्रन्थों में विषय का पिष्टपेषण अधिक होता है। अतः वे विषय-प्रतिपादन की दृष्टि से कमजोर होते हैं और कम खरीदे जाते हैं।

प्रकाशक को चाहिए कि आलोचनात्मक मोटे ग्रन्थों को खूब सोच-समझ कर ले। उसके विषय की परख उस विषय के विशेषज्ञ से करवा ले। चाहे वह शोध-प्रबन्ध ही क्यों न हो। जाँच करवा लेना आवश्यक है। यदि वह विषय की दृष्टि से तगड़ा है तो ही उसे प्रकाशनार्थ स्वीकार करें। क्योंकि इस प्रकार के ग्रन्थों में पूंजी थोड़ी नहीं लगती। एक ही गलत कार्य प्रकाशक को ले बैठ सकता है। इस समय लगभग अस्सी हिन्दी के डॉक्टर प्रति वर्ष तैयार हो रहे हैं। अतः प्रकाशक समझ लें कि शोध-प्रबन्धों की पाण्डु-लिपियों की कमी बिल्कुल नहीं है।

आलोचनात्मक मोटे ग्रन्थों का प्रकाशन अच्छे कागज पर शुद्ध और अच्छी छपाई से करना चाहिए। गैट-अप और बाइंडिग पर भी प्रकाशक को विशेष ध्यान देना चाहिए। ये पुस्तकें स्टैंडर्ड गिनी जाती हैं तथा पुस्तकालयों की स्थायी निधि होती हैं।

पुस्तक के प्रकाशित होते ही प्रत्येक विश्वविद्यालय कालेज और बड़ी लाइब्रेरी को सूचीपत्र अथवा पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से इसकी सूचना देना आवश्यक है। यद्यपि विज्ञापन के साधन महँगे हैं फिर भी प्रकाशक को यह कड़वा घूँट पीना ही चाहिए। इससे उसका लाभ ही होगा।

कुछेक व्यक्ति जो साहित्यिक पुस्तकों के पढ़ने की रुचि रखते हों उनकी सूची भी प्रकाशक को रखनी चाहिए और प्रत्येक इस प्रकार के नये प्रकाशन की सूचना उसे भी भेजनी चाहिए।

पुस्तक की खपत कहां है, किस प्रकार के व्यक्ति इसे खरीदेंगे, उनकी पाकेट इतना मूल्य बरदास्त कर सकेगी कि नहीं—इन बातों को पूर्व ही सोच लेना चाहिए। यदि पुस्तक की खपत केवल लाइब्रेरियों में ही होगी तो कुछ अधिक मूल्य भी खप सकता है लेकिन यदि वह सामान्य पाठक के लिए है तो कम ही मूल्य रखना चाहिए। मूल्य निर्धारण में प्रायः निम्नलिखित तंत्र से काम लिया जाता है—

२५% पुस्तक का लागत खर्च
१५% लेखक की रायल्टी
१५% विज्ञापन और प्रतिनिधि का खर्च
२५% पुस्तकविक्रेता का व्यापाराना कमीशन
५% रख-रखाव और भेजने का खर्च
१५% प्रकाशक का मुनाफा

१००% कुल योग

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य कम ही रखा जावे—ऐसा ही प्रयत्न प्रकाशक को करना चाहिए क्योंकि अधिक मूल्य की पुस्तक निस्सन्देह कम बिकती है।

उपर्युक्त तथ्यों से यह स्पष्ट है कि पुस्तक प्रकाशन का यह व्यवसाय अधिक लाभ का व्यापार नहीं है। यही कारण है कि यह व्यवसाय अपनी ओर बड़े-बड़े पूँजीपतियों को आर्कषित नहीं कर सकता। प्रकाशक कितना बचा पाता है यह उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है। अतः यह व्यवसाय-मात्र ही नहीं बल्कि एक सेवा-कार्य है, holi-work है, ज्ञान की आराधना भी है। फिर साहित्यिक पुस्तकों में तो यह अक्षरशः सत्य है जो बिकती ही कम हैं।

हिन्दी की प्रतिष्ठा का उत्सव

सुबोध ग्रन्थमाला रांची का उत्साह

सुबोध ग्रन्थमाला रांची ने २६ जनवरी को राष्ट्रभाषा के पद पर हिन्दी की प्रतिष्ठा का उत्सव मनाया और दो दिन तक अहिन्दी भाषाओं को हिन्दी सीखने के लिए हिन्दी अक्षर बोध नामक पुस्तक मुफ्त वितरित की। दो दिन तक हिन्दी की सभी पुस्तकों की फुटकर बिक्री पर ६ प्रतिशत की छूट भी दी गई।

ग्राम पुस्तकालय

श्री हरिश्चन्द्र व्यास

हमारे देश की ७०प्र०श०जनता गांवमें रहती है। भारत के पुनः निर्माण का वास्तविक अर्थ गांवों का पुनर्निर्माण मानना चाहिए। हमारे राष्ट्रपिता ने देशवासियों के दिलों को जीतने के लिए ग्रामीण जनता व हरिजन समाज को प्राथमिकता देकर सेवाग्राम जैसे स्थानों में रहना तथा बंगाल और बिहार के ग्रामों में घूमना ही श्रेयस्कर समझा।

पुस्तकालय-सेवा के बिना अशिक्षित ग्रामीण जनता की साक्षरता असम्भव सी दिखाई दे रही है। विश्व के महान उन्नत देश अमेरिका, आस्ट्रेलिया आदि ने अपने देशों में पुस्तकालयों का जाल-सा बिछा दिया है। इसी पुस्तकालय-जाल के माध्यम से वे भिन्न-भिन्न प्रकार की आयोजित सामाजिक प्रवृत्तियों की तरफ अग्रसर होकर देश के शासन में हाथ बढ़ाने में तत्परता दिखावेंगे। विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों व उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में ही केवलमात्र पुस्तकालय खोल देना ही आवश्यक नहीं है साथ ही साथ लोक-पुस्तकालयों की आवश्यकता है, जिनका अभी सर्वथा अभाव है।

ग्रामीणों को साक्षर व सुशिक्षित बनाने हेतु प्रजातंत्रीय शासन व पंचायत राज में हाथ बटाने के लिए पुस्तकालयों के न होने से बड़ी बाधा पहुँचती है।

ये पुस्तकालय इतनी बड़ी संख्या में हों कि जिस गाँव में एक हजार की आबादी हो वहाँ भी पुस्तकालय की स्थापना होनी चाहिये। इससे कम जनसंख्या के स्थानों पर चल पुस्तकालय द्वारा ग्रामीणों को पुस्तकालय-सेवा करनी चाहिए जिससे अंग्रेजी, हिन्दी तथा स्थानीय भाषाओं के जानने वालों की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें।

यदि सरकार व सामाजिक कार्यकर्त्ता गाँवों में पुस्तकालय की स्थापना करने के लिए उत्साह दिखायें तो ग्रामीण स्वयं उनकी स्थापना करते हुए संचालन विधि का प्रबन्ध कर सकते हैं। राजकीय सहायता का उद्देश्य केवल पथ प्रदर्शन व प्रोत्साहन मात्र है। गाँव के निवासी पुस्तकालयों के लिए धन व साधन एकत्रित करने में बड़ी ही तत्परता दिखा सकते हैं अगर उन्हें मान्यता-प्राप्त संस्थाओं द्वारा प्रोत्साहन मिले। ग्रामीण जनता के पास धन-दौलत न होते हुए भी वे विवाहादि उत्सवों पर दान-स्वरूप धन पुस्तकालय के लिए देने में नहीं हिचकिचायेंगे।

भारत व राज्य सरकार या यूनेस्को स्कीम के अन्तर्गत किसी गाँव में पुस्तकालय की स्थापना की स्वीकृति हो भी जाय तो उसके लिए मँगाई जाने वाली पुस्तकों के चयन में कुछ स्वार्थी लोग सस्ते साहित्य, सस्ते उपन्यास, गन्दी कविताएं, निकम्मे गद्य-पद्य ग्रन्थ, विज्ञान आदि के नाम पर ग्रामीणों के न समझने योग्य कुछ एक पुस्तकें खरीद लेते हैं। यही नहीं यहाँ तक कि विषैली मासिक पत्र-पत्रिकाएं, बासी साप्ताहिक और कुछ एक कुसंपादित दैनिक इन्हीं उपादानों के आधार पर कायम किये गये पुस्तकालय गांव में जीवन और ज्योति का नहीं, कलह, विलासिता और मृत्यु का वातावरण उपस्थित कर देंगे। गाँव में मुट्ठी भर लोग ज्ञान की पिपासा से आतुर होकर इन पुस्तकालयों की शरण में आते हैं और उन्हें अमृत के स्थान पर विष मिलता है। ऐसे संग्रह से पुस्तकालय गाँव का विनाश ही करेगा, जिसका तो न होना ही उत्तम है। जो दीपक घर में आग लगाये, उस दीपक से अन्धकार ही भला। भारत तथा प्रांतों की सरकारें भी पुस्तकें लिखवा कर छापती हैं और उन्हें गाँवों के पुस्तकालयों में भेजा जाता है। सैद्धांतिक रूप से तो उनका प्रयास अति उत्तम व सराहनीय है परन्तु सरकार की सहायता का कुछ लोग दिल खोलकर दुरुपयोग करते हैं। फलतः जिन पुस्तकों व लेखकों को बाजार में नहीं पूछा गया उनको गांवों के पुस्तकालयों में थोपा जाता है। खास तौर से उन गाँवों में जहाँ यातायात के साधन न हों, ताकि कोई देख तक न सकें। इसलिए सरकार को केवल प्रामाणिक ग्रन्थों का सस्ता

पुस्तकालय संस्करण ही प्रकाशित करना चाहिए जिससे कम मूल्यों पर अच्छा साहित्य प्राप्त हो सके।

गाँवों में पुस्तकालय की स्थापना करते समय इस बात का ख्याल रखना चाहिए की यही पुस्तकालय कुछ ही समय के बाद प्रगति करेंगे। उसी के अनुसार ही पुस्तकों का चयन हो, और उसी के अनुसार ही भवन का निर्माण हो। सभी पुस्तकें ग्रामीण जनों को लाभप्रद हों। पुस्तकें चुनते समय व्यावसायिक, आर्थिक विषयों जैसे कृषि, गृह उद्योग, सहकारिता, गृह विज्ञान, स्वास्थ्य तथा आमोद-प्रमोद और मनोरंजन के विषय पौराणिक, लोकप्रिय कृतियों, समाज शास्त्र, नागरिक शास्त्र सामाजिक प्रसंग तथा धार्मिक ग्रन्थों के चुनाव पर ही ध्यान दिया जाना चाहिये। पंचायत राज से संबंधित सभी पुस्तकों का संकलन वांछनीय है। पुस्तकें मनोरंजनात्मक ढंग से लिखी हों जिनमें सभी विषयों का समावेश हो तथा थके ग्रामीणों को मनोरंजन के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करवा सकें, ऐसी पुस्तकें ही लाभप्रद होंगी। पुस्तकें व्यावहारिक ज्ञान से भी परिपूर्ण हों।

गाँवों में पुस्तकालयों के लिए कम से कम एक स्वतंत्र भवन होना चाहिए, जिसमें पुस्तकालय के लिए सभी कक्षों की व्यवस्था न हो तो कम से कम ४५ फीट लम्बा और १८॥ फीट चौड़ा एक पुस्तकालय भवन हो, जिसमें एक स्टोर, एक पुस्तकालयाध्यक्ष नियुक्त हो। यदि सरकार अलग भवन की व्यवस्था न कर सके तो ऐसी दशा में पुस्तकालय 'सामुदायिक केन्द्र' के अन्तर्गत खोला जा सकता है। यदि गाँवों में यह केन्द्र स्थापित न हुआ है तो ग्राम स्कूल, पंचायत गृह वा ऐसे ग्रामीण का मकान चुने जहां सभी ग्रामीण जा सकें। लेकिन पुस्तकालय का भवन पक्का होना चाहिए अन्यथा आग आदि से नष्ट होने का भय बना रहेगा। भवन के सामने थोड़ी सी खुली जगह हो जहां सभी ग्रामीण श्रमदान द्वारा फूलपत्तियां, दूब आदि लगायें तथा जिसमें बैठकर वे आनन्द से पुस्तकालय

का उपयोग कर सकें। पुस्तकालय-भवन में प्रकाश व वायु प्रचुर मात्रा में आने की व्यवस्था होनी चाहिये।

पुस्तकों को रखने के लिए एक ही माप की अलमारियाँ हों जिनमें ३"×१०" का स्थान हो। एक आलमारी में लगभग २०० पुस्तकों को रखने की व्यवस्था होनी चाहिये। पुस्तकें विषयों के अनुसार अलग-अलग आलमारियों में रखी जायँ। पाठकों के लिए ५'×३' के नाप की चार मेजें, पत्र-पत्रिकाएं रखने के लिए १०×६ फीट की अलग मेजें होनी चाहिए। यदि सरकार इतना खर्च वहन करने को तैयार नहीं है तो ऐसी दशा में पुस्तकों के लिए लकड़ी की आलमारियां बनाकर रखी जा सकती हैं। दीवार में आलमारी नहीं होनी चाहिए। दीवार की आलमारियों में सील ज्यादा आती है, जिससे पुस्तकों की जिल्द खराब होने का तथा दीमक लगने का भय बना रहता है। पाठकों के लिए टेबुल के स्थान पर फर्श पर चटाई बिछाकर तथा पुस्तकालयाध्यक्ष के लिए दो चौकियों से कार्य चल सकता है।

गाँव के पुस्तकालय का ग्रामीणों की सुविधा के अनुसार ही संचालन किया जाय। यदि उनके काम के समय में पुस्तकालय खुलेगा तो उसका उपयोग नहीं हो पायेगा। यदि पुस्तकालय सामुदायिक केन्द्र के अधीन चलाया जाय तो केन्द्र द्वारा निर्धारित कार्यक्रमों पर ही होगा अन्यथा पुस्तकालय सुबह-शाम खुलना ही श्रेष्ठ रहेगा। उस समय ग्रामीण अपने-अपने खेतों व कुटीर उद्योगों के कार्यों से निवृत्त हो कर आ पायेंगे। ग्रामीण पुस्तकालयों को भी चाहिये कि वह नियम-उपनियम व सरकारी आदेशों आदि के झंझटों से अलग रहकर गाँव के पुस्तकालय के मुख्य उद्देश्य की तरफ ध्यान रखें। ग्रामीण भाइयों को शिक्षित करने से सम्बन्धित कार्यों को वह तत्परता से करें। यहाँ तक कि प्रौढ़ ग्रामीण जो पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं का उपयोग पढ़-कर नहीं कर पाते, उन्हें रात्रि के समय पढ़ाने की व्यवस्था करें। पुस्तकालय की स्थापना के साथ कम से कम १५ रजिस्टरों का रखना आवश्यक है। पुस्तकालय के बढ़ने के साथ रजिस्टरों की संख्या भी बढ़ सकती है। इन रजिस्टरों की सूची इस प्रकार है—(१) पुस्तक सूची (२) सदस्यों की सूची (३) कार्यवाही रजिस्टर (४) पुस्तकालय की

नियमावली (५) आय-व्यय रजिस्टर (६) आय व्यय की खाता बही (७) सूचना रजिस्टर (८) दैनिक हस्ताक्षर (६) पुस्तकालय से पुस्तकें बाहर देने का रजिस्टर (१०) पुस्तकालय से अन्य पत्र-व्यवहार करने का रजिस्टर (११) शिकायत रजिस्टर (१२) निरीक्षण बही (१३) मासिक, वार्षिक व विशेष चन्दे का रजिस्टर (१४) वितरण केन्द्रों व डिवीजनल पुस्तकालयों से उधार के रूप में मिलने वाली पुस्तकों का रजिस्टर (१५) पत्र-पत्रिकाओं का हिसाब रखने का रजिस्टर।

पुस्तकालयों का प्रमुख कार्य मात्र पुस्तक देना न होकर ग्रामीणों को अपने व्यक्तित्व को बनाते हुए पंचायत राज तथा प्रजातंत्र प्रणाली को समझने की तरफ जागरूक करना होना चाहिए। गांवों में यदि पढ़े-लिखे होते भी हैं तो बहुत ही कम तादाद में। उनका और शिक्षित लोगों का मेल भी नहीं हो पाता। पुस्तकालयाध्यक्ष का प्रमुख कार्य है कि अशिक्षित ग्रामीणों को सभाओं, गोष्ठियों का आयोजन करते हुए उनमें एकत्र करें। सभा संचालन व्यवस्था में स्थानीय ग्रामीण भाषा बोलने की आदत उनमें पैदा करनी चाहिये। इस प्रकार से सभाओं आदि के संचालन से उनमें शिष्टता व शिक्षा के प्रति प्रेम पैदा हो जायेगा। फिर उन्हें सुन्दर भाव-भरी पुस्तकें पढ़ाकर पुस्तकालय संचालन स्वयं बतायें तो स्वतः ही वे सब कुछ जानने को अग्रसर होंगे। इस प्रकार के वातावरण से ग्रामीणों में पुस्तकों के प्रति तृष्णा और औत्सुक्य जागृत होगा। पुस्तकालय में ग्रामीण व राष्ट्रीय उत्सवों का आयोजन होना चाहिए। ग्रामीण औरतों के धार्मिक पर्व पुस्तकालय में आयोजित किये जायँ जिनका संचालन भी ग्रामीण औरतों द्वारा ही हो। उन आयोजनों में पुस्तकालयाध्यक्ष केवल उनके प्रबन्ध में ही सहयोग करे। बालकों के विशेष प्रोग्रामों के आयोजनों का प्रबन्ध खेलकूद, लेख-प्रतियोगिता, पत्र-पत्रिकाओं के समाचारों के आधार पर करते रहने से बालक भी पुस्तकालय की ओर आकर्षित होंगे। भारतीय जनता पर सत्य, धर्म की छाप अभी भी गहरी है। इसलिए सभी धर्मों के साधु, सन्तों, मुल्लाओं व ज्ञानियों, विद्वानों आदि को पुस्तकालय के माध्यम से ग्रामीण जनता को नव-चेतना प्रदान करने हेतु बुलाते रहना चाहिए। इस प्रकार के कार्यक्रमों से गांवों के सभी उम्र के सभी धर्मों के लोग, पुस्तकालय-सेवा में दिलचस्पी रखेंगे और पुस्तकालय खुद में एक सामाजिक-समुदाय-केन्द्र ही नहीं, गाँव का केन्द्र बिन्दु बन जायेगा। यदि गांव में रोशनी का प्रबन्ध है तो रोशनी द्वारा अन्यथा बैटरी सैट रेडियो द्वारा देश-विदेश की खबरें; ग्रामीण लोगों के प्रोग्रामों को सुनवाते रहना चाहिए। समय-समय पर उपयोगी नाटक खेलना, प्रदर्शनी लगाना व व्यायाम प्रदर्शन आदि के आयोजन पुस्तकालय के तत्वावधान में होने चाहिए जिससे ग्रामीणों में शारीरिक, मानसिक, आत्मबल तथा बुद्धि का विकास होगा और आगे चलकर ये देश की जिम्मेदारियाँ वहन करने में समर्थ होंगे।

जब गाँव में पुस्तकालय की गतिविधियाँ बच्चों से लेकर बूढ़ों तक, बालिकाओं से लेकर वृद्ध औरतों तक के लिए हो जायेंगी तो पुस्तकालय संचालन व संगठन के लिए ऐसे व्यक्ति का होना आवश्यक है जो उच्चशिक्षा प्राप्त हो। खास तौर से ग्रामीण-वातावरण के बारे में वह पूर्ण जानकार हो और दिलचस्पी भी रखता हो।

यदि पुस्तकालयाध्यक्ष ग्रामीण जनता में रहने योग्य व पुस्तकालय ट्रेनिंग प्राप्त है तो पुस्तकालय का संगठन दिनों-दिन बढ़ता रहेगा और संचालन भी उचित ढंग से होगा। जिस प्रकार पुस्तकालय गाँव का केन्द्र होता है उसी प्रकार पुस्तकालयाध्यक्ष पुस्तकालय का। आज सरकार की योजनाओं का फल जितना मिलना चाहिए उतना न मिलने का एकमात्र कारण गाँवों के प्रति उदासीनता है। यदि राजनैतिक, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं व सरकार को देश सुधारने की योजना बनानी है तो सभी तरह की प्रवृत्तियाँ गाँवों में पुस्तकालयों के माध्यम से करनी होंगी। जिस प्रकार उदर स्वस्थ है तो शरीर स्वस्थ है ठीक उसी प्रकार भारत की ७० प्रतिशत जनता सुखी है तो देश भी खुशहाल हो सकता है।

सरकार चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में काफी धनराशि शिक्षा-सुधार में लगाने की व्यवस्था करने को है। गाँवों में पुस्तकालयाध्यक्ष की नियुक्ति की जाय। देश के विश्वविद्यालयों को भी बिना भेद-भाव के गाँवों के पुस्तकालयाध्यक्षों को अपने बौद्धिक विकास के लिए अन्य पुस्तकालयाध्यक्षों के समान पब्लिक परीक्षा में प्रविष्ट होने की अनुमति देनी चाहिए। कम वेतन पर काम करने वाला अयोग्य पुस्तकालयाध्यक्ष लाभ के स्थान पर हानि ही अधिक पहुँचायेगा। पुस्तकालय की समस्याओं का तत्परता से समाधान योग्य, प्रशिक्षण-प्राप्त पुस्तकालयाध्यक्ष ही कर सकता है।

('सेनानी' बीकानेर से साभार)



लोकप्रिय कवि 'बच्चन' की

१९२९ से लेकर १९६३ तक, पूरे पैंतीस बरस की
चुनी हुई श्रेष्ठतम कविताओं का अपूर्व संकलन

अभिनव सोपान

डिमाई साइज़ में, ४८ पौंड के कागज़ पर मुद्रित इस ग्रंथ की विशेषता यह है कि इसे स्वयं कविवर बच्चन ने संकलित किया है। ग्रंथ का चयन लेखक के पूरे साहित्य—लगभग इन बीसेक कविता-पुस्तकों में से किया गया है :

प्रारंभिक रचनाएं, मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा-निमन्त्रण, एकान्त संगीत, आकुल अन्तर, सतरंगिनी, बंगाल का काल, हलाहल, सूत की माला, खादी के फूल, मिलन यामिनी, प्रणय पत्रिका, धार के इधर-उधर, आरती और अंगारे, बुद्ध और नाचघर, त्रिभंगिमा, चार खेमे चौंसठ खूँटे आदि।

इस बृहत् काव्य संकलन में 'बच्चन' की सभी चुनीदा रचनाएं स्थान पा गई हैं। कवि बच्चन के समग्र साहित्य को एक साथ देखने अथवा उनकी कविताओं का रसपान करने के इच्छुक पाठकों एवं खोजी विद्यार्थियों व मर्मज्ञ विद्वानों के लिए यह ऐतिहासिक संकलन बहुत उपयोगी है। ग्रंथ के आरम्भ में 'बच्चन' एवं उनके काव्य पर एक गहरा विश्लेषण प्रस्तुत है : 'सोपान पर से' नामक भूमिका में। उक्त भूमिका के लेखक हैं हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि श्री सुमित्रानंदन पंत।

ग्रन्थ पुस्तकालयों के लिए संग्रहणीय है।

मूल्य : पन्द्रह रुपये

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

सम्पादक के नाम पत्र

उल्टी गंगा !!!

२६ जनवरी से हिन्दी राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित होने जा रही है। राजस्थान, मध्यप्रदेश, पंजाब, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, और विहार के अतिरिक्त कथित अहिन्दी भाषी प्रांतों से भी इस सिलसिले में उत्साहपूर्ण समाचार मिले हैं। ऐसा जान पड़ता है कि अंग्रेजों की गुलामी के बाद अंग्रेजी की गुलामी समाप्त होने के दिन आगये। परन्तु साप्ताहिक 'अमरज्योति' में प्रकाशित, हिन्दी में पाठ्य-पुस्तकों की सरकारी योजना पढ़ कर ऐसा प्रतीत हुआ कि हम एक ऐसा स्वप्न देख रहे हैं जिसका वास्तविकता से कोई संबंध नहीं है। उपरोक्त समाचार के अनुसार भारत के शिक्षा मंत्री श्री छागला ने लोक सभा में बताया है :

"शिक्षा मंत्रालय द्वारा स्थापित राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने स्कूल के बच्चों (कक्षा १ से ११ तक) के लिए निम्नलिखित विषयों पर पाठ्य-पुस्तकें निर्माण करने का कार्य अपने हाथों में लिया है : हिन्दी, इतिहास, भूगोल, संस्कृत, सामाजिक अध्ययन, गणित, भौतिकी, रसायन, जीव-विज्ञान, सामान्य विज्ञान, वाणिज्य, टेक्नोलाजी तथा कृषि। हिन्दी और संस्कृत के अतिरिक्त, अन्य विषयों की पाठ्य-पुस्तकें पहले अंग्रेजी में लिखी जा रही हैं। बाद में इनका हिन्दी में अनुवाद होगा।"

'अमरज्योति' के सुविज्ञ संपादकजी ने अंतिम वाक्य के सामने ब्राकेट में एक प्रश्नचिह्न स्थापित किया है। उसका स्पष्ट अर्थ यही है कि हिन्दी और संस्कृत के सिवा अन्य विषयों की पुस्तकें अंग्रेजी में लिखाने और हिन्दी में उनका अनुवाद करने की क्या तुक है ? यह उल्टी गंगा क्यों बहाई जा रही है ? ब्रिटिश शासन काल को जाने दीजिए, क्या १७ वर्ष की पूर्ण स्वतंत्रता ने भी हमें इस योग्य नहीं बनाया कि हम इतिहास, भूगोल, गणित और सामाजिक विज्ञान आदि विषयों की पहली से ११ वीं श्रेणी तक की पाठ्य-पुस्तकें अपनी भाषा में लिख सकें ? यदि सचाई यही है तो हिन्दी और संस्कृत की पाठ्य पुस्तकें भी पहले अंग्रेजी में लिखानी चाहिए और फिर उनका हिंदी में अनुवाद करना चाहिए। साथ ही साथ उस शिक्षा प्रणाली के संबंध में भी सोचना चाहिए जो हमें इतनी योग्यता भी नहीं दे सकी।

क्यों न हम केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के साथ प्रांतीय शिक्षा विभागों और सब विश्वविद्यालयों को थोड़े दिनों के लिए बंद कर दें और सोचें कि हमें क्या करना चाहिए ?

केन्द्रीय शिक्षा मंत्री विश्वविख्यात विधि विशेषज्ञ और ख्यातनामा शिक्षाशास्त्री हैं। केन्द्र के उपशिक्षा मंत्री श्री भक्तदर्शन का हिन्दी-प्रेम प्रत्येक दृष्टि से असंदिग्ध है, नीर-क्षीर का विवेक करने में उन्हें कभी कठिनाई नहीं होती। क्या आशा की जाय कि वे इस स्थिति पर विचार करेंगे और वही होगा जो होना चाहिए ?

—सुधीर
चौड़ा रास्ता, जयपुर

मराठों का इतिहास

महामना प्रकाशन मन्दिर, ७०५ मालवीय नगर इलाहाबाद के व्यवस्थापक महोदय श्री लक्ष्मीकान्त मालवीय ने प्रसिद्ध इतिहासकार ग्रान्ट डफ का 'मराठों का इतिहास' का एक अधूरा अथवा अपूर्ण संस्करण हिन्दी में प्रकाशित करके अपनी भूमिका में "इस पुस्तक के लिए मेरा आशीर्वाद" प्राप्त होने की बात लिखी है, जो बिलकुल गलत है। मैंने कभी भी ऐसी पुस्तक के लिए, जिसकी छपाई आदि बहुत रद्दी हो एवं पुस्तक अनेक त्रुटियों और दोषों से भरी हो, प्रकाशित करने के लिए कभी भी कोई सम्मति अथवा सलाह नहीं दी है।

अपने ऐतिहासिक ज्ञान के आधार पर मैं कह सकता हूँ कि अंग्रेजी की मूल पुस्तक जो तीन भागों में है उसका हिन्दी अनुवाद रायल आठपेजी (१०×६॥) इंच साइज

में कम से कम ९०० अथवा १००० पृष्ठ से कम में नहीं आ सकता, पर उपरोक्त संस्था द्वारा जो इस पुस्तक का अनुवाद छापा गया है, वह डिमाई आठ पेजी (९×५॥) इंच साइज के केवल ४०० पृष्ठ में ही समाप्त हुआ है। पुस्तक के मुखपृष्ठ पर न तो किसी खण्ड या भाग का उल्लेख है और न पुस्तक समाप्त की ही बात का कोई उल्लेख है। वास्तव में ग्रांट डफ का 'मराठों का इतिहास' सन् १८१८ ईसवी तब मराठाशाही के अन्तिम समय तक में समाप्त होता है, पर मालवीय जी की इस पुस्तक के मुखपृष्ठ पर सन् १७५५ तक का ही उल्लेख है। अतएव पाठकों को भ्रम और संदेह हो सकता है।

पुस्तक विक्रेता बन्धुओं एवं पाठकों के हित की दृष्टि से उचित जानकारी के लिए मेरा यह निवेदन है कि पुस्तक बिक्रेता अथवा पाठकगण पुस्तक खरीदते समय उपरोक्त बातों का ध्यान रखकर पुस्तकें खरीदें ताकि उनको किसी प्रकार की हानि न उठानी पड़े। साथ ही मालवीय जी से मेरा निवेदन है कि मेरे नाम से अनुचित लाभ उठाने की चेष्टा न करें।

—गिरिधर शुक्ल
आदर्श हिन्दी पुस्तकालय
४१९, अहियापुर, इलाहाबाद

स्वर्गीय 'नवीन' जी के पत्रों का संकलन

हिन्दी के शीर्षस्थ कवि, राष्ट्रीय आंदोलन के अपराजेय योद्धा और राष्ट्रभाषा के अध्वर्यू स्व०बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के सहस्राधिक निजी पत्र यत्र-तत्र विकीर्ण पड़े हुए हैं। मेरा विचार उनका संकलन-सम्पादन कर विधिवत् एवं व्यवस्थित मुद्रण-प्रकाशन का है। एतदर्थ, जिन महानुभावों के पास उनके अप्रकाशित पत्र हों, वे मेरे पास भेजने की अनुकम्पा करें। यदि वे चाहेंगे तो उनकी प्रतिलिपि कराकर उन्हें सुरक्षित रूप से वापस भेज दिया जावेगा। इस अनुष्ठान में संबंधित व्यक्तियों का सहयोग और सुझाव सादर प्रार्थित है।

—लक्ष्मीनारायण दुबे
एम० ए०, पी-एच० डी०, 'साहित्यरत्न'
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी-विभाग
सागर विश्वविद्यालय, सागर [म० प्र०]

जन्म-जयन्ती-सम्मान-समारोह

माखनलाल चतुर्वेदी का सम्मान

हिन्दी के वयोवृद्ध कवि पंडित माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा की गई हिन्दी साहित्य की सेवाओं के सम्मान में मध्य प्रदेश शासन साहित्य परिषद् के तत्वावधान में खंडवा में १६ जनवरी को एक समारोह का आयोजन किया गया।

चतुर्वेदीजी अस्वस्थता के कारण भाषण करने में असमर्थ थे इसलिए टेप पर रिकार्ड किया गया उनका भाषण सुनाया गया । सम्मान के प्रति आभार प्रकट करते हुए उन्होंने कहा : "मैं अपने को उस बागवान के रूप में पाता हूं जिसने बीज डाले हैं, पौधों को सँवारा है और उनके वृक्ष का रूप धारण कर लेने पर बागवान थककर छाया में विश्राम कर रहा है।"

म० प्र० शासन साहित्य परिषद् के अध्यक्ष पं० द्वारिका प्रसाद मिश्र ने ७५-वर्षीय कवि को ताम्रपत्र पर अभिनंदन भेंट किया तथा एक दुशाला व ७,५०० रुपये की थैली दी।

मुख्यमंत्री श्री मिश्र ने कहा कि चतुर्वेदीजी की कविताओं ने स्वतंत्रता-संग्राम के दिनों में जनता को प्रेरणा दी।

राज्य के राज्यपाल श्री पाटस्कर ने चतुर्वेदीजी का व्यक्तित्व अद्वितीय बताते हुए कहा कि उन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा मातृभूमि की सेवा की।

प्रसिद्ध समालोचक श्री नन्द-दुलारे वाजपेयी ने कहा कि चतुर्वेदीजी ने जीवनभर राष्ट्रीय धारा की कविता को कुंठित नहीं होने दिया। उन्होंने चतुर्वेदीजी को इस धारा का प्रणेता बताया।

श्री बेनीपुरी जन्म-दिवस समारोह

मुज़फ्फरपुर में १९६४ के दिसम्बर का अन्तिम सप्ताह सांस्कृतिक कार्यक्रमों की विशेषताओं का सप्ताह था, जिसकी तैयारी दो सप्ताह पूर्व से चल रही थी। प्रायः १५ व्यक्तियों की निवेदक-समिति के अग्रणी श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह ने कलम के जादूगर श्री रामवृक्ष बेनीपुरी जी का पैंसठवां जन्म-दिवस-समारोह मनाने की योजना बनायी, इस समायोजन के सम्बन्ध में विचार-विमर्श करने के लिए और श्री बेनीपुरीजी के दर्शन के हेतु श्रीयुत क्षेमचन्द्रजी सुमन भी मुज़फ्फरपुर पधारे, जो पुस्तक प्रदर्शनी के कार्य से पटना आये हुए थे। श्री क्षेमचन्द्र सुमन के स्वागत में मुज़फ्फरपुर के साहित्यकारों की गोष्ठी भी आयोजित हुई और बेनीपुरी प्रकाशन में सुमनजी का स्वागत सम्पन्न हुआ। इस गोष्ठी का आयोजन हिन्दी साहित्यकार-मंच की ओर से श्री वीरेन्द्र कुमार बेनीपुरी ने किया और बेनीपुरी प्रकाशन की ओर से चाय-पार्टी दी। श्री क्षेमचन्द्र सुमन के साथ बिहार प्रा० सा० सम्मेलन के अधिवेशन में श्री रामचन्द्र भारद्वाज भी पधारे थे।

२३ दिसम्बर को श्री बेनीपुरी जन्म-दिवस-समारोह



बेनीपुरी-अभिनन्दन के अवसर पर भाषण करते हुए सभा में श्री छबिनाथ पाण्डेय, मंच पर सर्वश्री बेनीपुरीजी, राजेन्द्रजी, सुरेश सुमन आदि

सन् १९६४ के महत्वपूर्ण नवीन प्रकाशन

संग्रहणीय एवं उपयोगी

रस-सिद्धांत डा. नगेन्द्र २०.००

मनीषी आचार्य एवं मूर्धन्य आलोचक डा० नगेन्द्र का बहुप्रतीक्षित अनुपम ग्रन्थ। हिन्दी-साहित्य की एक विशिष्ट उपलब्धि।

गुसाईं गुरुबानी [गुसाईं मत का गुरु-ग्रंथ] २०.००

गुसाईं सम्प्रदाय के प्रवर्तक बाबा साईंदास के प्रेरणात्मक उपदेशों का पहली बार मुद्रित रूप में प्रकाशन। संत साहित्य की इस अज्ञात और विलुप्त निधि का सर्वत्र स्वागत हुआ है।

ध्यान सम्प्रदाय डा. भरत सिंह उपाध्याय १०.००

हिन्दी में अपने विषय के इस पहले ग्रन्थ में ध्यान-सम्प्रदाय के इतिहास, साहित्य और उसकी साधना-पद्धति का विवेचन करते हुए भारतीय साहित्य और साधना के साथ उसकी तुलना की गई है। भारतीय साहित्य की प्रथम और विलुप्त कड़ी का उद्धार।

हिन्दी की छायावादी कविता का कला-विधान : डा. बलबीर सिंह 'रत्न' १२.५०

छायावादी कविता के कला-विधान का गवेषणात्मक अध्ययन। हिन्दी में पहली बार छाया-वादी शिल्पकला की तटस्थ विवेचना।

शरत्चन्द्र : व्यक्ति और साहित्यकार मन्मथनाथ गुप्त ६.००

शरतचन्द्रजी के बहुमुखी जीवन का खोजपूर्ण विवरण एवं उनके साहित्य पर गम्भीर एवं व्यापक विश्लेषण। हिन्दी में पहली बार शरत् का सही एवं सम्पूर्ण मूल्यांकन।

बच्चन : व्यक्ति और कवि सं. बांकेविहारी भटनागर ४.००

बच्चनजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक अनुपम कृति। मूर्धन्य साहित्यकारों के लेखों व बच्चनजी की श्रेष्ठतम कविताओं से समाहित। साहित्यकार अभिनंदन ग्रन्थमाला का प्रथम पुष्प।

जैनेन्द्र : व्यक्ति, कथाकार और चिंतक सं० बांकेविहारी भटनागर ५.००

जैनेन्द्रजी के जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक अनुपम कृति। जैनेन्द्रजी के विषय में प्रमुख साहित्यकारों के लेखों एवं जैनेन्द्रजी की अनुपम कृतियों से समाहित। साहित्यकार अभिनंदन ग्रंथमाला का दूसरा पुष्प।

लक्ष्मीनारायण मिश्र के सामाजिक नाटक भारतभूषण चड्ढा ५.००

मिश्रजी के सामाजिक नाटकों का सर्वांगीण विवेचन। डा० विजयेन्द्र स्नातक के शब्दों में विवेचन-विश्लेषण का स्तुत्य प्रयास।

कौशिकजी की इक्कीस कहानियाँ : सं. पीताम्बर नाथ कौशिक ४.५०

साहित्यिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण कौशिकजी की इक्कीस कहानियों का पहली बार पुस्तकाकार में प्रकाशन। अनूठा संग्रह।

विकास कार्यों में जन-सहयोग क्लेरेंस किंग ३.५०

सामुदायिक संगठन के विशेषज्ञ और राष्ट्रसंघ में सामुदायिक विकास के परामर्शदाता क्लेरेंस किंग की महत्वपूर्ण मार्गदर्शक कृति का सरल हिन्दी अनुवाद।

सम्पन्न हुआ । सुबह आठ बजे श्री बेनीपुरीजी के निवास पर साहित्यकार, नागरिक, अफसर, व्यापारी, प्राध्यापक और सम्बन्धियों की भीड़ लग गई और माल्यार्पण का कार्य भव्यता से सम्पन्न हुआ । ४ बजे शाम को बेनीपुरी प्रकाशन में स्थानीय पुस्तक-प्रदर्शनी का आयोजन था, तदनन्तर ५ बजे शाम को स्थानीय टाउन हाल में सजावट और रंग रोशनी के बीच समारोह की मुख्य सभा का आरम्भ हुआ । सभापति श्री छविनाथ पांडेय और स्वागताध्यक्ष आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री थे, जो अनन्तर कवि-सम्मेलन के भी सभापति हुए । हिन्दी-साहित्यकार मंच, सुहृदसंघ, लोक कल्याणकेन्द्र और समारोह समिति की ओर से श्री बेनीपुरीजी को अभिनन्दन पत्र अर्पित किये गये । स्नेहांजलिभाषण और कवि-सम्मेलन में भाग लेने वाले मुख्य व्यक्ति थे : सर्व श्री आरसी प्रसाद सिंह, ओंकार शरद, जयकिशोर नारायण सिंह, रामचन्द्र भारद्वाज, ब्रजकिशोर नारायण, रुद्र, परिमल, प्रि० कपिल, शिवचन्द्रप्रताप, राम जीवन शर्मा जीवन, रामस्वार्थ चौधरी, राजेन्द्रप्रसाद सिंह, सुरेशचन्द्र सुमन, पांडेय आशुतोष और राजकमल चौधरी, इत्यादि ।

जैनेन्द्रजी का अभिनंदन

२ जनवरी को नई दिल्ली के हिन्दी भवन की ओर से कांस्टिट्यूशन क्लब में प्रसिद्ध साहित्यकार जैनेन्द्र जी की षष्ठि पूर्ति समारोह में अनेक मूर्धन्य साहित्यकारों ने जैनेन्द्रजी का अभिनंदन किया ।

समारोह का उद्‌घाटन करते हुए श्री वियोगी हरि ने कहा कि जैनेन्द्रजी की कृतियों ने हिन्दी-जगत् में विशिष्ट स्थान बना लिया है । स्वर्गीय राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन ने 'भारत रत्न' प्रदान किये जाने के समय कहा कि मुझे तो हिन्दी-जगत् भूल जायेगा इसलिए यह सम्मान कविवर सुमित्रानन्दन पंत को मिलना चाहिए जो अपनी कृतियों के कारण साहित्य-जगत् में अमर रहेंगे ।

आरम्भ में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की ओर से अहिन्दी-भाषी कन्याओं ने 'एक हृदय हो भारत जननी' गीत प्रस्तुत किया । सतीश वर्मा और साथियों ने महाकवि निराला की सरस्वती वंदना 'वीणावादिनी वर दे' प्रस्तुत की ।

श्री वियोगी हरि ने जैनेन्द्रजी को तिलक किया तथा नारियल भेंट किया और ६० पुष्पों की माला पहनाई ।

नेशनल पब्लिशिंग हाउस के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल मलिक ने 'जैनेन्द्र : व्यक्तित्व और कृतित्व' पुस्तक भेंट की । राजधानी की प्रसिद्ध कलाकार श्रीमती मंदाकिनी ने जैनेन्द्रजी का रेखाचित्र उन्हें भेंट किया ।

सुप्रसिद्ध कहानीकार श्री कमलेश्वर ने कहा कि श्री जैनेन्द्र ने हिन्दी भाषा को एक अनोखी छटा दी जिसे आने वाली पीढ़ी हमेशा याद रखेगी ।

डा० विजयेन्द्र स्नातक ने कहा कि स्वामी विवेकानन्द की तरह श्री जैनेन्द्र को विचारकों की श्रेणी में रखा जा सकता है । हिन्दी को नई दिशा देने वाले तथा श्री प्रेमचन्द के बाद हिन्दी कथा में क्रांति उत्पन्न करने वाले वे एकमात्र व्यक्ति हैं ।

श्री अक्षय कुमार जैन ने कहा कि श्री जैनेन्द्र के ग्रन्थ चांद से शीतल और पारस पत्थर के समान हैं जो किसी चीज़ को छूने से सोना बना देता है ।

केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री डा० सुशीला नैयर ने कहा कि कोई शक्ति भी हिन्दी की प्रगति को रोक नहीं सकती । हम चाहे यही समझते रहें कि हिन्दी का प्रसार नहीं हो रहा है परंतु वास्तविकता यह है कि हिन्दी अपनी शक्ति के कारण बराबर बढ़ रही है ।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री वृन्दावनलाल वर्मा ने कहा कि अब तक हमारे देश में साहित्यकारों को पर्याप्त सम्मान नहीं मिल पाया । इससे बड़ा कलंक हमारे लिए क्या हो सकता है । आशा है कि भविष्य में साहित्यकारों को उचित सम्मान मिलेगा ।

श्री जैनेन्द्र ने इस अवसर पर साहित्यकारों और लेखकों से अपील की कि वे अपनी लेखनी का उपयोग पूरी सच्चाई और ईमानदारी से करें ।

समारोह में राष्ट्रपति तथा प्रधान-मंत्री की ओर से आए शुभकामना सन्देश सुनाये गए । हिंदी भवन के अर्थ-मंत्री श्री ताराचंद खंडेलवाल ने आभार प्रदर्शित करते हुए कहा कि साहित्यकारों का अभिनन्दन किसी भी संस्था के लिए गर्व का विषय है ।

इस अवसर पर रेडियो कलाकारों ने जैनेन्द्रजी लिखित 'त्याग-पत्र' का संक्षिप्त नाट्य रूपान्तर प्रस्तुत किया।

मध्यप्रदेश के विशिष्ट साहित्यकारों का सम्मान

मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन में सम्मेलन की ओर से हिन्दी के चार साहित्यकारों : श्री हरिकृष्ण प्रेमी, श्रीमती उषा देवी मित्रा, श्री रामानुज लाल श्रीवास्तव तथा पण्डित मुकुटधर पाण्डेय को उनकी बहुमूल्य साहित्य-सेवाओं के लिए विशेष मानपत्र भेंट किये गये। मानपत्र के अतिरिक्त उन्हें एक-एक रेशमी दुशाला भी भेंट किया गया।

मुख्यमंत्री श्री द्वारिकाप्रसाद मिश्र ने अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए कहा कि हिन्दी में राष्ट्रभाषा होने के सारे गुण हैं। उन्होंने उन लोगों की आलोचना की जो हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनने देना नहीं चाहते। श्री मिश्र ने कहा—हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली के विकास और पारिभाषिक शब्दों की एकरूपता से लिए पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन में पूरा समन्वय होना चाहिए। साथ ही हिन्दी-भाषी राज्य में हिन्दी का विकास वैज्ञानिक एवं समन्वित आधार पर होना चाहिए। उन्होंने हिन्दी के साहित्यकारों से अपील की कि वे राष्ट्रीय एकता के लिए कार्य करें। उन्हें देश की अन्य भाषाओं का अध्ययन करना चाहिए।

सभी क्षेत्रों में हिन्दी के प्रयोग पर बल दें

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष डा० धीरेन्द्र वर्मा ने अपने उद्घाटन भाषण में हिंदी भाषी राज्यों के हिंदी प्रचारकों से अनुरोध किया कि वे सभी क्षेत्रों में हिंदी के प्रयोग के लिए पूरी शक्ति से कार्य करें।

श्री गुरुदत्त का सार्वजनिक अभिनंदन

हिन्दी के लोकप्रिय एवं मूर्धन्य उपन्यासकार वैद्य गुरुदत्त का उनके ७१वें जन्म दिवस के अवसर पर राजधानी में सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। यह समारोह दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में रीडर डा० विजयेन्द्र स्नातक की अध्यक्षता में दिनांक १०-१-६५ को सायंकाल दिल्ली पब्लिक लायब्रेरी में आयोजित किया

गया था। समारोह का उद्घाटन ख्यातिप्राप्त उपन्यासकार एवं विचारक श्री जैनेन्द्र जी ने किया।

समारोह का उद्घाटन करते हुए श्री जैनेन्द्रजी ने कहा कि गुरुदत्त जी का प्रथम उपन्यास 'स्वाधीनता के पथ पर' पढ़कर मैं बहुत प्रभावित हुआ और मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि यदि मैं इस उपन्यासकार के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त न करूँ तो यह मेरे स्वयं के प्रति ही अन्याय हो जावेगा। उन्होंने कहा कि किंचिन्मात्र भी विलम्ब न करते हुए मैंने अपनी श्रद्धा पत्र द्वारा व्यक्त की। उनका कहना था कि प्रेमचन्द के बाद गुरुदत्त जी मुझे सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार प्रतीत होते हैं।

दिल्ली नगर निगम के निगमायुक्त श्री भगवानसिंह ने गुरुदत्तजी को अपनी भावांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उड़ीसा से लेकर कश्मीर तक के अपने सरकारी सेवाकाल में जहां कहीं भी वे गये वहीं घर-घर में उन्होंने गुरुदत्त जी के उपन्यास पढ़े जाते देखे। उन्होंने कहा कि वैद्य गुरुदत्त से अधिक लोकप्रिय उपन्यासकार इस समय हिन्दी में अन्य कोई नहीं है।

राजभाषा आयोग के सदस्य पं० मौलिचन्द्र शर्मा ने कहा कि गुरुदत्त जी के उपन्यासों में सत्यं, शिवं और सुन्दरम् ये तीनों गुण उपलब्ध हैं। वैद्य जी भारतीय संस्कृति के प्रतीक हैं और उसी का गौरवगान करते हुए उन्होंने राष्ट्रीयता का पोषण किया है। वे आर्ष जीवन व्यतीत करते हुए पथ प्रदर्शन कर रहे हैं।

दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष और श्रेष्ठ समालोचक डाक्टर नगेन्द्र ने कहा कि गुरुदत्त जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से नैतिक मूल्यों के निर्माण में जो कार्य किया है वह स्तुत्य है। उन्होंने बताया कि उपन्यास दो प्रकार के होते हैं—मनोरंजन-प्रधान और उपदेश-प्रधान। जिस प्रकार देवकीनन्दन खत्री के उपन्यासों को मनोरंजन प्रधान कहा जावेगा, उसी प्रकार गुरुदत्त जी के उपन्यास उपदेश प्रधान हैं। इनके उपन्यास उपदेश प्रधान होते हुए भी अन्य सभी औपन्यासिक गुणों से समन्वित होते हैं। ७१ वर्ष की आयु में भी वे हिन्दी को श्रेष्ठ उपन्यास प्रदान कर रहे हैं यह हमारे लिए गौरव की बात है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष श्री वसन्तकृष्ण ओक ने सम्मेलन की ओर से वैद्य जी का अभिनन्दन किया और वैद्य जी को ऋषियों की पंक्ति में आसीन किया।

दिल्ली नगर निगम के आयुर्वेदिक एवं यूनानी औषधालयों के अधीक्षक कविराज केशवप्रसाद आत्रेय ने कहा कि जिस प्रकार वैद्य जी ने हिन्दी के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया है उसी प्रकार चिकित्साक्षेत्र में भी किया है। दिल्ली में आज आयुर्वेद एवं यूनानी को जो कुछ भी स्थान प्राप्त है उसका बहुत बड़ा श्रेय गुरुदत्त जी को है। आत्रेय जी ने अपनी भावांजलि अर्पित करते हुए कहा कि मेरे लिए तो वे पितृतुल्य पूज्य हैं।

भारतीय जनसंघ के उत्तरांचल विभाग के मंत्री तथा इतिहास के प्राध्यापक बलराज मधोक ने अपनी भावांजलि अर्पित करते हुए कहा कि मेरे लिए जीवन के सभी क्षेत्रों में वे प्रेरणास्रोत रहे हैं। उनके मार्गदर्शन के बिना हमारी राजनीति भी अधूरी रह जाती।

हंसराज कालेज तथा डी० ए० बी० कालेज के हिन्दी के प्राध्यापक डा० रामस्वरूप तथा डा० कृष्णदेव झारी ने भी वैद्य जी के साहित्य की अध्यापकीय एवं पाठकीय दृष्टि से सराहना की। डा० झारी ने इस बात पर असंतोष व्यक्त किया कि इतने समुन्नत साहित्यकार की ओर अभी तक भी समालोचकों का ध्यान आकर्षित नहीं हुआ।

सभा के अध्यक्ष डा० विजयेन्द्र स्नातक ने कहा कि कथारस की दृष्टि से प्रेमचन्द के बाद वैद्य गुरुदत्त का स्थान सर्वोच्च है। उनके उपन्यासों के पाठक आबाल वृद्ध सभी वर्गों के हैं। आदर्श-प्रधान होते हुए भी उनके उपन्यासों ने इतनी लोकप्रियता प्राप्त की यह वास्तव में चमत्कार ही है।

सभा के संयोजक दिल्ली नगर निगम के काउंसिलर श्री विजयकुमार मलहोत्रा ने एक रहस्योद्घाटन करते हुए बताया कि यूनेस्को द्वारा किये गये एक सर्वेक्षण में वैद्य गुरुदत्त भारत के सर्वप्रसिद्ध उपन्यासकार पाये गये हैं।

—अशोक कौशिक

उपन्यासकार श्री जोशी सम्मानित

बीकानेर में २२ जनवरी को सादूल राजस्थानी रिसर्च इस्टीट्यूट की ओर से श्री अगरचन्द नाहटा के ग्रंथालय में आयोजित एक भव्य समारोह में राजस्थानी भाषा के प्रथम उपन्यासकार एवं सुप्रसिद्ध कहानीकार श्री श्रीलाल नथमल जोशी को श्री हजारीमल बांठिया पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। उक्त पुरस्कार गत चार वर्षों से राजस्थान के सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार को प्रतिवर्ष दिया जाता रहा है। समारोहकी अध्यक्षता करते हुए श्रीमुरलीधर व्यास ने राजस्थानी के प्रति श्री जोशी द्वारा की गयी सेवाओं की सराहना की। इस अवसर पर एक कवि-गोष्ठी का आयोजन भी किया गया। जिसमें सर्वश्री गिरधारी सिंह पड़िहार, भीम पांडिया व ओंकार पारीक की कविताएँ विशेष प्रभावोत्पादक रहीं।

जयपुर में कालीदास जयन्ती समारोह

राजस्थान के वयोवृद्ध शिक्षा-मंत्री श्री हरिभाऊ उपाध्याय की अध्यक्षता में, स्थानीय रवीन्द्र रंगमंच पर २० जनवरी को संस्कृत शिक्षा समिति के तत्वावधान में, महाकवि कालीदास जयन्ती समारोह आयोजित किया गया। समारोह का उद्घाटन राजस्थान विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० मोहनसिंह मेहता ने कालीदास के चित्र का अनावरण करके किया।

इस अवसर पर डा० मेहता ने कहा कि जयपुर सदा से संस्कृत के विद्वानों का, जिन्हें हमारी प्राचीन संस्कृति का गहरा ज्ञान था, केन्द्र रहा है। अतः यहाँ कालीदास जयन्ती मनाना गर्व की बात है। इसी दृष्टि से राजस्थान विश्वविद्यालय में गत पाँच वर्षों से संस्कृत शिक्षा आरम्भ की गई है।

इस अवसर पर छात्र एवं छात्राओं द्वारा कालीदास के तीन संस्कृत नाटकों की झलकियाँ प्रस्तुत की गईं जिनमें सर्वश्रेष्ठ अभिनय के लिए श्री नन्द किशोर गौतम, कु० प्रमिला मानिक व कुमारी पुष्पलता जैन को संस्कृत समिति की ओर से पारितोषिक दिया जायगा।

अन्त में शिक्षा मंत्री श्री उपाध्याय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि अगले वर्ष कालीदास जयन्ती राजस्थान

की शोभा के अनुरूप उचित तिथि पर मनाई जायगी तथ संस्कृत के पंडितों का प्राचीन विधि से शास्त्रार्थ भी रख जायगा।

शाजापुर (उज्जैन) में 'नवीन' जयन्ती-समारोह

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था सद्विचार निकेतन द्वारा आयोजित एक भव्यसमारोह में हिन्दी के युग प्रवर्तक कवि स्वर्गीय पं० बालकृष्ण शर्मा नवीन को श्रद्धांजलियां अर्पित की गयीं। समारोह की अध्यक्षता राज्य के वित्त एवं भाषा विभाग के मन्त्री पं० शम्भूनाथ शुक्ल कर रहे थे। समारोह का उद्घाटन करते हुए राज्य के उद्योग एवं वाणिज्य मन्त्री डा० एस० डी० शर्मा ने कहा कि कविवर नवीन के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि भारत में एक ऐसे समाज का निर्माण करके अर्पित की जा सकती है जिसमें उन कठिनाइयों के लिए कोई स्थान न हो, जिनसे कविवर 'नवीन' को गुजरना पड़ा। नवीन जी की रचनाओं में से अनेक उद्धरण प्रस्तुत करते हुए डा० शिवमंगलसिंह जी सुमन ने उनके अलमस्ती भरे साहित्यिक व्यक्तित्व के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की।

अपने अध्यक्ष पद से पं० शम्भूनाथ शुक्ल ने कहा कि प्रगतिशील समाज में राजनीतिज्ञ का स्थान साहित्यकार से नीचे होना चाहिए। नवीन जी ने अपने साहित्य को सदा राजनीति से ऊपर रखा। राजनीतिज्ञ 'नवीन' को लोग भले ही भूल जायें, किन्तु साहित्यिक कवि नवीन को कभी विस्मरण नहीं किया जा सकेगा।

हरिऔध जन्मशती-समारोह

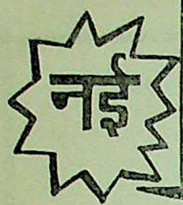
आजमगढ़ में 'हरिऔध जन्मशती-समारोह' मनाने के लिए जिले तथा नगर की समस्त साहित्यिक संस्थाओं, साहित्य-सेवियों एवं हिन्दी-प्रेमियों की बैठक में निश्चय हुआ कि वसन्तोत्सव से प्रारम्भ होनेवाले कलाभवन के वार्षिकोत्सव (हरिऔध-प्रभा) से ही इस वर्ष हरिऔध शती-समारोह का शुभारम्भ माना जाय और आगामी बैसाख कृष्ण तृतीया, (२८ अप्रेल, १९६५) को पड़नेवाली हरिऔध जी की जन्मतिथि को उसका समापन हो। दोनों की मध्यावधि में मनाये जानेवाले विभिन्न तिथियों के कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिए तात्कालिक कार्यवाहक समिति बनाई गई।

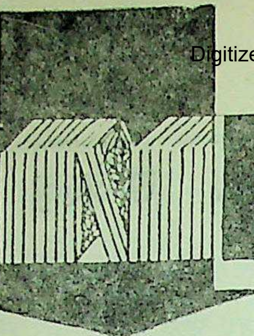
ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, आकर्षक एवं सजिल्द बाल-साहित्य

१.	रसभरी कहानियां	—	मनहर चौहान	२.००
२.	साहस और पराक्रम की कहानियां	—	मनहर चौहान	२.५०
३.	कहानियाँ ही कहानियाँ	—	मनहर चौहान	२.५०
४.	पन्नी का मुकुट	—	रमेश 'भाई'	२.००
५.	प्यारी प्यारी कहानियाँ	—	धर्मपाल शास्त्री	२.००
६.	सुन्दर सुन्दर कहानियाँ	—	धर्मपाल शास्त्री	१.५०
७.	रचनात्मक कहानियाँ	—	कमला गौतम	२.००
८.	सिपहसालार खान	—	विश्वमित्र शर्मा	१.५०
९.	सोरों का संत (बाल उपन्यास) (सन्त तुलसीदास के जीवन पर आधारित बाल उपन्यास)	—	रामकृष्ण शर्मा	२.००
१०.	बटुक बहादुर (बाल उपन्यास)	—	रामकृष्ण शर्मा	२.००
११.	हीरे की अंगूठी (बाल उपन्यास)	—	योगराज थानी	१.५०
१२.	अच्छी अच्छी कहानियाँ	—	योगराज थानी	१.५०
१३.	नयी नयी कहानियाँ	—	योगराज थानी	१.५०
१४.	छोटी बड़ी कहानियाँ	—	योगराज थानी	१.५०
१५.	पशु-पक्षियों की कहानियाँ	—	योगराज थानी	१.५०
१६.	नयी पुरानी कहानियाँ	—	योगराज थानी	१.५०
१७.	चाचा के आशा दीप	—	सावित्री देवी वर्मा	१.५०
१८.	अपना विकास आप कीजिए (दिल्ली राज्य शिक्षा विभाग द्वारा पुरस्कृत)	—	श्याम कपूर	१.५०
१९.	अपना चरित्र-निर्माण आप कीजिए (दो रंगों में)	—	श्याम कपूर	२.००
२०.	अपना जीवन निर्माण आप कीजिए	—	श्याम कपूर	२.००
२१.	वैज्ञानिक वरदान	—	धर्मपाल शास्त्री	२.५०
२२.	शिक्षाप्रद एकांकी	—	नन्दलाल चत्ता	१.५०
२३.	बाल एकांकी	—	सुखपाल गुप्त	०.५६
२४.	कथा कहानी	—	नन्दलाल चत्ता	०.५६
२५.	नये ज्ञान की नयी कथाएँ	—	श्री व्यथित हृदय	१.२५

आर्य बुक डिपो

३०, नाई वाला, करौल बाग, नई दिल्ली—५





हिन्द पॉकेट बुक्स

● *स्वप्नमयी* (उपन्यास) — विष्णु प्रभाकर

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत इस उपन्यास में एक ऐसी युवती की कहानी है जो भावुक और ऊंची आकांक्षाओं के स्वप्न लेती है । यह यथार्थ और कल्पना के संघर्ष की सशक्त कहानी है ।

● *ब्राह्मण की बेटी* (उपन्यास) — शरत्चन्द्र

ऐसे दो प्रेमियों की मार्मिक कथा जो समाज की रूढ़ियों के शिकार हो जाते हैं ।

● *लम्बी लड़की* (रोमांटिक कहानियाँ) — राजेन्द्रसिंह बेदी

बेदी उन साहित्यकारों में से हैं जिनकी रचनाएं उनके जीवन-काल में ही क्लासिक का दर्जा प्राप्त कर गईं । यह बेदी की चार लम्बी रोमांटिक कहानियों का नवीनतम संग्रह है ।

● *दीवार* (नाटक) — पृथ्वीराज कपूर

प्रसिद्ध सिने अभिनेता पृथ्वीराज कपूर द्वारा प्रस्तुत एवं विभाजन की पृष्ठभूमि पर लिखे इस नाटक ने जितनी सफलता पाई है उतनी पिछले पचास वर्षों में किसी दूसरे नाटक ने नहीं ।

● *विश्वयुद्ध की रोमांचकारी कहानियां* — सं० परदेशी

इस पुस्तक में दूसरे महायुद्ध से सम्बन्धित सच्ची और अज्ञात, रहस्यपूर्ण और मर्मभेदी घटनाएं अथवा कहानियां संकलित हैं ।

● *काका की फुलझड़ियां* (हास्य-काव्य) — काका हाथरसी

हास्य-काव्य के सर्वप्रसिद्ध कवि काका हाथरसी की २०० से अधिक चुनी हुई बेजोड़ कुंडलियों का अनूठा संकलन जिसे पढ़ते-पढ़ते पाठक हँसी से लोटपोट हो जाता है ।

● *ओलिम्पिक खेल* — हरिमोहन

इस पुस्तक में ओलिम्पिक खेलों की प्राचीन परम्परा की मनोरंजक झांकी और साथ ही १८९६ से लेकर १९६४ तक में हुए अठारह ओलिम्पिक खेलों के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी दी गई है ।

● *पाकिस्तान की उर्दू शायरी* — सं० प्रकाश पण्डित

उर्दू शायरी के अधिकारी सम्पादक प्रकाश पण्डित का एक और नया तोहफ़ा । पाकिस्तान के लोकप्रिय शायरों की फड़कती हुई नज़्मों, गज़लों, रुबाइयों, क़तओं और दोहों का तरोताज़ा गुलदस्ता ।

प्रत्येक का मूल्य एक रुपया

● **प्रतिशोध** (उपन्यास) — गुरुदत्त — पृष्ठ-संख्या : लगभग २५० — २.००

सुप्रसिद्ध उपन्यासकार गुरुदत्त जी का यह नवीनतम उपन्यास है । इस उपन्यास का आधार है दो सामन्ती परिवारों के आपसी झगड़ों का परिणाम—जिसमें झूठी शान-बान और झूठी इज़्ज़त को बनाए रखने के लिए पीढ़ियों की शत्रुता मोल ले लेने वालों पर तीखा व्यंग्य किया गया है ।



हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा० लि०, जी० टी० रोड
शाहदरा, दिल्ली-३२

काम के पते

असम के कालेज

ये पते हमें अंग्रेजी में मिले हैं। शुद्धता की दृष्टि से अंग्रेजी में ही दिये जा रहे हैं।

University Law College, Gauhati.
Abhayapuri College, Abhayapuri.
Anandaram Dhekial P. College, Nowgong.
Arya Vidyapith College, Gauhati.
Assam Agricultural College, Jorhat.
Assam Engineering College, Gauhati.
Assam Medical College, Dibrugarh.
Assam Veterinary College, Gauhati.
Bajali College, Pathsala.
B. Barooah College, Gauhati.
B. N. College, Dhubri.
Bongaigaon College, Goalpara.
Biswanath College, Charali.
Barnagar College, Sarbhog.
Cotton College, Gauhati.
Commerce College, Gauhati.
C. K. Bezbaruah College, Teok.
Darrang College, Tezpur.
D. C. Barua Girls' College, Jorhat.
D. H. S. Kanoi College, Dibrugarh.
D. H. S. K. Commerce College, Dibrugarh.
D. M. College, Imphal.
D. R. College, Golaghat.
Dergaon College, Kamalabari.
Dakhin Kamrup College. Palasbari.
Goalpara College, Goalpara.
Gurucharan College, Silchar.
Gauripur College, Goalpara.
Gargaon College, Simaluguri.
Gauhati College, Gauhati.
Handique Girls' College, Gauhati.
Fazl Ali College, Mokokchong.
Haflong College, Haflong.
Hojai College, Hojai.
Imphal College, Imphal.
J. B. College, Jorhat.
Jorhat Engineering College, Jorhat.
Jhanji College, Sibsagar.
Jamaguri College, P.O. Jamaginighat (Darrag).
Jorhat College, Jorhat.
Jorhat Law College, Jorhat.
Karimganj College, Karimganj.
Kokrajhar College, Kokrajhar.
Kohima College, Kohima (Nagaland).
Lady Keane Girls' College, Shillong.
Lumding College, Lumding.
L. C. Todi Girls' College, Nowgong.
Mangaldoi College, Mangaldoi.
M. C. College, Barpeta.
Medical College, Gauhati.

Medical College, Dibrugarh.
Majuli College, Majuli.
Modern College, Imphal.
Nalbari College, Nalbari.
North Lakhimpur College, North Lakhimpur.
Nowgong College, Nowgong.
N. K. Saikia College, Titabar.
North Gauhati College, North Gauhati.
N. N. College, Bilasipara.
North Bank College, Ghilamara.
North Lakhimpur.
Nehru College, Boko.
New Jorhat College, Jorhat.
Post-Graduate Training College, Jorhat.
Pragjyotish College, Gauhati.
Pachhunga Memorial College, Aijal.
Pandu College, Pandu.
Pashighat College, NEFA, Marigaon.
Rabindra Sadan Girls' College, Karimganj.
Oriental College, Imphal (Manipur).
Rangiya College, Rangiya.
Shillong College, Shillong.
Sibsagar College, Sibsagar.
S. S. College, Hailakandi.
St. Anthony's College, Shillong.
St. Edmund's College, Shillong.
St. Mary College, Shillong.
St. Mary's College, Shillong.
Sankardev College, Shillong.
Silchar College, Silchar.
Sielmal Christian College, Churachanayur (Manipur).
Sualkuchi Budram Madhab Satradhikar College, Sualkuchi.
Shillong Law College, Shillong.
Tinsukia College, Tinsukia.
Tura College, Tura.
Tihu College, Tihu.
Union Christian College, Barpani.
Women's College, Silchar.

•

हिन्दी में तार देने की सरल विधि

हिन्दी के तार : कुछ नमूने

हिन्दी हम बोलते हैं, समझते हैं। फिर भी कभी-कभी हिन्दी में तार लिखते झिझक होती है। बेकार ही यह डर रहता है कि तार हिन्दी में शायद इतना अच्छा न लिखा जाय, जितना अंग्रेजी में। देखिए, हिन्दी में तार लिखना कितना सरल है और कितना स्वाभाविक :

१. कल सुबह पहुंचरहाहूँ स्टेशनपर मिलिए
२. आज मद्रास उतराहूं चार दिन ठहरूंगा
३. परीक्षाफीस सोलहतक देनीहै भेजिए
४. रमेशकी वर्षगांठ तीस जूनको दर्शनदें
५. शीघ्र आइए तबीयत खराब
६. बारातके स्वागतका प्रबन्ध करदियागयाहै
७. क्षमाकरें आवश्यक कामसे न आसकूंगा वरवधूको आशीर्वाद
८. बुकिंग कल खुलाहै माल भेजरहेहैं
९. माल अब नहीं चाहिए आर्डर रद्दकरदें
१०. चैक नहीं भुना नकद भेजिए
११. डाइरेक्टरोंकी बैठक सात अगस्तको रखीगईहै कार्यसूची भेजरहेहैं
१२. नीलाम अगले मासकेलिए स्थगित

हिन्दी तार सस्ते पड़ेंगे क्योंकि :

(क) मात्राओं को अलग अक्षर नहीं गिना जाता। जैसे—ज+ी='जी' एक ही अक्षर माना जायगा।

(ख) अधिक से अधिक दस अक्षरों वाले सम्पूर्ण क्रियावाचक वाक्य वाक्यांश को भी तार-प्रभार के लिए एक ही शब्द गिना जाता है, जैसे—'आरहाहूं', 'भेजदिया-गया', 'पहुंचादियागया', इनको एक ही शब्द माना जायगा। अंग्रेजी तार के हिसाब से 'has been sent' इत्यादि तीन शब्द माने जाएंगे।

(ग) विभक्ति का मिला हुआ शब्द एक ही शब्द गिना जाता है। विभक्तियों के चिह्नों अथवा सम्बन्ध सूचक शब्दों, जैसे—ने, को, के, लिए, का, की, के, में, पे, पर, से, आदि को पहले शब्द के साथ मिलाकर लिखना चाहिए। जैसे—मोहनको, दिल्लीमें, रामकेलिए, स्टेशन-पर, आदि।

(घ) समासयुक्त शब्द भी एक ही शब्द गिना जाता है। जैसे—उत्तराभिलाषी, पराधीन, संतोषजनक, अत्या-वश्यक आदि एक ही शब्द माने जाते हैं।

(च) यदि बीच में स्थान न छोड़ा गया हो, और दस से अधिक अक्षर न हों तो प्रधानमन्त्री, मुख्यमन्त्री, प्रधानसम्पादक, सहायकसम्पादक आदि एक ही शब्द गिने जाएंगे। परन्तु संयुक्त व्यंजनों में प्रत्येक अक्षर को तार-प्रभार के लिए अलग-अलग अक्षर गिना जाता है, जैसे—क्त, क्व, द्य, क्ष, त्र, र्म, दो-दो अक्षर तथा स्थ्य तीन अक्षर माने जाएंगे।

(छ) 'राम सिंह यादव कानपुर' इस प्रकार का पता लिखने से पते के चार शब्द होंगे। किन्तु यही पता यदि इस तरह लिखा जाय—'रामसिंहयादव कानपुर' तो दो शब्द गिने जायेंगे।

हिन्दी और अंग्रेजी तारों में दामोंका कितना अन्तर है ?

Sent by goods train	(4 words)
मालगाड़ीसे भेजदिया	(२ शब्द)
Send railway receipt by registered post	(6 words)
बिल्टी रजिस्ट्रीसे भेजदें	(३ शब्द)

'राष्ट्रभाषा' से साभार

१९६५ के प्रकाशन

गौरीशंकर भट्ट

अध्यक्ष : समाजशास्त्र विभाग, डी० ए० वी० कॉलेज, देहरादून के

समाजशास्त्र पर दो अभूतपूर्व ग्रन्थ

भारतीय संस्कृति

एक समाजशास्त्रीय समीक्षा

संस्कृति की समाजशास्त्रीय व्याख्या, हिन्दुत्व का विकास और आधार, भारतीय संस्कृति में इस्लाम, भारतीय संस्कृति पर योरोपीय सभ्यता के प्रभाव से उत्पन्न परिवर्तन, उन्नीसवीं सदी का सांस्कृतिक आन्दोलन और भारत में आदिवासी संस्कृति की समाजशास्त्रीय विवेचना इस पुस्तक के मूल आधार हैं। मूल्य १२.५०

भारत में समाजशास्त्र, प्रजाति और संस्कृति

भारत में प्रजाति और संस्कृति की समाजशास्त्रीय विवेचना इस पुस्तक का मूल विषय है। लेखक ने इस पुस्तक में भारतीय समाजशास्त्र की रूपरेखायें, भारतीय जनसंख्या में प्रजातितत्व और भारतीय संस्कृति का गत्यात्मक विकास प्रस्तुत किया है। मूल्य १५.००

मानवशास्त्र तथा समाजशास्त्र के सिद्धांतों का जो समन्वय लेखक ने प्रस्तुत किया है, उसके कारण यह पुस्तकें समाजशास्त्र तथा मानवशास्त्र के विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी हैं।

प्रेस में

प्रतिनिधि एकांकीकार : डॉ० रामचरण महेन्द्र

आधुनिक हिन्दी काव्य में प्रतीक विधान (शोधग्रंथ) डॉ० नित्यानन्द शर्मा

सीमा संरक्षण : (ऐतिहासिक नाटक) हरिकृष्ण प्रेमी

हिन्दी के गद्य निर्माता : सोमती प्रसाद एम. ए.

हमारे अन्य प्रकाशन

शोध प्रबन्ध

हिन्दी आलोचना उद्भव और विकास
: डॉ० भगवत्स्वरूप मिश्र १२.५०

हिन्दी भाषा और साहित्य पर अंग्रेजी प्रभाव
: डॉ० विश्वनाथ मिश्र १२.५०

रीतिकालीन साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
: डा० शिवलाल जोशी १२.५०

हिन्दी नाटकों का विकासात्मक अध्ययन
: डा० शांतिगोपाल पुरोहित १२.५०

आलोचना

तुलसीदास और उनका साहित्य
: डा० विमलकुमार जैन ७.००

अध्ययन और आलोचना : डा० रामरतन भटनागर ८.००

कबीर और जायसी का रहस्यवाद एवं तुलनात्मक विवेचन : डा० गोविन्द त्रिगुणायत ६.००

चिंतन : मनन : डा० नगेन्द्र, ह० प्र० द्विवेदी नंददुलारे वाजपेयी, भगीरथ मिश्र प्रभृति विद्वानों के निबंध ७.००

उपन्यास

थके पाँव : भगवती चरण वर्मा ३.००
उखड़े हुए लोग : राजेन्द्र यादव १०.००
पुतलीघर : मामा वरेरकर १०.००
अधूरा चित्र : सत्येन्द्र शरत् ३.००
मनुष्य और देवता : भगवती प्रसाद वाजपेयी ४.००
त्रिवेणी : कंचनलता सब्बरवाल ५.००
अवतरण : गुरुदत्त ६.००
संभवामि युगे-युगे : " ८.००
विनाशाय च दुष्कृताम : ,, ७.५०
खलंगा, खुकरी और फिरंगी : क्षेत्रिय ३.५०
लालसा : Lust for Life का अनुवाद ६.००

अन्य

यात्रा के पन्ने : राहुल सांकृत्यायन ६.००
वीर सिपाही : काश्मीर, नेफा व लद्दाख में शहीद हुए सेनानियों की कथायें ३.००

साहित्य सदन, देहरादून

नये प्रकाशन

साहित्य-समालोचना

आधुनिक हिन्दी साहित्य : ले० डा० रामगोपाल सिंह चौहान; प्र० विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा; सा० डि०; पृ० ४७४; मू० १५.०० । शोध-प्रबंध ।

आलवार भक्तों का तमिल प्रबंधम् और हिन्दी कृष्ण-काव्य : ले० डा० मलिक मोहम्मद; प्र० विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा; सा० डि०; पृ० ५६२; मू० २०.०० । शोध-प्रबन्ध ।

ग्रीक साहित्य-शास्त्र : ले० हरीश करुण; प्र० भारतेन्दु भवन, सैक्टर १५ ए, चंडीगढ़; पृ० १८६; मू० ५.५० ।

चिंतन के धागे : ले० डा० बचनदेव कुमार; प्र० नोवेल्टी एण्ड कंपनी, अशोक राजपथ, पटना–४; मू० ४.०० ।

चिंतामणि विवेचन : (द्वितीय भाग) : ले० देशराज सिंह भाटी; प्र० अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली; सा० क्रा०; पृ० २०८, मू० २.५० ।

जैनेन्द्र : व्यक्ति, कथाकार और चिंतक : सं० बांके बिहारी भटनागर; प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, चन्द्रलोक, जवाहर नगर, दिल्ली; सा० डि०; पृ० १६८; मू० ५.०० । षष्टि-पूर्ति समारोह पर प्रकाशित साहित्यकार अभिनंदन ग्रन्थमाला का दूसरा पुष्प ।

तुलसीदास की काव्य साधना : ले० डा० श्रीनिवास शर्मा; प्र० अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली; सा० क्रा०; पृ० ३२०; मू० ३.५० ।

निराला का साहित्य और साधना : ले० डा० विश्वम्भरनाथ उपाध्याय; प्र० विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा; सा० डि०; पृ० ३४०; मू० ६.०० ।

प्रेमचन्द और गोदान : नया मूल्यांकन : ले० डा० कृष्णदेव भारी; प्र० भारतेन्दु भवन, चंडीगढ़; पृ० २२५; मू० ५.५० ।

महात्मा कबीर : ले० प्रो० भारतभूषण सरोज; प्र० हिन्दी साहित्य संसार, १३६१ बैदवाड़ा, नई सड़क, दिल्ली; सा० क्रा०; पृ० २२०; मू० २.५० ।

युगकवि दिनकर : ले० मुरलीधर श्रीवास्तव; प्र० बिहार ग्रन्थ कुटीर, खजांची रोड, पटना; सा० डि०; पृ० २५०; मू० १०.०० ।

रस-सिद्धांत : ले० डा० नगेन्द्र; प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली–७; सा० रा०; पृ० ३७०; मू० २०.०० । अपने विषय की प्रथम पूर्णाङ्ग कृति ।

राष्ट्रीय समग्रता में साहित्य : ले० दीनानाथ शरण; प्र० बिहार ग्रन्थ कुटीर, पटना; सा० क्रा०; पृ० १२५; मू० ३.०० ।

रीतिकालीन अलंकार साहित्य का शास्त्रीय विवेचन : ले० डा० ओमप्रकाश शर्मा; प्र० हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली; सा० रा०; पृ० ४८०; मू० २५.०० । शोध-प्रबंध ।

रुद्रट प्रणीत काव्यालंकार : व्या० डा० सत्यदेव चौधरी; प्र० वासुदेव प्रकाशन, माडल टाउन, दिल्ली; सा० डि०; मू० १८.०० । हिन्दी व्याख्या सहित ।

विद्यापति और उनकी पदावली : ले० कृष्णदेव शर्मा; प्र० अशोक प्रकाशन दिल्ली; सा० क्रा०; पृ० ४४८; मू० ५.०० । पु० मु० ।

वैदिक साहित्य में नारी : ले० डा० प्रशान्तकुमार वेदालंकार; प्र० वासुदेव प्रकाशन, दिल्ली; सा० डि०; मू० ७.०० ।

हिन्दी उपन्यास : उद्भव और विकास : ले० डा० सुरेश सिनहा, प्र० अशोक प्रकाशन दिल्ली; सा० डि०; पृ० ६४०; मू० २०.०० ।

हिन्दी में प्रत्यय विचार : ले० डा० मुरारीलाल उप्रैतिः; प्र० विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा; सा० डि०; पृ० ४०६; मू० १५.०० । शोध-प्रबंध ।

सूर की साहित्य साधना : ले० भ० स्व० मिश्र व विश्वम्भर अरुण; प्र० शिवलाल अग्रवाल एण्ड कंपनी, आगरा; मू० १०.०० ।

हिन्दी समास रचना का अध्ययन : ले० डा० रमेश चन्द्र; प्र० विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा; सा० डि०; पृ० २६८; मू० १०.०० । शोध-प्रबंध ।

हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास : ले० डा० गणपति चन्द्र गुप्त; प्र० भारतेन्दु भवन, चंडीगढ़; पृ० ८००; मू० २५.०० ।

काव्य

काका की फुलझड़ियां : कं० काका हाथरसी; प्र० हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली; सा० पा०; पृ० १२०; मू० १.०० । पा० बु० ।

जायसी ग्रन्थावली : राजनाथ शर्मा; प्र० विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा; सा० डि०; पृ० १०८६; मू० ८.०० । सटीक, विद्यार्थी संस्करण ।

पाकिस्तान की उर्दू शायरी : सं० प्रकाश पंडित; प्र० हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली; सा० पा०; पृ० १२०; मू० १.०० । पा० बु० ।

उपन्यास

खग्रास : ले० आचार्य चतुरसेन; प्र० प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली; मू० ६.५० ।

गंगा की धारा : (भाग दो) : ले० गुरुदत्त; प्र० भारती साहित्य सदन, कनाट सरकस, नई दिल्ली; पृ० ४७६; मू० ६.०० ।

छलना : ले० प्र० पूर्वोक्त; पृ० २६६; मू० २.०० । पा० बु० ।

प्रतिशोध : ले० गुरुदत्त; प्र० हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली; सा० पा०; पृ० २१५; मू० २.०० । पा० बु० ।

ब्राह्मण की बेटी : ले० शरतचन्द्र; प्र० पूर्वोक्त; पृ० १२०; मू० १.०० । पा० बु० ।

स्वप्नमयी : ले० विष्णु प्रभाकर; प्र० पूर्वोक्त; पृ० १२०; मू० १.०० । पा० बु० ।

कहानी

आकाश के तारे धरती के फूल : ले० कन्हैय्यालाल मिश्र प्रभाकर; प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी-५; चतुर्थ संस्करण ।

बृहत्कथा : नीलम अग्रवाल; प्र० किताब महल जीरो रोड, इलाहाबाद; सा० डि; मू० १२.५० ।

लम्बी लड़की : ले० राजेन्द्रसिंह बेदी; प्र० हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली; पृ० १२०; मू० १.०० । पा० बु० ।

विश्व युद्ध की रोमांचकारी कहानियां : सं० परदेशी; प्र० पूर्वोक्त; पृ० १२०; मू० १.०० । पा० बु० ।

नाटक

घाटियाँ गूंजती हैं : डा० शिवप्रसादसिंह; प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी-५ । चीनी आक्रमण के परिप्रेक्ष्य पर; द्वितीय संस्करण ।

दीवार : ले० पृथ्वीराज कपूर; प्र० हिन्द पाकेट बुक्स दिल्ली; पृ० १२०; मू० १.०० । पा० बु० ।

मेघनाद : ले० आचार्य चतुरसेन; प्र० प्रभात प्रकाशन दिल्ली–६; मू० २.५० ।

बैकुण्ठ का खाता : ले० रवीन्द्रनाथ ठाकुर; प्र० प्रभात प्रकाशन, दिल्ली; मू० २.५० ।

जीवनी : यात्रा-विवरण

क्रान्तिकारी महावीर : ले० कुमार सत्यदर्शी; सा० पा०; पृ० ७२; मू० ०.५० । प्राप्तिस्थान, १२ ले० हार्डिंग रोड, नई दिल्ली ।

नागाओं के देश में : ले० विपिन चतुर्वेदी; प्र० विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा; सा० क्रा०; पृ० १६[illegible] मू० ३.०० । सचित्र ।

महात्मा गांधी : ले० बी० आर० नंदा; प्र० सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; मू० ५.०० ।

शास्त्रीजी : दूसरों की नजर में : ले० व्यथित हृदय प्र० आर्य बुक डिपो, नाई वाला. करौलबाग, दिल्ली सा० क्रा० ८; पृ० १७२; मू० ३.५० ।

नये प्रकाशन

• हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास

ले०——डा० गणपतिचंद्र गुप्त

विशेषताएं—१. प्रारंभ में इतिहास-विज्ञान एवं साहित्य के विकासवाद के सिद्धान्तों का निरूपण
२. परम्पराओं, समकालीन वातावरण, प्रेरणा-स्रोतों व प्रवृत्तियों की स्पष्ट व्याख्या
३. नया काल-विभाजन, नूतन वर्गीकरण, नवीनतम सामग्री का समावेश
४. हिन्दी साहित्य के आरम्भ से १९६४ तक की प्रगति का सर्वांगीण विवेचन
५. वैज्ञानिक पद्धति, सरल प्रवाहपूर्ण शैली, सुन्दर मुद्रण, सजिल्द, पृष्ठ सं० ८००

मूल्य—२५ रुपये; जनता संस्करण २० रुपये; विद्यार्थी संस्करण १५ रुपये

हमारे अन्य प्रकाशन

- **ग्रीक साहित्य-शास्त्र**——ले० हरीश करुण; प्लेटो, अरस्तू, लोंजाइनस, दमित्रियस के समस्त काव्य-शास्त्रीय ग्रंथों का अनुवाद एवं परिचय; ५.५०
- **प्रेमचंद और गोदान : नया मूल्यांकन** —डा० कृष्णदेव झारी; ५.५०
- **कबीर के धार्मिक विश्वास** —डा० धर्मपाल मैनी; ३.५०
- **आ० हजारी प्रसाद द्विवेदी : व्यक्तित्व एवं साहित्य** —डा० गणपतिचन्द्र गुप्त; ७.००
- **साहित्य विज्ञान** (साहित्य सिद्धान्तों का वैज्ञानिक विवेचन) —डा० गुप्त २०.००
- **साहित्य की आत्मा** भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि से;——डा० गुप्त ५.००
- **साहित्य के तत्त्व** काव्य-शास्त्र, सौन्दर्य-शास्त्र व मनोविज्ञान के आधार पर;——डा० गुप्त ५.००
- **साहित्य की शैली** शैली के सब अंगों, पक्षों व तत्त्वों का विवेचन; —डा० गुप्त ७.५०
- **संत काव्य का दार्शनिक विश्लेषण** —डा० मनमोहन सहगल; १०.००
- **रस-सिद्धान्त और साहित्य-समीक्षा** —डा० कृष्णदेव झारी; ५.५०
- **वसंत फिर आयेगा** (सामाजिक उपन्यास) —हेमराज 'निर्मम'; ६.५०
- **पृथ्वीराज रासो**——(शोध-प्रबंध) —डा० वी० जी० शर्मा; १५.००

२५ फरवरी तक विक्रेताओं को Cash Orders पर १० प्रतिशत अतिरिक्त कमीशन

प्रकाशक—**भारतेन्दु-भवन, १५ ए, चंडीगढ़-२**

3.00
3.50
5.00
2.50
2.50
3.00
2.50

निबन्ध

एक साहित्यिक की डायरी : ले० स्व० गजानन माधव मुक्तिबोध; प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी–५ ललित वैचारिक निबंध; द्वि० सं०; तीन नये निबंध।

धर्म के नाम पर : आ० चतुरसेन; प्र० प्रभात प्रकाशन, दिल्ली; मू० ३.०० ।

लिफाफा देखकर : ले० प्रो० शैलेन्द्र श्रीवास्तव; प्र० विहार ग्रन्थ कुटीर, खजांची रोड, पटना; सा० का०; पृ० १२५; मू० ३.०० ।

बाल-किशोर

अपना चरित्र निर्माण आप कीजिए : ले० श्याम कपूर;

अपना जीवन निर्माण आप कीजिए : ले० श्याम कपूर;

पन्नी का मुकुट : ले० रमेश भाई;

प्यारी-प्यारी कहानियां : ले० धर्मपाल शास्त्री;

रचनात्मक कहानियां : ले० कमला गौतम;

साहस और पराक्रम की कहानियां : ले० मनहर चौहान; प्र० आर्य बुक डिपो, ३० नाई वाला, करौलबाग, नई दिल्ली; सा० प्रत्येक का० (अंतिम डि०), पृ० प्रत्येक ११२ (प्रथम १०४, अंतिम अज्ञात); मू० प्रत्येक २.०० । प्रथम दोरंगी, सब सजिल्द ।

झिलमिलाते सितारे : ले० रमेश वर्मा; प्र० प्रभात प्रकाशन, दिल्ली–६; मू० २.५० ।

ऐसे थे चाचा नेहरू : स० सत्यदेवनारायण सिंह; प्र० विहार ग्रन्थ कुटीर, खजांची रोड, पटना; सा० फु०; पृ० ५०; मू० २.०० ।

नये ज्ञान की नई कहानियां—ले० व्यथित हृदय; प्र० आर्य बुक डिपो, करौलबाग, दिल्ली; सा० फु०; मू० १.२५ । सचित्र ।

बटुक बहादुर :

सोरों का संत : ले० रामकृष्ण शर्मा; प्र० आर्य बुक डिपो, दिल्ली; सा० का०; मू० प्रत्येक २.०० । बाल उपन्यास, दूसरा संत तुलसीदास के जीवन पर आधारित ।

सामुदायिक विकास

भारत में पंचायती राज : ले० भूपेन्द्रनाथ सान्याल; प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, चन्द्रलोक, जवाहर नगर, दिल्ली; सा० डि०; पृ० ५२; मू० २.०० । ८ पृष्ठ चित्र।

सहकारिता :

सामुदायिक विकास : ले० जवाहरलाल नेहरू; प्र० सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; मू० क्रमश: २.००, २.५० ।

शिक्षा-मनोविज्ञान-अर्थशास्त्र

विश्लेषणात्मक अर्थशास्त्र : ले० कृष्णकुमार कौल; प्र० किताब महल इलाहाबाद; सा० डि०; मू० १२.५० ।

शिक्षा का महत्त्व : ले० भगवान प्रसाद; सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; मू० ३.०० ।

सरल शिक्षा मनोविज्ञान : ले० डा० एस० एस० माथुर; प्र० विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा; सा० डि०; पृ० २२२; मू० ४.०० । संक्षिप्त सरलीकृत ।

चिकित्सा

आ० एलोपैथिक गाइड : पृ० ९३६

चूर्ण भंडार : पृ० १४०

पुरुष गुप्त रोग चिकित्सा : पृ० १७८

हींग के गुण : पृ० १३०; ले० डा० हरनारायण कोकचा; प्र० देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; सा० क्रा०; मू० प्रथम १५.००, अन्य प्रत्येक ३.०० ।

होम्योपैथिक पारिवारिक चिकित्सा दर्पण : ले० राजेश दीक्षित; प्र० देहाती पुस्तक भंडार, दिल्ली; सा० क्रा०; पृ० २००; मू० ६.०० ।

विविध

अमरसिंह राठौर : ले० न्यादर सिंह; प्र० देहाती पुस्तक भंडार, दिल्ली; सा० रा० ४; पृ० २६४; मू० ३.५० । संगीत, तर्ज बालकराम ।

अहिंसा की कहानी : ले० यशपाल जैन; प्र० सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; मू० १.७५ ।

ओलिम्पिक खेल : ले० हरिमोहन; प्र० हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली; पृ० १२०; मू० १.०० । पा० बु० ।

डिजाइन गेट ग्रिल जाली : ले० रामअवतार; प्र० देहाती पुस्तक भंडार, दिल्ली; सा० क्रा०; पृ० ९६; मू० ६.०० ।

रत्न विज्ञान : ले० पुरुषोत्तम दास स्वामी; प्र० किताब महल, इलाहाबाद; सा० डि०; मू० १५.०० ।

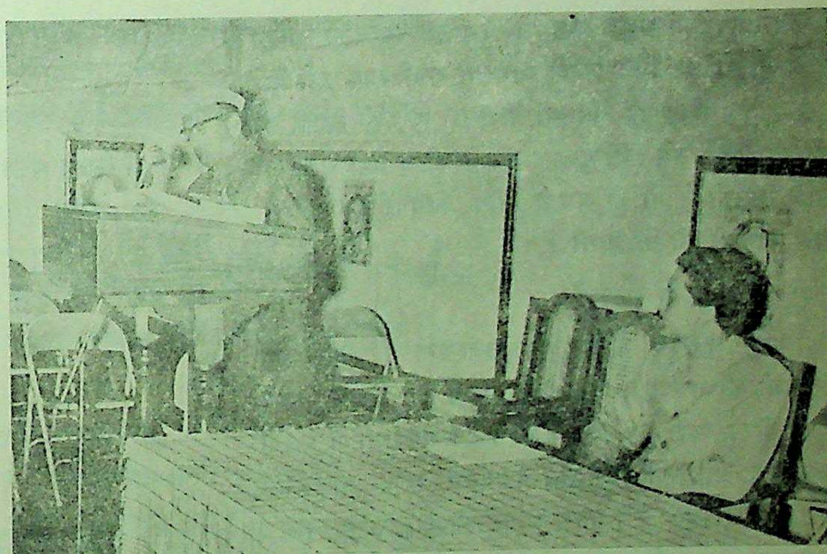
सूचना सार

स्व० रांगेय राघव को गांधी पुरस्कार

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के निर्णयानुसार अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलन का १२वां अधिवेशन आगामी मई माह में औरंगाबाद (मराठवाड़ा) में होगा। इसी अवसर पर १५०१ रु० का समिति की ओर से हिंदीतरभाषी विद्वान् को हिंदी के प्रति की गई सेवाओं के उपलक्ष्य में समर्पित किया जाने वाला 'महात्मा गांधी पुरस्कार' स्वर्गीय डा० रांगेय राघव को समर्पित किया जायेगा।

अब तक 'महात्मा गांधी पुरस्कार' आठ विद्वानों को दिया जा चुका है, जिनके नाम इस प्रकार हैं—

(१) आचार्य क्षितिमोहन सेन (२) श्री श्रीपाद दामोदर सातवलेकर (३) स्व० बाबूराव विष्णु पराड़कर (४) आचार्य विनोबा भावे (५) पं. सुखलाल (६) श्री सन्तराम बी. ए. (७) काका कालेलकर (८) श्री अनन्तगोपाल शेवड़े।



पटना में बिहार के शिक्षा मंत्री द्वारा पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन : मंच पर श्री सीताशरण सिंह

हिंदी में एक से नाम और पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग

केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा आयोजित ४-दिवसीय गोष्ठी में, पता चला है कि, केन्द्रीय सरकार के जो विभाग और जो राज्य सरकारें २६ जनवरी से अपने काम-काज में हिंदी का प्रयोग कर रही हैं, वे सब हिंदी के समरूप पदनामों व पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करें। केंद्रीय सरकार और राज्य सरकारों से सिफारिश की गई कि वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दावली के स्थायी आयोग ने जो शब्दावली तैयार की है, उसके अनुसार ही हिंदी पदनामों व शब्दों का प्रयोग सब जगह समान रूप से किया जाय।

ग्रामीण पुस्तकालयों का पुनर्गठन

उत्तरप्रदेश सरकार ने चालू वित्तीय वर्ष में राजकीय ग्रामीण पुस्तकालयों के पुनर्गठन के लिए १,४१,४०० रुपये स्वीकृत किये हैं। तृतीय आयोजना में सम्मिलित इस योजना के अन्तर्गत ग्रामीण पुस्तकालयों के पुस्तकों की जिल्दसाजी और मरम्मत की जा रही है। इस वर्ष देहरादून, झांसी, मिर्जापुर, गोरखपुर, देवरिया, बस्ती, फैजाबाद, गोंडा, अलीगढ़, पौड़ी गढ़वाल, और चमोली जिलों के ग्रामीण पुस्तकालयों की पुस्तकों की मरम्मत का कार्य आरम्भ किया जायेगा।

उत्तर प्रदेश में ११,७७५ मिश्रित जूनियर बेसिक स्कूलों की स्थापना

तृतीय पंचवर्षीय योजना के अन्त में उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में १६,५०० मिश्रित जूनियर बेसिक स्कूल खोलने का लक्ष्य उपलब्ध कर लिए जाने के बाद लगभग १०,००००० और बच्चों को प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त होने लगेगी।

उत्तराखण्ड में प्राइमरी स्कूल

तृतीय आयोजना काल में उत्तराखण्ड डिवीजन के तीनों जिलों—चमोली, पिथौरागढ़ और उत्तरकाशी—में २७५ सरकारी प्राइमरी स्कूल खोलने का लक्ष्य लगभग पूरा कर लिया गया है। इनमें से १७५ स्कूल १९६२-६३ और ९२ स्कूल १९६३-६४ में खोले जा चुके हैं।

केन्द्रीय शिक्षा आयोग को सलाह

राजस्थान विश्वविद्यालय एवं कालेज प्राध्यापक संघ ने केन्द्रीय शिक्षा आयोग को एक स्मृतिपत्र में सुझाव दिया है कि राजस्थान में विश्वविद्यालय अनुदान समिति का गठन किया जाय।

स्मृतिपत्र में कहा गया है कि राजस्थान में शिक्षण संस्थाओं को धन वितरण की व्यवस्था सन्तोषप्रद नहीं है। एक कालेज में बारह विषयों में एम. ए. की शिक्षा की व्यवस्था है, उसे भी पुस्तकालय के लिए वही सरकारी राशि मिलती है जो दो अथवा तीन विषयों में एम. ए. वाले कालेजों को दी जाती है।

राजस्थान में शिक्षा संस्थाएँ

मार्च १९६३ के अंत तक राजस्थान में सब शिक्षा संस्थाओं की संख्या २७५६० तक पहुँच गई है। १९५१ में इनकी संख्या ६०२७ ही थी। इन संस्थाओं में नर्सरी स्कूल २६, प्राथमिक विद्यालय १८५०० और माध्यमिक विद्यालय १७४७ हैं। इनके अतिरिक्त १७४७ माध्यमिक विद्यालयों में प्राथमिक कक्षाएं चालू हैं तथा ७०० हाई एवं हायरसेकेण्डरी स्कूलों में माध्यमिक कक्षाएँ हैं। नर्सरी स्कूलों में ३००० छात्र हैं। चौथी योजना में १५ नर्सरी स्कूल खुलेंगे उनमें प्रत्येक में २०० विद्यार्थी होंगे।

राज्य में हाई व हायर सेकेण्डरी स्कूलों की संख्या १९६१ में ५३७ थी। तीसरी योजना के अंत तक इ १.६३ लाख छात्रों को शिक्षा दी जायगी और चौ योजना में यह संख्या २.७१ लाख हो जायगी।

इस समय राज्य में ५६ (४५ लड़कों के लिए औ ११ लड़कियों के लिए) कालेज हैं। व्यावसायिक विशिष्ट शिक्षा देने वाले कालेजों की संख्या क्रमशः तथा १८ हो गई है। ५६ सामान्य कालेजों में से राजकीय तथा २४ गैर सरकारी हैं। इनमें से ४ विज्ञान की शिक्षा का भी प्रबंध है। सन् ७०-७१ त इनमें ५६००० छात्रों को स्थान देने का प्रस्ताव है।

राज्य में तीन विश्वविद्यालय हैं। संस्कृत का चौ विश्वविद्यालय स्थापित करने के प्रयास हो रहे हैं।

राजस्थान में प्रौढ़ निरक्षरता उन्मूलन : पुस्तकों की खरी

राजस्थान में चतुर्थ पंचवर्षीय योजना के अन्त त ३२ लाख निरक्षरों को साक्षर बनाने का भी प्रस्ताव है तृतीय पंचवर्षीय योजना के प्रथम तीन वर्षों में तीन ला से अधिक प्रौढ़ साक्षर किये गये हैं। १९६५-६६ में दो न प्रोजेक्ट प्रारंभ होंगे। राज्य सरकार नव साक्षरों के लि सुगम पाठ्य सामग्री उपलब्ध करने के लिए लेखकों प्रतिवर्ष पुरस्कार दे रही है। इस प्रकार राज्य सरका नव साक्षरों में वितरण के लिए पुस्तकें खरीदती भी है।

पंजाब में शिक्षा संस्थाएँ और प्राविधिक शिक्षा

इस समय पंजाब राज्य में २९ लाख विद्यार्थियों शिक्षा देने के लिए १७५०० से भी अधिक शिक्षा संस्था हैं। मैदानी क्षेत्रों में एक मील के घेरे में और पर्वती क्षेत्रों में दो मील के घेरे में एक प्राथमिक स्कूल विद्यमा है।

प्राविधिक (तकनीकी) शिक्षा की ओर विशेष ध्या दिया गया है। वर्ष १९५१ की तुलना में वर्ष १९६४ त इस सम्बन्ध में निम्न प्रकार प्रगति हुई है :

१. बी०एस०सी० इंजीनियरिंग क्लास में प्रवेश प्रा करने वाले विद्यार्थियों की संख्या ४० से बढ़कर ८४ हो गई है।

२. डिप्लोमा इन इंजीनियरिंग में विद्यार्थियों संख्या ५७० से बढ़कर २७१० और ड्राफ्ट्समैन (नक्श

नवीस) कोर्स में ११० से बढ़कर ६७२ हो गई है।

उत्तरप्रदेश में, १९६४ में सामाजिक शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में २९२ वाचनालय और पुस्तकालय स्थापित किये गये हैं। १,११०, प्रौढ़ शिक्षा कक्षाएँ चलाई गयीं और ९,७८९ प्रौढ़ों को साक्षर बनाया गया।

शिक्षा के क्षेत्र में आलोच्य वर्ष में सरकार ने बालिकाओं की शिक्षा १ जनवरी, १९६५ से दसवीं कक्षा तक निःशुल्क कर दी है। भारत सरकार की आर्थिक सहायता से माध्यमिक स्तर तक विज्ञान की शिक्षा में तेजी लाने के लिए एक द्रुतगतिक कार्यक्रम भी चलाया गया है। चालू वित्तीय वर्ष में इस कार्यक्रम पर १९,५४ लाख रु० व्यय करके विज्ञान प्रयोगशालाओं और विद्यालय-पुस्तकालयों का विस्तार किया जायगा और विज्ञान-अध्यापकों को विशेष प्रशिक्षण दिया जायगा। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में शीघ्र ही विज्ञान-शिक्षा का एक संस्थान भी स्थापित किया जायगा।

एक अन्य योजना के अधीन इन्टरमीडिएट कक्षाओं को पढ़ाने हेतु विज्ञान के स्नातकों के लिए भौतिक शास्त्र और रसायन शास्त्र में स्नातकोत्तर संक्षिप्त डिप्लोमा पाठ्यक्रम इलाहाबाद और लखनऊ विश्वविद्यालयों में चालू किये गये। आगरा विश्वविद्यालय में भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र और जीव विज्ञान में स्नातकोत्तर संक्षिप्त डिप्लोमा पाठ्यक्रम की पांच इकाइयां चालू की गयीं।

ग्रामीण क्षेत्रों में ६-११ वर्ष वय वर्ग के बच्चों के लिए ३,७७५ मिश्रित जूनियर बेसिक स्कूल और १,३१४ बालिका जूनियर बेसिक स्कूल खोले गये। नागर क्षेत्रों में खोले गये १५८ बड़े जूनियर बेसिक स्कूलों में से ७८ स्कूल बालिकाओं के लिए हैं। वर्ष १९६४-६५ के अंत तक प्राइमरी स्कूलों और ६-११ वर्ष के वय वर्ग के छात्रों की संख्या क्रमशः ५७,३१४ और ६४,३४ लाख हो जाने की आशा है।

पुस्तकालयों व प्रयोगशालाओंकी सुविधा में वृद्धि का सुझाव

चौथी योजना की अवधि के लिए राज्यों को आने शिक्षा कार्यक्रम तैयार करने के उद्देश्य से योजना आयोग ने कुछ सुझाव भेजे हैं।

पता चला है कि इन सुझावों में इस बात पर बल दिया गया है कि शिक्षा को आर्थिक विकास से जोड़ दिया जाय। इसके लिए शिक्षा के सभी स्तरों पर प्रशिक्षण और विकास के पहलुओं को अधिकतम प्राथमिकता दी जाय।

एक सुझाव यह भी है कि माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा की भी व्यवस्था की जाय। साथ ही प्राथमिक स्तर से प्रकृति के अध्ययन के साथ विज्ञान की शिक्षा शुरू करने, अध्यापकों के प्रशिक्षण और उनके वेतन को शैक्षणिक योग्यता से सम्बद्ध करके शिक्षा के स्तर में सुधार करने तथा पुस्तकालयों और प्रयोगशालाओं की सुविधाओं को बढ़ाने का सुझाव दिया गया है।

आयोग ने यह सलाह भी दी है कि चौथी योजना के दौरान नये विश्वविद्यालय न खोले जायें, बल्कि वर्तमान विश्वविद्यालयों को ही सुधारा जाय। उन स्थानों पर विश्वविद्यालय केन्द्र खोलने का विकल्प दिया गया है, जहाँ दस हजार से अधिक छात्रों वाले कालेज हों। वहाँ बहुत ऊँचे स्तर के पुस्तकालयों, प्रयोगशालाओं के अतिरिक्त बढ़िया शिक्षण की सुविधाएँ उपलब्ध की जायें।

प्राथमिक शिक्षा का विस्तार

अमरीकी राजदूत श्री चैस्टर बौल्स ने घोषणा की है कि भारत में प्राथमिक शिक्षा के विस्तार के लिए अमरीका ने २० करोड़ ८० लाख रुपये की सहायता देने का निश्चय किया है। यह धन मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में व्यय किया जायगा।

इस धन से ग्रामीण क्षेत्रों में छह हजार नये प्राथमिक स्कूल बनाये जायेंगे, ढाई लाख बच्चों को दोपहर का भोजन देने की व्यवस्था की जायगी, अच्छी पाठ्य पुस्तकें तैयार की जायेंगी, अध्यापकों का वेतन बढ़ाया जायेगा तथा अध्यापकों को ट्रेनिंग देने की व्यवस्था की जायगी।

१३ लेखकों को अकादमी पुरस्कार

साहित्य अकादमी की कार्यकारिणी ने अकादमी के पुरस्कारों के लिए १३ पुस्तकों का चयन किया। पुरस्कृत पुस्तकें तथा उनके लेखक निम्न हैं :

१. आसामेर लोकसंस्कृति। (लोक संस्कृति का अध्ययन असमिया में, लेखक स्व० ज. वी. के. बरुआ। २. जत दूरेई जाय (कविता) बंगला में, ले० सुभाष मुखोपाध्याय। ३. नैवेद्य (निबन्ध) गुजराती में, ले. डी. के. मांकड़। ४. आंगन के पार द्वार (कविता) हिन्दी ले० अज्ञेय (सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन)। ५. क्रांति कल्याण (उपन्यास) कन्नड़, ले० बी. पुन्नस्वामैया। ६. अयैकार, (उपन्यास) मलयालम—ले० पी. केशवदेव। ७. स्वामी (उपन्यास) मराठी, रणजित देसाई। ८. आत्म जीवनी (आत्मकथा) उड़िया, ले० पंडित नीलकान्तदास। ९. पाब्बी (कविता) पंजाबी, ले० प्रेमजीत कौर। १०. तांत्रिक वांङ्मय में शाक्तदृष्टि, हिन्दी ले० महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराज। ११. अनोखा आजमूदा (स्मृतियां) सिन्धी ले० राम. पी. पंजवानी। १२. सृष्ट चरित्र (कविता) तेलुगु ले० जी. जोशुआ। १३. मेरी हदीसे उमरे गुरेजां (कविता) उर्दू ले० आनंद नारायण मुल्ला।

कार्यकारी मण्डल ने संस्कृत, तमिल और अंग्रेजी में कोई पुरस्कार घोषित नहीं किया।

पुरस्कार ५,००० रु. का है। तथा इसके साथ ही लेखक को मंजूषा में ताम्रपत्र पर प्रशस्ति-पत्र दिया जायगा। ये पुरस्कार राष्ट्रपति द्वारा १५ फरवरी को एक विशेष समारोह में दिए जायेंगे।

नागरी प्रचारिणी सभा के पुरस्कार

नागरी प्रचारिणी सभा की प्रबन्ध समिति ने इस वर्ष निम्न पुरस्कार दिए हैं :

राजा बलदेवदास बिरला पुरस्कार तथा रेडिचे पदक श्री भरतसिंह उपाध्याय (बौद्ध दर्शन और अन्य भारतीय दर्शन) तथा डा० रामपूजन तिवारी (सूफीमत : साधना साहित्य)।

बटुकप्रसाद पुरस्कार तथा सुधाकर पदक : श्री लक्ष्मी नारायण मिश्र (वितस्ता की लहरें, वत्सराज, चक्रव्यूह) श्री भगवती चरण वर्मा (भूले बिसरे चित्र) तथा श्री अमृतलाल नागर (बून्द और समुद्र)।

रत्नाकर पुरस्कार (१) तथा राधाकृष्णदास पदक डा० हरवंशलाल शर्मा (सूर और उनका साहित्य); डा० नगेन्द्र (देव और उनकी कविता) तथा डा० माता प्रसाद गुप्त (छिताई वार्ता)।

रत्नाकर पुरस्कार (२) तथा बलदेवदास पदक : श्री सुमित्रानन्दन पन्त (रजत शिखर); श्री महताबचन्द खारेड़ (कूमवंश यशप्रताप या लावारासा) तथा श्री 'दिनकर' (उर्वशी)।

जोधसिंह पुरस्कार तथा गुलेरी पदक डा० अतहर अब्बास रिजवी (आदि तुर्क कालीन भारत, खिलजी कालीन भारत, तुगलक कालीन भारत) तथा डा० वासुदेव उपाध्याय (प्राचीन भारतीय अभिलेखों का अध्ययन)।

डा० छन्नूलाल पुरस्कार तथा ग्रीव्ज पदक : प्रो० फूलदेव सहाय वर्मा (ईख और चीनी) कुंवर सुरेशसिंह (जीव जगत) तथा डा० सत्यप्रकाश (प्राचीन भारत में रसायन।)

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का विशेष अधिवेशन प्रयाग में आगामी २७ और २८ फरवरी और पहली मार्च १९६५ को होगा। इस अधिवेशन में साहित्य की उन्नति में लगे कतिपय व्यक्तियों को "साहित्य वाचस्पति" की उपाधि देकर उनका सम्मान किया जायेगा। इस अवसर पर सम्मेलन का वार्षिक उपाधि वितरण समारोह भी होगा। "सुरज सुभद्रा हस्तलिखित ग्रंथ कक्ष" का उद्घाटन किया जायेगा। इन्दौर के प्रमुख व्यक्ति श्री सूरजराज धारीवाल ने लगभग ७५०० बहूमूल्य और दुर्लभ हस्तलिखित ग्रंथ सम्मेलन को प्रदान किये हैं। केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के सहयोग से उक्त विशेष अधिवेशन के अवसर पर हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी भी की जायगी।

उत्तर प्रदेश में पुरस्कार के लिए पुस्तकें आमन्त्रित

उत्तरप्रदेश सरकार ने देशभर के लेखकों से हिन्दी, संस्कृत और उर्दू की मूल पुस्तकें तथा उत्कृष्ट अनूदित पुस्तकें पुरस्कृत करने के लिए आमंत्रित की हैं।

राज्य सरकार प्रति वर्ष हिन्दी साहित्य कोष से साहित्य, विज्ञान, दर्शन, शिक्षा, राजनीति, इतिहास, अर्थशास्त्र और बाल साहित्य की पुस्तकों पर ७१,५०० रुपये के ४७ पुरस्कार वितरित करती है।

हिन्दी पुस्तकों के ३३ पुरस्कारों का श्रेणी विभाजन इस प्रकार है : प्रथम पुरस्कार (५००० रुपया प्रत्येक पर) हिन्दी साहित्य पर तुलसी एवं रवीन्द्र पुरस्कार, कानून और न्याय शास्त्र पर—मोतीलाल नेहरू पुरस्कार, विज्ञान पर बीरबल साहनी पुरस्कार, दर्शन पर डाक्टर भगवान दास पुरस्कार, शिक्षा पर पण्डित मदन मोहन मालवीय पुरस्कार तथा राजनीति अथवा अर्थशास्त्र पर पन्त पुरस्कार।

द्वितीय पुरस्कार (प्रत्येक २,५०० रुपये का) कहानी संग्रह अथवा उपन्यास पर प्रेमचन्द पुरस्कार, महाकाव्य पर निराला पुरस्कार, नाटक पर प्रसाद पुरस्कार, इतिहास पर नरेन्द्रदेव पुरस्कार, विज्ञान पर डाक्टर के० एन० भाल पुरस्कार और कविता संग्रह अथवा आधुनिक काव्य पर बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' पुरस्कार। इसके अतिरिक्त साहित्येतर विषय की पुस्तकों पर पांच-पांच सौ रुपये के वीस और पुरस्कार भी प्रदान किये जायेंगे।

उर्दू के पुरस्कार इस प्रकार हैं : गालिब पुरस्कार (१५०० रुपया) अकबर इलाहाबादी पुरस्कार (१२०० रु०) और रामप्रसाद बिस्मिल पुरस्कार (८०० रुपया)। इसके अतिरिक्त पांच-पांच सौ रुपये के पांच और पुरस्कार भी दिये जायेंगे।

संस्कृत पुरस्कार—कालिदास पुरस्कार १५०० रुपया और गंगानाथ झा पुरस्कार १००० रुपया। संस्कृत की पुस्तकों पर ५०० रुपये का एक और पुरस्कार भी दिया जायगा।

इसके अतिरिक्त बाल विश्वकोष पर १,५०० रुपये का एक पुरस्कार तथा विज्ञान या बालकों की रुचि के किसी अन्य विषय पर पांच-पांच सौ रुपये के दो पुरस्कार।

पुरस्कार के लिए १ जनवरी १९६४ से ३१ दिसम्बर १९६४ तक की अवधि में प्रकाशित पुस्तकों पर ही विचार किया जायगा। यदि इस अवधि में कोई उल्लेखनीय पुस्तक प्रकाशित हुई हो और लेखक ने उसे पुरस्कार के लिए नहीं भेजा हो, तो भी पुरस्कार समिति उसे पुरस्कार देने के लिए विचार कर सकती है। यदि किसी विशेष विषय पर असाधारण स्तर की पुस्तक प्राप्त नहीं होती तो उस विषय पर पुरस्कार नहीं भी दिया जा सकता।

पुरस्कार के लिए प्रत्येक पुस्तक की आठ प्रतियां, प्रकाशन तिथि, जिस पुरस्कार के लिए पुस्तक भेजी जाय उसका नाम, लेखक का नाम और पता, सचिव पुरस्कार योजना समिति, शिक्षा (सी-दो) विभाग, उत्तर-प्रदेश सरकार, विधान भवन, लखनऊ के पते पर १५ मार्च १९६५ तक पहुंच जानी चाहिये।

जयपुर में पुस्तक प्रदर्शनी

राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर के दीक्षांत समारोह के अवसर पर स्थानीय पुस्तक विक्रेताओं और प्रकाशकों ने विश्वविद्यालय के आयोजन में १८ से २२ जनवरी तक एक पुस्तक प्रदर्शनी लगाई। जिसमें १३ पुस्तक व्यवसाइयों ने भाग लिया।

इस वर्ष प्रदर्शनी पिछले वर्ष से अधिक सफल रही— लोग हिन्दी पुस्तकों के स्टालों पर रुचि नहीं दिखाते थे, परन्तु इस बार ऐसा नहीं हुआ जिसका श्रेय विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा० सत्येन्द्र को है जो अस्वस्थ होते हुए भी हर स्टाल पर गये और विश्व विद्यालय-पुस्तकालय के लिए पुस्तकों का चयन किया।

पुस्तकालय अध्यक्ष श्री गिडवानी ने हर्ष व्यक्त कि कि मेसर्स मलिक एण्ड कम्पनी जयपुर ने हिन्दी साहि के १९६४–६५ के नवीनतम प्रकाशन एकत्र कर प्रदर्श करने का जो सुन्दर प्रयास किया है वह सराहनीय है सूचना केन्द्र जयपुर के अध्यक्ष श्री जैन ने कहा कि दूस लोगों को इस प्रथा का अनुसरण करना चाहिए—प्रदर्श का तभी वास्तविक लाभ हो सकता है।

अन्तिम दिन पुस्तक विक्रेताओं ने विश्वविद्यालय कर्मचारियों को अल्पहार दिया तथा अगले दिन पुस्तका लय के कर्मचारियों ने पुस्तक विक्रेताओं को। इसी सम पुस्तकालय अध्यक्ष श्री गिडवानी ने आशा व्यक्त की भविष्य में हम इस अनुभव के आधार पर और भी अधि सफलता प्राप्त करेंगे तथा परस्पर सहयोग का लाभ उ सकेंगे।

हिन्दी प्रकाशक

प्रेस और पुस्तक पंजीकरण की धारा ८ के अनुसार स्वामित्व और अन्य व्यौरों से सम्बन्धित विज्ञप्ति

फार्म ४

१.	प्रकाशन स्थान	...	...	२६-ए, चन्द्रलोक, जवाहरनगर, दिल्ली-७
२.	प्रकाशन अवधिक्रम	...	...	मासिक
३.	मुद्रक का नाम	...	...	के० एल० मलिक
	राष्ट्रीयता	...	...	भारतीय
	पता	...	...	४/१४ रूप नगर, दिल्ली
४.	प्रकाशक का नाम	...	...	के० एल० मलिक
	राष्ट्रीयता	...	...	भारतीय
	पता	...	...	४/१४, रूप नगर, दिल्ली
५.	सम्पादक का नाम	...	...	के० एल० मलिक
	राष्ट्रीयता	...	...	भारतीय
	पता	...	...	४/१४, रूप नगर, दिल्ली

६. पत्र के उन शेयरहोल्डरों के नाम व पते जो पूरी पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के अधिकारी हैं... अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ, २६ ए, चन्द्रलोक, जवाहरनगर, दिल्ली-७

मैं के० एल० मलिक यहाँ घोषणा करता हूँ कि यह विवरण मेरी जानकारी और धारणा के अनुसार पूर्णतया प्रामाणिक और सत्य है।

ह० के० एल० मलिक

दिनांक : ५–२–६५

प्रकाशक

अखिल

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के निमित्त, प्रधानमंत्री कन्हैयालाल मलिक द्वारा सम्पादित, उद्योगशाला प्रेस किंग्सवे, दिल्ली-९ में मुद्रित एवं २६-ए, ... से प्रकाशित

रजिस्टर्ड नं० डी० 1318

शोध एवं आलोचनात्मक ग्रन्थ

कीर्तिलता और अवहट्ठ भाषा ७.००
डॉ० शिवप्रसाद सिंह

कालिदास के ग्रन्थों पर आधारित तात्कालीन भारतीय संस्कृति १०.००
डॉ० गायत्री वर्मा

गीतिकाव्य का विकास १०.००
लालधर त्रिपाठी 'प्रवासी'

महाकवि मतिराम १०.००
डॉ० त्रिभुवन सिंह

कामायनी की व्याख्यात्मक आलोचना ८.००
विश्वनाथ लाल 'शैदा'

हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप-विकास १२.५०
डॉ० शंभुनाथ सिंह

बीसलदेव रासो ६.००
डॉ० तारकनाथ अग्रवाल

भारतीय प्रेमाख्यान काव्य १०.००
डॉ० हरिकान्त श्रीवास्तव

नाटक और रंगमंच १०.००
राजकुमार

सूरपूर्व ब्रजभाषा और उसका साहित्य १२.५०
डॉ० शिवप्रसाद सिंह

दरबारी संस्कृति और हिन्दी मुक्तक ४.५०
डॉ० त्रिभुवन सिंह

कहानी का रचना-विधान ६.०
डॉ० जगन्नाथप्रसाद शर्मा

विद्यापति ५.०
डॉ० शिवप्रसाद सिंह

मधुमालती (मंझन कृत) ८.०
डॉ० शिवगोपाल मिश्र

रस-साहित्य और समीक्षाएँ ५.०
'हरिऔध'

श्रीराधा का क्रम-विकास ८.०
डॉ० शशिभूषण दास गुप्त

भोजपुरी लोक-साहित्य का अध्ययन १०.०
डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय

काव्य रूपों के मूल स्रोत और उनका विकास १०.०
डॉ० शकुन्तला दुबे

हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास ६.०
डॉ० जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन
(सं० डॉ० किशोरीलाल गुप्त)

छायावाद के गौरव चिह्न ६.०
प्रो० 'क्षेम'

प्राचीन भारत में लक्ष्मी प्रतिमा १५.०
डॉ० राय गोविन्दचन्द्र

बौद्ध कला-कृतियाँ ३.०
विद्यावती मालविका



हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय पो० बाक्स नं० ७०, पिशाचमोचन वाराणसी–१.

श्री दिनकर कृत पुस्तकों की सम्पूर्ण सूची

पद्य

१. उर्वशी	मू०	६.००
२. परशुराम की प्रतीक्षा	,,	३.००
३. चक्रवाल	,,	१०.००
४. नये सुभाषित	,,	१.५०
५. नीलकुसुम	,,	३.००
६. सीपी और भैरव	,,	२.५०
७. कुरुक्षेत्र	,,	३.५०
८. रश्मिरथी (सम्पूर्ण)	,,	५.००
९. ,, ,, (संक्षिप्त)	,,	१.५०
१०. रेणुका	,,	३.००
११. रसवन्ती	,,	२.५०
१२. हुँकार	,,	२.५०
१३. द्वन्द्वगीत	,,	१.५०
१४. बापू	,,	१.५०
१५. दिल्ली	,,	०.६२
१६. इतिहास के आँसू	मू०	३.००
१७. सामधेनी	,,	२.५०
		५४.६

गद्य

१. संस्कृति के चार अध्याय	१५.००
२. मिट्टी की ओर	४.००
३. काव्य की भूमिका	४.००
४. पंत प्रसाद मैथिलीशरण	४.००
५. अर्धनारीश्वर	५.००
६. वट पीपल	३.००
७. उजली आग	३.००
८. देश-विदेश	२.००
९. रेती के फूल	२.७५
१०. वेणुवन	३.००
११. हमारी सांस्कृतिक एकता	३.००
१२. राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता	३.००
	५१.७५

बाल साहित्य

१८. धूपछाँह	१.५०
१९. मिर्च का मजा	१.००
२०. सूरज का व्याह	१.००
	३.५०
१३. चित्तौर का साका	१.५०
१४. भारत की सांस्कृतिक कहानी	१.००
	२.५०

नवीन प्रकाशन

१. आत्मा की आँखें	४.००
२. कोयला और कवित्व	३.५०
३. मृतितिलक	२.००
४. दिनकर की सूक्तियाँ	२.५०
	१२.०

नवीन संस्करण

रश्मि रथी (संपूर्ण)

उर्वशी–

सम्पूर्ण सेट की कीमत १२४ रु. ३७ पै.

मिलने का पता :–

उदयाचल

१४, राजेन्द्र नगर मार्केट, पटना–४

सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक समीक्षा संबंधी

प्रो. भगीरथ दीक्षित
हिन्दी विभाग, बम्बई विश्वविद्यालय

रचित दो प्रमुख ग्रन्थ

समीक्षालोक

पश्चिम के प्रायः सभी महान् समीक्षकों के प्रमुख साहित्यमतों की स्पष्ट एवं स्वतंत्र व्याख्या, भारतीय दृष्टि-कोणों की तुलनात्मक विवेचना ।

मूल्य : बीस रु०

★ विद्वानों की सम्मतियाँ

'पाश्चात्य समीक्षा शास्त्र पर अत्यन्त परिश्रम से लिखे गये लेखक के इस ग्रन्थ का आशा है हिन्दी जगत में अच्छा स्वागत होगा । लेखक की लेखन तथा प्रतिपादन शैली प्रासादिक है ।'

—डॉ० **विनयमोहन शर्मा** अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ।

"मेरा ख्याल है, छात्रों और अध्यापकों को एक बार यह ग्रन्थ अवश्य देख जाना चाहिए ।"

—डॉ० **रामधारी सिंह 'दिनकर'**, उपकुलपति, भागलपुर विश्वविद्यालय ।

"मुझे पुस्तक बहुत अच्छी लगी । लेखक के गम्भीर अध्ययन का परिचय उससे पदे-पदे मिलता है ।"

—डॉ० **सम्पूर्णानन्द** राज्यपाल, राजस्थान प्रदेश, जयपुर ।

"निःसन्देह" समीक्षालोक में पाश्चात्य समीक्षा की विस्तृत विवेचना की गई है । स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त लाभप्रद होगी, ऐसा मेरा विश्वास है ।"

—डॉ० **उदयनारायण तिवारी**, अध्यक्ष हिन्दी विभाग-जबलपुर विश्वविद्यालय ।

"हिन्दी में पाश्चात्य-समीक्षा का ऐसा व्यवस्थित और सांगोपांग विवरण प्रस्तुत करनेवाला इस ढंग का दूसरा कोई ग्रन्थ अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है ।"

—**'आज'** वाराणसी ।

★ कामायनी विमर्श

"कामायनी" पर अबतक लिखे गये ग्रंथों से सर्वथा भिन्न यह कामायनी के अध्ययन को अभिनव परिप्रेक्ष्य प्रदान करती है । कामायनीकार के प्रतिपाद्य, वस्तु-परिकल्पना, वस्तु योजना, शिल्प आदि पर आलोक डालते हुए लेखक ने अपना दृष्टिकोण तर्कसम्मत ढंग से प्रस्तुत किया है ।

मूल्य : बारह रु०

... ...

कवि एवं कहानीकार **नरेन्द्र शर्मा** की दो मौलिक कृतियाँ

प्यासा निर्झर

गत दस वर्षों में कवि की समय-समय पर लिखी गई स्फुट रचनाएँ आकार में छोटी-बड़ी और प्रकार में विभिन्न शैली-प्रधान की अपेक्षा, कथ्य प्रधान अधिक ।

मूल्य : आठ रु०

ज्वाला परचूनी

(कहानी संग्रह)

हल्दी की गाँठ से लोग पंसारी बन जाते हैं, नरेन्द्र की 'ज्वाला परचूनी' के माध्यम से कहानी-कार-पंसारी बन बैठे । काव्य-वल्लरियों में जो न समा सका वह गल्प-वल्लरियों में अभिव्यक्त हुआ है । नरेन्द्रजी की कविताएँ जितनी रसपूर्ण हैं कहानियाँ उतनी ही सजीव ।

मूल्य : दो रुपये पचास नये पैसे

प्रकाशक : समुदय प्रकाशन

२१४, उन्नीसवाँ रस्ता, खार, बम्बई ५२

हिन्दी प्रचारक

[मासिक]

वर्ष : १२ : अंक : १०-११

मूल्य
वार्षिक : ३.००
एक प्रति : २५ पैसे

सम्पादक
कृष्णचन्द्र बेरी

फरवरी : १९६५

प्रसन्नता की बात है कि २६ जनवरी से सरकारी कामकाज के लिए अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी का व्यवहार प्रारम्भ हो गया है। वैसे तो हमारे संविधान में प्रारम्भ से ही हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया जा चुका था, परन्तु राजनीतिक दबावों के कारण अभी तक हिन्दी को अपना अभीष्ट स्थान नहीं मिल सका था। अपने ही देश में राष्ट्रभाषा परायी मालूम पड़े, इससे बढ़कर शर्मनाक दूसरी बात नहीं हो सकती। आज प्रायः जो भी बड़े-बड़े समारोह देश में होते हैं उनमें अंग्रेजी में बोलना बड़े गौरव की बात मानी जाती है, जब कि हिन्दी में बोलनेवाले वक्ता को सम्मानजनक दृष्टि से नहीं देखा जाता। यह अनोखापन हमारे देश में अंगुलियों पर गिने जानेवाले कुछ ऐसे लोगों का कार्य है, जिन्हें मालूम है कि हिन्दी के अधीष्ठित होते ही उनकी नेतागिरी समाप्त हो जायेगी। देश की जिस भाषा को २२ करोड़ जनता समझती और बोलती हो, जिसमें साहित्य का अगाध भंडार उपलब्ध है और जिसे संविधान द्वारा राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया गया हो, उसकी जगह अंग्रेजी को पुनः स्थापित करने की कल्पना करना एक अद्भुत विडम्बना नहीं तो क्या था? हमें प्रसन्नता है कि उत्तर प्रदेश, मध्य-प्रदेश, बिहार और राजस्थान की राज्य सरकारें २६ जनवरी से अपना सारा कामकाज हिन्दी में करने लगी हैं। यही बात यदि हिन्दी की सरकारी और गैरसरकारी संस्थाएँ, हिन्दी के प्रकाशक व मुद्रक अपने दैनन्दिन कार्यों में लागू कर लें तो कोई वजह नहीं है कि सारा देश इसका अनुकरण न करे। यह बात बेबुनियाद है कि हिन्दी को अन्य लोगों पर जबरदस्ती लादने की चेष्टा की जा रही है। हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने में अहिन्दी भाषियों को ही सबसे बड़ा श्रेय है। हिन्दी के उन्नायक हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी थे और बंगाल के बड़े-बड़े मनीषियों ने स्वतः हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का प्रस्ताव किया था। आज हिन्दी में जिस प्रकार विपुल साहित्य प्रकाशित हो रहा है और लिखा जा रहा है, उसे देखते हुए कहा जा सकता है कि अगामी पाँच वर्षों में हिन्दी में प्रत्येक विषय पर इतनी अधिक पुस्तकें हो जायेंगी जो कि पश्चिम की किसी समृद्ध भाषा की तुलना में अधिक नहीं तो कम भी नहीं होंगी। शोधकार्य और अनुवाद के क्षेत्र में हिन्दी की कोई तुलना ही नहीं है। अंग्रेजी के हिमायती अन्तर्राष्ट्रियता का नारा लगाते हैं। हमारी समझ में नहीं आता कि जब रूस, पोलैण्ड, चीन, फ्रांस आदि देशों में लोग अंग्रेजी के माध्यम से कार्य नहीं करते, तो क्या उनका, उनके साहित्य का और उनके नागरिकों का संसार में विशिष्ट स्थान नहीं है? यदि अंग्रेजी के बिना इन देशों का काम चल सकता है, तो क्या कारण है कि हमारा काम अंग्रेजी के बिना नहीं चल सकता? हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने वाले यह कदापि नहीं कहते कि हमारे देश में अन्य भाषायें न पढ़ायी जायँ। हम अंग्रेजी को एक अच्छी समृद्ध, पठनीय भाषा के रूप में स्वीकार करते हैं, परन्तु जहाँ तक राष्ट्रभाषा बनाने का प्रश्न है, वहाँ भारत के लिए यदि कोई उपयुक्त भाषा है तो वह हिन्दी ही है। आशा है हम अपनी कार्य-पद्धति से यह सिद्ध करने में समर्थ होंगे कि हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है और राष्ट्रभाषा के रूप में वह देश की संस्कृति और शिक्षा का विकास करने में समर्थ है।

इन शब्दों के साथ हम नववर्ष में इस बात की शुभकामना करते हैं कि हिन्दी का साहित्य उत्तरोत्तर समृद्ध हो और राष्ट्रभाषा हिन्दी राष्ट्रीय एकता स्थापित करने में सफल हो।

★

नये प्रकाशन

हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास

लेखक : डा. गणपति चन्द्र गुप्त

विशेषताएँ : १. प्रारंभ में इतिहास-विज्ञान एवं साहित्य के विकासवाद के सिद्धान्तों का निरूप

२. परम्पराओं, समकालीन वातावरण, प्रेरणा-स्रोतों व प्रवृत्तियों की स्पष्ट व्याख्या

३. नया काल-विभाजन, नूतन वर्गीकरण, नवीनतम सामग्री का समावेश।

४. हिन्दी साहित्य के आरंभ से १९६४ तक की प्रगति का सर्वांगीण विवेचन।

५. वैज्ञानिक पद्धति, सरल प्रवाहपूर्ण शैली, सुन्दर मुद्रण, सजिल्द, पृष्ठ संख्या ८०

मूल्य––२५ रुपये; जनता संस्करण : २० रुपये; विद्यार्थी संस्करण : १५ रुपये



हमारे अन्य प्रकाशन

- **ग्रीक-साहित्य-शास्त्र**––ले० हरीश 'करुण; प्लेटो, अरस्तू, लोंजाइनस, दमित्रियस के समस्त काव्य-शास्त्रीय ग्रंथों का अनुवाद एवं परिचय। मूल्य ५.५
- **प्रेमचन्द और गोदान : नया मूल्यांकन**––डा० कृष्णदेव झारी मूल्य ५.५
- **कबीर के धार्मिक विश्वास**––डा० धर्मपाल मैनी मूल्य ३.५
- **डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी : व्यक्तित्व एवं साहित्य**––डा० गणपतिचन्द्र गुप्त मूल्य ७.०
- **साहित्य-विज्ञान** (साहित्य-सिद्धान्तों का वैज्ञानिक विवेचन)––डा० गुप्त मूल्य २०.
- **साहित्य की आत्मा** : भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि से––डा० गुप्त मूल्य ५.
- **साहित्य के तत्त्व**––काव्य-शास्त्र, सौन्दर्यशास्त्र व मनोविज्ञान के आधार पर ––डा० गुप्त मूल्य ५.
- **साहित्य की शैली**––शैली के सब अंगों, पक्षों व तत्त्वों का विवेचन––डा० गुप्त मूल्य ७.
- **संत-काव्य का दार्शनिक विश्लेषण**––डा० मनमोहन सहगल मूल्य १०
- **रस-सिद्धान्त और साहित्य-समीक्षा**––डा० कृष्णदेव झारी मूल्य ५.
- **वसंत फिर आयेगा** (सामाजिक उपन्यास)––हेमराज 'निर्मम' मूल्य ६.
- **पृथ्वीराज रासो** (शोध-प्रबन्ध)––डा० वी० पी० शर्मा मूल्य १

२५ फरवरी तक विक्रेताओं को **Cash orders** पर १० प्रतिशत अतिरिक्त कमीशन

प्रकाशक : भारतेन्दु-भवन, १५ ए, चण्डीगढ़-२.

हिन्दी-पुस्तकों की वाचनाभिरुचि का सर्वेक्षण

कृष्णचन्द्र बेरी

नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित सेमिनार में पढ़ा गया वक्तव्य

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक के १९६३ के आठवें अधिवेशन में की साधारण सभा ने यह निश्चय ा कि राष्ट्रभाषा हिन्दी की पुस्तकों देश में समुचित प्रचार-प्रसार हो। नए आवश्यक समझा गया कि -पुस्तकों की बिक्री का 'मार्केट र्च' किया जाए। इसी अधिवेशन घ ने एक प्रस्ताव पास कर उपर्युक्त ्र को यह निर्देश दिया कि वह संघ ओर से हिन्दी-पुस्तकों की बिक्री मार्केट रिसर्च' करें और इसकी र्ट संघ की साधारण सभा को दें। संघ के इस प्रस्ताव के अनुसार महत्वपूर्ण कार्य के लिए तीन न पहलुओं पर कार्य करने का किया गया :

१. हिन्दी पाठकों की पाठनाभि-का सर्वेक्षण (परिशिष्ट १),

२. पुस्तक-विक्रेताओं में प्रश्ना-प्रचारित कर बिकनेवाली पुस्तकों य संग्रह करना, और

३. इन दोनों के आधार पर किसी स्कालर की सहायता से एक तैयार कराकर हिन्दी के प्रका-तथा पुस्तक-विक्रेताओं में वित-करवाना।

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत संघ के 'हिन्दी प्रचारक' मासिक पत्रिका, सी ने आठ हजार रुपये के अपने ानिक व्यय से हिन्दी पाठकों की ाभिरुचि का सर्वेक्षण १९६३ में भ किया और लगभग २५ हजार ों को एक प्रश्नावली उत्तरदेयक लिफाफे के साथ भेजी गई। सर्वेक्षण बहुत बड़ा और जटिल न हो इसे दृष्टि-गत रख एक सामान्य स्तर की प्रश्ना-वली 'हिन्दी प्रचारक पत्रिका' के पाठकों, देश के समस्त अहिन्दीभाषी राज्यों की हिन्दी-प्रचार-सभाओं के हिन्दी-प्रचारकों, साहित्यकारों, अध्या-पकों, संसद-सदस्यों, लाइब्रेरियों आदि में वितरित की गई। इस प्रकार के प्रयास से अब संघ के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए हिन्दी-पाठकों की रुचि के सर्वेक्षण की एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार की गई है और उस रिपोर्ट का संक्षिप्त अंश यहाँ उपस्थित किया जा रहा है। आशा है, यह इस विचार-गोष्ठी में भाग लेनेवालों के लिए सूचनादायक होगा।

सर्वेक्षण की संलग्न विवरण तालिका (परिशिष्ट २) के आँकड़ों से कुछ दिलचस्प बातें हमारे सामने आती हैं। यद्यपि बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, पंजाब का कुछ हिस्सा, दिल्ली और हिमाचल प्रदेश भारत के ऐसे क्षेत्र हैं जो कि हिन्दी-भाषी हैं, परन्तु इन प्रदेशों से प्राप्त उत्तरों का निकटतम प्रतिशत दक्षिण के आन्ध्र, मद्रास, मैसूर, केरल तथा पूर्वी बंगाल की तुलना में कम है। यह तथ्य इस बात को प्रकट करता है कि राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति अहिन्दी-भाषी क्षेत्रों के पाठकों में अच्छी रुचि है। हिन्दी के प्रति दक्षिण और बंगाल के पाठकों की रुचि से आशा की जा सकती है कि निकट भविष्य में राष्ट्र-भाषा हिन्दी शीघ्र ही सभी क्षेत्रीय भाषाओं के बीच एक सम्बन्ध जोड़ने-वाली भाषा (लिंक लेंग्वेज) का स्थान ग्रहण कर लेगी। एक महत्वपूर्ण तथ्य दिल्ली के सर्वेक्षण से प्रकट हुआ है। संसद के सभी सदस्यों को यह प्रश्नावली भेजी गई थी, परन्तु यह देखकर दुख और आश्चर्य हुआ कि देश के भाग्य-निर्माता पुस्तकों के पढ़ने के विषय में बहुत ही उदासीन हैं। लगभग ५०० में से केवल पाँच सदस्यों ने इस प्रश्ना-वली के उत्तर भेजे, जो कि उनकी संख्या का मुश्किल से एक प्रतिशत होता है। यह प्रश्नावली लगभग ३००० साहित्यकारों, लेखकों, पत्र-कारों और शिक्षकों के पास भेजी गई, परन्तु आश्चर्य की बात यह देखने में आई कि इस वर्ग का उत्तर सामान्य पाठक वर्ग के मुकाबले बहुत ही कम रहा। अनुमानतः तीन हजार में २० बड़े लेखक और लगभग ६५ शिक्षक, पत्रकार और अन्य साहित्यकारों के उत्तर आये हैं। इस तरह इस वर्ग के उत्तर की संख्या २.८३ प्रतिशत है। बड़ी प्रसन्नता की बात है कि महिलाओं ने बड़े उत्साहसे इस प्रश्नावलीके उत्तर भेजे हैं। ४८० महिलाओं को यह प्रश्नावली भेजी गई थी, उनमें से १५२ महिलाओं के उत्तर आए। ये आँकड़े इस बात के प्रतीक हैं कि महिलाएँ पढ़ने में दिलचस्पी ले रही हैं। आव-श्यकता इस बातकी है कि हम उपयुक्त महिलोपयोगी साहित्य प्रस्तुत करें ताकि पाठकों का यह क्षेत्र और विस्तृत

हो। उड़ीसा, त्रिपुरा, मणिपुर, गोआ और जम्मू-कश्मीर में भी यह प्रश्नावली भेजी गई, परन्तु उत्तर बिल्कुल नहीं आए। इससे विदित होता है कि इन क्षेत्रों में हिन्दी-पुस्तकों के प्रति जनता में विशेष उत्साह नहीं है।

सामान्य जनता में देश की स्वतंत्रता के बाद पठन-रुचि में काफी विकास हुआ है। इसका प्रमाण इस तरह से मिलता है कि प्रश्नावली में जिन विषयों पर पाठकों के उत्तर माँगे गए, उससे ही पाठकवर्ग सन्तुष्ट नहीं था। पाठकों ने प्रश्नावली में दिए हुए विषयों के अतिरिक्त निम्न-लिखित विषयों की पुस्तकें पढ़ने की भी इच्छा प्रकट की

यात्रा, संस्मरण, आखेट, वैज्ञानिक पुस्तकों के अनुवाद, राजनीतिक वृत्तान्त, विदेशी भाषा के अनुवाद, संसदीय प्रणाली की अनूदित पुस्तकें, सरकारी कार्यालयों की विधि पर प्रकाश डालनेवाली पुस्तकें, प्राविधिक ज्ञान की पुस्तकें और पुस्तकालय विज्ञान।

उपरोक्त पुस्तकों की माँग से एक चीज बहुत स्पष्ट रूप से सामने आ रही है। अब विज्ञान और टेक्निकल पुस्तकों की माँग हिन्दी में बहुत तेज़ी से हो रही है। लोग चाहते हैं कि उनकी अपनी भाषा में ही उन्हें विज्ञान और टेक्निकल विषय पढ़ने को मिलें। प्रसन्नता की बात है कि हिन्दी में काफी संख्या में विज्ञान और टेक्निकल पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं और जिस गति से हिन्दी में प्रकाशन हो रहे हैं, उससे आशा की जा सकती है कि आगे चलकर आगामी ५वर्षों में विज्ञान और टेक्निकल शिक्षा के लिए अंग्रेज़ी के सहारे की जरूरत नहीं पड़ेगी।

हिन्दी में अनुवाद पढ़ने की रुचि पाठकों में बहुत है। बंगाल के शरत्, रविबाबू, बंकिम और विमल मित्र हिन्दी-पाठकों के प्रिय हैं। मराठी के हरिनारायण आप्टे की कृतियाँ, गुजराती के के० एम० मुंशी, पंजाबी के नानक सिंह हिन्दी में बहुत प्रसिद्ध हो चुके हैं। इन लेखकों की प्रायः सभी कृतियाँ हिन्दी में अनूदित हो ... अनुवाद के क्षेत्र में हिन्दी ... भाषाओं में अग्रगण्य है।

विदेशी लेखकों के सम्बन्ध ... पास्तरनाक, शेक्सपियर, गोर्की ... स्ताय की पुस्तकों के अनुवाद ... रुचि हिन्दी-पाठकों में है।

सर्वेक्षण द्वारा प्रमाणित हुआ ... हिन्दी-लेखकों में प्रेमचन्द पुराने होते हुए भी नेतृत्व कर रहे हैं ... बाद आचार्य चतुरसेन शास्त्री, ... कवि मैथिलीशरण गुप्त, श्री ... भगवतीचरण वर्मा, जयशंकर ... यशपाल, राहुल सांकृत्यायन आदि के लेखक बहुत जनप्रिय हैं ... जनप्रिय तो अपने 'रामचरित... के कारण गोस्वामी तुलसीदास ... सर्वेक्षण में जहाँ अपनी चुनी हुई ... के विषय में पाठकों से पूछा गया ... अधिकांश पाठकों ने गोस्वामी ... दासजी के 'रामचरितमानस' को ... प्रस्तावित किया है। इस प्रसंग ... कहा जा सकता है कि हमारे ...

स्कृति का जो धार्मिक प्रभाव जनता र पड़ता आया है वह अभी भी बना श्रा है। आवश्यकता इस बात की कि ऐसी धार्मिक पुस्तकें प्रकाशित जाएँ जिनमें साम्प्रदायिकता न हो, भी धर्मों की बातें प्रकाश में लाई यँ।

देश में एक आन्दोलन नये लेखकों र कवियों को प्रोत्साहित करने के ए चल रहा है। आवश्यकता इस त की है कि तरुण साहित्यकारों को ता के समक्ष उपस्थित किया जाए र जनता इनमें से हंस की तरह उन तियों को चुन ले जो सच्चे अर्थ में हित्यकार हैं। सर्वेक्षण की इस र्पोर्ट में जो पाँच-सात नये हिन्दी-क उभरे हैं, वे हैं—धर्मवीर भारती, न राकेश, हिमांशु श्रीवास्तव, तराय, डॉ० शिवप्रसाद सिंह तथा लेश्वर। नये कवियों का इस क्षण में कहीं भी स्थान नहीं है। यदि को इन्हें जनता के समक्ष लाना है इसके लिए बहुत बड़े प्रयत्न की रत है।

परिशिष्ट २ वाली तालिका ने से यह स्पष्ट विदित हो जाता है जनता की रुचि अभी भी कथा-हित्य और उपन्यासों की ओर अधिक उपन्यासों में जासूसी साहित्य के नेवाले अब खतम हो रहे हैं। इनकी संख्या इस सर्वेक्षण में लगभग २६ शत है। इस प्रसंग में एक बात र आवश्यक है कि हमारे देश में शों से अकारण क्राइम और क्टिव की पुस्तकें आ रही हैं। इन्हीं पुस्तकों का कुप्रभाव है जो भी कुछ पाठक ऐसी पुस्तकें ना चाहते हैं। ऐसी पुस्तकों के पर पूरी तरह से सरकार को रोक देनी चाहिए।

इस सर्वेक्षण में ५ वर्ष से १० वर्ष तक के बच्चों के लिए बाल-साहित्य की माँग करनेवाले पाठकों की संख्या ३३ प्रतिशत है और १० वर्ष से १४ वर्ष तक के बच्चों के लिए बाल-साहित्य की माँग करनेवालों की संख्या ४१ प्रतिशत। वैसे तो ये आँकड़े उत्साह-वर्द्धक हैं, परन्तु अपेक्षा यह की जाती थी कि शतप्रतिशत उत्तरदाता अपने बच्चों के लिए बाल-साहित्य की माँग करेंगे। बच्चे यह चाहते हैं कि उन्हें अपनी मातृभाषा में कथा-कहानी की पुस्तकें दी जाएँ। कभी-कभी देखने में आता है कि अभिभावक उनकी इच्छा न रहते हुए भी जबरदस्ती अंग्रेजी की पुस्तकें पढ़ने को देते हैं, क्योंकि आज-कल समाज में एक फैशन-सा चल पड़ा है कि बच्चे बचपन से ही अपनी मातृ-भाषा न जानकर अंग्रेजी जरूर सीखें। ऐसी प्रवृत्ति देश की राष्ट्रभाषाओं के लिए घातक है। इसका मुकाबला प्रकाशक अच्छी पुस्तकें निकाल कर, और लाइब्रेरियन उन्हें लाइब्रेरियों में रखकर बच्चों के बीच प्रचार कर सकते

हैं। यदि हम लोग प्रारम्भ से ही बच्चों को उनकी मातृभाषा में अच्छी पुस्तकें दें और उनमें पढ़ने की रुचि पैदा करें, तो निश्चय है कि नई पीढ़ी के आनेवाले पाठक पुस्तकों में असाधारण रुचि लेंगे।

चिकित्सा और कला ये दो ऐसे विषय गिने जाते हैं जिनके विषय में कहा जाता है कि इनके पाठक ही नहीं हैं, परन्तु इस सर्वेक्षण ने यह सिद्ध कर दिया है कि बात ठीक इसके विपरीत है। परिशिष्ट २ के आँकड़ों के देखने से पता चलता है कि कला और संगीत विषय के पाठक २८ प्रतिशत हैं और चिकित्सा के ३० प्रतिशत।

अन्त में मुझे अपने देश के लाइब्रेरियनों से कुछ कहना है। उन्हें चाहिए कि वे देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की पुस्तकें पढ़नेवाले पाठकों की रुचि का सर्वेक्षण वर्ष में एक बार करें और जनता में भावना जागृत करें कि देश की भाषाओं में छपी पुस्तकें पढ़ने में रुचि लें। अकारण अंग्रेजी की पुस्तकों का अम्बार लाइब्रेरियों में लगाना देश की संस्कृति और साहित्य के प्रति न्याय नहीं कहा जाएगा। आज देश में एक ऐसा मध्यम-वर्ग पैदा हो रहा है जो राष्ट्रीय भाषाओं का पृष्ठपोषक है। इस वर्ग की आकांक्षाओं को दृष्टिगत रख साहित्य के निर्माण की आवश्यकता है। लाइब्रेरियन अपने सर्वेक्षणों द्वारा प्रकाशकों को इस वर्ग की रुचि के सम्बन्ध में जानकारी दे सही साहित्य के प्रकाशन में परामर्श दे सकते हैं।

ज्ञान-विज्ञान दो ऐसे विषय जरूर हैं, जिन्हें हमें अंग्रेजी में पढ़ना आवश्यक है, परन्तु अन्य विषय [illegible] आवश्यक नहीं हैं जितना कि आज [illegible] जा रहा है।

इस सर्वेक्षण में प्रकाशकों के [illegible] कुछ ध्यान देने योग्य बातें हैं। [illegible] समझना होगा कि आज का पाठ[illegible] पुस्तकों में विषय-वैविध्य और समा[illegible] वैविध्य देखना चाहता है। यदि प्र[illegible] शक लेखक की सहायता से [illegible] पुस्तकें प्रकाशित करें और पाठकों [illegible] समुचित रूप से आधुनिक युग के [illegible] कूल प्रचार करें तो हिन्दी-पुस्तकें अ[illegible] बिक सकती हैं। प्रकाशकों को यह [illegible] देखना चाहिए कि उनके प्रकाशन [illegible] से-कम मुख्य शहरों में पाठकों को मि[illegible] सर्वेक्षण के उत्तर भेजनेवाले ९० प्र[illegible] शत लोगों ने इस बात की शिकायत [illegible] है कि उनकी माँग की हिन्दी-पुस्[illegible] बड़े शहरों में भी नहीं मिलतीं।

भारत के विभिन्न राज्यों में विभिन्न विषयों की पुस्तकों में पाठकों की रुचि-तालिका

भारत के विभिन्न राज्यों में विभिन्न विषयों की पुस्तकों में पाठकों की रुचि-तालिका

	हिमांचल प्रदेश	गुजरात	दिल्ली	मैसूर	असम	महाराष्ट्र	बिहार	केरल	राजस्थान	आन्ध्र	पंजाब	मध्य प्रदेश	मद्रास	बंगाल	उत्तर प्रदेश	उड़ीसा	अंडमान	नागालैंड	जम्मू काश्मीर	त्रिपुरा	मणिपुर	गोवा	विदेश	कुल योग	अ० भा० प्रतिशत
कहानी	५	४	७०	८१	१९	२३	११६	१२६	२३९	१२३	५१	१७५	१३४	११३	३९३	—	३	—	—	—	—	—	६	१६७५	६१.२
नाटक	२	३	५२	७६	१७	१४	९३	१०२	१४६	११०	३५	९१	१०८	६५	२५७	—	३	—	—	—	—	—	३	११७४	४२.९
उपन्यास सामाजिक	४	४	६५	९५	१८	२२	१२१	११५	२०५	१२४	४५	१७४	१२५	९३	३७२	१	४	—	—	—	—	—	६	१५८७	५८.०१
उपन्यास ऐतिहासिक	३	३	५९	८२	१३	१८	९०	९७	१७६	९६	३८	१४८	९८	९२	३२१	१	४	—	—	—	—	—	५	१३३९	४८.०२
उपन्यास जासूसी	१	—	२७	२३	८	९	५५	४३	७६	३७	१६	६५	६९	२४	१४०	—	२	—	—	—	—	—	३	५९५	२१.७६
विज्ञान	४	२	५३	५९	११	१५	८३	६७	१४९	६५	२९	१२७	६४	५२	२२९	—	१	—	—	—	—	—	४	१०१०	३७.२
जीवनी	४	३	५५	७५	११	१७	१०१	१०६	१६४	९५	४०	१४४	१०३	९१	२८८	—	२	—	—	—	—	—	४	१२९९	४७.४३
धार्मिक पुस्तकें	४	३	५८	६९	११	१७	१०२	७८	१७२	८९	३०	१२२	९४	५९	२८४	१	३	—	—	—	—	—	३	११९६	४३.६६
कला और संगीत	१	१	३२	५५	१३	१७	६९	५५	११७	४१	२०	८१	५३	४०	१९३	१	२	—	—	—	—	—	३	७९१	२८.८६
चिकित्सा	—	—	३०	४९	७	९	६१	४२	१३६	५६	२३	९४	६३	३३	२४०	—	२	—	—	—	—	—	१	८४५	३०.८८
महिलोपयोगी	१	१	३१	५९	१२	९	७०	७०	११३	७४	२५	१११	८०	३२	२२९	—	१	—	—	—	—	—	३	९१८	३३.५५
बाल-साहित्य ५ से १० वर्ष तक	३	३	४८	५७	४	९	६२	८१	१०८	६९	२२	१०३	७४	३८	२२०	—	२	—	—	—	—	—	३	९०३	३३.०१
बाल-साहित्य १० से १४ वर्ष तक	२	२	३७	६३	९	१३	८७	९७	१४०	८९	३०	११४	९७	७२	२६२	—	२	—	—	—	—	—	४	११२३	४१.३३
कोश-साहित्य	३	३	२७	५४	१०	१८	६६	४७	१०७	५९	५४	१०६	६५	४९	१८८	—	३	—	—	—	—	—	४	९२९	३०.३३
प्रचारित प्रश्नावली की संख्या	५००	२००	६००	४००	४००	१००	२५००	५००	३००	५००	८००	५००	६००	३४००	६०००	१००	२०	२०	५०	२०	१०	५	१०२	२४८२७	—
उत्तर-प्राप्ति संख्या	६	४	९१	१२	२३	२९	१७७	५९	३०८	१४९	५४	२४४	१६५	५६४	६३४	१	५	—	—	—	—	—	११	२७३६	११.०२
उत्तर-प्राप्ति प्रतिशत	१.२	२	१५.१६	२८	५.७५	२९	७.०८	३१.८	१०.२६	३०	६.७५	४.८८	२७.५	१६.३	१०.५६	१	२५	—	—	—	—	—	१०	—	११.०२

पुस्तकालयों की समृद्धि बढ़ानेवाला, तथा प्रकाशन व्यवसाय के लिये

परम उपयोगी सेवा करनेवाला

अनोखा संदर्भ प्रकाशन

बृहद् हिन्दी ग्रन्थ-सूची

(हिन्दी वाङमय के ग्रन्थ तथा ग्रन्थकारों की विस्तृत नामावली)

संपादक : यशपाल महाजन तथा कृष्णा महाजन

मूल्य : ३६ रुपये मात्र

क्या आप जानना चाहते हैं कि

- अमुक लेखक की कौन-कौन-सी पुस्तकें उपलब्ध हैं?
- अमुक पुस्तक का लेखक, अनुवादक तथा संपादक कौन है?
- अमुक पुस्तक का प्रकाशक कौन है?
- अमुक पुस्तक का विषय क्या है?
- अमुक पुस्तक का मूल्य क्या है?

इन सभी जटिल प्रश्नों के उत्तर आप बृहद् हिन्दी ग्रन्थ-सूची में पायेंगे।

बृहद् हिन्दी ग्रन्थ-सूची में लगभग २४,००० पुस्तकों का विवरण है।

सूची के दो विभाग हैं : (१) लेखक निर्देशी (२) ग्रन्थ निर्देशी। पहले विभाग में लेखक से व्यवस्था है। इसमें लेखक, ग्रन्थ का नाम, प्रकाशक, मूल्य तथा विषय दिये गये हैं। दूसरे विभाग में का अनुक्रम है। इसमें ग्रन्थ का नाम, लेखक, प्रकाशक तथा मूल्य, आदि क्रम है। इनमें आपको सभी तरह जानकारी उपलब्ध होगी। इसके अतिरिक्त जिन प्रकाशकों (लगभग ५३०) की पुस्तकों का इस बृहद् ग्रन्थ में समावेश है उनकी पूरी नामावली और पते भी दिये गये हैं। साथ ही अनेक तरह के निर्देशी (Cross References) भी हैं। यथा-सम्भव लेखकों की जन्म तिथियाँ भी दी गई हैं। इन अद्भुत उपक्र से इस ग्रन्थ-सूची की उपयोगिता कहीं अधिक बढ़ गई है।

• पृष्ठ संख्या : लगभग ६०० • आकार : डबल क्राउन • सुन्दर छपाई

• उत्तम कागज़ • मज़बूत जिल्दबंदी

[पुस्तक १० फरवरी, १९६५ तक प्रकाशित हो जायेंगी। विशिष्ट संदर्भ ग्रन्थ होने से इसे परि संख्या में प्रकाशित किया जा रहा है। इसकी प्रति अपने लिये सुरक्षित करा लेना अच्छा होगा। अपने निक पुस्तक-विक्रेता से प्राप्त करें अथवा सीधे हमें लिखें।]

प्रकाशक

भारतीय ग्रन्थ निकेतन

१३३ लाजपतराय मार्केट, दिल्ली–६

हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप-विकास

कुछ शंकाएँ और उनके समाधान

[एक पत्र-व्यवहार]

श्रीयुत डॉ० सिंह जी,

सादर नमस्कार ।

आप की पुस्तक 'हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप-विकास' पर मनन किया ! तत्पश्चात् कुछ ऐसी शंकाएँ मन में उठीं जिनका निराकरण न हो सका । ऐसी स्थिति में आप से नम्र निवेदन है कि, यदि अवकाश हो तो स्वयं लिखकर अथवा उन पुस्तकों का नामाङ्कन कर, जिनसे भ्रम दूर हो जाय, उन शंकाओं का निवारण करें । शंकाएँ निम्न हैं :—

१. क्या Ballad एवं वीर गीत एक ही नहीं हैं ? मैंने तो लोक-गाथा चक्र या लोक-गाथा Cycles of Chronicles तथा Chronicles और इनके गायकों को Chronclers पढ़ा है । यदि यह बात है तो आचार्य शुक्ल की बात सही है और आप का प्रतिवाद अन्यथा ।

२. पृथ्वीराज रासो के विषय में जो कुछ आप ने कहा उससे यही प्रतिपादित होता है कि वह आल्ह-खण्ड की तरह का ही काव्य है, परन्तु अन्तर यह है कि वह राजाओं द्वारा राजस्थानी साहित्य में लिपिबद्ध कराया गया । 'रासक' या 'रास' से उसका संबंध कुछ भी नहीं है । आल्हा गाया जाता है; लोगों की जबान पर भी है फिर भी उसे 'रासो' नहीं कहा जाता । तृतीय विकासावस्था जैसा आप ने प्रतिपादित किया है वह हमें उपयुक्त लगता है परन्तु इससे 'रासक' से उसका कुछ सम्बन्ध नहीं है । यह तो बहुत प्रत्यक्ष सत्य है, हम सभी परिचित भी हैं कि सभी लोग अजीब-अजीब बातें किसी भी व्यक्ति के लिए कहा करते हैं । अमेरिका में ऐसी बात की सत्यता के लिए शायद एक प्रदर्शन भी हुआ था जिसका वर्णन Russ 1 ने किया है जिसमें एक भक्तिन के पानी पर चलने की बात थी । परन्तु भक्तिन चली नहीं । उसने सबसे पूछा कि आप लोगों को मेरे ऊपर शंका है कि मैं नहीं चल सकती । लोगों ने कहा नहीं तो । उसने कहा "Then why trouble of walking on the water." लोग हँसते-हँसते पार चले गए । तो ऐसी निजंधरी कथाएँ भी हुई, होंगी । Facts एवं Fictions को साफ-साफ आप ने नहीं लिखा है तो 'रासो' जाली ग्रंथ नहीं हुआ क्या ?

३. मैंने जूलियन हक्सले की एक पुस्तक पढ़ी है जिसमें उसने Anthropologists की त्रुटियों की ओर संकेत किया है । उसके अनुसार हरेक की Culture अलग-अलग होती है और उसी पर 'विकास' निर्भर है तो आपने क्यों Marx के ऐतिहासिक दृष्टिकोण को अपनाया है और क्यों नेतृत्व शास्त्रियों की बात को Final मान लिया है ? उदार संस्कृति के अभ्यासी को यह Dogmatic लगता है ।

४. टैगोर की महाकाव्य की परिभाषा आपने स्थल-स्थल पर दिया है, परन्तु जैसे टैगोर की उदार आत्मा आप के चिन्तक Frame में कुछ जकड़-सी गई है । क्या यह सही है ? क्या आपने अपनी अनुभूति को स्वतंत्रता पूर्वक व्यक्त किया है ? क्या डा० द्विवेदी का मस्तिष्क आप-को नहीं दबाया है ?

५. महाकाव्य के लिए जो समय आपने निर्धारित किया है कि ऐसे-ऐसे समय में ही ऐसा-ऐसा काव्य लिखा जायगा, क्या यह सही है ? क्या Evolution एवं Arthur Edingtan की Quantiun theory को आपने भुला नहीं दिया है ऐसी भूमिका बाँधते समय ?

६. मसनवी का शाब्दिक अर्थ क्या होता है ? मैं नहीं समझ पाया हूँ ।

७. चरित काव्य एवं घटना काव्य का विवरण करते करते आपने पद्मावत को प्रथम कोटि में रखा है जब कि शुक्ल जी ने द्वितीय में ! वहाँ आपका कथन कुछ समझ में नहीं आया । आप की उदार भावना आचार्यों के लक्षणों पर विभिन्न कवियों का महाकाव्य कैसे कसती है ? आधुनिक युग के 'महाकाव्य' के साथ आप ने सारी उदारता भुला दी है ।

८. मेरी मूर्खता यह है कि मैं कवि की कविता में महत् उद्देश्य ढूँढ़ने का हिमायती हूँ, क्यों कि कोई महान भावना ही बड़ा पोथा लिखाती है तो बड़े पोथे में वह उद्देश्य (?) यदि कोई हो भी कभी दुनियाँ में (?) नहीं मिलेगा क्या ?

९. 'महाभारत' एवं 'रामायण' को आप Epic of growth कहते हैं, मेरा मन यह कबूल नहीं करता है । परन्तु अभी अध्ययन कर नहीं पाया हूँ । अतः आप से निवेदन है

कि इन पर फिर से सोचिए। उदार-मना बन कर सोचिए। शायद भारतीय संस्कृति शुरू से ही कुछ विशिष्ट दिखलाई पड़े। तब शायद आप देशी-विदेशी बात पर बढ़िया Judgement दे सकें।

मेरी ये बातें एक विद्यार्थी की प्रश्नावली समझकर उत्तर देंगे।



प्रिय त्रिपाठी जी !

आपका २३।१२ का पत्र मिला। आपकी शंकाओं का समाधान अपनी बुद्धि के अनुसार नीचे कर रहा हूँ।

१. बैलेड और वीरगीत एक ही नहीं है। बैलेड का अनुवाद होगा गाथागीत। गाथा-गीत में कोई कथानक अवश्य रहेगा। इस तरह वह व्यापक शब्द है। वीर गीत शब्द का अंग्रेजी अनुवाद होगा Heroic ballad अतः बैलेड के भीतर वीरगीत अन्तर्भुक्त हो जाता है। बैलेड में प्रेम-गीत भी हो सकता है, रोमांचक-साहसिक कथा भी हो सकती है। इन सब को गाथा गीत कहा जायेगा क्रानिकल का अर्थ तो ऐतिहासिक गाथा या इतिहास होता है, जिसमें निजन्धरी कथायें भी शामिल होती हैं और जो गद्य-पद्य दोनों में होता है। अतः किसी बैलेड को पूर्णतः क्रानिकल नहीं कहा जा सकता।

२. मैंने यह कहाँ कहा है कि पृथ्वीराज रासो आल्हखण्ड जैसा लोक महाकाव्य है ? हाँ, उसे विकसनशील महाकाव्य (एपिक आफ ग्रोथ) अवश्य कहा है जिसे सभी मानते हैं। रासक काव्य प्रारंभ में वाद्य के साथ जैन मन्दिरों में गाये जाते थे। बाद में चरितकाव्य के लिए रासक शब्द रूढ हो गया और गाने से उसका सम्बन्ध विच्छिन्न हो गया। आल्हकण्ठ एक कवि का लिखा काव्य था या नहीं, इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा जा सकता क्योंकि अब वह पूर्णतः लोक कण्ठ का काव्य है। पर रासो ऐसा नहीं है, वह लोक काव्य नहीं, शिष्ट काव्य है, हाँ उसमें परिवर्तन और विकास १७ वीं शताब्दी तक शिष्ट कवियों द्वारा किया जाता रहा। आल्हा को रासो इसलिए नहीं कहा जाता कि उसका रूप उपलब्ध नहीं है, हो सकता है कि उसके मूल रूप में भी रासो शब्द न जुड़ा हो पर कुछ लोगों ने उसके मूल रूप का नाम "परमाल रासो" कल्पित किया है।

सभी काव्यों में कल्पित कथानक मिला रहता है। जो बिल्कुल ऐतिहासिक काव्य होते हैं उनमें कल्पित बातें कम होती हैं। केवल कल्पित कथानक या घटनाएँ होने से रासो को जाली काव्य क्यों कहा जायेगा। जाली तो तब कहते जब सिद्ध हो जाता कि यह चन्दवरदाई का लिखा नहीं है, किसी और व्यक्ति ने बहुत बाद में उसे लिख कर चन्द के नाम पर चला दिया। पर सिद्ध तो यह होता है कि उसे मूल रूप में चन्दवरदाई ने लिखा और सैकड़ों वर्षों में धीरे-धीरे उसका विकास हुआ। काव्य का back से युक्त होना आवश्यक नहीं है। एकदम कल्पित कहानी वाले काव्य भी होते हैं, जैसे स्वप्न कथिक आदि।

३. नृतत्व शास्त्र में त्रुटियाँ हो सकती है पर वह शास्त्र ही झूठा है, ऐसा हम्सले ने नहीं कहा होगा। मैं मार्क्सवाद और नृतत्व-शास्त्र को अन्तिम नहीं मानता, हाँ समाज के अध्ययन के लिए तथा साहित्य समीक्षा के लिए उनका ज्ञान आवश्यक समझता हूँ। क्या मेरी पुस्तक में मेरे विचार और निष्कर्ष कट्टरतावादी (डागमैटिक) हैं।

४. रवीन्द्रनाथ ठाकुर (टैगोर शब्द अंग्रेजों का है) और हजारी प्रसाद द्विवेदी के मतों का उद्धरण मैंने अपने मत के समर्थन के लिए दिया है, मेरे निष्कर्ष बिल्कुल मेरे हैं, तभी तो मुझे पी. एच. डी. की उपाधि मिली। अनुकरण करने पर कैसे मिलती ?

५. महाकाव्य हो, मुक्तक काव्य हो अथवा कोई भी साहित्यिक विधा हो, युग का प्रभाव उस पर अनिवार्य रूप से पड़ेगा, शैलियों में पर परिवर्तन होगा ही, बस इतना ही मेरा सत्य का सारांश है। इसी दृष्टि से मैंने महाकाव्य के स्वरूप में घटित होने वाले भिन्न युगीन परिवर्तनों की खोज की है। काव्य सिद्धान्त विचारों और सिद्धान्तों के सम्बन्ध में लागू हो सकता है, शैलियों के बारे में नहीं। उदाहरणार्थ बाल्मीकि छायावादी या प्रतीकवादी काव्य नहीं लिख सकते थे, ऐसा काव्य पूँजीवाद के उदय और विकास के साथ ही लिखा जा सकता है। यह अत्यन्त गूढ़ और अधिक समय की अपेक्षा रखनेवाला विषय है। अतः इस पर बाद में अलग से विचार की आवश्यकता है। विकासवाद (इवोल्यूशन) के सिद्धान्त को तो मैंने माना ही है, भुलाया कहाँ है ? रचना-प्रक्रिया के क्षेत्र में मैं क्वाण्टुम-सिद्धान्त का भी पक्का समर्थक हूँ।

६. **मसनवी** फारसी का एक काव्य-रूप है। हिन्दी में जैसे मुक्तक और प्रबन्ध-काव्य है, वैसे ही फारसी में रुबाई और मसनवी है।

पूर्ण—संग्रहणीय एवं उपयोगी

ताएँ, १९६३ — सं० अजितकुमार व विश्वनाथ त्रिपाठी ४.००

सन् १९६३ में लिखित, प्रकाशित अथवा प्रसारित ११९ कविताओं का प्रतिनिधि संकलन। खड़ी बोली के समग्र काव्य की प्रतिनिधित्वपूर्ण झाँकी।

रामचन्द्र तिवारी, सिद्धि तिवारी ५.००

कृष्ण की बहन और अभिमन्यु की माता सुभद्रा के कैशोर और तारुण्य की मनोरम एवं शौर्यपूर्ण गाथा।

रणी और पत्थर — निर्मला दर ५.००

पहाड़-जैसे कश्मीरी तरुण की उत्सर्गपूर्ण गाथा। निर्झरिणी जैसी शिक्षिता तरुणी के अद्भुत रूप। अति रोचक उपन्यास।

से... — पी. केशवदेव २.५०

मलयालम के प्रतिष्ठित उपन्यासकार के 'ओटियल निन्नु' नामक अत्यन्त लोकप्रिय उपन्यास का सरस हिन्दी अनुवाद। मलयालम में अब तक इसके १३ संस्करण हो चुके हैं।

न रंग — शंभु मित्र, अमित मित्र ३.००

बंगला रंगमंच के प्रसिद्ध अभिनेता और निर्देशक श्री शंभु मित्र के नाटक 'कांचन-रंग' का श्री नेमिचन्द्र जैन द्वारा सरस अनुवाद। अभिनेय नाटक। भारतीय नाट्य-साहित्य माला का प्रथम पुष्प।

गर ने बजे? — संतराम वत्स्य १.२५

की कहानी — ,, १.२५

बाल-मित्र ज्ञान-विज्ञान माला के अन्तर्गत प्रकाशित दो नई पुस्तकें। रंगीन चित्रों से सुसज्जित। भाषा सरल, सुबोध और शैली रोचक।

उद्योगों का विकास और पंचायतें : रामनारायण उपाध्याय १.२५

खेती-उद्योगों में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने की दृष्टि से ग्राम-पंचायतें किस प्रकार अपना सहयोग प्रदान कर सकती हैं—इस पर अत्यन्त ही सरल, रोचक एवं व्यावहारिक ढंग से प्रकाश डाला गया है।

लाल नेहरू — शान्तिलाल छाजेड़ १.५०

स्वाधीनता-संग्राम के अमर सेनानी और अप्रतिम वाग्मी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की झाँकी—संक्षिप्त परन्तु सरस, सचित्र और प्रेरणापूर्ण जीवनी।

महत्वपूर्ण पुस्तकें आपके पुस्तकालय की स्थायी निधि सिद्ध होंगी। आज ही अपने निकटतम पुस्तक-विक्रेता से नी रुचि की पुस्तकें खरीदें अथवा हमें सीधे लिखें।

क-विक्रेताओं, पुस्तकालयों, विद्यालयों, पाठकों सभी के लिए समुचित सुविधाएँ।

लोक', जवाहर नगर, दिल्ली—७. (फोन: २२५७४२)

पद्मावत को चरितकाव्य ही माना जा सकता है। जैसा संस्कृत प्राकृत आदि में ऐतिहासिक व्यक्तियों या देवताओं के जीवन से सम्बन्धित काव्यों को माना जाता पर घटना काव्य तो वह नहीं ही है, क्योंकि वह विशुद्ध वर्णनात्मक काव्य नहीं, मनोवैज्ञानिक, आध्यात्मिक, रूपकात्मक और रसात्मक काव्य है।

मैंने भारतीय आचार्यों के मतों को अंशतः ही स्वीकार किया है, पूर्णतः नहीं। यही बात पाश्चात्य आचार्यों के सम्बन्ध में भी है। अतः उनके लक्षणों पर मैंने हिन्दी महाकाव्यों को नहीं कसा है। मैंने स्वयं महाकाव्य के आठ लक्षण बताये हैं, जिन्हें आपने पढ़ा होगा। उन लक्षणों के आधार पर मुझे आधुनिक युग में कामायनी के अतिरिक्त और कोई काव्य महाकाव्य नहीं प्रतीत हुआ। अनुदार या उदार होने का प्रश्न निर्णायक के सामने नहीं उठना चाहिए। उसे 'न्याय' करना चाहिए।

८. यह सोचना भ्रम है कि महती भावना ही बड़ा पोथा लिखाती है। महत् उद्देश्य और महती भावना के बिना भी केवल राजा से धन-मान प्राप्त करने के लिए दरबारी कवियों ने बड़े-बड़े पोथे लिखे। इतना अधिक तर्काभास न कीजिये भाई। बड़े उदेश्य से बड़ा काव्य लिखा जा सकता है पर इससे इसका यह विपरीत भी सही नहीं हो सकता कि हर बड़े पोथे के लिखने में कोई बड़ा उद्देश्य भी होगा। वैसे छोटे काव्यों में भी महत् उद्देश्य होते हैं, बड़ों में ही नहीं होते।

९. महाभारत और रामायण के बारे में मैंने काफी सोच कर लिखा है फिर भी यदि आप स्वयं सोच कर, मन की हलकी भावना या पूर्व... से ही, कोई सुझाव दें तो मैं... स्वीकार करूँगा। ज्ञान-विज्ञान... क्षेत्र में उदार बनने से काम... चलता, वहाँ सच्चा और सत्य... और ईमानदार बनना होता है... उससे किसी के हृदय को ठेस... न लगे। भारतीय संस्कृति... शुरू से ही विशिष्ट दिखाई पड़... वैसे ही ग्रीक, रोमन, अरब, मिस्र... चीनी संस्कृतियाँ भी दिखाई... है। पर क्या वे आज के युग के... भी वैसी ही मान्य हैं जैसी... थीं?

मैं आपके प्रश्नों का आदर... हूँ। आप के मन में मेरी... पढ़ कर कुछ विचार तो... धन्यवाद।

—शंभुनाथ...

अपरिहार्य, अप्रतिम और मौलिक

शोध-प्रबन्ध

✦ मलिक मुहम्मद जायसी और उनका काव्य

डॉ० शिवसहाय पाठक — १६.००

✦ आधुनिक हिन्दी-कविता में ध्वनि

डॉ० श्रीकृष्णलाल शर्मा — १५.००

✦ छायावाद : काव्य तथा दर्शन

डॉ० हरनारायण सिंह — १५.००

✦ प्रगतिवादी समीक्षा

श्री रामप्रसाद त्रिवेदी — १०.००

उच्चकोटि की विषय-विवेचना ✤ आकर्षक रूप-सज्जा ✤ कलात्मक मुद्रण

●

प्रकाशक :



ग्रन्थम

[उच्चकोटि के शोध-प्रबन्धों के प्रकाशक]

१०४ए/२१५, रामबाग, कानपुर

हिन्दी राष्ट्रभाषा के सर्वथा योग्य

[असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति में समारोह]

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की ओर से अखिल भारतीय सम्पादक सम्मेलन में आये हुए हिन्दी के सम्पादकों के सम्मान में एक गोष्ठी का आयोजन विगत माह २७ दिसंबर १९६४ को समिति के भवन में किया गया। समिति का परिचय देते हुए मंत्री श्री रजनीकान्त चक्रवर्तीजी ने कहा कि उनकी संस्था अखिल भारतीय हिन्दी संस्था से सम्बद्ध है और असम, नेफा, त्रिपुरा में हिन्दी-प्रचार के लिए विगत २५ वर्षों से कार्य कर रही है। श्री चक्रवर्तीजी ने आगे कहा कि सभा द्वारा संचालित 'प्रबोध', 'विशारद', 'प्रवीण' आदि परीक्षाओं को मान्यता मिल चुकी है और इन परीक्षाओं में लगभग बीस हजार विद्यार्थी बैठते हैं। उन्होंने कहा कि असम में हिन्दी के विरुद्ध कोई भी नहीं है, परन्तु भारत सरकार ने जब हिन्दी को नेफा में अनिवार्य करने की बात कही, तब हिन्दी के विरोध में कुछ सामान्य सी आवाज उठी। चक्रवर्ती जी ने कहा कि हमें ऐसी स्थिति अपने कार्य द्वारा उत्पन्न करनी है कि अहिन्दी भाषी स्वयं ऐसी माँग करें कि हिन्दी राष्ट्र-भाषा का पूर्ण रूप से स्थान ग्रहण करे। अपने भाषण में उन्होंने आगे यह भी बताया कि समिति की ओर से एक व्याख्यानमाला का आयोजन किया जानेवाला है, जिसमें सर्वश्री दिनकरजी, डॉ० सत्येन्द्र, डॉ० रामविलास शर्मा, डॉ० जगन्नाथप्रसाद शर्मा आदि विद्वान आमन्त्रित किये जायेंगे।

'हिन्दी प्रचारक' सम्पादक श्री कृष्णचन्द्र बेरी ने अपने भाषण में कहा कि यह प्रचार बेबुनियाद है कि हिन्दी में राष्ट्र-भाषा होने योग्य साहित्य उपलब्ध नहीं है। उन्होंने कहा कि जिस तेजी से आज हिन्दी में विज्ञान और तकनीकी विषय के प्रकाशन हो रहे हैं, उसकी तुलना किसी भी भाषा के समृद्ध साहित्य से की जा सकती है। अनुवादों के सम्बन्ध में श्री बेरी ने कहा कि जिस तेजी से हिन्दी में अनुवाद कार्य हो रहा है, उसे देखते हुए कहा जा सकता है कि आगामी पाँच वर्षों में सभी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रमुख ग्रन्थ हिन्दी में अनूदित हो जायेंगे। अनुवाद के प्रसंग में श्री बेरी ने आगे कहा कि हिन्दी की कोई भी कृति असमिया में अनूदित हो तो उसकी अनुमति सहर्ष हिन्दी के लेखक व प्रकाशक बिना कुछ लिये देंगे। अहिन्दी भाषाभाषी प्रदेशों में शीघ्र ही प्रकाशक संघ की ओर से एक पुस्तक प्रदर्शनी की जा रही है। श्री बेरी ने समिति को आश्वासन दिलाया कि वे इस प्रदर्शनी को गौहाटी भी भिजवायेंगे और इससे असम की जनता को मालूम हो सकेगा कि हिन्दी प्रकाशन में कितनी प्रगति हुई है।

अखिल भारतीय सम्पादक सम्मेलन के अध
अक्षयकुमार जैन ने कहा कि हिन्दीतरभाषियों ने ही यह
किया था कि हिन्दी को राष्ट्र-भाषा बनाया जाय।
बनाने के समय सभी राज्यों के प्रतिनिधियों ने हि
राष्ट्र-भाषा बनाने के प्रस्ताव का समर्थन किया था
जैन ने कहा कि हिन्दी का विरोध करनेवाले कुछ ऐसे
भर लोग इस देश में हैं जो अंग्रेजी बोलते हैं और उन्हें
हुआ है कि अंग्रेजी हट जाने से उनकी नेतागिरी
आयेगी। श्री जैन ने कहा कि देश में २१-२२ करो
ऐसे हैं जो हिन्दी बोलते हैं और ऐसे लोगों को अंग्रेजी
दस्ती नहीं पढ़ायी जा सकती। पश्चिमी भाषाओं
करते हुए श्री जैन ने कहा कि फ्रेंच योरोप की प्रमुख
है, इसका कारण था कि सारे योरोपीय साहित्य का फ्रें
में उपलब्ध होना। यदि हिन्दी में सभी भाषाओं का
आ गया तो हिन्दी राष्ट्रभाषा होकर ही रहेगी।
पोजनन के मेले का जिक्र करते हुए श्री जैन ने बता
उस देश में तो अंग्रेजी बोलने वाले नहीं के बराब
वहाँ अंग्रेजी का कोई महत्व ही नहीं है। अंग्रेजी के
हिमायतियों को चुनौती देते हुए श्री जैन ने कहा
देखने में यह नहीं आया कि भारतीय अंग्रेजी लेख
अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में कोई विशेष महत्त्व मिला हो।
भाषण समाप्त करते हुए उन्होंने कहा कि मेरी असम
भाषा प्रचार समिति की कार्यविधियों में दिलचस्पी
है और मेरी कामना है कि समिति अपने उद्देश्य में सफ
हो। उन्होंने अपील की कि आगामी २६ जनवरी से
काम हिन्दी में आरम्भ किया जाय तो हिन्दी के राष्ट्र
बनने में कोई सन्देह नहीं रह जायगा।

पूर्व ज्योति प्रेस के संचालक श्री छगनलाल जी
उपस्थित महानुभावों को धन्यवाद दिया और आशा
की कि समिति को सबका सहयोग प्राप्त होगा। इस
पर निम्नलिखित महानुभाव उपस्थित थे :—

सर्वश्री योगीन्द्रपति त्रिपाठी 'स्वतन्त्र भारत'
बालेश्वर अग्रवाल 'हिन्दुस्तान समाचार' नई
ईश्वरचन्द्र जैन 'जागरण' दैनिक इन्दौर, नरेन्द्र मोहन
रण' दैनिक कानपुर, लल्लनप्रसाद व्यास, धीरेन्द्र
तथा सेवन्तीलाल शाह 'सविता' मासिक, बम्बई।
हीरालाल तिवारी, प्रो० परेशचन्द्र शर्मा एवं असम
के हिंदी-अधिकारी श्री लोकनाथ भराली प्रभृति।

बुक ट्रेड मैनुअल (Book Trade Manual) फॉरसाउथएशियन कंट्रीज*: एक परिचय



यह पुस्तक यूनेस्को के अन्तर्गत संचालित बुक सेलर्स ट्रेनिंग कोर्सेज़ की रिपोर्टों पर आधारित है। इन कोर्सों के संचालकों में विभिन्न देशों के पुस्तक-व्यवसायक्षेत्रों के मान्य विशेषज्ञ थे। मेसर्स ओरियंट लाँगमैन्स मदरास के संचालक, श्री एस० एस० थाटाचारी ने बहुत कुशलता से इसका संपादन किया है।

इसमें पुस्तकशाला (बुकशॉप) को ज्ञान का मन्दिर और सभ्यता का केन्द्र कहा गया है, जिसके संचालन में प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं के उत्तरदायित्व पहले अध्याय में स्पष्ट किए गए हैं। दूसरे में पुस्तकशाला का प्रबन्ध है, जिसके अन्तर्गत सहायकों के चुनाव, उनके बीच कार्य-विभाजन, स्टाक और आर्डरों की व्यवस्था, उधार बिक्री, कार्यालय-व्यवस्था आदि महत्वपूर्ण समस्याओं का बहुत अनुभवपूर्ण, व्यावहारिक और ज्ञानवर्धक विवेचन है। तीसरे अध्याय में स्टॉक की खरीद के सम्बन्ध में सुविचरित व्यापारिक सुझाव दिए गए हैं जिनका अनुसरण करके स्टॉक की विविधता का गौरव, आर्थिक लाभ की उपलब्धि, और बिन-बिके स्टॉक के जोखिमों का निवारण हो सकता है। चौथे अध्याय में दूकान के सीमित स्थान के आकर्षक और सुविधाजनक प्रयोग पर, और पाँचवें में पुस्तक-प्रदर्शन कला पर ओजपूर्ण सामग्री है। छठा अध्याय मुख्यतः ऐसी बिक्री-विधि के आयोजन से सम्बन्धित है जिसके अनुसार विभिन्न पुस्तकें अपने सही स्थान पर, सही संख्या में, सही मूल्य पर, और सही समय पर, अपने ग्राहकों को उपलब्ध हो सकें।

सातवां अध्याय ग्राहकों की रुचि आदि की पूर्ण जानकारी पर जोर देता है। 'नियमित' ग्राहकों की आवश्यकता, रुचि, सन्तोष आदि का भरपूर ध्यान रखने के साथ-साथ, सफल पुस्तक-विक्रेता को अपने बिक्री-क्षेत्र में, अपने आकर्षक प्रयत्नों से, पुस्तक-प्रेमियों का एक नया वर्ग तैयार करना है। तेजी से बढ़ रही साक्षरता का इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा। आठवें अध्याय में आधुनिकतम प्रभावशाली बिक्री-वर्धक विधियों का बहुत स्फूर्तिदायक वर्णन है। नवें अध्याय का विषय सफल विक्रयकारिता और बिक्री-विधियों का नवीनतम दिग्दर्शन है। दूकान में बिक्री करना, डाक-द्वारा पुस्तकें भेजना, घरेलू पुस्तकालय योजनाएँ चलाना—इन सब को विशेष सफल बनाने के उपायों के साथ-साथ, पुस्तकों की निकासी की कुछ नई, लाभप्रद रीतियाँ भी प्रस्तुत की गई हैं।

दसवें अध्याय में, पुस्तकशाला में पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य संबन्धित वस्तुएँ रखने की उपादेयता पर, और ११वें में पुरानी किताबों की क्रय-विक्रय कला पर प्रकाश डाला गया है। १२वें अध्याय में स्टॉक की सुरक्षा और तत्सम्बन्धी सावधानी के कुछ बहुमूल्य सुझाव, और १३वें में पुस्तकशाला की खाता-पद्धतियों का वर्णन है। १४वें अध्याय में विभिन्न वर्गों के ग्राहकों के लिए बिक्री की शर्तें और सामान्य बिक्री सम्बन्धी प्रचलित रीतियाँ स्पष्ट की गई हैं। १५वें अध्याय में व्यावसायिक संघों पर पाँच पृष्ठों की सामग्री है, और अन्तिम अध्याय पुस्तकशालाओं की सेवा के सामाजिक पहलू से सम्बन्धित है। पुस्तक के अन्त में ७ उपयोगी परिशिष्ट हैं।

पुस्तक की छपाई, बंधाई, गेट-अप सब विद्वान लेखक के अनुकूल ही है। विशेष प्रयत्न से खोजने पर भी कोई प्रूफ-अशुद्धि नहीं मिलती। इस पर थाटाचारी और यूनेस्को के नाम देखकर, पाठक इसे बहुत आशा से खोलता है, और इस सन्तोष के साथ बन्द करता है कि पुस्तक व्यवसाय को इससे अपूर्व मनन-योग्य सामग्री मिलती है।

पुस्तक बन्द करने के बाद इतनी खटक अवश्य होती है कि इसकी सामग्री कुछ बहुत विशिष्ट पुस्तक-व्यवसायी विशेषज्ञों के द्वारा कुछ बड़े पुस्तक-व्यवसायियों को सम्बोधित की गई है, जिनकी संख्या बहुत कम है। इसमें पुस्तकशाला के कर्मचारीवर्ग के बीच विशेषज्ञता के आधार पर, कार्य वितरण, 'ले आउट,' ग्राहकों की जानकारी, व्यापारिक विक्रयकारिता, पुस्तकशाला-लेखे (बुक शाप एकाउन्ट्स) आदि कुछ ऐसे अति-गम्भीर विषयों का समावेश है कि इससे छोटा पुस्तक-विक्रेता लाभान्वित नहीं हो सकता।

पुस्तकव्यवसाय के लिए यह दुर्भाग्य की बात है कि इसमें छोटी

* **लेखक** : श्री एस. एस. थाटाचारी **प्रकाशक** : बुक इण्डस्ट्री काउन्सिल आफ साउथ इण्डिया, मदरास—१४। **भाषा** : अंग्रेजी, आकार डिमाई **पृष्ठ** १४०; **मूल्य** : ८.०० रुपये।

ों का ही बाहुल्य है, जिनके कारण बड़े परिमाण की व्यापारिक ुविधाओं से सदा वंचित रहा है। सुविधाओं के प्रति रुचि और गरुकता जागृत करने और पुस्तक-वसाय को विधिवत् संगठित करने व्यावसायिक संघों का निर्विवाद त्व है। पठन-सामग्री का वैज्ञानिक से कुशल उपादन औरसफल वितरण ने के लिए पाठकों की पठन-रुचि अध्ययन नितान्त आवश्यक है। तक व्यवसाय का यह अंग, जिसको जी में रीडरशिप सर्वे कहेंगे, अब बहुत कुछ उपेक्षित रहा है। वसायिक संघ ही इस निर्जीव अंग प्राण फूंक सकते हैं। व्यवसाय का पहलू इस पुस्तक में अपना उचित न नहीं पा सका, इसका खेद

आशा है भविष्य में, इस विषय पर, पुस्तक व्यवसाय की पूंजीसमस्या विशेषकर ऋण-पूंजी की उपलब्धि), के लिए सरकारी सहायता, इसके ानिक संगठन, पुस्तकों की महंगी क-दरों, प्रकाशकों के नैतिक दायित्वों दि विषयों पर विचारपूर्ण पुस्तकें-ने को मिलेंगी। योजना-सम्यता में तने अग्रसर हो चुकने पर भी हम पने सम्यता-प्रसारक (पुस्तक) व्यव-य के लिए कोई ऐसी योजना न बना के जिसके अनुसार देश-व्यापी स्तर र, आधुनिक साख-सम्बन्धी आदि व्यापारिक सुविधाओं के अन्तर्गत अच्छी पुस्तकों का, बड़े पैमाने पर, मितव्ययता-पूर्ण उत्पादन और वितरण हो सके। आशा है इस प्रकार के प्रकाशनों से इस कमी के निराकरण में शीघ्रता आएगी।

इस पुस्तक का पुस्तक-व्यवसाय क्षेत्र में हार्दिक स्वागत अपेक्षित है।

घोषणा

प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन आॅफ बुक्स एक्ट (१९५६ में संशोधित) की धारा १९ डी. के अनुसार 'हिन्दी प्रचा[रक]' के स्वामित्व आदि के सम्बन्ध में निम्नलिखित विवरण प्रकाशित किया जाता है :––

१. प्रकाशन का स्थान	वाराणसी
२. प्रकाशन की अवधि	मासिक
३. मुद्रक का नाम	श्री कृष्णचन्द्र बेरी
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता : विद्या मन्दिर प्रेस (प्रा०) लि०, मानमन्दिर, वाराणसी–१	
४. प्रकाशक का नाम	श्री ओम्प्रकाश बेरी
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता : हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, पिशाचमोचन, वाराणसी–१	
५. सम्पादक का नाम	श्री कृष्णचन्द्र बेरी
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता : हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, पिशाचमोचन, वाराणसी–१	
६. उन व्यक्तियों के नाम-पते, जो पत्रिका के मालिक हैं।	श्री निहालचन्द बेरी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी

मैं ओम्प्रकाश बेरी यह घोषित करता हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरी पूरी जानकारी और विश्वास के अनु[सार] यथार्थ है।

ओम्प्रकाश बे[री]

दिनांक : १-२-६५ (प्रकाशक का हस्ताक्ष[र])



हिन्दी संस्थाओं के लिए सरकारी अनुदान

केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय ने देश में, विशेषतः अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी का काम करनेवाली सार्वजनिक संस्थाओं से वित्त वर्ष १९६५-६६ में अनुदानके लिए आवेदनपत्र माँगे हैं। यह आवेदनपत्र मन्त्रालयके भाषा विभाग में निर्धारित फार्मों पर और सम्बद्ध राज्य सरकारों की मार्फत ३१ मार्च, १९६५ तक पहुँचने चाहिएँ।

आवेदनपत्र केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्रालय, राज्यों के शिक्षा विभाग और केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के कलकत्ता तथा मद्रास स्थित क्षेत्रीय अधिकारियों से प्राप्त किये जा सकते हैं।

जिन संस्थाओं को १९६४–६५ अथवा उससे पहले अनुदान दिया गया था, उनसे उसका हिसाब भी माँगा गया है। इसके लिए अन्तिम तिथि ३० अप्रैल, १९६५ है।

अहिन्दीभाषी सरकारी कर्मचारियों के लिए निबन्ध प्रतियोगिता

गणराज्य दिवस पर सारे देश में केन्द्रीय अहिन्दी भाषी कर्मचारियों के लिए केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद की ओर से हिन्दी की निबन्ध प्रतियोगिता होगी जिसमें बी० ए० से कम की हिन्दी योग्यतावाले सभी कर्मचारी भाग ले सकेंगे। इस प्रतियोगिता का सारा खर्च केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय उठायेगा।

प्रतियोगिता के विषय इस प्रकार हैं :—

(१) जनवरी, १९६५ और हिन्दी, (२) भारत और अणु बम, (३) भ्रष्टाचार कैसे दूर हो। प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए कोई शुल्क नहीं होगा। प्रविष्टियाँ प्रतियोगिता मन्त्री, केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद, ५२२ योजना भवन, नयी दिल्ली के पते पर भेजी जा सकती हैं।

प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ निबन्ध को १०१), दूसरे को ५१), और तीसरे को ३१) का पुरस्कार दिया जायगा। इनके अलावा प्रत्येक भाषा वर्ग के लिए भी एक-एक पुरस्कार रखा गया है। उर्दू, पंजाबी, कश्मीरी और सिंधी भाषा प्रतियोगियों को पहला, दूसरा और तीसरा पुरस्कार नहीं दिया जायगा। उन्हें केवल अपने भाषा वर्ग के ही पुरस्कार दिये जायेंगे। अच्छे स्तर के सभी निबन्ध लेखकों को प्रशस्ति पत्र बाँटे जायेंगे।

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद ने पिछले वर्ष भी लगभग ९० केन्द्रों पर इसी प्रकार की प्रतियोगिता की थी जिस में लगभग एक हजार सरकारी कर्मचारियों ने भाग लिया था।

दिल्ली में हिन्दी-सप्ताह

आगामी २६ जनवरी को हिन्दी के राजभाषा के पद पर आसीन होने के उपलक्ष्य में दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने इस वर्ष विशेष रूप से हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया। प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने इस अवसर आयोजित एक समारोह का उद्घाटन किया।

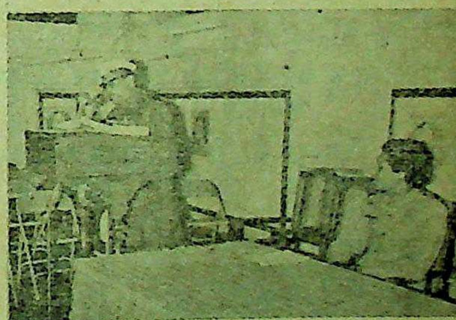
मौलिक नाटकों पर पुरस्कार

हिन्दुस्तानी अकादमी की कार्यसमिति ने निर्णय किया है कि १ जनवरी '४७ से ३० नवम्बर '६३ तक के लिये मौलिक नाटकों पर पुरस्कार दिया जायेगा। समिति की कार्यकारिणी उन नाटकों का चयन करेगी, जिन पर पुरस्कार देना उचित समझा जायेगा। प्रत्येक नाटक की आठ-आठ प्रतियाँ हिन्दुस्तानी अकादमी कार्यालय, ४ कमला नेहरू रोड, इलाहाबाद को ३१ मार्च १९६५ तक भेजी जा सकती हैं।

पटना में राष्ट्रीय पुस्तक समारोह एवं प्रदर्शनी

१७ दिसम्बर को पटना के व्हीलर सीनेट हाल में राष्ट्रीय पुस्तक समारोह एवं प्रदर्शनी की गई। इस अवसर पर देश भर के सभी प्रमुख प्रकाशकों ने अपनी सुन्दर पुस्तकें प्रदर्शनी में भेजीं। करीब ५००० पुस्तकें प्रदर्शित की गई। इस प्रदर्शनी को देखने पटना के करीब दस हजार पुस्तक प्रेमी पटना विश्व-विद्यालय के सीनेट हाल में आये।

इस समारोह का उद्घाटन शिक्षामंत्री श्री सत्येन्द्र नारायण सिन्हा ने किया। पुस्तकों की महत्ता पर कई



(श्री सत्येन्द्र नारायण सिन्हा, शिक्षा मंत्री, बिहार भाषण करते हुए एवं श्री सीता शरण सिंह सेक्रेटरी बिहार बुक ट्रेडर्स एसोशिएशन बैठे हुए।)

विचारपूर्ण भाषण हुए। प्रकाशकों की ओर से समारोह और प्रदर्शनी के आयोजक श्री सीताशरण सिंह सेक्रेटरी बिहार बुक ट्रेडर्स एशोसियेशन ने भाषण किया। लेखकों की ओर से साहित्य अकादमी के श्री क्षेमचन्द्र सुमन ने पुस्तकों की महत्ता पर प्रकाश डाला।

अभिनन्दन

समाजशास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान प्रो० राजाराम शास्त्री का विगत २६ दिसम्बर को काशी में भारत के प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री की अध्यक्षता में अभिनन्दन किया गया। शास्त्री जी ने हिन्दी में 'स्वप्न दर्शन' और समाज-शास्त्र पर पुस्तकें लिखी हैं।

श्रद्धांजलि

गत १२ दिसम्बर को भारत-भारती के अमर गायक राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का देहावसान हो गया। गुप्तजी भारत-भारती, जयद्रथ वध, साकेत, यशोधरा आदि ४० मौलिक तथा ६ अनूदित काव्यग्रन्थों के रचयिता थे और राज्यसभा के सदस्य भी थे। अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक गुप्तजी हिन्दी की सेवा में लगे रहे। उनके ग्रंथों ने राष्ट्र चेतना को योगदान दिया। साथ ही उन्होंने हिन्दी साहित्य के काव्य-क्षेत्र में अभूतपूर्व श्रीवृद्धि की। 'प्रचारक' परिवार राष्ट्रकवि के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है और उनके शोक-सन्तप्त परिवार के प्रति अपनी समवेदना प्रकट करता है।

पुस्तकों के निर्यात की सूचना

भारतीय प्रकाशनों के निर्यात सम्बन्धी आँकड़े तैयार किये जा रहे हैं। सभी प्रकाशकों से निवेदन है कि वे निम्न पते पर विभिन्न देशों में निर्यात की हुई पुस्तकों के मूल्य का विवरण भेजने की कृपा करें। तथा विशेष विवरण के लिये लिखें —श्री डी० एन० त्रिवेदी, व्यवस्थापक न्यू आंर्डर बुक कम्पनी, अहमदाबाद।

'प्राचीन भारत म लक्ष्मी प्रतिमा' पुस्तक का प्रकाशन समारोह

विगत १८ दिसम्बर को 'हिन्दी प्रचारक कार्यालय' में सुप्रसिद्ध पुरातत्वविद् डॉ० रायगोविन्द चन्द्रजी की कृति



(श्री कृष्णदेव प्रसाद जी गौड़ डॉ० रायगोविन्द चन्द्र को ग्रन्थ भेंट करते हुए।)

'प्राचीन भारत में लक्ष्मी प्रतिमा' का ग्रन्थ विमोचन समारोह हिन्दी के विख्यात साहित्यकार श्री भगवतीचरण वर्मा के

सभापतित्व में मनाया गया। सभापति पद से बोलते हुए वर्माजी ने प्रसन्नता व्यक्त की कि हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशन समारोह भी होने लगे हैं। उन्होंने कहा कि इस तरह के समारोहों से हिन्दी के प्रकाशनों के प्रति पाठक आकृष्ट होंगे और समाचारपत्रों की सहायता से ऐसे समारोहों द्वारा कृतियाँ प्रकाश में आयेंगी। 'प्रचारक' व्यवस्थापक श्री कृष्णचन्द्र बेरी ने इस प्रकार के समारोहों को पुस्तकों के आन्दोलन की भूमिका बताया। उन्होंने कहा कि आज का वैज्ञानिक युग इस बात को आवश्यक मानता है कि पुस्तकों का प्रचार-प्रसार करने के लिए इस तरह के समारोहों का आयोजन किया जाय। ऐसे समारोहों के आयोजन का मूल लक्ष्य है लेखक की कृति को जनता के समक्ष उपस्थित करना और पाठकों को इस बात से अवगत करा देना कि अमुक लेखक की अमुक कृति प्रकाशित हो गयी है।

ग्रन्थ की पहली प्रति डॉ० राय गोविन्दचन्द्र जी को समर्पित करते हुए श्री कृष्णदेवप्रसाद जी गौड़ ने कहा कि मुझे आशा है कि मेरे मित्र राय गोविन्दचन्द्रजी की यह कृति बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगी और उन्होंने लक्ष्मी प्रतिमा सम्बन्धी जो अनुसन्धान किये हैं, उससे पुरातत्व के क्षेत्र में नये तथ्य सम्मुख आयेंगे।

डॉ० राय गोविन्दचन्द्र जी ने उपस्थित महानुभावों के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि मैंने बहुत दिनों की खोज और मनन के बाद यह पुस्तक लिखी है। इसमें देश-विदेश की उपलब्ध लक्ष्मी प्रतिमाओं के सम्बन्ध में विशेष रूप से व्याख्या एवं तथ्य उपस्थित किये गये हैं। उन्होंने आशा प्रकट की कि यह पुस्तक इण्डोलाजी के पाठकों तथा पुरातत्वविदों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। राय-गोविन्दचन्द्र जी ने कहा कि मेरे इस प्रयत्न से इस विषय के पाठकों को कुछ भी सहायता मिल सकेगी तो मैं अपना सौभाग्य समझूँगा।

समारोह में सर्वश्री रामचन्द्र वर्मा, अमृतलाल नागर, लक्ष्मीनारायण मिश्र, गुरुभक्त सिंह 'भक्त', डॉ० शिवप्रसाद सिंह, डॉ० किशोरीलाल गुप्त, करुणापति त्रिपाठी, डॉ० मंगलदेव शास्त्री, पं० वाचस्पति पाठक, पं० देवनारायण द्विवेदी, प्रो० कन्हैयासिंह, राजाराम श्रीवास्तव, डॉ० बद्रीनाथ कपूर आदि विशिष्ट साहित्यकार उपस्थित थे।

श्री शंकर राजू नायडू

मद्रास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष श्री शंकर राजू नायडू विगत माह काशी पधारे। संस्कृत विश्वविद्यालय, नागरी प्रचारिणी सभा तथा 'हिन्दी प्रचारक' कार्यालय में आपका स्वागत किया गया।

पी-एच. डी. की सम्मानित उपाधि से सम्मानित

श्री कुंजबिहारी वार्ष्णेय को बंबई विश्वविद्यालय ने उनके शोध-प्रबन्ध 'हिन्दी एवं गुजराती के ज्ञानाश्रयी संत-काव्य का तुलनात्मक अध्ययन वि. सं. १६०१ से १६००' पर पी-एच. डी. की विशिष्ट उपाधि से सम्मानित किया है।

पहली फिल्म कहानी प्रतियोगिता : श्री विमल राय निर्णायक मण्डल में

साहित्य और सिनेमा को समीप लाने के लिए बम्बई की हिन्दी सिने पाक्षिक 'माधुरी' ने एक फिल्म कहानी प्रतियोगिता आयोजित की है। निर्णायक समिति में इस बार प्रसिद्ध फिल्म निर्माता-निर्देशक विमल राय रहेंगे, और सम्भवतः श्रेष्ठ कहानी पर फिल्म भी बनाएँगे। कहानियाँ अन्य फिल्म निर्माताओं को भी मिल सकेंगी। एक हजार रुपये के कुल पुरस्कारों के अतिरिक्त चुनी कहानियों पर फिल्म के लिए स्वीकृत होने पर ५००० रुपये से ऊपर पारिश्रमिक भी मिलेगा। पूरी नियमावली माधुरी से मिल सकती है।

फिल्म उद्योग में अच्छी कहानियों की कमी काफी दिनों से अनुभव की जा रही थी। फिल्म उद्योग में सर्वत्र इस आयोजन का स्वागत किया जा रहा है।

पं० माखनलाल चतुर्वेदी सम्मानित

हिन्दी के वयोवृद्ध साहित्यकार श्री माखनलाल चतुर्वेदी 'एक भारतीय आत्मा' के सम्मान में विगत माह शनिवार, दिनांक १६ जनवरी, १९६५ को खण्डवा में मध्यप्रदेश के राज्यपाल श्री हरि विनायक पाटस्कर की अध्यक्षता में एक द्विदिवसीय समारोह मनाया गया।

मध्यप्रदेश के मुख्य मंत्री पं० द्वारिकाप्रसाद मिश्र समारोह के संयोजक थे।

पुस्तकालय समिति काशी में

उत्तर प्रदेशीय सरकार की पुस्तकालय समिति का एक प्रतिनिधिमंडल श्री होतीलाल अग्रवाल, उपाध्यक्ष, विधान सभा, लखनऊ के नेतृत्व में विगत माह काशी आया। प्रतिनिधिमंडल ने हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, काशी विद्यापीठ, संस्कृत विश्वविद्यालय तथा हिन्दी प्रचारक कार्यालय का निरीक्षण किया। उस अवसर पर अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ की ओर से श्री कृष्णचन्द्र बेरी ने प्रतिनिधिमंडल से वार्ता की और संघ के विचार उपस्थित किये। पुस्तकों की टेण्डर प्रथा के सम्बन्ध में समिति के सदस्यों को अवगत कराया गया और साथ ही इस बात की उपयोगिता पर विचार विमर्श हुआ कि पुस्तकालयों में स्वस्थ साहित्य ही रखा जाय।

श्री वर्मा जी तथा व्यासजी सम्मानित

विगत गणतन्त्र दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति राधाकृष्णन् ने हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री वृन्दावनलाल वर्मा को पद्मभूषण तथा सुप्रसिद्ध कवि एवं पत्रकार श्री गोपालप्रसाद व्यास को पद्मश्री की उपाधि से विभूषित किया।

श्री अज्ञेय को अकादमी पुरस्कार

साहित्य अकादमी की कार्यसमिति ने इस वर्ष 'आँगनके आर पार' कविता-संग्रह पर श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' को वर्ष की सर्वश्रेष्ठ हिन्दी की कृति होने के नाते ५००० रुपये का अकादमी पुरस्कार देने का निर्णय किया है। यह पुरस्कार राष्ट्रपति राधाकृष्णन १५ फरवरी को दिल्ली में होनेवाले समारोह में श्री अज्ञेय को अन्य भाषाओं के साहित्यकारों के साथ देंगे।

श्री भगवानदीन साहित्य-विद्यालय का प्रकाशन कार्य

काशी का श्री भगवान दीन-साहित्य-विद्यालय ४६ वर्षों से हिन्दी-साहित्य की सेवा में संलग्न है। इसमें हिन्दी साहित्य की उच्च शिक्षा निःशुल्क दी जाती है और यह स्थानीय साहित्योपासकों की तपःस्थली का स्वरूप ग्रहण कर चुका है। राष्ट्रीय चेतना के आरंभ काल सन् १९१६ ई० में इस विद्यालय के संस्थापक हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान् और काव्य-मर्मज्ञ लाला भगवानदीन जी 'दीन' रहे हैं, जिनके शिष्यों द्वारा स्थानीय साहित्यिकों के निःस्पृह सहयोग से यह विद्यालय आज दिन संचालित हो रहा है। स्वर्गीय 'दीन' जी के जन्म के शत् वर्ष और विद्या[लय] की स्थापना के पचास वर्ष संवत् २०२३ (सन् १९६[६]) में पूरे हो रहे हैं। उस अवसर पर 'दीन'-जन्म[शताब्दी] समारोह करने और विद्यालय की स्वर्ण जयन्ती मना[ने] का निश्चय विद्यालय की प्रबन्ध-कारिणी समिति [ने] अपनी गत २७ दिसम्बर की बैठक में किया है। उक्त अवसर पर 'लाला भगवानदीन-ग्रंथावली' [का] प्रकाशन विद्यालय के अधिकारी विद्वानों की देख-रे[ख] और संपादकत्व में होगा और विद्यालय की ओर [से] सुष्ठु एवं आवश्यक हिन्दी-ग्रंथों का प्रकाशन [का] आगे बढ़ाया जायगा। इस कार्य के लिए विद्यालय [की] प्रवन्धसमिति ने अग्रांकित सज्जनों की एक उपसमि[ति] गठित की है :--

१. श्री आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, २. श्री विद्याभूषण मिश्र, ३. श्री रमापति शुक्ल, ४. श्री श्री देवाचार्य, ५. श्री रमाकांत चौबे, ६. श्री विश्वनाथ शर्मा, ७. श्री चन्द्रशेखर मिश्र, (संयोजक)।

उपसमिति को १ साल के भीतर अपनी योज[ना] प्रस्तुत करने को कहा गया है। जिन सज्जनों के पा[स] 'दीन'-ग्रंथावली से संबंधित जो भी साहित्य हो [वे] मंत्री, भगवानदीन-साहित्य-विद्यालय, २०५, सूर्यकु[ण्ड] वाराणसी के पते पर भेजने अथवा सूचित करने [की] कृपा करें।

नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी के सन् १९६४ के

नवीन प्रकाशन

		मूल्य
१–खालिक बारी	संपादक : श्री पं० श्रीराम शर्मा	२.७५
२–लघु हिन्दी शब्दसागर	सं० : श्री पं० करुणापति त्रिपाठी	११.००
३–लघुतर हिन्दी शब्दसागर	,, ,,	६.००
४–नाटक के तत्व : मनोवैज्ञानिक-अध्ययन	लेखिका : सुश्री कमलिनी मेहता	३.५०
५–मतिराम ग्रंथावली	संपा० : श्री पं० कृष्णबिहारी मिश्र डा० श्री ब्रजकिशोर मिश्र	१२.५०
६–मधुमालती वार्ता	सं० : श्री डा० माताप्रसाद गुप्त	८.००
७–हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों की खोज का सं० विवरण		६०.००
८–हिन्दी विश्वकोश, खंड ४	:	



शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाले ग्रंथ

१–जसवंत सिंह ग्रंथावली	सं०: श्री पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र
२–हिन्दी धातु और क्रियापद	ले० : श्री पं० करुणापति त्रिपाठी
३–मानस अनुशीलन	सं० : श्री पं० सुधाकर पांडेय
४–लालचन्द्रिका	श्री : पं० सुधाकर पांडेय
५–तोष तथा सार सुधानिधि सार	सं० : श्री डा० सुरेन्द्र माथुर
६–दादूदयाल ग्रंथावली	सं० : श्री परशुराम चतुर्वेदी
७–नागरीदास ग्रंथावली	श्री डा० किशोरीलाल गुप्त
८–ठाकुर ग्रंथावली	संपा० : श्री पं० चन्द्रशेखर मिश्र
९–बोधा ग्रंथावली	संपा० : श्री पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र



जनवरी सन्' ६५ के महत्वपूर्ण प्रकाशन

उपन्यास

१–परिजन	: जगदीशनारायण निगम	३.

कहानी संग्रह

२–मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ	: भगवतीप्रसाद वाजपेयी	४.

एकांकी-संग्रह

३–विजय का व्यामोह	: प्रतापनारायण श्रीवास्तव	३.

वैज्ञानिकों की जीवनियाँ

४–सर जगदीशचन्द्र वसु	: श्रीमती तारा त्रिपाठी	२.
५–अल्बर्ट आइंसटीन	: " " "	२.
६–जार्ज वाशिंगटन	: " " "	२.
७–सर सी. वी. रामन	: जगदीशनारायण त्रिपाठी	२.

हमारे पिछले उपयोगी प्रकाशन

१–जहाँदारशाह	: वाल्मीकि त्रिपाठी	५.
२–विकलांग	: "	६.
३–प्रजाप्रिय प्रजेश	: "	४.
४–सत्ता और संघर्ष	: "	५.
५–उपेक्षिता	: "	४.
६–नागमणि	: शत्रुघ्नलाल शुक्ल	२.
७–आधुनिक हिन्दी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ	: डॉ. जगदीशनारायण त्रिपाठी	३.
८–संतमत में साधना का स्वरूप	: डॉ० प्रताप सिंह चौहान	३.
९–पंत का काव्य दर्शन	: " "	३.
१०–भारतेन्दु काव्यादर्श	: कृष्णकिशोर मिश्र	४.
११–साहित्य चिन्तन	: नरेशचन्द्र चतुर्वेदी	५.
१२–प्रेमचन्द उपन्यास और कला	: डॉ० हरस्वरूप माथुर	५.

स्वच्छ छपाई······सुन्दर कागज······नयनाभिराम आवरण

पुस्तकालयों एवं पुस्तक विक्रेताओं को विशेष सुविधा

प्रत्यूष प्रकाशन

रामबाग, कानपुर

प्रचारक के कुछ प्रमुख लेखक एवं उनकी कृतियाँ



पं. लक्ष्मीनारायण मिश्र

गरुडध्वज	२·७५
आधी रात	२·००
संन्यासी	२·५०
राक्षस का मन्दिर	२·५०
मुक्ति का रहस्य	२·००
कवि भारतेन्दु	२·००
कावेरी में कमल (एकाङ्की)	२·००
स्वर्ग में विप्लव (,,)	२·५०
नारी का रंग (,,)	२·५०

पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

काले कारनामे	२·००
गीत गुंज	१·५०
रवीन्द्र कविता कानन	०·६७

कृष्णदेव प्रसाद गौड़
'बेढब बनारसी'

हिन्दी साहित्य की रूपरेखा	१·६०
धन्यवाद	२.००
उपहार	१.७५

शान्तिप्रिय द्विवेदी

आधान (निबन्ध)	२·५०
साकल्य ,,	४·००
दिगम्बर (उपन्यास)	२·००
हमारे साहित्य निर्माता (संस्मरण)	२·२५

हिमांशु श्रीवास्तव

नदी फिर बह चली	७·००
कथासूर्य की नयी यात्रा	३·००
धर्मचेता	२·००

राहुल सांकृत्यायन

अतीत से वर्तमान	३·५०
रूपी	२·००
शादी	६·००

नानक सिंह

कटी पतंग	६·००
जीवन-संग्राम	५·००
पवित्र पापी	२·००
पाषाण पंख	२·००



हिंदी प्रचारक पुस्तकालय

सी. २१/३०, पिशाचमोचन, वाराणसी-१

प्रचारक पॉकेट बुक्स
की
कुछ चुनी हुई पुस्तकें

उपन्यास

पवित्र पापी (पंजाबी)	नानक सिंह
एक सड़क : सत्तावन गलियाँ	कमलेश्वर
बिखरे काँटे	लीला अवस्थी
वनमाला	'कैफ'
समर्पण	तुर्गनेव
कादम्बरी	बाणभट्ट
भाग्यवती	श्रद्धाराम फिल्लौरी
लाल पंजा	दुर्गाप्रसाद खत्री
काले कारनामे	'निराला'
मेडेलीन	मुद्राराक्षस
पंकज	गुरुदत्त
गवर्नेस	हर्षनाथ
नारी : एक पहेली	मोपासाँ
कस्तूरी	'शानी'
काठ के ताबूत और जिन्दा लाशें	प्रकाश दीक्षित
क्लीयोपेट्रा	एमिल लुडविग
अन्तरिक्ष के मेहमान	डॉ० शिवप्रसाद सिंह
सपनों की जंजीरें	'परदेशी'
बेगम और गुलाम	रामकुमार 'भ्रमर'
हिना के हाथ	'अमरेश'
दशकुमार चरित	महाकवि दण्डी
पाषाण-पंख (पंजाबी)	नानक सिंह
इन्द्रजाल	रघुनाथ सिंह
कौन जानता था	राजबहादुर सिंह
जूही (मराठी)	मालती बाई बेडेकर
माँ (असमिया)	वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य
मोरझाल	डॉ० श्याम परमार
मरने के बाद	ब्रजकिशोर 'नारायण'
एक आवारे की डायरी	तुर्गनेव
राजसिंह (बँगला)	बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय
सांचा	डॉ० प्रभाकर माचवे
सपने बिकाऊ हैं	राधाकृष्ण
तिब्बत का रहस्य	'प्रेम' हरद्वारी
युद्ध और प्रेम (मराठी)	अ० रज्जाक
बन्दे मातरम् (बँगला)	बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्या
सीताराम (बँगला)	बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्या
गुलाबकुमारी	निहालचंद व
मीठी लगन	शिवकुमार ओ
बादलों के आर-पार	राजेन्द्र अवस्थी 'तृषि
बिना चिराग का शहर	आचार्य चतुरसेन शास्त्री
परिचित निगाहें	रामविनायक सि
टूटी हुई लड़की	रामप्रकाश क
लहरें और प्रवाह	ऋषि कुमा
उड़े पन्ने	सरस्वतीसरन 'कै

कहानी-संग्रह

गोरी हो ! गोरी !!	सैयद रफीक हुसै
सात उपन्यास : सात कहानियाँ	हरिवंश, एम.

शायरी-कविता

इकबाल की शायरी	डॉ० हीरालाल चोप
जौक की शायरी	सरस्वती सरन 'कै
बेकराँ	जगन्नाथ 'आजा
दाग़ की शायरी	सं० मसीहुज्ज
चीन को चेतावनी	सं० 'रुद्र' काशिके
जय जवाहर	सं. सुधाकर पाण्डे

जीवनी

झाँसी की रानी	देशपा

विविध

काम-मनोविज्ञान तथा यौन-व्याधियां	द्वारका प्रसाद एम
चमत्कारिक अनुभूतियाँ	संतराम, बी.
पीड़ारहित प्रसव	सावित्री देवी व
भाग्य और नवग्रह	शिवमूर्ति 'शि
स्वयं डाक्टर बनें	डॉ० केवल धी
स्त्री-रोग-चिकित्सा	डॉ० केवल धी
नेहरू की सूक्तियाँ	सं. गोविन्द नि

प्रत्येक का मूल्य **1/-**

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय
पो० बॉक्स नं० ७०, पिशाचमोचन वाराणसी-

'हिन्दी प्रचारक' कार्यालय, सी० २१/३ पिशाचमोचन, वाराणसी-१ से श्री ओमप्रकाश बेरी द्वारा प्रकाशित
विद्या मन्दिर प्रेस (प्रा.) लि०, मानमन्दिर, वाराणसी-१ में श्रीकृष्णचन्द्र बेरी द्वारा मुद्रित

हिप्र
हिन्दी प्रचारक
हिन्दी पुस्तक-व्यवसाय का मुख-पत्र

इस मास के नये प्रकाशन

…कालीन संत साहित्य
…मखेलावन पाण्डेय

… ग्रन्थ में मध्यकालीन सत-साहित्य का विश्लेषणात्मक … सामाजिक व्याख्या और तात्त्विक विवेचन प्रस्तुत है। … सांस्कृतिक संश्लेष के संदर्भ में संत-मत के चेतना-विकास … और मूल्य-निर्धारण की प्रक्रिया का आवेश इसमें है, … रण संत-साहित्य अभिनव अर्थ ग्रहण करता है।

मूल्य : १५.००

…इमारत (उपन्यास)
…वर शुक्ल अंचल

…ीय स्वातंत्र्य संग्राम में हँस-हँस कर देश की बलिवेदी पर …पनी वरन् समूचे परिवार की कुर्बानी कर देनेवाले शहीदों … त्याग का अभूतपूर्ण वर्णन, जिसे लेखक ने एक रोचक …क रूप में प्रस्तुत किया है।

मूल्य : ७.००

शादो (क्रान्तिकारी उपन्यास)
राहुल सांकृत्यायन

रूसकी सफल क्रान्ति के बाद सन् १६१६–१७ में हुए ताजिक खेतिहर समाज में सामूहिक खेती आन्दोलन के फलस्वरूप हुई प्रतिक्रियाओं और उसके परिणामों का सफल औपन्यासिक चित्रण। स्व. महापंडित राहुल सांकृत्यायन की सशक्त लेखनी का चमत्कार।

मूल्य : ८.००

12.4.65.

एक और सब (उपन्यास).
प्रेम कपूर

एक ऐसी जिन्दगी पर आधारित रोचक उपन्यास, जिसमें जो जितना सच्चा, सरल और सीधा है, वह बार-बार हर तरहसे प्रताड़ित होता है। राजू, निर्मल, बन्नो, रऊफ़ मियाँ, पंडा बैजनाथ, पंडा नर्मदा प्रसाद आदि पात्रों के इर्द-गिर्द बुना गया औपन्यासिक ताना-बाना किसी को भी उलझाने की शक्ति रखता है। लेखक की सजीव एवं सशक्त रचना।

मूल्य : ४.००

प्रकाशक

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय : वाराणसी-१

हमारी नई

प्रचारक पॉकेट बुक्स



★ **दूरान्तर** —विभूतिभूषण वन्द्योपाध्याय

★ **सईदा** —जिया अज़ीमाबादी

★ **शायरी की रंगीनियाँ** —विजय प्रकाश

★ **आकाश का राक्षस** —नवलविहारी मिश्र

★ **पचास साल बाद** —धर्मचन्द सरावगी

★ **योगायोग** —रवीन्द्रनाथ ठाकुर

★ **रुककर सोचता हूँ** —रमेश वक्षी

★ **मिसेज लाल** : मनमोहन मदारिया

★ **अकथ कहानी** : सर्वदानन्द वर्मा

★ **मौत के पंजे में** : आचार्य चतुरसेन शास्त्री

प्रत्येक का मूल्य : 1/- मात्र



हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय पो. बॉक्स नं. ७०, पिशाचमोचन वाराणसी—१

हिन्दी प्रचारक

[मासिक]

वर्ष : १३ : अंक : १

मूल्य

सम्पादक
श्रीकृष्णचन्द्र बेरी

अप्रैल : १९६५

वार्षिक : ३.००
एक प्रति : २५ पैसे

२६ जनवरी के बाद

२६ जनवरी '६५ के बाद से हिन्दी का राजभाषा के रूप में अधिकाधिक प्रयोग हो इस बात के लिए देश में सभी ओर से प्रयत्न हो रहे हैं। सरकार, संस्थाएँ, साहित्य-सेवी तथा सर्वसाधारण, सभी में इस बात का आग्रह देखा जा रहा है कि वे दैनिक जीवन में क्रमशः हिन्दी का प्रयोग बढ़ाएँ और अंग्रेजी का प्रचलन कम करें। परन्तु जैसे-जैसे हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है, वैसे-वैसे कुछ आवश्यकताएँ और बाधाएँ भी हमारे सामने आ रही हैं। जहां तक आवश्यकता का प्रश्न है, उसकी पूर्ति का दायित्व हिन्दी के प्रकाशकों और लेखकों पर आ जाता है। सबसे बड़ी कमी जो महसूस हो रही है, वह है द्विभाषी कोशों की। अहिन्दी प्रदेशों के लोगों को ऐसी पुस्तकें और कोश चाहिए ही, जिनके द्वारा हिन्दी का सामान्य ज्ञान उन्हें मिल सके। इसके अतिरिक्त प्रशासन की ओर से होनेवाले उपयोगी प्रकाशन तथा सार्वजनिक उपयोग की जो भी सामग्री छपे उसका स्थानीय राज्य की क्षेत्रीय भाषा में भी उलथा साथ-साथ अवश्य हो। ऐसा होने से हिन्दी सहज ही ग्राह्य हो सकेगी और सामान्य अहिन्दीभाषी जनता को बोझिल न मालूम हो कर अपनी ही भाषा प्रतीत होने लगेगी। साहित्यकारों और प्रकाशकों को भी एक ऐसा मंच बनाना होगा, जिसके माध्यम से वे ऐसा साहित्य प्रस्तुत कर सकें जो हिन्दी सीखनेवाली जनता के लिये उपयोगी हो। हालाँकि इस ओर से अत्यन्त द्रुत गति से कार्य हो रहा है फिर भी इस बात का लेखाजोखा रखने की आवश्यकता है कि किन विषयों की पुस्तकों का हिन्दी में अभाव है और उनकी पूर्ति कैसे की जाय। हिन्दी को जनप्रिय बनाने के लिए क्षेत्रीय भाषाओं के प्रसिद्ध साहित्यकारों की पुस्तकों को हिन्दी में अनूदित कराकर प्रकाशित कराना चाहिए। यह सम्पर्क-सूत्र स्थायी होगा, साथ ही हिन्दी को जनप्रिय बनाने में सहायक भी। आज सौभाग्य से सभी क्षेत्रीय भाषाओं में ऐसे विद्वान सुलभ हैं, जो कि अपने क्षेत्रकी प्रसिद्ध साहित्यिक कृतियों का हिन्दी में सुगमतापूर्वक अनुवाद कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में यदि प्रकाशक अनुवादों को प्रकाशित करने का बीड़ा उठा लें, तो हिन्दी का भविष्य तो उज्वल है ही, साथ ही प्रकाशन-व्यवसाय को भी इससे लाभ होगा। सुविधा और आर्थिक दायित्व को दृष्टिगत रख प्रकाशकों के अलग-अलग वर्ग बन सकते हैं और ये वर्ग अलग-अलग क्षेत्रीय भाषाओं के अनुवाद हिन्दी में प्रकाशित कर सकते हैं। इससे सामान्य जनता को यह मालूम हो सकता है कि अमुक प्रकाशक के यहाँ से अमुक क्षेत्र की भाषा का अनूदित साहित्य मिल सकता है। कालान्तर में इस योजना का सुपरिणाम यह हो सकता है कि अहिन्दी भाषी प्रदेशों के लोग हिन्दी के मौलिक ग्रन्थों को अपनी क्षेत्रीय भाषाओं में भी चाहने लगेंगे और हिन्दी इस प्रकार भारत के सभी भागों में सहज ही जनप्रिय हो जायेगी। सरकारी प्रकाशन क्षेत्र में जो कुछ हो रहा है, उससे सामान्य प्रकाशकों को सन्तोष-लाभ न करके अपने दायित्व का निर्वाह करना चाहिए। यह सोचना कि कम बिकनेवाले प्रकाशन सरकार करे और अधिक बिकनेवाले प्रकाशन प्रकाशक करें, यह न तो व्यवसाय की दृष्टि से हितकर होगा और न उस दायित्व का निर्वाह ही होगा, जो कि आज हिन्दी के प्रकाशकों पर आ गया है। किसी भी विषय की पुस्तक छपेगी वह बिकेगी ही और हिन्दी के राष्ट्रभाषा हो जाने के बाद किसी भी पुस्तक की हजार-दो हजार प्रतियाँ बिक जाना सामान्य-सी बात है। आवश्यकता केवल इतनी ही है कि प्रकाशक साहस से काम लें और ऐसी गम्भीर कृतियों के लिए प्रचार का स्वरूप और अच्छा बनाया जाय।

हमें आशा है कि हमारे इन सुझावों का हिन्दी-जगत स्वागत करेगा।



प्रचारक के कुछ प्रमुख लेखक एवं उनकी कृति



पं. लक्ष्मीनारायण मिश्र

गरुड़ध्वज	२.७५
आधी रात	२.००
संन्यासी	२.५०
राक्षस का मन्दिर	२.५०
मुक्ति का रहस्य	२.००
कवि भारतेन्दु	२.००
कावेरी में कमल (एकांकी)	२.००
स्वर्ग में विप्लव (,,)	२.५०
नारी का रंग (,,)	२.५०

पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निरा

काले कारनामे	२.
गीत गुंज	१.
रवीन्द्र कविता कानन	०.

कृष्णदेव प्रसाद गौड़

'बेढब' बनारसी

हिन्दी साहित्य की रूपरेखा	१.
धन्यवाद	२.
उपहार	१.

शान्तिप्रिय द्विवेदी

आधान (निबन्ध)	२.५०
साकल्य ,,	४.००
दिगम्बर (उपन्यास)	२.००
हमारे साहित्य निर्माता (संस्मरण)	२.२५

हिमांशु श्रीवास्तव

नदी फिर बह चली	७.००
कथासूर्य की नयी यात्रा	३.००
धर्मचेता	२.००

राहुल सांकृत्यायन

अतीत से वर्तमान	३.
रूपी	२.
शादी	६.

नानक सिंह

कटी पतंग	६.
जीवन-संग्राम	५.
पवित्र पापी	२.
पाषाण पंख	२.





हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

सी. २१/३०, पिशाचमोचन, वाराणसी-१

एक विचार

सस्ती हिन्दी पुस्तक-प्रकाशन-योजना

• गोविन्द शर्मा •

आये दिन पुस्तकों के प्रकाशन की बाढ़ देखी जा रही है। हर तरह की पुस्तकें प्रकाशित होती हैं। आजादी के बाद इस क्षेत्र में अधिक प्रगति हुई है। इसका एक मात्र कारण यह है कि अब हर नागरिक को बोलने, लिखने और अपना विचार व्यक्त करने की आजादी है; इसीलिये रोज नई-नई पुस्तकें बाजारों में देखने को मिलती हैं। कुछ पुस्तकें मौलिक होती हैं और कुछ केवल व्यापारिक दृष्टिकोण से प्रकाशित की जाती हैं। भारत में कुछ ऐसे भी केन्द्र हैं जहाँ से केवल मनोरंजनात्मक पुस्तकें ही प्रकाशित होती हैं। इससे पाठकों की रुचि में भी परिवर्तन हो रहा है। पाठक मौलिक पुस्तकों की तरफ से अपनी रुचि हटा कर सस्ती और भद्दी पुस्तकों को पढ़ने के आदी हो गये हैं। यह एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है। आज जबकि प्रकाशन संस्थाएँ बढ़ रही हैं, लेखक भी बढ़ रहे हैं, तो यह जरूरी हो जाता है कि प्रकाशन सम्बन्धी कुछ मौलिक बातों पर विचार व्यक्त किया जाय। सारे देश का सर्वेक्षण करने पर यह पता चला है कि जिस अनुपात में पुस्तकें और पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं, उस अनुपात में पाठकों की संख्या में वृद्धि नहीं हुई है। इसका नतीजा यह है कि हर प्रकाशक की ओर से यह शिकायत आ रही है कि अमुक नई पुस्तक बाजार में नहीं चल रही है। यह भी देखा गया है कि स्कूल-कालेजों के लिए निर्धारित पुस्तकें भी धड़ल्ले से प्रकाशित होती हैं, लेकिन प्रथम संस्करण भी नहीं बिक पाता है। अच्छे-अच्छे लेखकों को सर्वाधिकार से घाटा उठाना पड़ रहा है। इसका कारण है। इस पर विचार-विनिमय आवश्यक है।

ऊपर की समस्याओं पर विचार करने के क्रम में हम यह पाते हैं कि आज हर भाषा के पाठकों की रुचि सस्ती और भद्दी पुस्तक पढ़ने की ओर अधिक है। वे कम से कम पैसे लगाकर अपनी रुचि को संतुष्ट करना चाहते हैं। दूसरी बात यह है कि पाठकों की क्रय शक्ति भी क्षीण हो गई है। इस स्थिति में श्रद्धालु पाठक भी अधिक दाम देकर पुस्तक खरीद सकने में असमर्थ हैं। और प्रकाशकों का दृष्टिकोण भी बदल रहा है। वे छोटी-छोटी पुस्तकों पर भी इतना अधिक दाम रख देते हैं कि पाठक बड़ी आसानी से उसे खरीद नहीं सकते। यही कारण है कि अच्छे-अच्छे लेखकों, कवियों और साहित्यकारों के विचारों से आम पाठक अवगत नहीं हो पाते हैं। उधर साहित्यकारों और कवियों को भी नैराश्य का आलम उठाना पड़ता है। पत्र-पत्रिकाएँ शुरू होती हैं, लेकिन कुछ ही दिनों के बाद बन्द हो जाती हैं। खास कर हिन्दी भाषा में प्रकाशित होनेवाली पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं का और भी बुरा हाल है। आज हिन्दी के प्रचार और प्रसार की कोशिश की जा रही है। इसे जनमानस की भाषा बनाने का प्रयत्न चल रहा है, और यह तभी होगा जबकि हिन्दी भाषा में अधिक से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हों, उनकी बिक्री बढ़े, और उन पुस्तकों के पाठक भी अधिक रुचि लें। हिन्दी में पत्र-पत्रिकाएँ अधिक संख्या में प्रकाशित की जायँ। हिन्दी का हर पाठक एक-एक प्रति अवश्य खरीदे। पर, ऐसा हो कहाँ रहा है? यह बात भी है कि कुछ लेखकों और प्रकाशकों का दृष्टिकोण प्रचारात्मक न होकर व्यावसायिक हो गया है। व्यावसायिक दृष्टिकोण अपना कर भाषा का प्रचार और अच्छे विचारों का प्रसार नहीं किया जा सकता है। स्व० राहुल जी ने सस्ती पुस्तकों के प्रकाशन की एक योजना बनाई थी। उस योजना के अन्तर्गत प्रकाशित उनकी हर पुस्तक का मूल्य मात्र एक आना होता था। इसे ही प्रचारात्मक दृष्टिकोण कहा जाता है। वह एक ऐसी योजना थी कि एक आना खर्च कर हर पाठक उनके विचारों से अवगत होता था।

इन दिनों पुस्तक प्रकाशन की जो समस्याएँ हैं, उनका एक ही समाधान है कि सस्ती पुस्तक प्रकाशन योजना हर प्रकाशक और लेखक की ओर से शुरू की जाय। आजकल विदेशों में ऐसी योजना जोर पकड़ रही है। हर विषय में अच्छे-अच्छे लेखकों और हर भाषा के साहित्यकारों की रचनाओं को सस्ते दाम में प्रकाशित कर पाठकों तक पहुँचाने की कोशिश की जा रही है। बात यह है कि उन पुस्तकों का गेट-अप, कागज, और ब्लॉक अच्छा नहीं रहता है, फिर भी उसे पाठक बड़े चाव से खरीद रहे हैं। स्कूल और कालेज में पढ़ने वाले छात्रों को भी राहत मिल रही है। वे अपने-अपने विषय की पुस्तकें आसानी से खरीद लेते हैं। जहाँ अमुक लेखक की अमुक पुस्तक का दाम चालीस रुपये था वहीं पुस्तक इस योजना के अन्तर्गत आधे से भी कम दाम में प्रका-

शित हो रही हैं। भारत में भी विदेशों से प्रकाशित पुस्तकें काफी मात्रा में आ रही हैं। कुछ दिन से अपने देश में भी कुछ ऐसी योजनाएँ चलाई गयी हैं। सबसे पहले सस्ता साहित्य प्रकाशन ने इस क्षेत्र में कुछ प्रयत्न किया है। लेकिन इस प्रकाशन की पुस्तकें केवल गांधीवादी विचार-धारा से प्रभावित होती हैं, इसका क्षेत्र कुछ संकुचित है। इसका प्रसार अधिक नहीं हो रहा है और पाठक भी इससे अधिक लाभान्वित नहीं हो रहे हैं। अब कुछ दूसरे प्रकाशकों ने पाकेट सिरीज भी शुरू किया है। दिल्ली और इलाहाबाद के कुछ प्रकाशक इस क्षेत्र में आगे आये हैं। यह पाठकों के लिए कल्याण कर योजना है। पाकेट सिरीज योजना में कुछ अच्छी पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं और कुछ अच्छे लेखकों, कहानीकारों और उपन्यासकारों की पुरानी कृतियों को भी पाकेट सिरीज में प्रकाशित किया गया है। इन पुस्तकों की बिक्री भी अच्छी है।

लेकिन केवल कहानी, उपन्यास, नाटक और गल्प की पुस्तकों को प्रकाशित कर देने से दायित्व समाप्त नहीं हो जाता है। इसके लिए इतिहास, भूगोल, राजनीति, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, विज्ञान, और वाणिज्य की पुस्तकों का सस्ता प्रकाशन भी अनिवार्य है। मैं तो यह कहूँगा कि इसके लिए हर प्रकाशक "सस्ती पुस्तक प्रकाशन-योजना" शुरू करें। उपरोक्त विषयों की अच्छी पुस्तकों को सस्ते दर पर प्रकाशित करने की कोशिश करें। उन पुस्तकों से विश्वविद्यालय के छात्र भी लाभान्वित होंगे। विश्वविद्यालय के विभिन्न वर्गों के लिए निर्धारित अंग्रेजी की पुस्तकें इतने अधिक दाम में मिलती हैं कि छात्र मूल पुस्तक पढ़ने के बजाय उसका नोट पढ़कर ही काम चला लेते हैं। इससे शिक्षा के स्तर में ह्रास हो रहा है। अगर उन्हीं पुस्तकों का विश्वविद्यालय संस्करण कम दाम में प्रकाशित किया जाय तो मेरा अनुमान है कि अधिक से अधिक छात्र मूल पुस्तक पढ़ने की कोशिश अवश्य करेंगे।

इतना ही नहीं, दूसरी भाषाओं की पुस्तकों का अनुवाद भी हिन्दी में हो। उपयोगी अनूदित पुस्तकें पाठकों के हाथ में आयें और कुछ मौलिक पुस्तकें भी सस्ती पुस्तक प्रकाशन योजना के अन्तर्गत प्रकाशित हों। मैं न केवल हिन्दी भाषा की बात कर रहा हूँ, बल्कि अन्य भाषाओं की पुस्तकों के लिए भी ऐसी योजना शुरू की जाय। उन भाषाओं की प्रगति भी इसी योजना से सम्भव होगी।

इस योजना से पाठकों की संख्या बढ़ेगी और नये-नये विचारों का आदान प्रदान भी आसानी से हो स[के] जो इस युग की नई आवश्यकता [है।] मैं समझता हूँ कि आर्थिक क[ठि]... और क्रय शक्तियों में क्षीणता के क[ारण] पाठकों की रुचि, जो गंदी पुस्तकों [की] ओर चली गई है, उसमें भी [सुधार] होगा और पाठक उच्चकोटि [की] पुस्तकों के प्रति आकृष्ट होंगे। [इस] योजना की सफलता के लिए सा[हित्य]कारों, लेखकों, विश्वविद्यालय [के] प्राध्यापकों, अध्यापकों और प्रका[शकों] का सहयोग अपेक्षित है।

आज हम इस क्षेत्र में जिस [...] का सामना कर रहे हैं, उसकी [...] ऐसी योजनाओं से ही सम्भव [है।] शिक्षा के प्रसार और जनमान[स में] नई एवं परिष्कृत विचारधारा फै[लाने] के लिए इस योजना का प्रयोग [आव]श्यक है।

शोध एवं आलोचनात्मक ग्रन्थ

कीर्तिलता और अवहट्ट भाषा ७.००
डॉ० शिवप्रसाद सिंह

कालिदास के ग्रन्थों पर आधारित तत्कालीन भारतीय संस्कृति १०.००
(पुरस्कृत) डॉ० गायत्री वर्मा

गीतिकाव्य का विकास १०.००
लालधर त्रिपाठी 'प्रवासी'

महाकवि मतिराम १०.००
डॉ० त्रिभुवन सिंह

कामायनी की व्याख्यात्मक आलोचना ८.००
विश्वनाथ लाल 'शैदा'

हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप-विकास १२.००
डॉ० शंभुनाथ सिंह

बीसलदेव रासो ६.००
डॉ० तारकनाथ अग्रवाल

भारतीय प्रेमाख्यान काव्य १०.००
डॉ० हरिकान्त श्रीवास्तव

नाटक और रंगमंच १०.००
राजकुमार

सूरपूर्व ब्रजभाषा और उसका साहित्य १२.५०
डॉ० शिवप्रसाद सिंह

दरबारी संस्कृति और हिन्दी मुक्तक ४.५०
डॉ० त्रिभुवन सिंह

हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद ८.००
डॉ. त्रिभुवन सिंह

कहानी का रचना-विधान ६.००
डॉ० जगन्नाथप्रसाद शर्मा

विद्यापति ५.००
डॉ० शिवप्रसाद सिंह

मधुमालती (मंझन कृत) ८.००
डॉ० शिवगोपाल मिश्र

रस-साहित्य और समीक्षाएँ ५.००
'हरिऔध'

श्रीराधा का क्रम-विकास ८.००
डॉ० शशिभूषण दास गुप्त

भोजपुरी लोक-साहित्य का अध्ययन १०.००
डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय

काव्य रूपों के मूल स्रोत और उनका विकास १०.००
डॉ० शकुन्तला दुबे

हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास ६.००
डॉ० जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन
(सं० डॉ० किशोरीलाल गुप्त)

छायावाद के गौरव-चिह्न ६.००
प्रो० 'क्षेम'

प्राचीन भारत में लक्ष्मी प्रतिमा १५.००
डॉ० राय गोविन्दचन्द्र

बौद्ध कला-कृतियाँ ३.००
विद्यावती मालविका

आधुनिक हिन्दी कविता की स्वच्छन्द धारा ५.००
डॉ. त्रिभुवन सिंह



हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय पो० बाक्स नं० ७०, पिशाचमोचन वाराणसी—१.

सम्पर्क भाषा के प्रश्न पर

'संगम' अलीगढ़ द्वारा आयोजित विशेष गोष्ठी

कुमारी नईमा खान द्वारा प्र

"हिन्दी ही इस देश की सम्पर्क भाषा होने में समर्थ है, उसको केन्द्रीय भाषा बनने से कोई नहीं रोक सकता।" प्रो० अलीम (अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के भूतपूर्व अध्यक्ष, उर्दू के मूर्धन्य आलोचक, अरबी भाषा के प्रोफेसर और एशिया-विख्यात इन्स्टीटयूट आॅफ इस्लामिक स्टडीज़ के डाइरेक्टर)

भाषा के प्रश्न को लोगों ने राजनैतिक प्रश्न बना लिया है, और उस से अनेक गम्भीर समस्याएँ पैदा हो गई हैं। मद्रास या दक्षिण भारत के अन्य प्रान्तों में भाषा के प्रश्न पर जो अशोभनीय घटनाएँ हुई हैं, उन के पीछे भी राजनीति ही थी।

इससे कोई इनकार नहीं करता कि इस विविध भाषाओंवाले देश में एक केन्द्रीय भाषा का होना आवश्यक है। कोई विदेशी भाषा कितने दिनों तक सम्पर्क का कार्य कर सकती है? यह कार्य तो कोई भारतीय भाषा ही कर सकती है और वह भारतीय भाषा हिन्दी के अतिरिक्त और कौन हो सकती है, जो अंग्रेजी का स्थान ग्रहण कर सके। जो लोग योरप की नकल पर सभी प्रान्तीय भाषाओं को राजभाषा बनाने की बात करते हैं, मैं उन के एकदम विरुद्ध हूँ। योरप और हिन्दुस्तान में बहुत अन्तर है। उसकी नकल करना हमारे लिए हानिकारक ही नहीं खतरनाक भी है। प्रान्तीय भाषाओं और केन्द्रीय भाषा के सही सम्बन्धों पर कभी ठीक प्रकार से नहीं सोचा गया है। इससे अनक भ्रान्तियाँ फैली हैं। इससे हिन्दी और प्रान्तीय भाषाओं दोनों की ही हानि हुई है।

केन्द्रीय सरकार की भाषा-नीति की चर्चा करते हुए प्रो० अलीम ने कहा कि, केन्द्रीय सरकार की दोहरी नीति ने इस प्रश्न को और भी पे और गम्भीर बना दिया है। सर बात तो हिन्दी की करती है, पर व्यव में अंग्रेजी को प्रोत्साहन देती जा है। तीसरे दर्जे से अंग्रेजी की प शुरू करना इसका सबूत है। सर ने हिन्दी और प्रान्तीय भाषाओं तरक्की के लिए वह सब नहीं कि जो उसे करना चाहिए था; नहीं यह समस्याएँ ही उत्पन्न नहीं होत मैं अंग्रेजी को देश निकाला देने के में नहीं हूँ। उसे एक अन्तर्रा भाषा के रूप में रहना ही चाहि पर स्वाधीनता के बाद जो प्रोत्सा उसे दिया जा रहा है मैं उसे ग समझता हूँ। मैं किसी हिन्दी साम्रा की बात नहीं मानता हूँ। हाँ, कार्य ऐसे जरूर किये गये हैं जि एक-दूसरे की भावनाओं को पहुँची है। हिन्दीवालों को दूसरों

भावनाओं का ख्याल और इज्जत करनी चाहिए। दूसरे भाषा-भाषियों को ऐसा महसूस न हो कि हिन्दी उनके ऊपर लादी जा रही है। मैं आप को विश्वास दिलाता हूँ कि आज जो हिन्दी के विरोधी हैं, वे कल हिन्दी को स्वयं चाव से पढ़ेंगे। हिन्दी का पठन-पाठन इस देश के लिए ऐतिहासिक आवश्यकता है।

इस विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उर्दू के सुप्रसिद्ध कवि, आलोचक, अंजुमन-तरक्कीए उर्दू के महामन्त्री एवं अलीगढ़ विश्वविद्यालय के उर्दू-विभाग के अध्यक्ष प्रो० अली अहमद सुरूर ने कहा कि "मैं अंग्रेजी अंग्रेजी को अनिश्चित काल तक संपर्क भाषा रखने के विरुद्ध हूँ। लेकिन अंग्रेजी को एक साथ देश-निकाला भी नहीं दिया जा सकता है। यह काम धीरे-धीरे हो तो अच्छा है। मैं राष्ट्रीय एकता को प्रमुखता देता हूँ। भाषा का प्रश्न इतना अधिक महत्वपूर्ण नहीं है कि उसे राष्ट्रीय एकता के ऊपर प्रमुखता दी जाय। हमें हिन्दी के विकास के लिए हर संभव उपाय करना चाहिए। नारेबाजी और भाषणों का काम लीडरों के लिए छोड़ देना चाहिए। अपने दिल और दिमाग को साफ करके साहस के साथ हमें इस समस्या पर सोचना समझना चाहिए। कोरी भावुकता या शुद्ध स्वार्थों के बल पर हम कोई भी समाधान नहीं निकाल पायेंगे।

विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष प्रो० हरवंश लाल शर्मा ने कहा कि हिन्दी का किसी प्रान्तीय भाषा से झगड़ा नहीं है। इस झगड़े को एकदम गलत रूप दिया गया है। हमारा असल झगड़ा तो अंग्रेजी से है। जो हमारी राष्ट्रीय भाषाओं के विकास और एकता के मार्ग में बाधक हैं। हमें भाषा के प्रश्न पर ऐतिहासिक रूप से भी विचार कर लेना चाहिए। अंग्रेजी इस देश पर लादी गई है और इसे कायम रखने के लिए सदैव अनेक राजनीतिक दाँव-पेंचों से काम लिया गया है और दुर्भाग्य से आज भी वही सब कुछ हो रहा है। मेरी दृष्टि में हिन्दी और उर्दू का कोई झगड़ा नहीं है। मैं तो सरल हिन्दी का पक्षपाती हूँ, जिससे अधिक-से-अधिक लोग समझ सकें और आसानी से अपना काम कर सकें। हमें दूसरी भाषाओं के शब्दों को हिन्दी में लेने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए। अंग्रेजी से भी हमें मदद मिल सकती है। हिन्दी किसी के ऊपर लादी नहीं जानी चाहिए, क्योंकि कोई भाषा को दबाव डाल कर नहीं पढ़ा सकता है।

आज की इस गोष्ठी की विशेषता यह थी कि बहस में भाग लेनेवाले अधिकांश विद्वानों में समान रूप से (बहुमत अहिन्दी भाषा-भाषियों का था) हिन्दी को केन्द्रीय भाषा बनाने का पक्ष लिया। हिन्दी को धीरे-धीरे दूसरों की भावनाओं का ध्यान रखते हुए लागू करना चाहिए। इस बात पर अधिकांश वक्ता एकमत थे। आज के विचार-विमर्श में भाग लेने वालों में डॉ० मनोहर लाल गौड़ (धर्म समाज कॉलेज), श्री जे० पी० तिवारी (अ० मु० वि० वि०) एवं इकतदार आलम खाँ (इतिहास-विभाग) के नाम उल्लेखनीय हैं।

अरविन्द साहित्य
का
हिन्दी में प्रकाशन !

पुस्तकों के नाम	मूल्य
श्रीमाताजी द्वारा लिखित पुस्तकों का अनुवाद :	
मातृवाणी (वार्तालाप) (१म भाग) (द्वि०सं०)	३.००
मातृवाणी (२य भाग) ...	०.५०
मातृवाणी (४र्थ भाग) ...	०.३७
सुन्दर कहानियाँ (तृ० सं०) ...	१.५०
भविष्य की ओर ...	०.५०
सर्वोत्तम आविष्कार (द्वि० सं०) ...	०.३७
वार्षिक प्रार्थनाएँ (द्वि० सं०) ...	०.३७
नारी शरीर ...	०.२५
शिक्षा ...	१.५०
चतुर्विध तपस्या और चतुर्विध मुक्ति ...	१.००
प्रार्थनाएँ और ध्यान सजिल्द ४.५०	३.५०
प्रश्न और उत्तर (भाग १, २, ३, ४)	२.००, ३.००, ४.००, ४.००
श्रीमाताजी के वचन (सजिल्द २.५०) ...	२.००
पुरानी बातें ...	१.५०
२९ फरवरी १९६० ...	०.५०
आदर्श बालक ...	०.२५
श्रीमाताजी के स्फुट वचन ...	०.३०
श्रीमाताजी की वार्ताएँ ...	०.३०
प्रार्थना और ध्यान (संक्षिप्त) ...	०.३०
श्रीअरविन्द द्वारा लिखित पुस्तकों का अनुवाद ।	
श्रीअरविन्द–अपने तथा श्री मां के विषय में (अदिति फाइल)	१०.५०
भारतीय संस्कृति के आधार (सजिल्द) ...	१०.५०
गीता-प्रबंध (प्रथम भाग) (तृ० सं०) ...	६.५०
गीता-प्रबंध (द्वि. भा.–प्रथम खंड) ...	५.००
गीता-प्रबंध (द्वि. भा.–द्वितीय खंड) ...	५.००
दिव्य जीवन (भाग १–'अदिति' के १४ अंक)	२१.००
योग के आधार (तृ० सं०) ...	प्रेसमें
माता (प्र० सं०) ...	०.७५
योग-प्रदीप (तृ० सं०) ...	प्रेस में
इस जगत् की पहेली (द्वि० सं०) ...	प्रेस में
हमारा योग और उसके उद्देश्य (तृ० सं०)	०.७५
उत्तरपाड़ा-अभिभाषण (द्वि० सं०) ...	प्रेस में
जगन्नाथ का रथ (द्वि० सं०) ...	प्रेसमें
श्रीअरविंद के पत्र (स्त्री के नाम) (तृ० सं०)	प्रेस में
धर्म और जातीयता (द्वि० सं०) ...	१.५०
गीता की भूमिका (द्वि० सं०) ...	प्रेस में
कठोपनिषद् ...	१.००

पुस्तकों के नाम	मूल्य
श्रीअरविंद का आश्रम और उनकी शिक्षा	...
कतिपय संदेश (श्रीमां तथा श्रीअरविन्द के)	
श्रीमां (श्रीअरविन्द के पत्र)	...
योगसमन्वय (भाग १)	...
योग-समन्वय (भाग १)	...
,, (भाग २–खंड १)	...
दुर्गा-स्तोत्र	...
विचार और झाँकियाँ (द्वि० सं०)	...
श्रीअरविंद का साधनापथ	...
श्रीअरविंद-वचनामृत	...
मृतकों का वार्त्तालाप	...
कर्मयोगी	...
पत्रावली	...
श्रीअरविंद के पत्र (भाग १)	...
श्रीअरविंद के पत्र (भाग २)	...
सप्तक (श्रीअरविंद की कविताओं का अनुवाद मूल सहित) (कोकिल)	
अन्यान्य पुस्तकें :	
सावित्री (चित्रों में) भाग १, २	३०,००, ४०.००
श्रीअरविंद और उनके आश्रम का संदेश	...
श्रीमाताजी (जीवनी) (के. आर. आयंगर)	
श्रीअरविन्द की प्रेरणा (संग्रह)	...
पूर्णयोग (नलिनीकांतगुप्त)	...
प्रकाश की ओर ,,	...
नारी-नये युग में ,,	...
योगविचार	...
योगदीक्षा	...
श्रीअरविंद का महाप्रयाण	...
श्रीअरविन्द चरितामृत (डा. माधव)	...
श्रीअरविंद (जीवन की झाँकी)	...
क्षत्रियधर्म	...
श्रीअरविंद का योग (विजयकांत रायचौधरी)	
गीता-नवनीत (भाग १)	...
,, ,, (भाग २)	...
राजकुमार (नाटक) (अनुबेन)	...
आरती	...
फ्रेम बिना तस्वीर (नाटक)	...
सत्य का रहस्य (केशव देव आचार्य)	...
आत्मसमर्पण योग ,,	...
जप (माधव पंडित)	...
श्रीअरविंद साहित्य–एक झाँकी (बिंदु)	...

प्राप्ति-स्थान

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

पो. बॉक्स नं. ७० वाराणसी

पुस्तक परिचय

गाथा सप्तशती—लेखक डॉ० रमानन्द शास्त्री; **प्रकाशक** : प्रकाशन तिष्ठान, आनन्दपुरी, मेरठ; पृष्ठ सं० या: ६००, सजिल्द, रायल साइज, ढ़िया कागज, आकर्षक छपाई और टअप। **मूल्य** : २० रु०।

अलीगढ़ विश्वविद्यालय के हिन्दी भाग के रीडर डॉ० परमानन्द शास्त्री ी यह शोध कृति रीतिकालीन साहित्य विशद अध्ययन के लिए एक विशिष्ट ति है। प्राकृतिक की इस कृति ने स्कृत साहित्य तथा रीतिकालीन न्दी साहित्य को एक दिशा दी है। था सप्तशती में सौन्दर्य का चित्रण धिकांश संस्कृत के रीति-ग्रन्थों की ति नागरिक जीवन से न हो कर गाँव जन-जीवन से हुआ है। अत: पूर्व मान ग, विरह, विप्रलम्भ, उद्वेग, अभिलाषा दि भावों को नई गति मिली है।

नायिका-भेद के प्रकारों में प्राय: काव्यगत सभी प्रकार के नायक-नायिकाओं का समावेश इस गाथा में पूर्णता और नवीनता से हुआ है। इसमें शब्दालंकारों का आडम्बर न हो कर यमक और श्लेष के प्रयोगों ने सौन्दर्य को और उभारा है।

लेखक ने अपने इस शोध-ग्रन्थ में केवल प्रकृति के सर्गों को ही न रख कर संस्कृत की श्लोकबद्ध छाया के साथ ही हिन्दी में उनका अर्थ देकर पुस्तक को पाठकों के लिए सरल और पठनीय बनाया है।

पुस्तक के प्रारंभ में तीन सौ पृष्ठों की भूमिका तथा अन्त में बीस पृष्ठों के परिशिष्ट ने पुस्तक के अध्ययन की प्रचुर सामग्री और अनुक्रमिका की श्रेष्ठ जानकारी दी है।

ऐसी शोध कृति को पाठकों के सम्मुख ला कर लेखक और प्रकाशन ने हिन्दी साहित्य की निधि में वृद्धि की है।

हिन्दी काव्य की निर्गुण धारा में भक्ति—ले० डॉ० श्यामसुन्दर शुक्ल, एम० ए०, पी-एच० डी०, हि० वि०, का० हि० वि०।

डॉ० श्यामसुन्दर शुक्ल का यह शोध प्रबन्ध, जिस पर उन्हें काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग ने पी-एच० डी० की उपाधि से विभूषित किया है, काशी हिन्दू विश्व-विद्यालय द्वारा एक विशिष्ट निधि द्वारा प्रदत्त धन-योजनाके अन्तर्गत प्रकाशित हुआ है। छः अध्यायों में विभक्त इस ग्रन्थ में लेखक ने क्रम से विवेच्य विषय की व्याप्त सूची, आलोच्य परंपरा की भक्ति की संगति, तत्कालीन देशव्यापी भक्ति-प्रवाह के सन्दर्भ में संत-परम्परा की भक्ति, संत कवियों की भक्ति के विचार पक्ष एवं दार्शनिक मान्यताओं, संत कवियों की प्रेममूलक भक्ति का स्वरूप तथा भक्ति के आचार पक्ष से सम्बन्धित विविध

पक्षों पर अत्यन्त गवेषणात्मक एवं विद्वत्तापूर्ण विवेचन किया है।

जीवन-प्रवाह को विपरीत दिशा में मोड़ने का प्रयत्न करने एवं अपने विचारों को व्यक्त करने के निमित्त ऊबड़-खाबड़ असाहित्यिक भाषा का प्रयोग करने के कारण निर्गुणवादी कवियों को पूर्णतः समझ पाना अथवा समझने का प्रयत्न करना सहज स्वाभाविक नहीं था। यही कारण है कि इस विशिष्ट काव्यधारा के प्रति आलोचक अभी तक न्याय नहीं कर पाये थे। इसमें सन्देह नहीं कि इस ग्रन्थ के प्रकाशन के साथ-साथ हिन्दीकाव्य- के अध्येताओं की यह शिकायत दूर हो गई है। काव्यधारा के इस नीरस प्रसंग को पठनीयता प्रदान करनेवाली सरस शैली का निर्वाह करते हुए विद्वान् लेखक ने विषय-सामग्री के पूर्ण परिवेश को समेट कर, जो एक व्यवस्थित अध्ययन प्रस्तुत किया है, उससे हिन्दी साहित्य के एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति हुई है, जिसके लिए वह बधाई का पात्र है।

निर्गुण काव्यधारा के आन्दोलन को बढ़ावा देनेवाली परिस्थियों, उनके निर्माणकारणों, आवश्यकता एवं लोकप्रियता के कारणों को स्पष्ट करने के लिए लेखक ने बड़ा श्रम किया है और उसका श्रम सार्थक भी हो पाया है। इस ग्रन्थ में जितनी सामग्री को विवेचना के निमित्त दृष्टि-पथ में रखा गया है, प्रामाणिकता एवं बहुलता की दृष्टि से वह हिन्दी पाठकों के सम्मुख पहली बार आ सकी है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि लेखकने विषय-चयन एवं विवेचना के लिए जिस पद्धति को अपनाया है, उससे एक ऐसा आधार मिलता जान पड़ता है कि हम वहाँ से चल कर इस दिशा में और भी महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ कर सकते हैं। यह सत्य है, इस क्षेत्र में नये क्षितिज का उद्घाटन हुआ है।

निर्गुण कवियों की वैयक्तिक सीमाओं एवं सामाजिक परिस्थितियों के सन्दर्भ में काव्य-विवेचन अच्छा बन पड़ा है। भक्ति और काव्य को लेकर परस्पर चलनेवाले विवादों को भी भरसक इस ग्रन्थ में समाधान देने की चेष्टा की गई है।

विषय ही ऐसा है कि हिन्दी के जो पाठक हल्के-फुल्के ढंग से इस समीक्षा-ग्रन्थ को पढ़ लेना चाहेंगे, उन्हें निराश होना पड़ेगा। लेखक की शैलीगत विशेषता से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है, बल्कि विषय की सीमा ही इसके लिए उत्तरदायी है। अनेक दृष्टियों से शुक्ल जी का यह कार्य सराहनीय है।

प्रथम किरण (कविता)—**लेखक** : कृष्णा कल्याणकरी; **प्रकाशक** : दक्षिणायन, बोलाराम (आ० प्र०) **आकार** : क्राउन; **पृष्ठ संख्या** ५८; **मूल्य** : एक रुपया।

प्रस्तुत कविता-संग्रह कवि के सूक्ष्म भावों का दर्शन है। 'तुम और मैं' के रूप में साधना के बड़े सुन्दर पद बन पड़े हैं। 'तुमने अपनी स्मित-रेखा से, उपवन में जब फूल खिलाये। तब से ही मधुमास यहाँ पर दिन-दिन बढ़ कर, महक रहा है।' ऐसी आकर्षक पंक्तियाँ कवि के सूक्ष्म भावों की परिचायिका हैं।

वायरलेस—लेखक : शौकत राय तथा राजेन्द्र मोहन; **प्रकाशक** : राय एंड कम्पनी, दरियागंज, देहली; **पृष्ठ-संख्या** : चौंसठ; **मूल्य** : एक रुपया पचास पैसे।

विज्ञान के चमत्कार सिरीज के अन्तर्गत बालक और पिता की वार्ता के माध्यम से सरल भाषा में उपर्युक्त वैज्ञानिक विषय पर समुचित प्रकाश डालती है। मोटे टाइप में छपी यह सचित्र पुस्तक निश्चय ही बालोपयोगी सिद्ध होगी।

गीत और सरगम (कविता-... संपादक : रामगोपाल परदेसी; ...शक : प्रगति प्रकाशन, आगरा; ... संख्या : ४२५; **आकार** : ... मूल्य : छः रुपया पचीस पैसे।

प्रस्तुत संग्रह में सम्पादक ... बड़े कहे जानेवाले कवियों की ... की ओर आग्रह न रख कर हि... एक सौ एक कवियों तथा कवि... की श्रेष्ठ कविता का संग्रह उनके ... तथा स्वल्प परिचय के साथ ... करके एक आवश्यकता की पूर्ति ... प्रायः अनेक मान्यताओं की ... एक साथ दी गयी हैं। कविता ... में इस तरह के प्रकाशन आवश्य...

सुरा, सुन्दरी, सरगम (उप... **लेखक** : नरोत्तम व्यास; **प्रका...** रामकली प्रकाशन, मुरा... **आकार** : क्राउन; **पृष्ठ** : ... **मूल्य** : दो रुपये।

प्रस्तुत पुस्तक पुराने सा... तथा फिल्म-कथा लेखक की ऐ... है, जिसमें पात्रों के माध्यम से ... भाषा में समाज की बुराई और ... साथ संघर्ष की कहानी है, जिस... वर्तमान सामाजिक स्थिति से है...

मधुपुरी—लेखक : शौक... एम० ए०; **प्रकाशक** : रा... कम्पनी, दरियागंज, देहली; ... कापी; **पृष्ठ संख्या** : १३०; ... एक रुपया।

मधुमक्खी की कहानी ... द्वारा बड़ी सरल शैली में प्र... गयी है। मधुमक्खी के ... बनावट तथा उसके कार्यों का ... वार्ता के सरल माध्यम से कि... है। विषय पर प्रकाश डाल... बढ़िया मोटे कागज पर मोटे ... छपी यह सचित्र पुस्तक बाल... है।

शंखमुखी शिखरों पर (क... **लेखक** : लीलाधर शर्मा; **प्र...** जगूड़ी प्रकाशन, गेंवला, उत्त... **पृष्ठ संख्या** : ८६; **मूल्य** : दो...

कवि की यह प्रथम प्रका... है; किन्तु छन्द बड़े ही सुन्दर ... हैं। भावों का प्रस्फुटन तथा ... का वर्णन बड़ा सुन्दर हुआ है। ... ...लाओं में हिमालय के ... सौन्दर्य की नवीनता और मोह...

सूचनाएँ एवं समाचार

ी का विकास प्रादेशिक भाषाओं के विकास पर ही निर्भर

आगरा में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास ध्यक्ष डॉ० बालकृष्ण विश्वनाथ कर ने भाषण करते हुए कहा कि दी का विकास प्रादेशिक भाषाओं विकास पर निर्भर है । अतएव दी का प्रादेशिक भाषाओं से विरोध वा संघर्ष होने का प्रश्न ही नहीं । त की समस्त भाषाओं का सामान्य से शक्तिशाली बन कर अंग्रेजी की को उखाड़ फेंकने के लिए संयुक्त बनाना चाहिए ।

डाक्टर केसकर ने सुझाव दिया कि ी के प्रचार का कार्य हिन्दी-षियों के नेतृत्व में होना चाहिये । हिन्दी के प्रसार में शीघ्र प्रगति सकेगी । आप ने यह भी सुझाव ा कि राज-काज में प्रयुक्त होनेवाली ी का स्वरूप साहित्यिक न हो कर वहारिक होना चाहिये । उसमें शिक भाषाओं के सामान्य शब्द होंगे । ऐसी व्यावहारिक राजभाषा त की वास्तविक सर्वमान्य राष्ट्र-ा होगी ।

कानून के ११ प्रमुख पुस्तकों का हिन्दी प्रारूप तैयार

विधि मन्त्रालय की १९६४–६५ रिपोर्ट में बताया गया है कि आधि-रिक भाषा (संवैधानिक) आयोग ने तक ११ प्रमुख कानूनी पुस्तकों ी प्रारूप तैयार कर लिये हैं ।

उक्त आयोग का गठन १९६० किया गया था ।

रिपोर्ट में बताया गया है कि भारतीय संहिता, साक्षी-अधिनियम, सम्पत्ति हस्तानान्तरण अधिनियम के सम्बन्ध में विभिन्न राज्यों द्वारा प्राप्त सुझाव और टिप्पणियों पर विचार करने के उपरान्त उनके अन्तिम हिन्दी प्रारूप तैयार कर लिये गये हैं । दण्डविधि संहिता, दीवानी विधि संहिता और साझेदारी अधिनियम के हिन्दी प्रारूप सुझाव और टिप्पणियों के लिए विभिन्न राज्य सरकारों के पास भेज दिये गये हैं ।

साथ ही यह भी बताया है कि भारतीय दण्ड संहिता, साक्षी अधिनियम, सम्पत्ति-हस्तानान्तरण अधिनियम और कुछ अन्य कानूनी परिभाषिक शब्दा-वलियों की एक अस्थायी सूची, जिसे आयोग सम्मिलित करना चाहता है, के छापने के लिए कदम उठाया जा रहा है ।

हिन्दी ही राष्ट्रभाषा

स्वतन्त्र पार्टी की उपाध्यक्षा एवं संसद सदस्या, जयपुर की महारानी श्रीमती गायत्री देवी ने काशी नागरी-प्रचारिणी सभा द्वारा किये गये स्वा-गत का उत्तर देते हुए कहा कि देश की एक राष्ट्रभाषा होनी चाहिए और वह हिन्दी ही होनी चाहिय ।

हिन्दी भाषियों और हिन्दी प्रेमियों को कभी यह न सोचना चाहिये कि यदि कोई हिन्दी नहीं जानता या हिन्दी में बोल नहीं सकता, तो वह हिन्दी का विरोधी है । हिन्दी भाषियों को अहिन्दी प्रदेश के लोगों की कठि-नाइयों पर भी ध्यान देना चाहिए, क्योंकि कोई भी भाषा एक दिन में सीखी नहीं जा सकती । विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं में वहाँ के निवासियों का प्रशिक्षण होना ही चाहिए । जिससे वे अपनी मातृभाषा के साहित्य-सौन्दर्य को भी समझ सकें ।

बँगला-भाषी होते हुए भी महारानी ने उत्कृष्ट हिन्दी में भाषण किया ।

प्रमुख साहित्यिक रचनाओं पर राज्य सरकार द्वारा ४० पुरस्कार

उत्तरप्रदेश सरकार ने हिन्दी, संस्कृत और उर्दू की विशिष्ट रचनाओं के लेखकों के सम्मान में ३७,५०० रुपये के ४० पुरस्कार घोषित किये हैं ।

राज्य सरकार ने महाकवि श्री सुमित्रानन्दन पन्त की हिन्दी साहित्य की उत्कृष्ट सेवा के लिए उन्हें १०,००० रुपये का विशिष्ट पुरस्कार प्रदान किया है । इस पुरस्कार की योजना इसी वर्ष से प्रारम्भ की गयी है ।

कालिदास पुरस्कार के अन्तर्गत १५००) का पुरस्कार श्री रघुनाथ शर्मा को उनकी 'वाक्यपदीयम' नामक पुस्तक पर प्रदान किया गया है । इसी प्रकार १५००) का गालिब पुरस्कार 'मेरी हबीसे-ए-उम्रे गुरीज़ां' नामक पुस्तक पर प्रयाग उच्च न्यायालय के भूतपूर्व जज पण्डित आनन्दनारायण मुल्ला को दिया गया है । १०००) का गंगानाथ झा पुरस्कार—श्री जुगी-लाल औदीच्य को उनकी कृति 'प्राचीना-र्वाचीन परमाणुपर्य्यालोचनम्' पर प्रदान किया गया है । १२००) का अकबर इलाहाबादी पुरस्कार सैयद सबाउद्दीन अब्दुर्रहमान, को उनकी पुस्तक 'मुसल-मान हुकमरानों के अहद के तमद्दुनी जलवे' पर दिया गया है । ८००) का रामप्रसाद बिस्मिल पुरस्कार डाक्टर सफदर आह को 'हिन्दुस्तानी ड्रामा' नामक पुस्तक पर प्रदान किया गया है । संस्कृत पुस्तकों के लिए विविध पुरस्कार के अन्तर्गत ५००) का पुरस्कार पण्डित धर्मदेव विद्यावाचस्पति, को 'महिला मणिकीर्तनम्' पर मिला है ।

बाल साहित्य पर ५००) का पुरस्कार श्री लल्लनप्रसाद व्यास को उनकी 'निर्माण की कहानियाँ' पर प्रदान किया गया है ।

हमारे नवीन प्रकाशन

सुप्रसिद्ध उपन्यासकार

श्री ओमीलाल 'इलाहाबादी' कृत

	उपन्यास	रु० पै०
१	कर्मक्षेत्र	३.५०
२	मुखिया	४.५०
३	माँ की उदासी ...	१.५०
४	पति-पत्नी	२.७५
५	भाग्यहीन	४.००
६	नेहरू का देश ...	२.७५
७	वोट किसे दें ? ...	२.५०
८	भारत में दुर्दशा ...	२.७५
९	शहीद	२.७५
१०	धर्मपत्नी	४.२५
११	अनुराधा	२.५०
१२	रानी बहू	४.५०
१३	एक विदेशी लड़की ...	२.५०
१४	ढाई गज का टुकड़ा ...	२.५०
१५	तीन चम्मच गंगाजल ...	४.५०
१६	एक थी सुनीता ...	४.००
१७	तुम उद्धार करो हम प्यार करें	३.००
१८	भारतीय नारी और समाज	२.५०
१९	अपना देश अपने दुश्मन	१.२५
२०	माता के हत्यारे भाग १	५.००
२१	माता के हत्यारे भाग २	५.००
२२	माता के हत्यारे भाग ३	५.००

संयुक्तराष्ट्र अमेरिका के राष्ट्रप

स्वर्गीय श्री केनेडी

THE WHITE HOUSE, WASHINGT

January 18, 19

Dear Mr. Allahabadi,

The President asked me to thank for sending him a copy of your book. greatly appreciates your kind thought extends to you his very best wishes.

Sincerely yours
Evelyn Lincoln,
Personal Secretary to the Presid

भारत के राष्ट्रपति

डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

Dear Sir.

Thank you for your letter.

I am glad to know that you are tak interest in rural uplift and that you h written a book in that connection.

Yours sincerely
S. Radha Krishna

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल

डा० बी० रामकृष्णराव

Dear Shri Omilall Allahabadi,

I write to thank you for the Copy your book "Tum Uddhar Karo H Pyar Karen" which is one of the bo which you are producing for the be of our young readers. I am glad you at instilling into them a spirit of pa tism and service to society. I congratu you on your venture and wish you succ

Your sincerely
B. Ramakrishna R

श्री ओमीलाल 'इलाहाबादी' का पूरा साहित्य

भारतवर्ष के सभी मुख्य विक्रेताओं से प्राप्त कीजिए

राष्ट्र भाषा प्रचारक

७२ बी० जीरो रोड, इलाहाबाद-३.

१००० रुपये के पुरस्कार

आचार्य परशुराम चतुर्वेदी वकील, बलिया—'रहस्यवाद', श्री जैनेन्द्र-कुमार, ऋषि भवन, दिल्ली—'समय और हम', पण्डित बलदेव उपाध्याय, अध्यक्ष, पुराणेतिहास विभाग, वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय—'भारती वाङ्मय में श्री राधा', डाक्टर रामानन्द तिवारी, महारानी श्री जया कालेज, भरतपुर (राजस्थान)—'सत्यं शिवं सुन्दरम्', श्री वाचस्पति गैरोला, प्रयाग 'भारतीय चित्रकला' श्री परिपूर्णानन्द वर्मा, अध्यक्ष अखिल भारतीय अपराध निरोधक समिति, आगरा—'अपराध अपराधी और अभियुक्त', डाक्टर सीताराम जायसवाल, रीडर, लखनऊ विश्वविद्यालय–'मनोविज्ञान की ऐतिहासिक रूपरेखा।'

७ सौ रुपये के पुरस्कार

डाक्टर फतह सिंह, प्रयाग—वैदिक दर्शन और डाक्टर शिवराज शास्त्री, मेरठ कालेज, मेरठ–'ऋग्वैदिक काल में पारिवारिक सम्बन्ध।'

विविध पुरस्कार

विविध पुरस्कारों के अन्तर्गत पाँच-पाँच सौ रुपये का २४ पुरस्कार निम्नलिखित प्रत्येक लेखक को दिया गया है—

आचार्य ललित कृष्ण गोस्वामी, प्रयाग—'श्री निम्बार्क वेदान्त', श्री उदयशंकर भट्ट, नयी दिल्ली—'पूर्वापुर' डाक्टर प्रेमनारायण टंडन, लखनऊ विश्वविद्यालय—'हिन्दी साहित्यकार कोश', श्री प्रबोधकुमार मजमूदार, महानगर, लखनऊ—'भारतीय सेना का इतिहास', श्री शैलेन्द्रकुमार, दार्जिलिंग कृषि विनाशी कीट और उनका दमन', राजाराम शास्त्री, काशी विद्यापीठ—'समाज विज्ञान', **डाक्टर गायत्री वर्मा, विजयवाड़ा, आन्ध्र प्रदेश—'कवि कालिदास के ग्रन्थों पर आधारित तत्कालीन भारतीय संस्कृति**(प्रकाशक : **हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी**) डाक्टर रामेश्वरप्रसाद अग्रवाल, लखनऊ विश्व विद्यालय—'बुन्देली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन', डाक्टर सरयूप्रसाद चौबे, लखनऊ विश्वविद्यालय—'भारत के कुछ शिक्षा दार्शनिक', **श्री विश्वनाथ तिवारी, सतीशचन्द्र डिग्री कालेज, बलिया—मानचित्रकला प्रकाश,** (प्रकाशक : **हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी**) डाक्टर पद्मा अग्रवाल, रीडर, काशीविश्वविद्यालय—'प्रतीकवाद : मनोवैज्ञानिक अध्ययन', डाक्टर रमाशंकर तिवारी, मेहता कालेज, बनवांखी—'काव्य चिन्ता', श्री उमाकान्त मालवीय, प्रयाग—'मेहदी और महावर', श्री कृष्णजी दिवाकर, ठाकरसी कालेज, पूना—'महाराष्ट्र का हिन्दी लोक काव्य', श्री हरिगोपाल परांजपे, दिल्ली 'भारत की वित्तीय शासन-व्यवस्था', डाक्टर केसरीनारायण शुक्ल, लखनऊ विश्वविद्यालय—'रूसी साहित्य का इतिहास', श्री सीताराम सहगल, नयी दिल्ली—'राष्ट्रकवि कालिदास', पंडित मधूसूदन शास्त्री, वाराणसी—'रस गंगाधर', श्री दुर्गाधर शर्मा, वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय—'प्रशस्तपाद भाष्यन', श्री रामलाल, लखनऊ—'आवाज तो पहचानो', श्री अली जवाद जैदी, नयी दिल्ली—'आप से मिलिये', श्री शफीक 'जौनपुरी', जौनपुर—'शाना', श्री शरीफ हुसेन मिर्जा, दिल्ली विश्वविद्यालय—'परकशी -ए - जिला बिजनौर' और जीलानी बानो, हैदराबाद—'निरवान।'

अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ

संघ के संविधान की धारा ९ के अनुसार आगामी सत्र (१९६५-६६) के सभापति पद के लिए सदस्यों द्वारा प्रस्तावित एवं अनुमोदित नामों पर कार्य-समिति ने अपनी ३१ जनवरी की बैठक में विचार किया और निर्णय दिया कि १५ फरवरी तक सम्बन्धित सज्जनों से अनुमति ले ली जाय। प्रस्तावित दो नामों में से श्री मदनमोहन जी पाण्डेय ने अपनी असमर्थता प्रकट की है, अतः संविधान के अनुसार (यदि केवल एक नाम ही शेष रह जायगा, तो उसके निर्वाचन की घोषणा कर दी जायगी)। श्री ओमप्रकाश जी का नाम सभापति पद के लिए घोषित किया जाता है।

संघ का अगला वार्षिक अधिवेशन १-२ मई को जयपुर में होगा।

'नवीन' जी को पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाय

२९ अप्रैल राष्ट्रीय आन्दोलन के अपराजेय सेनानी, राष्ट्रभाषा के दधीचि और हिन्दी के मूर्धन्य कवि स्व० बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की पंचम पुण्यतिथि है। उन्होंने राष्ट्र-भारती के लिये अपना सर्वस्व दे डाला था। उनका समूचा काव्य-साहित्य प्रकाशित हो कर आ चुका है। उन्होंने एक महाकाव्य, एक खण्डकाव्य और छः काव्य-संग्रहों का सृजन किया। वे राष्ट्रीय-काव्य के पुरस्कर्ता, प्रेम-काव्य के निर्माता, दार्शनिक काव्य और मृत्यु-गीतों के प्रणेता एवं राम-काव्य-परम्परा के युगान्तरकारी कवि के रूप में हमारे समक्ष आते हैं। 'नवीन' जी के निधनोपरान्त प्रकाशित नवीनतम काव्य-कृति 'हम विषपायी जनम के' में इन के सम्पूर्ण अप्रकाशित कविताओं के छः संग्रह संकलित और समाहित हो चुके हैं। उनका गद्य-साहित्य भी संगृहीत रूप में प्रकाशित होनेवाला है। खेद है कि 'नवीन' जी को अभी तक पाठ्यक्रम में स्थान नहीं दिया गया है। उनके पाठ्य-ग्रन्थों में सम्मिलित न किये जाने से हमारी तरुण पीढ़ी हिन्दी

'मण्डल' के १९६४ के महत्वपूर्ण प्रकाशन

१. नेहरू व्यक्तित्व और विचार २५.००
नेहरू जी की पचहत्तरवीं वर्षगाँठ के अवसर पर भारतीय तथा विदेशी राजनेताओं, विद्वानों तथा समाजसेवियों के नेहरूजी से सम्बन्धित संस्मरण एवं उनके प्रमुख विचार। डेढ़ सौ से अधिक चित्र।

२. महात्मा गांधी : एक जीवनी (बी.आर. नंदा) ५.००
गांधीजी के सम्पूर्ण जीवन-परिचय के साथ उनके विचारों पर भी प्रकाश डालनेवाली पुस्तक। रोचक, ज्ञानवर्द्धक, प्रेरणा-दायक।

३. रचनात्मक राजनीति (संपादक : रामकृष्ण बजाज) ४.००
महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम की पृष्ठभूमि पर आधारित स्व० श्री ज़मनालाल बजाज के लेखों, भाषणों का संग्रह, जो वर्तमान पीढ़ी के मार्ग-दर्शन में सहायक है।

४. पत्र-व्यवहार भाग ५ (संपा० रामकृष्ण बजाज) ४.००
स्व० जमनालालजी बजाज का अपने सम्बन्धियों के साथ पत्र-व्यवहार, जो तत्कालीन सामाजिक एवं राजनैतिक आचार-विचार की दृष्टि से पठनीय एवं संग्रहणीय है।

५. प्रेम-प्रपंच (तुर्गनेव) २.००
विश्व के महान लेखक तुर्गनेव का मार्मिक लघु उपन्यास। रोचक इतना कि एक बार हाथ में लेने पर बिना पूरा समाप्त किये नहीं छूटता।

६. शिक्षा का विकास (भगवान प्रसाद) ३.००
प्राचीनकाल से अब तक के शिक्षा के विकास का विवेचन। प्रत्येक शिक्षार्थी एवं शिक्षालयके लिए उपयोगी।

७. सामुदायिक विकास और पंचायती राज (जवाहरलाल नेहरू) २.५०
सामुदायिक योजना और पंचायती राज के विचार और स्वरूप पर नेहरूजी के प्रेरक भाषणों का संग्रह।

८. सहकारिता (जवाहरलाल नेहरू) २.००
स्वतंत्र भारत में सहकारिता का क्या मूल्य है और उसके आधार पर देश की बुनियाद को किस प्रकार मजबूत किया जा सकता है, आदि विषयों पर नेहरूजी के भाषणों का संग्रह है।

९. अहिंसा की कहानी (यशपाल जैन) २.००
महात्मा गांधी के अहिंसा के सिद्धांत का सहज और सरल भाषा में बोध करानेवाली पुस्तक।

१०. लड़खड़ाती दुनिया (जवाहरलाल नेहरू)
विश्व की प्रमुख समस्याओं का विवेचन, जिसे पढ़कर विश्व-राजनीति की पृष्ठभूमि सहज ही समझ में आ जाती है।

११. भारत-सावित्री खंड २ (वासुदेवशरण अग्रवाल)
महाभारत का नवीन एवं सारगर्भित अध्ययन उद्योग पर्व से स्त्री पर्व तक।

१२. सच्ची आजादी (महात्मा भगवान दीन)
हम आजाद होकर भी यह नहीं जानते कि असली आजादी क्या है। इसे पढ़कर मालूम होता है कि सच्ची आजादी क्या होती है और किस प्रकार प्राप्त की जा सकती है।

१३. मेरा वकालती जीवन (ग. वा. मावलंकर)
अपने समय के अदालती जीवनके बड़े मार्मिक चित्र। घटना-प्रधान होने के कारण अत्यन्त रोचक। एक बार हाथ में लेकर बिना समाप्त किये छोड़ने को जी नहीं चाहता।

१४. जमना-गंगा के नैहर में (विष्णु प्रभाकर)
जमनोत्री, गंगोत्री तथा गोमुख के प्रवास का रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक वर्णन।

१५. जिन्दगी दाँव पर (स्टीफ़न ज्विग)
अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के लेखक स्टीफ़न ज्विग के दो उपन्यासों का संग्रह। दोनों की रचना मानव की संवेदनशीलता पर की गई है।

१६. मास्टर महिम (मनोज वसु)
आज की शिक्षा, शिक्षा-संस्थाओं और शिक्षकों की स्थिति पर बड़े हृदय-स्पर्शी ढंग से प्रकाश डालने वाला भावपूर्ण उपन्यास।

१७. तन्दुरुस्त रहने के उपाय (धर्मचंद सरावगी)
प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा स्वस्थ रहने के उपाय।

१८. विनोबा की बोध-कथाएँ (विनोबा)
समय-समय पर दिए गए विनोबा जी के प्रवचनों में धर्म-ग्रंथों की रोचक एवं जीवन-निर्माण की शिक्षा देने वाली लघु कथाएँ।

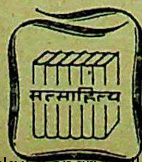
१९. भारत के गाय-बैल (परमेश्वरी प्रसाद गुप्त)
भारत में गाय-बैलों की किस्में और उनकी नसल सुधारने के उपाय।

२०. मानस का सामाजिक दर्शन (बैजनाथ सिंह)
रामचरित मानस का समाज-शास्त्रीय अध्ययन।

२१. राजेन्द्र बाबू : व्यक्तित्व दर्शन
भारत के प्रथम राष्ट्रपति के व्यक्तित्व का संस्मरणों में परिचय।

सस्ता साहित्य मण्डल

प्रधान कार्यालय :
कनाट सर्कस, नई दिल्ली



शाखा कार्यालय :
जीरो रोड, इलाहाबाद

के ओजस्वी और श्रेष्ठ कवि के अध्ययन-मनन से वंचित रह गई है। विद्यालयों के काव्य-संकलनों में उनकी कविताओं को स्थान दिया जाना चाहिये। 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन', माध्यमिक शिक्षा प्रमण्डलों और अन्य परीक्षा-परिषदों की परीक्षाओं के विविध काव्य-संग्रहों में उनको सम्मिलित किया जाय। विश्वविद्यालयों के बी० ए० तक के हिन्दी काव्य एवं निबन्ध-संकलनों में उनको भी पढ़ाने का प्रबन्ध किया जाय। 'आधुनिक हिन्दी काव्य' प्रश्न-पत्र के अन्तर्गत उनकी 'उर्मिला', 'प्राणार्पण', 'हम विषपायी जनम के' आदि अथवा उनके अतिपय सर्ग एवं अंशों को रखा जा सकता है। 'साहित्य रत्न', एम० ए० और इसी प्रकार की उच्च स्तरीय परीक्षाओं के 'विशेष कवि' (स्पेशल पोएट) के अन्तर्गत 'नवीन' जी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था की जा सकती है। आशा है, इस दिशा में, हमारे शिक्षाधिकारियों, प्रमण्डल और 'सम्मेलन' के पदाधिकारियों, परीक्षा एवं हिन्दी अध्ययन-समितियों के संयोजकों, विश्वविद्यालयों के हिन्दी विभागाध्यक्षों और 'नवीन' जी के स्नेहियों का विशेष तौर पर ध्यान जावेगा। कविवर 'नवीन' की स्मृति-रक्षा और उन्हें साहित्यिक श्रृंद्धाजलि अर्पित करने का यही स्थायी और वास्तविक मार्ग है।

दुःखद मृत्यु

रमेश चन्द्र ब्रजेश चन्द्र, पुस्तक-विक्रेता, कटरा, मैनपुरी के व्यवस्थापक श्री रमेशचन्द्र कटियार की बड़ी भावज का स्वर्गवास दिनांक ३०-३-६५ को दिन के ११-बजे हो गया है। प्रचारक परिवार उनके प्रति संवेदना प्रगट करता है।



हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय के व्यवस्थापक श्री ओम्प्रकाश बेरी सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी को प्रचारक पॉकेट बुक्स का नवीन सेट भेंट करते हुए।

सूचना एवं प्रसारण मंत्री को प्रचारक पॉकेट-बुक्स का नवीन सेट भेंट

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय के व्यवस्थापक श्री ओम्प्रकाश बेरी ने कलकत्ता में केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी को प्रचारक पॉकेट बुक्स का एक नवीन सेट भेंट किया। श्रीमती गांधी ने इस प्रकार की सस्ते मूल्यों में प्रकाशित हिन्दी पुस्तकों की प्रशंसा करते हुए इस योजना को बड़ी उपयोगी बतलाया।

'जीवन की मधुर-प्रेरक अनुभूतियाँ' का बहुमूल्य गौरव ग्रंथ

माँ की ममता एवं वात्सल्य का जीवन में जो अमिट प्रभाव रहता है, वह किसी से छिपा नहीं है। इसी उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए माँ के मधुर संस्मरणों का एक बृहद् ग्रंथ तैयार किया जा रहा है। आप भी कृपया परिचय के रूप में अपनी माताजी पर कुछ लिखने का कष्ट करें। लेख में छोटी-छोटी घटनाओं, प्रसंगों, संस्मरणों का समावेश रहे, तो अच्छा रहेगा। रचना चार-पांच हजार शब्दों तक भी हो सकती है।

इसके अतिरिक्त माँ के सम्बन्ध में यदि आप को हिन्दी की किसी अन्य पुरानी पुस्तक या पत्र-पत्रिका में छपी सामग्री का ध्यान हो, तो कृपया उसका विवरण भी भेजने का कष्ट करें।

अगर ऐसा संस्मरण आपने पहले कभी लिखा हो, तो कृपया उसकी कतरन भेज दें। पत्र व्यवहार का पता—श्री सत्यनारायण मिश्र, सहकारी सम्पादक 'नवनीत' हिन्दी डाइजेस्ट, जोगेश्वरी, बम्बई।

रजि नं० L १०३४ टेलीफोन : २११४ टेलीग्रा

हिन्दी प्रचारक

हिन्दी पुस्तक-व्यवसाय का मुख-पत्र

'हिन्दी प्रचारक' कार्यालय, सी. २१/३०, पिशाचमोचन, वाराणसी-१ से श्री ओमप्रकाश बेरी द्वारा प्रकाशि...

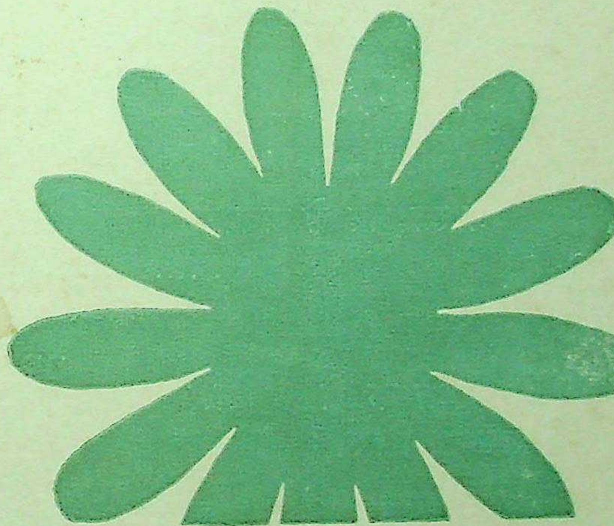
अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक
संघ का मुखपत्र



हिन्दी प्रकाशक

वर्ष ३ अप्रैल-मई, १९६५ अंक ५–६

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ



११. ५. ६५

१०वाँ वार्षिक अधिवेशन, जयपुर

अधिवेशन-विशेषांक

हमारे अभिनव प्रकाशन

बालकों के लिए

अमर जवाहर लाल (सचित्र : सजिल्द)	१.५०	नेहरू के हास्य विनोद (सचित्र : सजिल्द)	२.५

कथा-साहित्य

बटवारे का तूफान (यशपाल)	३.००	शीशे की दीवार (गुलशन नंदा)	३.०
लन्दन के सात रंग (कृष्णचन्द्र)	३.५०	विश्वासघात (यज्ञदत्त शर्मा)	२.५
निर्मल (गुरुदत्त)	३.००	पहला वर्ष ,,	२.५
निष्णात् ,,	३.००	दो पथ दो राही (प्रकाश भारती)	२.५
भाग्य का सम्बल ,,	३.००	प्यासे पत्थर (भारद्वाज)	२.०
गृह संसद ,,	५.५०	मछेरन (आदिल रशीद)	२.२
बदनाम गली (कमलेश्वर)	३.००	बहुरानी ,,	५.५
पानी का चन्द्रमा ,,	३.००	परछाईं ,,	२.२
घेरे के अन्दर (मन्मथनाथ गुप्त)	२.५०	दर्देदिल ,,	२.५
नंदिनी (मामा वरेरकर)	३.००	रेखा ,,	२.२
रक्त गान (नानक सिंह)	२.५०	इश्क पर ज़ोर नहीं ,,	४.०
परायी मां ,,	२.२५	हिमालय के उस पार ('अख्तर')	२.५
अन्तिम पत्ती (ओ. हेनरी)	२.००	घायल (कृष्णगोपाल आबिद)	४.५
कैदी (विलियम फॉकनर)	२.५०	उजाले की नई किरण ,,	३.०
चार पत्तियां (ऐनि काल्वर)	२.५०	पर्वतों के आंचल में (ओलिवर)	२.०
आज और कल (ग्लैडिस करौल)	२.५०	आने दो तूफान (रोज़ विल्डर लेन)	२.०
नये नये चाचा जी (केट सैरेडी)	२.००	नदी की लहरें (कमल शुक्ल)	२.२
परदेसी (रणवीर)	३.००	सारा संसार मेरा (आरिग पूडि)	२.५
टूटे पंख (गुलशन नंदा)	३.००	उलटी गंगा ,,	३.०

पंजाबी पुस्तक भण्डार, दरीबा कलां, दिल्ली-६ (फोन २६३१३

भारत भर से प्रकाशित

हिन्दी पुस्तकें............

............पुस्तक विक्रेताओं के लि
............पुस्तकालयों के लि
............पाठकों के लि

एक ही स्थान से प्राप्त करने के लिए
पधारें अथवा लिखें :

स्टॉर बुक सेन्टर

(दिल्ली में बाहरी प्रकाशनों का सबसे बड़ा केन्द्र)
२७१५, दरियागंज, (मोती महल के पीछे), दिल्ली-६

पुस्तकालयों के लिए
विस्तृत सूची
पत्र लिखकर मंगावें

★ विक्रेताओं के लिए प्रकाशकीय कमीशन की सुविधा

टेलीफोन : २७७६४३ २७४८७४

★ हर विषय की हिन्दी की [illegible] के लिए लिखें

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष ३, अंक ५-६ अप्रैल-मई, १९६५ मूल्य, वार्षिक ३.००

जयपुर अधिवेशन

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का जयपुर अधिवेशन एक चुनौती भरी परिस्थिति में हो रहा है। भारत की सीमाओं से चौंकाने वाले समाचारों का ताँता लगा हुआ है। इधर २६ जनवरी को हिन्दी राजभाषा घोषित हुई है और हिन्दी से सम्बन्ध रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के सामने कुछ ऐसे कर्त्तव्य आ गये हैं जिनका पूरा निर्वाह अनिवार्य हो गया है। हिन्दी पुस्तक-व्यवसाय को इन दोनों चुनौतियों का एक साथ सामना करना है—उसे गाँव-गाँव और घर-घर में ऐसे साहित्य का प्रसार करना है जिससे जोश और होश बढ़े और इस महान् देश की सीमाओं को रौंदने की मूर्खतापूर्ण कल्पना करने वालों का नशा हिरन हो जाय। हिन्दी पुस्तक व्यवसाय को ऐसा रचनात्मक साहित्य भी प्रस्तुत एवं प्रचारित करना है जिससे राजभाषा हिन्दी का मार्ग सुगम हो और वह समूचे देश को प्रत्येक प्रकार से अभिन्न और तेजस्वी बना दे।

इस दुहरे और बड़े कार्य को संघ पुस्तक-व्यवसाय की पूर्ण संगठित शक्ति से ही सम्पन्न कर सकता है। नेट बुक समझौते के क्रियान्वयन काल में भारत के १४२९ पुस्तक-विक्रेता संघ के साथ और उसके माध्यम से प्रकाशकों के साथ एक उद्देश्य की सिद्धि के लिए सम्बद्ध हो गये थे। आज वे पुस्तक-विक्रेता संघ के साथ संबद्ध नहीं हैं और प्रकाशकों तथा विक्रेताओं के आपसी सम्बन्धों में वह सौमनस्य नहीं दीख पड़ता जो पुस्तक-व्यवसाय की सर्वांगीण प्रगति के लिए आवश्यक और सामने की चुनौतियों का उत्तर देने के लिए अनिवार्य है। प्रायः पुस्तक विक्रेता यह कहते सुने जाते हैं कि प्रकाशक हमारे हितों का ध्यान नहीं रखते और हमें उनकी प्रतिद्वन्द्विता का भी सामना करना पड़ता है। प्रकाशक कहते हैं कि अधिकांश विक्रेताओं में सामान्य व्यावसायिक नियमों के पालन की तत्परता भी नहीं रही, अपने क्षेत्र में प्रकाशनों की खपत बढ़ाने वाली लगन का तो सर्वत्र अभाव ही दीख पड़ता है।

गनीमत यह है कि कुछ प्रतिष्ठित पुस्तक-विक्रेता इस परिस्थिति से दुःखी हैं और कुछ प्रकाशक आन्तरिकता के साथ स्वीकार करते हैं कि पुस्तक व्यवसाय की प्रगतिके लिए पुस्तक विक्रेताओं को पुष्ट करना आवश्यक है। वे मानते हैं कि अधिकांश पुस्तक विक्रेता ईमानदार और सच्चे हैं। आर्थिक परिस्थितियाँ उनको दुर्बल कर सकती हैं। वे विक्रेताओं को समुचित सहायता देने के लिए भी प्रस्तुत हैं। इससे भी अधिक प्रसन्नता की बात यह है कि जयपुर अधिवेशन में राजस्थान और आस-पास के विक्रेता-बन्धु भी बहुत बड़ी संख्या में सम्मिलित हो रहे हैं। समझा जाता है कि विक्रेता-प्रकाशक सम्बन्ध की चर्चा ही वहाँ प्रमुख रहेगी और अंत में कुछ ऐसे निर्णय हो जायंगे जो स्वस्थ समाधान दे देंगे। इन निर्णयों के कारण जयपुर का अधिवेशन चिर-स्मरणीय रहेगा और पुस्तक-व्यवसाय के इतिहास में प्रशंसनीय स्थान बना लेगा।

विक्रेता बन्धुओं को संघ के सन्निकट लाने और प्रकाशकों के साथ उनके सम्बन्धों में सौमनस्य स्थापित करने के प्रयास पहले भी कई बार हो चुके हैं परन्तु दृढ़ आधार-भूमि के अभाव में उनको पूरी सफलता नहीं मिली । अतः अधिवेशन के समय होने वाली चर्चा का लक्ष्य उस आधार-भूमि का निर्माण ही होना चाहिए । कुछ मित्रों की सम्मति है कि—

१. प्रकाशक अपनी पूरी शक्ति के साथ प्रकाशन में दत्तचित्त रहें और उसे प्रत्येक दृष्टि से सर्वांगपूर्ण करने का लक्ष्य अपने सामने रखें । प्रकाशनों के प्रसार और वितरण का काम विक्रेता उठा लें और उसमें पूरी शक्ति नियोजित कर लें । दोनों एक दूसरे के काम में कहीं भी हस्तक्षेप न करें । दोनों में होड़ कहीं न हो ।

२. पारस्परिक व्यवहार के लिए एक आचरण संहिता बना ली जाय, उसकी धाराएँ ऐसी हों कि दोनों के संदेह दूर हो जायं और दोनों आश्वस्त हो जायं ।

३. प्रकाशक संघ पुस्तक विक्रेताओं का पूर्ववत् पंजीकरण करे । प्रकाशक पंजीकृत विक्रेताओं को वे सब सुविधाएँ और सहायताएँ दें जो प्रकाशनों को आगे बढ़ाने के कार्य में उनको सफल करें । किसी विवाद की स्थिति में प्रकाशक संघ मध्यस्थता करे । इसके लिए वह एक समिति भी बना सकता है जिसमें सर्वप्रिय प्रकाशक विक्रेता सम्मिलित हों ।

४. विक्रेता अपने स्थानीय संगठन बनावें और सदस्यों के लिए आचरण संहिता प्रस्तुत कर लें। संगठन के द्वारा वे आपस की अनावश्यक प्रतिद्वन्द्विता सकते हैं और प्रकाशकों की ओर से कोई अन्याय हो प्रकाशक संघ उसका प्रतिकार न कर सके तो उसके उपाय कर सकते हैं । आगे बढ़कर ये स्थानीय वि संघ प्रान्तीय और फिर केन्द्रीय संगठन भी बना सकते कई दृष्टियों से ये विक्रेता संघ अनिवार्य हैं और नी हैसियत रखते हैं । इनके अभाव में ही कई अच्छे नहीं हो सके और पुस्तक-व्यवसाय क्षतिग्रस्त हुआ है

जयपुर में उपस्थित बन्धु इसी तरह के दूसरे सु दे सकते हैं तथा वे अधिक उपयोगी भी हो सकते आशा है कि उन सब पर स्वस्थ वातावरण में विचार जायगा और ऐसे निर्णय लिए जायंगे जिनसे हिन्दी प्रकाशन-व्यवसाय चुनौतियों को ऐसा उत्तर देगा कि आने वाली पीढ़ियाँ भी आदर के साथ याद करेंगी।

किताब

यह कह के हमने कबाड़ी को सौंप दी है किताब
है उसकी जिल्द पुरानी मगर नई है किताब ।

लिखी जो मेरे हरीफों[1] ने सिर्फ एक गजल
तो मैंने ताव में आकर घसीट दी है किताब ।

मैं जब भी रेल में बैठा किसी सफर के लिए
हमेशा मेरी शरीके सफर रही है किताब ।

कहाँ है वक्त कि चाटें ज़खीम जिल्दों को
ज़रा-सा वक्त मिला है तो सूँघ ली है किताब ।

किसी को गंज[2] मिला और किसी को रंज मिला
ज़हेनसीब हमें राह में मिली है किताब ।

मुसन्फीन[3] घुसे हैं किताबखाने में
मुसन्फीन की सफ[4] में घुसी हुई है किताब ।

मेरे दिमाग की हर चूल कितनी ढीली
जो पढ़ चुका तो ये जाना पढ़ी हुई है किता

हर एक सिम्त अंधेरा है जिस तरफ़ दे
अगरचे ताक़ में सदियों से जल रही है किता

चमन में इस तरह बारिश हुई है ख्यालों
जहाँ भी देखो वहीं पर उगी हुई है किता

ये अपना-अपना मुकद्दर[5] है अपना-अपना न
किसी ने बेंची किसी ने खरीद ली है कित

लहू लगा के शहीदों में नाम कर
कि आज-कल में हमारी भी छप रही है कित

—चिलमकश, बागेहरम,

१. प्रतिद्वन्द्वी, २. खज़ाना, ३. लेखक, ४. पंक्ति ५.



अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ भारत के हिन्दी प्रकाशकों की प्रतिनिधि संस्था है। देश के सभी प्रमुख हिन्दी प्रकाशक इस संघ के सदस्य हैं और यह संघ अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशक संघ ज्यूरिच से सम्बद्ध है। संघ के उद्देश्य हैं :—

(अ) हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशकों के हितों का संरक्षण और सामूहिक प्रतिनिधित्व करना।

(आ) प्रकाशन-व्यवसाय को समृद्धिशाली और गौरवान्वित बनाना।

(इ) प्रकाशन-व्यवसाय-सम्बन्धी आधुनिक जानकारी एवं तथ्यों का प्रसार करना।

(ई) हिन्दी साहित्य के स्तर को उत्तरोत्तर ऊँचा करना तथा उसके अभावों की पूर्ति के लिए प्रयत्न करना।

(उ) लेखक, प्रकाशक, तथा पुस्तक-विक्रेताओं के पारस्परिक सम्बन्धों में सामंजस्य स्थापित करना।

(ऊ) उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पत्र निकालना, पुस्तकालय स्थापित करना, पुस्तक-प्रदर्शनियाँ करना तथा अन्य उचित सम्भावित प्रयत्न करना।

संघ के सभापति

श्री रामचन्द्र टण्डन	१९५४
श्री देवनारायण द्विवेदी	१९५६
श्री वाचस्पति पाठक	१९५८-१९५९
श्री रामलाल पुरी	१९६०
श्री कृष्णचन्द्र बेरी	१९६१
श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन	१९६२-६३
श्री ओंमप्रकाश	१९६४-६५

संघ के प्रधानमंत्री

श्री वाचस्पति पाठक	१९५४-१९५७
श्री दीनानाथ मल्होत्रा	१९५८-१९६०
श्री ओंमप्रकाश	१९६१
श्री कन्हैयालाल मलिक	१९६२-६४

जयपुर अधिवेशन : स्वागत समिति

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का दसवाँ वार्षिक अधिवेशन जयपुर में एक-दो-तीन मई को हो रहा है। इस सम्बन्ध में जयपुर के पुस्तक प्रकाशकों व पुस्तक-विक्रेताओं की १० अप्रैल की बैठक में स्वागत-समिति का निर्माण किया गया था। उसके बाद जयपुर के प्रायः सभी पुस्तक व्यवसायी स्वागत-समिति के सदस्य बन गए। यह पहला अवसर है कि जयपुर के पुस्तक व्यव-

साथियों ने मिल जुल कर जोरों से अधिवेशन की तैयारियाँ की हैं और वे चाहते हैं कि अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का वार्षिक अधिवेशन तथा राजस्थान भर से आए हुए पुस्तक-प्रकाशकों व पुस्तक-विक्रेताओं की मीटिंग दोनों ही आयोजन बड़ी धूमधाम से सफलतापूर्वक सम्पन्न हों।

स्वागत समिति की कार्यकारिणी के सदस्य निम्न लिखित हैं :

श्री दिनेश खरे (सम्पादक, दैनिक राष्ट्रदूत) स्वागताध्यक्ष

श्री चम्पालाल रांका (किताब महल, जयपुर) स्वागत-मंत्री

श्री नरेन्द्रकुमार बाहरी (आत्माराम एंड संस, जयपुर शाखा) कोषाध्यक्ष

श्री झुन्नीलाल गुप्ता (राजस्थान प्रकाशन) राजस्थान से आने वाले प्रकाशकों व पुस्तक-विक्रेताओं की मीटिंग के लिए संयोजक

श्री राधाकृष्ण माहेश्वरी (रमेश बुक डिपो) संयोजक, निवास व सजावट समिति

श्री राधाकृष्ण मलिक (मलिक एंड कं०) संयोजक पुस्तक-प्रदर्शनी-समिति

श्री उमरावसिंह मंगल (मंगल प्रकाशन) संयोजक, प्रचार समिति

श्री धनपतराय शर्मा, संयोजक 'स्मारिका'-समिति,

श्री ओंकारदयाल गर्ग (गर्ग बुक कं०)

श्री ताराचन्द वर्मा (स्टुडेण्ट बुक कं०)

रानी लक्ष्मीकुमारी चूड़ावत (राजस्थानी परिषद्)

श्री रामस्वरूप (शिव बुक डिपो)

श्री शान्तिनाथ (ऊषा बुक एजेन्सी)

श्री विनयचन्द्र (जैन पुस्तक मन्दिर)

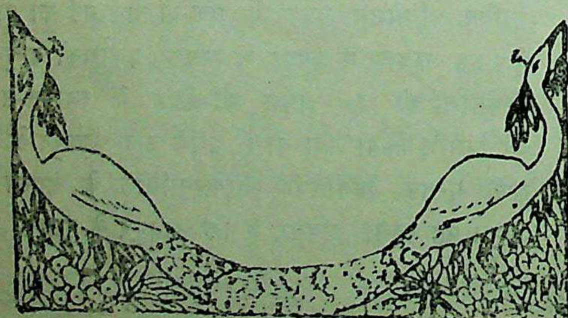
श्री रोशनलाल (रोशनलाल जैन एंड सन्स)

श्री सूरजप्रकाश पापा (राजस्थानी प्रकाशन)।

स्वागत समिति की अपील पर राजस्थान प्रकाशकों एंव पुस्तक-विक्रेताओं ने तन मन धन से जन को सफल बनाने के लिए सहायता की है।

विशेष अतिथि और आकर्षण

अधिवेशन का उद्घाटन राजस्थान के रा विद्वद्वर डॉ० संपूर्णानन्द करेंगे। पुस्तक प्रदर्श उद्घाटन राजस्थान के शिक्षा संचालक श्री वी० जॉन द्वारा होगा। राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री मो सुखाड़िया अधिवेशन के विशेष अतिथि होंगे। सम्मेलन की अध्यक्षता उप-शिक्षामंत्री श्री निरं आचार्य करेंगे। शिक्षाशास्त्रियों की गोष्ठी और रा के पुस्तक-विक्रेताओं का सम्मेलन अधिवेशन के वि उपयोगी आकर्षण होंगे।





प्रकाशक संघ : वर्तमान समस्याएँ

श्री दीनानाथ मल्होत्रा
राजपाल एण्ड संस, दिल्ली

इस व्यावहारिक लेख में जयपुर अधिवेशन के लिए विचारणीय प्रश्न प्रस्तुत हुए हैं। अपने विस्तृत अनुभव के बल पर लेखक ने कहा है : हम अपनी आंतरिक कमजोरियों के कारण असफल हैं। पुस्तक विक्रेताओं को पुष्ट किया जाय तो पुस्तकों की बिक्री बढ़ेगी।
एक प्रशिक्षण केन्द्र की आवश्यकता भी लेख में प्रभावशाली शब्दों में रखी गई है। आशा है कि अधिवेशन में इन पर विचार होगा और समुचित पग उठाये जायेंगे।

—सं०

हिन्दी-प्रकाशन व पुस्तक-व्यवसाय आज एक बड़ी विकट परिस्थिति से गुज़र रहा है। प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं में चारों ओर निराशा का वातावरण दिखाई देता है। गत दस-बारह वर्षों में हिन्दी के प्रोत्साहन के लिए भारत-सरकार तथा अन्य राज्यों की सरकारों द्वारा हिन्दी पुस्तकों की खरीद के कारण इस व्यवसाय को काफी प्रोत्साहन मिला जिसके फलस्वरूप अनेकों नए प्रकाशक व पुस्तक-विक्रेता इस क्षेत्र में आए और उनमें से कइयों ने इसको नई दिशा दी और कई पुराने प्रकाशकों ने अपना बड़ा विराट स्वरूप बना लिया। आज से तीन वर्ष पूर्व ऐसा लगता था मानो हिन्दी-प्रकाशन व पुस्तक-व्यवसाय उन्नति के शिखर पर पहुँच गया हो। हिन्दी प्रकाशकों ने ऐसे प्रयोग भी किए जो न केवल अन्य भारतीय भाषाओं के पुस्तक-व्यवसाय के लिए अपितु बाहर विदेशों के पुस्तक-व्यवसाय के लिए भी बड़े साहस-पूर्ण थे।

परन्तु पिछले तीन वर्षों की कहानी कुछ और है, इस बीच हम बहुत शिथिल हो गए हैं। एक ओर जहाँ चीनी आक्रमण के कारण पुस्तकों की सरकारी खरीद का प्रोत्साहन एकदम समाप्त हो गया वहीं दूसरी ओर प्रकाशक संघ का अपना संगठन भी शिथिल हो गया। सरकारी खरीद का हट जाना तो देश की अन्य परिस्थितियों पर निर्भर था और यह हमें जान लेना होगा कि यह प्रोत्साहन तो हमेशा के लिए चलने वाला नहीं था और न ही चलेगा। परन्तु पुस्तक-व्यवसाय के अपने संगठन में जो शिथिलता आ गई वह सबसे अधिक घातक सिद्ध हुई है। कोई भी व्यवसाय संगठन और अनुशासन के बिना नहीं चलता और फिर एक ऐसा व्यवसाय जिसकी कार्य-पद्धति अन्य व्यवसायों से कहीं अधिक कठिन व अनोखी हो और थोड़ी-थोड़ी पूंजी से सब लोग अपना काम चलाते हों—वहाँ तो संघ की शक्ति के बिना कोई भी कदम आगे नहीं बढ़ा सकता।

इस दृष्टिकोण से यह बात नितान्त स्पष्ट हो जाती है कि यदि ऐसे व्यवसाय को जीवित रहना है और उन्नत होना है तो व्यावसायिक संगठन और अनुशासन सुचारु रूप से स्थापित करना पड़ेगा। मई, १९६५ में अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का दसवाँ वार्षिक अधिवेशन जयपुर के ऐतिहासिक नगर में हो रहा है। इस अधिवेशन में सब प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं को मिलकर गम्भीर रूप से व्यवसाय की परिस्थिति पर विचार करना चाहिए। यदि कुछ लोग केवल एक-दूसरे का मान रखने के लिए अथवा बात पूरी करने के लिए ही अधिवेशन में उपस्थित हो जाते हैं और किसी प्रकार भी दो दिन के कार्यक्रम को सुनकर और देखकर लौट जाते हैं तो उसका कोई लाभ नहीं होगा।

मेरी यह दृढ़ धारणा है कि देश की बाह्य एवं आन्तरिक परिस्थितियों के बावजूद हिन्दी-पुस्तक-प्रकाशन-व्यवसाय का भविष्य बहुत उज्ज्वल हो सकता है। लेकिन तभी जबकि हम सब लोग ठीक पद्धति से कार्य करें। "पुस्तकें नहीं बिकतीं, महँगाई है, जनता के पास पुस्तकें खरीदने के लिए पैसा नहीं है, जीवन की आवश्यक वस्तुओं और उसके बाद सिनेमा आदि आमोद-प्रमोद पर ही लोग पैसे खर्च करेंगे"—आदि बातें मुझे कुछ ठीक नहीं लगतीं

और न ही कोई निराशा का कारण लगती हैं। महँगाई तो आज सारे संसार में है। हर देश में लोग जीवन की प्रारम्भिक आवश्यक वस्तुओं पर ही मूल रूप से खर्च करते हैं और वहाँ पर भी सिनेमा और इससे भी अधिक आमोद-प्रमोद के साधन हैं जिनकी वहाँ के पुस्तक-व्यवसायी शिकायत करते हैं, परन्तु वहाँ पुस्तकें फिर भी बिकती हैं और बहुत बिकती हैं। मुझे अपने देश में भी वही स्थिति दिखाई देती है जो दूसरे देशों में है, यहाँ उनसे कुछ भी भिन्न नहीं है। यदि हमारे देश की जनता के पास पैसा कम है तो यहाँ की पुस्तकें भी तो सस्ती हैं। यदि यहाँ पर कम लोग पढ़े-लिखे हैं तो यहाँ की जनसंख्या भी बहुत अधिक है। अतएव यदि हम असफल हैं तो उसका कारण हमारी आन्तरिक कमजोरियाँ हैं—जिनमें मुख्यतः हमारे पारस्परिक संगठन एवं अनुशासन की कमी, ठीक कार्य-पद्धति का अभाव और इस कार्य को चलाने एवं विस्तृत करने के लिए शिक्षित योग्य कार्यकर्त्ताओं की दुर्लभता आदि प्रमुख हैं।

यदि हम इन बातों पर गम्भीर रूप से विचार करें तो देखेंगे कि अपनी अधोगति के इन सभी कारणों का हम मिल-जुलकर ही निवारण कर सकते हैं। इस सम्बन्ध में प्रकाशक संघ के सदस्यों के सामने मैं निम्न सुझाव रखूंगा।

सर्वप्रथम, यदि हमारी पुस्तकें अच्छी हैं और हम उन्हें बड़ी संख्या में प्रकाशित करना चाहते हैं तो बड़े संस्करणों की खपत के लिए हमें पुस्तक-विक्रेताओं को मजबूत करना होगा। जहाँ-जहाँ दक्ष पुस्तक-विक्रेता हैं, हमें उनको प्रोत्साहन देना चाहिए और कठिनाई के समय उनकी सहायता भी करनी चाहिए। पुस्तक-विक्रेताओं को प्रकाशक अपने ही संगठन का अंग समझें। आज हिन्दी-पुस्तकों के विक्रेता कम पूंजी वाले हैं। साधनहीन हैं, कहीं-कहीं तो उनके पास दुकान भी नहीं, परन्तु ये हिन्दी की जनरल पुस्तकों के विक्रेता अधिकांश रूप में सच्चे हैं और आदर्शवादी हैं। उनकी साधनहीनता में हम उनके सहायक होंगे अथवा उन्हें छोड़ देंगे? उनकी सहायता करना कोई जन-सेवा का सामाजिक कार्य नहीं, बल्कि अपने व्यवसाय को अधिक पुष्ट करने का एकमात्र ढंग है। पुस्तक-विक्रेताओं को पुष्ट कीजिए आप की बिक्री ब… पुस्तकों का प्रचार होगा और जो हज़ार अथवा दो ह… के संस्करण प्रकाशित करके हम लोग बैठे रहते हैं… वह भी नहीं बिकते उसके स्थान पर उससे कहीं अधिक… संख्या के संस्करण हम प्रकाशित कर पाएंगे और… शीघ्र ही पुस्तक-विक्रेताओं द्वारा देश भर में हम… बिक्री कर पाएंगे।

जहाँ पुस्तक-विक्रेता नहीं हैं वहाँ पुस्तक-विक्रेता… किए जाएँ। जहाँ उनके पास रुपये नहीं हैं वहाँ… उधार दिया जाय। परन्तु ये सारे सुझाव तभी फ… हो सकते हैं, यदि प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं… संगठन और अनुशासन हो। यदि समय पर कोई आ… रकम नहीं देता तो आप का काम नहीं चल सकता।… ऐसा करने वाला विक्रेता सारे व्यवसाय को हानि पहुँ… है। ऐसे अवसर पर संघ का संगठन और अनुशासन… गलत काम करने वालों को ठीक रास्ते पर ला सकता… क्या हम संगठत और अनुशासन न करके अपने… उज्ज्वल भविष्य को सोया पड़ा रहने देंगे? क्या… व्यक्तिगत स्वार्थों को छोड़ इस सारे व्यवसाय के भ… लिए संगठित न हो सकेंगे?

ये बातें हिन्दी के प्रकाशकों को जयपुर अधिवेशन… पहुँचकर सोचनी हैं। मुझे ऐसा लगता है कि दे… हज़ारों नहीं लाखों व्यक्ति, हिन्दी-पुस्तकों के प्रेमी पा… पुस्तकें खरीद कर पढ़ने के लिये उत्सुक बैठे हैं। उ… शिकायत है कि पुस्तकें उन तक नहीं पहुँच पातीं… अच्छी पुस्तकें नहीं मिलतीं। वास्तव में पुस्तकें खरीदने… की कमी नहीं, हम उन तक पहुँच ही नहीं पाते—यह ह… कमी है—इस पुस्तक व्यवसाय की और इसके… की। क्या हम कोई ऐसी योजना नहीं बना सकते… हर प्रकाशक की पुस्तकें प्रकाशित होते ही देश के… कोने में अधिकृत पुस्तक-विक्रेताओं के माध्यम से सब… पहुँच सकें?

दूसरा और तीसरा कारण हमारी कार्य-पद्धति… योग्य कार्यकर्त्ताओं की कमी है जो प्रकाशक संघ… ही दूर हो सकती है। हम सब लोगों के काम करने…

तरीके पुराने ढंग के हो गए हैं। उनमें नवीनता और आज के युग की तेज़ी लाने की आवश्यकता है। हमारे देश में ही बहुत से व्यवसाय कहीं आगे बढ़ गए हैं जो अपने संगठन में और अपनी कार्य-पद्धति में आधुनिक तरीके इस्तेमाल करते हैं। हमें भी प्रगति के लिए वे सब नए तरीके सीखने होंगे और नई-नई पद्धतियों से परिचित कार्यकर्त्ता तैयार करने होंगे। यह कार्य प्रकाशक संघ प्रकाशन-कला की विभिन्न विधाओं की ट्रेनिंग के लिए सेमिनार, कोर्स तथा पाठ्यक्रम आयोजित करके कर सकता है। मेरा प्रयोजन उन सरकारी या बड़े-बड़े सेमिनारों से नहीं जिनमें दो दिन के लिए लोग इकट्ठे होते हैं, उद्घाटन होता है, भाषण छप जाते हैं और सभी लोग खाली हाथ वापस लौट जाते हैं। प्रकाशन-व्यवसाय की कार्य-पद्धति सीखने के लिए पूरा संयोजित पाठ्यक्रम होना चाहिये। वे यदि छोटे कोर्स हों तो १५ दिन के हों, अथवा महीने भर के हों। इसके अतिरिक्त यदि हम अधिक कुछ कर सकें तो प्रकाशन व पुस्तक-व्यवसाय की विधिवत् ट्रेनिंग के लिए कोई संस्था या इन्स्टीट्यूशन स्थापित की जाए जिसको चलाने में हम सब लोग सहयोगी हों। ऐसे कार्य में सरकार भी सहायता दे सकती है और यूनेस्को भी। लेकिन सभी कामों का उद्भव हमारे अपने संगठन से ही होना चाहिए। इस ट्रेनिंग के कार्यक्रम को केवल संघ की मान-प्रतिष्ठा के लिए कलगी-मात्र न समझना चाहिये। इससे पुस्तक-विक्रेताओं एवं प्रकाशकों का वास्तविक भला होगा, व्यवसाय में वृद्धि होगी—इस दृष्टि से ही उनका संगठन हो और प्रचलन हो।

मेरा सभी प्रकाशकों एवं पुस्तक-विक्रेता बंधुओं से विनम्र निवेदन है कि वे संघ के दो दिन के अधिवेशन को वास्तविक स्थिति की पृष्ठभूमि में देखें और इसी दृष्टिकोण से वहाँ पर विचार-विमर्श करें। अध्यक्षीय भाषण हो या न हो, कोई बड़े नेता उद्घाटन करने आएँ या न आएँ, इससे कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ेगा। हम कितनी तन्मयता से इन समस्याओं पर सोचते हैं, इसी पर भविष्य निर्भर करता है।

हिन्द पॉकेट बुक्स

द्वारा प्रकाशित
संसार के श्रेष्ठ उपन्यास

● संघर्ष	चेख
● याद	पर्ल ब
● प्रेम या वासना	टाल्स्टा
● प्यार की ज़िन्दगी	,,
● युद्ध और शांति	,,
● दूसरी ज़िन्दगी	,,
● पहला प्यार	तुर्गने
● सागर और मनुष्य	अर्नेस्ट हेमिं
● रहस्य की कहानियाँ	एडगर एलन
● जुआरी	दास्तावस्
● पेरिस का कुबड़ा	विक्टर ह्यू
● ऊंचे पर्वत	जान स्टेनबे
● एक मछुआ : एक मोती	,,
● इन्सान या शैतान	स्टीवेन्स
● प्रेमिका	लिन यूता
● एक अनजान औरत का ख़त	स्टीफेन ज़्वि

प्रत्येक का मूल्य एक रुपया



हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा०लि०, शाहदरा, दिल्ली-32

२६ जनवरी के बाद

श्रीकृष्णचन्द्र बेरी

संचालक, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी

राजभाषा के संदर्भ में पुस्तक व्यवसाय पर जो गुरुतर दायित्व आ गया है उसकी झलक इस लेख में प्रभावशाली ढंग से दी गई है। इस दायित्व का निर्वाह पुस्तक-व्यवसाय के अपने हित में भी श्रेयस्कर है अतः विश्वास है कि यह सहर्ष स्वीकार किया जायगा। —सं०

२६ जनवरी, ६५ के बाद से हिन्दी का राजभाषा के रूप में अधिकाधिक प्रयोग हो। इस बात के लिए देश में सभी ओर से प्रयत्न हो रहे हैं। सरकार, संस्थाएं, साहित्य-सेवी तथा सर्वसाधारण सभी में इस बात का आग्रह देखा जा रहा है कि वे दैनिक जीवन में क्रमशः हिन्दी का प्रयोग बढ़ाएँ और अंग्रेजी का प्रचलन कम करें। परन्तु जैसे-जैसे हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है, वैसे-वैसे कुछ आवश्यकताएँ और बाधाएँ भी हमारे सामने आ रही हैं। जहाँ तक आवश्यकता का प्रश्न है उसकी पूर्ति का दायित्व हिन्दी के लेखकों, प्रकाशकों तथा पुस्तक-विक्रेताओं पर आ जाता है।

सबसे बड़ी कमी जो महसूस हो रही है, वह है द्विभाषी कोशों की। अहिंदी प्रदेशों के लोगों को ऐसी पुस्तकें और कोशों की आवश्यकता है, जिनके द्वारा हिन्दी का सामान्य ज्ञान उन्हें मिल सके। क्षेत्रीय भाषाओं के नज़दीक हिन्दी को ले जाने के लिए द्विभाषी कोश कितने उपयोगी होंगे, यह बताने की आवश्यकता नहीं है। ऐसे कोश दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार सभा आदि ने प्रकाशित किये हैं। बंगाल में बहुत पूर्व से पं० गोपालचन्द्र वेदान्तशास्त्री का बंगला हिन्दी कोश चल रहा है। परन्तु ये प्रयास इस दिशा में सत् प्रयत्न होते हुए भी अभी तक उस उद्देश्य में सफल नहीं कहे जा सकते, जिनकी अपेक्षा आज के हिन्दी-प्रचार के लिए है। आज जब कि हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार करने की बात की जाती है, अहिन्दी भाषाभाषी क्षेत्रों के लिए इस तरह के अच्छे कोशों का अभाव बहुत खटकने वाली चीज़ है। इस दायित्व की पूर्ति प्रकाशक थोड़े से साहस से कर सकते हैं। उन्हें इस कार्य में क्षेत्र-विशेष की हिन्दी संस्थाएँ और हिन्दी के विद्वान् सहायता भी देंगे। उदाहरणार्थ 'गुजराती हिन्दी', 'हिन्दी गुजराती' कोश यदि नहीं उपलब्ध होगा तो स्वाभाविक है, गुजरात में जहाँ हिन्दी का व्यापक प्रचार हो रहा है, इनके अभाव में कुछ कठिनाई होगी। ऐसी पुस्तकों के न बिकने का कोई प्रश्न नहीं उठता। यदि द्विभाषी कोश अच्छे निकलेंगे तो हाथों हाथ बिक जायेंगे।

इसके अतिरिक्त प्रशासन की ओर से होने वाले उपयोगी प्रकाशन तथा सार्वजनिक उपयोग की जो भी सामग्री छपे उसका स्थानीय राज्य की क्षेत्रीय भाषा में भी उल्था साथ-साथ अवश्य हो। ऐसा होने से हिन्दी सहज ही ग्राह्य हो सकेगी और सामान्य अहिन्दी भाषी जनता को बोझिल न मालूम होकर अपनी ही भाषा प्रतीत होने लगेगी। पिछले दिनों लोकसभा में एक ऐसे रेलवे टिकट को लेकर प्रश्न पूछे गये जो केवल हिन्दी में छपा था। बात भी कुछ ठीक थी। आन्ध्र में जहाँ सामान्य व्यक्ति हिन्दी नहीं समझता, किसी यात्री को हिन्दी में छपा टिकट दिया जाय तो वह समझ नहीं सकता कि उसमें क्या लिखा हुआ है। ठीक यही प्रश्न अन्य ऐसी सामग्री को लेकर भी उठ सकता है जो केवल हिन्दी में छपी हो और सार्वजनिक उपयोग की चीज़ हो। यदि हिन्दी की पुस्तिकाओं, पैम्फलेटों आदि में साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओंमें उल्था किया हुआ अथवा अंग्रेज़ी अनुवाद हो तो हिन्दी भी धीरे-धीरे ग्राह्य होती जायेगी। हिन्दी क्षेत्रों में चलने वाली सरकारी सामग्री भले ही हिन्दी में हो, परन्तु अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी लादने की कल्पना भी करना अनु-

चित है। आज के राजनीतिक वातावरण में कुछ इस तरह की भ्रान्तियाँ उत्पन्न की जा रही हैं। थोड़ा-सा सतर्क रहने से ये भ्रान्तियाँ दूर की जा सकती हैं। यह तो निर्विवाद रूप से मान लिया गया है कि हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो कि राष्ट्रभाषा हो सकती है, अन्तर केवल समय का है। कितने समय के बाद हिन्दी पूर्ण रूप से देश की राष्ट्रभाषा के रूप में व्यवहृत होने लगेगी, इसका निर्णय यदि अहिन्दीभाषियों पर छोड़ दिया जाय तो कोई कारण नहीं कि हिन्दी बहुत शीघ्र ही राजभाषा के रूप में स्वीकृत हो जाय।

साहित्यकारों और प्रकाशकों को भी एक ऐसा मंच बनाना होगा, जिसके माध्यम से वे ऐसा साहित्य प्रस्तुत कर सकें जो हिन्दी सीखने वाली जनता के लिए उपयोगी हो। हालांकि इस ओर अत्यन्त द्रुतगति से कार्य हो रहा है फिर भी इस बात का लेखा-जोखा रखने की आवश्यकता है कि किन विषयों की पुस्तकों का हिन्दी में अभाव है और उसकी पूर्ति कैसे की जाय। साहित्येतर विषय की पुस्तकें हिन्दी में उतनी पर्याप्त संख्या में नहीं हैं, जितनी कि होनी चाहिएं। अलग-अलग विषयों पर सन्दर्भ ग्रन्थों की खोज हो रही है, परन्तु पर्याप्त संख्या में ऐसे संदर्भ ग्रन्थ हिन्दी में उपलब्ध नहीं हैं। उदाहरण के लिए आप भूगर्भशास्त्र का विषय लीजिए। भूगर्भशास्त्र में हिन्दी में कम से कम २५-५० पुस्तकें होनी चाहिएं, जबकि मुश्किल से ३-४ पुस्तकें ही इस विषय पर हैं। भूगोल का विषय बहुत ही जनप्रिय है। इस विषय की पुस्तकें काफी प्रकाशित भी हुई हैं। परन्तु आज भी हिन्दी में अफ्रीका और आस्ट्रेलिया पर भूगोल की पुस्तकें नहीं मिलेंगी। इस तरह अनेकानेक इंजीनियरिंग सम्बन्धी विषय हैं; इन्हें भी हिन्दी में छापना अनिवार्य है। हमें ऐसे ग्रंथों को लिखने के लिए विदेशी भाषाओं के प्रचलित शब्दों को अपनाने में हिचकिचाना नहीं चाहिए।

हिन्दी को जनप्रिय बनाने के लिए क्षेत्रीय भाषाओं के प्रसिद्ध साहित्यकारों की पुस्तकों को हिन्दी में अनुवादित कराकर प्रकाशित कराना चाहिए। यह सम्पर्कसूत्र स्थायी होगा, साथ ही हिन्दी को जनप्रिय बनाने में सहायक भी। आज सौभाग्य से सभी क्षेत्रीय भाषाओं में ऐसे विद्वान विद्यमान हैं जो अपने क्षेत्र की प्रसिद्ध सा- त्यिक कृतियों का हिन्दी में सुगमतापूर्वक अनुवाद सकते हैं। ऐसी स्थिति में यदि प्रकाशक अनुवादों प्रकाशित करने का बीड़ा उठा लें तो हिन्दी का भ- उज्ज्वल तो है ही, साथ ही प्रकाशन-व्यवसाय को भी लाभ होगा। सुविधा और आर्थिक दायित्व को दृष्टि रखकर प्रकाशकों के अलग-अलग वर्ग बन सकते हैं ये वर्ग अलग-अलग क्षेत्रीय भाषाओं के अनुवाद हिन्दी प्रकाशित कर सकते हैं। इससे सामान्य जनता को मालूम हो सकता है कि अमुक प्रकाशक के यहां क्षेत्रीय भाषा का अनूदित साहित्य मिल सकता कालान्तर में इस योजना का सुपरिणाम यह होगा अहिन्दीभाषी प्रदेशों के लोग हिन्दी के मौलिक ग्रन्थों अपनी क्षेत्रीय भाषाओं में भी चाहने लगेंगे। सर- प्रकाशन क्षेत्र में जो कुछ हो रहा है, उससे सामान्य प्र- शकों को सन्तोष लाभ न करके अपने दायित्व का नि- करना चाहिए। यह सोचना कि कम बिकने वाले प्रका- सरकार करे और अधिक बिकने वाले प्रकाशन प्रकाशक यह न तो व्यवसाय की दृष्टि से हितकर होगा और न दायित्व का निर्वाह ही होगा जो कि आज हिन्दी प्रकाशकों पर आ गया है। किसी भी विषय की कोई पुस्तक छपेगी वह बिकेगी ही और हिन्दी के राष्ट्रभाषा जाने के बाद किसी भी पुस्तक की हज़ार दो ह- प्रतियाँ बिक जाना सामान्य-सी बात है। आवश्य- केवल इस बात की है कि प्रकाशक साहस से का- और ऐसी गम्भीर कृतियों के लिए प्रचार का स्वरूप अच्छा बनाया जाय। हिन्दी के पुस्तक-विक्रेताओं का हिन्दी के प्रति कुछ दायित्व है। पुस्तकें प्रकाशित हों विक्रेताओं की दूकानों पर सुलभ न हों यह स्थिति ही गिनी जायगी जैसी समुद्र के पास से प्यासे आना। आज स्थिति यह है कि हिन्दी के पाठक मनोवांछित पुस्तकें दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता, वा- जैसे प्रमुख नगरों में भी नहीं मिलतीं। इसका दोष अंशों में प्रकाशकों की व्यापार-व्यवस्था पर तथा अंशों में पुस्तक-विक्रेताओं की उपेक्षा-नीति पर निर्भर हिन्दी के पुस्तक-विक्रेता और प्रकाशक सम्मिलित इस दायित्व को समझें कि हिन्दी की पुस्तकें सम-

में प्रमुख स्थानों पर उपलब्ध हों और तद्नुकूल व्यवस्था करें। प्रकाशकों को पुस्तक-विक्रेताओं को ऐसी सुविधाएँ देनी चाहिएं जिससे हिन्दी पुस्तक-विक्रय उन्हें लाभप्रद प्रतीत हो। पुस्तक विक्रेताओं को इस बात की शपथ लेनी चाहिए कि हिन्दी की कोई भी पुस्तक जिसे हिन्दी के स्थानीय पाठक चाहेंगे वे उसे व्यापार के साथ सेवा का कार्य समझ, ग्राहकों को पुस्तक सुलभ कराने में सहायक होंगे। हिन्दी प्रकाशक संघ इस कार्य में तथा प्रकाशकों एवं पुस्तक विक्रेताओं के बीच कड़ी का कार्य कर सकता है और बड़े-बड़े शहरों में सहकार के रूप में पुस्तक केन्द्र खुलवा कर छोटे पुस्तक-विक्रेताओं को सभी हिन्दी पुस्तकें एक जगह मिल जायँ, ऐसी व्यवस्था कर सकता है।

ये थोड़े-बहुत सुझाव हमारे सामने हैं। यदि हम इन्हें कार्यरूप दे सकें तो हिन्दी के राजभाषा बने रहने का मार्ग प्रशस्त होगा।



मेरी मां

जीवन की मधुर-प्रेरक अनुभूतियों का संकलन

मां की ममता एवं वात्सल्य का जीवन में जो अमिट प्रभाव रहता है, वह किसी से छिपा नहीं है। इसी उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए मां के मधुर संस्मरणों का एक बृहद् ग्रंथ तैयार किया जा रहा है। आप भी कृपया परिचय के रूप में अपनी माताजी पर कुछ लिखने का कष्ट करें। लेख में उनके चारित्रिक तथा स्वभावगत गुण-दोषों पर प्रकाश डालने वाली छोटी-छोटी घटनाओं, प्रसंगों और संस्मरणों का समावेश रहे, तो अच्छा रहेगा। रचना चार-पाँच हजार शब्दों तक भी हो सकती है।

इसके अतिरिक्त मां के सम्बन्ध में यदि आपको हिंदी या अन्य किसी भाषा की आत्मकथा अथवा किसी नयी-पुरानी पुस्तक या पत्र-पत्रिकाओं में छपी सामग्री का ध्यान हो, तो कृपया उसका विवरण भी भेजने का कष्ट करें।

अगर ऐसा संस्मरण आपने पहले कभी लिखा हो, तो कृपया उसकी कतरन भेज दें। पत्र-व्यवहार का पता—
श्री सत्य नारायण मिश्र, सहकारी सम्पादक 'नवनीत'
हिंदी डाइजैस्ट, जोगेश्वरी, बम्बई।

आज की समस्या

बिक्री

पुस्तकों की बिक्री को हम प्रारम्भ से ही एक गंभीर समस्या के रूप में प्रस्तुत करते आ रहे हैं। हमारे इस प्रयास ने अन्य मित्रों को भी आकर्षित किया है अतः 'आजकल' और 'धर्मयुग' आदि में इस पर परिचर्चाएँ भी प्रकाशित हुई हैं। समस्या का सर्वांगपूर्ण समाधान तो अभी तक नहीं मिला परन्तु इससे बिक्री को यत्किंचित सहायता अवश्य मिली है। आशा है कि निकट भविष्य में पूर्ण समाधान की दिशा में भी प्रभावशाली पग उठाये जायंगे।

यहाँ हम कुछ और उपयोगी विचार और सुझाव प्रस्तुत कर रहे हैं। आशा है कि समाधान की खोज में इनसे भी पर्याप्त सहायता मिलेगी।

—सं०

समस्या और समाधान

श्री रामलाल पुरी

संचालक, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली

प्रत्येक देश की प्रगति और स्वस्थ समाज की संरचना पुस्तकों पर ही निर्भर है। पुस्तकों के बिना राष्ट्र तो क्या किसी व्यक्ति के अस्तित्व और विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती। पुस्तक एक ऐसी सजीव आत्मा है, जिसमें अतीत, वर्तमान और भविष्य की निरन्तर क्रियाशील विचारधारा निवास करती है और मनुष्य के सीमित जीवन में उसे असीमित ज्ञान प्रदान करती है। बड़े-बड़े मनीषी और चिन्तक जो जीवनपर्यन्त मानव-हित के लिए चिन्तन करते हैं, अपने ग्रंथों में वह ज्ञान-राशि सुरक्षित छोड़ जाते हैं, जो भावी पीढ़ी को अंधकार से प्रकाश की ओर अग्रसर करती है।

पुस्तकों के इस महत्त्व को सभी अच्छी तरह जानते हैं फिर भी हिन्दी का पुस्तक-व्यवसाय पर्याप्त बिक्री के अभाव में किसी सीमा तक संकट का शिकार है। इसके कई कारण हैं। पाठक वर्ग का कहना है कि हिन्दी की पुस्तकों का मू० बहुत अधिक होता है, इसलिये सर्वसाधारण उन्हें खरीद नहीं सकते। लेकिन सही बात यह है कि हमारे देश में पुस्तक की लागत और मूल्य का अनुपात यूरोप के उन्नत देशों के अनुपात से बहुत कम है। वास्तविकता यह है कि अभी तक हमारे देश के नागरिकों में पुस्तकें खरीद कर पढ़ने की रुचि जाग्रत नहीं हुई है। विशेषरूप से हिन्दी का पाठक वर्ग अपने उत्तरदायित्व को नहीं समझ सका है। यही कारण है कि सरकारी या किसी संस्था द्वारा प्रदत्त अनुदान से छपी हुई कम मूल्य की पुस्तकें भी सामान्य संख्या से बहुत अधिक नहीं बिकतीं। इस प्रकार मूल्य अधिक होने का आरोप निराधार सिद्ध हो जाता है। हम यह स्वीकार करते हैं कि किसी नए या विशिष्ट विषय पर पुस्तक प्रकाशित करते समय प्रकाशक को कभी-कभी मूल्य कुछ अधिक रखना पड़ता है। इसका कारण भी यही होता है कि प्रकाशक पुस्तक की बिक्री के प्रति आशान्वित नहीं होता और शंकापूर्ण स्थिति होने के कारण पहले संस्करण में बहुत कम प्रतियां छपवाता है, जिससे पुस्तक की लागत अधिक बैठती है और पुस्तक का मूल्य अधिक प्रतीत होने लगता है। यदि प्रकाशक पुस्तक की बिक्री के सम्बन्ध में पूर्ण आश्वस्त हो तो वह अधिक संख्या में पुस्तकें छपवा सकता है, जिससे प्रति पुस्तक लागत कम आएगी और मूल्य स्वतः ही कम हो जाएगा।

पुस्तक व्यवसाय वैसे भी दूसरे व्यवसायों की अपेक्षा अधिक जोखिम और सिरदर्दी का है। यदि कोई पुस्तक किसी कारणवश नहीं बिकती तो वह रद्दी के भाव ही तुलती है। पैसा भी इस व्यवसाय में बड़ी तेजी से लगता है, लेकिन लौटता है बहुत धीरे-धीरे। ऐसी स्थिति में यदि प्रकाशक को इतना जोखिम उठाने के बाद भी दस प्रतिशत का लाभ न मिले तो वह निरुत्साहित हो जाता है।

एक तर्क यह भी दिया जाता है कि हिन्दी के पाठकों के पास पुस्तकें खरीदने के लिए पर्याप्त धन नहीं है। मैं इस तर्क को खोखला और आधारहीन समझता हूं। हिन्दी-भाषी क्षेत्र की जनता फिल्मों, चाय, पान-बीड़ी और सिगरेट के मद में प्रतिवर्ष करोड़ों रुपए खर्च कर डालती है और यह भी निर्विवाद है कि हिन्दी-भाषी क्षेत्र अहिन्दी-भाषी क्षेत्रों की अपेक्षा आर्थिक दृष्टि से कहीं अधिक सम्पन्न है, फिर भी हिन्दी की अपेक्षा कुछ अन्य भारतीय भाषाओं में प्रकाशित पुस्तकें अधिक संख्या में बिकती हैं। अधिक बिक्री से प्रकाशक को लाभ का अंश अधिक मिलता है, इसलिए वे पुस्तकों के प्रचार और प्रसार की व्यवस्था समुचित ढंग से करते हैं और अधिकांधिक पुस्तकों का प्रकाशन करने के लिए प्रोत्साहित होते हैं। यही स्थिति हम सभी को मिल कर हिन्दी में लानी है। हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। हमें अपनी भाषा पर गर्व है। सरकार की ओर से हिन्दी के विकास के लिए किए गए प्रचार-कार्यों को हम अपर्याप्त समझते हैं और आजकल सरकार की राजभाषा-नीति के विरोध में हिन्दी-क्षेत्रों में आन्दोलन चलाने की बातें ज़ोर-शोर से की जा रही हैं। मैं इस तरह के आन्दोलनों का समर्थक नहीं हूँ। यह भाषा को समुन्नत बनाने की दिशा में उठाया गया एक गलत कदम होगा। आज आवश्यकता इस बात की है कि जनता में पुस्तकों के प्रति रुचि उत्पन्न करने के लिए विशाल पैमाने पर आन्दोलन चलाया जाए। पुस्तकें अधिक पढ़ी जाएंगी तो अधिक बिकेंगी और उतनी ही अधिक छपेंगी। इस प्रकार हिन्दी का साहित्य-भण्डार स्वयं भरता चला जाएगा। जब हमारी राष्ट्रभाषा में हर प्रकार की और हर विषय की पुस्तकें उपलब्ध होंगी तो राजभाषा के पद पर से उसे हटाने की बात कोई सपने में भी नहीं सोच सकता। और इसके लिए जरूरत इस बात की है कि हिन्दी-भाषी जनता पुस्तकों के महत्त्व को समझे। हमारे देश में विशेष पर्वों पर जैसे वस्त्र और बर्तन आदि खरीदना तथा भेंट करना धार्मिक कार्य समझा जाता है, वैसे ही यदि पुस्तकें खरीदना और जन्म-दिन तथा विवाह आदि शुभ-अवसरों पर पुस्तकें उपहार में देना हम अपना धर्म समझें तो समस्या बहुत-कुछ हल हो सकती है। अभी ललित साहित्य के अतिरिक्त अनेक विषय ऐसे हैं, जिन पर हिन्दी में पुस्तकें उपलब्ध नहीं हैं। लेकिन यह प्रकाशक पाठकों के सहयोग और प्रोत्साहन पर ही सकता है।

मैंने अपनी विदेश-यात्रा के दौरान पुस्तकें न बि की समस्या एक बड़े प्रकाशक के सम्मुख रखी तो वह कि पहले हमारे देश में भी पुस्तकें बहुत कम बि थीं। सभी तरह के प्रयत्न किए, लेकिन लोगों में पु खरीदने और पढ़ने की रुचि जागृत न हुई, अंत में प साठ उत्साही नवयुवकों ने घर-घर जाकर लोगों पुस्तकों का महत्त्व और उपयोगिता समझायी तथा पु खरीदने पर बल दिया। धीरे-धीरे लोगों को पुस्तकें की आदत पड़ गई और पुस्तकें बिकने लगीं।

हमारे देश में भी हिन्दी-प्रचार कार्य में लगी संस्थाएँ हैं, यदि उनके कुछ उत्साही सदस्य इसी प्र घर-घर जाकर लोगों को पुस्तकों का महत्त्व और योगिता समझाएँ और उन्हें खरीदने पर विवश करें कोई कारण नहीं कि हिन्दी-पुस्तक व्यवसाय अल्प में ही आत्मनिर्भर न हो जाये। इस प्रकार हिन्दी को शीघ्र ही राजभाषा के गौरवान्वित पद पर आसीन में समर्थ हो सकेंगे।

जनता में पुस्तकें पढ़ने की आदत न होने का कारण हमारी दूषित शिक्षा-प्रणाली भी है। छात्रों पाठ्य पुस्तकें ऐसी होती हैं और उनके द्वारा इस शिक्षा दी जाती है कि वे उन्हें हौवा समझने लगते जैसे-तैसे करके वे पाठ्य-क्रम में निर्धारित पुस्तकें तो हैं, लेकिन कोर्स के बाहर की अन्य पुस्तकें पढ़ने का उनमें नहीं रहता और न कभी अध्यापकगण उन्हें प्रो हित और प्रेरित करते हैं। आगे चलकर वे ही नागरिक बनते हैं और पुस्तकों के प्रति जो दुर्भाव मन में छात्र-जीवन में बना था, वह वैसा ही बना है। पुस्तकों के प्रति उनके मन में रुचि जागृत कर लिए आवश्यक यही है कि पाठ्य-पुस्तकें इतनी रोचक कि बच्चे खेल-खेल में ही विषय की आवश्यक जान प्राप्त कर सकें। इससे उनके मन में पुस्तकों के प्रति

र्षण उत्पन्न होगा और एक बार पुस्तकें पढ़ने की आदत पड़ जाने पर फिर वे हमेशा पुस्तकें पढ़ते रहेंगे।

हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएँ और समाचार-पत्र भी यदि गम्भीरता-पूर्वक पुस्तकों के प्रचार और प्रसार के महत्व को समझने लगें तो वर्षों का कार्य महीनों में हो सकता है। पुस्तकों की नियमित समीक्षा इस दिशा में अत्यन्त प्रभावशाली सिद्ध हो सकती है, लेकिन खेद है कि अधिकांश पत्र या तो इस ओर से उदासीन हैं या उनकी समीक्षा प्रणाली दोषपूर्ण और निरुत्साहित करने वाली होती है। हिन्दी में मैं कई पत्रिकाओं के नाम गिना सकता हूँ, जो समीक्षित पुस्तक में अधिक से अधिक गलतियाँ खोजने और उसके लेखक तथा प्रकाशक को निरुत्साहित करने को ही अपना कर्त्तव्य मान बैठी हैं। यह प्रवृत्ति गलत है। अभी हिन्दी को प्रोत्साहन और सभी दिशाओं में सहयोग की आवश्यकता है। कटु आलोचना प्रकाशित करने से उसे प्रकाशित न करना अधिक अच्छा है।

समालोचक अपना महत्व और ज्ञान प्रदर्शित करने के लोभ में प्रायः पुस्तकों के मूल्य पर भी आक्षेप कर डालते हैं। इस संदर्भ में स्पष्ट करना चाहूंगा कि पुस्तक प्रकाशन किसी एक व्यक्ति का खेल नहीं है। लेखक, प्रकाशक, प्रूफ रीडर, चित्रकार, सम्पादक, मुद्रक और जिल्दसाज़ आदि के संयुक्त प्रयास से पुस्तक का निर्माण होता है। इसके अतिरिक्त प्रकाशन गृह, पुस्तक-विक्रेता और विज्ञापन आदि के अन्य खर्चे भी हैं। पुस्तक का मूल्य उसके आकार या वजन से नहीं, बल्कि अनेक व्यक्तियों के श्रम पर निर्धारित होता है। हिन्दी के समालोचकों को प्रायः इसका अनुभव नहीं होता कि किस पुस्तक पर कितनी लागत आती है, फिर भी इस सम्बन्ध में गलत टिप्पणी किए बिना उन्हें सन्तोष नहीं होता। वे इस बात को नहीं समझते कि उनके एक गलत वाक्य से प्रकाशक को कितना नुकसान पहुँच सकता है। और आज की स्थिति में प्रकाशक को नुकसान होना परोक्ष रूप से राष्ट्र भाषा हिन्दी का नुकसान है।

इस संदर्भ में मेरा सुझाव है कि पत्र-पत्रिकाएँ पुस्तकों की समीक्षा के लिए प्रत्येक अंक में पर्याप्त स्थान रखें और नई पुस्तकों की समीक्षा अविलम्ब प्रकाशित करें। प्रायः देखा गया है कि समीक्षा एक-एक, दो-दो साल बाद प्रकाशित होती है, जबकि पुस्तक का संस्करण भी समाप्त हो जाता है।

जिन पुस्तकों की समीक्षा करना सम्पादक ठीक न समझें, उन्हें प्रकाशक को लौटा दें, मुफ्त में हज़म न करें।

समीक्षा में पुस्तक के मूल्य और प्रूफ-रीडिंग आदि पर कोई टिप्पणी प्रकाशित न की जाए।

आज इतनी अधिक संख्या में पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं कि प्रकाशक यदि सभी को दो-दो प्रतियाँ समीक्षार्थ भेजने लगें तो २००० का पहला संस्करण तो समीक्षा में ही तुरन्त समाप्त हो जाए। इस समस्या का हल यही है कि यदि पत्रों के सम्पादकों को किसी अच्छी पुस्तक का पता चलता है तो वे स्वयं उसे खरीद कर उसकी समीक्षा प्रकाशित करें। दूसरे देशों में प्रायः सभी अच्छे पत्र ऐसा ही करते हैं।

इन सब बातों के बावजूद हमें निराश नहीं होना चाहिए। हिन्दी राजभाषा के पद पर आसीन होगी ही। भविष्य उज्ज्वल है और हमें पूरी लगन से अपने कार्य में लगे रहना है। वह समय शीघ्र आएगा, जब हिन्दी-भाषी जनता पुस्तकों के महत्व और उनकी उपयोगिता को समझेगी और हिन्दी के प्रचार-प्रसार को अपना कर्त्तव्य मानेगी।

यहीं पर एक बात मैं यह भी कहना चाहता हूं कि हमारे बहुत से प्रकाशक तथा विक्रेता बन्धुओं ने भी पुस्तकों के वास्तविक गौरव को तत्वतः अभी तक अंगीकार नहीं किया है। यदि हम पुस्तकों के गौरव और उनकी उपयोगिता तथा महत्व को ईमानदारी से अनुभव करने लगें तो बिक्री की समस्या काफी हद तक हल हो जाती है। क्योंकि जिस वस्तु के प्रति हम जितनी आस्था रखते हैं, उसका प्रचार और प्रसार भी हम उसी सम्मान के साथ करते हैं। यदि हमारी पुस्तकों के गौरव के प्रति आस्था है तो हम अपनी दूकान में प्रत्येक पुस्तक को कलात्मक ढंग से सजायेंगे ताकि ग्राहक उनकी ओर आकर्षित हो और उसके मन में उन्हें देखने और पढ़ने की लालसा जागृत हो। इससे एक बात स्पष्ट है कि पुस्तकों की दुकान में इतना स्थान होना आवश्यक है कि ग्राहक स्वयं आकर पुस्तक देख और

चुन सके। क्योंकि यही ग्राहक बिक्री का स्थायी आधार है और यही पुस्तकों के गौरव के प्रति आस्थावान है। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि यही ग्राहक हमारे लिए अधिक लाभदाता भी है क्योंकि फुटकर बिक्री ही नक़द और अच्छा लाभ देती है।

एक विदेशी विद्वान का कथन है :

"पुस्तकें लिखनी तो सहज हैं—केवल कलम, स्याही और सहनशील कागज की ही आवश्यकता होती है।

"छापनी कुछ कठिन हैं, क्योंकि प्रायः कल्पनाशील पुरुष इतनी तीव्रता से लिखने में ही आनन्द का अनुभव करते हैं, जो मुश्किल से ही पढ़ा जा सके।

"पढ़नी कुछ अधिक कठिन हैं क्योंकि पढ़ते समय निद्रा का प्रभाव होना स्वाभाविक है।

"परन्तु सबसे कठिन काम तो बेचारे उस मनुष्य को करना है, जिसे वे पुस्तकें बेचनी हैं।"

और वे बेचारे मनुष्य हैं हम, जो बड़ी से बड़ी जोखिम उठाकर भी पुस्तक व्यवसाय की अनवरत उन्नति में निमग्न हैं। मैं उन लोगों में से नहीं हूं जो समस्याएं सामने देख हाथ पर हाथ रख कर बैठ जाते हैं। मैं समझता हूं कि प्रत्येक समस्या अपने समाधान के साथ पैदा होती है, और हिन्दी-पुस्तकों की बिक्री की समस्या भी ऐसी नहीं है जिसका समाधान हम न खोज सकें। पर इसके लिए हमें योजनाबद्ध होकर कुछ प्रयत्न संयुक्त रूप से करने पड़ेंगे।

इस व्यवसाय में लाभ की मात्रा इतनी कम है कि प्रकाशक स्वतन्त्र रूप से पुस्तकों के समुचित प्रचार और विज्ञापन पर पर्याप्त धन नहीं खर्च कर सकता। यदि कुछ अच्छे प्रकाशक एक साथ मिल कर इस कार्य को सम्पन्न करें तो सभी को लाभ हो सकता है। इसी सम्बंध में पिछले दिनों मैंने बुक-सेन्टर की एक योजना भी प्रस्तुत की थी। खेद है कि अन्य प्रकाशकों की ओर से इस संदर्भ में विशेष उत्साह नहीं दिखाया गया। वह एक व्यावहारिक योजना थी, जिससे प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता दोनों को ही लाभ पहुँचता। इस योजना के अन्तर्गत प्रत्येक बड़े शहर में एक ऐसी संस्था का निर्माण किया जाता जो बाहर के पुस्तक-विक्रेताओं को स्थानीय प्रकाशकों की पुस्तकें उन्हीं के कमीशन पर सुलभ क[राती।] इन केन्द्रों में पुस्तकों का स्टाक करने की जरू[रत न होती] है। बाहर से प्राप्त आर्डर की पुस्तकें स्थानीय प्र[काशकों] से तुरन्त एकत्रित करके भेजी जा सकती हैं। प्र[काशकों] को पैकिंग, पोस्टेज, रेलभाड़ा और इन कार्यों से स[म्बन्धित] स्टाफ रखने के खर्च की बचत होती और वे बिक्री[-] वितरण की समस्या से मुक्त होकर अपना पूरा [ध्यान] अधिकाधिक उत्तम पुस्तकें प्रकाशित करने में लगा [सकते] हैं।

बुक-सेण्टर का खर्च सम्बंधित प्रकाशक अपनी[-अपनी] बिक्री के अनुपात से उठाते। वे उसे सुचारु रूप से [चलाने] के लिए तत्सम्बंधी नियम आदि बना सकते हैं। [इससे] पुस्तक-व्यवसाय में नियमितता और स्थिरता आ ज[ाती।] प्रचार कार्य और विज्ञापन आदि में भी बुक-सेण्टर की [ओर] से व्यवस्था हो सकती है। बुक-सेण्टर का सबसे बड़ा [लाभ] यह होता कि इससे प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता [में आप]स से प्रतिद्वंद्विता समाप्त होकर एक सहयोग का वा[तावरण] बन जाता।

पुस्तक-व्यवसाय जोखिम का धन्धा है। इस लिए [प्रका]शकों को अपने लिए बिक्री में उचित मुनाफा रख[ना] न भूलना चाहिए। जब तक प्रकाशकों को उचित [लाभ] मिलता रहेगा, तब तक उनका उत्साह भी बना रहेगा [और] वे मेहनत भी करते रहेंगे। मूल्य गिराकर लाग[त] पर माल बेचने से कोई लाभ नहीं। इस गुनाह से [...] से पुस्तक-व्यवसाय के अन्य लोग भी निरुत्साहित [होते हैं] और समूचे व्यवसाय को धक्का लगता है।

पुस्तकों की बिक्री बढ़ाने के इनके अतिरिक्त भी [...] साधन हो सकते हैं जो अन्य व्यवसायों के लिए [...] हैं। परन्तु कुछ बातें पुस्तक-बिक्री के लिए बहुत [आव]श्यक हैं। नई और पुरानी पुस्तकों की व्यापक [...] और उसे हर संभव साधनों से ग्राहकों तक प[हुँचाना,] प्रत्येक अच्छी और नयी पुस्तकें अपने स्टाक में [रखना,] ग्राहकों से पुस्तकों के अग्रिम आर्डर लेना तथा आ[र्डरों की] त्वरित सप्लाई आदि। मैं इनके सम्बन्ध में वि[स्तार से] लिखने की आवश्यकता नहीं समझता। क्योंकि [...]

पुस्तक-विक्रेता इन बातों को भली-भाँति जानता और समझता है।

अन्त में मैं इतना अवश्य कहूँगा कि हिन्दी पुस्तक-विक्रेता के सामने पुस्तक की बिक्री की समस्या का समाधान यही है कि उसे ग्राहक को अपनी ओर खींचने का प्रयत्न करना है और उससे भी अधिक परिश्रम उसे ग्राहक तक स्वयं पहुँचने में करना है। शेष काम पुस्तक स्वयं करेगी, विश्वास रखिये। ●

एक पुस्तक विक्रेता का दृष्टिकोण :

श्री दयानन्द वर्मा
पंजाबी पुस्तक भण्डार, देहली ६

हिन्दी पुस्तकों की बिक्री कम होने के अनेक कारण हैं, लेकिन उन अनेक में से यह कारण तो कतई नहीं है कि हिन्दी-भाषा-भाषियों के पास पुस्तकें खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं या लोगों के पास पढ़ने के लिए समय का अभाव है। यह कहा जायेगा कि लोगों में पढ़ने का शौक नहीं है। शौक हो तो पैसे जुटा लिए जाते हैं। रेस्तराओं और खेल-तमाशों के लिए लोग पैसों का प्रबन्ध करते ही हैं और शौक हो तो वक्त भी निकल आता है। आखिर क्रिकेट के रसिया क्रिकेट का खेल देखने या उसकी कमेन्ट्री सुनने के लिए कहीं से समय निकालते ही हैं।

लोगों में शौक न होने का कारण यह है कि ज्यादा लोगों को यह ज्ञात ही नहीं कि पुस्तक मनोरंजन का साधन भी बन सकती है। एक सामान्य व्यक्ति पुस्तक को या तो आदर की वस्तु मानता है या इसे हौआ समझता है। पुस्तक मित्र या साथी भी बन सकती है, इस पर उसे यकीन दिलाना कठिन होता है।

इतना होने पर भी कुछ लोग ऐसे ज़रूर हैं जो पढ़ने का शौक रखते हैं। ऐसे व्यक्ति संख्या में कम हैं, लेकिन उन अल्पसंख्यकों में अधिकता उन व्यक्तियों की है जो खरीद कर पुस्तक पढ़ना फ़िज़ूल-खर्ची समझते हैं। इस संदर्भ में मेरी एक स्कूली पुस्तकों के विक्रेता से बात हुई। वह कहने लगा कि मैं उपन्यास-कहानी महज़ इसलिए नहीं बेचता कि मेरे सम्बन्धित व्यक्ति ऐसी पुस्तकें यों ही मांग कर ले जाते हैं; बाद में तकाज़े कर-करके उनसे पुस्तक वसूल करने से अच्छा यह है कि ऐसी पुस्तकें दुकान में रखी ही न जाएं।

इसे पुस्तक-लेखक, प्रकाशक तथा विक्रेता का दुर्भाग्य मानिये कि वे ऐसी वस्तु के रचयिता, उत्पादक या विक्रेता हैं जो प्रयुक्त होने के बाद खप नहीं जाती। पढ़ी जाने के बाद भी पूरी की पूरी मौजूद रहती है और पड़े-पड़े खरीदार को याद दिलाती रहती है कि उस पर कितना पैसा व्यय हुआ था। पुस्तकों पर खर्च की गयी रकम से कई गुना अधिक रुपये एक आम आदमी चाय, पान, सिग्रेट या फिल्मों पर व्यय करता है, उसकी उसे याद नहीं रहती। उसने गत वर्षों में कितने मन तम्बाकू फूंका, कितने गैलन चाय पी या कितने खेत पान चबाए। यह याद दिलाने का कोई पार्थिव अवशेष उसके सामने नहीं रहता, इसलिए वह उन खर्चों को भुलाए रहता है, लेकिन पुस्तक ....उस पर खर्च की गयी एक-एक पाई, शैल्फ़ में पड़ी-पड़ी उसे बराबर याद दिलाती रहती है। जब कभी वह नई पुस्तक खरीद कर शैल्फ में लगाने लगता है, तो पहले से पढ़ी गयी पुस्तकों का ढेर देख कर उसे महसूस होता है कि उसका शौक कितना महँगा है। दो रुपये की पुस्तक खरीदते समय उसे लगता है कि वह यह रकम गँवा रहा है। पुस्तक सिर्फ एक बार पढ़ी जायेगी, फिर पड़ी रहेगी। वह यह भूल जाता है कि पुस्तक का कसूर सिर्फ इतना है कि वह पढ़ी जाने के बाद भी रह जायेगी। यदि उसका कोई मित्र या वह स्वयं उसे फिर पढ़ना चाहे तो उस पुस्तक पर उसे पुनः कुछ खर्च न करना पड़ेगा, लेकिन कल मित्रों के साथ उसने फ़िल्म देखने पर जो पांच रुपये खर्च किये थे, सिनेमा हाल से बाहर निकलने के बाद उन रुपयों का क्या हुआ, वह नहीं सोचेगा और यदि देखी गयी उस फ़िल्म को वह दोबारा देखना चाहे तो फिर से उतने रुपये जेब से निकालना उसे बिल्कुल नहीं अखरेगा।

हमारे देश में यह स्थिति अब तक नहीं आई कि लोग पढ़ी जाने के बाद बची हुई पुस्तकों के घर में आबाद रहने की उपयोगिता को समझें। अपने घर में पुस्तकों से भरा एक शैल्फ देखकर उन्हें श्रेष्ठत्व की वैसी अनुभूति हुआ करे, जैसी कुछ व्यक्तिओं को अपने घर में फर्नीचर,

कालीन या दूसरों द्वारा शिकार किये गये शेर की खाल पड़े रहने से हुआ करती है।

पुस्तकें कम बिकने का और कारण है प्रकाशकों का जनरुचि की अवहेलना करना। आज हिन्दी की बड़ी प्रकाशन संस्था वही मानी जाती है जिसने ऐसी पुस्तकें छापी हों जो सरकारी खरीद की सूचियों में अनुसूचित हों; वे पुस्तकें आगे पढ़ी जाती हैं या नहीं, इससे उन्हें कोई सरोकार नहीं होता। उनके द्वारा छापी पुस्तक बिक जाती है, यही काफ़ी है। यही उनका ध्येय है। फल यह होता है कि पुस्तकें बिकती तो हैं, लेकिन पाठकों की संख्या नहीं बढ़ा पातीं।

अंत में सरकार की पुस्तकें खरीदने की नीति की चर्चा करनी भी ज़रूरी है। वह देशवासियों के बौद्धिक-विकास के लिए हर साल पुस्तकें खरीदती है। वह भी मात्र पुस्तकों पर पैसा व्यय करने में ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेती है। कभी वह कमीशन की अधिकता को आधार मान कर पुस्तकें खरीदती है, कभी वह यह सोच कर खरीद की सूचियाँ तैयार करती है कि उनकी स्थापित की हुई लाइब्रेरियों में आने वाले पाठकों का बौद्धिक स्तर बहुत उन्नत है। जो साहित्य खरीदा जा रहा है, उसमें पाठकों की दिलचस्पी भी है या नहीं, इस पर ग़ौर करने की क़तई जरूरत नहीं समझी जाती। इसका फल यह होता है कि वे पुस्तकें नये पाठकों को आकर्षित नहीं कर पातीं बल्कि यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि वे पुस्तकें पाठकों को बलपूर्वक अपने से दूर रहने के लिए बाध्य करती हैं।

राष्ट्रीय पुस्तक समारोह
विचार गोष्ठी में पढ़ा गया निबन्ध

पुस्तकें बिकती क्यों नहीं ?

श्री वेंकटलाल ओझा
मंत्री हिन्दी समाचार पत्र संग्रहालय,
कसारट्टा रोड, हैदराबाद

यह कहना कि हिन्दी पुस्तकें नहीं बिकतीं गलत है। यदि सचमुच यह बात होती तो फिर दनादन हजारों पुस्तकों का प्रति वर्ष हिन्दी में प्रकाशन कैसे होता? प्रकाशक और लेखक मालामाल कैसे होते? इस अर्थ नहीं कि सभी प्रकाशकों की यह स्थिति है। प्रकाशकों की पुस्तकें बिकती हैं वे सभी बिक ज वह बात भी नहीं है; सबसे अधिक पाठ्य पुस्तकें हैं और उनसे अधिक उनकी कुंजियाँ। दूसरा धार्मिक पुस्तकों का आता है, जिन्हें लोग लोक औ लोक सुधारने के लिए पढ़ते हैं। तीसरा स्थान उ और कहानियों का आता है और वे भी ठीक-ठीक जाती हैं पर वही जो पाठकों को मोह लें और अधिक रेलवे पुस्तक भंडारों पर तुरन्त मिल सकें सब प्रकाशकों की बिक्री-कला पर निर्भर है। बिक्री कला है। जो इसमें पटु होते हैं उन्हीं की पुस्तकें ओर छा जाती हैं और पुस्तकों का उठाव ज जाता है।

साहित्य, काव्य, इतिहास, खोजपूर्ण ग्रंथ, संद कला, विज्ञान आदि विषयक पुस्तकें निःसंदेह नाम को ही बिकती हैं। क्योंकि इनके खरीददार बहुत क अतः पुस्तक-विक्रेता उन्हें मँगाने का साहस नहीं जो स्वाभाविक ही है। क्योंकि यदि वह पुस्तक प्रति मँगाता है तो पहले तो उस पर उसे उचित नहीं मिलेगा और मिला भी तो डाकखर्च उस पर बैठ जायगा कि वह ग्राहक को उस पर छपे मूल्य प दे सकेगा। अतः वह पुस्तक उसके पास पड़ी रह ज

हाँ, इन विषयों की कुछ पुस्तकें पाठ्यक्रम में वे अवश्य ही बिकती हैं। बाकी हिन्दी साहित्य स नागरी प्रचारिणी सभा, विज्ञान परिषद्, रा परिषद् आदि के अधिकांश प्रकाशनों की यही द २५-३० वर्ष में जाकर कहीं पहला संस्करण बिक है। बहुत ही कम ऐसी पुस्तकें होंगी जिनका संस्करण निकले।

असल में इन विषयों की पुस्तकें कम बिकने बिकने का कारण है डाक खर्च की अधिकता। ए यदि लन्दन से डाक द्वारा मँगाई जाए तो उस पर डाकखर्च बैठता है उससे अधिक उसी पुस्तक को भे एक नगर से दूसरे नगर भेजने में लग जाता है प्रेस वालों ने मासिक 'कल्याण' में एक बार अपने

डाक द्वारा भेजे गए पुस्तक पार्सलों का विवरण दिया था। जिससे पता चलता है कि जब से सरकार ने रजिस्ट्री की दर आठ आने (और अब ५५ पैसे) कर दी, उनकी संख्या आधी रह गई। जिससे डाक विभाग को पुस्तक पार्सल और वी० पी० कम मिलीं और इस कारण उसकी आय में काफी कमी हुई। यह मानी हुई बात है कि अधिक दाम होने पर कम लोग उस सेवा से लाभ उठाते हैं। आज स्थिति यह है कि एक रुपये की पुस्तक पर कम से कम एक रुपया डाक खर्च बैठता है। बड़ी पुस्तकों पर तो और भी अधिक खर्च बैठता है।

प्रकाशक संघ के प्रतिनिधित्व और दौड़धूप के बाद कहीं पुस्तकों की डाक दर में कुछ कमी हुई है पर रजिस्ट्री के तो वही ५५ पैसे ही हैं। यदि पुस्तकों और समाचार-पत्रों की रजिस्ट्री की दर २५ पैसे कर दी जाय तो पुस्तकें अधिक बिक सकती हैं।

जिस तरह रेलवे माल ढुलाई का भाड़ा वस्तु की उपयोगिता, उसका मूल्य, जनजीवन में उसका स्थान, आदि अनेक बातों को ध्यान में रखकर निश्चित करता है, ठीक उसी तरह की नीति डाक विभाग को अपनानी चाहिए। क्योंकि पुस्तक-व्यवसाय ही उसका सबसे बड़ा ग्राहक है।

अमरीकन डाक विभाग इस संबंध में इसी तरह की नीति पर चल रहा है। वहाँ पुस्तक-व्यवसायियों के प्रतिनिधियों से मिलकर पुस्तकों की डाक दर निश्चित की जाती है। जिसके कुछ प्रमाण वहां की एक मासिक पत्रिका में मेरे पढ़ने में आए हैं।

डाक विभाग की वर्तमान नीति तो 'टके सेर भाजी और टके सेर खाजा' की है। जो पुस्तक-व्यवसाय के लिए प्राणघातक सिद्ध हो रही है। क्योंकि खरीददार इच्छा रहते हुए भी डाक से पुस्तकें नहीं मँगा सकता। जब वह किसी बड़े नगर में स्वयं जाता है या उसके मित्र तो वहाँ से वह इच्छित पुस्तकें मँगाने का प्रयत्न करता है पर वे मिलती नहीं। क्योंकि पुस्तक-विक्रेता उन्हें रखने की जोखिम नहीं उठाना चाहता। वह ग्राहक को यह कहकर टाल देता है कि पुस्तक आने वाली है या संस्करण समाप्त हो गया है।

हिन्दी और अन्य प्रादेशिक भाषाओं के पुस्तक बाजार में अन्तर है। प्रादेशिक भाषाओं का क्षेत्र अधिकांश में छोटा है। अतः सारे प्रदेश के छोटे-बड़े नगरों में पुस्तकें सरलता से पहुंच जाती हैं। पर हिन्दी का क्षेत्र बहुत बड़ा है। अतः सारे देश में उन्हें पहुंचाने में कठिनाई होती है, जो स्वाभाविक है।

इसके अतिरिक्त एक बात और भी है कि विज्ञान महाविद्यालयों की इस समय देश में कमी नहीं है। यदि हिन्दीभाषी राज्यों और अन्य राज्यों में हिन्दीभाषियों द्वारा संचालित विज्ञान महाविद्यालयों में हिन्दी में प्रति वर्ष प्रकाशित होने वाली वैज्ञानिक पुस्तकों की एक-एक प्रति खरीदी जाए तो एक हजार का प्रथम संस्करण हाथों-हाथ बिक सकता है। पर इस संबन्ध में मेरा अनुभव निराला ही है। हैदराबाद के ही एक विज्ञान महाविद्यालय के आचार्य धुरंधर हिन्दी विद्वान थे। जब उनसे मैंने विज्ञान परिषद् प्रयाग के प्रकाशनों को अपने महाविद्यालय के पुस्तकालय के लिए मँगाने और मासिक 'विज्ञान' के ग्राहक बनने के लिए अनुरोध किया तो उत्तर मिला कि वैज्ञानिक हिन्दी पुस्तकों से भला कहीं छात्रों का ज्ञान बढ़ेगा। जब तक वे जीवित रहे हिन्दी-प्रचार का दंभ भरते रहे। लगभग यही स्थिति उद्योग, वाणिज्य, यंत्रशास्त्र आदि विषयक महाविद्यालयों के आचार्यों की है। अब बताइए हिन्दी पुस्तकें क्योंकर बिकें!

मगर जिम्मेदार कौन है?

श्री मोहन गुप्त

हिन्दी साहित्य और समस्याओं के बीच कुछ ऐसा अजीब रिश्ता शुरू से ही रहा है कि कभी साहित्य में समस्याएँ, कभी साहित्य की समस्याएँ,तो कभी साहित्य एक समस्या! मगर इन सबसे ऊपर एक समस्या साहित्यिक पुस्तकों की, पुस्तकों के प्रकाशन की, पुस्तकों की बिक्री की। समस्या कोई नयी नहीं, शुरू से रही है। सोचना यह है कि बिक्री की यह समस्या साहित्यिक पुस्तकों की समस्या ही है कि हिन्दी की हर तरह की पुस्तकों की?

सोचा तो इस पर शुरू से ही गया है; यह अलग बात है कि सम्यक् रूप से विचार और वैचारिक स्तर पर

उतर कर इसका सर्वांगीण विवेचन और सामंजस्य स्थापित करने के प्रयास अभी हाल ही में शुरू हुए। ये प्रयास स्वस्थ भी हैं, सराहनीय भी। कुछ समय पहले दिल्ली में प्रकाशक संघ की एक विचार-गोष्ठी हुई, वक्तव्य पढ़े गये—प्रकाशकों की तरफ़ से, विक्रेताओं की तरफ़ से, पाठकों और लेखकों की तरफ़ से। हर वर्ग के प्रतिनिधियों ने अपनी-अपनी समस्याएँ रखीं। समग्र रूप से साहित्यिक पुस्तकों की व्यवसायगत समस्या पर विचार शायद उस गोष्ठी में नहीं हो पाया। हर किसी ने अपने-अपने वर्ग की बातें महत्त्वपूर्ण घोषित कीं और परस्पर एक दूसरे पर दोष मढ़ा।

कुछ दिन हुए इसी सन्दर्भ में हिन्दी साप्ताहिक 'धर्मयुग' ने एक महत्त्वपूर्ण परिचर्चा प्रकाशित की जिसमें उपर्युक्त चारों वर्गों की प्रतिक्रियाएँ अभिव्यक्त थीं। प्रकाशक के नाते श्री ओमप्रकाश ने कहा कि हिन्दी के बैस्ट सेलर्स हमारा पौराणिक साहित्य और तिलस्मी प्रेम के क़िस्से-अफ़साने हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने साहित्यिक कृति नाम की चीज पर प्रश्न-चिह्न लगाया और नवलेखन के नाम पर छपने वाले साहित्य पर क्लिष्टता और दुरूहता का आरोप लगाते हुए लेखक और पाठक के बीच की खाई का जिक्र किया। आँकड़े दिये और सिद्ध किया कि कमी पाठकों की नहीं, बिकने वाले साहित्य की है; पाठक और लेखक की रुचि के बीच एक स्पष्ट दरार है।

पाठकों की ओर से श्री बालमुकुन्द अग्रवाल के विचार में पिछले दस-पन्द्रह वर्षों में हिन्दी पाठकों की संख्या बढ़ती गयी है और पाठक पुस्तकें खरीदकर पढ़ने लगे हैं। साहित्यिक पुस्तकों की बिक्री की समुचित व्यवस्था के अभाव को ही उन्होंने समस्या का मुख्य कारण बताते हुए उदाहरण दिया कि नयी दिल्ली में सारे कनॉट प्लेस, कनॉट सर्कस का चक्कर लगा लीजिए, आपको एक भी दूकान ऐसी नहीं मिलेगी जहाँ आप इज्जत के साथ खड़े होकर हिन्दी साहित्य की पुस्तकों का अवलोकन कर सकें और खरीद सकें।

इन पाठक महोदय ने भी आज के लेखक पर आरोप लगाते हुए उसकी साहित्यिकता की झांझ को काफी हद तक ज़िम्मेदार ठहराया है। उनका कहना है कि आज का लेखन पाठक की समझ में नहीं आता क्योंकि कहानी कोई घटना या पात्र नहीं होता। परन्तु दूसरे ही साँस वह यह भी चाहते हैं कि पाठक अपने बौद्धिक विकास लिए लेखक से मदद माँगता है!

समझ में नहीं आता कि घटनाओं के घटाटोप में पाठक को बौद्धिक विकास की तलब क्यों! और साथ विचारणीय बात यह भी कि लेखक का भावबोध पकड़ जब मँजी और उभरी है तो पाठक की ग्रहणशी पर अभी तक काई क्यों जमी हुई है!

स्पष्ट है कि जिस पाठक की फ़रियाद ऊपर की गई उसका लेखक वह व्यक्ति नहीं है जिसे आज नया ले कहा जाता है। पुराने पाठक के लिए पुराने लेखक भी थे, अब भी हैं, रहेंगे भी। नये लेखक के नये पा बने हैं, काफ़ी बने हैं, बहुत बनेंगे, सन्देह नहीं। कुल मिला साहित्यिक पुस्तकों के साहित्यिक पाठक जिस संख्या पहले थे उसके मुक़ाबले आज भी अधिक हैं और दि दिन पाठकों की अभिरुचि परिमार्जित होती जा रही है

फुटपाथों के चार-आना ब्रांड ढेरों में या सेकेण्ड है नॉवल किराये पर देने वाली दूकानों में, सफरी समय साहित्य बेचने वाले रेलवे बुक स्टालों पर यदि साहि पुस्तकें नहीं दिखतीं तो यह कोई समस्या नहीं है।

रही बात सुचारु रूप से बिक्री के प्रबन्ध की, शिकायत की गुंजायश उसमें है, जो कि विक्रय और प्र व्यवस्था के उचित संचालन से ठीक की जा सकती है क्योंकि विक्रेताओं के ही एक प्रतिनिधि के अनुसार भी हि पुस्तकों के ख़रीदार के पास न तो पुस्तकों की म खर्च करने के लिए पैसों की कमी है, न पढ़ने के लिए का अभाव।

लेखकों के प्रतिनिधि मोहन राकेश का पुस्तकों की बि के बारे में यह विचार है कि पुस्तकों की बिक्री की सम में आज का लेखक कतई जिम्मेदार नहीं। उनकी में समस्या एक और रूप ले जाती है कि जिन नये लेख पर क्लिष्टता का आरोप लगाया जाता है उन्हीं रचनाएँ जब पाकेट बुक्स में आती हैं या पत्र-पत्रि में छपती हैं तो हजारों-लाखों की संख्या में बिकती मगर जब गत्ते की जिल्द की किताबों में बँधी आती

तो बहुत कम बिकती हैं क्योंकि वे बहुत ढूंढने पर भी आस-पास कहीं नज़र नहीं आतीं। जाहिर है कि दोष विक्रय-व्यवस्था का ही है। हिन्दी के खरीदार पाठक के सामने यह समस्या तो है ही कि वह क्या खरीदे, साथ ही दूसरी समस्या यह भी है कि वह कहाँ से खरीदे।

देश के लगभग हर बिक्री-केन्द्र की कुव्यवस्था इसकी जिम्मेदार है। मगर शिकायत फिर भी यही कि हिन्दी में पुस्तकें बिकती नहीं।

पुस्तकालय के अनुभव और सुझाव

१३ वर्षों से मैं उस पुस्तकालय का कार्य कर रहा हूं जिसमें ३१ जनवरी को ५१२७ पुस्तकों का सुन्दर संग्रह था। मैंने अनुभव किया है :

१. दिल्ली सब थोक वस्तुएँ सस्ती उपलब्ध करती है पर पुस्तकें ······२५ प्रतिशत अधिकतम। अच्छे प्रकाशक पुस्तकों के दाम इतने रखते हैं कि अचम्भा होता है। उपन्यासों में विशेषतः गुरुदत्त, रांगेयराघव, वर्मा, चतुरसेन, अश्क, शेवड़े, आरिगपूड़ी, मुन्शी, भगवतीप्रसाद, श्रीराम शर्मा आदि और कमीशन कम देते हैं।

दूसरी ओर प्यारेलाल, गोविन्दसिंह, कुशवाहा, सोमनाथ वाजपेई, साधना प्रतापी, आदिल रशीद, दाम कम कमीशन भी ज्यादा।

२. पुस्तकालय और फिर धन उपार्जन हेतु स्थापित पुस्तकालय बड़ी पुस्तकों को दाम अधिक, कमीशन कम फिर चलन भी कम रहने के कारण नहीं मंगवाते ! जनता के पढ़ने की रुचि मासिक पत्रिकाओं या जासूसी साहित्य या बनारसी लेखकों तक ही सीमित रह जाती है।

३. क्या प्रकाशक इस ओर ध्यान देगें ?

१. अच्छे लेखकों की पुस्तकों के दाम अधिक न हों।
२. विषय जनता की रुचि का हो।
३. अच्छे लेखकों की पुस्तकें रखने वाली संस्थाओं को विशेष कमीशन मिले।
४. सब प्रकाशकों की ओर से एक संस्था ऐसी होनी चाहिए जिससे सब की कृतियाँ अच्छे कमीशन पर उपलब्ध हो सकें।
५. एक विषय पर अधिक और बेकार पुस्तकें न छपें।
६. पुस्तकालयों को कौन-कौन सी पुस्तकें मँगवानी चाहिएँ, इसका ब्योरा प्रति मास मिले।
७. विषय नवीन हों।
८. साहसिक, ऐतिहासिक, क्रान्तिकारी पुस्तकों का प्रकाशन हो !

व्यवस्थापक
राष्ट्रीय पुस्तक भंडार, सुभाष नगर, बरेली

लेखक तथा प्रकाशक

श्री गुरुदत्त

वयोवृद्ध साहित्यकार और भारतीय साहित्य-सदन, नई दिल्ली के संस्थापक श्री गुरुदत्त जी उस पुरानी समस्या पर संतुलित रूप में विचार करने के अधिकारी हैं। प्रसाद रूप में प्राप्त उनके मौलिक विचार प्रेरणाप्रद माने जायेंगे।

—सं०

पिछले मास, दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन की एक गोष्ठी में साहित्यकार और प्रकाशक के सम्बन्धों पर चर्चा हुई थी। गोष्ठी के अध्यक्ष श्री भगवतीचरण वर्मा जी ने एक बात कही थी। उन्होंने कहा था, साहित्यकार किसको कहा जाय, जिसके साथ प्रकाशक के सम्बन्ध की चर्चा करें? यह प्रश्न महत्त्वपूर्ण है। यदि इसके साथ एक प्रश्न यह भी पूछ लिया जाये कि प्रकाशक कौन है? तो समस्या और भी सरल हो जायेगी।

सरल भाषा में तो लेखक वह है जो लेखनी लेकर किसी कागज़ पर कुछ लिखने लग जाये और प्रकाशक वह है जो थोड़ा-बहुत धन लगाकर पुस्तक छपवाये, जिल्द बंधवाकर भागदौड़ कर बेच सकने का प्रबन्ध करे। वास्तव में दोनों की यह परिभाषा उचित नहीं है। आजकल दोनों क्षेत्रों में अनधिकारी घुस कर बैठे हुए हैं और एक दूसरे की निन्दा करने में संकोच नहीं करते।

मैं तो इस समस्या को कुछ इस प्रकार समझता हूँ कि लेखक और प्रकाशक के सम्बन्धों को सरल, सरस और सोद्देश्य बनाने के लिए दोनों क्षेत्रों में किसी प्रकार के नियन्त्रण और व्यवस्था की आवश्यकता है। इस नियन्त्रण और व्यवस्था को बनाने में एक तीसरा पक्ष भी है। वह है पाठक। आज के समाज में एक चौथा पक्ष भी घुसकर आ बैठा है। वह है शासन।

पाठक और शासन की बात तो मैं इतने मात्र से समाप्त कर देना चाहता हूँ कि पाठक स्वतन्त्र हैं। उपलब्ध सामग्री में से जो उनको हितकर होगा वही खरीदें तथा पढ़ेंगे। यदि उनकी अभिरुचि ठीक नहीं तो यह उनकी शिक्षा का दोष है। उसके सुधार के लिए तो शिक्षा-केन्द्रों, शिक्षा और शिक्षकों की बात होनी चाहिये। यह इस लेख का विषय नहीं। इसका लेखकों के साथ सम्बन्ध भी है। परन्तु वह दूसरे दर्जे पर है। मुख्यतया यह शिक्षा की ही समस्या है। यह लेख इस विषय पर नहीं है।

जहाँ तक शासन का सम्बन्ध है उसका पुस्तक-लेखन तथा पुस्तक-व्यवसाय में हस्तक्षेप भी किसी प्रकार से सुखद और हितकर नहीं हो सकता। परन्तु इसका भी इस लेख से सम्बन्ध नहीं।

रह गयी बात लेखक और प्रकाशक की। दोनों पर नियन्त्रण किसका हो और कैसा हो? प्रश्न यह है।

यह देखने में आता है कि वे लेखक, जिनकी लिखी सामग्री बिकती नहीं, वे प्रकाशकों से अनेक प्रकार के झगड़े करते हैं और जब प्रकाशक उनको सन्तुष्ट नहीं कर सकते तो वे उनकी निन्दा करते हैं। इसके विपरीत ऐसे प्रकाशक भी देखने में आते हैं जो पुस्तकें छापते हैं, बेचते हैं, लाभ उठाते हैं और लेखक का भाग उसको देते नहीं। यह भी देखने में आता है कि प्रकाशक लेखक को देते तो हैं परन्तु लेखक की आवश्यकता के समय नहीं दे सकते। वे लेखक के भाग के धन से अपने व्यवसाय की वृद्धि में लग जाते हैं। उनकी नियत बुरी नहीं होती। परन्तु व्यवसाय के चक्कर में, लोभ से ग्रसित वे लेखक के हित की बात भूल जाते हैं।

दोनों प्रकार की बातों से बचने की आवश्यकता है। दोनों के परस्पर सम्बन्धों के सुधार के लिए मैं सरकारी कायदे-कानून को कुछ अधिक महत्त्व नहीं देता। मैं कायदे-कानून का विरोध नहीं करता परन्तु उनका प्रयोग तो अपवाद की स्थिति में ही होना चाहिये और जब-जब एवं जहाँ-जहाँ कायदे-कानूनों का आश्रय लिया जाता है—वह लेखक और प्रकाशकों के सम्बन्धों में कटुता की वृद्धि ही करता है। अतएव इन सम्बन्धों को सुधारने में दोनों वर्ग स्वयमेव ही सहायक हो सकते हैं।

प्रश्न यह है कि कैसे ? मैं पहले लेखकों की ही बात लेता हूँ। बात पुरानी है और नवीन कहे जाने वाले प्रगतिशीलों को पसन्द आनी सुगम नहीं। इस पर भी कहने में हानि नहीं। लेखकों में गुरु-शिष्य-परम्परा चलनी चाहिये। प्रत्येक लेखक को प्रकाशन-क्षेत्र में आने से पहले किसी सिद्धहस्त लेखक की सेवा में बैठकर अभ्यास करना चाहिये। किसी ज़माने में शायरी और कविता-क्षेत्र में एक सीमा तक यह परम्परा चलती थी। संगीत और अन्य कलाओं में भी गुरुओं के नाम से कला की शैलियाँ चलती थीं और बनने वाले नवीन कलाकार गुरुओं के चरणों में बैठकर उनकी शैली का अनुकरण करते हुए जनसाधारण के समक्ष आते थे। यह ठीक है कि सब गुरुओं के सब शिष्य पारंगत कलाकार नहीं होते थे। हो सकते भी नहीं थे। इस पर भी कला के संरक्षकों को अपना संरक्षण प्रदान करने में सहायता मिलती थी। नवीन लेखकों को जहाँ उन्नति करने में पथ-प्रदर्शक मिल जाते थे वहाँ कार्य-क्षेत्र में आने में सहायता मिलती थी।

दुर्भाग्य यह है कि गुरु पद के योग्य साहित्यकार तो अपने जीवन-साधन में इतने लीन होते हैं कि उनको शिष्य बनाने अथवा शिष्यों को कला-साधना में सहायता देने के लिए न तो रुचि होती है न ही अवकाश। शिष्य बनने वालों में भी रुचि, योग्यता और निष्ठा नहीं होती।

आज के नवयुवक को इस शैली पर कार्य करने के लिए कहना एक धृष्टता मानी जायेगी। इसमें कारण यह है कि प्राय: लेखक किसी जन कल्याण के उद्देश्य से लिखते नहीं। उनमें प्रमुख प्रेरणा जीविकोपार्जन की होती है। कहीं-कहीं एक दूसरी प्रेरणा भी देखी जाती है। वह है ख्याति-प्राप्ति की। इसमें भी बहुधा सुख-सम्पन्न होने की लालसा ही काम करती दिखाई देती है। धन और ख्याति की इन प्रेरणाओं से प्रेरित किसी भी व्यक्ति को किसी भी गुरु के चरणों में बैठ श्रद्धा-भक्ति से अपनी कला को मार्जित करने में बहुत ही कम रुचि होगी।

इससे प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि क्या किसी लेखक का धन और ख्याति की लालसा करना अवाञ्छनीय है ? मैं तो अपनी बात को इस प्रकार लिखता हूँ कि धन और ख्याति अवाञ्छनीय नहीं, परन्तु इनकी लालसा अवश्य हीन मन की सूचक है। लेखन-कार्य आलू-टमाटर पैदा के तुल्य नहीं। जहाँ आलू-टमाटर शरीर की आवश्य ताओं की पूर्ति करते हैं वहाँ लेखक का सम्बन्ध पाठ मन से है। मन शरीर का राजा है। इस कारण जन-मन के राजा के साथ सम्बन्ध रखता है जिसमे दूरगामी प्रभाव उत्पन्न होते हैं। अतः इस शक्ति कुछ टकों के लिए अथवा दो क्षण की वाह-वाह के बेचने को मैं शोभा की बात नहीं समझता। परन्तु इस भी नियन्त्रण तो गुरु-शिष्य की परम्परा से ही सम्भव

गुरुओं की संख्या पर्याप्त होनी चाहिये जिससे शि को अनेक प्रकार की शैलियों, विचारों और विषय अभ्यास प्राप्त करने का अवसर मिल सके। इस विषय बहुत कुछ लिखा जा सकता है। परन्तु यहाँ इतना ही पर्याप्त समझता हूँ। इस शैली को प्रचारित करने प्रकाशक वर्ग भी एक सीमा तक सहायक हो सकते यह शैली बहुत दूर तक प्रकाशकों को भी सन्मार्ग दि में सबल है।

प्रकाशकों के विषय में लिखने को बहुत कुछ है। हिन्दी प्रकाशक संघ की स्थापना हुई थी तब इस दि भी विचार-विमर्श की कल्पना की थी। परन्तु इसमें कि प्रयत्न हुआ और कितनी सफलता मिली, कहना कठि जहाँ तक मुझको ज्ञात है प्रकाशक वर्ग तो अपने बि काम को भी सुनियोजित पथ पर अग्रसर नहीं कर कुछ प्रगति इस दिशा में हुई है परन्तु वह इतनी नहीं कुछ उल्लेखनीय हो। बिक्री के क्षेत्र में भी प्रकाशक नहीं हो सके और परस्पर प्रतिस्पर्धा करते हुए उस उद्देश्य को भी हानि पहुँचाने में क्रियाशील हो जा जिसके लिए यह प्रकाशक संघ बना था। इस पर भी कार्यक्षेत्र से असम्बद्ध होने के कारण अपने को इसमें कहने के मैं अयोग्य मानता हूँ। साथ ही यह इस ले विषय भी नहीं है। यद्यपि प्रकाशक संघ के सुव्यव कार्य से अनेक लेखकों की भलाई का सम्बन्ध है।

यहाँ तो लेखकों के मन में प्रकाशकों के प्रति अ नीय भावना को दूर करने के लिए प्रकाशक संघ करे, इसी पर दो शब्द कहना चाहता हूँ। लेख

गुरु-शिष्य-परम्परा चलाने के लिए वातावरण का निर्माण करना चाहिये। लेखकों की गोष्ठियाँ इसी निमित्त से आयोजित करनी चाहियें। यहाँ इतना निवेदन और कर देना चाहता हूँ कि समालोचकों को मैं प्रस्तावित गुरु-परम्परा की योजना में सम्मिलित नहीं समझता। प्रायः समालोचक अपने समालोचन क्षेत्र से बाहर, जन-मन के कल्याण का साहित्य निर्माण करने में अशक्त पाये जाते हैं। मैं समालोचकों का अपना एक पृथक् क्षेत्र समझता हूँ परन्तु साहित्य निर्माण में वे कुछ विशेष सहयोग दे सकते हैं, संदिग्ध है। इसके लिए तो सिद्धहस्त साहित्यकार ही योग्य है।

यहाँ साहित्य को इसके व्यापक अर्थों में ही समझना चाहिये। मैं तो गणित के किसी ग्रन्थ को भी साहित्य का अंग ही समझता हूँ। इस प्रकार जब भी कोई किसी भी विषय पर पाठक के हित में परन्तु सरल, स्पष्ट, सरस और सुव्यवस्थित भाषा में लिखता है, मैं उसको साहित्यकार ही मानता हूँ।

प्रकाशक-वर्ग अपनी कठिनाइयाँ लेखकों के समक्ष रखने के लिए एक स्थायी समिति का निर्माण करे। इसी समिति के समानान्तर एक समिति ऐसी बनाये जिससे लेखक और प्रकाशक के विवादों का निपटारा किया जा सके। इसका कार्य सुगम,सरल और संक्षिप्त होना चाहिए।

प्रकाशक संघ में सदस्यों की योग्यता, व्यवसाय में लगी पूंजी अर्थात् उनके व्यवसाय में चतुराई पर निर्भर नहीं होनी चाहिए। उसकी सदस्यता लेखकों पुस्तक विक्रेताओं एवं पाठकों से मधुर सम्बन्धों पर निर्भर हो।

इस प्रकार प्रकाशक संघ में मान-प्रतिष्ठा का मापदण्ड भी सदस्य के उक्त मधुर सम्बन्धों पर निर्भर हो।

मैं जानता हूँ कि आज के इस कहे जाने वाले समाजवादी युग में प्रायः प्रत्येक व्यवसाय अथवा कार्य में इतनी उच्छृंखलता चल रही है कि कोई भी सुधार का कार्य दिन-प्रतिदिन दुस्तर होता जाता है। इस पर भी ठीक दिशा में संभृत (Sustained) प्रयत्न अपना फल लाये बिना नहीं रह सकता।

आलोचना में अराजकता

डॉ० विजयेन्द्र स्नातक
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

स्वस्थ आलोचना से प्रकाशकों को भी प्रोत्साहन और बल मिलता है। डा० विजयेन्द्र स्नातक के इस पत्र से स्पष्ट हो रहा है कि हिन्दी का आलोचना-क्षेत्र अराजकता-ग्रस्त है जिससे प्रकाशकों का भी अहित हो रहा है।

डा० स्नातक के ये निर्भीक और रचनात्मक विचार हम साप्ताहिक 'धर्मयुग' के सौजन्य से प्रस्तुत कर रहे हैं। —सं०

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हिन्दी की साहित्यिक रचनाओं के वार्षिक मूल्यांकन को पढ़कर बड़ी खिन्न मनःस्थिति में यह पत्र लिख रहा हूँ। जो मूल्यांकन वर्षभर की उपलब्धियों का प्रस्तुत किया जाता है, वह राष्ट्रभाषा के गौरव के अनुरूप तो होता ही नहीं, प्रत्युत राष्ट्रभाषा हिन्दी असामर्थ्य एवं बौद्धिक दारिद्रय का द्योतक होता है। अहिन्दीभाषी जब हमारे मूल्यांकन को पढ़ते हैं, तब व्यंग्य की मीठी हँसी हँसकर रह जाते हैं। मैं ऐसा नहीं मानता कि इस समय हिन्दी में कृती साहित्यकारों का अभाव है, और यह भी मानने को तैयार नहीं कि हिन्दी की आज की प्रतिभा नगण्य है। गुण और परिमाण दोनों ही दृष्टियों से हिन्दी में विगत डेढ़ दशक में जो कार्य हुआ है वह सभी विधाओं तथा क्षेत्रों में उल्लेख्य है और यदि उसका यथोचित मूल्यांकन किया जाये, तो वह भारतवर्ष की किसी भी भाषा से अधिक सामर्थ्यवान सिद्ध होगा।

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी साहित्य की गतिविधि पर जब मैं विचार करता हूँ तो मुझे सृष्ट-साहित्य से नहीं वरन् सबसे अधिक निराशा मूल्यांकन के निकृष्ट प्रतिमानों को देखकर होती है। साहित्यिक मूल्यांकन के प्रतिमान यदि हिन्दी-जगत् में आज भी अनिर्णीत हैं और 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' का न्याय चलता है तो मैं क्या कहूँ? लेकिन न्यायतुला धारण करने वाला काल-देवता का हाथ कभी अन्याय की ओर नहीं झुकता। उसके अविनाशी निकष पर नश्वर की लकीर नहीं बनती। काल-देवता हमारे क्षयी एवं एकांगी प्रतिमानों से न तो कभी प्रभावित हुआ और न उसने कभी श्रेष्ठ तथा वरेण्य के चयन में प्रमाद किया। पर क्या हम श्रेष्ठ साहित्य-चयन के लिए काल-देवता के निर्णय की प्रतीक्षा करते रहेंगे? क्या हम अपने दीर्घकालीन अनुभव, ज्ञान, मनन और विवेचन को किनारे कर संपेरों की बीन के बहकावे में पड़े रहना पसन्द करेंगे? सतत विकसनशील प्रक्रिया में रहते हुए भी साहित्यिक मूल्यांकन के कुछ निर्धारित एवं शास्त्रसम्मत शब्द-स्वर हमारे पास हैं, किन्तु आपाधापी के इस कोलाहलपूर्ण वातावरण में आज हम उन्हें सुन नहीं पाते, या जानबूझ कर सुनना नहीं चाहते। यही कारण है कि राजनीति की भाँति साहित्य-क्षेत्र में भी 'अहो रूपं अहो ध्वनिः' की कसौटी काम दे रही है। मूल्य निरूपित करते समय रचना से अधिक रचनाकार को सामने रखा जाता है, उसके प्रदेश, जाति, दल और संगठन का ध्यान रहता है। नये और पुराने का श्रेणी-भेद मूल्य स्थिर करता है। इसके अतिरिक्त मूल्यांकन करने वाले स्वयम्भू समीक्षक का व्यक्तिगत राग-द्वेष, निहित स्वार्थ और रुचि-वैचित्र्य भी मूल्यांकन के मानक बनाता है। फलतः कृति एवं कृतित्व की अर्हता-निर्धारण के बिना ही उसे उत्कृष्ट या निकृष्ट घोषित कर दिया जाता है। मुझे लिखते हुए पीड़ा होती है कि केवल प्रान्तीयता के आधार पर किसी कृति का अवमूल्यन करने वाले आज भी हमारे बीच विद्यमान हैं। हिन्दी के श्रेष्ठ प्रतिभा-सम्पन्न कलाकार का जन्म दैवयोग से यदि पंजाब में हुआ तो वह बिहार के समीक्षक की कसौटी पर निकृष्ट उतरे, यह कम ग्लानि और लज्जा की बात नहीं है। भौगोलिक चेतना अथवा संकुचित प्रान्तीयता को, साहित्यिक मूल्यांकन के साथ जोड़ने की यह प्रक्रिया इधर कुछ समय से अधिक जोर पकड़ रही है। जाति, देश, काल की सीमाओं में बंधे रहकर यदि हम साहित्यिक मूल्यांकन प्रस्तुत करेंगे तो साहित्य के मूल उद्देश्य, रागात्मक एकता से ही दूर जा पड़ेंगे। मैं इस ओर आपका ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट करना चाहता हूँ। आप देखें कि इस प्रकार के संकीर्ण, श्रेणीबद्ध और एकांगी मूल्यांकनों को आपके पत्र में तो प्रश्रय प्राप्त न हो।

इन दूषित एवं एकांगी प्रतिमानों के आधार पर जो

मूल्यांकन प्रस्तुत किये जा रहे हैं, उनका पक्षपाती स्वर इतना स्पष्ट होता है कि पढ़ते ही पाठक जान जाता है कि यह मूल्यांकन पटना का है या प्रयाग का, दिल्ली का है या बम्बई का, हैदराबाद का है या वाराणसी का। इस प्रकार की निरंकुश पद्धति ने कृतियों के मूल्य निर्धारण में अराजकता तो उत्पन्न की ही है, साथ ही पांच छोटी कविता और चार बड़ी कहानी लिखने वालों को भी हिन्दी के 'नवरत्नों' में ला बिठाया है। मानदण्डों का ऐसा भयंकर स्वेच्छाचार हिन्दी में पहले कभी देखने में नहीं आया। पुस्तक-परिचय लिखने वाले पहले कभी आलोचक नहीं बन सके, किन्तु आज सख्यभाव से मित्रों की कृतियों पर मर्मभेदी टिप्पणी लिखने वाले 'नामधारी समीक्षक' समझे जाते हैं। उनके पास आलोचक का एक ही धर्म है, 'कनिष्ठ मित्रों का स्तवन और वरिष्ठ कृतिकारों का अवमूल्यन।'

दो दशक पूर्व साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादक तथा सुधी समालोचक मूल्यांकन के क्षेत्र में अंकुश रखते थे। साधारण पाठक उनके संकेतों से दिशा पाकर रचना के सम्बन्ध में अपना तटस्थ मत बना पाते थे। उदाहरण के लिए आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी और आलोचक रामचन्द्र शुक्ल की मूल्यांकन-पद्धति को प्रस्तुत किया जा सकता है। मैं यह नहीं कहता कि इन दोनों की मूल्यांकन दृष्टि निर्दोष थी, किन्तु मेरे कहने का प्रयोजन यह है कि इनके प्रयत्नों से सारग्रहण को प्रोत्साहन मिला और श्रेष्ठ रचनाओं को सम्मान प्राप्त हुआ। आज हिन्दी में एक भी ऐसा आलोचक नहीं है, जिसके मन्तव्य को सार्वभौम स्वीकृति प्राप्त हो और द्विवेदीयुगीन 'सरस्वती' के सदृश क्षमता वाली एक भी साहित्यिक पत्रिका नहीं है, जिसकी सम्मति का आदर होता हो। मेरी यह इच्छा कदापि नहीं है कि प्रजातन्त्र एवं विचार-स्वातन्त्र्य के इस युग में हम किसी को साहित्य-जगत् का शासक या नियन्ता मानने लगें या किसी का अंकुश अपने ऊपर बिठा लें। मेरा तो इतना ही आग्रह है कि आलोचक के कर्तव्य-कर्म का जो पूर्णता के साथ पालन करे, उसके मन्तव्य को ही स्वीकृति मिलनी चाहिए। साहित्य के मर्मोद्घाटन में जिस प्रकार आलोचक सहायक होता है, वैसे ही उसे रचना[illegible] मूल्यांकन में भी सही तौर पर सहायक होना चा[illegible] सजग प्रहरी के बिना जिस प्रकार दस्यु-दानवों का [illegible] छा जाता है, वैसे ही मूल्यांकन के मानकों के अ[illegible] साहित्य-जगत् में अराजकता छा जाती है। आज [illegible] में यह अराजकता सर्वत्र देखी जा सकती है। प[illegible] यह है कि इन पन्द्रह वर्षों की श्रेष्ठ कृतियाँ या तो [illegible]धिकारियों के हाथों में शल्यक्रिया की पीड़ा से कराह [illegible] हैं, या निकृष्ट रचनाएँ, रंग-बिरंगे जैकेटों में लिपटी [illegible] के साधुवाद से 'बच्चा सक्का' की क्षणभंगुर बादशाह[illegible] सुख भोग रही हैं। चूंकि दोनों स्थितियाँ अस्वाभावि[illegible] अतः क्षणजीवी भी हैं। किन्तु क्षणिक भ्रम को भी [illegible] जानबूझकर क्यों सहन करें! मेरा अनुरोध है कि [illegible]दक का दायित्व वहन करने वाले निर्भीक साहित्यकार [illegible] भ्रामक स्थिति से पाठकों को बचाने में योग देकर [illegible] कर्तव्य का पालन करें।

अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए यदि मैं [illegible] डेढ़ दशक के साहित्यिक मूल्यांकन से कुछ निदर्शन [illegible] करूँ, तो आशा है आप इस नीरस प्रकरण को धै[illegible] पढ़ने का कष्ट स्वीकार करेंगे। उपन्यास के क्षेत्र में [illegible] कृतियों को हमने सन् १९४५ तक श्रेष्ठ करार दे[illegible] था उसके आगे सार्वभौम रूप से किसी को स्वीकृति [illegible] मिली। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि इन बीस [illegible] में कम से कम दो दर्जन श्रेष्ठ उपन्यास हिन्दी में [illegible] गये हैं और दो दर्जन उपन्यास लेखक सक्रिय होकर [illegible] प्रस्तुत करते रहे हैं। साढ़े तीन सौ उपन्यासों में [illegible] दर्जन का चयन कठिन नहीं। किन्तु स्वातन्त्र्योत्तर [illegible] में 'मैला आंचल' और 'नदी के द्वीप' के बाद [illegible] स्वीकृति किसी को नहीं मिली। सतही मूल्यांकनों में [illegible] कृतियों का केवल लेखा-जोखा करके छोड़ दिया [illegible] हिन्दी के उपन्यास-साहित्य को प्रेमचन्द के बाद [illegible] जोशी और अज्ञेय जहाँ तक लाये थे, आज वह उससे [illegible] आगे जा चुका है। लेकिन हमारे मूल्यांकन के निक[illegible] कोई चमकीला निशान बनता ही नहीं, जैसे स[illegible] पीतल के ही हैं, चौदह कैरट सोना भी किसी में नहीं [illegible]

हमारे प्रकाशन

कथा-साहित्य

गोमती के तट पर	भगवती प्रसाद वाजपेयी	६.५०
पाकिस्तान मेल	खुशवन्त सिंह	५.००
मिट्टी की लोथ	हरिप्रकाश	४.००
रक्षाबन्धन	रघुवीरशरण बंसल	५.००
हँसता कौन : रोता कौन	यदुनन्दन कपूर	२.५०

नाटक-एकांकी-साहित्य

शीशदान	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	३.५०
साँपों की सृष्टि	"	२.५०
कंजूस	आर० एम० डोगरा	२.००
अजय आलोक	डा० महेन्द्र भटनागर	२.४०
शाप और वर	रत्नलाल शर्मा	३.००
पुनर्जीवन	दुर्गादत्त शर्मा	२.५०

काव्य-साहित्य

प्रतिपदा	कुंवर चन्द्रप्रकाश सिंह	४.००
रसवन्ती	सूर्यभान	१.७५
कुरुक्षेत्र हिमालय	आनन्द	२.५–

विभिन्न साहित्य

मौत भी हार गई	राजेन्द्र शर्मा	२.५०
जीवन ज्योति	क्षेमचन्द्र 'सुमन'	२.५०
जय भारत विशाल	राजेन्द्र शर्मा	२.००
हमारे आदिवासी	हरिप्रकाश	२.००
कुरुक्षेत्र एक सांस्कृतिक परिचय	बालकृष्ण मुस्तर	१०.००
भारत-दर्शन	"	५.००
पंजाब-जन-जीवन और साहित्य		५.००
इंग्लैंड से पत्र	प्रो० ईशकुमार	१.००

आलोचना तथा हिन्दी साहित्य

विद्यापति	जयनाथ 'नलिन'	११.००
रामचन्द्र शुक्ल	"	६.५०
हरिकृष्ण 'प्रेमी'	विश्वप्रकाश दीक्षित	६.५०
वृन्दावनलाल वर्मा	डा० कमलेश	५.००
राधिकारमणप्रसाद सिंह	"	६.००
हिन्दी गद्य विकास और परम्परा	"	२.५०
शुक्ल एक समीक्षा	जयनाथ 'नलिन'	३.००
सूर सरोवर	डा० हरवंशलाल शर्मा	२.५०
सुगम तथा शास्त्रीय संगीत	डा० इन्द्रनाथ मदान	२.५

बाल तथा प्रौढ़ साहित्य

धरती की पूजा	दुर्गादत्त शर्मा	१.२५
धरती का सुहाग	"	१.२५
हम आजाद हुए	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	१.२५
मैं दिल्ली हूं	रामावतार त्यागी	१.००
ईसप की नीति कथाएं १	देवर्षि सनाढ्य	१.२५
ईसप की नीति कथाएं २	"	१.२५
मीठी तानें	श्रीनाथसिंह	१.००
हमारा भारत	प्राणनाथ सेठ	१.२५
रामराज्य की ओर	राजेन्द्र शर्मा	१.००
स्वाधीनता संग्राम की कहानी	रघुवीरशरण बंसल	१.२५
ईशोपनिषद्	गोपालजी	०.६०
उपनिषद्	"	१.५०
मनोवैज्ञानिक कहानियाँ	(पंजाबी)	१.२५
हैंडफुल आफ स्टोरीज़	(अंग्रेजी)	२.५०

बंसल एण्ड कम्पनी

नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२

टेलीफोन : २१२२९२



भारतीय भाषाओं में....

विहगावलोकन

श्री मधुकर

कतिपय भारतीय भाषाओं के प्रकाशन-व्यवसाय से संबंधित यह ज्ञातव्य सामग्री नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित सोविनार के विभिन्न लेखों से संकलित की गई है और यहाँ आभार के साथ प्रस्तुत की जा रही है। —सं०

असमी प्रकाशकों के लिए वरदान

एक वक्त था जब अपने फीके और उदास रूपरंग के कारण असमी पुस्तकें दूर से ही पहचानी जा सकती थीं। अब वह बढ़िया छपी-बंधी और सुन्दर आवरणों से सज्जित होती हैं। अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की भाँति असमी के प्रकाशनों में भी उपन्यास सब से आगे हैं। अच्छे उपन्यास का पहला संस्करण ३००० प्रतियों का हो जाता है। साहसी प्रकाशक बिना किसी जोखिम के ४००० तक भी ले जा सकता है। यात्रा वृत्तान्त और जासूसी उपन्यासों का नम्बर लोकप्रियता में दूसरा है और साहित्यिक समालोचना का तीसरा। कविता भी असमी में काफी बिक जाती है। असमी के आलोचक प्रत्येक नई पुस्तक को छेदकर रख देने के लिए उतावले रहते हैं। जिस पुस्तक पर अश्लीलता का आरोप लग जाता है वह प्रकाशक के लिए वरदान हो जाती है। असमी के प्रकाशक कोई विशेष दिशा या विषय ग्रहण करने की चिन्ता नहीं करते औत पाठक पुस्तक का स्पर्श करते हैं। परन्तु उसे खरीदते नहीं। यह अवश्य है कि लोगों ने विवाहों और जन्मोत्सवों पर पुस्तकें देने की आदत पुष्ट कर ली है। लेखकों के लिए रायल्टी का कोई निश्चित मानदण्ड नहीं है। प्रकाशक अपने भंडार और आय-व्यय का हिसाब देखने के आदी नहीं हैं। विश्वकोश जैसी चीजों का प्रकाशन अभी असमी प्रकाशकों के लिए आकाश-कुसुम ही है।

बंगला पर विभाजन का प्रभाव

बंगला के क्षेत्र में पुस्तकों का प्रकाशन सन् १८०० के आसपास शुरू हुआ। उसे प्यार भी अच्छा मिला परन्तु द्वितीय महायुद्ध के अंतिम चरण तक पुस्तक थोड़े से शिक्षितों में ही सीमित रही और उसका पहला संस्करण १००० से आगे नहीं बढ़ा। स्वाधीनता-पूर्व तक प्रकाशकों ने आश्चर्य के साथ देखा कि गंभीर विषय की पुस्तक का भी पहला संस्करण एक वर्ष में समाप्त हो जाता है। संस्करण की सामान्य संख्या २००० हो गई और दुनिया भर के सब विषय प्रकाशकों की सूची पर चढ़ गये। उपन्यास अवश्य सर्वोपरि बना रहा। विभाजन के कारण पाठक बँट गये हैं और उनकी क्रय शक्ति घट गई है अतः प्रकाशन की प्रगति रुक गई है। बाज़ार का रंग देखकर प्रकाशक महत्त्वपूर्ण पुस्तकें भी हाथ में लेने का साहस नहीं करते। सार्वजनिक पुस्तकालय और शिक्षण प्रतिष्ठान यदि समुचित आश्वासन दें तो समाज और संस्कृति की यह बड़ी आवश्यकता पूरी हो सकती है।

पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन से प्रकाशक शिक्षा के प्रसार में सहायक होते थे। नये लेखकों को मैदान में लाते थे और पाठ्य-पुस्तकों की आय से अन्य आवश्यक साहित्य दे देते थे। पाठ्य-पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण से यह मार्ग अवरुद्ध हो गया। प्रकाशक एवं विक्रेता संघ ने सरकार और जनता का ध्यान इधर कई बार आकर्षित किया है। इसका कोई समुचित समाधान होना ही चाहिए। मशीनों के अभाव में बंग-प्रकाशक मनोनुकूल मुद्रण और पुस्तक-बंधन भी नहीं कर पाते।

मूल्य में वृद्धि की शिकायत पुस्तकों के क्षेत्र में भी हो रही है परन्तु देखना यह है कि पुस्तक-प्रस्तुतीकरण के व्यय भी बहुत बढ़ गये हैं। १९३९-४० में जिस फरमे की छपाई ६-०० थी उसके लिए अब ३६-०० देने पड़ते हैं। कागज के मूल्य में ४०० प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

इस पर भी बंगाली प्रकाशक लेखकों को १५ तथा २० और कहीं-कहीं २५ प्रतिशत रायल्टी देता है। व्यय कम हो तो पुस्तक का मूल्य भी कम हो सकता है।

कन्नड़ में पाकेट-बुक का अनुभव

कन्नड़ और अंग्रेज़ी का एक शब्दकोश सन् १८२४ में प्रकाशित हुआ था परन्तु व्यवसाय की दृष्टि से कन्नड़ पुस्तकों का प्रकाशन सन् १९२० में आरम्भ हुआ है। बिक्री की दृष्टि से १००० के संस्करण को १० वर्ष लग जाते थे। १९५३ में सस्ती पाकेट बुकों के प्रकाशन से बिक्री बढ़ी और एक दिन में ८-१० पुस्तकें तक प्रकाशित होने लगीं। दुर्भाग्य से वह उत्साह क्षणिक निकला और प्रकाशनों की संख्या पूर्ववत हो गई। अब पहले संस्करण की २००० प्रतियाँ छपती हैं और ३ से ५ वर्ष तक में बिकती हैं। नेशनल बुक ट्रस्ट, साहित्य अकादमी और दक्षिण भाषा बुक ट्रस्ट की सहायता से उचित मूल्य वाली पुस्तकें बाजार में आई हैं। परन्तु पाठकों की संख्या बढ़ाने में वह भी सफल नहीं हुई।

कन्नड़ प्रकाशनों में उपन्यासों की संख्या सबसे अधिक रहती है। कहानी कम छपती है। नाटक रंगमंच पर लोकप्रिय हैं परन्तु पुस्तक रूप में इनकी बिक्री बहुत हल्की होती है। बाज़ार सीमित होते हुए भी कविताएँ काफी छप जाती हैं यद्यपि इसकी १००० प्रतियाँ १० से १५ वर्ष तक का समय ले लेती हैं। निबंध, जीवनी और साहित्य-समालोचना का प्रकाशन अधिक नहीं होता। प्राचीन एवं धार्मिक साहित्य अच्छी संख्या में छप जाता है। बाल और वैज्ञानिक साहित्य की कमी है। अच्छे कोशों की आवश्यकता से भी इनकार नहीं किया जा सकता है। विश्व-कोश कन्नड़ में अब तक उपलब्ध नहीं है।

मराठी के सर्वांगपूर्ण प्रकाशन

मराठी में पुस्तकों के प्रकाशन का सिलसिला सन् १८०५ से ढूंढा जा सकता है। सन् १८६४ में बनी एक पुस्तक-सूची में ६६१ पुस्तकों का समावेश हुआ था परंतु उन दिनों विद्वान् और लेखक अपनी पुस्तकें स्वयं ही प्रकाशित करते थे। व्यावसायिक प्रकाशन ने २०वीं शताब्दी में रूप ग्रहण किया। प्रारंभिक १०० वर्षों में मराठी की २६००० पुस्तकें प्रकाशित हुईं। औसत में २६० पुस्तकों की रही परंतु १९५० में प्रकाशि[त] पुस्तकों की संख्या ५०० हो गई।

इस शताब्दी का दूसरा दशक मराठी प्रकाशन [के] लिए एक नया मोड़ हो गया। नये लेखक उठे, लेख[कों] प्रकाशकों में आधुनिक व्यवहार प्रचलित हुए, जननायकों [के] प्रति बढ़ती भक्ति और माध्यमिक शिक्षा में माध्यम [तक] पहुँची मराठी की स्थिति ने सहायता दी। परिणामस्वरू[प] मराठी प्रकाशन के पैर जम गये और वह भविष्य की यो[ज]नाओं में संलग्न हो गया। परन्तु १९३९ में द्वितीय म[हा]युद्ध प्रारंभ हो गया। कागज की महँगाई और सामा[जिक] तथा नागरिक जीवन की विश्रृंखलता ने मराठी प्रकाश[न] का बाज़ार मंदा कर दिया। हल्का और 'पीला' साहि[त्य] फ़ैशन बन गया—सूझ-बूझ वाले सरल साहित्य की मां[ग] एकदम समाप्त हो गई।

१९४६ तक यही स्थिति रही। स्वाधीनता के [बाद] ज्ञान-विज्ञान, इतिहास और अनुसंधान आदि के ग्रंथों [के] प्रकाशन को सरकारी सहायता मिली। फलतः आज [सभी] विषयों की सुन्दर पुस्तकों से मराठी का बाज़ार भर[ा] पूरा है। १९६४ में ३००० पुस्तकों का प्रकाशन इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। मराठी प्रकाशक नई प्रतिभा की खो[ज] में रहता है इसलिए उसका आधुनिक प्रकाशन भंडा[र] प्रत्येक दृष्टि से पूर्ण है। उसमें नाटक, कहानी, उपन्या[स], जीवन, आत्मकथा, यात्रावृत्तान्त, विज्ञान, कला, ललि[त] कला, दर्शन और धर्म आदि सभी विषय प्रचुर मात्रा [में] उपस्थित हैं।

कथा-साहित्य की भाँति ही अन्य पुस्तकों की बिक्री में भी प्रगति मराठी प्रकाशन का एक शुभ चिह्न है पर[न्तु] कुछ अपवादों को छोड़ कर संस्करण की संख्या २००० [से] आगे नहीं बढ़ती। शिक्षा की औसत उन्नत हो रही [है] परंतु वाचन रुचि में प्रगति नहीं दीख पड़ती। विदे[शी] पुस्तकों की प्रतिद्वन्द्विता भी बिक्री में बाधक होती है औ[र] बिक्री की दुर्बलता के कारण लेखकों को समुचित पारिश्रमि[क] नहीं मिलता। पुस्तक-प्रकाशन को बड़ा क्या लघु उद्यो[ग] भी नहीं माना गया। अतः इसे वे सुविधाएँ भी नहीं मिल[तीं] जो दूसरे उद्योगों को प्राप्त हैं। इन बाधाओं की उपस्थि[ति]

में भी मराठी प्रकाशक दृढ़-प्रतिज्ञ है। वह प्रकाशन को एक पवित्र कर्तव्य भी मानता है। अतः किसी न किसी तरह से अग्रसर हो रहा है।

तमिल में प्रचार-प्रसार की कमी

तमिल क्षेत्र में १०० वर्ष पहले तक मुद्रित पुस्तक सम्मान की दृष्टि से नहीं देखी जाती थी, हस्तलिखित को ही आदर मिलता था। अब वहाँ लगभग १००० सामान्य पुस्तकें प्रतिवर्ष प्रकाशित होती हैं।

अमर साहित्य को तमिल में अत्यधिक आदरणीय माना जाता है। इसलिए मध्ययुग तथा आधुनिक काल के ८०० ग्रन्थ सदा उपलब्ध रहते हैं यद्यपि वहाँ के प्रकाशन पर भी कथा-साहित्य ही छाया हुआ है। आलोचकों के मत से कितने ही ढीले-ढाले उपन्यास भी प्रकाशित हो जाते हैं। कविता तमिल में प्रकाशकों को आकर्षित नहीं करती और नाटकों की अच्छी बिक्री नहीं होती। बंगाली, हिन्दी और मराठी के अनूदित उपन्यास भी तमिल में अच्छे खपते हैं। बच्चों के लिए तमिल में लगभग १०० पुस्तकें प्रतिवर्ष छप जाती हैं। तमिल विश्वकोश का पहला खण्ड छपने के कुछ दिन बाद ही बिक गया था। तमिल में लगभग २० शब्दकोश प्रचलित हैं। गीता संबंधी पुस्तकें भी वहाँ अच्छी बिकती हैं।

सात वर्ष पहले तमिल में सस्ती पुस्तकें प्रकाशित करने की प्रवृत्ति बढ़ी थी परंतु यह काम उन्हीं प्रकाशकों ने प्रारंभ किया जो अन्य पुस्तकें भी छापते थे। थोड़े दिन बाद उन्होंने अनुभव किया कि वे अपनी अन्य पुस्तकों की बिक्री पर ही कुठाराघात कर रहे हैं। अब पाकेट बुकों के सजिल्द संस्करण भी छपते हैं और पुस्तकालयों आदि में पहुँचाये जाते हैं।

तमिल में लेखकों को अनुवादों पर और कभी-कभी मौलिक कृतियों पर भी एकमुश्त भेंट दे दी जाती है। अच्छे लेखक रायल्टी पसंद करते हैं।

तमिल प्रकाशनों की मुख्य खपत पुस्तकालयों में ही है। उनके प्रकाशक समाचार-पत्रों में समालोचना या विज्ञापन को सहायक नहीं समझते। सब प्रकाशनों की कोई वर्गीकृत सूची भी उपलब्ध नहीं है। प्रकाशकों की सूचियों में भी कई विषयानुसार नहीं है, उनमें विवरण भी नहीं दिया गया।

कमीशन की घातक प्रतिद्वन्द्विता कितने ही करिश्मे दिखाती है। प्रकाशन संबंधी समाचारों का प्रसारण और पुस्तकों के वितरण की अच्छी व्यवस्था इस स्थिति में सुधार ला सकती है।

तेलुगु में लेखिकाओं की लोकप्रियता

द्वितीय महायुद्ध तक तेलुगु में प्रकाशन धार्मिक ग्रन्थों तथा अन्य भाषाओं (मुख्यत: बंगला) के उपन्यासों के अनुवादों एवं पाठ्य पुस्तकों तक सीमित था। नागरिक सभ्यता के विकास के साथ स्त्रियों को समय व्यतीत करने के साधनों की आवश्यकता हुई और लोकप्रिय पुस्तकों का प्रकाशन सामने आ गया। जनसाधारण की जिज्ञासु प्रवृत्ति ने भी इसको सहायता दी। अत: तेलुगु में उपन्यासों का प्रकाशन सर्वोपरि है परंतु वह संगठित नहीं अस्तव्यस्त है और पुस्तकालयों का मुखापेक्षी है। उपन्यासों में भी जासूसी उपन्यासों की माँग अधिक है। तेलुगु में पाकेट बुक में भी इसी को स्थान मिला है। परंतु विक्रेताओं ने किराये पर किताबें देने की रीति चला कर प्रकाशकों के लिए इनका आकर्षण समाप्त कर दिया। पुस्तकों की दरिद्र रूपरेखा भी कुछ न कुछ उत्तर-दायी है। पकेट बुक तेलुगु में आज भी छपती हैं परंतु अब वे सनसनी पैदा नहीं करतीं।

सिनेमा की कहानी पर आधारित उपन्यास भी तेलुगु में लोकप्रिय हैं। चित्रपट के साथ-साथ उनकी हजारों प्रतियाँ बिक जाती हैं। तेलुगु के प्रकाशक महिलाओं के लिखे उपन्यास अधिक पसंद करते हैं क्योंकि वे नारी मनोविज्ञान को मूर्त करने में अधिक सफल होती हैं। बच्चों के लिए पुस्तकें भी तेलुगु में हैं परंतु अलंकरण आदि की दृष्टि से वे अच्छी नहीं कही जा सकतीं। इतिहास, राजनीति, दर्शन आदि विषयों की पुस्तकें तथा जीवनि[illegible] कभी-कभी किसी-किसी प्रकाशक द्वारा बहुत सीमित [illegible] के लिए प्रकाशित होती हैं। लोकप्रिय विज्ञान तेलुगु के लिए सर्वथा नया विषय है।

आंध्रप्रदेश बुक डिस्ट्रीब्यूटर की गृह पुस्तकालय योजना से प्रकाशन को सहारा मिला है। वैसे अधिकांश प्रकाशक छोड़े वित्त वाले और पुस्तकालयों पर निर्भर रहते हैं तथा आपस में पुस्तकों का विनिमय कर लेते हैं। लेखकों की रायल्टी का कोई निश्चित मानदण्ड नहीं है। कभी-कभी तो लेखक को उतना पारिश्रमिक भी नहीं मिलता जितना आवरण का चित्रकार ले जाता है।

पंजाबी में अनोखा प्रयास

पंजाबी के क्षेत्र में प्रकाशन बिल्कुल नई चीज़ है। इसका प्रारंभ पाठकों की रुचि या पंजाबी साहित्य की माँग से नहीं अपितु लेखकों के उत्साह से हुआ है। पंजाबी पुस्तक पर पहला रंगीन आवरण १९३६ में देखा गया है। इसके प्रकाशक आपस में पुस्तकों का विनिमय करते और उन्हें सीधे स्कूलों में खपाते रहे हैं। स्वाधीनता के बाद पाठक और पुस्तकालय बढ़े हैं, थोक खरीद को सरकारी प्रोत्साहन भी मिला है। इधर पंजाबी के प्रकाशकों ने भी पाकेट बुक की तरफ ध्यान दिया है और लगभग १५० टायटिल छाप लिये हैं। फिर भी पंजाबी का प्रकाशन लाभ का काम नहीं है। ५०० प्रतियाँ भी मुश्किल से बिकतीं और विनिमय में जाती हैं और प्रकाशकों को नकद खरीददार देखते ही अपनी शर्तें भूल जाते हैं। वे अपने को संगठित कर लें तो ५००० प्रतियाँ छापने का स्वप्न भी पूरा कर सकते हैं।

हमारे नवीन प्रकाशन

सुप्रसिद्ध उपन्यासकार
श्री ओमीलाल 'इलाहाबादी' कृत

उपन्यास	रु०पै०
१. कर्मक्षेत्र	३.५०
२. मुखिया	४.५०
३. मां की उदासी	१.५०
४. पति-पत्नी	३.५०
५. भाग्यहीन	३.५०
६. नेहरू का देश	२.५७
७. वोट किसे दें ?	२.५०
८. भारत में दुर्दशा	२.७५
९. शहीद	२.७५
१०. धर्मपत्नी	४.२५
११. अनुराधा	२.५०
१२. रानी बहू	४.५०
१३. एक विदेशी लड़की ...	२.७५
१४. ढाई गज का टुकड़ा ...	२.५०
१५. तीन चम्मच गंगाजल ...	४.५०
१६. एक थी सुनीता ...	४.००
१७. तुम उद्धार करो हम प्यार करें ...	३.००
१८. भारतीय नारी और समाज ...	२.५०
१९. अपना देश अपने दुश्मन ...	१.२५
२०. माता के हत्यारे भाग १ ...	५.००
२१. माता के हत्यारे भाग २ ...	५.००
२२. माता के हत्यारे भाग ३ ...	५.००

पंजाब के राज्यपाल

RAJ BHAVA
CHANDIGAR
दिनांक १३-१२-६

प्रिय ओमीलाल जी,

आपने "तुम उद्धार करो, हम प्यार करें" नाम की जो पुस्तक भेजी थी, वह मिल गई है। मैंने वह पढ़ी। मेरी दृष्टि से तुमने एक बहुत अच्छा काम किया है। नव पीढ़ी के लिए एक यह मार्ग दर्शक किताब होगी। मैं तुम्हारा अभिनन्दन करता हूँ।

भवदीय

ह० न. वि. गाडगिल

पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री

भारतरत्न श्री विधान चन्द्र राय

CHIEF MINISTER
WEST BENGAL

कलकत्ता ११ माघ १८८३ शक
३१ जनवरी, १९६२

श्री ओमीलाल 'इलाहाबादी' द्वारा लिखित 'वोट किसे दें' नामक पुस्तक देखने को मिली।

मेरा ख्याल है कि हिन्दी भाषी ग्रामीण जनता के लिए यह प्रयास उपयोगी सिद्ध होगा।

भवदीय

ह० विधान चन्द्र राय (स्वर्गीय)

श्री ओमीलाल 'इलाहाबादी' का पूरा साहित्य
भारतवर्ष के सभी मुख्य विक्रेताओं से प्राप्त कीजिए

राष्ट्र भाषा प्रचारक

७२ बी, जीरो रोड, इलाहाबाद-३

हिन्दी-समस्या

राजनीतिक पृष्ठभूमि के संदर्भ में

श्री रामतीर्थ भाटिया

संचालक, राजधानी ग्रन्थागार, नई दिल्ली

पुस्तक-व्यवसाय में अत्यधिक विख्यात भाटिया जी ने इस लेख में स्पष्ट कर दिया है कि अंग्रेजी तामिल, तेलुगु आदि सभी प्रान्तीय भारतीय भाषाओं का गला दबाए बैठी है—हमें विदेशी बनाम स्वदेशी की समस्या का समाधान करना है।

लेख की भाषा कुछ तीखी है परन्तु इसका लक्ष्य रचनात्मक है और पुस्तक-व्यवसाय को उस उत्तरदायित्व के प्रति सचेत करना है जो इस संदर्भ में उसके सामने है। —सं०

हमारे देश का दुर्भाग्य ! भाषा की समस्या भी राजनीति के कुचक्र में फँस गई वरन् भाषा नितांत इससे परे की वस्तु है। भाषा को सरस्वती का रूप माना जाता है और राजनीति को वेश्या। सती-साध्वी जब वेश्या के षड्यंत्रों के चंगुल में आ जाये तो निश्चय ही उसकी स्थिति दयनीय होगी। दक्षिण एवं बंगाल के हिन्दी-विरोधी आन्दोलन से एक बात और स्पष्ट हो गई, कि भोली-भाली जनता को चन्द स्वार्थी राजनीतिज्ञ किस तरह मोहरा बनाते हैं। यदि हम हिन्दी के समर्थक यह स्वीकार कर लें कि राजनीति की कूटनीतिज्ञता या हिन्दी बनाम अंग्रेजी के इस विचार-संघर्ष, (पहले शीत-युद्ध) में हम पराजित हो गये तो स्थिति को समझने में सुविधा रहेगी। हम हिन्दी समर्थकों में सरकार को पृथक् पक्ष मानते हैं क्योंकि हिन्दी संविधान द्वारा २६ जनवरी, १९६५ को राज्यभाषा का स्थान ग्रहण करने वाली थी किन्तु 'इस घर को आग लग गई घर के चिराग़ से' वाली मिसाल ठीक सिद्ध हुई और राष्ट्रीय एकता की गूंज के स्थान पर विघटन और अराष्ट्रीयता के स्वर सुनाई देने लगे।

जाती, भागती और दम तोड़ती दास्ता की इस विदेशी निशानी को फिर से बुलाने के लिए राष्ट्रीय सम्पत्ति का नुकसान ! हिन्दी साम्राज्यवाद के निराधार भय में अंग्रेजी साम्राज्यवाद स्वीकार है ! .... यह आश्चर्य-जनक परिवर्तन घृणा और पतन के चिह्न थे कि आज दक्षिण के तिलकधारी ब्राह्मण या अब्राह्मण को या बंगाल के धोतीपोश बंगाली को अपने देश की कोई भाषा संपर्क-भाषा बनने के लायक नज़र नहीं आई। उसमें साहस होता तो वह कहता हिन्दी नहीं बंगला और तामिल को राज्य-भाषा अथवा सम्पर्क भाषा बनाओ। .. तो हम निश्चय ही उसको अराष्ट्रीय कृत्य कहने का साहस नहीं करते। उसकी निष्ठा पर हमें भी गर्व होता। किन्तु जब धोतीपोश भी सम्पर्क-भाषा के लिए किसी बिहारी, उत्तरप्रदेशी, मध्य भारती, और राजस्थानी धोती-पोश की भाषा, एवं एक नाम, एक संस्कृति, एक परम्परा—सुख-दुःख में एक समान मरने-जीने वालों के साथ अपना रिश्ता न जोड़कर किसी विदेशी से अपना नाता जोड़ते हैं तो शंका और भय से मन डूब जाता है। प्रश्न उठता है कि यह देश में क्या हो रहा है, क्या कलकत्ता से पटना दूर है? बंगाल के आसनसोल से ३५ मील दूर वैद्यनाथधाम (बिहार) जहाँ हर रविवार, मंगल, एकादशी, पूर्णमाशी, अमावस, त्योहार, उत्सव मनाने हजारों-लाखों बंगाली जाते हैं। क्या भाषा का प्रश्न आते ही पटना वैद्यनाथधाम कोई अन्तरिक्ष का अदृश्य ग्रह बन जाता है और लन्दन, न्यूयार्क, कलकत्ता का कोई मोहल्ला? मद्रास और दक्षिण के महान् हिन्दू मन्दिरों की यात्रा को संस्कृति और एकता का सूत्र कहा जाता है किन्तु किसी स्वदेशी भाषा का नाम आते ही मद्रास से नागपुर और विजयवाड़ा से बम्बई तो सात समुन्दर पार और मान-चेस्टर और वाशिंगटन नजदीक के गाँव कैसे बन जाते हैं? रामास्वामी और सुनीतिकुमार चट्टोपाध्याय के लिए रामकृष्ण और सुनीतिकुमार चतुर्वेदी की भाषा तो बेगानी और पराई है। किन्तु वे भारत का वर्षों तक रक्तपान करने वाले, संसार में साम्राज्यवाद के द्योतक जार्ज एडवर्ड वायली और जलियाँ वाला बाग के जनरल डायर की भाषा के लिए अपने ही देशवासियों से लड़ने को तैयार हैं !

नारी रूप सरस्वती अथवा भारत माता की कोख से निकली हिन्दी भारती से द्वेष और गोरी मेम, जो आग लेने आई और घर की मालकिन बन बैठी थी—की

भाषा के लिए इतना अनुराग ! यह ऐसा प्रश्न था जिस पर हर भारतवासी को गम्भीर चिन्ता प्रकट करने के लिए बाध्य होना पड़ा ।

हिन्दी की राजनैतिक लड़ाई में जिस पराजय की चर्चा हमने की है सो ठीक है ! क्योंकि हमारे सत्ताधारी तो निरे भोलेबाबा ही सिद्ध हुए; वह तो साधारण सुलझी समस्याओं को भी स्वयं उलझाने का अवसर प्रदान करते हैं । विवादों को आमंत्रण देते हैं—आ बैल मुझे मार—हिन्दी के बारे में भी उनका विवेक इस गुत्थी को न सुलझा सके तो इसमें आश्चर्य करने से अधिक देशवासियों को अपने भाग्य पर रोना चाहिये ।

जैसा कि उल्लेख किया गया है झगड़ा अंग्रेजी बनाम सभी भारतीय भाषाओं में है । यदि अंग्रेजी भारत सरकार की फाइलों से नहीं जा सकती तो यह निश्चय है कि वह प्रादेशिक शासन में भी तामिल, तेलुगु इत्यादि प्रादेशिक भाषाओं का भी गला दबाए बैठी रहेगी । अतः विदेशी बनाम स्वदेशी का यह प्रश्न अखिल भारतीय है ।

यदि केन्द्रीय सरकार प्रादेशिक यानी मातृभाषाओं को ही पूरा स्थान उनके क्षेत्र में अंग्रेजी के स्थान पर देने का प्रयत्न करती तो हिन्दी के विरोधी और अंग्रेजी-भक्त जो मातृभाषाओं के स्वाभिमान की आड़ लेकर ही अंग्रेजी का समर्थन करते हैं वह अपनी जनता के समक्ष असली रूप में प्रकट हो जाते । यह वे लोग हैं जो कि संख्या की दृष्टि से २ प्रतिशत मात्र हैं । साधन-सम्पन्न—पूंजीपति या उच्च मध्यम वर्ग एवं अपने को बुद्धिजीवी भी कहते हैं । केवल मात्र हिन्दी प्रदेशों में ही यह वर्ग नहीं अपितु हिन्दी भाषी प्रान्तों में भी है जो अपनी संतानों को ऊँची शिक्षा दिलाकर बड़े पदों और अधिकार के स्थानों पर छाए हुए हैं । यह वर्ग विशेषतः दो सौ वर्ष की दासता के काल में ऐसा पैदा हो गया है जो शासन ही नहीं राजनैतिक एवं सार्वजनिक क्षेत्र में भी अंग्रेजी के प्रभाव के कारण व्यापार, न्याय आदि हर क्षेत्र में राजनीतिज्ञ विद्वान और पण्डित कहलाता है, वह अपनी इस मोनोपोली को छोड़ने को कदाचित् तैयार नहीं है और स्वराज्य का लाभ स्वदेशी प्रणाली से जनसाधारण तक भाषा के रूप में यहाँ की ९५ प्रतिशत जनता को वंचित रखना चाहता है । कहने का अभिप्राय

इतना ही है कि भाषा के इस विवाद का असली
अहिन्दी या हिन्दी भाषी प्रान्तों की जनता के स्वार्थों
का नहीं अपितु यह विशेष वर्ग है और लड़ाई का
राजनीति के इन महारथियों के स्वार्थों का है । भा
विवाद में कई प्रश्न और मुद्दे थे । राजनीतिक और
त्मक इसमें यह दो तथ्य—परिवर्तित चिन्ह (
प्वाइन्ट) थे स्वदेशी बनाम विदेशी एवं जनता
विशेष वर्ग । किन्तु हमारी सरकार या हम तथा
हिन्दी वालों ने भी इसका रहस्य नहीं समझा । यदि
हिन्दी को सम्पर्क या राज्यभाषा बनाना है तो
भाषी जनता को इस रहस्य से अवगत तथा
कराना चाहिए ।

प्रकाशकीय उत्तरदायित्व

हमें हर्ष है कि विरोधाभास के इस वातावरण में
कुछ मननशील व्यक्ति अहिन्दीभाषी क्षेत्रों में भी थे,
भी साहस के साथ स्थिति का सही मूल्यांकन किया कि
की एकता के लिए एक सम्पर्क भाषा जो अवश्यमेव
तीय भाषा हो, की आवश्यकता है । और यह एक
है कि वह केवल हिन्दी ही है । किन्तु इन समर्थकों ने
शंका प्रकट की कि हिन्दी आज के वैज्ञानिक युग—
नीकी शिक्षा इत्यादि और साहित्य में कई प्रां
भाषाओं की तुलना में भी समृद्ध नहीं अतः उसके
समय लगेगा ।

हम हिन्दी वाले इस प्रकार के स्वस्थ और रच
मतभेद से भयभीत नहीं हैं । मां नहीं तो मौसी ही
है । यह स्पर्धा और द्वेष की भी बात नहीं । यह एक
प्रतियोगिता मानते हैं । चुनौती भी नहीं और अब यह
वालों की परीक्षा, आत्मनिरीक्षण और सन्धान का
बन गया है कि द्वितीय युद्ध के दो दशक में
भाषाओं में से किस भाषा ने वैज्ञानिक और त
और साहित्य में कितनी प्रगति की है । हमारे
कारों और लेखकों का उत्तरदायित्व है कि
और नागरी पर आधारित हिन्दी की क्षमता का
करें । यह कार्य हिन्दी से सम्बन्धित सभी सरकारी
गैर सरकारी संस्थाओं एवं हिन्दीभाषी विश्वविद्याल
भी है और यह स्पष्ट है कि इस कार्य में प्रका
नाते हम लोगों को एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर

हिन्दी से द्रविड़ भाषाओं को कोई हानि न होगी

अंग्रेजी को थोपना जनतंत्र की शोभा नहीं

राजभाषा कानून में संशोधन अनावश्यक है

बम्बई हिन्दी विद्यापीठ के शिविर में मराठी विद्वानों के उद्‌गार

"सरकारी भाषा के प्रश्न को लेकर आज देश में विवाद छिड़ गया है। दक्षिण में हिन्दी का विरोध हो रहा है परन्तु मुझे विश्वास है कि आप जैसे हिन्दी के उपासकों और साधकों के प्रयत्नों से हिन्दी-विरोध की धारा क्षीण होगी और राष्ट्र भाषा का पूर्ण गौरव हिन्दी को प्राप्त होगा।"

नासिक शहर में बम्बई हिन्दी विद्यापीठ के महाराष्ट्र राज्य हिन्दी केन्द्र-संचालकों के शिविर का उद्‌घाटन करते हुए 'गांवकरी' पत्र के संपादक श्री दादासाहब पोतनीस ने उपर्युक्त विचार प्रकट किये। आपने आगे कहा कि आज जिन प्रदेशों में हिन्दी का विरोध हो रहा है, वहाँ उसके प्रचार से कोई हानि नहीं हुई है। हिन्दी के कारण द्रविड़ भाषाओं को क्षति पहुँचेगी इसमें तो कोई तथ्य गोचर नहीं होता है। वस्तुतः मराठी, गुजराती भाषाओं को इस प्रकार का डर स्वाभाविक है। परन्तु महाराष्ट्र, गुजरात ने एकता तथा राष्ट्रीय एकता के लिए हिन्दी में प्रगाढ़ निष्ठा रखी है।

विद्यापीठ के परीक्षाध्यक्ष डा० मो० दि० पराडकर ने राष्ट्रभाषा की समस्याओं पर विस्तृत विवेचन किया। अपने भाषण में उन्होंने बताया कि हिन्दी की समस्या के समाधान के लिए महाराष्ट्र को सक्रिय योगदान करना होगा। महाराष्ट्र के प्रयत्न ही उत्तर-दक्षिण का भेद मिटाने में सहायक हो सकते हैं। आपने आगे कहा :

स्वतन्त्रता के संग्राम में भारतीयों को एक मंच पर ले जाने के महत्त्वपूर्ण कार्य में राष्ट्रभाषा हिन्दी ने बड़ा अनमोल सहयोग दिया है। स्वदेश, स्वधर्म एवं स्वभाषा तीनों की महिमा किसी से छिपी नहीं है। स्वतन्त्रता की प्राप्ति के बाद हम पर स्वाभाविक रूप से इन तीनों की सुरक्षा की बड़ी जिम्मेदारी आई है; कई समस्याएँ हमारे सामने मुँह बाये खड़ी हैं। पहली बात है हमारी शासन-प्रणाली को सच्चे अर्थों में प्रजातन्त्र का रूप प्रदान करना। अचरज की बात तो यह है कि अब तक हमारा राजकीय एवं आन्तरराज्यीय व्यवहार अंग्रेजी के, एक विदेशी भाषा के सहारे ही संपन्न हो रहा है। माना कि वह भाषा बड़ी संपन्न है, बड़ी समर्थ है, लेकिन उसी के आतंक में रहना कहाँ तक उचित है? प्रतीत होता है कि गत डेढ़ सौ वर्षों की गुलामी ने हमारे मनों को अब तक जकड़े रखा है। अंग्रेजी हमारे दिमागों में कुछ इस तरह घुसी हुई है कि वह हम में से कतिपय लोगों को भारतीय भाषा प्रतीत होने लगी है।

मुट्ठी भर लोगों के स्वार्थों की रक्षा के लिए कोटि-कोटि जनता को शासन में सम्मिलित होने से वंचित रखना क्या अपने अधिकारों की रक्षा के लिए जनता की आँखों में धूल डालना नहीं है? सच बात तो यह है कि जब तक हम शासन से सम्बन्धित सभी व्यवहारों में भारतीय भाषाओं को स्थान नहीं देते तब तक हम चाहे व्याख्यानों में जनता के राज्य की दुहाई भले ही दें; सच्चे अर्थों में जनता का राज्य कभी स्थापित नहीं हो सकता।

२६ जनवरी १९६५ को अधिकृत रूप से हिन्दी को केन्द्र की राजभाषा घोषित करके सरकार ने वास्तव में कोई नया रुख नहीं अपनाया है। काफ़ी विचार-विमर्श करने के बाद हिन्दी को भारत की भारती मानने का निर्णय लिया गया था। अहिंदी-भाषी राज्यों के निवासियों की कठिनाइयों को समझते हुए अंग्रेजी को सहभाषा का स्थान भी प्रदान किया गया था। ऐसी अवस्था में २६ जनवरी की घोषणा के बाद मद्रास राज्य में जो हंगामा मचाया गया उसे समर्थनीय कैसे माना जा सकता है? स्पष्ट है कि वह विध्वंसात्मक आंदोलन अंग्रेजी को कायम रखने के उद्देश्य से किया गया। इसी से साफ़ जाहिर है कि उसे जनता का आंदोलन मानना बड़ी गलतफहमी है। "तामिल बचाओ" की आड़ में अंग्रेजी का समर्थन वह बेहूदी बात है जो जन-मानस में घर नहीं कर सकती। हाँ, अपना स्थान बनाये रखने के लिए राजनीतिज्ञों की एक चाल

जरूर हो सकती है । इस आंदोलन में अराष्ट्रीय तत्वों का ही प्रधान रूप से हाथ रहा है । ऐसी दशा में राजभाषा कानून में संशोधन की आवश्यकता को मंजूर करना वास्तव में अराष्ट्रीयता के साथ-साथ दक्षिण एवं उत्तर में भेद-भाव पैदा करने वाली अन्यायपूर्ण नीति को कुचलने के बदले उसके सामने झुकने के समान है जो हमें कभी नहीं करना चाहिए । कानून में संशोधन करने की बात का सबसे बड़ा विरोध करने की आवश्यकता इसलिए भी है कि उससे हिंदी समझने एवं बोलने वाली अधिकांश भारतीय जनता की भावनाओं पर कुठाराघात होगा । अंग्रेजी के कतिपय हिमायतियों के लिए भारत के असंख्यक निवासियों पर सदा के लिए अंग्रेजी थोपना क्या जनतंत्र शासन के लिए शोभा देगा ?

अब रही बात हमारी अन्य भारतीय भाषाओं के विकास की । क्या बंगला, क्या मराठी, क्या गुजराती, क्या तामिल, क्या तेलगू, क्या कन्नड ये सभी हिन्दी के कारण अवरुद्ध होंगी ? बम्बई हिन्दी-विद्यापीठ इस सम्बन्ध में अपना यह मंतव्य स्पष्ट करना चाहती है कि हिन्दी का हमारी भारतीय भाषाओं से कोई विरोध नहीं है । असल में हमारा विश्वास है कि उनके सहयोग को पाकर ही हिन्दी पनप सकेगी । इन राज्यों में राजकीय भाषाएँ समूची शिक्षा का माध्यम रहेंगी । हाँ, आज जिस प्रकार अंग्रेजी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती है उस प्रकार भविष्य में हिंदी को अनिवार्य स्थान प्रदान करना पड़ेगा । हरेक शिक्षित व्यक्ति को भविष्य में कम-से-कम द्विभाषिक बनाना पड़ेगा; जनभाषा के साथ-साथ राजभाषा हिंदी पर भी अधिकार प्राप्त करने की उसे नितान्त आवश्यकता होगी । हाँ, अंग्रेजी से मुँह मोड़ने की बात मैं नहीं कहता; उसका अध्ययन जरूर किया जाय लेकिन उसके द्वारा शिक्षा प्राप्त करने की बात जितनी जल्द हम छोड़ दें उतना हमारे लिए अच्छा है । इसके बाद कोई व्यक्ति अगर अन्य भाषा पर अधिकार प्राप्त करना चाहे तो उसे कौन रोक सकता है ? ज्ञान के क्षेत्र में भौगोलिक भेदों को स्वतंत्र भारत में महत्त्व भला कैसे मिल पाएगा ? सच बात तो यह है कि शास्त्रों एवं विज्ञानों की प्रगति के इस युग में परले सिरे का ज्ञान प्राप्त करने का इच्छुक व्यक्ति भाषा के कारण रुक नहीं सकता; वहाँ तो अंग्रेजी भी अधूरी मालूम होगी । दर्शन, साहित्य, आदि में प्रमुखता प्राप्त करने के लिए आज जर्म फ्रांसीसी भाषा का अध्ययन करना अनिवार्य हो अणुबम तथा विज्ञान के कतिपय क्षेत्रों में तो रूसी एवं चीनी भाषाओं ने जो स्पृहणीय प्रगति उनसे भी परिचय प्राप्त करना पड़ेगा । मतलब साधना के सरस्वती के प्रसन्न होने की आशा नहीं सकती ।

राष्ट्रभाषा की समस्या को सुलझाने में का बड़ा ही महत्त्वपूर्ण स्थान रहेगा । अनादि काल से राष्ट्र उत्तर एवं दक्षिण का मिलन-स्थान रहा है । की यह मानी हुई भूमि है । उत्तर से आने वाले साम्राज्यवाद की आशंका को निर्मूल सिद्ध करने दक्षिण से प्रकट होने वाले हिंदी के अविवेकपूर्ण विरो तीव्रता को कम करने की दुहरी जिम्मेदारी हमारे है । हमें एक ओर संस्कृति के सब विज्ञान-ज्ञान हिंदी कर हिंदी को सम्पन्न बनाने का बीड़ा उठाना चाहि दूसरी ओर राजभाषा हिंदी के विरोध को अपने सा पूर्ण दृष्टिकोण के बल पर जीत लेने की चेष्टा में निरत चाहिये । यह निश्चित मानिए कि अहिंदी-भाषी ज हिंदी को संपन्न बनाने की नहीं सोचते; तब त शत-प्रतिशत राष्ट्रभाषा नहीं बनेगी और हिंदी का करने वालों को हिन्दी की ओर उन्मुख करना यह ही का काम है—प्रचारकों एवं शिक्षकों का काम ही उसे कर सकते हैं; हिंदी-भाषी नहीं । आशा है लोग बड़ी श्रद्धा एवं लगन के साथ इसे अपनाएँ स्वतन्त्र भारत को सच्चे अर्थों में जनतंत्र-शासन का प्रदान करने में अनमोल सहयोग देकर भविष्य के लि बनाने का गौरव प्राप्त करेंगे ।

विद्यापीठ के प्रधान मंत्री श्री ओमनारायण ने बताया कि राष्ट्रभाषा के प्रचार का कार्य एक शैं व राष्ट्रीय कार्य है । और इसको प्रेरणा देने वाले के महान नेतागण ही थे । हम अपने उन स्वाधीनता सेनानियों को नहीं भूल सकते जिन्होंने अंग्रेजी दास अपदस्थ करने के लिए अंग्रेजी का मोह छोड़ दिया था हिंदी का समर्थन किया था । हिंदी का आज का विवाद

ठोस सुलझी हुई विचारधारा नहीं है—बल्कि भ्रामक राजनीति का कुपरिणाम है।

प्रसार मंत्री बालकृष्ण भोंसले ने अपने भाषण में हिंदी प्रचार-संस्थाओं को एक हृदय होने का अनुरोध किया। आपने कहा कि हमारे राष्ट्रीय आदर्शों का उत्कर्षापकर्ष हमारी शिक्षा और हमारे संस्कारों पर निर्भर करता है। विदेशी भाषा चाहे कितनी ही संपन्न क्यों न हो, वह भारतीय जनता की आत्मा की अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं बन सकती। राष्ट्रीय भाषा ही हमारे विचार, उच्चार और आचार की वाहक बन सकती है। राष्ट्रभाषा के प्रचार में विशुद्ध देशप्रेम एवं राष्ट्रीय वृत्ति के परिपोष की भावना होनी चाहिये। एकहृदयता ही राष्ट्रभाषा के प्रचार की आत्मा है और किसी भी दशा में चाहे उसके लिए कितना भी मूल्य चुकाना क्यों न पड़े, हमें इस भावना को अक्षुण्ण बनाये रखना है।

सर्वोत्तम प्रकाशित हिन्दी पुस्तक : 'रणभेरी'

भाषा विभाग पंजाब ने वर्ष १९६३-६४ के मध्य प्रकाशित हिंदी पुस्तकों में 'रणभेरी' को सर्वोत्तम प्रकाशित पुस्तक घोषित किया है। चीनी आक्रमण की वेला में लिखित १२० प्रतिनिधि युद्ध गीतों का यह संग्रह स्वर्गीय श्री जवाहर लाल नेहरू को उनकी ७४वीं वर्षगांठ पर पंजाब के विशेष उपहार के रूप में भेंट किया गया था। दिग्गजों द्वारा प्रशंसित इस संग्रह में बीसियों इकरंगे और बहुरंगे चित्र हैं जो नेफा और लद्दाखके रणक्षेत्रों के जीवित-जागृत दृश्य उपस्थित करते हैं।

अढ़ाई सौ से अधिक पृष्ठों का यह संकलन इस बात का साक्षी है कि भारतीय साहित्यकार वैदिक काल से ही इस सत्य को भलीभाँति पहचाने हुए हैं कि स्वतन्त्रता-सुन्दरी वीरभोग्या है, और यह स्वयंवरा उसी का वरण करती है जो साम गायन को ही नहीं हुंकृतियों को भी कण्ठ में धारण कर सकता है।

बिहार में प्राथमिक और मिडिल स्कूल

बिहार में १९४६-४७ में प्राथमिक स्कूलों की संख्या २० हजार थी, जो १९६०-६१ में बढ़कर लगभग दो गुनी हो गई। १९५०-५१ में मिडिल स्कूलों की संख्या ३,२८९ थी,जो १९५८-५९ में बढ़कर ४,०६१ हो गई। इस समय लगभग ५ हजार मिडिल स्कूल हैं।

पुस्तकालयों के लिए उपयोगी पुस्तकें

कहानी-साहित्य

नेफा और लद्दाख के साहसी वीरों की गाथाएँ —रतूड़ी २.५०

भारत के साहसी वीरों की गाथाएँ —धर्मपाल शास्त्री २.५०

संसार की तेरह श्रेष्ठ कहानियाँ —गोपाल शेखरन ३.००

उर्दू की तेरह श्रेष्ठ कहानियाँ—सं० रमेश गौड़ ४.५०

शेक्सपियर के नाटकों की कथाएँ (दो भाग) ११.००

गौरवमय भारत (दो भाग) १०.२५

ज्ञान-विज्ञान

हमारा आकाश —छोटू भाई सुथार ४.५०

हमारा समुद्र —भगीरथ ३.००

आलोचना-साहित्य

गबन एक विवेचन —प्रो० बलदेवकृष्ण २.५०

नाटक-साहित्य

नेफा की एक शाम —ज्ञानदेव अग्निहोत्री

स्वर्ग के खण्डहर —विनोद रस्तोगी

उपन्यास-साहित्य

भग्नाश —गुरुदत्त

विद्यादान „

भाग्यरेखा „

सभ्यता की ओर „

सन्तुलन-असन्तुलन —मनहर चौहान

रात खो गई „

हिरना सांवरी „

आकाश तले धरती पर —उमा शंकर

संगम या विद्रोह —यशोविमलानन्द

कांच और कंचन —शरण

किशोर उपन्यास-माला

तरुणों के लिए प्रेरणादायी

प्रत्येक का मूल्य दो रुपये

खूब लड़ी मर्दानी	शान्तिदूत नेहरू	जूलियस सीज़र
हल्दी घाटी	ऋषि का शाप	राई से पहाड़
जय भवानी	देवता हार गये	राजा लियर
चितौड़गढ़ की रानी	संत कबीर	हैमलेट
गढ़मण्डल की रानी	मीरां बावरी	मैकबेथ
बाजीराव पेशवा	गुरु नानक देव	तूफान
वीर कुँवरसिंह	गुरु अंगद देव	मगरमच्छ का शि
अर्जुन	गुरु अमरदास	बाघ का शिकार
कर्ण	सम्राट् अशोक	रूपा और लल्ली
भीष्म	गौतम बुद्ध	पूपू
वीर कुणाल	रवि बाबू	सम्राट शिलादित्य
दुर्गादास		चन्द्रगुप्त विक्रमादि



उमेश प्रकाशन

५, नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली-६

सम्पादक के नाम पत्र

नवीन जी को पाठ्य-क्रम में स्थान दिया जाय

२६ अप्रैल राष्ट्रीय आन्दोलन के अपराजेय सेनानी, राष्ट्रभाषा के दधीचि और हिंदी के मूर्धन्य कवि स्व० बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की पंचम पुण्य-तिथि थी। उन्होंने राष्ट्र-भारती के लिए अपना सर्वस्व दे डाला था। उनका समूचा काव्य-साहित्य प्रकाशित होकर आ चुका है। उन्होंने एक महाकाव्य, एक खण्डकाव्य और छः काव्य-संग्रहों का सृजन किया। वे राष्ट्रीय-काव्य के पुरस्कर्त्ता, प्रेम-काव्य के निर्माता, दार्शनिक काव्य और मृत्यु-गीतों के प्रणेता एवं राम-काव्य-परम्परा के युगान्तरकारी कवि के रूप में हमारे समक्ष आते हैं। 'नवीन' जी के निधनोपरान्त प्रकाशित नवीनतम काव्य-कृति 'हम विषपायी जनम के' में उनकी सम्पूर्ण अप्रकाशित कविताओं के छः संग्रह संकलित और समाहित हो चुके हैं। उनका गद्य-साहित्य भी संगृहीत रूप में प्रकाशित होने वाला है। खेद है कि 'नवीन' जी को अभी तक पाठ्य-क्रम में स्थान नहीं दिया गया है। उनके पाठ्य-ग्रंथों में सम्मिलित न किये जाने से हमारी तरुण पीढ़ी हिन्दी के ओजस्वी और श्रेष्ठ कवि के अध्ययन-मनन से वंचित रह गई है। विद्यालयों के काव्य-संकलनों में उनकी कविताओं को स्थान दिया जाना चाहिये। 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन', माध्यमिक शिक्षा प्रमण्डलों और अन्य परीक्षा-परिषदों की परीक्षाओं के विविध काव्य-संग्रहों में उनको सम्मिलित किया जाय। विश्वविद्यालयों के बी० ए० तक के हिन्दी काव्य एवं निबंध-संकलनों में उनको भी पढ़ाने का प्रबन्ध किया जाय। 'आधुनिक हिन्दी काव्य' प्रश्न-पत्र के अन्तर्गत उनकी 'उर्मिला', 'प्राणार्पण', 'हम विषपायी जनम के' आदि अथवा उनके कतिपय सर्ग एवं अंशों को रखा जा सकता है। 'साहित्यरत्न', एम० ए० और इसी प्रकार की उच्च-स्तरीय परीक्षाओं के 'विशेष कवि' (स्पेशल पोएट) के अन्तर्गत 'नवीन' जी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था की जा सकती है। आशा है, इस दिशा में, हमारे शिक्षाधिकारियों, प्रमण्डल और 'सम्मेलन' के पदाधिकारियों, परीक्षा एवं हिन्दी अध्ययन-समितियों के संयोजकों, विश्वविद्यालयों के हिन्दी विभागाध्यक्षों और 'नवीन' जी के स्नेहियों का विशेष तौर पर ध्यान जावेगा। कविवर 'नवीन' की स्मृति-रक्षा और उन्हें साहित्यिक श्रद्धांजलि अर्पित करने का यही स्थायी और वास्तविक मार्ग है।

डा० लक्ष्मीनारायण दुबे
एम० ए०, पी-एच० डी०, 'साहित्यरत्न'
सागर विश्वविद्यालय, सागर (म० प्र०)

१९६४ का परिचय विशेषांक

प्रिय महोदय,

'हिन्दी प्रकाशक' का १९६४ की हिन्दी पुस्तकों का परिचय विशेषांक मिला। धन्यवाद। विशेषांक अच्छा है, काफी परिश्रम आपने किया है। प्रकाशक संघ को भी इस महत्त्व के प्रकाशन के लिए प्रकाशकों का सहयोग नहीं मिल सका यह सचमुच खेद कि बात ही कही जायगी। इस संबंध में मेरा सुझाव है कि यदि प्रकाशकगण संघ को विशेषांक के लिए अपना प्रकाशन न भेजें तो संघ को चाहिए कि ऐसे प्रकाशनों का उल्लेख तक न करे, यही सबसे बढ़िया मार्ग है। जिससे यदि प्रकाशक अपना प्रचरा चाहें तो उन्हें आपको विवश होकर सहयोग देना ही होगा।

एक बात और पुस्तकों के विवरण में पृष्ठ-संख्या, आकार, सजिल्द या अजिल्द और सचित्र है तो उसका उल्लेख और प्रथम संस्करण के अतिरिक्त संस्करण हो तो उसका भी उल्लेख होना चाहिए।

पुस्तक के परिचय में भी कुछ अनावश्यक बातें आई हैं उसे टाला जा सकता है। जिससे स्थान की बचत भी होगी।

मैंने भी हिन्दी समाचारपत्रों की सूची १८२६ से १९२५ तक की प्रकाशित की थी अतः भुक्तभोगी हूँ।

बंकट लाल ओझा
मन्त्री, हिन्दी समाचार पत्र संग्रहालय, हैदराबाद

प्रस्तुत पाण्डुलिपियाँ

प्रिय सम्पादक जी,

आपकी लोकप्रिय एवं प्रकाशन विषयक मासिक पत्रिका 'हिन्दी प्रकाशक' प्रकाशक एवं लेखकों के मध्य एक महत्त्वपूर्ण कड़ी बनकर प्रकाशन-क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण सेवा कर रही है। साथ ही नवीनतम हिन्दी प्रकाशनों की प्रगति एवं भावी प्रकाशनों से अवगत कराने वाले मासिकों में आपकी उक्त पत्रिका का स्थान सदा से ऊँचा रहा है। और यही कारण है कि मैं उसे सदा चाव से पढ़ती रहती हूँ। इस उपयोगी प्रकाशन के लिए आप मेरी बधाई लें।

इस समय मेरे पास हिन्दी की विविध लोकप्रिय एवं श्रेष्ठ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री से सम्पन्न निम्न-लिखित पुस्तकों की पाण्डुलिपियां तैयार हैं :

१. **हम देश के हैं**—चीनी आक्रमण पर आधारित राष्ट्रीय एवं सामाजिक कहानियों का संग्रह।

२. **फूलों की गंध और उदास मन**—आधुनिक जीवन के अछूते प्रसंगों पर आधारित नई कहानियों का संग्रह।

३. विविधा—विविध साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक लेखों का संचयन।

४. **साहित्यश्री**—हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवियों से सम्बद्ध संदर्भ ग्रंथ।

५. **बघेलखण्ड के लोकगीत**—आदिवासी जीवन से सम्बद्ध प्रतिनिधि एवं अप्राप्य लोकगीतों का विवेचनात्मक संकलन।

६. **स्वस्थ जीवन की कला**—स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सम्बन्धी नवीनतम एवं वैज्ञानिक परीक्षणों के निष्कर्षों से युक्त अपूर्व संकलन।

७. **तम्बाकू, धूम्रपान और नये परीक्षण**—विश्व के प्रगतिशील देशों में सम्पन्न आधुनिक परीक्षणों के ठोस और चिन्ताजनक निष्कर्षों पर आधारित स्वास्थ्य प्रेमियों की मार्गदर्शिका।

८. **नये नमूने काढ़िये**—प्रगतिशील नारियों के लिए साज-सज्जा की नूतन दिशा में नई कढ़ाई के नमूनों का सुरुचिपूर्ण संकलन।

९. सरस व्यंजन—भोजनको सुस्वादपूर्ण एवं स्वा... प्रद बनाने की नई विधियाँ।

१०. तीसरा अध्याय—पारिवारिक जीवन पर आ...रित नई उपन्यासिका।

कुन्तल गोयल, एम...
द्वारा प्रो० उत्तमचन्द्र...
गवर्नमेंट डिग्री कालेज, सीधी (मध्य...)

सर्वोत्तम साधन

मान्यवर महोदय,

आपकी ओर से प्रकाशित 'हिन्दी प्रकाशक' क... कभी देखने को मिल जाता है। अपने इस सुन्दर प्र... के लिए हमारा अभिनन्दन स्वीकार करें। अहिन्दी... प्रदेशों में तो नवीनतम हिन्दी साहित्य की सूचना... वाला यही सर्वोत्तम पत्र है।

डा० अरविन्द कुमार ...
१७ महादेवनगर सोसा...
सगरामपरा, सूर...

संदभ
सभी
विव

की हि

हिन्दी-साहित्य में प्रथम बार

हिन्दी में आलोचनात्मक साहित्य

(अपने ढंग का अनूठा संदर्भ ग्रन्थ)

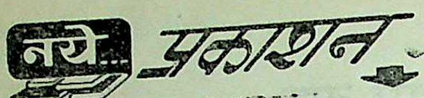
जौलाई १९६५ तक प्रकाशित हिन्दी में आलोचनात्मक साहित्य की एक संदर्भ पुस्तक निकालना चाहते हैं। इस ग्रंथ में सभी प्रकाशनों के समावेश हेतु सभी प्रकाशकों से अनुरोध है कि वे अपनी आलोचनात्मक पुस्तकों का निम्नलिखित विवरण ३० जून, १९६५ तक भेजकर कृतार्थ करें।

१. पुस्तक का नाम
२. लेखक का नाम
३. विषय (केवल एक पंक्ति में)
४. मूल्य
५. साइज
६. संस्करण एवं वर्ष

यदि प्रकाशक-बन्धु (१८×२२=८) एक पंक्ति से अधिक किसी भी आलोचनात्मक पुस्तक की विशेषता छपवाना चाहें तो प्रति पंक्ति एक रुपया शुल्क पुस्तक-परिचय के साथ भेजने का कष्ट करें।



सूर्य-प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली-६



- **आधुनिक हिन्दी कविता में चित्र-विधान :** डा० रामयतनसिंह 'भ्रमर'

  नागपुर विश्वविद्यालय का शोध-प्रबंध । भारतेन्दु-युग से नई कविता तक में उभरे चित्रों का सरस एवं मार्मिक विवेचन ।

- **सुल्तान और निहाल दे :** लक्ष्मीनिवास बिरला ५.००

  राजस्थान की अत्यन्त लोकप्रिय दंतकथा का मोहक और शौर्यपूर्ण उपाख्यान ।

- **निर्झरिणी और पत्थर :** निर्मला दर ५.००

  एक अद्भुत उपन्यास जिसके प्रत्येक मोड़ पर एक नई जिज्ञासा उठती है, एक नई बेचैनी जागती है ।

- **एक कटी हुई जिंदगी :**

  एक कटा हुआ कागज : लक्ष्मीकांत वर्मा ४.५०

  क्लास और मास को समान रूप से संतुष्ट करने वाला सर्वथा नई टेकनीक का निराला उपन्यास ।

- **बिखरते साये :** डा० जयनाथ नलिन ४.००

  उदास पाठक को भी गुदगुदाने वाले हास्य-व्यंग-पूर्ण २५ शब्दचित्र ।

- **डा० मोर्यो का द्वीप :**

  एच० जी० वेल्स के अमर उपन्यास का रोचक अनुवाद ।

नेशनल पब्लिशिंग हाउस

चन्द्रलोक, जवाहर नगर, दिल्ली

फोन २२५७४२



नये प्रकाशन

साहित्य-समालोचना

चिंतामणि विवेचन (द्वितीय भाग) : ले० प्रो० देशराजसिंह भाटी, प्र० अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली; पृ० २४०; मू० ४.५० ।

तुलसी साहित्य दर्शन : सं० शिवशंकर मिश्र; प्र० प्रभात पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ; सा० रा०, पृ० १९२, मू० ४.०० । निबंध ।

मगही व्याकरण कोश : ले० डा० सम्पत्ति अर्याणी; प्र० हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली; सा० रा०, पृ० २१२; मू० ७.५० । शोध प्रबंध ।

विद्यापति पदावली सटीक : ले० प्रो० कृष्णदेव शर्मा; प्र० अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली; पृ० ४२४; मू० ५.०० । पु० मु० ।

रस, छन्द, अलंकार : ले० प्र० पूर्वोक्त; पृ० १३८; मू० १.५० ।

साहित्य चिंतन : ले० डा० रामकुमार वर्मा; प्र० किताब महल प्रा० लि० इलाहाबाद; सा० डि०, पृ०२५०; मू० ६.५० । निबंध ।

साहित्यालोचन : ले० प्रो० विजयकुमार; प्र० अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली; सा० क्रा०; पृ० २५४; मू० ३.०० ।

संस्कृत भाषा : ले० टी० बरो, अनु० भोलाशंकर व्यास; प्र० चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी ।

हिन्दी साहित्य का इतिहास : ले० सिद्धेश; प्र० आदर्श पुस्तक भंडार, कलकत्ता; सा० डि०; पृ० २५०; मू० ५.०० ।

उपन्यास

कर्तव्य और प्रेम : ले० रमेश शुक्ल; प्र० प्रभात पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ; पृ० १५२; मू० ३.०० ।

प्रश्न : ले० सर्वदानन्द वर्मा; प्र० पूर्वोक्त; पृ० २३२; मू० ३.५० ।

नाटक

रामानुज : ले० डा० रांगेय राघव; प्र० किताब महल प्रा०लि० इलाहाबाद; सा०क्रा०, पृ० १७२; मू० ३.००; पु० मु० ।

कांटा दामन फूल :

मार्डन बीबी :

हिमालय ने पुकारा : ले० सतीश डे; प्र० देहाती पुस्तक भंडार, दिल्ली; सा०क्रा० ८; पृ० क्र० ८४, १२४, ८८; मू० क्र० १.५०, १.५०, २.५० ।

आंगन के फूल :

गूँज उठी रण भेरी :

झांसी की रानी :

धरती हरी भरी :

पथ का प्रकाश :

पानी का घेरा

मिल जुल कर काम करें : ले० शिवशंकर मिश्र; प्र० प्रभात पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ; मू० क्र० १.२५, १.२५, १.००, १.२५, ०.९०, १.२५ ।

हर घर किला हर गाँव राजधानी : ले० उमेश; प्र० पूर्वोक्त, मू० १.२५ ।

राजनीति

दिमागी गुलामी : ले० राहुल सांकृत्यायन; प्र० किताब महल प्रा० लि०, इलाहाबाद; सा० क्रा०, पृ० ८६ मू० १.५० । पु० मु० ।

मेरी कहानी : ले० जवाहरलाल नेहरू; प्र० सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; सा० क्रा०; पृ० ८६४; मू० १२.०० । पु० मु० ।

रचनात्मक राजनीति : सं० रामकृष्ण बजाज; प्र० सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; सा० क्रा० ८; पृ० २२५; मू० ४.०० ।

विश्व इतिहास की झलक : (संक्षिप्त)

हिन्दुस्तान की कहानी : (संक्षिप्त) ले० जवाहरलाल नेहरू; प्र० सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; सा० क्रा० ८; पृ० ४९८, २९०; मू० ८.००; ३.५० । पु० मु० ।

बाल साहित्य

गायें देशप्रेम के गीत : ले० दुर्गाशंकर त्रिपाठी, प्र० अरविंद प्रकाशन गृह अटरू, (राजस्थान); पृ० ३२, मू० ०.७० ।

चाचा नेहरू जिन्दाबाद : सं० शिवनारायण सक्सेना, कृष्णचन्द्र विजय; प्र० पूर्वोक्त; पृ० ३२, मू० ०.७० ।

नेहरूजी की पुण्यात्मा की आवाज : सं० श्रीमती विद्यावती खन्ना; प्र० विद्यासागर बुकडिपो, कल्याणी, मुजफ्फरपुर; सा० क्रा० ८; पृ० ३२; मू. ०.६० । प्रसिद्ध कवियों के हृदयोद्गार ।

बालवीरों के खेल : ले० शिवकुमार मिश्र; प्र० प्रभात पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ, मू० १.२५ ।

संपूर्ण रामायण : ले० उदय खन्ना; प्र० विद्यासागर बुकडिपो कल्याणी, मुजफ्फरपुर; सा० क्रा० ८; पृ० ३२; मू० १.०० । कविता में ।

हम सब एक हैं : ले० मनोहर वर्मा; प्र० प्रभात पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ; मू० १.२५ ।

चिकित्सा

एलोपैथिक पेटेंट चिकित्सा नवनीत : ले० डा० हरनारायण कोकचा; प्र० साधना प्रकाशन, १३ रोहतक रोड, नई दिल्ली; पृ० ६१६; मू० ८ डाक्टरी का ज्ञानकोश ।

तुलसी के गुण उपयोग : ले० पूर्वोक्त; प्र० दे पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; सा० क्रा पृ० २२४; मू० ३.०० ।

औद्योगिक-टेकनिकल

आल्टरनेटिंग करेंट :

मशीनिस्ट लाइनमैन वायर मैन गाइड : ले० नरेन्द्रनाथ, प्र० देहाती पुस्तक भंडार, दि मू० प्रत्येक २५.५० ।

प्रैक्टिकल ट्रांजिस्टर सरकिट :

लोकल ट्रांजिस्टर रि० : ले० आर० सी० प्र० देहाती पुस्तक भंडार, दिल्ली; मू० क्र० ८.२५ ।

रमाल स्केल इन्डस्ट्रीज : ले० कालीचरण प्र० पूर्वोक्त; सा० क्रा० ८; पृ० १०२४; मू० १

शैक्षणिक

गणित शिक्षण : ले० जे० पी० पाण्डेय; प्र० महल प्रा० लि०, इलाहाबाद; सा० क्रा०, पृ० मू० ३.०० ।

हिन्दी इंगलिश बोलचाल :

हिन्दी इंगलिश लेटर राइटिंग :

हिन्दी इंगलिश ग्रामर : ले० रत्न प्रकाश शी देहाती पुस्तक भंडार, दिल्ली; मू० प्रत्येक ३.०० ।

विविध

अशोक निबंध-सागर : ले० प्रो० विजय, शर्मा; प्र० अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली; पृ० मू. ५.०० । पु० मु० ।

एनीमल हसबैंडरी : ले० विष्णु कविरत्न; प्र० पुस्तक भंडार, दिल्ली; मू० २५.५० ।

जीवन और शिक्षण : ले० विनोबा; प्र० सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; सा० क्रा०, पृ० २५०, मू० २.५०। निबंध।

धूल का महत्व : ले० इरविंग एलडर; प्र० किताब महल प्रा० लि०, इलाहाबाद; सा० क्रा०, पृ० ९६; मू० २.५०।

प्राचीन ब्रह्मज्ञान भजनमाला : रामस्नेही दीक्षित; प्र० देहाती पुस्तक भंडार, दिल्ली; पृ० ५१२; मू० ४.५०।

फलों की खेती : ले० ना० दु० व्यास; प्र० सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; सा० क्रा०; पृ० २५०; मू० ३.५०। कृषि।

मुद्राराक्षस : ठाकुरदत्त मिश्र; प्र० किताब महल प्रा० लि० इलाहाबाद; सा० डि०, पृ० ६४, मू० १.५०।

रामायण कालीन संस्कृति : ले० शांतिकुमार नानूराम व्यास; प्र० सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; सा० क्रा०; पृ० ३३६, मू० ६.००। पु० मु०।

वात्स्यायन कामसूत्र : अत्रिदेव; प्र० देहाती पुस्तक भंडार, दिल्ली; मू० ५.००।

सहकार आंदोलन क्यों ? : ले० गौरीशंकर भारतीय; प्र० किताब महल प्रा० लि० इलाहाबाद; सा० डि०; पृ० २५०; मू० ४.००।

साहित्यिक निबंध : डा० मनमोहन शर्मा; प्र० कृष्णा ब्रदर्स अजमेर; सा० डि०; पृ० ३६६; मू० १२.६५।

संस्कृति की धरोहर : ले० डा० रामचरण महेन्द्र; प्र० अरविन्द प्रकाशन गृह, अटरू (राजस्थान); पृ० ८८, मू० १.५०; सजिल्द २.५०।

हिन्दी ब्रह्मसूत्र शांकर भाष्य : व्या० स्वामी हनुमानदास षटशास्त्री; प्र० चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी; मू० १२.००। प्रथम भाग।

आवश्यकता है

अनुभवी टूरिंग सेल्समैनों की

जो हमारी
अंग्रेजी तथा हिन्दी की
पाठ्य-पुस्तकों तथा जनरल पुस्तकों का
भारी मात्रा में
विक्रय तथा प्रचार कर सकें

●

- पुस्तक-व्यवसाय में कम-से-कम पाँच वर्ष का अनुभव
- हिन्दी-अंग्रेजी भाषा का समुचित ज्ञान
- विक्रय की गारन्टी तथा व्यक्तिगत जमानत देने में समर्थ व्यक्ति ही आवेदन-पत्र भेजें

●

वेतन योग्यतानुसार तथा विक्रय पर कमीशन

●

सम्पर्क स्थापित करें :—

आत्माराम एण्ड संस

पोस्ट बॉक्स १४२६, काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

सूचना सार

नवपठित-साहित्य की चौथी प्रतियोगिता

केन्द्रिय शिक्षा मंत्रालय ने यूनस्को की सहायता से होने वाली नवपठित-साहित्य की चौथी प्रतियोगिता घोषित की है। ११००-११०० रु० के १७ पुरस्कार दिए जायंगे जिनमें से चार हिन्दी को और एक-एक अन्य भाषाओं को मिलेगा। नवपठित का अभिप्राय उनसे है जो नवसाक्षरों से आगे बढ़ गये हैं। प्रेषित पुस्तकें उनके लिए उपयोगी होनी चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय सौमनस्य, सामुदायिक विकास, सरल विज्ञान, आर्थिक और सामाजिक उन्नति तथा सांस्कृतिक विषयों की पुस्तकें भेजी जांय। उत्तम साहित्य के सरल अनुवाद भी भेज सकते हैं। पुरस्कृत पुस्तक की १५०० प्रतियाँ तक खरीदी जायेंगी। १-१-६३ से ३१-१२-६३ तक प्रकाशित पुस्तकें ही भेजी जांय। सामान्य पुस्तक ९६ से १४४ पृष्ठ तक हो। अनुवाद १६० से २५६ पृष्ठ तक। प्रत्येक पुस्तक की ५ प्रतियाँ १०.०० के ट्रेजरी चालान के साथ ३१ मई तक अस्सिटेंट एजूकेशनल एडवाइजर एस, डब्लू २, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली को भेजें।

जाली पुस्तकों का प्रकाशन रोकने के लिए कार्यवाही

केन्द्रिय शिक्षा मंत्रालय का ध्यान इस ओर दिलाया गया है कि देश के अनेक राज्यों में पाठ्य-पुस्तकों के जाली संस्करण काफी संख्या में छापे जाते हैं। जाली संस्करण देखने में असली की तरह होते हैं, केवल उनकी छपाई खराब होती है और उनमें अनेक गलतियाँ रह जाती हैं।

यह सुझाव दिया गया है कि भारत सरकार भारतीय दण्ड संहिता में ऐसा संशोधन करने पर विचार करे, जिससे जाली संस्करण का प्रकाशन दण्डनीय अपराध माना जा सके।

भारत सरकार ने इस समस्या पर विचार किया है। यहाँ उल्लेखनीय है कि कापीराइट कानून १९५७ (१९५७ का १४) में जाली प्रकाशनों के बारे में भी व्यवस्था है। कानून की धारा ६३ में कापीराइट तथा इस कानून के अंतर्गत प्राप्त अन्य अधिकारों का उल्लंघन अपराध माना गया है। ज्यों ही मजिस्ट्रेट इस प्रकार के अपराध का नोटिस देता है, पुलिस अफसर का पूरा अधिकार हो जाता है कि वह मजिस्ट्रेट से वारण्ट लिए बिना भी जाली प्रतियों पर कब्जा कर ले। धारा ६३ के अंतर्गत अपराध की शिकायत दर्ज कराते समय अपराधी का नाम बताने की जरूरत नहीं पड़ती।

अतः कापीराइट के अधिकारी को जैसे ही अपनी कृति की जाली प्रतियों का पता चले, वह मजिस्ट्रेट के सामने शिकायत कर सकता है। ज्यों ही मजिस्ट्रेट संतुष्ट हो जाए कि धारा ६३ के अंतर्गत अपराध हुआ है, वह उस अपराध को हस्तक्षेप योग्य समझने को बाध्य होगा और तब पुलिस अधिकारी को जाली प्रतियाँ जब्त करने का अधिकार मिल जायगा। पुलिस की जांच अथवा फरियादी की सूचना पर जाली प्रतियों पर कब्जा होने के फलस्वरूप उनकी बिक्री बन्द हो जाएगी। यह भी आशा है कि शिकायत की जांच के दौरान अपराधी का पता चल जाएगा। शिकायत में अपराधी का नाम नहीं होता, इसलिए यह भी आशा है कि मजिस्ट्रेट पुलिस को अपराध की जांच करने का आदेश दे।

जहाँ तक भारत सरकार को पता है धारा ६३ और ६४ को कारंवाई कभी भी विफल नहीं हुई है। पुलिस द्वारा जाली प्रतियों पर कब्जा करने से पहले मजिस्ट्रेट को संतोष होना जरूरी है कि अपराध हुआ है, इससे शिकायत पर रोक की भी व्यवस्था है।

कापीराइट कानून के अलावा जाब्ता फौजदारी में भी उक्त अपराध के विषय में व्यवस्था है। धारा १५५ के

अन्तर्गत, यदि फरयादी मजिस्ट्रेट का अधिकार प्राप्त कर ले तो पुलिस अफसर को अहस्तक्षेप्य अपराध की जाँच करने का भी अधिकार है। ऐसी जाँच के दौरान पुलिस अधिकारी जाली प्रतियाँ बरामद कर सकता है और अपराधी का पता लगा सकता है।

अतः जाली पुस्तकों के विषय में तरीका यह है कि जिस व्यक्ति के कापीराइट का उल्लंघन हुआ है, वह कापीराइट कानून की धारा ६३ और धारा ६४ के अंतर्गत अथवा जाब्ता फौजदारी की धारा १५५ के अंतर्गत कार्रवाई करे।

गुजरात के पुस्तकालय : ग्रन्थपाल सम्मेलन

क्यूरेटर आफ लाइब्रेरी अहमदाबाद की ओर से हाल ही में गुजरात के शहर और जिला पुस्तकालयों के ग्रंथपालों का सम्मेलन सेन्ट्रल लाइब्रेरी बड़ौदा में आयोजित हुआ था। नीचे लिखे पुस्तकालयों के ग्रंथपाल उपस्थित हुये :

१. वार्टन लाइब्रेरी, भावनगर
२. गांधी स्मृति लाइब्रेरी, भावनगर
३. जिला पुस्तकालय, सुरेन्द्रनगर
४. जिला पुस्तकालय, भुज
५. " " जामनगर
६. " " जूनागढ़
७. जूनागढ़ पुस्तकालय, जूनागढ़
८. विजयराज सार्वजनिक लाइब्रेरी, भुज
९. देसाई नानजी गोकुल लाइब्रेरी, पोरबन्दर
१०. दयाराम फ्री रीडिंगरूम एण्ड लाइब्रेरी, जामनगर
११. लेंग लाइब्रेरी, राजकोट
१२. सार्वजनिक लाइब्रेरी, अमरेली
१३. हिम्मत लाइब्रेरी, हिमतनगर
१४. सी. पी. लाइब्रेरी, महसाना
१५. रायचन्द दीपचन्द लाइब्रेरी, भड़ोच
१६. एण्डरूज लाइब्रेरी, सूरत
१८. दाही लक्ष्मी लाइब्रेरी, नडियाद
१९. जे. जे. लाइब्रेरी, खंबात
२०. फतहसिंह जी लाइब्रेरी, पाटन जि० मेहसान

सम्मेलन में गुजरात प्रांत के हर विभाग के पुस्तकालय व्यवस्था अधिकारी उपस्थित थे। सम्मेलन का उद्घ एम.एस. यूनीवर्सिटी के ग्रंथपाल डा० चम्पकलाल शु भाषण से हुआ। सम्मेलन की योजना के लिये पुस्त व्यवस्था अधिकारी को धन्यवाद देते हुये और सम्मेलन का महत्व बताते हुए उन्होंने कहा कि बड़ौदा के महा ने प्राथमिक शिक्षा आरम्भ की थी और उसके विस्ता लिए पुस्कालय भी खोले गये। इस कार्य में उनको स्व मोती भाई अमीन ने भारी सहयोग दिया। इसी क बड़ौदा राज्य की पुस्तकालय व्यवस्था गुजरात और रात के बाहर भी प्रगतिशील बनी।

आगे चलकर उन्होंने बताया कि हमारे देश की पंचवर्षीय योजना में भी पुस्तकालय प्रवृत्ति के विका लिये बहुत बड़ी राशि निर्धारित की गई है।

राजस्थान के शिक्षा संचालक की सराहना

एक प्रस्ताव में सम्मेलन ने कहा कि पुस्त खरीद के लिये मान्य विक्रेता और मान्य भाव होना भावी है। पुस्तकालयों में खरीदी जाने वाली पुस्त लिये टेण्डर माँगकर मान्य विक्रेताओं से ही पुस्तक दने के नियमों को यह सम्मेलन पूरी विचारणा के बा चित मानता है और सरकार से निवेदन करता है कि कालय सेवा के मुक्त विकास के अवरोध रूप इस नियम को अर्थात् टेण्डर मांगने की प्रथा को शीघ्र दूर करे। राजस्थान के शिक्षा संचाल वगैर टेण्डर पुस्तक खरीदने के लिए जो प्रशंसनीय उठाया है उसकी ओर यह सम्मेलन सरकार का आर्कषित करता है। गत नवम्वर मास में नेशन ट्रस्ट की ओर से देहली में आयोजित एक परिसंवाद खरीदी पर से टेण्डर के बन्धन को हटाने की मांग है उसकी ओर भी सरकार का ध्यान आर्कषित कर

चर्चा के अंत में गुजरात राज्य के उपशिक्षा श्री एच. भनोत ने सम्मेलन को सम्बोधित करते हुये कालयों का देश और समाज के लिये महत्व बताया।

बिहार सरकार पाठ्य पुस्तकों से लाभ उठाये

सरकारी रूप से ज्ञात हुआ है कि बिहार १९६५-६६ में हाई स्कूलों के लिए ३५ लाख पाठ्य

'मंडल' का अपूर्व प्रकाशन, जो हाथों-हाथ बिक गया

नेहरू : व्यक्तित्व और विचार

स्व० नेहरूजी की पुण्य-तिथि—२७ मई १९६५ को तीसरा संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण प्रकाशित होगा ।

पृ० सं० (बड़े आकार) ६०० : : लगभग २०० चित्र : : पक्की जिल्द

मूल्य २५ रुपये—**मई १९६५ तक** पुस्तक विक्रेताओं के लिए विशेष सुविधाएँ—तदर्थ पत्र-व्यवहार कीजिये ।

● ● ●

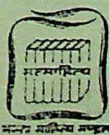
'मंडल' के आगामी नये प्रकाशन

पड़ोसी देशों में (यात्रा) यशपाल जैन
गढ़वाली लोककथाएं (कथा) गोविन्द चातक
चुम्बक के चमत्कार (विज्ञान) जटाशंकर द्विवेदी
बिजली की दुनिया (,,) ,, ,,
रेंगने वाले जीव (,,) सुरेशसिंह
मानवता के दीये (संस्मरण) झवेरचंद मेघाणी
नाश का विनाश (नाटक) मामा वरेरकर
ज्वालामुखी (उपन्यास) अनंत गोपाल शेवड़े
फुर्सत के क्षण (संस्मरण) न० वि० गाडगिल
वर्जित देश में (यात्रा) लोवेल थामस जूनिया
संस्कृति के प्रतीक (संस्कृति) महादेव शास्त्री
बाल शिक्षण (शिक्षा) सोमा भाई पटेल
नया मानव नया समाज (सामा०) रावी
स्वस्थ रहने की कला गंगा प्रसाद गौड़
आकाश दर्शन (विज्ञान) छोटूभाई सुथार
स्यामी रामायण थाईलैंड में प्रचलित राम-कथा
प्रेम और प्रकाश (उपन्यास) आन्द्रेजीव

विस्तृत सूचीपत्र एवं व्यापारिक नियमों के लिए पत्र व्यवहार कीजिये ।

सस्ता साहित्य मंडल

प्रधान कार्यालय
एन ७७, कनाट सरकस
नई दिल्ली

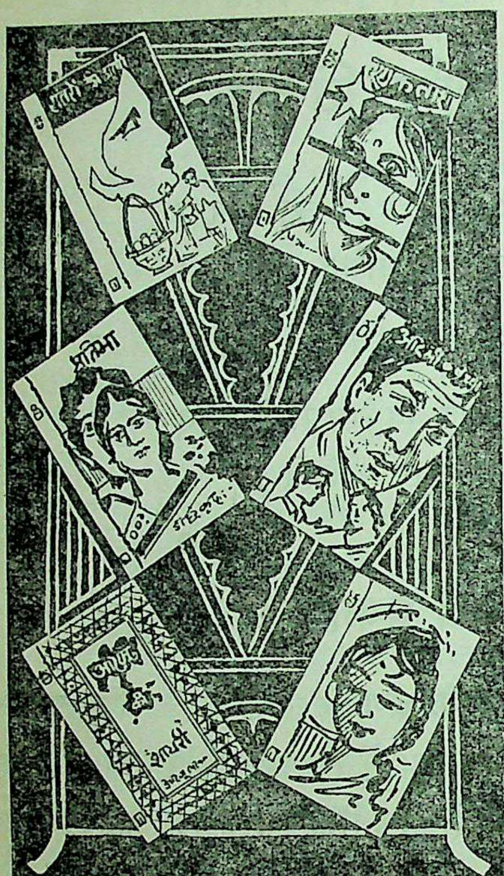


शाखा कार्यालय
ज़ीरो रोड
इलाहाबाद

प्रचारक पॉकेट बुक्स

की

नवीन पुस्तकें



* आदमी का बच्चा : 'भिक्खु'
* प्रतिभा : डा० हरेकृष्ण मेहताब
* स्वतंत्रता के सेनानी : हरिमोहन लाल श्रीवास्तव
* संतरों की डाली : अनन्त गोपाल शेवड़े
* आरज़ू की शायरी : आरज़ू लखनवी

* काले उजले टीले : भगवान सिंह
* मासूम निगाहों के शिकार : पी० नाथ 'मोहन'
* तूफान और किनारा : विमल वेद
* एक तारा : डा० प्रभाकर माचवे
* घर की सहेली : सावित्री वर्मा



प्रत्येक का मूल्य १.००

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय { पो० बॉ० नं० ७०, वाराणसी-१

छापेगी। इन पुस्तकों के लिए ३२ हजार रिम कागज की जरूरत पड़ेगी, जिसकी कीमत १० लाख रुपया होगी।

इन पाठ्य-पुस्तकों की बिक्री से ३० लाख रुपये की आय होगी।

सर्वश्रेष्ठ मौलिक नाटक पर पुरस्कार

हिंदुस्तानी एकेडेमी की कार्य समिति ने १ जनवरी, १९४७ और ३१ दिसम्बर, १९६३ के बीच प्रकाशित सर्व-श्रेष्ठ मौलिक हिन्दी नाटक पर १५००) रुपये का पुरस्कार देने का निश्चय किया है।

३१ मई, १९६५ तक पुरस्कार के लिए प्रेषित नाटक की आठ प्रतियाँ एकेडेमी कार्यालय ४, कमला नेहरू रोड, इलाहाबाद में पहुँच जानी चाहिए।

पुरस्कार के निर्णयार्थ प्राप्त होने वाली पुस्तक के लेखक एवं प्रकाशक का नाम, स्थायी पता तथा नाटक पुरस्कारार्थ पहले कहीं भेजा गया या नहीं आदि सूचनाएं प्रत्येक प्रति के भीतरी मुख पृष्ठ पर लिख देना चाहिए या दूसरे कागज पर लिखकर चिपका देना चाहिए। नाटक के प्रथम संस्करण के प्रकाशन की तिथि तथा बाद के संस्करणों की तिथि का उल्लेख भी कर देना चाहिए। नाटक भेजने की अंतिम तिथि पहले ३१ मार्च थी।

हिन्दी की प्रगति में जापान की गहरी दिलचस्पी

टोकियो विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो० के० दोयी ने सागर में कहा है कि हिंदी की प्रगति में जापान के विद्यार्थी और जन गहरी दिलचस्पी रखते हैं।

साथी प्रकाशन के संचालक श्री केदार साथी ने सर्किट हाउस में प्रो० के० दोयी को अपने प्रकाशनों का एक सेट भेंट किया। इस अवसर पर प्रो० के० दोयी ने बताया कि हम भी जापान में हिंदी का एक शब्दकोश प्रकाशित करने जा रहे हैं।

श्री केदार साथी ने भारतीय प्रकाशन व्यवसाय की उपलब्धियों और प्रगति से प्रो० के० दोयी को अवगत कराया।

स्नातक एवं स्नातकोत्तर पुस्तकों की सूची

केन्द्रीय हिंदी निदेशालय ने स्नातकोत्तर स्तर की हिंदी तथा अन्य प्रादेशिक भाषाओं में अनूदित एवं प्रकाशित पुस्तकों की एक बृहद् सूची बनाने का निश्चय किया है। प्रकाशकों से उनके द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के विवरण मांगे गये हैं।

सर्वसेवा पाकेट-बुक्स

वाराणसी के सर्वसेवा संघ ने वैचारिक साहित्य को पाकेट-बुक्स में प्रस्तुत करने की योजना हाथ में ली है। स्वस्थ और प्रेरक ललित साहित्य का भी समावेश रहेगा।

जयदयाल गोयन्दका का देहावसान

गोविन्द भवन, कलकत्ता एवं धार्मिक साहित्य प्रकाशक गीताप्रेस, गोरखपुर और देश की अनेक उपयोगी धार्मिक, शैक्षणिक सेवा-संस्थाओं के संस्थापक एवं आध्यात्मिक विद्वान् श्री जयदयाल जी गोयन्दका का उन्हीं के द्वारा संस्थापित ऋषिकेष के गीता-भवन में गंगा के पवित्र तटपर १७ अप्रेल को सायं ४ बजे देहावसान हो गया। अन्तिम समय तक उनको पूरी चेतना रही। भगवन्नाम जप उनकी जिह्वा एवं अंगुलियों द्वारा होता रहा और उन्होंने उपनिषदों के मन्त्र सुने। उनके अन्तिम समय सैकड़ों श्रद्धालु भक्त भगवत्कीर्त्तन कर रहे थे।

सरस वियोगी का देहांत

चित्तौड़ जिले में नियुक्त जिला सार्वजनिक सम्पर्क अधिकारी श्री सरस वियोगी का २६ मार्च को अजमेर में देहावसान हो गया।

श्री वियोगी को २२ मार्च को लकवे की बीमारी हो गई थी और उन्हें इलाज के लिए चित्तौड़ से अजमेर लाया गया था। मृत्यु के समय उनकी आयु लगभग ४५ वर्ष की थी। वियोगी अपने पीछे विधवा पत्नी के अतिरिक्त २ पुत्र एवं ३ पुत्रियाँ छोड़ गए हैं।

कवि, लेखक और पत्रकार के रूप में सरसजी ने देश और समाज की जो सेवाएँ की हैं, वे कभी भी नहीं भुलाई जा सकेंगी, परन्तु विधि का विधान विचित्र है कि जब वे अपनी प्रतिभा को मुखरित करते हुए साहित्य क्षेत्र में देदीप्यमान तारे की भाँति चमकने वाले थे, तभी उन्हें हमसे छीन लिया।

साथी प्रकाशन की नयी योजना

सागर की विख्यात प्रकाशन संस्था साथी प्रकाशन ने एक नयी योजना आरम्भ की है—मानविकी विषयों पर 'नव-चिन्तन' और 'नव मूल्यांकन' के अन्तर्गत सौ से अधिक पुस्तकों की संयोजना और प्रकाशन ।

इस योजना के अन्तर्गत प्रकाशित होने जा रही प्रथम दस पुस्तकें अक्टूबर ६५ में आ जायेंगी ।

राजस्थान के अंचल से

राजकार्यों में हिन्दी का प्रयोग

राजस्थान सरकार के आदेशानुसार भविष्य में सरकारी कर्मचारियों व अधिकारियों के वेतन भत्ते के बिल, अवकाश के लिए आवेदन, अपील, निगरानी, प्रस्थापन (मामले) सम्बन्धी सारी कार्यवाही और इस सम्बन्ध में लिखे जाने वाले टिप्पण व पत्र व्यवहार केवल हिन्दी में ही हो सकेंगे ।

राजस्थान सरकार ने हिन्दी को राज काज की भाषा बनाने का निर्णय ले लिया है । यह आदेश हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने की दृष्टि से किये गए हैं ।

राज्य सरकार द्वारा जारी किए आदेशों के अन्तर्गत सरकारी कार्यों के बारे में नियुक्त समितियों, परिषदों, मण्डलों व संगोष्ठियों के कार्य विवरण भविष्य में हिन्दी में ही लिखे जायेंगे ।

सरकारी समारोह या सम्मेलनों में उद्घाटन व समापन भाषण चाहे वह सरकारी अधिकारी दे या अन्य हिन्दी में ही हुआ करेंगे ।

हिन्दी के उपयोग पर परामर्श देने के लिए समिति

राजस्थान सरकार ने राजभाषा के रूप में हिन्दी के उपयोग और प्रसार तथा हिन्दी भाषा के साहित्य के विकास के सम्बन्ध में राज्य सरकार को परामर्श देने के लिए मुख्य मंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया की अध्यक्षता में एक १८ सदस्यीय समिति का गठन किया है ।

समिति में अध्यक्ष के अलावा राज्य के शिक्षामंत्री; हिन्दी विभाग के मंत्री; विधि मंत्री; श्री नाराय[...] मसूदा, उपाध्यक्ष, राजस्थान, विधान सभा; श्री [...] जोशी, श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूंडावत व श्री भै[...] शेखावत, सदस्य विधान सभा; श्री जनार्दन राय[...] अध्यक्ष राजस्थान साहित्य अकादमी; श्री [...] तिवाडी, अध्यक्ष राजस्थान साहित्य सम्मेलन; [...] सचिव; अध्यक्ष, राजस्व मंडल; एडवोकेट जनरल; [...] सचिव; सचिव, राजस्थान विधान सभा; शिक्षा [...] संचालक सार्वजनिक सम्पर्क कार्यालय व हिन्दी [...] सदस्य हैं । हिन्दी सचिव समिति के सदस्य सचिव [...]

५ पंचायत समितियाँ सर्वोत्तम : ३ लाख रुपये दिये गये

कोटा जिले में अन्ता, जोधपुर में मंडोर, बाड़[...] सिवाना, भीलवाड़ा में शाहपुरा तथा झुंझुनूं जि[...] उदयपुरवाटी पंचायत समितियाँ, १९६४-६५ में [...] कार्य करने के कारण राजस्थान में सर्वोत्तम घोषि[...] गयी हैं, प्रत्येक को १८ हजार रुपये प्रदान कि[...] हैं ।

इसी प्रकार केकड़ी, सागानेर, नीमका थाना, [...] सिरोही, रियाँ, जालोर, छोटी सादड़ी, कोलायत, [...] गढ़, राजगढ़, (चूरू), गोविन्दगढ़, (अलवर), [...] नादोती, टौंक, पिड़ावा, जैसलमेर, बाली, तलवाड़ा, [...] वाड़ा एवं भिंडर पंचायत समितियों को भी [...] विशिष्ट कार्य करने के कारण जिला स्तर पर [...] घोषित किया गया है तथा प्रत्येक को दस हजार [...] दिये गये हैं ।

उक्त धनराशि सम्बन्धित पंचायत समिति [...] विकास कार्यों पर व्यय की जायेगी ।

पंचायत समिति द्वारा पुस्तकों का विवरण

बांसवाड़ा जिले की गढ़ी पंचायत समिति [...] वित्तीय वर्ष में शिक्षा प्रसार कार्यक्रम के अन्तर्गत [...] १११ प्राथमिक, १२ माध्यमिक, ६ जूनियर हायर [...] १ हाई स्कूल और २ बाल मंदिरों में 'स्कूल चलो [...] यान' के अधीन २०९७ छात्र एवं छात्राएँ भर्ती की [...]

समाज शिक्षा की दिशा में इस वर्ष शाला[...]

१०६८ रु० की पुस्तकें पुस्तकालयों के लिए, वितरित की गईं तथा २ रेडियो सेट दिये गये । ६ युवक मण्डलों का गठन किया गया ।

सघन प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम : अध्यापकों को पुरस्कार

जयपुर जिले की शाहपुरा पंचायत समिति में चल रहे सघन प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत श्री सूरज नारायण अध्यापक केरकी-चौकीस्कूल को १२५) रु० का प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया । आपने कार्यक्रम संबंधी मूल्यांकन समिति द्वारा निश्चित ७५ अंकों में से ७५ अंक ही प्राप्त किये हैं । दूसरा पुरस्कार ७५) रु० का, श्री हनुमानसहाय अध्यापक नया-बांसखो को दिया गया, आपने ७५ में ६८ अंक प्राप्त किये हैं । इसी प्रकार ५०)-५०) रु० के आठ पुरस्कार, सर्व श्री अर्जुनलाल-राडावास, ब्रज-मोहन-संकटावाली, अब्दुल गनी-तोपचीखाना, रामसहाय-मनोहरपुरा नं० १, शिवप्रसाद गुलाबबाड़ी, कल्याणदत्त-भूरिया-का-बास, ओंकार मीणा-कुम्भावास और छाजूलाल भट्ट-नवलपुरा, को दिये गए हैं । इसके अतिरिक्त ४०-४०) रु० के दस पुरस्कार, सर्वश्री रामजीलाल-खोजावाली, सुरेशचन्द्र सुराणा, रामदास पारिक-गोनकसर, रूडमल वर्मा-खेतडी, रामस्वरूप-माजीपुरा, शंकरलाल-घासीपुरा, रामजीलाल-लटकावास, प्रभूदयाल निथारा, रोशनसिंह-राज-पुरा और श्रीमती शारदा मिश्रा-घनोता, को दिए गए हैं । इस प्रकार कुल बीस व्यक्तियों को एक हज़ार रुपये के पुरस्कार दिए गये ।

बिक्रीकर : शैक्षणिक और धार्मिक संस्थाओं को छूट मिलेगी

राजस्थान विधान सभा में राज्य के आबकारी एवं कर उपमंत्री, श्री परसराम मदेरणा ने कहा है कि राज्य सरकार शैक्षणिक एवं धार्मिक संस्थाओं पर बिक्री कर नहीं लगाना चाहती और इसलिए इन संस्थाओं को बिक्री कर से छूट देने के संबन्ध में विधेयक में संशोधन कर दिया जायेगा ।

बाड़मेर में डिग्री कालेज

राजस्थान के शिक्षा मंत्री, श्री नाथूराम मिर्धा ने बाड़मेर में बताया है कि बाड़मेर में खोले जा रहे डिग्री कालेज में विज्ञान एवं कला विषयों के पढ़ाये जाने की व्यवस्था होगी ।

स्वामी जयरामदास जी का अभिनन्दन

राजस्थान के शिक्षा मंत्री श्री नाथूराम मिर्धा की अध्यक्षता में स्थानीय रवीन्द्र रंगमंच पर जयपुर के वैद्यों, संस्कृत शालाओं के अध्यापकों एवं नागरिकों की ओर से संस्कृत एवं आयुर्वेद के सुविख्यात विद्वान वैद्य स्वामी जयरामदास का सम्मान किया गया तथा शिक्षा मंत्री द्वारा उन्हें अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया गया ।

राजस्थान में शिक्षा-प्रसार

राजस्थान के शिक्षा मंत्री, श्री नाथूराम मिर्धा ने राज्य विधान सभा में बताया है कि १९५०-५१ में शिक्षण संस्थाओं की कुल संख्या ६०२७ थी, वह १९६५-६६ में बढ़कर २९,५३१ हो जायेगी, छात्र-छात्राओं की कुल संख्या १९५०-५१ में ४.४७ लाख से बढ़कर १९६५-६६ में लगभग २५.८६ लाख तक पहुँच जायेगी तथा शिक्षा पर प्रति व्यक्ति व्यय जो १९५०-५१ में १.९५ रुपये था-अब १९६५-६६ में ९.३ रुपये हो जायेगा । आपने बताया कि राज्य के कुल बजट का २०.८ प्रतिशत भाग शिक्षा की मद पर व्यय किया जा रहा है ।

आपने कहा कि ६-११ वर्ष की उम्र के छात्र-छात्राओं की संख्या में वृद्धि करने के लिए प्राथमिक पाठशालाओं में प्रतिवर्ष १.४० लाख छात्र-छात्राओं की भर्ती करने का लक्ष्य रखा गया है । शिक्षा की प्रगति के संबंध में आँकड़े प्रस्तुत करते हुए श्री मिर्धा ने बताया कि १९५०-५१ में राज्य में जहाँ कुल ४,३३६ प्राथमिक स्कूल थे वहाँ १९६५-६६ में उनकी संख्या १८,६०० हो जायेगी ।

छात्रों की संख्या में वृद्धि

राजस्थान के मुख्य मंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया ने कहा है कि ११-१४ वर्ष के स्कूल जाने वाले बालकों की संख्या में ४ गुना तथा १४-१७ के स्कूल जाने वाले बालकों की संख्या में ८ गुना वृद्धि हुई है ।

पोस्ट ग्रेजुएट परीक्षाओं का केन्द्र उदयपुर में भी रहेगा

राजस्थान के शिक्षा उपमंत्री, श्री निरंजननाथ आचार्य ने राज्य विधान सभा में बताया है कि उदयपुर विश्वविद्यालय बन जाने से अब वहाँ से राजस्थान विश्वविद्यालय की एम० ए० या अन्य पोस्ट ग्रेजुएट परीक्षाओं में प्राइवेट रूप से बैठने वाले छात्रों को परीक्षा के लिए जयपुर नहीं आना पड़ेगा तथा इन परीक्षाओं का केन्द्र उदयपुर में भी रहेगा।

कल्याण बोर्ड को अनुदान

राजस्थान के समाज कल्याण मंत्री श्री भीखाभाई ने राज्य विधान सभा में बताया है कि राजस्थान समाज कल्याण बोर्ड को राज्य में महिलाओं एवं बालकों की कल्याणकारी संस्थाओं को संचालित करने के लिए १९६२-६३ और १९६३-६४ में केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड से क्रमशः ६,४८,६१३ रुपये और ५,७५,०४५ रुपये, राज्य के समाज विभाग से क्रमशः १,५०,००० रुपये और १,७५,००० रुपये तथा राज्य के विकास विभाग द्वारा क्रमशः ८५,१६७ रुपये और १,६६,०६३ रुपये के अनुदान दिये गये।

आपने यह भी बताया कि इस बोर्ड द्वारा १९६ में ९,९७,६७९ रुपये तथा १९६२-६४ में ११,१ रुपये व्यय किये गये।

महिला मंडल उदयपुर को ३.९४ रुपये का अनुदान

राजस्थान के शिक्षा उपमंत्री, श्री निरंज आचार्य ने राज्य विधान सभा में बताया है कि सरकार द्वारा महिला मंडल, उदयपुर को १९५ १९६३-६४ तक कुल ३,९४,७०० रुपये का अनुदान दिया गया है।

राजस्थान साहित्य अकादमी लेखक और कवि पुरस्कृत

राजस्थान साहित्य अकादमी ने १९६४-६५ में गद्य, पद्य व राजस्थानी पद्य लिखने वाले लेखकों व को ४ नकद पुरस्कारों की घोषणा की है। श्री राम जाँगीड को उनकी रचना 'इतिहास के स्फुट लेख', यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' को उनकी कहानी की पुस्तक इन्सान की मौत—एक इंसान का जन्म', श्री ज्ञान भा को उनके मुक्तक 'साँझ उतरी' तथा श्री बनवारी मिश्र को उनके राजस्थानीय पद्य 'देल्याँ की दिव लिए पुरस्कार प्रदान किये गए हैं।

हमारे कुछ प्रसिद्ध प्रकाशन

उपन्यास

सोना और खून भाग २ उत्तरार्द्ध
आचार्य चतुरसेन ६.००
अतीत के चित्र
मोहनलाल महतो वियोगी ४.००
कांदीद वाल्तेयर
(मूल फ्रेंच से अनूदित) २.००
पाथेय दयाशंकर मिश्र ३.५०
छोटी चाची " ३.५०
छोटी बहू " ३.५०
चातकी " ३.५०
पानी की दीवार रजनी पनिकर ३.००
अन्धेरे के दीप ओमप्रकाश शर्मा ३.५०
कान्ता ओमप्रकाश शर्मा ३.५०
हार या जीत देवदूत १.७५
अन्धेरा-सवेरा यादवचन्द्र जैन ४.००
ज्योति-किरण विमल वेद ४.००
रायसीना की लपटें
भगवद्दत्त 'शिशु' ३.००
नर्तकी रूपकोसा (प्रथम भाग)
अनु० मनोहर लाल चौहान ४.५०
नर्तकी रूपकोसा (द्वितीय भाग)
अनु० मनोहर लाल चौहान ४.००
प्राणों की प्यास मधूलिका ३.५०

कहानी संग्रह

कुछ पैसे राम सरन शर्मा १.२५
मलयानिल नीलकण्ठ पिल्ले २.००
भाग्यरेखा भीष्म साहनी १.७५
कथा मंजरी श्री यश २.५०
सपूत शकुन्तला अग्रवाल २.००
उपनिषदों की कहानियाँ १.७५

नाटक-संग्रह

नीर-क्षीर क्षेमचन्द्र 'सुमन' २.५०

जीवनियाँ और संस्मरण

प्रवासी की आत्म-कथा
स्वामी भवानीदयाल संन्यासी ८.००
एक युग : एक प्रतीक
देवेन्द्र सत्यार्थी ४.००

लोक साहित्य, दर्शन तथा हास्य

अगुआ और बनफ्शे का फूल
खलील जिब्रान ३.००
आकाश-पाताल
श्री जी. पी. श्रीवास्तव २.२५
बेला फूले आधी रात
देवेन्द्र सत्यार्थी १०.००
नई जिन्दगी डा० लक्ष्मीनारायण ३.५०

हमारा बाल साहित्य

बड़ों का बचपन
(भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत)
विश्वमित्र शर्मा २.२५
सोने की कहानियाँ
विश्वमित्र शर्मा १.५०
अणुशक्ति की कहानी
विश्वमित्र शर्मा १.२५
सुनो कहानी विश्वमित्र शर्मा २.००
(दिल्ली शिक्षा विभाग द्वारा पुरस्कृत)
अलिफ लैला विश्वमित्र शर्मा ५.००
देश-देश के बच्चे (प्रथम भाग)
रमेशचन्द्र 'प्रेम' १.२५
देश-देश के बच्चे (द्वितीय भाग)
रमेशचन्द्र 'प्रेम' १.२५
सोनपरी (लोक कथाएँ)
जहूरबख्श १.२५
हाय नागिन (लोक कथाएं)
जहूरबख्श १.२५
राधाकृष्ण (भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत) १.२५
आकाश के अचरज अन्ना दीदी २.२५
धरती के अचरज अन्ना दीदी २.२५
घोड़ों की खेती श्री जहूरबख्श १.५०
हिन्दी बाल सखा
आ० सुन्दरसिंह ०.६५
ललारी और नाई
हरजसराय जैन १.२५
कलन्दरों की आत्मकथा " १.५०
अनजाने देश में ओम प्रकाश १.५०
रमई काका कस्तूरीलाल टण्डन १.७५
घनचक्कर रुद्रदत्त मिश्र १.५०
साहसी शेखू (भाग १)
दयाशंकर मिश्र 'दद्दाजी' १.५०
साहसी शेखू (भाग २) " १.५०
चुटियावाले चाचाजी " १.५०
बच्चों के बापू जहूरबख्श २.२५

भारत-परिचय माला

काश्मीर विश्वमित्र शर्मा १.७५
बंगाल मन्मथनाथ गुप्त १.७५
केरल प्रभाकर माचवे १.७५
महाराष्ट्र " १.७५
असम " १.७५
पंजाब लेखराम १.७५
राजस्थान शोभालाल गुप्त १.७५
उत्तरप्रदेश रामनारायण अग्रवाल १.७५
बिहार मोहनलाल महतो वियोगी १.७५
मद्रास योगराज थानी १.७५
आंध्र योगराज थानी १.७५
मैसूर " १.७५
गुजरात मनहरलाल चौहान १.७५

राजहंस पब्लिकेशन्स, मराठी रुई, सदर बाजार, दिल्ली-६

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के निमित, प्रधानमंत्री कन्हैयालाल मलिक द्वारा सम्पादित, उद्योगशाला प्रेस, किंग्सवे, दिल्ली-९ में मुद्रित एवं २६-ए, चन्द्रलोक जवाहरनगर, दिल्ली से प्रकाशित

पुस्तकालय…
व्यवसाय…
सम्मा…
क्या आप जा…
● अमुक…
● अमुक…
● अमुक…
● अमुक…
● अमुक…
सूची के दो…
लेखक, ग्रन्थ…
का नाम, ले…
अतिरिक्त…
और पते भी…
जन्म-तिथिय…
इस विशिष्ट…



अखिल भारतीय हिंदी प्रकाशक
संघ का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष ३ जून, १९६५ अंक ७

पुस्तकालयों की समृद्धि बढ़ाने वाला तथा प्रकाशन-व्यवसाय के लिए परम उपयोगी सेवा करने वाला अनोखा सन्दर्भ प्रकाशन

बृहद हिन्दी ग्रन्थ-सूची

(हिन्दी वाङ्मय के ग्रन्थों तथा ग्रन्थकारों की विस्तृत नामावली)

सम्पादक : **यशपाल महाजन तथा कृष्णा महाजन**

मूल्य ३६ रुपये मात्र

क्या आप जानना चाहते हैं कि :

- अमुक लेखक की कौन-कौन सी पुस्तकें उपलब्ध हैं ?
- अमुक पुस्तक का लेखक, अनुवादक तथा सम्पादक कौन है ?
- अमुक पुस्तक का प्रकाशक कौन है ?
- अमुक पुस्तक का विषय क्या है ?
- अमुक पुस्तक का मूल्य क्या है ?

केन्द्रीय शिक्षा-उपमंत्री श्री भक्त दर्शन का अभिमत

···मुझे यह लिखते हुए प्रसन्नता है कि आपने जो 'बृहद् हिंदी ग्रंथ-सूची' शीर्षक ग्रंथ प्रकाशित किया है, वह मुझे एक सराहनीय प्रयास लगा; क्योंकि इस ग्रंथ के द्वारा हिंदी के पाठकों को हिंदी के ग्रंथों तथा उनके लेखकों और प्रकाशकों आदि के सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी सुलभ हो जायेगी और इस प्रकार हिंदी ग्रंथों के प्रसार में भी सहायता मिलेगी।

मुझे आशा है कि इस ग्रंथ के प्रकाशक—अर्थात् 'भारतीय ग्रंथ निकेतन'—के द्वारा भविष्य में इस दिशा में और भी अच्छा कार्य किया जायेगा तथा अन्य अनेक विशिष्ट ग्रंथ-सूचियों का भी प्रकाशन करने में उसे सफलता प्राप्त होगी। मैं अपनी शुभ-कामनाएं प्रेषित करता हूं।···

इन सभी जटिल प्रश्नों के उत्तर आप बृहद् हिन्दी ग्रन्थ-सूची में पाएंगे।

बृहद् हिन्दी ग्रन्थ-सूची में लगभग २४,००० पुस्तकों का विवरण है

सूची के दो विभाग हैं : (१) लेखक निर्देशी। (२) ग्रन्थ निर्देशी। पहले विभाग में लेखक-क्रम से व्यवस्था है। इसमें लेखक, ग्रन्थ का नाम, प्रकाशक, मूल्य तथा विषय दिये गए हैं। दूसरे विभाग में ग्रन्थ-शीर्षक से अनुक्रम है। इसमें ग्रन्थ का नाम, लेखक, प्रकाशक तथा मूल्य आदि क्रम है। इनमें आपको सभी तरह की जानकारी उपलब्ध होगी। इसके अतिरिक्त जिन प्रकाशकों (लगभग ५३०) की पुस्तकों का इस बृहद् सन्दर्भ ग्रन्थ में समावेश है उनकी पूरी नामावली और पते भी दिये गए हैं। साथ ही अनेक तरह के निर्देशी संलेख (cross references) भी हैं। यथासम्भव लेखकों की जन्म-तिथियाँ भी दी गई हैं। इन अद्भुत उपकरणों से इस ग्रन्थ-सूची की उपयोगिता कहीं अधिक बढ़ गई है।

- पृष्ठ संख्या : ६१२
- आकार : डबल क्राउन (२०×३०/८)
- सुन्दर छपाई
- उत्तम कागज
- मजबूत जिल्दबन्दी

इस विशिष्ट सन्दर्भ ग्रन्थ को परिमित संख्या में प्रकाशित किया गया है। इसकी प्रति अपने लिए सुरक्षित करा लेना अच्छा होगा। अपने निकटतम पुस्तक-विक्रेता से प्राप्त करें अथवा सीधे हमें लिखें।

प्रकाशक

भारतीय ग्रन्थ निकेतन

हमारे अभिनव प्रकाशन

बालकों के लिए

अमर जवाहर लाल (सचित्र : सजिल्द)	१.५०	नेहरू के हास्य विनोद (सचित्र : सजिल्द)	

कथा-साहित्य

बटवारे का तूफान (यशपाल)	३.००	शीशे की दीवार (गुलशन नंदा)	
लन्दन के सात रंग (कृष्णचन्द्र)	३.५०	विश्वासघात (यज्ञदत्त शर्मा)	
निर्मल (गुरुदत्त)	३.००	पहला वर्ष ,,	
निष्णात् ,,	३.००	दो पथ दो राही (प्रकाश भारती)	
भाग्य का सम्बल ,,	३.००	प्यासे पत्थर (भारद्वाज)	
गृह संसद ,,	५.५०	मछेरन (आदिल रशीद)	
बदनाम गली (कमलेश्वर)	३.००	बहुरानी ,,	
पानी का चन्द्रमा ,,	३.००	परछाईं ,,	
घेरे के अन्दर (मन्मथनाथ गुप्त)	२.५०	दर्देदिल ,,	
नंदिनी (मामा वरेरकर)	३.००	रेखा ,,	
रक्त गान (नानक सिंह)	२.५०	इश्क पर ज़ोर नहीं ,,	
परायी मां ,,	२.२५	हिमालय के उस पार ('अख्तर')	
अन्तिम पत्ती (ओ. हेनरी)	२.००	घायल (कृष्णगोपाल आबिद)	
कैदी (विलियम फॉकनर)	२.५०	उजाले की नई किरण ,,	
चार पत्तियां (ऐनि काल्वर)	२.५०	पर्वतों के आँचल में (ओलिवर)	
आज और कल (ग्लैडिस करौल)	२.५०	आने दो तूफान (रोज़ विल्डर लेन)	
नये नये चाचा जो (केट सैरेडी)	२.००	नदी की लहरें (कमल शुक्ल)	
परदेसी (रणवीर)	३.००	सारा संसार मेरा (आरिग पूडि)	
टूटे पंख (गुलशन नंदा)	३.००	उल्टी गंगा ,,	

पंजाबी पुस्तक भण्डार, दरीबा कलां, दिल्ली—६ (फोन २६३...)

भारत भर से प्रकाशित

हिन्दी पुस्तकें............

............पुस्तक विक्रेताओं के लिए
............पुस्तकालयों के लिए
............पाठकों के लिए

एक ही स्थान से प्राप्त करने के लिए
पधारें अथवा लिखें :

स्टॉर बुक सेन्टर

(दिल्ली में बाहरी प्रकाशनों का सबसे बड़ा केन्द्र)
२७१५, दरियागंज, (मोती महल के पीछे), दिल्ली-६

पुस्तकालयों के लिए विस्तृत सूची पत्र लिखकर मंगावें

★ विक्रेताओं के लिए प्रकाशकीय कमीशन की सुविधा

टेलीफोन :
२७७६४३
२७४८७४

★ हर विषय की हिन्दी की... के लिए लिखें

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष ३, अंक ७ | जून, १९६५ | मूल्य, वार्षिक ३.००

जयपुर अधिवेशन की उपलब्धि : राजस्थान पुस्तक-व्यवसायी संघ

अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ के जयपुर अधिवेशन में श्रद्धेय संपूर्णानन्द जी, माननीय सुखाड़िया जी, आदरणीय डा० सत्येन्द्र जी, शिक्षा मंत्री श्री नाथूराम जी मिर्धा, उपशिक्षामन्त्री श्री निरंजननाथ जी आचार्य और शिक्षा संचालक श्री वी०वी० जोन की स्वच्छ अभिव्यक्तियाँ राजस्थान के शिक्षा-विशारदों की अधिवेशन के साथ गहरी दिलचस्पी और अधिवेशन के कुछ पारित प्रस्ताव विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, परन्तु हमारी समझ से अधिवेशन की सबसे बड़ी उपलब्धि राजस्थान पुस्तक व्यवसायी संघ है जिसकी स्थापना अधिवेशन में समवेत विक्रेता बन्धुओं के उद्योग से हुई है और जिसने अपना काम भी तत्परता के साथ प्रारम्भ कर दिया है।

हिन्दी की 'जनरल' पुस्तकों के प्रचार-प्रसार में एक बड़ी बाधा यह भी है कि इनके विक्रेताओं का बिहार के सिवा, और कहीं कोई संगठन नहीं है। जनरल पुस्तकों के विक्रेता बन्धुओं के ऐसे संगठन होते तो प्रकाशक संघ के उद्योग से उभरा हुआ वह नेट बुक समझौता इस तरह खटाई में न पड़ जाता, जिससे सर्वाधिक लाभ विक्रेताओं को ही हुआ था—जो इसी उद्देश्य से लागू किया गया था कि प्रत्येक स्थान पर बैठे हुए पुस्तक-विक्रेता फलें-फूलें और हिन्दी-पुस्तक-व्यवसाय की वास्तविक उन्नति प्रकट हो। नेट बुक समझौते के प्रारम्भिक काल का विवरण गवाही देगा कि थोड़े समय के लिए ही सही, यह उद्देश्य सफल हुआ था—हिन्दी-पुस्तक-व्यवसाय में एक नया जीवन और एक नई प्रगति आ गई थी और उन विक्रेताओं को काफी लाभ हुआ था जिन्हें फुटकर सरकारी खरीद पर साढ़े बारह से अधिक नहीं देना था। खेद है कि विक्रेता बन्धु अपने संगठनों के अभाव में इस तथ्य को अच्छी तरह हृदयंगम नहीं कर सके और उस अभूतपूर्व स्थिति का पूरा लाभ नहीं उठा सके। इसीलिए अनुभव किया गया कि नेट बुक समझौते जैसी चीज प्रकाशकों की ओर से न आकर विक्रेताओं की ओर से आती तो अधिक अच्छा होता। समझौते का कार्यान्वयन-स्थगित होने के उपरांत विक्रेता बन्धुओं को संगठित करने के कई प्रयास किये गये परन्तु उन्हें सफलता न मिली। यहाँ हम नेट बुक समझौते के कार्यान्वयन-स्थगिति के लिए विक्रेता बन्धुओं को ही उत्तरदायी ठहराने का प्रयास नहीं कर रहे हैं, कई अन्य बातें भी उसके लिए जिम्मेदार हैं परन्तु इस मोटे तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि विक्रेता बन्धुओं के संगठन होते तो वे अपनी विच्युतियों को तो सम्भालते ही, प्रकाशकों को भी सही रास्ते पर देखते और प्रकाशक संघ की दृढ़ता में दरार देख कर उस काम को अपने हाथ में ले लेते और उसे आगे बढ़ाते। राजस्थान पुस्तक व्यवसायी संघ की स्थापना से प्रतीत हुआ है कि काम ने अब सही दिशा ग्रहण की है।

राजस्थान पुस्तक व्यवसायी संघ के सदस्यों और कार्यकर्त्ताओं को हार्दिक बधाई देते हुए हम उन्हें अपना पूरा सहयोग समर्पित करते हैं। हमारा विश्वास है कि उनकी सूझ-बूझ उन सब कठिनाइयों को पार करेगी जो ऐसे संगठनों के लिए बाधक बल्कि घातक हो जाती हैं। छोटी-छोटी बातें, छोटे-छोटे वैयक्तिक स्वार्थ कभी-कभी ऐसे बवण्डर का रूप धारण कर लेते हैं कि बड़ी-बड़ी संस्थाएं उनसे टकरा कर चूर हो जाती हैं। व्यावसायिक संगठनों में ऐसी आशंकाएँ और भी प्रबल रहती हैं। हिन्दी पुस्तक व्यवसाय को यदि उन्नत होना है, आज की आवश्यकताओं की पूर्ति करना और अपने आलबाल में बैठे लोगों को योगक्षेम की सामर्थ्य देना है तो उसे इन बाधाओं और इन कठिनाइयों को दूर करना ही पड़ेगा। हमारे पूर्वज पहले ही कह गये हैं कि परिवार के लिए व्यक्ति के हितों का, गांव के लिए परिवार के हितों का और देश के लिए गाँव के हितों का सहर्ष बलिदान कर देना चाहिए। इसका सरल भाष्य यह है कि देश न रहेगा, तो गाँव भी न रहेगा, गांव न रहेगा तो परिवार भी न रहेगा, परिवार न रहेगा तो व्यक्ति के हित स्वयं समाप्त हो जायँगे। इस प्रकार यह एक व्यावहारिक उपदेश है और सब की भलाई को सामने रखता है। व्यावसायिक संगठनों को तो इसे अपना मूल मंत्र मान लेना चाहिए और दिशा-दर्शक की भांति सदा सामने रखना चाहिए।

आशा है कि राजस्थान के इस समुचित उद्योग का अन्य प्रान्तों में भी अनुकरण होगा और एक दिन वह स्वप्न भी साकार हो जायेगा जो हिन्दी-पुस्तक-व्यवसाय की सर्वांगीण उन्नति के लिए इसके अग्रेजों ने देखा था।

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ, दशम वार्षिक अधिवेशन, जयपुर

पुस्तक प्रदर्शनी

१ मई सन् १९६५ को प्रातः राजकीय प्रवास भवन जयपुर में संघ के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर एक पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। प्रदर्शनी से राजस्थान के शिक्षा-शास्त्रियों, साहित्यिकों एवं जन-साधारण ने ३ मई तक लाभ उठाया। इसका उद्घाटन राजस्थान शिक्षा-विभाग के संचालक श्री वी० वी० जोन ने किया और यह समारोह राजस्थान विश्वविद्यालय के अध्यक्ष डा० सत्येन्द्र की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

विकास का प्रतीक

प्रारम्भ में स्वागताध्यक्ष श्री दिनेश खरे ने पुस्तक-प्रदर्शनी के आयोजन का महत्त्व स्पष्ट किया और प्रदर्शनी के संयोजक श्री रोशनलाल ने प्रदर्शनी की रूपरेखा अभ्यागतों के सम्मुख रखी। उन्होंने अपने परिचय भाषण में बताया कि हिन्दी में साहित्येतर पुस्तकें एक विशेष कुचक्र के कारण प्रकाशित नहीं हो पा रही हैं और इस कुचक्र में लेखक, प्रकाशक, शिक्षा-शास्त्री एवं पाठक सभी का सम्मिलित दोष है। अध्यक्ष-पद से भाषण देते हुए डा० सत्येन्द्र ने कहा कि विश्व ज्ञान को प्रस्तुत करने का माध्यम केवल पुस्तक है। आज विश्व सभ्यता के विकास में जिस चरण से प्रगति कर रहा है इसका परिचय हमें पुस्तकों द्वारा ही प्राप्त होता है। हम पुस्तकों के माध्यम से अतीत का ज्ञान कर वर्तमान को ठीक करते हैं और भविष्य के लिए मार्ग बनाते हैं। जिस देश में जितना अधिक साहित्य प्रकाशित होकर पाठकों में प्रचारित होता है वह देश सांस्कृतिक एवं सभ्यता के विकास में उतनी ही प्रगति करता है। विश्व के वाङ्मय के सम्मुख हमारा हिन्दी साहित्य बहुत पीछे है और इसके लिए हम सभी दोषी हैं। अधिकांश पुस्तकें प्रकाशित होकर भी पाठकों तक नहीं पहुँच पातीं। पुस्तकें पाठकों तक पहुँचें, पुस्तकों के विषय में सही जानकारी मिले, यह कार्य प्रकाशक संघ को करना चाहिए। डा० सत्येन्द्र ने 'हिन्दी प्रकाशक' के परिचय-विशेषांक को इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण प्रयास बताया और इस दिशा में अधिकतम कार्य करने का सुझाव दिया।

प्रकाशकीय दायित्व

राजस्थान शिक्षा-विभाग के संचालक श्री वी० वी० जोन ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि अध्यापक तथा सम्पादक होने के नाते मुझे प्रकाशकीय बाधाओं की जानकारी है। पुस्तक-व्यवसाय में व्यवसाय कम और कला अधिक है। हमें इस सिद्धान्त को सदैव दृष्टिगत रखना चाहिए। भारत जैसे अशिक्षित देश में पुस्तक-प्रकाशन का भविष्य उज्ज्वल है। किन्तु जो प्रकाशक एक उत्तम कृति को उत्तम साजसज्जा से तथा उसकी विषय-सामग्री को शुद्धता से नहीं प्रकाशित करता, मैं उसे प्रकाशक कहने को तत्पर नहीं हूँ। प्रकाशकों को चाहिए कि वे अपने यहाँ पाण्डुलिपियों का संशोधन करवाने के लिए तथा प्रूफ-रीडिंग के लिए उत्तम व्यक्तियों की व्यवस्था करें। प्रकाशन-व्यवसाय में पुस्तकों की शुद्धता, प्रामाणिकता एवं साजसज्जा जितने उच्च स्तर की होगी उतना ही स्तर प्रकाशन-व्यवसाय का बढ़ता जायेगा।

मिलन-गोष्ठी

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के दशम वार्षिक अधिवेशन जयपुर के अवसर पर एक मई को सायंकाल तीन बजे राजकीय प्रवास भवन में अधिवेशन में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों की एक मिलन गोष्ठी हुई। प्रारम्भ मे प्रत्येक प्रतिनिधि ने अपना परिचय दिया। स्वागत मंत्री श्री चम्पालाल रांका ने इस गोष्ठी में एक प्रश्न प्रस्तुत किया कि "प्रकाशक संघ तथा पुस्तक-विक्रेता संघ दोनों अखिल भारतीय स्तर पर पृथक्-पृथक् हों अथवा एक संघ के रूप में काम करें। जिसका नाम भविष्य में हिन्दी पुस्तक-व्यवसाय संघ हो।".

प्रकाशक और विक्रेता

इस गोष्ठी में प्राय: प्रत्येक प्रतिनिधि ने भाग लिया और प्रश्न के पक्ष तथा विपक्ष में चर्चा हुई। अन्त में सभी सदस्यों ने स्वीकार किया कि :

(१) प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता दोनों की कुछ समस्याएँ आधारभूत रूप से इतनी पृथक् हैं कि वे एक मंच पर नहीं सुलझाई जा सकतीं। इसके लिए आवश्यक है कि प्रकाशकों का संघ पृथक् रहे और पुस्तक-विक्रेताओं का संघ पृथक्।

(२) दोनों संघ पृथक् होते हुए भी पुस्तक व्यवसाय की दृष्टि से इतने समीप हों कि उनमें कोई अधिक भेद भी दिखाई न दे।

(३) जहाँ पर पुस्तक-विक्रेताओं के स्थानीय, क्षेत्रीय, अथवा प्रान्तीय संघ स्थापित हो जाएं वहाँ प्रकाशक अपने प्रकाशन की बिक्री पुस्तक-विक्रेताओं के माध्यम से करें, स्वयं नहीं।

इस गोष्ठी में पुस्तक के वितरण, कमीशन एवं प्रकाशन एवं पुस्तक-विक्रेता के सम्बन्धों पर भी सम्यक् रूप से विचार विनिमय किया गया।

उद्घाटन समारोह

राजकीय प्रवास भवन के प्रांगण में एक मई सन् ६५ को सायंकाल अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ का उद्घाटन समारोह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर राजस्थान के गण्यमान्य अतिथि, शिक्षा-शास्त्री, प्रकाशन-व्यवसायी एवं राजनैतिक नेतागण उपस्थित थे। मंच पर स्वागताध्यक्ष श्री दिनेश खरे, माननीय मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया, मान्यमहिम राज्यपाल डा० सम्पूर्णानन्दजी तथा प्रकाशक संघ के अध्यक्ष श्री ओम्प्रकाश विराजमान थे। समारोह का संचालन स्वागतमंत्री श्री चम्पालाल रांका ने किया।

प्रारम्भ में कुमारी मुकर्जी ने अपने मधुर कंठ से 'या कुन्देन्दु तुषार हार धवला' के गीत से सरस्वती वंदना की। उसके पश्चात् स्वागताध्यक्ष श्री दिनेश खरे ने अपने भाषण में हिन्दी प्रकाशन-व्यवसाय पर प्रकाश डाला। (सम्पूर्ण भाषण इसी अंक में अन्यत्र देखें।)

साक्षर और राक्षस

माननीय राज्यपाल श्री संपूर्णानंद ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि प्रकाशन व्यवसाय से राष्ट्रभाषा और राष्ट्र की बड़ी सेवा हो सकती है। प्रकाशकों के लिए साम्य आचार संहिता लागू होनी चाहिए। प्रकाशकों का कर्त्तव्य है कि वे लेखकों के श्रम का उचित मूल्य दें और आज जो सर्व सामान्य कलंक है कि प्रकाशक लेखकों का शोषण करते हैं इससे स्वयं बचें और जो प्रकाशक ऐसा करते हैं उन्हें ऐसा करने से रोकें। संस्कृत की एक सूक्ति है कि साक्षर का उल्टा राक्षस हो जाता है। प्रकाशक साक्षर बने रहें, न कि संस्कृत सूक्ति के अनुसार विपरीत हो जायं।

कुचक्र और कर्तव्य

आप सब लोग हिन्दी के प्रकाशक हैं। आपका हिन्दी से प्रेम है। आप हिन्दी का अभ्युदय चाहते हैं। इसी कारण आपने हिन्दी प्रकाशन व्यवसाय को अपनाया है। हिन्दी के प्रति आपका प्रेम हिन्दी के लिए एक भार भी है जिसे आपको सहर्ष वहन करना है। आप माँग के अनुसार प्रकाशन न करें, अपितु हिन्दी वाङ्मय का जो क्षेत्र अधूरा है उसे आपको ही पूरा करना है। आज शिक्षा-शास्त्री यह बात एक फैशन के रूप में कहते हैं कि अभी हिन्दी का वाङ्मय अधूरा है। हिन्दी में पाठ्य-पुस्तकें नहीं हैं। अतः हिन्दी उच्चस्तरीय शिक्षा का माध्यम नहीं हो सकती। यह एक कुचक्र है। हमें और आपको मिलकर इस कुचक्र को तोड़ना है। वाङ्मय को पूरा करने का भार उठाना है। मैं चाहता हूँ कि आप लोग स्वतंत्र रूप से अथवा सामूहिक रूप से उन पुस्तकों का प्रकाशन अवश्य करें, जिनकी आज चाहे माँग न हो किन्तु उनका प्रकाशन राष्ट्रभाषा के लिए आवश्यक है। आज हमारी सरकार एक विशेष कुचक्र के कारण हिन्दी को उचित सम्मान नहीं दे रही है। इसके लिए जो तर्क दिए जाते हैं वे भी आधारहीन हैं। हमारे लिए इजराइल स्वतंत्र राष्ट्र का उदाहरण अनुकरणीय है। जब इजराइल स्वतंत्र हुआ तब उन्होंने हिबरू को राजभाषा स्वीकार किया। जब हिबरू को राजभाषा स्वीकार किया गया उस समय हिबरू में प्राचीन धर्म-ग्रन्थों को छोड़कर कोई

अन्य साहित्य न था। उन्होंने हिवरू जैसी मृत भाषा में प्राण फूंका। आत्मीय स्वाभिमान के लिए उन्होंने हिवरू भाषा को इतना समुन्नत कर दिया कि आज इज़रायल उन्नति की दृष्टि से किसी से भी पीछे नहीं है।

आपको हिन्दी को उचित स्थान दिलाने के लिए लड़ना होगा। वह लड़ाई शस्त्र अथवा शास्त्र की न होकर साहित्य की होगी। आप मिलकर इस प्रकार का प्रयास करें कि हिन्दी का वाङ्मय विश्व के किसी भी वाङ्मय से पीछे न रहे। हिन्दी के द्वारा राष्ट्र का हित सुरक्षित है। अतः राष्ट्रहित के लिए मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप भारी से भारी त्याग करने में किसी से पीछे न रहेंगे, यही मेरी आप से शुभ कामना है।

माननीय राज्यपाल के भाषणोपरान्त संघ के अध्यक्ष श्री ओम्प्रकाश जी ने प्रकाशन-व्यवसाय की बाधाओं एवं समस्याओं पर गहन प्रकाश डाला। केन्द्रीय अथवा राज्य सरकारों एवं पुस्तकालयों द्वारा पुस्तकों का क्रय, टेन्डर-प्रणाली एवं अन्य सभी बातें आपने अपने भाषण में कहीं जो कि 'हिन्दी प्रकाशक' में अन्यत्र प्रकाशित हैं।

निर्विवाद सत्य

अधिवेशन के विशेष अतिथि श्री **मोहनलाल सुखाड़िया** ने अपने भाषण में कहा कि भारत में भारतीय भाषाओं के विवाद का प्रश्न तो समझ में आ सकता है, किन्तु हिन्दी और अंग्रेजी (विदेशी भाषा) का विवाद समझ में नहीं आता। स्वतंत्रता से पूर्व राजभाषा हिन्दी हो इस विषय पर सभी सहमत थे। फिर स्वातन्त्र्योपरान्त यह मतभेद क्यों? हिन्दी राष्ट्र की एकता के लिए आवश्यक है यह निर्विवाद सत्य है। हिन्दी के विरोधी देश के सम्मान के सम्मुख व्यक्तिगत सम्मान की मानहानि का प्रश्न छोड़ें, स्वार्थ-भावना से थोड़ा ऊपर उठें तभी देश का कल्याण होगा। यह बात आंकड़ों से सत्य है कि भारत देश की माध्यम भाषा हिन्दी ही हो सकती है, दूसरी नहीं।

हिन्दी को उन्नत बनाने में हमारा भी कुछ कर्त्तव्य है। हमें हिन्दी में प्रादेशिक एवं अंग्रेजी शब्दों को निः-संकोच अपनाना चाहिए। आज हिन्दी की शब्दावली एक स्तरीय नहीं है, इस बाधा को दूर करें। हिन्दी प्रकाशक अपने थोड़े से स्वार्थ का त्याग कर हिन्दी को ऊपर उठाने में सहयोग दे सकते हैं।

राज्य सरकारों के लिए अशोभनीय

राष्ट्रीयकरण की पुस्तकों में जो त्रुटियाँ हैं उन्हें दूर करना राज्य सरकारों का प्रथम कार्य होना चाहिए। पाठ्य-पुस्तकों से सरकार आय उपार्जित करे, इससे बड़ी राज्य सरकार के लिए दूसरी अशोभनीय बात क्या हो सकती है। यदि राजस्थान में इस प्रकार का कोई दोष है तो मैं उसे अवश्य दूर करूँगा। मुख्यमंत्री ने स्वागताध्यक्ष के भाषण के संदर्भ में कहा कि राजस्थान सरकार व्हाइट प्रिंटिंग पेपर पर से सेल टैक्स हटाने की बात पर विचार करेगी। राजस्थान सरकार का यह कर्तव्य है कि वह शिक्षा प्रसार के लिए अधिक से अधिक सुविधाएँ उपलब्ध करे और इस संदर्भ में प्रकाशकीय व्यवसाय में जो उचित सहायता कर सकती है उसमें राजस्थान सरकार कभी भी पीछे न रहेगी।

राष्ट्र गीत के साथ उद्घाटन समारोह की कार्यवाही समाप्त हुई।

वार्षिक अधिवेशन

दो मई सन् '६५ रविवार को राजकीय प्रवास भवन में अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का खुला वार्षिक अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। इस सम्मेलन में कार्य-समिति द्वारा स्वीकृत वार्षिक रिपोर्ट प्रधानमंत्री ने प्रस्तुत की और ६४, ६५ का आय-व्यय का विवरण भी सदन के सम्मुख रखा। प्रधानमंत्री ने यह भी सूचित किया कि कुछेक व्यावहारिक कठिनाइयों के कारण इस वर्ष के आय-व्यय का विवरण आडिट नहीं हो सका है। आडिट होने के पश्चात् यह हिसाब सदस्यों के पास सूचनार्थ भेजा जायेगा। (आय-व्यय का विवरण तथा वार्षिक रिपोर्ट इसी अंक में अन्यत्र प्रकाशित की जा रही हैं।) इस सम्मेलन में कुछेक महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पारित हुए। प्रस्ताव इसी अंक में अन्यत्र प्रकाशित किये जा रहे हैं।

वितरण सहकार

वितरण सहकार के प्रस्ताव पर, जिसे कार्यसमिति ने पुनः विचार के लिये अधिवेशन में भेजा था, चर्चा हुई।

सर्व सम्मति से यही निर्णय हुआ कि अभी वातावरण एवं परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं हैं अतः इस प्रस्ताव को स्थगित किया जाये।

इस अधिवेशन में राजस्थान के विभिन्न नगरों से तथा भारत के विभिन्न भागों से जैसे इन्दौर, आगरा, कुरुक्षेत्र, दिल्ली, लखनऊ, इलाहाबाद, बनारस, मेरठ तथा अन्य विभिन्न नगरों से प्रकाशक पधारे थे जिनकी सूची हिन्दी प्रकाशक के इसी अंक में अन्यत्र प्रकाशित की जा रही है।

आचार संहिता

सायंकाल अधिवेशन का दूसरा सत्र प्रारम्भ हुआ, जिसमें इस बात पर विचार विनिमय हुआ कि पुस्तक-विक्रेता एवं प्रकाशक के सम्बन्धों को हम किस प्रकार सुदृढ़ कर सकते हैं। पर्याप्त चर्चा के बाद अन्त में निर्णय हुआ कि जब तक पुस्तक-विक्रेता अपने संगठन को सबल नहीं बनाते, वे पुस्तक पढ़ने की रुचि को जागरित नहीं करते उस समय तक इन व्यावहारिक कठिनाइयों का कोई समाधान नहीं। प्रकाशक नहीं चाहता कि वह पुस्तक-विक्रेता बनकर प्रत्यक्ष रूप में संस्थाओं को सीधी सप्लाई करे और न वह सरकारी आदेश को ठुकराना ही चाहता है। प्रकाशकों ने सीधी सप्लाई की व्यवस्था पुस्तक-विक्रेताओं के अभाव के कारण ही की है। यह आवश्यक है कि पुस्तक-विक्रेता और प्रकाशकों की आचार संहिताएँ बनाई जाएँ। और इस बात का प्रयास किया जाए कि आचार संहिताएँ दोनों वर्गों के सामूहिक हितों का संरक्षण करें।

निर्वाचन

गोष्ठी के पश्चात् चुनाव का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। उस समय श्री दीनानाथ मलहोत्रा द्वारा प्रस्तावित एवं श्री कृष्णचन्द बेरी द्वारा अनुमोदित प्रस्ताव में अध्यक्ष जी को यह अधिकार दिया गया कि वह संविधान के अनुसार हिन्दी प्रकाशक संघ की कार्य-समिति का गठन कर लें।

कवि सम्मेलन

सायंकाल राजकीय प्रवास के प्रांगण में स्वागत समिति ने अल्पाहार का आयोजन किया। जिसमें अधिवेशन में भाग लेने वाले प्रतिनिधि तथा राजस्थान के पुस्तक-व्यवसायी एवं नगर के शिक्षा-शास्त्री एवं गण्यमान्य नागरिकों ने भाग लिया। रात्रि को राजकीय प्रवास भवन में ही एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें जयपुर तथा जयपुर के समीपवर्ती कवियों ने राष्ट्र-भावना से ओतप्रोत एवं जीवन का ज्ञान प्रस्तुत कराने वाली हृदय-स्पर्शी कविताएँ प्रस्तुत कीं। राजस्थानी एवं हिन्दी दोनों भाषाओं का सम्मिलित कवि सम्मेलन एक अपूर्व प्रयास था।

कालेज स्तर की पुस्तकें : विचार-गोष्ठी

३ मई को दोपहर महाराजा कालेज जयपुर में श्री शंकरप्रसाद सक्सेना की अध्यक्षता में एक विचार-गोष्ठी सम्पन्न हुई। इस गोष्ठी में राजस्थान के समस्त कालेजों के प्रिंसिपल, अधिवेशन में भाग लेने वाले प्रतिनिधि, राजस्थान सरकार के शिक्षा-सचिव एवं शिक्षा-संचालक ने भाग लिया। गोष्ठी का विषय था 'कालेज स्तर की हिन्दी पुस्तकों का प्रकाशन।' इस गोष्ठी में प्रकाशक संघ की ओर से श्री कृष्णचन्द बेरी ने अपना खोजपूर्ण निबन्ध पढ़ा, जिसमें इन्होंने साहित्येतर पुस्तकों का प्रकाशन किस दिशा में कितना हो रहा है और उसमें क्या-क्या कमियाँ तथा कठिनाइयाँ हैं इस पर प्रकाश डाला। (श्री बेरी का यह निबन्ध हिन्दी प्रकाशक के आगामी अंक में प्रकाशित किया जायगा।) अध्यक्ष-पद से भाषण देते हुए श्री शंकरप्रसाद सक्सेना ने बताया कि प्रकाशक साहित्येतर पुस्तकों का प्रकाशन इस कारण नहीं करता, क्योंकि उनकी खपत नहीं है। शिक्षा अधिकारी शिक्षा का पठन-पाठन हिन्दी में नहीं कराते, क्योंकि इस विषय में हिन्दी में पुस्तकें प्राप्त नहीं हैं। यह कुचक्र क्यों है। और इस का अन्त किस प्रकार से होगा यह समझ में नहीं आता। दोनों वर्गों में से किसी-न-किसी को यह चक्र तोड़ना ही है। प्रकाशन का कार्य शुद्ध व्यवसाय नहीं है। यदि प्रकाशक समस्त प्रकाशन मांग के अनुसार ही करता जाएगा, तब हिन्दी में प्रकाशन तो होगा, परन्तु साहित्य नहीं बढ़ेगा। साहित्य में सत्यं शिवं, सुन्दरम् का होना परम आवश्यक है। यह तीनों चीज़ें मांग के अनुसार नहीं बन सकतीं। नैतिक कर्तव्य एवं दायित्व को पूर्ण करने वाले भारत के प्रत्येक वर्ग में सदैव से रहे हैं और मुझे आशा है कि राष्ट्राभिमानी प्रकाशक अपने दायित्व को निभाने से पीछे न हटेंगे

प्रकाशकों का एक कर्त्तव्य और है कि वे शिक्षा विशेषज्ञों के द्वारा इस बात का सर्वेक्षण करायें। वह अभाव की पूर्ति करें, पुनरावृत्ति के दोष से बचें। विश्वविद्यालय भी अपने यहाँ के अनुभवी विषय-विशेषज्ञ द्वारा साहित्येतर पुस्तकों का निर्माण कराएं और हिन्दी प्रकाशक संघ के सदस्यों को प्रकाशित करने के लिए दें। इस प्रकार के सहयोग से पुस्तकों का प्रकाशन उन्नत रूप में उत्तम हो सकता है।

प्रतिवर्ष १०० पुस्तकों का प्रकाशन

इस गोष्ठी में विभिन्न प्रिंसिपलों ने जिनमें डा० दत्तात्रेय बावले एवं शिक्षा सचिव श्री विष्णुदत्त शर्मा के नाम उल्लेखनीय हैं, प्रकाशन-जगत की कुछ व्यावहारिक कठिनाइयाँ प्रस्तुत कीं और कुछ उन निन्दनीय बातों पर भी प्रकाश डाला जो किसी भी प्रकाशक के लिए सम्मानोचित नहीं थीं। संघ के प्रवक्ता श्री कृष्णचन्द बेरी ने सभी प्रिंसिपलों के प्रश्नों का संक्षेप, किन्तु सारगभित रूप में उत्तर प्रस्तुत किया। उसी समय संघ के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाशजी ने संघ की ओर से घोषणा की कि हिन्दी प्रकाशक संघ के सदस्य प्रतिवर्ष सौ पुस्तकें प्रकाशित कराने के लिए तैयार हैं। और हम उचित रायल्टी (१५%) पर वे समस्त पुस्तकें प्रकाशित करेंगे जिसको राजस्थान के शिक्षा संचालक अथवा विश्वविद्यालय के अध्यक्ष यह प्रमाणित करें कि यह पुस्तक हिन्दी में प्रकाशन के योग्य है। अध्यक्ष की इस घोषणा का करतल ध्वनि से स्वागत किया गया। जलपान के पश्चात् विचारगोष्ठी सम्पन्न हुई।

समापन समारोह

सायंकाल राजकीय प्रवास भवन में राजस्थान के शिक्षा-मन्त्री श्री नाथूराम मिर्धा की अध्यक्षता में अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का समापन समारोह सम्पन्न हुआ। स्वागताध्यक्ष श्री दिनेश खरे ने हिन्दी प्रकाशक संघ एवं पुस्तक व्यवसायी संघ के कार्यक्रम पर प्रकाश डाला। स्वागत मन्त्री श्री चम्पालाल रांका ने राजस्थान पुस्तक-व्यवसायी संघ की स्थापना तथा इसी संघ द्वारा प्रस्तावित एवं पारित प्रस्तावों की विशद व्याख्या सदन के सम्मुख प्रस्तुत की। उन्होंने भाषण में कहा कि इस संघ की आयु अभी केवल २४ घण्टे ही है। यदि संघ के सदस्यों की तथा राजकीय सहायता मिलती रही तो यह शिशु बड़ा होकर अवश्य ही होनहार बनेगा।

अखिल भारतीय संघ की ओर से श्री कृष्णचन्द बेरी ने स्वागत-समिति के सदस्यों, विशेषकर श्री दिनेश खरे, श्री चम्पालाल रांका, श्री नरेन्द्र बाहरी, राजस्थान के शिक्षा संचालक, शिक्षाशास्त्री एवं गण्यमान्य नागरिकों का आभार प्रदर्शित करते हुए कहा कि अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का यह अधिवेशन, विगत अधिवेशनों से कुछ अपूर्व ही है। इस अधिवेशन में शिक्षा विभाग की ओर से सहायता एवं सहयोग मिला है। उनके अपूर्व स्नेह से हमें कार्य के प्रति नई दिशा, नई प्रेरणा एवं नई स्फूर्ति मिली है। बेरी जी ने बताया कि हमने इस अधिवेशन में कुछ ऐसे निश्चय किए हैं जो केवल प्रकाशकीय हितों का संरक्षण ही नहीं करते, अपितु उनका उपयोग महाभारती के प्रसार, प्रचार एवं उसकी अभिवृद्धि में उपयोगी होगा। हम इस बात का प्रयास करने जा रहे हैं कि हिन्दी के पाठकों को हिन्दी वाङ्मय की अधिकाधिक जानकारी प्राप्त हो।

भाषण के अन्त में आपने कहा कि अधिवेशन के समापन समारोह का दृश्य दुर्गापूजा के दृश्य की भांति ही है। आश्विन मास में दुर्गादेवी की प्रतिमा की प्रतिष्ठा होती है और दस दिन के बाद उसी प्रतिमा का माँ भागीरथी की जलधारा में विसर्जन हो जाता है और वह विसर्जन भी उन्हीं के द्वारा होता है जो प्रतिमा की प्रतिष्ठा करते हैं। अन्तर केवल एक होता है। प्रतिष्ठा के साथ जो बाजे-गाजे बजते हैं उस समय हर्ष-ध्वनि प्रकट होती है और विसर्जन के गाजे-बाजे में शोकातुर ध्वनि होती है। यह समापन समारोह भी दुर्गा-पूजा विसर्जन जैसा ही है।

शिक्षामन्त्री श्री नाथूराम मिर्धा ने प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए कहा कि अभी जो मुझे जानकारी मिली है इससे मैं एक प्रकार के सुख का अनुभव करता हूँ। जनतंत्र में प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्त्तव्य के प्रति सतर्क रहे यह परम आवश्यक है। आपके रचनात्मक सुझावों का राजस्थान हृदय से स्वागत करेगा और जो यथासम्भव वह सुविधा प्रदान कर सकता है उसके लिए भी पीछे न

रहेगा। साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब होता है। विज्ञान और कला दोनों की उन्नति बराबर हो यह परमावश्यक है। साथ ही उन्होंने राजस्थान सरकार की राष्ट्रीयकरण नीति में होनेवाली व्यावहारिक बाधाओं पर प्रकाश डाला। राष्ट्रगान के पश्चात् समापन समारोह सम्पन्न हुआ।

जय हिन्दी जय नागरी !
जय भारत जय भारती !

राजस्थान पुस्तक-व्यवसायी संघ

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के दशम वार्षिक अधिवेशन पर समस्त राजस्थान से आए हुए पुस्तक व्यवसायियों की एक सभा राजकीय प्रवास भवन में श्रीनाथ मोदी की अध्यक्षता में एक मई, ६५ को नौ बजे सम्पन्न हुई। प्रारम्भ में स्वागताध्यक्ष श्री दिनेश खरे ने प्रकाशक एवं पुस्तक-विक्रेता के सम्बन्धों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता दोनों एक-दूसरे की योग पूर्ति में कड़ी हैं। दोनों का कार्य एक-दूसरे के सहयोग के बिना असम्भव है। और यदि ये दोनों मिलकर चलें तो पुस्तक व्यवसाय की दिनोदिन उन्नति हो सकती है।

सभा में श्री झुन्नूलाल जी ने बताया कि राजस्थान के पुस्तक-विक्रेताओं के सामने राष्ट्रीयकृत पुस्तकों के क्रय और विक्रय में कौन-कौन सी बाधाएँ हैं। इसके साथ ही उन्होंने प्रकाशकों द्वारा जनरल पुस्तकों की लाईब्रेरी में सप्लाई में जो उचित एवं अनुचित बातें होती हैं, उन पर प्रकाश डाला।

सभा में पृथक्-पृथक् विचार रखे गये और सभी ने यह मत प्रकट किया कि कुछ व्यक्तियों की एक कमेटी का निर्माण किया जाये जो पुस्तक-व्यवसायी संघ के लिए नियमादि बनाए।

अगले दिन २ मई सन् ६५ को पुस्तक-व्यवसायी संघ की दो बैठकें हुईं, जिनमें उन्होंने अपनी विभिन्न समस्याओं को सुलझाया। तीन मई को प्रातः राजकीय प्रवास भवन में पुनः राजस्थान पुस्तक व्यवसायी संघ की सभा हुई और उन्होंने उस समय व्यवसाय को बल प्रदान करने वाले कई उपयोगी सुझाव पारित किए। राजस्थान पुस्तक व्यवसायी संघ की स्थापना इस दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण पग है। यदि अन्य राज्य भी राजस्थान का अनुकरण करें तो प्रकाशन व्यवसाय में फैली हुई बहुत-सी भ्रांतियाँ समाप्त हो सकती हैं।

इस स्थापना पर हिन्दी प्रकाशक संघ के मंच से संघ के प्रवक्ता श्री दीनानाथ मल्होत्रा ने कहा कि हिन्दी प्रकाशक संघ राजस्थान पुस्तक-व्यवसायी संघ की स्थापना पर हर्ष का अनुभव करता है। और वह अपने सदस्यों से आशा करता है कि वह पुस्तक-व्यवसायी संघ को पूर्ण सहयोग प्रदान करें। हिन्दी प्रकाशक संघ के सदस्य राजस्थान में जनरल पुस्तकों की सप्लाई स्वयं सीधे न करके उन पुस्तक-विक्रेताओं के माध्यम से ही करेंगे जो राजस्थान पुस्तक व्यवसायी संघ के सदस्य हैं। हिन्दी प्रकाशक संघ के सदस्य इस बात को भी सिद्धान्ततः स्वीकार करते हैं कि वे राजस्थान में उन्हीं पुस्तक-विक्रेताओं को व्यापारिक सुविधाएँ प्रदान करेंगे जो आपके सदस्य होंगे, अन्य को नहीं।

दिनकर जी की नयी पुस्तकें

लोकदेव नेहरू

पंडित जवाहर लाल नेहरू जी के विषय में दिनकर जी के वैयक्तिक संस्मरण जिनमें से अधिकांश संस्मरण आपने धर्मयुग में पढ़े होंगे। स्तालिन के दर्पण में जवाहरलाल जी के व्यक्तित्व की झाँकी और, अन्त में, गांधी जी के साथ जवाहरलाल जी के सम्बन्धों का अध्ययन और इतिहास जो १९१६ से आरम्भ होकर १९४८ में समाप्त होता है। समसामयिक राजनीति पर हिन्दी में यह अत्यन्त रोचक पुस्तक प्रकाशित हुई है।

मूल्य ५.००

आत्मा की आँखें

लारेन्स के भावों का आधार लेकर विरचित सत्तर कविताओं का संग्रह।

मूल्य ४.००

कोयला और कवित्व

दिनकर जी की स्फुट कविताओं का नवीनतम संग्रह। नयी होने पर भी ओजस्विनी और प्राणपूर्ण।

मूल्य ३.५०

दिनकर की सूक्तियां

दिनकर जी के समस्त काव्य-सागर में डूब कर चुने गये मोतियों का संग्रह।

मूल्य ३.००

मृत्ति तिलक

दिनकर जी की कुछ स्फुट कविताओं का संग्रह।

मूल्य २.००

मिलने का पता :—

उदयाचल

राजेन्द्र नगर, पटना-४

अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश का भाषण

माननीय राज्यपाल डॉ० संपूर्णानन्द जी, मुख्यमन्त्री श्री सुखाड़ियाजी, विद्वज्जनो तथा बन्धुओ !

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के दसवें वार्षिक अधिवेशन के लिए आज जब हम राजस्थान की राजधानी जयपुर में इकट्ठे हुए हैं तो देश की सीमाओं पर युद्ध के नगाड़े बजने लगे हैं। हमारे पड़ौसी देश हमारे राष्ट्र की सीमाओं का बलात् अतिक्रमण करने को प्रस्तुत दिखाई पड़ते हैं, और उन्होंने सशस्त्र छेड़-छाड़ भी आरम्भ कर दी है। पड़ौसी देशों की शत्रुता का बड़ा कारण शायद यह है कि उन्हें भारत का, अपनी विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से, समाजवाद और लोकतंत्र की ओर प्रगति करते देखना नहीं सुहाता। राष्ट्रीय प्रभुत्व को इस प्रकार मिली चुनौती हमेशा और सहर्ष स्वीकार करनी होती है। केवल राजस्थान की ही नहीं, हमारे देश भारत की भी सदा से यही परम्परा रही है। हमें परम विश्वास और दृढ़तापूर्वक आक्रान्ता का मुकाबला करना है, युद्ध की किसी आदिम पिपासा को शान्त करने के लिए नहीं, वरन् अपनी स्वतन्त्रता और अपने प्रभुत्व को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए।

प्रकाशकों का उत्तरदायित्व

हम प्रकाशकों को दृढ़प्रतिज्ञ होना चाहिए कि हम वैसा ही साहित्य प्रकाशित करेंगे, जो देश के बहुमुखी निर्माण में सहायक सिद्ध होगा, उसे एकता और राष्ट्रीयता के सूत्रों में बाँधेगा, जो समाज के मन को अस्वस्थ नहीं करेगा, उसे कुप्रवृत्तियों की ओर नहीं धकेलेगा। लोकमानस को प्रभावित करने के लिए इस विज्ञान और तकनीक के युग में जिन सार्वजनीन साधनों का उपयोग या दुरुपयोग होता है, प्रकाशन का स्थान उनमें महत्त्वपूर्ण है। यह साधन हमारे हाथों में है। प्रकाशकों में सामाजिक उत्तरदायित्व की सजीव सक्रिय भावना का होना इसलिए बहुत आवश्यक है।

प्रकाशन का कठिनसाध्य धन्धा

हम प्रकाशक एक ऐसे कठिनसाध्य धन्धे में लगे हैं जो व्यवसाय भी है और एक आधुनिक उद्योग भी, लेकिन जिसमें किसी सामान्य व्यवसाय के समान लाभ की अपेक्षा नहीं की जा सकती और न जिसे किसी उद्योग की तरह किसी प्रकार का संरक्षण ही प्राप्त हो सकता है। हम एक ऐसी वस्तु के निर्माण में व्यस्त रहते हैं जो किसी पार्थिव आवश्यकता को पूरा नहीं करती। पुस्तकों की माँग शिक्षा और ज्ञान की प्राप्ति के लिए हो सकती है, बौद्धिक विकास के लिए भी और मनोरंजन और पलायन के लिए भी। एक शिक्षा वह है जो स्कूलों और कॉलेजों में भर्ती होकर लेनी होती है और आज के युग में उसे ही शिक्षित कहा जाता है जो स्कूलों और कॉलेजों में से होकर उनकी परीक्षाओं के दरवाज़ों के रास्ते बाहर आ गया हो। आज शिक्षा उसे बेहतर व्यक्ति नहीं, बेहतर तकनीकी साधन बनाती है। आधुनिक परिवेश और परिस्थितियों में शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति की उत्पादन-क्षमताओं का विकास करना है, उसके व्यक्तित्व और मनुष्यत्व का नहीं। एक रूसी वैज्ञानिक ने तो खोज-बीन करके आँकड़े भी प्रस्तुत कर दिए हैं कि चार साल की प्राथमिक शिक्षा-प्राप्त किसी व्यक्ति के श्रम का मूल्य एक अशिक्षित व्यक्ति की अपेक्षा ४३ प्रतिशत अधिक होता है, यदि वह माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर ले तो १०८ प्रतिशत अधिक और यदि उच्चतर शिक्षा प्राप्त कर ले तो ३०० प्रतिशत अधिक।

शिक्षा और पाठ्य-पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण

हमारे देश में शिक्षा का आवश्यक साधन—पाठ्य-पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण की नीति अनेक राज्य सरकारों द्वारा अपना ली गई है। तृतीय पंचवर्षीय योजना में यह कहा गया था कि शिक्षा-सम्बन्धी समस्याओं में पाठ्य-पुस्तकों की समस्या बड़े महत्त्व की है और उसे सुलझाने की ओर अविलम्ब कदम उठाने चाहिएं। "पाठ्य-पुस्तकों के सम्बन्ध में जो विशेष बातें ध्यान में रखने की हैं, वे हैं उनकी वस्तु-सामग्री, उसे प्रस्तुत करने का ढंग, उनकी

छपाई, साज-सज्जा और उनका मूल्य । पाठ्य-पुस्तकों के चयन का तरीका भी इस प्रश्न का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है··· । केन्द्र और राज्यों को पाठ्य-पुस्तकों का मूल्य घटाने तथा उनमें समान रूप से कुछ राष्ट्रीय-ध्येयों को सम्मिलित रखने के उद्देश्य से उनके अधिक-से-अधिक संख्या में प्रकाशित करने के प्रयत्नों को समन्वित करने की जरूरत पड़ेगी ।" १९६१ में विभिन्न राज्यों के मुख्यमन्त्रियों के सम्मेलन ने केन्द्र से कुछ आदर्श पाठ्य-पुस्तकें तैयार करने के लिए कहा । केन्द्र ने यह कार्य नेशनल कौंसिल ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग को सौंपा, जिसके अधीन एक सेंट्रल कमेटी ऑन एजुकेशन पाठ्य-पुस्तकें तैयार करने में संलग्न है। हिन्दी और जीवशास्त्र की पाठ्य-पुस्तकें इस कमेटी द्वारा तैयार होकर प्रकाशित भी की जा चुकी हैं और केन्द्र द्वारा शासित प्रदेशों के स्कूलों में निर्धारित कर दी गई हैं। यदि इस परीक्षण द्वारा ये पाठ्य-पुस्तकें सफल सिद्ध हुईं तो अन्य राज्यों से इनके उपयोग की सिफ़ारिश की जाएगी । अन्य विषयों की पाठ्य-पुस्तकें भी तैयार की जा रही हैं ।

सेंट्रल कमेटी ऑन एजुकेशन के ध्येयों में ये दो ध्येय भी सम्मिलित हैं (१) पाठ्य-पुस्तकों को तैयार करना और करवाना तथा प्रकाशित करना और करवाना; (२) शिक्षा-संस्थाओं में उपयोग के लिए पाठ्य-पुस्तकों के उत्पादन में लगे हुए लेखकों, चित्रकारों, प्रकाशकों, पुस्तकालयाध्यक्षों आदि के सम्मेलनों और गोष्ठियों का आयोजन करना । अभी तक इस कमेटी ने पाठ्य-पुस्तकों की तैयारी और प्रकाशन का काम स्वयं ही किया है, करवाया नहीं है, जो कि इसके ध्येय के अन्तर्गत है । न कोई ऐसे सम्मेलन अथवा गोष्ठियाँ ही आयोजित की गई हैं जहाँ प्रकाशकों को निमन्त्रित किया गया हो । प्रकाशकों के पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन और वितरण-सम्बन्धी बरसों पुराने अनुभवों के तिरस्कार का परिणाम राज्यों द्वारा राष्ट्रीयकृत पुस्तकों के प्रकाशन और वितरण के कार्यान्वयन में प्रायः सभी राज्यों में दिखाई पड़ता है ।

राष्ट्रीयकृत पुस्तकों की दशा

कुछ वर्ष हुए मद्रास के हाईकोर्ट ने राज्य द्वारा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकों की कटु आलोचना की थी । महाराष्ट्र द्वारा हाल ही में प्रकाशित भूगोल की एक पाठ्य-पुस्तक पर तूफ़ान उठ खड़ा हुआ और परिणामस्वरूप राज्य के शिक्षा संचालक महोदय को इस्तीफा देना पड़ा था। दिल्ली में अंग्रेजी की एक पाठ्य-पुस्तक को लेकर लोकसभा तक में हंगामा मचा । उत्तर प्रदेश की इंटरमीजिएट कक्षाओं की फ़िज़िक्स की पुस्तकों में इन्द्रधनुष की रचना के बारे में ग़लत बयानियाँ पाई गई हैं । राजस्थान में राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित गणित की पुस्तकों में अभी तक मन-सेर रुपये-आने-पैसे और गज़-फुट का हिसाब पढ़ाया जाता है जबकि देश के कानून के अनुसार इनका उपयोग अपराध माना गया है । बंगाल की एक पाठ्य-पुस्तक में देश की कुछ सीमाओं को विदेशी क्षेत्र में दिखाया गया था। पंजाब की कुछ पाठ्य-पुस्तकों में मुख्यमन्त्री सरदार प्रतापसिंह कैरो के चित्र और उनके जीवन-सम्बन्धी कुछ पाठ सम्मिलित थे जो मन्त्रिमण्डल में परिवर्तन के बाद हटाये गए। बिहार विधान सभा के एक सदस्य श्री जगदीश शर्मा ने जो स्वयं एक अध्यापक भी हैं, २७ मार्च १९६५ को सभा में कहा कि राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित हिन्दी की पुस्तकों के प्रत्येक पृष्ठ में औसतन ५ से ६ ग़लतियाँ पाई जाती हैं। पुस्तकों के जो जाली संस्करण प्रकाशित होते हैं उनसे भी ज्यादा गलतियाँ इनमें देखने को मिलती हैं।

इस तालिका को लम्बा करने से कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होगा, और न देश और शिक्षा के हित में । यदि पाठ्य-पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण की नीति लाभप्रद और आवश्यक है तो उसके विरुद्ध तर्क प्रस्तुत करना ही हमारा उद्देश्य है । देश के स्वार्थ पर सब व्यक्तिगत स्वार्थ न्यौछार किये जा सकते हैं। लेकिन, क्योंकि सरकार कोई काम कर रही है, उसे सार्वजनिक छान-बीन, सतर्कता और आलोचना से सुरक्षित रखने के लिए एक यही कारण पर्याप्त नहीं है ।

पाठ्य-पुस्तकों में मुनाफा

क्या राष्ट्रीयकृत पुस्तकों के मूल्य कम किये जा रहे हैं ? ऐसा लगता है कि राज्य सरकारों को आय का एक नया ज़रिया मिल गया है । बिहार राज्य ने घोषित किया है कि १९६५-६६ के वर्ष में वह पाठ्य-पुस्तकों की ३५ लाख प्रतियाँ प्रकाशित करेगा, जिनकी बिक्री

से उसे ३० लाख रुपये की आय होगी। १९६४-६५ के वर्ष में मध्य प्रदेश की राज्य सरकार ने ११ लाख ७८ हजार रुपयों की लागत की पाठ्य-पुस्तकों की बिक्री २० लाख रुपयों में करके ८ लाख २२ हजार रुपयों का, अर्थात् ४० प्रतिशत मुनाफ़ा कमाया। राज्य सरकार ने घोषित किया है कि अगले वर्ष पाठ्य-पुस्तकों पर मुनाफे की इस दर को वह कम करेगी और केवल २१ प्रतिशत कमायेगी। हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि किसी प्रकाशक ने पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन में कभी इतना अधिक मुनाफ़ा नहीं कमाया। प्रकाशकों को प्रतियोगिता में भेजी गई पाठ्य-पुस्तकों के प्रारम्भिक संस्करणों पर काफ़ी अधिक रिस्क उठाना पड़ता रहा है, और फिर पुस्तकों का मूल्य क्या हो, इसका निर्णय सरकारी अधिकारियों के हाथ में ही रहा है। किसी प्रकाशक द्वारा प्रस्तुत पाठ्य-पुस्तक में भूलें दीखने पर उसे हज़ारों प्रतियों के संस्करण रद्द करने पर मजबूर किया जा सकता है और ऐसा अनेक बार हुआ भी है। लेकिन जब सरकार स्वयं ही पुस्तकें प्रकाशित करती हो तो भूलों के दीखने या दिखाए जाने पर उसे कौन हज़ारों प्रतियों को रद्द करने का आदेश दे सकता है? व्यवहार के इस प्रकार के दो तरीके ही सार्वजनिक क्षोभ पैदा करते हैं, लेकिन अभी तक इस हद तक नहीं कि सरकारों को ठीक रास्ते को पकड़ने पर मजबूर किया जा सके।

पाठ्य-पुस्तकों का वितरण

राष्ट्रीयकृत पाठ्य-पुस्तकों का सरकारी वितरण तो और भी अधिक असन्तोषप्रद रहा है। पुस्तकें समय पर छप नहीं पातीं। स्कूल खुल जाते हैं, और बच्चों को पुस्तकें मिल नहीं पातीं। किस राज्य में इस बात के विरोध-प्रदर्शन में जलसे नहीं हुए और जुलूस नहीं निकले? प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित होने वाली पाठ्य-पुस्तकों को लेकर ऐसी शिकायतें तभी उठी हैं जबकि उन्हें लाखों की संख्या में छपने-वाली पुस्तकों के मुद्रण के लिए आवश्यकता से कम समय दिया गया हो, तब भी गाँव-गाँव में वे पुस्तकें पहुँचाने की मुस्तैदी से व्यवस्था कर रहे हैं। सरकारी लाल फीताशाही पाठ्य-पुस्तकों के वितरण को अपनी जकड़ में कैसे फांस रही है, इसका एक नमूना देखिए। आन्ध्र प्रदेश की राज्य सरकार ने निश्चय किया है कि जो पुस्तक-विक्रेता सरकार द्वारा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकें खरीदना चाहें, वे एक रुपये की कोर्ट फ़ीस लगे कागज़ पर प्रार्थना-पत्र भेजें, फिर डेढ़ रु० के सरकारी कागज़ पर सरकार से अनुबन्ध करें। कमीशन, यदि वे सरकार के मुख्य मुद्रणालय से पुस्तकें खरीदते हैं तो १० प्रतिशत मिलेगा, यदि विभिन्न क्षेत्रीय अधिकारियों से तो ८ प्रतिशत। नकद रुपया पहले जमा कराने पर ही ये पुस्तकें और यह कमीशन मिलता है। यह तरीका क्या पुस्तकें बेचने का है या वितरण में हर सम्भव रुकावटें डालने का? राजस्थान की सरकार पुस्तकें बेचने वाली सहकारी समितियों को पाठ्य-पुस्तकों पर १५ प्रतिशत कमीशन देती है और पुस्तक-विक्रेताओं को इससे २½ प्रतिशत कम। यह भेद क्यों? इस प्रकार का भेद-विभेद तो वैधानिक दृष्टि से भी अनुचित है, और न यह सहकारी आन्दोलन को समर्थन देने का कोई उचित ढंग ही है।

पाठ्य-पुस्तकें और शिक्षा के स्तर का ह्रास

देश में शिक्षा के स्तर के ह्रास के प्रति शिक्षा-अधिकारी आज चिन्तित हैं और वे इस तथ्य से भी परिचित हैं कि इनके लिए आज की पाठ्य-पुस्तकें एक सीमा तक उत्तरदायी हैं। इन पाठ्य-पुस्तकों का आज प्रायः सभी राज्यों में प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं के लिए राष्ट्रीयकरण हो चुका है। इस प्रश्न पर अवश्य विचार करने की ज़रूरत है कि क्या पाठ्य-पुस्तकों के क्षेत्र से प्रकाशकीय प्रतियोगिता का हटाया जाना अच्छा सिद्ध हुआ है?

एक सुझाव

यदि यह दावा है कि सरकारी विभाग पाठ्य-पुस्तकों की बेहतर सामग्री एकत्रित करने में अधिक निपुण है, तो स्पष्ट ही है कि उनकी शुद्ध छपाई और समयोपरि वितरण में वे कतई निपुण नहीं हैं। इस बात पर केन्द्र और राज्य सरकारों को अवश्य ध्यान देने की आवश्यकता है कि वे क्यों न पाठ्य-पुस्तकों के मुद्रण और वितरण के कार्य में प्रकाशकों के अनुभव का उपयोग किया करें? यह प्रसन्नता का विषय है कि महाराष्ट्र राज्य की सरकार ने इस वर्ष से पाठ्य-पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण की नीति का त्याग कर दिया है। इसकी घोषणा अभी हाल ही में राज्य के शिक्षा-मन्त्री महोदय ने की।

हिन्दी में विभिन्न-विषयक पुस्तकों का प्रकाशन

आज किसी देश की सुरुचि, सभ्यता और संस्कृति का परिचय वहाँ के पुस्तक-प्रकाशन के स्तर और पुस्तकों की वस्तु-सामग्री से मिल सकता है। पाठ्य-पुस्तकों और कथा-उपन्यास से नहीं, वरन् विचार-प्रधान पुस्तकों से, विभिन्न मानविकी, वैज्ञानिक और तकनीकी विषय की पुस्तकों से। यह दुर्भाग्य की बात है कि हिन्दी में इन्हीं विषयों की पुस्तकें कम प्रकाशित होती हैं। हिन्दी के प्रकाशक का मुख्य कार्य-क्षेत्र कथा-उपन्यास, बाल व प्रौढ़-साहित्य तथा पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन का ही है। इसका कारण हिन्दी में इन विषयों के पाठकों की कमी नहीं है, क्योंकि किसी भी भाषा व देश में इन विषयों की पुस्तकों का प्रकाशन पुस्तकालयों से आने वाली माँग पर ही आधारित होता है।

देश में पुस्तकालयों के संगठन का अभाव

अनुमान लगाया गया है कि इंगलैंड और अमेरिका में भी इन विषयों पर प्रकाशित पुस्तकों के ९० प्रतिशत भाग की खपत पुस्तकालयों में ही होती है। हमारे देश में पुस्तकालय-आन्दोलन अभी अपनी शैशवावस्था में ही है। पुस्तकालयों का महत्त्व अभी केन्द्र व राज्यों की सरकारों द्वारा समझा नहीं गया है। १९६५ के आरम्भ में देश के १६ राज्यों में से १२ राज्यों में तथा केन्द्र द्वारा शासित ९ प्रदेशों में से ४ में केन्द्रीय राज्य-पुस्तकालय थे, देश के कुल ३२७ जिलों में से १९७ में ज़िला पुस्तकालय, देश-भर में फैले ५,२२७ विकास-खण्डों में से १,३९४ में विकास-खण्ड पुस्तकालय तथा देश के कुल ५,६६, ८७८ गाँवों में से २३, ९४९ गाँवों में ग्राम-पुस्तकालय, लेकिन इनकी स्थिति वास्तव में दयनीय है। विभिन्न राज्यों में राज्य के सब प्रकार के पुस्तकालयों पर खर्च की औसत १९६४-६५ में ७,६८, ७०० रुपये थी। इसी वर्ष गैर-सरकारी पुस्तकालयों को दिये एक अनुदान की औसत रकम उड़ीसा में १६ रुपये और उत्तर प्रदेश में ८१८ रुपये रही। १९६३-६४ में जबकि सब राज्यों ने प्रति व्यक्ति ६ रुपये ४० पैसे खर्च किये, पुस्तकालयों पर प्रति व्यक्ति किये गए खर्च की औसत केवल २.९ पैसे थी, अर्थात् ३ पैसे से भी कम! यह तो सारे देश में फैलाये गए खर्च की औसत है; पंजाब ने प्रति व्यक्ति पुस्तकालयों पर एक पैसे का पचासवाँ हिस्सा-भर खर्च किया और बंगाल ने ९.३ पैसे।

१९६५ के आरम्भ में देश के पुस्तकालयों में जन-संख्या के प्रति १११ व्यक्तियों के पीछे केवल १ पुस्तक मौजूद थी, अर्थात् प्रति १०,००० व्यक्तियों के पीछे केवल ९० पुस्तकें। हर १००० व्यक्तियों के पीछे इन पुस्तकालयों के रजिस्टर्ड पाठकों की संख्या केवल १ थी और प्रति २००० व्यक्तियों के पीछे वर्ष में पुस्तकालय से ३ पुस्तकें पढ़ने के लिए ली गईं।

राज्यों के केन्द्रीय राज्य-पुस्तकालयों पर किये गए खर्च की औसत एक लाख पचास रुपये आती है; आन्ध्र प्रदेश ने अपने केन्द्रीय पुस्तकालय पर १९६३-६४ में २,१३,९०० रुपये खर्च किए और राजस्थान ने केवल १६,००० रुपये। ये पुस्तकालय भी प्राप्त धन-राशि का केवल एक-तिहाई ही पुस्तकों की खरीद पर खर्च कर पाते हैं, शेष कर्मचारियों तथा अन्य वस्तुओं की खरीद पर व्यय होता है।

शिक्षा-संस्थाएँ और पुस्तकालय

१९६५-६६ में देश-भर में ४,१५,००० प्राइमरी स्कूल, ५७,७०० मिडिल स्कूल, २१,८०० सेकण्डरी स्कूल तथा २,२९७ कॉलेज (१९६३-६४) हैं। देश में इस वर्ष ६२ विश्वविद्यालय हैं तथा ९ अन्य शिक्षा-संस्थान, जिन्हें विश्वविद्यालयों के समान मान लिया गया है। देश में पुस्तकों की इतनी बड़ी सम्भावित मार्केट है, लेकिन साहित्येतर पुस्तकों की बिक्री केवल इसीलिए नहीं बढ़ रही, क्योंकि पुस्तकालयों का संगठन ठीक प्रकार से नहीं हो सका और न पुस्तकालयों के लिए उचित मात्रा में कोष ही जुटाया जा सका है। इंगलैंड और अमरीका में स्थानीय नगरपालिकाएँ आदि शहरी सम्पत्ति पर पुस्तकालय-कर लगाकर अपने पुस्तकालयों का संवर्द्धन करती हैं और पुस्तकालयों की स्थापना और उनकी निरन्तर वृद्धि को नगरपालिकाओं के मुख्य कर्तव्यों में से एक गिना जाता है। पुस्तकालयों के लिए इस प्रकार धन जमा करने का कानून हमारे देश में अभी केवल दो राज्यों—मद्रास और आन्ध्र प्रदेश—ने ही बनाये हैं। स्पष्ट है कि जब तक विचार-प्रधान पुस्तकें खरीदने का कोई सार्वजनिक साधन नहीं

बन पाता, हिन्दी और दूसरी भाषाओं में भी इन विषयों की पुस्तकों की कमी रहेगी। इस कमी के लिए न पाठकों को और न प्रकाशकों को ही कोसा जा सकता है।

अंग्रेजी भाषा के साहित्य की बिक्री

यह ठीक है कि आज हमारे देश में भी अंग्रेजी में विविध विषयों की पुस्तकों का प्रकाशन बड़ी संख्या में हो रहा है। देश की भाषाओं से अंग्रेजी की स्थिति प्रायः बिलकुल उलटी है। जहाँ हमारी अपनी भाषाओं में सबसे अधिक कहानी-उपन्यास की पुस्तकें छपती हैं, देश में अंग्रेजी के प्रकाशक इन विषयों की शायद एक भी पुस्तक नहीं छापते। वे जिन विषयों की जनरल पुस्तकें छापते हैं, उन पर भारतीय भाषाओं में न के बराबर पुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं। कारण वही है—अंग्रेजी भाषा के प्रकाशकों को अपने जनरल प्रकाशनों के लिए देश के पुस्तकालयों से काफ़ी समर्थन मिलता है। हिन्दी में प्रकाशित साहित्येतर और विशिष्ट मानविकी विषयों की पुस्तकों के अतिरिक्त पुस्तकालय प्रायः अन्य जनरल पुस्तकों की खरीद ही नहीं करते। उच्च शिक्षा-संस्थाओं के अध्यापक, क्योंकि अपने सन्दर्भ के लिए अंग्रेज़ी की पुस्तकें ही चाहते हैं, अपने विषयों के अन्तर्गत आने वाली सामान्य पुस्तकों को भी खरीदने के हक़ में नहीं होते। इस प्रकार किसी प्रकार के समर्थन के अभाव में अनेकानेक विषयों पर हिन्दी की पुस्तकें प्रकाशित नहीं हो पातीं।

हिन्दी के विकास में सरकारी प्रयत्न

राज्यभाषा के रूप में घोषित होने के बाद हिन्दी की जो छीछालेदर हुई है, उसका तो कोई अन्त नहीं है। विधान ने १५ वर्षों का समय अंग्रेजी को राज्य और सम्पर्क-भाषा के पद से हटाए जाने तथा हिन्दी को उस पद को अपनाने के लिए दिया था। लेकिन ये १५ वर्ष वास्तव में गँवा दिये गए। हिन्दी के विशेष और आवश्यक विकास की ओर कदम नहीं बढ़ाये गए। सरकारी और गैर-सरकारी प्रयत्नों में किसी प्रकार का सहयोग यदि पैदा कर लिया जाता तो १५ वर्षों में भी विभिन्न विषयों पर काफ़ी साहित्य प्रकाशित किया जा सकता था। केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय पर लगाए जाने वाले इस अभियोग में सचाई है कि उसने हिन्दी के उचित विकास के प्रति उपेक्षा बरती है। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, जिसमें हिन्दी के मूर्धन्य लोग व्यापे हुए हैं, अब तक केवल अपनी अकर्मण्यता का सबूत ही दे सका है।

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की योजनाएँ

विभिन्न मानविकी और वैज्ञानिक विषयों पर हिन्दी में पुस्तकें लाने की दो मुख्य योजनाएँ इसके सामने हैं : (१) एक योजना प्रकाशकों के सहयोग से पुस्तकों के अनुवाद तथा प्रकाशन की है, जिसमें मार्च १९६५ तक २२० पुस्तकों की सूचियाँ तो बना ली गई हैं, लेकिन छपकर केवल १४ ही तैयार हुई। (२) दूसरी योजना विश्वविद्यालय स्तर की मानक-पुस्तकों के अनुवाद और प्रकाशन की है, जिसके अन्तर्गत ५२७ पुस्तकों की सूचियाँ तैयार हो चुकी हैं, जो ४१ एजेंसियों के माध्यम से छपेंगी, लेकिन इसमें भी पिछले कई वर्षों के श्रम और लाखों रुपये के व्यय के बावजूद अभी केवल १४ पुस्तकें ही प्रकाशित हो सकी हैं। इन १४ में से भी केन्द्रीय हिन्दी-निदेशालय ने ९ पुस्तकें स्वयं छापी हैं। यह स्पष्ट है कि इन दोनों योजनाओं के अन्तर्गत बनी सूची की ९४७ पुस्तकों में से अधिकांश अन्ततः नहीं छपेंगी; जब तक उनके छपने की बारी आएगी वे आउट-आफ़-डेट भी हो चुकी होंगी। ज्ञान-विज्ञान क्षेत्र की पुस्तकों की सामग्री आज की वेग से विकसित टेक्नॉलाजी और आविष्कारों की पृष्ठभूमि में बहुत जल्दी पुरानी पड़ जाती है। इन दोनों योजनाओं पर १९६४-६५ के एक वर्ष में १३ लाख ९० हज़ार रुपया खर्च किया गया और ६५-६६ में २३ लाख ८८ हज़ार रुपया खर्च किया जाएगा। इन दो वर्षों में जितना रुपया इस प्रकार खर्च किया जाएगा, यदि प्रकाशकों को इन्हीं विषयों की पुस्तकें प्रकाशित करने के लिए दिया जाता तो वे ६-६०० पृष्ठों की, डिमाई १६ पेजी साइज़ की दो-दो हज़ार के संस्करणों में ३७८ सजिल्द पुस्तकें प्रस्तुत कर सकते थे ! इसमें ६-६०० पृष्ठों की पुस्तकों का अंग्रेज़ी से हिन्दी अनुवाद का खर्च भी शामिल है। लेकिन तब हिन्दी के नाम पर इतनी संस्थाएँ, इतने कर्मचारी, इतने अधिकारी इतने वर्ष क्या करते ? सार्वजनिक धन का इस तरह अपव्यय तो हो ही रहा है, दुर्भाग्य तो बेचारी हिन्दी का है जिसकी देखभाल और पालन-पोषण का दायित्व इन लोगों के जिम्मे आ पड़ा है !

एक नई योजना

केन्द्रीय हिन्दी-निदेशालय ने इधर एक नई योजना बना ली है और उस पर मंत्रालय ने खर्च करना भी आरंभ कर दिया है। यह योजना है हिन्दी के प्रमुख लेखकों की ग्रंथावलियों का प्रकाशन। स्पष्ट है कि खड़ीबोली हिन्दी के किसी भी मूर्धन्य और आधुनिक लेखक के संकलन इस योजना में नहीं छप सकते, क्योंकि उनके कापीराइट अन्यत्र सुरक्षित हैं। तब इस योजना में भारतेन्दु-पूर्व-लेखकों के संकलन ही एक संहत खण्ड में छापने होंगे, और हुआ भी यह है। रहीम, गंग और नागरीदास की ग्रंथावलियाँ सम्पादित होकर प्रकाशनार्थ तैयार हैं। इन ग्रंथावलियों का होगा क्या ? फिर, यदि बिक्री की दृष्टि से वे किंचित्-मात्र भी सफल हुईं तो कापीराइट सुरक्षित न होने से कोई भी प्रकाशक इन्हें छाप सकता है और सरकारी प्रयास तब धरा-का-धरा रह जाएगा। ये कैसी योजनाएँ किस उर्वर दिमाग़ में हिंदी के विकास के नाम पर बन रही हैं ?

राज्य सरकारों की उपेक्षा

भारत सरकार के शिक्षा-मंत्रालय ने देश के विभिन्न राज्यों को लिखा था कि वे मानविकी, वैज्ञानिक और तक-नीकी विषयों की प्रामाणिक अंग्रेज़ी पुस्तकों के क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद तैयार करने और उन्हें प्रकाशित करवाने में राज्यों को वित्तीय सहायता देने के लिए तैयार हैं। देश के सब राज्यों ने इसे स्वीकार तक नहीं किया। केवल दस राज्यों ने सिद्धांत रूप से इसे माना। प्रामाणिक पुस्तकों की इस सूची में ४५० पुस्तकें हैं। केन्द्र और राज्यों के सहयोग के बावजूद ४५० में से केवल १६ पुस्तकें मार्च ६५ तक छप सकी हैं। सरकारी सूझबूझ और कार्यवाही की गति बस इतनी है ! अफ़सोस यही है कि यह सब अनर्थ लोगों के इकट्ठा किये गये टैक्सों से सम्पन्न हो रहा है और इसके पीछे प्रकाशकों के प्रति सरकारी अधिका-रियों की अविश्वास की भावना है। यदि क्षेत्रीय-भाषाओं के प्रकाशकों के सामने इस प्रकार की कोई योजना रखी जाती, उन्हें पैसा देने के स्थान पर यदि उनसे संख्या-विशेष में इन पुस्तकों की प्रतियाँ ही खरीद ली जातीं तो अधि-कांश पुस्तकें अब तक छपकर बाजार में आ जातीं।

नेशनल बुक ट्रस्ट

सरकारी संस्थाओं द्वारा धन के अपव्यय का एक और नमूना देकर मैं इस प्रकरण को समाप्त करूँगा। नेशनल बुक-ट्रस्ट ने १९६२-६३ में कुल २ लाख ८० हजार रु० खर्च किया था। इसमें से पुस्तकों के प्रकाशन पर, जिस एक उद्देश्य के लिए इस ट्रस्ट की स्थापना ही हुई है, इसमें से केवल ६३ हज़ार रुपये ही खर्च किये गए, अर्थात्—पुस्तकों पर किये गए खर्च से लगभग ३४%अधिक पदा-धिकारियों और कर्मचारियों के वेतन और भत्ते-पानी पर खर्च किया गया। इस सबके बावजूद नेशनल बुक ट्रस्ट ने अब तक कौन-सी ऐसी विशिष्ट पुस्तक का प्रकाशन किया है जो ग़ैर-सरकारी प्रकाशक नहीं कर सकते थे ? फिर, ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित पुस्तकों में से सबसे अधिक अंग्रेजी की पुस्तकें ही बिकीं, अर्थात् अंग्रेज़ी की ५८% कन्नड़ की १८%, तमिल की १७%, गुजराती की १५% और तेलुगु की १२%, इन भाषाओं में छपी पुस्तकों की शेष प्रतियों का क्या होगा ? इस प्रकार की ग़लत किस्म की पुस्तकों का प्रकाशन यदि कोई प्रकाशक करता तो उसका दीवाला पिट गया होता, लेकिन सरकारी संस्थाओं पर किसी प्रकार का अनुशासन नहीं है।

सरकार प्रकाशकों से सहयोग ले

भारत सरकार के शिक्षा-मन्त्रालय से हमारा अनुरोध है कि वह हिन्दी के भण्डार की पूर्ति के लिए कोई ऐसी योजना बनाए जिसका यथार्थ से कोई सम्बन्ध हो। प्रका-शक उन्हें किसी पुस्तक की ३ हज़ार प्रतियों में से १ हज़ार प्रतियाँ बेचने की खातिर किसी एक पुस्तक के प्रकाशन में चार-चार और पाँच-पाँच वर्ष नहीं रुके रह सकते। संबं-धित विभागों से अपने पत्रों के उत्तर पाने के लिए तीन-तीन और चार-चार महीने की देर उन्हें सह्य नहीं है। यदि सरकार महज़ इस बात का इशारा भी कर दे, कि कैसी पुस्तकों का प्रकाशन वह देश-हित में चाहती है, और उप-युक्त पुस्तकें मिलने पर वह उनकी एक-एक हजार प्रतियाँ देश के पुस्तकालयों के लिए खरीद सकती है, तो वह देखेगी कि उसके पास उपयुक्त पुस्तकों के हिन्दी-संस्करण किस तेज़ी से पहुँचते हैं। निश्चय ही वह स्वयं अपने अर्द्धसरकारी साधनों की सहायता से कोई विशेष सफलता

नहीं प्राप्त कर सकती—सफलता की अपेक्षा उस सीमा तक है कि हिन्दी पर कोई यह आक्षेप न कर सके कि उसके प्रकाशित साहित्य का कोई पक्ष-विशेष कमज़ोर है। पुस्तकों के प्रकाशन के लिए जिस प्रकार के संयोजकों की आवश्यकता होती है, वे उसके पास नहीं हैं, कभी नहीं होंगे, क्योंकि सरकारी कामकाज के तौर-तरीकों में वे अपनी विज्ञता का दुरुस्त उपयोग नहीं कर सकते। उनकी सब उपक्रमात्मक प्रवृत्ति रेड टेपिज़्म में कुचलकर मर जायगी। इसी सम्मेलन में दसों ऐसे प्रकाशक हैं जो प्रतिवर्ष सौ से अधिक उत्कृष्ट पुस्तकों का प्रकाशन करते हैं। क्यों नहीं उनके सामर्थ्य का सदुपयोग देश-हित में किया जाता ? प्रकाशक खाली नहीं बैठे हैं, अपना धन्धा बखूबी चला रहे हैं। लेकिन आवश्यक है कि हिन्दी के अभावों की पूर्ति उनके सहयोग से, और जल्दी ही, की जाए। हमारे तर्कों का अभिप्राय यह न समझा जाए कि प्रकाशक केवल सरकार-मुखापेक्षी होकर बैठे हैं।

वैज्ञानिक साहित्य का प्रकाशन

यही बात बालोपयोगी और प्रौढ़ोपयोगी पुस्तकों के प्रकाशन के क्षेत्र में है। सरकार कहती है कि देश में वैज्ञानिक वातावरण तैयार करने के लिए विज्ञान-सम्बन्धी पुस्तकों की बड़ी आवश्यकता है। तृतीय योजना से चौथी पंचवर्षीय योजना में इस क्षेत्र की पुस्तकें खरीदने के लिए कहीं अधिक रकम सुरक्षित की जा रही है। परन्तु होगा क्या ? प्रतिवर्ष मार्च मास में अधिकारी इन विषयों की पुस्तकें खरीदना चाहेंगे और उपयुक्त पुस्तकें, उपयुक्त संख्या में उन्हें मिलेंगी नहीं। तब जो भी पुस्तकें मिलेंगी, वे खरीद लेंगे और पैसे का फिर अपव्यय होता रहेगा।

यह क्यों सम्भव नहीं है कि केन्द्र और राज्य-सरकारें लगभग एक वर्ष पहले यह घोषणा कर दें कि उन्हें किसी वर्ष में किन विषयों की, किस स्तर की पुस्तकों की, कितनी-कितनी प्रतियाँ चाहिएँ ? अगली पंचवर्षीय योजना में विशेष रूप से किस प्रकार की पुस्तकों की आवश्यकता होगी, इसकी घोषणा क्यों नहीं समय रहते हो सकती ? यदि विज्ञान की पुस्तकों की आवश्यकता है तो किस उम्र के बच्चों के लिए ? किस स्तर का ज्ञान ये पुस्तकें दे सकें ? यदि इस प्रकार की कोई निर्देशिका प्रकाशकों के लिए छप सके तो आवश्यकता की सब पुस्तकें उपलब्ध की जा सकती हैं। प्रकाशकीय प्रतियोगिता के कारण पुस्तकें छपकर इस आशा से बड़ी संख्या में तैयार हो जाएँगी कि यदि वे उत्कृष्ट सिद्ध हुईं तो उनकी काफी प्रतियां खरीदी जा सकती हैं। इतनी थोड़ी-सी योजना बना पाना क्यों सम्भव नहीं है, जबकि हम बीस-बीस हज़ार करोड़ रुपये की पंचवर्षीय योजनाएँ बना रहे हैं ? महज इतना-सा ध्यान रखने का परिणाम यह होगा कि जिस प्रकार की पुस्तकों की आवश्यकता आयोजकों ने आँकी है, वैसी ही पुस्तकें देश के पुस्तकालयों में पहुँच सकेंगी।

पुस्तकें पढ़ने की रुचि का अभाव

हमारे देश के प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री के २९ मार्च '६५ को नेशनल बुक ट्रस्ट के एक सम्मेलन के सामने दिये गए इस भाषण का हम पुस्तक-व्यवसायियों पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा कि वे पुस्तकें नहीं पढ़ते ! उनके पास पुस्तकें पढ़ने के लिए आवश्यक समय का नितान्त अभाव है। साथ ही उन्होंने लोगों से अपील की की वे पुस्तकें पढ़ने की अधिक आदत डालें। उन्होंने यह अपील भी की कि पुस्तकों के मूल्य कम होने चाहिएँ।

लोगों में पुस्तकें पढ़ने और खरीदने की रुचि बढ़ाने के लिए एक बड़े अभियान की आवश्यकता है। विज्ञापन के आज के युग में किसी भी चीज़ के लिए माँग पैदा की जा सकती है, किसी भी आदत को फ़ैशनेबल बनाया जा सकता है। पुस्तकों को इस प्रकार के प्रयत्नों द्वारा स्टेटस सिम्बल देने की आवश्यकता है। ऐसे अभियान के लिए भारत सरकार और यूनेस्को से सहायता मिलनी चाहिए, क्योंकि इसका उद्देश्य व्यावसायिक उन्नति ही नहीं, देश की जनता का सांस्कृतिक अभ्युत्थान भी है।

विदेशों में पुस्तक-व्यवसाय को सरकारी सहायता

दुनिया के सभ्य देशों में उनके यहाँ प्रकाशित पुस्तकों के विश्वव्यापी प्रचार-प्रसार को कितना महत्त्वपूर्ण समझा जाता है, यह इंगलैण्ड, अमरीका और रूस की सरकारों के हिन्दुस्तान में किये जाने वाले प्रयत्नों से जाहिर है। १९६४ के अन्त तक इंगलैण्ड की सरकार की सहायता से कम विकसित देशों में उपयोग के लिए वहाँ की १०० से

अधिक पुस्तकों के सस्ते संस्करणों की लगभग ३० लाख प्रतियाँ प्रकाशित की गई थीं। इसी तरह अमरीका की वित्तीय सहायता से वहाँ की लगभग २०० मानक पाठ्य-पुस्तकों के सस्ते संस्करण भारत में उपलब्ध किये जा चुके हैं। ६ अप्रैल १९६५ को बुक डेवलपमेण्ट कौंसिल के नाम से इंगलैण्ड में एक नई संस्था की स्थापना हुई है, जिसके अध्यक्ष वहाँ की पिछली सरकार के विदेश-मंत्री श्री पैट्रिक गॉर्डन वॉकर हैं। इस कौंसिल का काम यह देखना होगा कि दुनिया के कुछ चुने हुए देशों की पुस्तक-सम्बन्धी आवश्यकताएँ क्या हैं और इंगलैण्ड उन्हें किस प्रकार पूरा कर सकता है। यह कौंसिल दुनिया के सब प्रमुख नगरों में कम-से-कम एक ऐसी दूकान को पूरी मदद इस विचार से देगी कि वहाँ इंगलैण्ड में प्रकाशित पुस्तकों का प्रतिनिधि संकलन सदा मिल सके। प्रेज़िडेण्ट जॉनसन की सरकार के एक अर्थशास्त्री श्री रॉबर्ट के० शॉर्के गत वर्ष हिन्दुस्तान आये थे। अमरीका लौटकर उन्होंने २७ दिसम्बर १९६४ को अमरीका के प्रकाशकों को बतलाया कि हिन्दुस्तान पुस्तकों की बहुत बड़ी मार्केट है और अंग्रेजी में छपी हुई पुस्तकें किस प्रकार भारत में इंगलैण्ड, अमरीका, नेदरलैंड्स और जापान से आ रही हैं। उन्होंने कहा कि इस वक्त आयात होने वाली पुस्तकों का ५३% भारत में इंगलैण्ड से आता है। उन्होंने यह भी कहा कि यद्यपि भारत में अच्छी तरह से अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों की संख्या अमरीका के भारत-स्थित अधिकारियों के अनुमान से ६० लाख और ९० लाख के बीच है, यहाँ अंग्रेज़ी की पुस्तकों की खपत फिर भी क्रमशः बढ़ेगी। रूस की सरकार ने भी पिछले कुछ वर्षों से विज्ञान और तकनीक से सम्बन्ध रखने वाले अपने साहित्य के अंग्रेज़ी और कुछ भारतीय भाषाओं तक में अनुवाद छापने आरम्भ किये हैं और भारत में उनकी खपत बढ़ रही है।

हमारी सरकार द्वारा उपेक्षा

हमारी सरकार ही पुस्तकों के प्रति उपेक्षा क्यों करती है? क्यों नहीं वह ऐसा कोई कदम उठा सकती कि देश में पुस्तकों की खपत बढ़े और सब विषयों पर ज़्यादा पुस्तकें प्रकाशित हों? यदि अग्रगामी देशों की सरकारों को इस ओर प्रगतिशील होना पड़ता है तो हमारे लिए तो यह और भी आवश्यक है।

शास्त्रीजी ने दिल्ली में दिये गए अपने वक्तव्य में यह भी कहा था कि पुस्तकों के दाम कम होने चाहिएँ। लेकिन वस्तुस्थिति क्या है? कागज के मूल्य पिछले कुछ वर्षों से निरन्तर बढ़े हैं। गत्ते के मूल्य में लगातार वृद्धि हुई है। छापेखाने जिन स्याहियों का इस्तेमाल करते हैं, उनके दाम बराबर बढ़ते जा रहे हैं। छपाई की दरें चढ़ती जा रही हैं, क्योंकि छापेखाने के मालिकों को नये कानूनों के अनुसार कर्मचारियों को अनेक ऐसी सुविधाएँ देनी पड़ रही हैं जो पहले नहीं दी जाती थीं और यह उचित भी है। फिर पुस्तकों के दाम घटेंगे कैसे? कागज़ का मूल्य इंगलैण्ड, अमरीका और जापान में मिलने वाले कहीं अच्छे कागज़ के मूल्य की तुलना में हिन्दुस्तान में कहीं ज़्यादा है; इन तीनों देशों में छपाई की दरें भी हिन्दुस्तान में छपाई की दरों से कहीं सस्ती हैं। पुस्तकों को डाक व रेल से भेजने के भाड़ों में भी वृद्धि हुई है। केवल प्रकाशक का मुनाफ़ा हिन्दुस्तान में बाहर के देशों की अपेक्षा कहीं कम है। अब पुस्तकों के मूल्य कम हों तो किस प्रकार? इस कमी के लिए शायद एक रास्ता बाकी है और वह यह कि पुस्तकों के संस्करण अधिक प्रतियों के होने लगें। यदि सरकार ने पुस्तकालयों को उचित अनुपात में अनुदान और वित्तीय सहायता देना शुरू किया, तो यह भी सम्भव हो सकेगा कि हम लोग पुस्तकों के दाम आज की अपेक्षा कम कर सकें।

विदेशी सरकारों को सुविधाएँ

हमारी सरकार ने जो इंगलैण्ड, अमरीका और रूस को उच्च शिक्षा के लिए अपनी पाठ्य-पुस्तकों के सस्ते अंग्रेज़ी संस्करण हिन्दुस्तान में विशेष रूप से प्रचारित करने की सुविधाएँ दी हुई हैं, उसके साथ-साथ यह परम आवश्यक है कि भारतीय लेखकों द्वारा लिखित और भारतीय प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के प्रकाशन और वितरण को विशेष समर्थन देने की कोई योजना भी वह बनाए। हम हमेशा के लिए पुस्तकों-सम्बन्धी अपनी आवश्यकता के लिए विदेशों पर निर्भर नहीं रह सकते

किसी स्वाभिमानी देश के नागरिक यह सहन नहीं कर सकते कि उनके बच्चों की शिक्षा विदेशों से आई हुई पाठ्य-पुस्तकों के माध्यम से ही हो। देश के यह परम हित में है कि देश के लेखकों और प्रकाशकों को उपयुक्त पुस्तकें लिखने और प्रकाशित करने के लिए अधिक-से-अधिक प्रेरणा दी जाए। क्या भारत सरकार ने ऐसी कोई योजना बनाई है ?

सहायता के लिए एक वित्त कोश

आज हिन्दी के प्रकाशक उसी स्तर का सन्दर्भ-साहित्य प्रकाशित करने को उत्सुक हैं जैसा कि विदेशों में पाया जाता है। इस प्रकार के साहित्य के प्रकाशन की आवश्यकता से किसी को इनकार नहीं हो सकता। कठिनाई यह है कि प्रकाशन के धन्धे के प्रति अभी पूंजी आकर्षित नहीं हुई है। अपनी सक्रियताओं के विकास के लिए हिन्दी-प्रकाशकों के पास उपयुक्त वित्तीय सुविधाएँ नहीं हैं। सरकार ने अच्छी फ़िल्म बनाने वालों के लिए ब्याज की सस्ती दरों पर ऋण देने के लिए एक कोश बना रखा है। छोटे और बड़े उद्योगों को अनेकविध वित्तीय सहायता प्राप्य है। प्रकाशन को यदि देश में बढ़ाना है तो क्यों नहीं कोई ऐसा केन्द्रीय कोश बनाया जा सकता, जिससे कि उनकी प्रकाशन-सम्बन्धी योजनाएँ देख-जाँचकर प्रकाशकों को ब्याज की सस्ती दरों पर ऋण मिल सके ?

वास्तव में पुस्तकों तथा उनसे सम्बन्धित व्यवसायों की समस्याओं पर अभी तक योजना-आयोग के निपुण सदस्यों का ध्यान भी नहीं गया है।

अपर्याप्त सुविधाएँ

यदि प्रकाशन-सम्बन्धी समस्याओं पर, जो देश की वर्तमान और भावी संस्कृति पर सीधा प्रभाव डालती हैं, हमारे जन-नायकों का ध्यान गया होता तो वे देखते कि किन कठिनाइयों में देश के प्रकाशक एक बड़े ही कठिन-साध्य लेकिन एक बड़े ही महत्त्वपूर्ण दायित्व को निभाने में संलग्न हैं। हमें जिन छापेखानों की सहायता लेनी पड़ती है, उनके साधन यूरोप की उन्नीसवीं सदी की मशीनों तक सीमित हैं। हमें जिन जिल्दसाज़ों पर आश्रित रहना पड़ता है, वे एकदम पुराने हाथ के तरीकों से हमारी पुस्तकों की जिल्दें बाँधते हैं। हमें विभिन्न प्रकार की पुस्तकों के लिए उपयुक्त कागज नहीं मिलता, हमारे देश में बनता ही नहीं। हमारे द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की खरीद कुछ सरकारी नियमों के रहते टेण्डर माँगने की पद्धति से होती है और यह पद्धति उस पुस्तक के विरुद्ध काम करती है जो अच्छे ढंग से, अच्छे कागज़ पर छपी हो और जिस पर लेखक को उचित पारिश्रमिक मिल रहा हो। किसी भी अन्य सभ्य कहलाने वाले देश में पुस्तकें टेण्डर सिस्टम से नहीं खरीदी जातीं। राजस्थान की सरकार के नये शिक्षा-संचालक महोदय को ही यह श्रेय प्राप्त है कि उन्होंने पुस्तकों की खरीद के लिए टेण्डर माँगने की प्रथा को अनावश्यक करार दे दिया है।

अनबिकी पुस्तकें क्या एसेट्स हैं ?

प्रकाशकों को एक बड़ी कठिनाई का सामना इनकम-टैक्स विभाग के लिए अपनी बैलेंस शीट्स बनाने के वक्त करना पड़ता है। क्या प्रकाशकों के पास वर्ष के अन्त में बचा हुआ सब स्टॉक उनके एसेट्स के रूप में गिना जा सकता है ? यहाँ यह देखना आवश्यक है कि पुस्तकों की प्रकृति किसी भी अन्य प्रकार की व्यावसायिक वस्तु से भिन्न होती है। लोहा, कपड़ा, अनाज, विभिन्न कन्ज़्यूमर्स प्रॉडक्ट्स, कोई व्यवसायी जब चाहे, एक-दो प्रतिशत दाम घटाकर बेच सकता है। पुस्तकों के लिए यह सम्भव नहीं। जो पुस्तक नहीं चल पाई, वह आधे, चौथाई दाम में भी नहीं बिक सकती। उसकी निकासी का केवल एक ही तरीका है कि उसे रद्दी या पल्प के रूप में बेच दिया जाए। जब इनकम-टैक्स विभाग स्टॉक रजिस्टर के अनुसार गोदाम में पड़ी सब पुस्तकों को एसेट्स के रूप में गिनने का आग्रह करता है तो वह प्रकाशकों से बहुत बड़ा अन्याय करता है। उदाहरण लीजिए किसी एक पाठ्य-पुस्तक का। जैसे ही वह कोर्स से निकल गई, वह बेकार हो जाती है। उसकी हज़ारों प्रतियाँ स्टॉक में पड़ी हों, उनका दाम केवल रद्दी के भाव ही लगाया जा सकता है। या समय-विशेष के लिए उपयुक्त किसी पुस्तक का उदाहरण लीजिए। हैदराबाद को लेकर जब झगड़ा चल रहा था तो हमने एक पुस्तक छापी थी Hyderabad or

India । उसकी बड़ी मांग थी और वह अच्छी बिक रही थी। इसी बीच पुलिस कार्यवाही के फलस्वरूप हैदराबाद का भारत में विलय हो गया और पुस्तक की माँग एकाएक रुक गई। उक्त पाठ्य-पुस्तक अथवा Hyderabad or India के शेष स्टॉक को किन अर्थों में एसेट्स कहा जा सकता है ?

इनकम-टैक्स विभाग कह सकता है कि प्रकाशकों को अधिकार है कि वे किसी भी पुस्तक को write off करके स्टॉक से निकाल दें और उसे रद्दी में बेच दें। लेकिन यदि रद्दी में न बेचें तो ? सम्भव है कि जिस पाठ्य-पुस्तक का एक प्रदेश में उपयोग बन्द हो गया है, उसका किसी अन्य प्रदेश में कुछ अरसे के बाद उपयोग होने लगे। उस दशा में शेष स्टॉक की बिक्री, जो पहले बैलेंस-शीट से निकाल दिया गया था, पूरे मुनाफ़े के रूप में स्वयमेव लेखे-जोखे में आ जाएगी। उसे रद्दी के भाव बेच देने से क्या प्रयोजन सिद्ध होता ? इंगलैण्ड और अमरीका के प्रकाशक तीन वर्ष के उपरान्त, यदि कोई पुस्तक नियमित रूप से बिक नहीं रही हो तो उसके स्टॉक को write off कर दिया करते हैं। हमें प्रकाशक संघ की ओर से इस कठिनाई के समाधान के लिए केन्द्रीय वित्त-मन्त्रालय के पास शायद प्रतिवेदन भेजने की आवश्यकता है।

अन्त में

प्रकाशकों की कुछ ऐसी कठिनाइयों की ओर हमने आपका ध्यान आकृष्ट करने की कोशिश की है जिनका हम सभी को सामूहिक रूप से सामना करना पड़ता है। इन्हें दूर करने का प्रयास भी सामूहिक ही हो सकता है। हमारे रास्ते की कठिनाइयाँ यदि कुछ कम होंगी तो हम समाज के प्रति अपना कर्तव्य अच्छी तरह से निभा पाएंगे।

धन्यवाद !

श्री गुरुदत्त की रचनाएं

पूर्वग्रह	७.००	स्वराज्यदान	७.५०
धर्म, संस्कृति और राज्य	८.००	उन्मुक्त प्रेम	७.५०
गंगा की धारा (दो भाग)	१८.००	धरती और धन	६.००
नये विचार नई बातें	४.५०	मेरी पसंद★	३.००
परिवर्तन	२.५०	छलना	६.००
निष्णात	३.००	एक और अनेक	६.००
यह क्यों है ?★	४.००	दिग्विजय	६.००
नयी दृष्टि	६.००	बीती बात	३.००
परिभव	३.००	चंचरीक	३.००
बिखरे चित्र	३.५०	निर्मल	३.००
युद्ध और शान्ति (दो भाग)	१२.००	मैं न मानूं	३.००
जमाना बदल गया (तीन भाग)	२८.००	गृह-संसद	५.५०
इतिहास में भारतीय परम्पराएं	८.००	भूल	३.००
ममता	३.००	भाग्य का सम्बल★	३.००
सुमति	३.००	भग्नाश	७.२५
बनवासी	३.००	सभ्यता की ओर	३.००
पंकज	३.००	भाग्य रेखा	३.००
प्रगतिशील	२.७५	भगवान भरोसे	६.००
दो भद्र पुरुष	३.००	मायाजाल★	५.००
जात न पूछे कोय	३.००	उमड़ती घटाएं★	६.००
विक्रमादित्य साहसांक	६.००	लुढ़कते पत्थर	६.५०
विकृत छाया	५.००	सहस्रबाहु	६.५०
भावुकता का मूल्य	६.००	विवेक	६.००
बहती रेता	५ ००	सफलता के चरण	६.५०
विडम्बना	६.००	नगर परिमोहन	६.००
देश की हत्या	५.५०	संस्खलन	६ ००
अन्तिम-यात्रा	१.००	पुष्यमित्र	४.००
विद्यादान	३.००	जन-प्रवाह	८.००
वाममार्ग	७.००	स्नेह का मूल्य	२.५०
विलोम गति	६.५०	जीवन-ज्वार	७.००
गुंठन	६.००	न्यायाधिकरण	७.००
मानव	५.००	पाणिग्रहण	६.००
कला	६.००	विश्वास	३.००
पत्रलता	७.००	द्रष्टा	५.००
दासता के नये रूप	६.००	विकार	२.५०
स्वाधीनता के पथ पर	७.५०	प्रवृत्ति	५.७५
पथिक	७.५०	कामना★	१.००

भारती साहित्य सदन

३०।९०, कनाट सरकस, नई दिल्ली-१

★ चिह्नित पुस्तकों के संस्करण समाप्त हैं तथा छप रही हैं।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ
दसवाँ वार्षिक अधिवेशन, जयपुर

स्वागत भाषण

जयपुर अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष श्री दिनेश खरे ने अपने स्वागत भाषण में कहा :

आदरणीय राज्यपाल महोदय, मुख्य मन्त्री जी, अध्यक्ष महोदय, देवियो और सज्जनो !

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के इस दसवें वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर आपने कला, शिक्षा और संस्कृति के केन्द्र, इस परम सुन्दर गुलाबी नगर में अपने स्वागत का जो अवसर व गौरव मुझे प्रदान किया है, उस के लिए मैं हृदय से आभारी हूँ, विशेषरूप से आदरणीय डाक्टर सम्पूर्णानन्द जी और सुखाड़िया जी के प्रति, जिन्होंने अपनी अत्यधिक व्यस्तता के बावजूद यहाँ पधारने का कष्ट करके इस अधिवेशन को शोभा व महत्त्व प्रदान किया है।

संघ का अधिवेशन आज जयपुर में पहली बार हो रहा है और ऐसे अवसर पर जब कि राष्ट्रभाषा हिन्दी पर राजभाषा के रूप में नयी और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ आ गयी हैं और जिन्हें पूरा करने में हिन्दी के लेखकों व प्रकाशकों से विशेष योगदान अपेक्षित है। साधारणतः प्रत्येक स्वतन्त्र देश की राजभाषा वहाँ की राष्ट्रभाषा ही होती है और हर हालत में होनी भी चाहिए। पर, दुर्भाग्यवश, हमारा देश एक अपवाद रहा है। हमने अपनी राष्ट्रभाषा को उसकी स्वाभाविक जिम्मेदारियों से वंचित रखकर विदेशी शासकों की भाषा को स्वेच्छा से राजभाषा के रूप में अपने ऊपर लादे रखा। आज भी वह सह-राजभाषा के रूप में हम पर लदी हुई है और क्षण प्रति क्षण हमें अपनी मानसिक दासता का बोध कराती रहती है। जिस तरह अंग्रेजों ने हम में फूट डालकर हम पर शासन किया, उसी तरह उनकी भाषा हम में फूट डालकर अपना शासन कायम रखना चाहती है। जब तक मानसिक दासता की यह स्थिति बनी रहेगी तब तक देशवासियों में राष्ट्रीय गौरव की भावना का विकास सम्भव नहीं। यह सत्य पिछले १७-१८ वर्षों में भली प्रकार प्रतिपादित हो चुका है और आज विराट रूप में अपने दर्शन दे रहा है।

पर यह स्थिति ज्यादा समय तक नहीं रह सकती और वह दिन दूर नहीं जब हिन्दी हमारी एक मात्र राजभाषा होगी। अपनी इन वर्तमान और भावी जिम्मेदारियों को वहन करने के लिए उसे द्रुतगति से अधिक-से-अधिक सामर्थ्यवान बनना है। यह हिन्दी के विद्वानों, लेखकों, पत्रकारों और प्रकाशकों के उत्साहपूर्ण योगदान से ही सम्भव है। मैं आशा करता हूँ कि प्रकाशक बन्धु अपने इस गम्भीर दायित्व के प्रति सजग व सतर्क होंगे और हिन्दी के प्रकाशन-व्यवसाय में सेवा की जो भावना लुप्त होती जा रही है, उसे पुनर्प्रतिष्ठित करने की चेष्टा करेंगे।

प्रकाशन-व्यवसाय अन्य व्यवसायों से इस दृष्टि से कुछ भिन्न है कि वह केवल व्यवसाय न होकर एक ऐसा रचनात्मक कार्य भी है जिससे समाज और देश की सेवा की अपेक्षा की जाती है। यद्यपि हिन्दी के प्रकाशन व्यवसाय ने पिछले कुछ वर्षों में काफी उन्नति की है, पर मैं उसे अभी शैशवावस्था में ही मानता हूँ। दुर्भाग्यवश इस अल्पावस्था में ही उसे बड़ी-बड़ी बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है। एक ओर तो आज भी हमारे देश में हिन्दी की पुस्तकों की अपेक्षा अंग्रेजी की पुस्तकों का प्रकाशन ज्यादा होता है, दूसरी ओर अमरीका व ब्रिटेन से आने वाली अंग्रेजी पुस्तकों की संख्या भी बराबर बढ़ रही है। तीसरे अमरीका और ब्रिटेन की सरकारों ने हिन्दी के प्रकाशन-व्यवसाय में प्रवेश करके ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी है जो अनेक

दृष्टि से देश के लिए बड़ी घातक है। यह एक ऐसी स्थिति है जिसका सम्बन्ध केवल प्रकाशन-व्यवसाय से ही नहीं, अपितु राष्ट्रहित सम्बन्धी अनेक अन्य प्रश्नों से भी है। अतः केन्द्रीय सरकार व राज्य सरकारों से अपेक्षित है कि वे इस समस्या पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगी। हिन्दी के प्रकाशकों को भी इन विदेशी आक्रमणों का मुकाबला करने के लिए ज्यादा मजबूती के साथ संगठित होना चाहिए और सहकारिता का सहारा लेना चाहिए।

विकसित देशों में प्रकाशन का कार्य बड़े-बड़े कार्पोरेशनों द्वारा किया जाता है, पर हमारे देश में यह व्यवसाय मुख्यतया व्यक्तिगत रूप से चलाया जा रहा है। फलतः पूंजी के अभाव में हर साल अनेक प्रयास असफल सिद्ध होते हैं और उसमें लगायी गयी पूंजी डूब जाती है। प्रकाशन व्यवसाय के इस स्वरूप का एक कुपरिणाम यह भी हुआ है कि लेखकों में प्रकाशकों के प्रति, कुछ अपवादों को छोड़कर, अविश्वास की भावना ही अधिक रही है। तरह-तरह के कटु अनुभवों ने कितने ही लेखकों को अपनी पुस्तकों का प्रकाशन स्वयं करने के लिए विवश कर दिया है। यह स्थिति लेखकों व प्रकाशकों, दोनों ही के लिए अहितकर है।

राजस्थान में यह स्थिति अत्यन्त स्पष्ट रूप में देखने को मिलती है क्योंकि पुस्तक प्रकाशन व्यवसाय की दृष्टि से यह राज्य बहुत पिछड़ा हुआ है और यहाँ के ज्यादातर प्रकाशक अभी आधुनिकता से काफी दूर हैं। उनके समक्ष कुछ व्यावहारिक कठिनाइयां भी हैं। उदाहरण के लिए, हमारे राज्य में पुस्तक छापने के काम आने वाले कागज पर छः

प्रतिशत बिक्री-कर है जबकि हमारे एक पड़ौसी राज्य, उत्तर प्रदेश में वह केवल दो प्रतिशत है और दूसरे पडौसी राज्य, दिल्ली में तो है ही नहीं। आशा है कि राजस्थान सरकार जिसने कि पुस्तकों की खरीद के सम्बन्ध में टेन्डर प्रणाली द्वारा होने वाली अस्वस्थ प्रतिद्वन्द्विता को समाप्त करने का प्रगतिशील व प्रशंसनीय कदम उठाया है, बिक्री-कर के मामले पर भी सहृदयता से विचार करेगी और उसमें राहत देगी। राजस्थान सरकार ने साहित्य-सर्जन को प्रोत्साहित करने के लिए राजस्थान साहित्य-अकादमी की भी स्थापना की है। यद्यपि यह अकादमी अभी तक न तो साहित्य की अभिवृद्धि में कोई उल्लेखनीय योगदान कर सकी है और न लेखकों को प्रोत्साहित करने में, पर उसकी स्थापना के पीछे सरकार की मंशा निश्चय ही शुभ रही है। अब सरकार ने हिन्दी के लिए एक पृथक् विभाग भी खोला है और यद्यपि अभी यह स्पष्ट नहीं है कि यह विभाग कौन-कौन से काम करेगा तथापि आशा की जाती है कि उसकी स्थापना हिन्दी के लिए अनेक रूप में हितकर सिद्ध होगी। बेहतर होगा यदि उत्तरप्रदेश और बिहार आदि हिन्दी भाषा-भाषी राज्यों की तरह राजस्थान सरकार भी ऐसे बड़े और उत्तम ग्रंथों के प्रकाशन हेतु आर्थिक सहायता देने की व्यवस्था करे जिन्हें प्रकाशन पर बहुत अधिक खर्च बैठने तथा बिक्री की सम्भावना कम होने के कारण, प्रकाशक साधारणत: प्रकाशित नहीं कर पाते या उसमें पूंजी फँसाने में हिचकते हैं।

अंत में मैं आशा करता हूं कि हिन्दी पुस्तक प्रकाशन व्यवसाय के समक्ष उपस्थित समस्याओं पर गम्भीरतापूर्वक विचार-विमर्श करने के पश्चात् यह अधिवेशन जिन निर्णयों पर पहुँचेगा उससे राष्ट्रभाषा हिन्दी और सत्-साहित्य की श्रीवृद्धि होगी तथा प्रकाशक बन्धुओं में सेवा-भावना का उद्रेक होगा और लेखकों के प्रति स्वस्थ दृष्टि-कोण अपनाने को प्रेरित होंगे।

मैं एक बार फिर आप सब का हृदय से स्वागत करता हूँ और आपने मुझे अपने स्वागत का जो अवसर व गौरव प्रदान किया है उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

★

अ. भा. हिन्दी प्रकाशक संघ दसवें वार्षिक अधिवेशन के प्रस्ताव

ट्रेनिंग कोर्स

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के इस अधिवेशन का यह मत है कि व्यवसायियों में प्रकाशन व पुस्तक-विक्रय-सम्बन्धी निपुणताओं की वृद्धि के लिए समय-समय पर ट्रेनिंग कोर्स का आयोजन होना चाहिए। संघ का यह अधिवेशन कार्य-समिति से यह अपेक्षा रखता है कि इस प्रकार का कोर्स आयोजित हो सके तो प्रसन्नता होगी।

प्रस्तावक : श्री दीनानाथ मलहोत्रा

अनुमोदक : श्री मोदी (जोधपुर)

पुस्तकों की खरीद पर प्रतिबन्ध

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का यह अधिवेशन विकास विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा हिन्दी की पुस्तकों की खरीद पर लगाये गए प्रतिबन्ध पर घोर खेद प्रकट करता है। संघ अनुभव करता है कि विकास विभाग का यह बड़ा अन्याय है। यह निर्णय हिन्दी के लेखकों, प्रकाशकों एवं पुस्तक-विक्रेताओं के साथ हिन्दी की प्रगति एवं देश के सांस्कृतिक विकास के मार्ग में एक बड़ी बाधा है। अतः उत्तर प्रदेश सरकार के विकास विभाग से आशा की जाती है कि वह अपने इस निर्णय पर पुनर्विचार करेगा और हिन्दी पुस्तकों की खरीद पर लगाये गए प्रतिबन्ध को शीघ्रातिशीघ्र हटाने का निर्णय करेगा।

प्रस्तावक : परमात्माशरण

अनुमोदक : रघुवीर शरण बंसल

लेखकों के हितों की रक्षा

संघ का यह अधिवेशन इस बात पर सन्तोष प्रगट करता है कि संघ के सदस्य प्रकाशक अपने लेखकों से रायल्टी आदि उचित दरों पर ही पुस्तकें प्राप्त करते हैं और कुछेक सदस्य तो हर वर्ष हजारों और लाखों रुपये रायल्टी में अपने लेखकों को देते हैं। प्रकाशकों द्वारा लेखकों के शोषण की बात में कोई सचाई नहीं है। संघ अपने सदस्यों तथा अन्य प्रकाशकों को फिर भी यह प्रेरणा करता है कि लेखकों से अनुबन्ध करते समय उनके हितों का ध्यान रखें और साथ ही इस बात का ध्यान भी रखें कि कभी भी किसी लेखक से ग़लत शर्तों पर अनुबन्ध न करें जो प्रकाशक के लिए ऐसी अहितकर हों कि प्रकाशक उन पर चल न सकें और बाद में भ्रान्तियाँ फैलें। अतएव संघ सभी प्रकाशकों व पुस्तक-विक्रेताओं से अनुरोध करता है कि प्रकाशन व पुस्तक-व्यवसाय के सम्बन्ध में जनता में फैली भ्रान्तियों का निराकरण करें और अपने आचरणों व उदाहरणों द्वारा प्रकाशक व पुस्तक-विक्रेता का ठीक गौरवमय चित्र जनता के सामने उपस्थित करें, जिससे सचमुच ही यह वास्तविकता प्रकट हो कि प्रकाशक व पुस्तक-विक्रेता कोरा व्यवसायी ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय चरित्र-निर्माण के पुनीत कार्य के प्रचार में लगा हुआ एक प्रतिष्ठित वर्ग का सदस्य है।

प्रस्तावक : श्री दीनानाथ मलहोत्रा

अनुमोदक : श्री कन्हैयालाल मलिक

मुद्रण प्रतियोगिता

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का यह अधिवेशन मुद्रण की राष्ट्रीय प्रतियोगिता पुरस्कार में पुस्तकों के दो वर्गों के अतिरिक्त भारतीय भाषाओं में प्रकाशित तकनीक तथा विज्ञान की पुस्तकों को भी पुरस्कार का एक अलग वर्ग मान लेने का सुझाव देता है। अधिवेशन का मत है कि इससे विज्ञान तथा तकनीकी प्रकाशनों के सुमुद्रण को प्रोत्साहन मिलेगा।

प्रस्तावक : श्री कृष्णचन्द्र बेरी

अनुमोदक : श्री रामलाल पुरी

रेलवे पार्सल

इधर भारत सरकार के रेलवे मन्त्रालय ने भाड़ा देकर रेल द्वारा भेजे जाने वाले सामान से सम्बन्धित, जिसमें पुस्तकों के पार्सल भी शामिल हैं, नियमों में परिवर्तन किया है, जिससे पुस्तक व्यवसायियों के सामने, और शायद अन्य व्यवसायियों के सामने भी कुछ व्यावहारिक कठिनाइयाँ प्रस्तुत हो रही हैं। रेलवे अधिकारी भेजा गया माल, यदि उस पार्टी ने नहीं छुड़ाया जिसे वह भेजा गया था, इन नियमों के अनुसार तब तक वापस भेजने को तैयार नहीं होते जब तक कि दूरी के ५०० किलोमीटर से कम होने की स्थिति में, लौटाने का भाड़ा और डैमरेज उन्हें पहले नहीं भेज दिया जाता। जब तक भाड़े और डैमरेज की माँगी गई रकम उन तक पहुँचती है,

डैमरेज की रकम और बढ़ जाती है। अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का यह अधिवेशन रेल मन्त्रालय से अपील करता है कि लौटाये जाने वाले माल का भाड़ा और डैमरेज उसके लौटने पर माल भेजने वाले से वसूल करने का नियम बनाएँ।

संघ रेल-मन्त्रालय से इस प्रश्न पर विचार करने के लिए भी अनुरोध करता है कि रेल द्वारा पुस्तकों के भेजे गये पार्सलों को उसी श्रेणी में रखा जाया करे जिसमें कि रेल द्वारा भेजे गये अखबारों के पार्सल लिये जाते हैं। अहिन्दी क्षेत्रों में रेल द्वारा भेजे गये पार्सलों को उपयुक्त स्टेशनों पर पहुँचने में इस समय एक-एक और कभी-कभी दो-दो महीने भी लग जाते हैं। और इस प्रकार हिन्दी के प्रचार-प्रसार में बाधा आती है। भेजे गये पाठ्य-पुस्तकों के पार्सलों का भी समय पर पहुँचना आवश्यक है।

प्रस्तावक : दीनानाथ मलहोत्रा
अनुमोदक : रघुवीर शरण बंसल

संदर्भ सूचियों की आवश्यकता

हिन्दी पुस्तक-व्यवसाय की उन्नति और संवर्धन के लिए अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का यह अधिवेशन कार्य-समिति का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित करता है कि हिन्दी में साहित्येतर विषयों की प्रामाणिक सन्दर्भ सूची, उच्च शिक्षाओं के प्राध्यापकों की सूची, देश-भर में फैले पुस्तकालयों की निदेशिका तथा प्रकाशक एवं पुस्तक-विक्रेताओं की सूचियां प्रकाशित होनी चाहिए। यह भी सम्भव है कि इस प्रकार के सन्दर्भ-ग्रन्थों के प्रकाशन के लिए केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्रालय से अनुदान प्राप्त हो सके। प्रकाशक संघ के पास हिन्दी पुस्तकों की निरन्तर प्रदर्शनियाँ आयोजित करने के लिए साज-सामान और फर्नीचर भी स्थायी रूप से रहना चाहिए।

प्रस्तावक : श्री कन्हैयालाल मलिक
अनुमोदक : श्री दयानन्द वर्मा

ऋण की सुविधा मिले

इस स्थिति को देखते हुए कि हिन्दी प्रकाशन के व्यवसाय से बहुमुखी उन्नति अपेक्षित है, हिन्दी प्रकाशन की ओर कोई विशेष पूंजी आकर्षित नहीं हुई है, बैंकों से अथवा सरकारी, अर्द्ध-सरकारी और ग़ैर-सरकारी स्रोतों से आवश्यकता पड़ने पर प्रकाशकों को ऋण की सुविधा नहीं मिलती।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का यह अधिवेशन भारत सरकार से अनुरोध करता है कि प्रकाशकों को ब्याज की उचित दरों और सुविधाओं पर प्रकाशन-सम्बन्धी बड़ी-बड़ी योजनाओं की सफलतापूर्वक पूर्ति के लिए ऋण देने वाली किसी ऐसी अर्द्ध-सरकारी संस्था की स्थापना करे जैसे कि सरकार ने फिल्म-निर्माण के क्षेत्र में इसी प्रयोजन से बना रखी है।

प्रस्तावक : श्री रामलाल पुरी
अनुमोदक : श्री गिरधर शुक्ल

अनुदान व्यवस्था में सुधार

भारत सरकार का शिक्षा-मन्त्रालय तथा राज्य सरकारों के शिक्षा विभाग अनेक पुस्तकालयों की खरीद के लिए ऐसे अनुदान दिया करते हैं, जिसके अनुसार बराबर की रकम अनुदान प्राप्त करने वाली संस्था को खर्च करनी पड़ती है। पुस्तक-व्यवसायियों का अनुभव है कि ऐसे अनुदान प्राप्त करने वाली संस्थाएँ शेष अपेक्षित रकम प्रायः अपने कोष से नहीं खर्च कर पातीं और पुस्तक-व्यवसायियों से हिसाब-सम्बन्धी ग़लत कार्यवाहियों की अपेक्षा रखती हैं। इस प्रकार के मैचिंग ग्रांट्स का कोई लाभ नहीं होता और पुस्तक-व्यवसायियों पर ग़लत कार्यवाहियों के लिए दबाव भी पड़ता है। अच्छा हो, यदि केन्द्र-राज्यों के अनुदान अपने में ही सम्पूर्ण हुआ करें।

प्रस्तावक : श्री कृष्णचन्द्र बेरी
अनुमोदक : श्री बंसल

शोक !

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का यह अधिवेशन देश के महामान्य नेता भूतपूर्व प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू के निधन पर शोक प्रकट करता है। नेहरूजी हमारे देश की सर्वतोमुखी प्रतिभा तो थे ही, साहित्य के क्षेत्र में उनका अवदान भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। संघ प्रकाशकों तथा विक्रेताओं की ओर से इस महामानव को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है और देश की इस अपूरणीय क्षति के अवसर पर देशवासियों से उनके पदचिह्नों पर चलने की हार्दिक अपील करता है।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का यह अधिवेशन राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त, प्रसिद्ध नाटककार साहित्यकार एवं संसद-सदस्य मामा वरेरकर, तारसप्तक के कवि गजानन मुक्तिबोध, साहित्यसेवी सर्वश्री गोस्वामी बिन्दु, ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, मदनगोपाल सिंहल, जयदयाल गोयनका तथा सरस वियोगी के निधन को हिन्दी-जगत की महान् क्षति अनुभव करता है। संघ इन महान् साहित्यकारों के प्रति शोक प्रकट करने के साथ-साथ उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आशा प्रकट करता है कि इनका साहित्य आने वाले भविष्य में भी हमारा मार्ग-दर्शन करता रहेगा।

सर्वसम्मति द्वारा खड़े होकर स्वीकृत

अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ : प्रधान मंत्री द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट

संघ के प्रधानमन्त्री ने जयपुर अधिवेशन में निम्नलिखित रिपोर्ट प्रस्तुत की :

सन् ६४-६५ के सत्र में अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ की कार्य-समिति की तीन बैठकें (१७ मई १९६४, १३ दिसम्बर ६४, और ३१ जनवरी ६५) हुईं।

पहली बैठक में नवम अधिवेशन के स्वीकृत प्रस्तावों को कार्यान्वित करने के लिए निर्णय किये गये। शिक्षा मंत्रालय, सामुदायिक विकास मंत्रालय तथा विभिन्न राज्यों के शिक्षा मंत्रियों, शिक्षा संचालकों, पंचायत संचालकों, विकास आयुक्तों एवं अन्य विभागीय अधिकारियों को पत्र भेजे गये। पत्रों में मांग की गई कि पुस्तकें खरीदने या टेंडर मांगने से पहले खरीदी जाने वाली पुस्तकों की सूची बनाई जाये और सूची बनाने की सूचना विभिन्न पत्रों विशेषत: 'हिन्दी प्रकाशक' को प्रकाशनार्थ भेजी जाये। हिन्दी प्रकाशक इस प्रकार की सूचना निःशुल्क प्रकाशित करेगा।

कागज और गत्ते से उत्पादन शुल्क हटाने के लिए केन्द्रीय वित्त मंत्रालय और शिक्षा मंत्रालय के साथ पत्र-व्यवहार किया गया। सन् १९६५-६६ के बजट में केन्द्रीय सरकार ने कागज पर से उत्पादन शुल्क कम करके संघ का उत्साह बढ़ाया है।

पाठ्य-पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण के सम्बन्ध में केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के अतिरिक्त विभिन्न राज्यों के शिक्षा-मंत्रियों, शिक्षा संचालकों तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों के बोर्डों को पत्र लिखे गये और संघ की नीति स्पष्ट की गई।

पुस्तक वितरण की सहकारी योजना तथा उसकी रूप-रेखा पर कार्य-समिति ने प्रत्येक दृष्टि से विचार किया। सितम्बर की बैठक में यही निर्णय किया गया कि अनेक व्यावहारिक कठिनाइयों के कारण कार्य-समिति सहकारी योजना को कार्यान्वित करने में अपने आपको असमर्थ पाती है और इसे अन्तिम निर्णय के लिए संघ के आगामी अधिवेशन पर छोड़ती है। (निर्णय कार्य-समिति बैठक, सितम्बर १९६४)

संदर्भ पुस्तकों (सोर्स बुक्स) की सूची का कार्य विदेशी शिक्षाशास्त्रियों की सम्मति से शीघ्र ही कार्यरूप में परिणत होने वाला है।

वार्षिक अधिवेशन के आदेशानुसार सदस्यों की सदस्यता की प्रामाणिकता के सम्बन्ध में कार्यालय ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। विचार-विमर्श के उपरान्त एक सदस्य को सदस्यता से वंचित किया गया।

कार्य-समिति ने संघ के कार्यालय के लिए स्थान लेने और १००) प्रतिमास तक किराया देने का निर्णय किया था परन्तु आर्थिक असुविधा के कारण कार्यालय किराये पर नहीं लिया गया।

उत्तर प्रदेश के विकास आयुक्त ने निर्णय किया था कि विकास खण्डों को पुस्तकें खरीदने की आवश्यकता नहीं है। संघ की ओर से इस आदेश पर गहरा खेद प्रकट किया गया और विकास आयुक्त महोदय से बलपूर्वक अनुरोध किया गया कि वे अपने निर्णय पर फिर विचार करें। प्रसन्नता की बात है कि विकास आयुक्त ने अपने निर्णय में परिवर्तन किया है और कुछ विषयों की पुस्तकें खरीदने का आदेश दे दिया है।

पुस्तकों की खरीद में टेंडर प्रणाली का संघ सदा विरोधी रहा है। हर्ष है कि अब सरकारी अधिकारी भी इसके दोष समझने लगे हैं और इसे समाप्त करने के लिए सक्रिय पग उठाने लगे हैं। राजस्थान के शिक्षा संचालक ने इस वर्ष में विभाग द्वारा स्वीकृत कमीशन पर पुस्तकें खरीदी हैं और टेंडर प्रणाली समाप्त कर दी है।

कार्य समिति ने १३ सितम्बर की बैठक में केन्द्र तथा राज्यों के सम्बन्धित अधिकारियों से अनुरोध किया कि वे खरीद के लिए पुस्तकों का चयन करते समय पुस्तक की उपादेयता को ही महत्त्व दें—ऐसा नियम या व्यवहार उचित नहीं है कि एक प्रकाशक की एक ही पुस्तक ली जायेगी। केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने इस अनुरोध को सिद्धांत रूप में स्वीकार कर लिया है।

संघ की ओर से विगत वर्षों की भान्ति १४ नवम्बर से २१ नवम्बर तक राष्ट्रीय पुस्तक समारोह मनाया गया। वाचन रुचि में अभिवृद्धि के लिए संघ के कार्यालय से एक आकर्षक पोस्टर प्रकाशित हुआ, जो संघ के सदस्यों तथा भारत भर के प्रमुख प्रकाशकों और विक्रेताओं एवं अन्यान्य संबन्धित स्थानों को भेजा गया। काशी में एक विचार-गोष्ठी हुई जिसमें इस प्रश्न पर विचार किया गया कि पाठकों के द्वारा हिन्दी की पुस्तकें कम क्यों पढ़ी जाती हैं।

जोधपुर में इस अवसर पर एक पुस्तक प्रदर्शनी हुई और मथुरा में बालमेले के साथ प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। मेला अपने ढंग का एक सफल प्रयास माना गया। जोधपुर की प्रदर्शनी में मैसर्स किताबघर के उद्योग और सब के सहयोग से १७ हजार पुस्तकें प्रदर्शित हुईं।

दिल्ली में पुस्तक प्रदर्शनी १७ दिसम्बर ६४ को सायं-काल नई दिल्ली की राउज़ एवेन्यू में कौंसिल फार चाइल्ड वैलफेयर के विशाल भवन में प्रारम्भ हुई। प्रदर्शनी में सन् ६२-६३ और ६४ में प्रकाशित ३००० पुस्तकें ३० विषयों के वर्गीकरण के साथ प्रदर्शित हुईं। प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रतिष्ठित साहित्यकार और केन्द्र के उपशिक्षा मंत्री श्री भक्त दर्शन के किया। प्रदर्शनी २२ दिसम्बर तक रही। इस अवसर पर एक विचार-गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें हिन्दी पुस्तकों की स्वल्प बिक्री के प्रश्न पर विचार हुआ। गोष्ठी में लेखक, पाठक, पुस्तक-विक्रेता एवं प्रकाशक की ओर से अपने विचार व्यक्त किये गये। गोष्ठी में उप-शिक्षामंत्री ने भी उपयोगी विचार प्रस्तुत किये।

नेशनल बुक ट्रस्ट आफ इण्डिया की ओर से नई दिल्ली में एक पुस्तक प्रदर्शनी और सेमिनार का आयोजन हुआ। संघ से उसमें सहयोग के लिए अनुरोध किया गया, जो सहर्ष दिया गया। सेमिनार में श्री कृष्णचन्द्र बेरी, श्री दयानन्द वर्मा और श्री रघुवीर शरण बंसल संघ की ओर से सम्मिलित हुए। श्री बेरी ने संघ का दृष्टिकोण बड़े प्रभावशाली ढंग से उपस्थित किया।

सन् ६४ में संघ के सदस्यों द्वारा प्रकाशित एजुकेशनल पुस्तकों की एक सूची प्रकाशित करने का निर्णय किया गया था। उसका काम काफी आगे बढ़ गया था परन्तु कुछ कठिनाइयाँ बाकी रह गई थीं। ३१ जनवरी की बैठक में निर्णय किया गया कि सूची जुलाई, ६५ में प्रकाशित की जाये जिसमें मई ६५ तक के प्रकाशन सम्मिलित किये जायें।

इसी बैठक में २६ जनवरी से हिन्दी को सरकारी काम-काज की भाषा घोषित करने के लिए केन्द्रीय सरकार को हार्दिक बधाई दी गई और पुस्तक-व्यवसाय से संबंधित बन्धुओं से अनुरोध किया गया कि वे अपने काम यथा-संभव हिन्दी में ही करें। कार्य-समिति ने हिन्दी भाषी राज्यों के विश्वविद्यालयों से अनुरोध किया कि वे शिक्षा के माध्यम के रूप में हिन्दी को ग्रहण करें। इस संदर्भ में पाठ्य-पुस्तकों की कठिनाई का अनुभव हो तो प्रकाशक वर्ग पूरा सहयोग देने के लिए प्रस्तुत है।

मार्च १९६५ में 'हिन्दी प्रकाशक' १९६४ की पुस्तकों के परिचय विशेषांक के रूप में प्रकाशित हुआ। अंक में ५२८ पुस्तकों का परिचय दिया गया और लगभग ४०० पुस्तकों की सूचना प्रस्तुत की गई। संघ के मुखपत्र 'हिन्दी प्रकाशक' की यह सेवा सर्वत्र सराहनीय मानी गई है।

हिन्दी प्र० संघ के वाराणसी कार्यालय ने यू० पी० लायब्रेरी कमेटी के सदस्यों का स्वागत किया और उन्हें हिन्दी प्रकाशन व्यवसाय की वर्त्तमान समस्याओं से अवगत कराया।

प्रधान मंत्री

सभा समारोह

पिछले २८ मार्च को बिहार ग्रंथ कुटीर, पटना द्वारा प्रकाशित प्रथम वैयक्तिक निबंध-संग्रह 'लिफाफा देखकर' पर एक परिसंवाद का आयोजन 'कृतिवेशम' के तत्वावधान में हुआ। यह आयोजन अपने ढंग का एक विशिष्ट और ऐतिहासिक आयोजन था जिसमें सुधी समीक्षकों, पत्रकारों और प्रकाशकों ने मिलकर एक कृति के विविध पक्षों की आलोचना-प्रत्यालोचना की। इस परिसंवाद में विभिन्न पीढ़ियों के लेखक और विभिन्न रुचियों के प्रकाशक सम्मिलित हुए। विधान सभा के अध्यक्ष डॉ० लक्ष्मी नारायण सुधांशु ने अपने संदेश में लिखा था—किसी साहित्यिक कृति के प्रत्येक पहलू पर विचार करने के लिए परिसंवाद एक अच्छा तरीका है।

वस्तुतः यह वैयक्तिक निबंध की संध्या थी और इस दिन ऐसा लगा कि वैयक्तिक निबंध की विधा बहुत दिनों तक उपेक्षित नहीं रहेगी।

समारोह की अध्यक्षता उपस्थित साहित्यकारों में वरिष्ठतम पद्मभूषण राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह ने की। राजा साहब ने शैलेन्द्र की पीठ ठोकते हुए कहा—मुझे इनकी कलम के कमाल पर नाज है। मैं कुछेक निबंध ही पढ़ सका हूं, पर इनकी शैली का कायल हो गया हूं। खूब व्यंग्य है। हिन्दी में ऐसे व्यंग्य लेखक का प्रायः अभाव ही रहा है। मुझे प्रसन्नता है कि हमारा एक नौजवान अपनी प्रथम रचना के द्वारा ही प्रथम श्रेणी के व्यंग्यकारों की कोटि में आ गया है।

प्रो० तेजनारायण प्रसाद सिंह, रीडर एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग, बी० एन० कॉलेज, ने अपने सहयोगी की प्रतिभा की प्रशंसा करते हुए आलोचकों को निःसंकोच भाव से अपने विचार व्यक्त करने के लिए ललकारा। फिर सचमुच कुछ ग्रंथियां खुलने लगीं। श्री रंजन सूरिदेव ने पुस्तक के प्रच्छेद पट की सराहना की पर उनकी अशुद्धियों की ओर प्रकाशक का ध्यान आकृष्ट किया। पुस्तक से कुछ पंक्तियां उद्धृत कर उन्होंने कुछ ऐसे स्थल दिखाये जहां उनकी दृष्टि में लेखक के विचार सर्वग्राही नहीं हो सके हैं।

डा० वचनदेव कुमार ने कहा-वसन्त तो प्रतिवर्ष आता है, पर इस बार वसन्त लिफाफा देखकर आया है। तत्पश्चात् प्रो० राम खेलावन राय, अध्यक्ष हिन्दी विभाग, सायंस कॉलेज, ने इस संग्रह के दिल्ली दर्शन नामक निबंध की कटु आलोचना की और दिनकर जी पर उंगली उठाने के लिए लेखक की निन्दा की। पर, शैली की दृष्टि से उन्होंने लेखक की भूरि-भूरि प्रशंसा की और कहा कि यह वस्तुतः अपने ढंग का प्रयास है।

श्री बजरंग वर्मा (बि० ए० भा० परिषद्) ने राय जी के भाषण का उत्तर देते हुए कहा कि वस्तुतः प्रत्येक लेखक का एक अपना ढंग होता है और उस पर समीक्षक अपना ढंग नहीं लाद सकता। यदि समीक्षक ने लेखक की 'अपनी बात' पढ़ी होती तो शायद स्थिति स्पष्ट हो गई होती। फिर, राजा राय रस्तोगी ने कहा कि दोष की दृष्टि से विचार करें, तो संसार का कौन-सा समीक्षक या साहित्यकार निर्दोष सिद्ध होगा। समीक्षक के लिए सहृदय होना भी आवश्यक है। शैलेन्द्र के निबन्ध अपनी कोटि आप बनाते हैं, वे किसी परम्परा का अनुसरण नहीं करते, इसलिए शैलेन्द्र हमारी बधाई के पात्र हैं। प्रो० कपिलदेव सिंह ने बताया कि दिनकर जी की कुछ पंक्तियों को लेकर यदि लेखक ने दूसरे ढंग से अर्थ करने की चेष्टा की है, तो व्यंग्य की दृष्टि से कोई हर्ज नहीं है। साहित्यकार को यह अधिकार है कि वह शब्दों में क्रीड़ा कर सके। फिर, सर्वनामों के भ्रामक प्रयोग के कारण ही उलझन पैदा हुई है।

इस प्रकार, आलोचना-प्रत्यालोचना का दौर चला। दो घंटे के बाद इस बहस को मोड़ दिया यशस्वी पत्रकार श्री जितेन्द्र सिंह ने। उन्होंने कहा कि मुझे ऐसा लगता है कि लोग पूरी पुस्तक पढ़कर आये ही नहीं। इस नौजवान ने चौदह निबंध लिखे, और आप कुछ निबंधों

की कुछ पंक्तियों को लेकर उलझ रहे। आपने लेखक का कटु व्यंग देखा, उसके भीतर की निश्छल करुणा नहीं देखी। सृजन की पीड़ा समझने के लिए केवल शास्त्र का ज्ञान अपेक्षित नहीं है। यदि शैलेन्द्र की प्रथम रचना ने आपको इतना झकझोरा है तो यह उसकी प्रतिभा की सबलता का प्रमाण और लेखक के उज्ज्वल भविष्य का सूचक है।

डॉ० कुमार विमल ने कहा—"हिन्दी का प्रत्येक प्राध्यापक आलोचक है, सृजनात्मक लेखक विश्वविद्यालयों में दुर्लभ है। हमें गर्व है कि हमारा एक सहयोगी सृजनात्मक लेखन के क्षेत्र में विशिष्ट स्थान बना सका है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि पश्चिमी देशों ने भी कलाकारों के ही स्मारक बनवाये, आलोचकों के नहीं। मैं कलाकार शैलेन्द्र को अपनी शुभ कामना अर्पित करता हूं।

प्रोफेसर राम बुझावन सिंह, रीडर बी० एन० कॉलेज ने इस गरमागरम बहस को बड़े नाटकीय ढंग से समाप्त करने की चेष्टा की। उन्होंने कहा, मैंने निबन्ध पढ़े हैं मुझसे मांग कर औरों ने पढ़े हैं। मैं मानता हूं कि और दूसरे भी स्वीकार करते हैं कि इन निबन्धों में हमारे मन की बातें हैं। जिस रचना में बहुतों को अपनी तस्वीर दीखे, वह यदि सफल रचना नहीं है तो और किसे सफल रचना कहते हैं? यहां कितने लोग ऐसे हैं जो इस कोटि के कुछ निबन्ध भी हमें दे सके हैं? उन्होंने कहा—शैली की सफलता उसकी सहजता है। और मुझे विश्वास है कि जो इसे पढ़ना प्रारम्भ करेंगे वे छोड़ नहीं सकेंगे। इनके अतिरिक्त डॉ० सियाराम तिवारी, प्रो० सीता राम दीन, प्रो० बसंत कुमार, उपन्यासकार हिमांशु श्रीवास्तव, प्रो० रामेश्वर सिंह कश्यप आदि ने भी लेखक की कलम को दाद दी।

अन्त में लेखक ने कहा—मुझे दुख है कि व्यंजना को नहीं समझने के कारण कुछ लोगों को कष्ट हुआ है। फिर यह कोई समीक्षा की पुस्तक नहीं व्यंग्य रचना है और यदि किसी कार्टूनिस्ट को यह हक है कि वह किसी की नाक लम्बी बनावे, आकृति बौनी कर दे, तो व्यंग्यकार को भी यह छूट है कि वह शब्दार्थ को घटा-बढ़ा सके। आपने मेरी पुस्तक इतनी गंभीरतापूर्वक पढ़ी यह मेरे लिए सन्तोष-जनक है।

इस अवसर पर प्रकाशक बिहार ग्रन्थ कुटीर की ओर से एक भव्य चाय पार्टी का भी आयोजन था, जिसमें नगर के अनेक पत्रकार, प्राध्यापक, प्रकाशक और लेखक सम्मिलित हुए। यह गोष्ठी सचमुच अविस्मरणीय रही।

प्रस्तुतकर्त्ता : सत्येन्द्र

●

'नवीन' स्मृति-समारोह

२९ अप्रैल को दिल्ली हिन्दी पत्रकार संघ के तत्वावधान में, कांस्टीट्यूशन क्लब में केन्द्रीय उपशिक्षा-मंत्री श्री भक्तदर्शन की अध्यक्षता में स्व० श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की पंचम पुण्य तिथि समारोहपूर्वक मनाई गई। समारोह का उद्घाटन सेठ गोविन्ददास जी ने किया। समाचार-पत्रों, संस्थाओं और साहित्यिकों की तरफ से 'नवीन' जी के छाया-चित्र को माल्यार्पण किया गया। गान्धर्व महाविद्यालय, दिल्ली के बालक-बालिकाओं ने 'नवीन' जी के गीतों को सस्वर रूप में प्रस्तुत करके श्रोताओं को मुग्ध कर लिया। राष्ट्र की सीमाओं की सुरक्षा का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया।

श्री भक्तदर्शन और डॉ० गोविन्ददास के अतिरिक्त, डॉ० लक्ष्मीनारायण दुबे, कविवर श्री नरेन्द्र शर्मा, श्री वियोगी हरि, पद्मश्री गोपाल प्रसाद व्यास, श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन', केप्टिन भगवानसिंह आदि ने 'नवीन' जी को अपनी भावांजलि अर्पित की। 'नवीन' जी के सुविख्यात शोध-कर्ता और सागर विश्वविद्यालय के हिन्दी प्राध्यापक डॉ० लक्ष्मीनारायण दुबे ने 'नवीन' जी को पाठ्यक्रम में स्थान देने का सुझाव दिया। 'सुमन' जी ने उनके गद्य-संकलन पर जोर दिया।

समारोह में 'नवीन' जी की धर्मपत्नी श्रीमती सरला शर्मा और आत्मजा कुमारी रश्मिरेखा की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय थी। श्री बाँके बिहारी भटनागर और श्री सीताचरण दीक्षित के कुशल संचालन में इस समारोह को प्रशंसनीय सफलता प्राप्त हुई।

प्रस्तुतकर्त्ता : मोतीलाल त्रिपाठी

●

'ज्योत्स्ना' का सम्मान-समारोह

कलकत्ता की प्रसिद्ध साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था 'ज्योत्स्ना' ने हिन्दी के सुविख्यात लेखक और सागर विश्वविद्यालय के विद्वान प्राध्यापक डॉ० लक्ष्मीनारायण दुबे और लखनऊ के आशुकवि श्री जगमोहननाथ अवस्थी के स्वागत और सम्मान में विशिष्ट सम्मान-समारोह का सुन्दर आयोजन किया। सभा की अध्यक्षता हिन्दी के प्रसिद्ध द्विवेदी-युगीन सुकवि श्री गुलाबरत्न वाजपेयी 'गुलाब' ने की। मंत्री श्री रामकुमार त्रिपाठी ने अभिनंदन-पत्र पढ़ा।

'गुलाब' जी ने अपने लिखित वक्तव्य में डॉ० दुबे और अवस्थी जी की साहित्यिक सेवाओं की सराहना की और दुबे जी को हिन्दी का समर्थ एवं जागरूक आलोचक बताते हुए उनसे आग्रह किया कि वे हिन्दी साहित्य की अधिकाधिक समृद्धि करें। श्री अरुण प्रकाश अवस्थी ने अवसरोपयोगी कविता-पाठ किया।

डॉ० लक्ष्मीनारायण दुबे ने अपने सारगर्भित भाषण में आधुनिक हिन्दी साहित्य की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने अपने इस संकल्प की उपयोगिता एवं महत्ता का विशद रूप से विश्लेषण किया कि हिन्दी के उपेक्षित एवं विस्मृत कवियों के जीवन और साहित्य को आलोक में लाना चाहिये।

प्रस्तुतकर्त्ता : रामकुमार त्रिपाठी

●

साहित्य-समालोचना

आधुनिक हिन्दी कविता में चित्र-विधान : ले० डा० रामयतनसिंह 'भ्रमर'; प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, चन्द्र-लोक, जवाहर नगर, दिल्ली-७; सा० रा०; पृ० ४३६; मू० २०.०० । शोध-प्रबन्ध ।

कला और संस्कृति : ले० सुमित्रानंदन पंत; प्र०किताब महल प्रा० लि०, जीरो रोड, इलाहाबाद; सा० डि०; मू० ४.५० । निबंध ।

कालिदास ग्रन्थावली :

कालिदास के नाटक :

कालिदास के काव्य : रामप्रताप त्रिपाठी शास्त्री; प्र० किताब महल प्रा० लि० इलाहाबाद; सा० डि०; मु० क्र०; १८.००, १०.००, १०.०० ।

भाषा विज्ञान : ले० प्रो० भारत भूषण 'सरोज'; प्र० हिन्दी साहित्य संसार, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली; सा० क्रा०; पृ० २६४; मू० २.५० । पु० मु० ।

हमारे काव्यकार : ले० व्यथित हृदय; प्र० रामप्रसाद एण्ड संस, अस्पताल रोड, आगरा; सा० क्रा०; पृ० २७८; मू० ३.०० । तृतीय संस्करण ।

काव्य

निर्झरिणी : क० सीतादेवी; प्र० किताब महल, इलाहाबाद; सा० क्रा०; मू० २.०० ।

पंखुड़ियाँ : क० कृष्णकुमार नूतन; प्र० कुमार संस, सोलन; मू० १.५० ।

मुझ में जो शेष है : क० उदय शंकर भट्ट; प्र० आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६, सा० डि०; पृ० ९२; मू० २.५० ।

सपने महक उठे : क०रामावतार त्यागी; प्र० आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६, सा० डि०; पृ० १४६; मू० ४.०० ।

उपन्यास

डा० मोर्यो का द्वीप : ले० एच० जी० वेल्स, अनु० त्रिलोक गोयल; प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस; जवाहर नगर दिल्ली-७; सा० क्रा०; पृ०१४२; मू० ३.५० ।

प्यासा पानी : ले० विमला रैना; प्र० आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; सा० क्रा०; पृ० ३७८; मू० ८.०० ।

पुरुष और महापुरुष : ले० हिमांशु श्रीवास्तव; प्र० हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली; सा० क्रा०; पृ० १५०; मू० १.५० ।

सूना आंचल बिखरे मोती : ले० विजेन्द्र दुसांज; प्र० कुमार संस, सोलन; मू० ४.०० ।



कहानी

मंगलदीप : ले० पीताम्बर पटेल; प्र० आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट दिल्ली; सा० क्रा० ८; पृ० १६०; मू० ३.०० ।

हिमाचल की लोक गाथा : ले० ध्यानसिंह; प्र० कुमार संस, सोलन; मू० ३.०० ।

नाटक

आदर्श की हत्या : ले० कृष्णकिशोर श्रीवास्तव; प्र० रामप्रसाद एण्ड संस, अस्पताल रोड, आगरा; सा० क्रा०; पृ० १६४; मू० २.७५ । एकांकी ।

जाग उठा है रायगढ़ :

ढाई आखर प्रेम का :

धूप के साये में : ले०वसन्त कानेटकर; अनु० वसन्तदेव; प्र० पापुलर प्रकाशन, बम्बई; सा० क्रा०; डी० क्रा०, पृ० क्र० ८८, ११२, ९६; मू० ४.००, ३.००, ३.०० । प्रथम संगीत नाटक अकादमी से पुरस्कृत ।

सोना या आजादी : ले० कृष्णकुमार नूतन; प्र० कुमार संस, सोलन; मू० १·५० ।

हास्य-व्यंग

व्यंग्य की बरसात : ले० डा० बरसानेलाल चतुर्वेदी; प्र० रामप्रसाद एण्ड संस, अस्पताल रोड, आगरा; सा० क्रा०; पृ० ९२; मू० १.७५ ।

बाल-साहित्य

अन्त्याक्षरी दोहावली : सं० दुर्गाशंकर त्रिवेदी, कृष्ण-विजय; प्र० अरविन्द प्रकाशन गृह, अटरू (राजस्थान); पृ० ४०; मू० ०.६० । माध्यमिक कक्षाओं के लिए ।

क से कमला :

खेल-खेल में सीखना : ले० शिरीष; प्र० सर्वसेवा संघ, राजघाट, वाराणसी; सा० क्रा० ४; पृ० क्र० १६; ६०; मू० क्र० १.००, १.५० । सचित्र, प्रथम रंगीन ।

काठ का घोड़ा : ले० नरेन्द्रप्रसाद, 'नवीन'; प्र० हिन्दी साहित्य संसार, बंगलो रोड, दिल्ली-७; सा० क्रा०; पृ० ४८; मू० ०.७५ ।

बोलती कहानियां : प्र० सर्वसेवा संघ, राजघाट, वाराणसी; सा० क्रा० ४; पृ० ४८; मू० १.५० । विनोबाजी के भाषणों से संग्रहीत ।

बालबाड़ी : ले० जुगतराम दुबे, अनु० काशिनाथ त्रिवेदी; प्र० पूर्वोक्त; सा० क्रा० ८; पृ० ३२४; मू०

३.०० । गुजराती से अनुवाद ।

रसभरे ग्राम : ले० वेद कुलश्रेष्ठ; प्र० रामप्रसाद एण्ड संस, अस्पताल रोड, आगरा; सा० डि०; पृ० ४४; मू० ०.७५ ।

शहद का छत्ता : ले० शिरीष; प्र० सर्वसेवा संघ, राजघाट, वाराणसी; सा० क्रा० ४; पृ० १६; मू० १.०० । सचित्र, रंगीन ।

सिखों के गुरु : ले० कमलनारायण झा 'कमलेश'; प्र० हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली-७; सा० क्रा० ।

राजनीति

अमरीका की राजनीतिक प्रक्रिया : ले० लियोनार्ड डब्लू लेवी व जान पी० रोश ।

एक उदारवादी स्वर : ले० चेस्टर बोलस

विश्वशान्ति की ओर : ले० जान० एफ० कनैडी; प्र० आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६; सा० डि०, क्रा०; पृ० क्र० २४०, २७०, २५५; मू० क्र० ७.५०, ५.००, ४.५० ।

शिक्षा

अध्यापकों की शिक्षा : होडनफील्ड और स्टिनेट; प्र० आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६; सा० डि०; पृ० २२३; मू० ६.०० ।

नवीन शिक्षा सिद्धान्त : ले० डा० रामशकल पाण्डे; प्र० रामप्रसाद एण्ड संस, अस्पताल रोड, आगरा; सा० डि०, पृ० २०२; मू० ४.०० ।

भारतीय शिक्षा का इतिहास : ले० डा० प्यारेलाल रावत; प्र० पूर्वोक्त; सा० डि०; पृ० ६०६; मू० १०.०० । सप्तम संस्करण ।

विज्ञान

आधुनिक परमाणु भौतिकी : ले० ओटो आर० फ्रिश; प्र० आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६; सा० क्रा०; पृ० २५५; मू० ५.०० ।

माध्यमिक प्रायोगिक रसायन : ले० ललितमोहन एवं पुरी; प्र० रामप्रसाद एण्ड संस, अस्पताल रोड, आगरा; सा० क्रा०; पृ० १८६; मू० २.०० ।

जीव-विज्ञान

पक्षी-जीवन : ले० राजेश्वरप्रसाद नारायणसिंह; प्र० पापुलर प्रकाशन, बंबई; सा० फु० ८; पृ० ११६; मू० ४.०० ।

मानव की कहानी : ले० कार्लटन एस० कून; प्र० आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६; सा० क्रा० ८; पृ० ४२५; मू० ७.५० ।

अट्ठारह सौ सत्तावन : ले० श्रीनिवास बालाजी हर्डीकर; प्र० सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, सा० क्रा० ८; पृ० २४४; मू० ३.५० । पु० मु० ।

इतिहास के महापुरुष : ले० जवाहरलाल नेहरू; प्र० सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; सा० क्रा० ८; पृ० २५०; मू० ३.५० । पु० मु० ।

धार्मिक

आरती कुंज : सावित्रीदेवी प्रभाकर

कृष्ण उपासना : रामकृष्ण दास

शिवमहापुराण : रतीराम; देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; सा० क्रा० ८; क्रा० ४; पृ० क्र०, ९२, ४१६, ९८८; मू० क्र० १.५०, ४.५०, १४.०० ।

सामवेद गुटका : हरिश्चन्द्र विद्यालंकार; प्र० पूर्वोक्त; सा० क्रा० १६; पृ० ९४४; मू० ४.०० ।

विविध

इम्पोर्ट एक्सपोर्ट गाइड : सुरेशचन्द्र दुबे; प्र० देहाती पुस्तक भंडार, दिल्ली-६; सा० क्रा० १६; पृ० ३२२; मू० ६.०० ।

ऊषा आधुनिक कढ़ाई : ऊषारानी; प्र० पूर्वोक्त; सा० क्रा० ८; पृ० ६४; मू० ३.०० ।

केरल वैभव : ले० एन० वेंकटेश्वरन; प्र० रामनरायण-लाल बेनीप्रसाद, इलाहाबाद-२; सा० क्रा० ८; पृ० ११०; मू० १.७५ ।

चित्रकला का इतिहास : ले० असगरअली कादरी; प्र० रामप्रसाद एण्ड संस, आगरा; सा० क्रा० ८; पृ० १८८; मू० २.०० । तीसरा संस्करण ।

नेहरू : व्यक्तित्व और विचार : प्र० सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; सा० क्रा० ४; पृ० ६५०; मू० २५.०० । पु० मु० ।

पाक भारती : अमोलकचन्द शुक्ला; प्र० देहाती पुस्तक भंडार, दिल्ली-६; सा० क्रा० ८; पृ० ३३६; मू० ६.०० ।

मिट्टी का काम : ले० असगरअली कादरी; प्र० रामप्रसाद एण्ड संस, आगरा; सा० क्रा०; पृ० १०२; मू० १.५० । तीसरा संस्करण ।

मेरी मुक्ति की कहानी : ले० टालस्टाय; प्र० सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; सा० क्रा०; पृ० १५०; मू० २.०० । पु० मु० ।

विश्व की आदिवासी जनजातियाँ : ले० शिवतोष दास; प्र० पूर्वोक्त; सा० डि०; पृ० २५६; मू० ४.०० ।



अ. भा. हिन्दी प्रकाशक संघ :
सदस्यों से निवेदन

अ. भा. हिन्दी प्रकाशक संघ के प्रधानमंत्री ने संघ के सदस्यों से अनुरोध किया है कि संघ का नया वित्तीय वर्ष १ अप्रैल से प्रारम्भ हो चुका है। जिन सदस्यों ने नये वर्ष का चंदा अभी तक नहीं भेजा, वे जून में अपना वार्षिक चन्दा अवश्य भेज दें। संविधान की धारा ४ (घ) के अनुसार नया वर्ष प्रारंभ होने के तीन मास के भीतर जिन सदस्यों का चंदा नहीं पहुंचेगा वे सदस्यता से स्वयं वंचित समझे जायँगे।

प्रधानमंत्री ने सदस्यों तथा 'हिन्दी प्रकाशक' के विज्ञापनदाताओं से निवेदन किया है कि अब से नकद रु० धनादेश तथा चेक आदि सब संघ के कोषाध्यक्ष श्री दयानंद वर्मा, पंजाबी पुस्तक भंडार, दरीबा, दिल्ली के पते पर ही भेजने की कृपा करें।

राजस्थान पुस्तक व्यवसायी संघ :
कामचलाऊ समिति के निर्णय

श्री चम्पालाल रांका राजस्थान पुस्तक व्यवसायी संघ चौड़ा रास्ता, जयपुर से लिखते हैं :

राजस्थान पुस्तक व्यवसायी संघ की कामचलाऊ समिति की बैठक २३, २४ मई को अजमेर में श्री जयकृष्ण अग्रवाल के सभापतित्व में हुई, जिसमें प्रस्तावित विधान को अन्तिम रूप दिया गया। अब यह विधान १३,१४ जून को अजमेर में होने वाली साधारण सभा में स्वीकृति के लिए प्रस्तुत किया जायेगा। इसी सभा में आगामी वर्ष के लिए चुनाव भी सम्पन्न होंगे।

जोधपुर, उदयपुर तथा कोटा के पुस्तक व्यवसायी संगठनों को उनके निवेदन पर राजस्थान पुस्तक व्यवसायी संघ से सम्बन्धित कर लेने का निर्णय किया गया। इस तरह अब संघ के सदस्यों की संख्या १५० तक पहुंच गई है। मीटिंग में यह अपील प्रसारित करने का निश्चय किया गया कि जो पुस्तक व्यवसायी अब तक सदस्य नहीं बने उनको शीघ्र ही सदस्य बन जाना चाहिए, ताकि वे आगामी साधारण सभा में सक्रिय भाग ले सकें।

राष्ट्रीयकरण बोर्ड की पाठ्य-पुस्तकों के वितरण की वर्तमान प्रणाली का सभी ने एक स्वर से विरोध किया और माँग की कि पुस्तक-विक्रेताओं को साढ़े बारह प्रतिशत कमीशन के बजाय १५ प्रतिशत कमीशन दिया जाये और रजिस्ट्रेशन की प्रथा रद्द हो। प्रकाशन के काम आने वाले कागज पर से बिक्री कर समाप्त करने की माँग की गई।

शीघ्र ही पुस्तक-व्यवसायियों के लिए आचार संहिता तैयार करने का भी निर्णय लिया गया। सदस्यता अभियान के सिलसिले में जयपुर व अजमेर क्षेत्र के लिए उप-समितियों का गठन किया गया तथा अलवर, भरतपुर व बीकानेर के लिए कुछ सदस्यों को जिम्मेवारियाँ सौंपी गईं।

सूचना सार

अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशक कांग्रेस

हिन्दी के प्रकाशक का सम्मान

अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशक कांग्रेस का अधिवेशन वाशिंगटन में हो रहा है। राजपाल एण्ड संज़, दिल्ली के संचालक श्री दीनानाथ जी मलहोत्रा उसके एक अधिवेशन का उप-सभापतित्व ग्रहण करेंगे। मलहोत्रा जी कांग्रेस में फेडरेशन आफ पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स इन इण्डिया के प्रतिनिधि-रूप में सम्मिलित होंगे। वाशिंगटन के लिए प्रस्थान करते हुए आपने बताया है कि आप तीन महीने तक अमरीका तथा अन्य देशों का भ्रमण करेंगे। भ्रमण का उद्देश्य प्रकाशन-संबंधी आधुनिकतम जानकारी प्राप्त करना होगा।

मसूरी में नये पुस्तक-विक्रेता

मेसर्स हिन्द ट्रेडर्स ने मसूरी में पुस्तकों की बिक्री का कार्य प्रारम्भ किया है। एक पत्र के द्वारा उन्होंने हिन्दी के प्रकाशकों से अनुरोध किया है कि वे अपनी सूची तथा नियमावली आदि उन्हें भेज दें। उनका पता यह है :

हिन्द ट्रेडर्स, तुलमोरे लाज, डिक रोड, मसूरी।

बाल-साहित्य की सूची

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् बाल-साहित्य की एक ऐसी सूची बनाने में लगी हुई है जिसके आधार पर स्कूलों के पुस्तकालय और बच्चों के अन्य सामान्य पुस्तकालय भी बच्चों के लिए अच्छी और उपयोगी पुस्तकें खरीद सकें।

प्रकाशक संघ के सदस्यों तथा अन्य प्रकाशकों से निवेदन है कि अपना सहयोग प्रदान करते हुए अपने बाल-साहित्य के प्रकाशनों की एक-एक प्रति हमें इस पते पर भेज दें।

इन्दिरा कुलश्रेष्ठ
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
५ वेस्ट पटेल नगर,
पटेल रोड, नई दिल्ली

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के निमित्त, प्रधानमंत्री कन्हैयालाल मलिक द्वारा संपादित, उद्योगशाला प्रेस, किंग्सवे, दिल्ली–९ में मुद्रित एवं २६-ए, चन्द्रलोक जवाहरनगर, दिल्ली से प्रकाशित

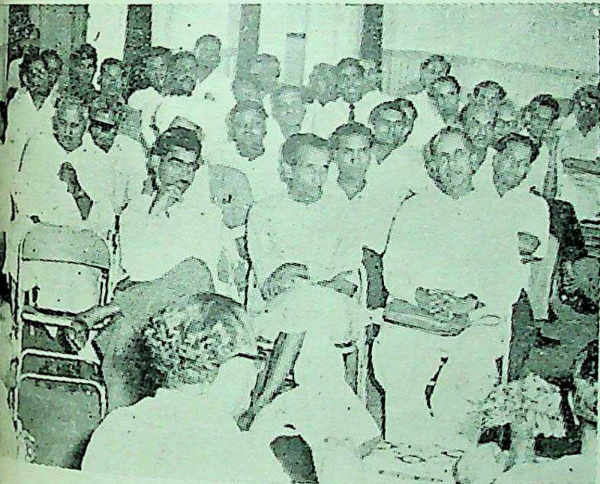
अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ दसवां वार्षिक अधिवेशन, जयपुर



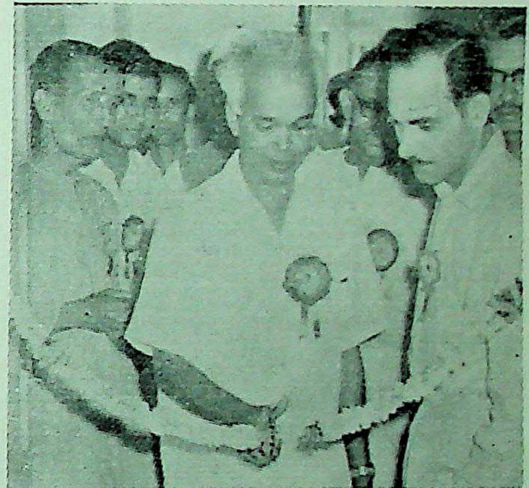
श्रद्धेय सम्पूर्णानन्द जी, माननीय सुखाड़िया जी और संघ के अध्यक्ष



वार्षिक अधिवेशन में श्री मलिक, श्री ओमप्रकाश, डा० सत्येन्द्र और श्री दिनेश खरे



उपस्थिति का एक दृश्य



राजस्थान के शिक्षा संचालक श्री वी० वी० जोन द्वारा प्रदर्शनी का उद्घाटन



जलपान



प्रदर्शनी का एक कोना

देश की उन्नति टैक्नीकल शिक्षा पर निर्भर है !

विद्युत सम्बन्धी

इलै० इंजीनियरिंग बुक	१५.००
इलैक्ट्रिक गाइड	१०.००
इलैक्ट्रिक वायरिंग	४.५०
इलैक्ट्रिक बैट्रीज़	४.५०
इलैक्ट्रिक लाइटिंग	८.२५
इलैक्ट्रिक सुपरवाइज़री पेपर्स	१०.५०
सुपरवाइज़र वायरमैन	४.५०
इलै० परीक्षा पेपर्स सम्पूर्ण	१५.००
ए० सी० मोटर वाइंडिंग	१५.००
इलैक्ट्रिक मोटर्स	८.२५
इलैक्ट्रिक वायरगेज	१२.००
इलैक्ट्रिक डायग्राम्स	१२.००
टाँका लगाने का ज्ञान	४.५०
छोटे डायनेमो इलै० मोटर	४.५०
ट्रांसफार्मर गाइड	६.००
इलैक्ट्रिक मोटर्स	८.२५
रेलवे ट्रेन लाईटिंग	६.००
इलै० सुपरवाइज़री शिक्षा	६.००
इलैक्ट्रिक वैल्डिंग	६.००
ए० सी० जैनरेटर्स	८.२५
इलै० मोटर्स आल्टरनेटर्स	१६.५०
इलैक्ट्रिक गैस वैल्डिंग	१२.००
इलैक्ट्रोप्लेटिंग	४.५०
बिजली मास्टर	४.५०
गैस वैल्डिंग	६.००
इलैक्ट्रीसिटी	६.००
भारतीय बिजली नियम	२.५०
इलै० लाइनमैन वायरमैन गा०	२५.५०
आल्टरनेटिंग करैंट	२५.५०
विद्युत् इंजीनियरिंग	१६.००
प्रैक्टी० आर्मेचर वाइंडिंग	८.२५
रैफरीजरेटर गाइड	८.२५
आर्मेचर वाइंडर्स गाइड	१५.००
आइसप्लाण्ट (बर्फ मशीन)	४.५०
टेक्नीकल डिक्शनरी	४.००
एयर कण्डीशनिंग गाइड	१५.००

आयल व स्टीम इन्जिन्स

आयल व गैस इंजन	१५.००
आयल इंजन गाइड	८.२५
क्रूड आयल इंजन गाइड	६.००
लोको शेड फिटर गाइड	१५.००
स्टीम वायलर्स और इंजन	८.२५
स्टीम इंजीनियर्स गाइड	१२.००
हैंडबुक आफ स्टीम इंजीनियर	२०.२५

रेडियो साहित्य

वायरलैस रेडियो गाइड	८.२५
रेडियो सर्विसिंग (मैकेनिक)	८.२५
घरेलू बिजली रेडियो मास्टर	४.५०
बृहत् रेडियो विज्ञान	१५.००
रेडियो मास्टर	४.५०
सर्किट डायग्राम्स आफ़ रेडियो	३.७५
ट्रांजिस्टर रेडियो	४.५०
सर्विसिंग ट्रांजिस्टर रेडियो	७.५०
रेडियो पथ-प्रदर्शक	५.५०
बेसिक रेडियो शिक्षक	२.००
रेडियो कम्यूनिकेशन	६.००
ट्रांजिस्टर डेटा और सर्किट	१०.५०
टेप रिकार्डर	१०.५०
ट्रांजिस्टर रिसीवर्स	६.७५

मोटरकार सम्बन्धी

मोटरकार वायरिंग	४.५०
मोटर मैकेनिक टीचर	६.००
मोटर ड्राइविंग टीचर	४.५०
मोटरकार इन्स्ट्रक्टर	१५.००
मोटर साइकिल गाइड	४.५०
मोटरकार ओवरहालिंग	६.००
मोटरकार इंजीनियर	८.२५
मोटरकार इंजन (पावर यू०)	८.२५
मोटरकार सर्विसिंग	८.२५
कम्पलीट मोटरकार ट्रे० मै०	२४.७५
मोटर प्रश्नोत्तर	६.००
स्कूटर और आटो रिक्शा	४.५०
खेती और ट्रैक्टर	६.००
आटोमोबाइल इंजीनियरिंग	१२.००
आधुनिक टिपीकल मोटर गाइड	४.५०

खराद सम्बन्धी

खराद शिक्षा (टर्नर गाइड)	४.५०
वर्कशाप गाइड (फिटर ट्रेनिंग)	४.५०
खराद तथा वर्कशाप ज्ञान	६.००
फिटिंग शाप प्रैक्टिस	७.५०
वर्कशाप प्रैक्टिस	१२.००
मशीन शाप प्रैक्टिस	१५.००
लेथ वर्क	६.७५
मिलिंग मशीन	८.२५
बैंच वर्क एण्ड डाईफिटर	८.२५
माडर्न ब्लैकस्मिथी मैनुअल	८.२५
खराद आपरेटर गाइड	८.२५
फिटर मैकेनिक	८.२५

फर्नीचर व गृह निर्माण सम्बन्धी

भवन-निर्माण कला
विश्वकर्मा प्रकाश
सर्वे इंजीनियरिंग बुक
लोकास्ट हाउसिंग टेकनीक
सीमेंट की जालियों के डिजायन
मिस्त्री डिजायन बुक
हैंडबुक आफ़ बिल्डिंग्स
टिम्बर केल्कुलेटिंग इंगलिश
जन्त्री पैमाइश चोब (हिंदी)
फर्नीचर बुक
फर्नीचर डिजायन बुक
मारबल चिप्स के डिज़ायन
जंत्री पैमा. चोब (गोल लकड़ी)
जंत्री पैमा० चोब (चिरी लकड़ी)
मशीन वुड वर्किंग

दस्तकारी

कारपेण्ट्री मास्टर
कारपेण्ट्री मैनुअल
प्रैक्टीकल घड़ीसाज़ी
साइकिल रिपेयरिंग
हारमोनियम रिपेयरिंग
सिलाई मशीन रिपेयरिंग
ग्रामोफोन रिपेयरिंग
प्रैक्टीकल फोटोग्राफी
ब्लैकस्मिथी (लोहारी का काम)
आयरन फर्नीचर
नक्काशी आर्ट-शिक्षा
बढ़ई का काम
राजगीरी शिक्षा
स्प्रे पेन्टिंग
पोट्रीज़ गाइड

जनरल पुस्तकें

जनरल मैकेनिक गाइड
शीट मेटल वर्क
वीविंग गाइड
हैण्डलूम गाइड
पावरलूम गाइड
फाउण्ड्री प्रैक्टिस (ढलाई)
प्लम्बिंग और सेनीटेशन
एग्री० इण्डस्ट्रियल पम्पस
सिनेमा मशीन आपरेटर
ट्यूबवैल गाइड
फाउण्ड्री वर्क
मशीनिस्ट

पुस्तक विक्रेताओं व लाईब्रेरियों को पर्याप्त कमीशन !

चावड़ी बाजार, दि

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक
संघ का मुखपत्र



हिन्दी प्रकाशक

वर्ष ३ जुलाई-अगस्त, १९६५ अंक ८-९

प्रकाशकों के नाम एक पत्र

Phone 274874

STAR BOOK CENTRE

(LARGEST STOCKISTS OF HINDI BOOKS)

2715, DARYA GANJ,
[Behind Moti Mahal]
DELHI-6 (India)

प्रिय महोदय,

हमें १९६२ और उसके बाद की प्रकाशित हिन्दी पुस्तकों की आवश्यकता है। चुने जाने पर पुस्तकों की २०-२० प्रतियां मंगाई जायेंगी। इस संबंध में आप हमें अपने प्रकाशनों का व्यौरा निम्नानुसार भिजवाने की कृपा करें:-

पुस्तक का नाम व लेखक	अनुवादक (यदि अनुवाद हो)	पहले संस्करण का प्रकाशन-वर्ष (पुस्तक पर छपा)	मूल्य
-----------	--------------	-------------	----

यह पूरा विवरण प्राप्त होने पर हम आपके स्वीकृत पुस्तकों का आर्डर भेज देंगे। यदि आपके ऐसे प्रकाशन बहुत अधिक संख्या में हों तो अपने सूचीपत्र पर ' प्रकाशन-वर्ष ' लिख कर भेज दें।

कदाचित आप जानते होंगे कि हम दिल्ली में बाहरी प्रकाशनों की थोक बिक्री कर रहे हैं। यदि आपके प्रकाशन अब तक हमारे यहां नहीं आये तो हम चाहेंगे कि उन्हें अपने स्टाक में रखें। इस संबंध में अपने नियम एवं अधिकाधिक कमीशन से जो आप हमें दे सकें, सूचित करें। इस प्रकार हमारा आपका सहयोग बढ़ेगा।

लौटती डाक से आपके उत्तर की प्रतीक्षा में,

भवदीय
कृते स्टार बुक सेन्टर,
(अमर नाथ)

पुनश्च:- भविष्य में भी आप अपने नये प्रकाशनों की सूचना हमें भिजवाते रहें। यदि सम्भव हो तो पुस्तक प्रकाशित होते ही उसकी एक एक प्रति डाक द्वारा भिजवाने की कृपा करें। इन पुस्तकों की रकम हमारे बिल में जोड लें।

धन्यवाद,

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष ३, अंक ८–९ जुलाई-अगस्त, १९६५ मूल्य, वार्षिक ३.००

पाठ्य-पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण

जुलाई का महीना विद्यार्थी एवं संरक्षकों के लिए एक अग्नि-परीक्षा का महीना होता है। इस महीने में प्रत्येक संरक्षक अथवा अभिभावक को अपने घर के छात्र के लिए कितने ही चक्कर पुस्तक-विक्रेता की दूकान पर काटने पड़ते हैं। उस समय उसके हाथ कोई पाठ्य-पुस्तक लग जाय तो वह समझता है कि उसे आज रामबाण औषधि प्राप्त हो गई।

जुलाई सन् १९६५ का महीना भी अन्य महीनों के समान है। दैनिक नवभारत टाइम्स ने अपने समाचार में इस सत्य पर अभी हाल में प्रकाश डाला था कि दिल्ली में उन पुस्तकों की पूरी कमी है जो शिक्षा विभाग द्वारा राष्ट्रीयकृत योजना में प्रकाशित की हैं। अप्रैल मास में इस प्रकार की शिकायत पंजाब के प्रति मिलती रही है। पंजाब में शिक्षा सत्र अप्रैल से जुलाई तक होता है और जुलाई के पश्चात् सितम्बर तक अवकाश रहता है। मध्य-प्रदेश के पुस्तक-विक्रेताओं ने हिन्दी-प्रकाशक संघ के पदाधिकारी से व्यक्तिगत भेंट के अवसर पर बताया कि उनके राज्य में पाठ्य-पुस्तकों पर १५ प्रतिशत का ब्लेक है।

२५ जुलाई, सन् १९६५ के साक्षी पत्र ने अपना एक समाचार इस विषय में विस्तार-पूर्वक प्रकाशित किया है। जिसमें उन्होंने राष्ट्रीयकृत योजना के लाभ बताये हैं— १. मास्टर नाराज, २. विद्यार्थी बेहाल, ३. अभिभावक परेशान, ४. दूकानदार बेबस, ५. सरकार......! साथ ही शिक्षा-मन्त्री छागला के चित्र के नीचे एक पंक्ति में लिखा है 'यह बेवकूफी कब खत्म होगी ?' साक्षी ने अपने इस समाचार में पाठ्य-पुस्तकें नहीं मिलतीं के साथ-साथ इस बात पर बल दिया है कि राष्ट्रीयकरण में जनता का पैसा बरबाद हो रहा है।

राष्ट्रीयकरण की नीति सरकार ने किस दृष्टिकोण को सम्मुख रखकर अपनाई है यह बात समझ में नहीं आती। कुछ का विचार है कि पाठ्य-पुस्तकों की स्वीकृति में भ्रष्टाचार होता था वह राष्ट्रीयकृत योजना में समाप्त हो गया है। हमें इस बात की सत्यता पर भी सन्देह है। यदि इस कार्य में भ्रष्टाचार होता था तो क्या वह एक-पक्षीय था। सरकार ने प्रकाशकों से पुस्तकें लेकर उनकी जीविका पर तो प्रहार किया किंतु उन शिक्षा-कर्णधारों के विपरीत क्या पग उठाये जो भ्रष्टाचार में प्रकाशकों के समान ही दोषी हैं। जहाँ तक भ्रष्टाचार का नारा है वह भी अपने में गलत है। सरकार ने आज तक किसी एक प्रकाशक को भ्रष्टाचार के अभियोग में न तो प्रमाणित ही किया और न सार्वजनिक रूप में उसके इस कृत्य का विज्ञापन ही किया।

पाठ्य-सामग्री पाठ्य-पुस्तकों में जितनी हेय-श्रेणी की

है उसको देखकर अपना मस्तक लज्जा से झुक जाता है। राजस्थान शिक्षा-विभाग द्वारा राष्ट्रीयकरण योजना में हिन्दी भाषा की एक पुस्तक में चीन को बन्धुवर कह-कर सम्मानित किया गया है और उससे प्रेम कर भारत के उत्थान की आकांक्षा प्रकट की गई है। इस पुस्तक का सन् १९६३-६४ का संस्करण भी आ गया किंतु यह कविता पूर्व की भाँति प्रकाशित होती जा रही है। पंजाब शिक्षा-विभाग द्वारा स्वीकृत राष्ट्रीयकरण की पुस्तकों में (सामाजिक अध्ययन) अभी तक भारत में क, ख, ग श्रेणी के प्रान्त ही पढ़ाये जाते हैं। राज्य पुनर्गठन योजना और उसको कार्यान्वित किये यद्यपि काफी समय हो गया है।

राष्ट्रीयकृत पुस्तकों का मूल्य काफी सस्ता होता है यह सत्य नहीं है। सन् १९६१ में पंजाब के प्राइवेट प्रका-शकों की पाठ्य-पुस्तकों का मूल्य सस्ता था और कन्ट्रोलर प्रिन्टिंग स्टेशनरी पंजाब की पुस्तकों का मूल्य प्राइवेट प्रकाशकों की अपेक्षा महँगा।

सरकार को राष्ट्रीयकरण करते हुए काफी समय हो गया है और उसको यह बात सहर्ष स्वीकार करनी चाहिये कि वह इस योजना में पूर्णतया असफल रही है। इस कारण एक ही मार्ग सरकार के लिए उचित है कि वह पाठ्य-पुस्तकों की पाठ्य-सामग्री का निर्माण स्वयं कराये। पाठ्य-पुस्तक का प्रकाशन प्रान्तीय सहकारी प्रकाशक-संघ को प्रदान करे और उसका वितरण प्रान्तीय पुस्तक-विक्रेताओं के सहकारी संघ द्वारा किया जाय। पाठ्य-पुस्तक के मूल्य तथा व्यवस्था पर सरकारी नियन्त्रण हो। इस योजना से पाठ्य-पुस्तकों की विषय-सामग्री ठीक रहेगी, मूल्य में कमी होगी और पाठ्य-पुस्तकें नहीं मिलतीं इसकी शिकायत भी दूर हो जायगी। साथ-ही-साथ पुस्तक व्यवसाय को एक सुदृढ़ता मिलेगी। सरकार का कर्त्तव्य है कि वह जनता की ध्वनि को जनतंत्र के नाम पर सुने; उसको यह नहीं चाहिए कि वह जनतन्त्र का नाम लेकर तानाशाही नीति को अपनाए।

प्रजातंत्र में पुस्तकालय-सेवाओं का महत्त्व

श्री हरिश्चन्द्र व्यास, बीकानेर

प्रजातंत्र के बढ़ते हुए कदम शिक्षा पर आधारित हैं और शिक्षा स्वयं कोई साध्य नहीं है, वह तो साध्य के लिए एक साधन मात्र है, इसलिए यदि हम शिक्षारूपी वृक्ष को हरा-भरा व फला-फूला देखना चाहते हैं, तो उसे पुस्तकालय-सेवारूपी पानी से सिंचित करते रहना पड़ेगा और इस पेड़ के लिए पुस्तकाध्ययन अच्छी खाद का काम करेगा।

यहाँ प्रजातंत्र और पुस्तकालय का सम्बन्ध बताने के लिए प्रजातंत्र को समझ लेना आवश्यक है। प्रजातंत्र के सबसे बड़े पोषक अब्राहिम लिंकन के शब्दों में प्रजातंत्र "वह शासन है जो जनता का ही हो, जनता के लिए तथा जनता के द्वारा चुने हुए नुमाइंदों द्वारा चालित हो।" इस परिभाषा से स्पष्ट है कि इस तरह की शासन-प्रणाली में राजसत्ता जनता में होती है। सभी नागरिकों को बिना लिंग और रंग-भेद के समान रूप से शासन में भाग लेने का अधिकार होता है।

प्रजातंत्र के भी दो पहलू हैं—आर्थिक व सामाजिक। आर्थिक पहलू इस बात पर बल देता है कि देश की आर्थिक व्यवस्था में सभी लोगों का समान रूप से अधिकार होना चाहिए। प्रजातंत्र में देश की आर्थिक शक्ति केवल चंद मुट्ठी-भर पूंजीपतियों के हाथ में न होकर जनता-जनार्दन के हाथ में होनी चाहिए।

सामाजिक पहलू इस बात पर जोर देता है कि जन्म, जाति, धर्म अथवा लिंग के आधार पर मनुष्यों में अन्तर नहीं होना चाहिए। प्रत्येक नागरिक को उसकी व्यक्तिगत रुचि व शक्ति के अनुसार कार्य करने का अवसर मिलना चाहिए। नागरिकों को अपने विचारों को व्यक्त करने की स्वतंत्रता तो प्रजातंत्र में उनका मूलभूत अधिकार है।

सभी नागरिकों को आर्थिक, सामाजिक तथा इसके अलावा राजनीतिक क्षेत्रों में अपनी-अपनी शक्तियों के प्रयोग का पूर्ण अवसर प्रदान किया जाता है। जिस व्यक्ति का जैसा व्यक्तित्व होता है उसी के आधार पर उसे समाज में प्रतिष्ठा मिलती है। आधुनिक युग की इस राज्य-प्रणाली में पैसों के आधार पर किसी व्यक्ति को रायबहादुर आदि उपाधियाँ प्रदान करना विहित नहीं समझा जाता।

शिक्षा के क्षेत्र में प्रजातंत्र ने अभी कुछ थोड़े दिनों से पदार्पण किया है। प्रजातंत्र में शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तियों में उस क्षमता को पैदा करना है, जिसके द्वारा वे प्रत्येक सामाजिक परिवर्तन को सहर्ष स्वीकार कर सकें। शिक्षा पर अधिकाधिक जोर दिया जाय अर्थात् जनता के अपने राज्य में शिक्षा की व्यवस्था का ऐसा होना स्वाभाविक ही है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति सामाजिक कार्यों तथा सम्बन्धों में निजी रूप से भाग ले सके। हमारे देश में प्रजातंत्र अभी छोटे बच्चे के रूप में है, जिसके कारण जनता अपनी जिम्मेवारियाँ समझने में असमर्थ है। शिक्षा प्रजातंत्र की जड़ है। वह जड़ पुस्तकालयों के द्वारा ही जमी रह सकती है क्योंकि मनुष्य शिशु अवस्था से अपने अन्तिम क्षण तक उसके माध्यम से अपने सामाजिक व नैतिक स्तर को ऊँचा उठा सकता है। जब से बच्चा पढ़ना-लिखना सीखता है तब से वह शिशु-पुस्तकालय में खिलौनों के माध्यम से, उसके बाद चित्रों व लोक-कथाओं द्वारा, और तत्पश्चात् अपने साथियों के साथ खेल के माध्यम से अपने आप को एक बालक-समाज का सदस्य जानता है और बाल-पुस्तकालयों में नियमों का पालन करना तथा व्यवस्था करने में हाथ बँटाना आदि सामाजिक प्रवृत्तियों की तरफ आकर्षित होता है। पुस्तकालय के द्वारा आयोजित बाल-सभाओं में बोलना तथा अपने द्वारा किसी प्रतिभाशाली बालक को बहुमत के आधार पर चुनना, चुने हुए बालक द्वारा सभा की व्यवस्था बनाये रखने तथा दिये गये आदेशों को शिरोधार्य करना यह एक प्रकार की प्रजातंत्र राज्य की शुरूआत है। इससे बालकों को आगे चलकर देश की सामाजिक प्रवृत्तियों में भाग लेने व प्रजातांत्रिक प्रणाली से अवगत होने का अवसर मिलता है।

दिनकर जी की नयी पुस्तकें

लोकदेव नेहरू

पंडित जवाहर लाल नेहरू जी के विषय में दिनकर जी के वैयक्तिक संस्मरण जिनमें से अधिकांश संस्मरण आपने धर्मयुग में पढ़े होंगे। स्तालिन के दर्पण में जवाहरलाल जी के व्यक्तित्व की झाँकी और, अन्त में, गांधी जी के साथ जवाहरलाल जी के सम्बन्धों का अध्ययन और इतिहास जो १९१६ से आरम्भ होकर १९४८ में समाप्त होता है। समसामयिक राजनीति पर हिन्दी में यह अत्यन्त रोचक पुस्तक प्रकाशित हुई है।

मूल्य ५.००

आत्मा की आँखें

लारेन्स के भावों का आधार लेकर विरचित सत्तर कविताओं का संग्रह।

मूल्य ४.००

कोयला और कवित्व

दिनकर जी की स्फुट कविताओं का नवीनतम संग्रह। नयी होने पर भी ओजस्विनी और प्राणपूर्ण।

मूल्य ३.५०

दिनकर की सूक्तियाँ

दिनकर जी के समस्त काव्य-सागर में डूब कर चुने गये मोतियों का संग्रह।

मूल्य ३.००

मृत्ति तिलक

दिनकर जी की कुछ स्फुट कविताओं का संग्रह।

मूल्य २.००

मिलने का पता :—

उदयाचल

राजेन्द्र नगर, पटना-४

जब बच्चा सोलह वर्ष की अवस्था के आस-पास पहुँचता है तो उस समय वह अपने आप को बच्चों से बड़ा तथा युवकों से छोटा समझता है। वह बच्चों के साथ स्वतंत्रता व निर्भीकता से खेलना-पढ़ना नहीं चाहता, क्योंकि अब वह अपने आप को जिम्मेवार समझता है। बड़ों के साथ बैठने जितना माद्दा उसमें नहीं होता। दुनिया के आँकड़े उठाकर देखने से पता चलता है कि इसी सोलह और बीस की अवस्था में बालक असामाजिक प्रवृत्तियों में पड़ जाते हैं। इस असामाजिक अंधकार से बालकों को बचाये रखने के लिए पुस्तकालय दीपक का कार्य करते हैं और उनकी रुचि के अनुसार आयोजित सामाजिक कार्यक्रमों, प्रदर्शनियों, चल-चित्रों द्वारा तथा दुनिया के कोने-कोने से प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं को पढ़वाकर उनके सामाजिक स्तर को बनाये रखना पड़ता है। पुस्तकालय एक व्यक्ति के रूप में बालक का निवास है और समाज के सदस्य के रूप में बालक उसमें निवास करता है। वह बालकों का पूर्ण व संतुलित विकास करने की रूपरेखा बनाने के लिए सामाजिक व्यवस्था की नींव रखता है। इन्हीं महत्त्वपूर्ण उद्देश्यों के आधार पर ही वह बालक पुस्तकालय की चार-दिवारी में खेल के माध्यम से, गाँव, नगर यहाँ तक कि फिर सम्पूर्ण देश में विस्तृत समाज के लिए तैयार किये जा सकते हैं। बालकों में संगृहित वस्तुओं का अवलोकन तथा उनके उपयोग की शिक्षा पुस्तकालय ही प्रदान करता है। पुस्तकालय सामाजिक व जनतांत्रिक जीवन के लिए अवसर प्रदान करता है तथा छात्र की सामाजिक जागृति को पुस्तकालय की एकमात्र देन है। जनता द्वारा चुने हुए मनुष्यों द्वारा ही अनुशासन व उपस्थिति की जनतंत्रात्मक ढंग से व्यवस्था की जाती है। प्रौढ़ भी पुस्तकालय द्वारा आयोजित अलग-अलग विषय की सभाओं में उपस्थित होने, कमेटियों का संचालन करने और सामाजिक प्रशासनिक कार्यों पर वार्तालाप में उतनी ही तत्परता से भाग लेते हैं जितना सम्पूर्ण जागरूक शासक। पुस्तकालय बच्चों से लेकर मनुष्यों के अन्तिम क्षण तक एक पाठशाला का कार्य करता है और अवस्था के आधार पर उन्हें सामाजिक प्रवृत्तियों की तरफ अग्रसर होने के लिए जागरूक करता है। प्रजातंत्र की सफलता पुस्तकालयों पर ही निर्भर है, इसलिए इंगलैण्ड तथा संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़े हुए देशों में राष्ट्रीय बजट का काफी भाग इन्हीं पुस्तकालयों पर लगाया जाता है। उन देशों में जिस प्रकार सैनिक शक्ति को बढ़ाने के लिए कर वसूल किया जाता है उसी प्रकार देश के पुस्तकालयों के लिए पुस्तकालय-कर लगाते हुए पुस्तकालय-सेवाओं को ऊँचा उठाया जाता है। लेकिन भारत जैसे प्रजातंत्र में शिक्षा पर भी नाममात्र की राशि राष्ट्रीय बजट में रखी जाती है तो पुस्तकालयों का संरक्षण कैसे हो सकता है? लेकिन पुस्तकालय की उपेक्षा कर देश के सामाजिक स्तर को गिराना ही साबित हो रहा है और होता रहेगा।

प्रजातंत्री देश की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वहाँ के देशवासी सभी पढ़े-लिखे होंगे तो वे देश की भलाई-बुराई की बात को अच्छी तरह से समझ सकते हैं। इसके विपरीत वे अशिक्षित हैं तो देश की सरकार को सफल बनाने में सफल न होंगे। प्रजातंत्र की विचारधारा ने जन-साधारण की शिक्षा का आन्दोलन आरम्भ किया है। प्रजातंत्री देश के नागरिक सुशिक्षित हों, इस बात को मानने में दो मत नहीं हो सकते लेकिन यह देखें कि सबसे ज्यादा प्रभाव-शाली साधन कौन सा हो सकता है। जब विद्यार्थी विद्यालय व महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय में अध्ययन करता है उस समय भी अपनी शिक्षा-दीक्षा में पुस्तकालय का आधार कभी नहीं छोड़ सकता क्योंकि विद्यार्थी काल में मनोरंजनात्मक अध्ययन व अनुसंधान के लिए विश्व के माने हुए विषय-विशेषज्ञों के बहुमूल्य विचारों से उन पुस्तकों के जरिये ही लाभ उठा सकता है। और विद्यार्थी कक्षा में पढ़ाये जाने वाले विषय को रचनात्मक ढंग से प्रदर्शित करने के लिए, पढ़ने के लिए विशेष सामग्री जुटाना, पुस्तकों के उप-योग के बारे में प्रारंभिक आदेश व व्यक्तिगत और सामूहिक प्रोजेक्ट के रचनात्मक प्रयोग के लिए अवसर प्रदान करना आदि महत्त्वपूर्ण दायित्व पुस्तकालयों के कंधों पर ही रहता है। लेकिन ऐसे नागरिक जो शिक्षा-शालाओं के माध्यम से परिस्थितिवश अध्ययन करने में असमर्थ होते हैं उनको अध्ययन की तरफ अग्रसर करना राज्य का एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। ऐसी दशा में राज्य प्रौढ़ जीवन के लिए बड़े सार्वजनिक चल-पुस्तकालयों द्वारा, चलचित्रों

द्वारा, टेलीविजन द्वारा, टेपरिकार्डर द्वारा, प्रदर्शनियों द्वारा उनको शिक्षित करता है ताकि खाली समय में वे मनोरंजन के साधन से भी शिक्षित होते हुए अपने नागरिकता के अधिकारों का सदुपयोग कर सकें। अमेरिका के प्रैसीडेन्ट वाशिंगटन का कहना था कि प्रत्येक देश में जनता के सुख, सुशिक्षित मनोरंजन आदि के लिए पुस्तकालयों का जाल-सा बिछा दिया जाना अति आवश्यक है क्योंकि पुस्तकालय द्वारा भिन्न-भिन्न रुचि के नागरिकों को उनकी रुचि के माध्यम से ही शिक्षित करके समाज का भला कर सकते हैं। वाशिंगटन ने सर्वसाधारण में शिक्षा-प्रसार के लिए सारे देश में शिक्षालय खुलवाये, उन सब में एक सुन्दर पुस्तकालय का प्रबंध करवाया। इसके साथ ही सार्वजनिक प्रौढ़ पुस्तकालय काफी मात्रा में खुलवाये ताकि पुस्तकालय शिक्षा के केन्द्र बन सकें। प्रजातन्त्र के ही कारण ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, अमेरिका आदि देशों में सार्वजनिक पुस्तकालयों की व्यवस्था देशवासियों से पुस्तकालय-कर (Library tax) लगा कर की जाती है। जिससे सर्व साधारण पुस्तकालयों के प्रति पूर्णरूप से जागरूक हो सके। संसार के अन्य प्रजातन्त्रीय देश जैसे भारत, कनाडा, आस्ट्रेलिया, बर्मा, तथा लंका आदि इन देशों का अनुसरण कर रहे हैं। कारखानों और खेतों में काम करने वाले मजदूरों से लेकर अस्पताल में पड़े मरीजों, नाविकों, सीमा पर खड़े सिपाहियों को भी शिक्षा व मनोरंजन देने का उत्तरदायित्व भी पुस्तकालय पर ही है। पुस्तकालय के माध्यम से शिक्षा लेना या पुस्तकालय का लाभ कुछ ही लोगों का जीवन अधिकार नहीं है वरन् देश के सभी नागरिकों का जीवन अधिकार है।

प्रजातन्त्रीय देश में पुस्तकालयों का उद्देश्य बच्चों को बहुत-सी क्रियाएं करने का अवसर प्रदान करना होता है जिससे कि उनमें बहुत-सी उपयोगी अभिरुचियां पैदा हो जायें। पुस्तकालय शिक्षा की ऐसी महत्त्वपूर्ण प्रणाली से विद्यार्थी को शिक्षा देते हैं कि बालकों में कार्यों के प्रति अभिरुचि पैदा हो जाय जिससे वे प्रजातन्त्र के महान् सिद्धान्त सद्भावना व सहयोग का पाठ सीख जाते हैं। चाहे शाला के पुस्तकालय हों, चाहे पब्लिक लाइब्रेरी का बाल विभाग हो, बालक अपने आपको पुस्तकालय द्वारा भिन्न-भिन्न प्रकार के आयोजित कार्यक्रमों में अभिरुचि लेते हुए अपने आपको भूल जायेंगे यही उनके अधिक विकास के चिन्ह हैं। पूर्ण नागरिक बनने के लिए केवल मात्र पाठ्य-पुस्तकों व विषय-ज्ञान के प्रति अभिरुचि पैदा करना पूर्ण शिक्षा नहीं है। अध्ययन कक्ष में तो अध्यापकगण केवल छात्रों को विषय-सामग्री की रूपरेखा मात्र बताते हैं। बताये हुए के आधार पर मोटे रूप में बढ़ाना, उससे संबंधित ज्ञान का अध्ययन करना, विषय-सामग्री को पढ़ते हुए समाज के प्रति उत्तरदायित्व-सम्पन्न व जागरूक होना तथा शिक्षा को व्यावहारिकता देना, यह सभी छात्र पुस्तकालय के माध्यम से ही प्राप्त कर सकता है। जब कक्षा में पढ़ी बात व्यावहारिक शिक्षा में परिवर्तित हो जायेगी तो स्वतः ही छात्रों का जो देश के भावी निर्माता होने वाले हैं, चरित्र पूर्णरूप से विकसित होगा। इस प्रकार प्रजातन्त्र के युग में पुस्तकालय का उद्देश्य छात्रों व प्रौढ़ों को ज्यादा से ज्यादा व्यावहारिक शिक्षा देते हुए उसमें देश के नागरिक-समाज के प्रति सेवा की भावना को जागरूक करना है। दूसरा उद्देश्य उनकी विचार-शक्ति को विकसित करना है। पुस्तकालय देश के छात्रों व नागरिकों में ज्यादा से ज्यादा विचारने की योग्यता उत्पन्न करता है। प्रजातन्त्र में पुस्तकालय का तीसरा उद्देश्य है, बालकों व प्रौढ़ों में सामाजिक भावना का उत्पन्न करना। सामाजिक भावना उत्पन्न करने के लिए पुस्तकालय के माध्यम से अपनी हस्ती के अनुसार व्यवसाय चुनने व उसे कार्य-रूप में परिणत करने के लिए विश्व के महान् लेखकों की देन पुस्तकों के रूप में प्राप्त कर सकते हैं। कला-कौशल, जो एक प्रगतिशील देश का प्रतीक है, वह भी पुस्तकों के जरिये सीखते हुए अपना तथा समाज का भला कर सकते हैं। इसके साथ-साथ पुस्तकालय व्यक्ति को एक ऐसा आदर्श नागरिक बनाता है जिससे कि वह अपनी सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक समस्याओं को समझने में सफलता पा सके और अपने तथा देश के भविष्य के विषय में सोचे तथा अपने उत्तरदायित्वों को सोचने-समझने व निभाने की क्षमता पैदा कर ले।

(अपूर्ण)

व्यावसायिक हलचलें—

पाठ्य पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण में परिवर्तन की सम्भावना

राज० पुस्तक व्यवसायी संघ का अधिवेशन सम्पन्न शिक्षा संचालक श्री वी० वी० जॉन का सारगर्भित भाषण

राजस्थान पुस्तक व्यवसायी संघ की साधारण सभा का अधिवेशन गत १३-१४ जून को अजमेर में सम्पन्न हुआ। अधिवेशन में राजस्थान के कोने-कोने से आये हुए लगभग ६० प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

अधिवेशन की एक बैठक १३ तारीख को सायं ४।। बजे शिक्षा संचालक श्री वी. वी. जॉन की अध्यक्षता में हुई।

आपने अपने सारगर्भित भाषण में कहा कि राष्ट्रीयकरण पाठ्य-पुस्तक मंडल की वर्तमान स्थिति से बोर्ड के सदस्य भी खुश नहीं हैं और हो सकता है कि भविष्य में इसके सम्बन्ध में आमूल-चूल परिवर्तन किये जायें। पुस्तक विक्रेताओं को राष्ट्रीयकृत पाठ्य पुस्तकों पर १२।। प्र. श. कमीशन के बजाय १५ प्रतिशत कमीशन दिया जाय इस पर विचार किया जायगा, राष्ट्रीयकरण की पद्धति उत्तर प्रदेश की भाँति लागू हो या राजस्थान में उससे अधिक विकसित प्रणाली लागू हो इस पर विचार किया जा रहा है। पाठ्य-पुस्तकों की एकाधिकार प्रणाली का मैं स्वयं पक्षपाती नहीं हूँ। मैं राज्य के प्रधानाध्यापकों को इस बात के लिए आमंत्रित करता हूँ कि वे बढ़िया सिलेबस और सिलेबस के आधार पर तैयार की गयी नित नई श्रेष्ठ पुस्तकों की तरफ हम लोगों का ध्यान आकर्षित करें। हम कई शिक्षण संस्थाओं में प्रयोग के रूप में यह छूट देने को तैयार हैं। पुस्तक-विक्रेताओं को कई बार बोर्ड के अधिकारियों अथवा कर्मचारियों से उचित व्यवहार नहीं मिलता इसके सम्बन्ध में उन्होंने सामान्य तौर पर यह विचार प्रकट किया है : हम व्यवहार में सामन्तवादी हैं यद्यपि सामन्तवाद चला गया है, हमें जनतांत्रिक प्रणाली में नौकरशाही तरीका समाप्त करना होगा और शिक्षा के क्षेत्र में लगे सभी प्रकार के कार्यकर्ता और पुस्तक व्यवसायियों के सहयोग से स्वस्थ प्रयोग करने होंगे और समाज तथा राष्ट्र को आगे ले जाना होगा। इन्सपेक्टर्स आफ स्कूलस के द्वारा राज्य में जगह-जगह पुस्तकों और पत्रिकाओं की थोक खरीद का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि इस तरह की खरीद पर शिक्षा विभाग ने आदेश निकाल कर प्रतिबन्ध लगा दिया है। फिर भी कई जगह इस पद्धति को चालू रखना हमारे आदेश की खुल्लम-खुल्ला उल्लंघन की बात है, यह बिल्कुल हट जानी चाहिये और मिडिल स्कूलों के प्रधानाध्यापकों का आह्वान करते हुए उन्होंने अपील की कि उन्हें स्वाभिमान के साथ पुस्तकों की खरीद के अपने अधिकार का उपयोग करने के लिये आगे आना चाहिए। यदि उनके मार्ग में वित्तीय कठिनाइयां आएंगी तो उसका हल भी हमारे पास है और वह यही है कि पुस्तकों की खरीद तथा चयन हमेशा प्रधानाध्यापक द्वारा होगा। उस कार्य में उन्हें कोई नहीं रोक सकता व भुगतान इन्सपेक्टर के कार्यालय से होगा। पुस्तक-विक्रेताओं को भी चाहिये कि बढ़िया से बढ़िया पुस्तकें चयन तथा खरीद के लिये पहुंचायें और शिक्षा की तेज प्रगति में सहायक सिद्ध हों। यह खुशी की बात है कि आज राजस्थान के प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता संगठित होकर जागरूक हो रहे हैं और अपने अधिकार के अलावा सामाजिक तथा राष्ट्रीय दायित्व के प्रति भी सजग हैं। आदर्श पाठ्य-पुस्तकें तैयार करके हम भविष्य में प्रकाशकों के बीच स्वस्थ प्रतियोगिता का युग लाना चाहते हैं ताकि हमारा समाज सही ढंग से शिक्षा के क्षेत्र में विकास कर सके। राष्ट्रीयकृत पाठ्य-पुस्तकों के पुराने स्टॉक के कारण पुस्तक-विक्रेताओं को जो आर्थिक हानि होने वाली है वह हमारे सामने रखी जाय; हम उसका हल निकालने की चेष्टा करेंगे।

अपरिहार्य, अप्रतिम और मौलिक

शोध-प्रबंध

जुलाई '६५ के नवीन प्रकाशन

१. प्रसाद की दार्शनिक चेतना :	डॉ० चक्रवर्ती	२५.००
२. संत-साहित्य :	डॉ० प्रेमनारायण शुक्ल	२०.००
३. हिन्दी कहानी की रचना-प्रक्रिया :	डॉ० परमानन्द श्रीवास्तव	१२.५०

अन्य प्रकाशन

४. मलिक मुहम्मद जायसी और उनका काव्य :	डॉ० शिवसहाय पाठक	१८.००
५. आधुनिक हिन्दी कविता में ध्वनि :	डॉ० कृष्णलाल शर्मा	१५.००
६. छायावाद : काव्य तथा दर्शन :	डॉ० हरनारायण सिंह	१५.००
७. प्रगतिवादी समीक्षा :	श्री रामप्रसाद त्रिवेदी	१०.००

● उच्चकोटि की विषय-विवेचना ● आकर्षक रूपसज्जा ● कलात्मक मुद्रण



प्रकाशक :

ग्रन्थम

[उच्चकोटि के शोध-प्रबन्धों के प्रकाशक]

१०४ए/२१५, रामबाग, कानपुर

संघ के अधिवेशन की अन्य बैठकों में ७० सदस्यों के सदस्यता पत्र स्वीकार किये गये जिनमें जोधपुर, उदयपुर और कोटा के व्यावसायिक संगठनों के संघीय सदस्यता पत्र भी शामिल थे। इस प्रकार राजस्थान पुस्तक व्यवसायी संघ के साधारण सदस्यों और सम्बन्धित संगठनों के सदस्यों की संख्या लगभग १५० तक पहुँच चुकी है।

कार्यकारिणी का गठन

कार्यकारिणी के सदस्यों ने अध्यक्ष तथा अन्य पदाधिकारियों का चुनाव अपनी प्रथम बैठक में किया। कार्यकारिणी ने १० में से १ रिक्त स्थान की पूर्ति भी की। इस प्रकार नीचे लिखे अनुसार कार्यकारिणी घोषित की गई :—

अध्यक्ष, श्री प्रकाश चन्द्र जोशी, अजमेर; उपाध्यक्ष, श्री द्वारकादास राठी, जोधपुर; श्री झुन्नी लाल गुप्ता, जयपुर; श्री तज्ञाराम, उदयपुर; श्री लक्ष्मीनारायण, कोटा; एक स्थान रिक्त।

मंत्री, श्री चम्पालाल रांका, जयपुर; सहायक मंत्री, श्री मनोहरलाल जैन, अलवर; श्री विनयचन्द जैन, जयपुर; श्री नरेन्द्र कुमार भार्गव, कोटा; कोषाध्यक्ष, श्री नरेन्द्र बाहरी, जयपुर; लेखा परीक्षक, श्री मदनलाल जालन, जोधपुर; अन्य सदस्य—श्री जयकृष्ण अग्रवाल, अजमेर; श्री हर्ष चन्द्र जैन, अजमेर; श्री संतोषकुमार रावत, अजमेर; श्री किशनचन्द्र बजाज उदयपुर; श्री जयनारायण, ब्यावर; श्री सोहनलाल ओझा, भीलवाड़ा; श्री विरधी चन्द जैन, सवाईमाधोपुर; श्री पूर्णचन्द, सुजानगढ़; श्री मोतीलाल जैन, जोधपुर; श्री शीलकुमार, जयपुर; श्री जे. डी. वर्मा, जयपुर।

माध्यमिक शिक्षाबोर्ड राजस्थान के सचिव से प्रतिनिधि मंडल की भेंट

राजस्थान पुस्तक व्यवसायी संघ का एक शिष्ट मंडल संघ के अध्यक्ष श्री प्रकाशचन्द्र जोशी की अध्यक्षता में माध्यमिक शिक्षाबोर्ड राजस्थान के सचिव महोदय से मिला और उन्हें संघ द्वारा पारित बोर्ड से सम्बन्धित प्रस्तावों से अवगत कराया। संघ ने अपने प्रस्तावों द्वारा बोर्ड से मांग की है कि प्रत्येक सत्र में सिलेबस १५ जून तक अवश्य प्रकाशित कर दिया जाना चाहिये ताकि विद्यार्थियों एवं पुस्तक-विक्रेताओं को असुविधा न हो, बोर्ड स्वीकृत पाठ्य पुस्तकों के मूल्य उनके साइज़ के अनुपात में निर्धारित करे, प्रकाशकों को पुस्तकें छापकर स्वीकृत एवं पुनः स्वीकृत कराने के लिए उचित समय दिया जाय, बोर्ड के सिलेबसों पर पुस्तक-विक्रेताओं को १५ प्रतिशत कमीशन दिया जाय, बोर्ड की पाठ्यक्रम समिति में पुस्तक-व्यवसायियों का भी प्रतिनिधित्व हो। इन सभी प्रस्तावों पर बोर्ड गम्भीरता से विचार करेगा ऐसा बोर्ड के सचिव महोदय ने कहा।

इनके अतिरिक्त एक अन्य महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव द्वारा बोर्ड से माँग की गई है कि शिक्षा के क्षेत्र में एकाधिकार समाप्त करने के हेतु तथा शिक्षा एवं ज्ञान-विज्ञान के स्वच्छंद विकास के लिए बोर्ड ऐच्छिक विषयों पर पाठ्य पुस्तकें स्वीकृत न किया करे और अनिवार्य विषयों में एक के स्थान पर अनेक वैकल्पिक पुस्तकें स्वीकृत किया करे, इससे जहाँ एक ओर प्रकाशन के क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार समाप्त होगा वहाँ दूसरी ओर विद्यार्थियों को श्रेष्ठ पुस्तकें सहज ही सस्ते मूल्य में उपलब्ध हो जायेंगी साथ ही लेखकों को भी समुचित सहारा मिलेगा। इस प्रस्ताव को बोर्ड के सचिव महोदय ने सिद्धान्ततः श्रेष्ठ और उचित माना तथा इस पर विचार करने का आश्वासन प्रतिनिधि मंडल को दिया।

प्रकाशचन्द्र जोशी
अध्यक्ष
राजस्थान पुस्तक व्यवसायी संघ

भारतीय एकता केवल
हिन्दी के द्वारा
ही
सम्भव है।

पाठ्य-पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण त्रुटियां और उनको दूर करने के उपाय

भारत सरकार द्वारा गठित शिक्षा आयोग पिछले दिनों भोपाल गया था। वहाँ प्रकाशक संघ, भोपाल की ओर से उसे निम्नलिखित ज्ञापन दिया गया था।

भोपाल के सभी प्रकाशक भारत की नवोदित पीढ़ी की शैक्षणिक एवं मानसिक उन्नति में सदा-सर्वदा से अपना नन्हा किन्तु महत्त्वपूर्ण योगदान देते रहे हैं। दशाब्दियों से पुस्तक-प्रकाशन व्यवसायी श्रेष्ठ, सस्ती, सुलभ एवं ज्ञानवर्धक पुस्तकों के द्वारा शिक्षा-विकास में सहयोगी रहे हैं। देश में सैंकड़ों व्यवसायी एवं उनसे सम्बन्धित हजारों कर्मचारी इस व्यवसाय में संलग्न होकर अपनी श्रेष्ठ सेवायें समर्पित करते रहे हैं।

समाजवादी समाज-रचना के लिए राष्ट्रीयकरण को अनिवार्य प्रक्रिया स्वीकार करते हुए हम आयोग को इस सत्य एवं तथ्य से अवगत कराना अपना पावन-पुनीत कर्तव्य समझते हैं कि एक ओर जहाँ मुक्त प्रतियोगिता व्यवसाय एवं समाज के लिए स्वस्थ स्वीकारी जाती है वहीं व्यक्तिगत की अपेक्षा समष्टिगत लाभकारी कार्य राष्ट्र एवं समाज के लिए लोकहितकारी माने जाते हैं। शासन की पाठ्य-पुस्तकों की राष्ट्रीयकरण की योजना के सन्दर्भ में हम न केवल हजारों नागरिकों की कठिनाइयों को आपके सम्मुख प्रस्तुत करना चाहते हैं, वरन् स्वतन्त्र भारत के लाखों नौनिहालों के शैक्षणिक भविष्य की ओर भी आपका ध्यान आकर्षित कर राष्ट्रीयकरण की प्रतिक्रिया में पुस्तक-व्यवसायियों की कठिनाइयों एवं उनके योगदान के प्रति आपके सहानुभूतिपूर्ण निर्णय एवं सिफारिशों की आशा की अपेक्षा रखते हैं।

आप सभी के सम्मुख हम निम्न कठिनाइयाँ, सुझाव एवं विनम्र निवेदन प्रस्तुत करते हुए यह आशा अपेक्षा करते हैं कि आप पुस्तक-व्यवसायियों की कठिनाइयों एवं राष्ट्रीयकरण योजना के क्रियान्वयन की स्वभावगत त्रुटियों को दृष्टिगत रखते हुए निम्न सुझावों के प्रकाश में ऐसी सिफारिश करेंगे जिससे कि राष्ट्र के हजारों पुस्तक-व्यवसायियों के साथ ही नवोदित पीढ़ी भी अव्यवस्था की शिकार होने से बच सके।

स्वभावगत त्रुटियाँ :

१. राष्ट्रीयकरण एक ओर जहाँ एक व्यापक प्रक्रिया है वहीं वह प्रशासकों पर अवलम्बित है। शासकीय मुद्रणालयों के अभाव एवं अक्षमता के प्रकाश में आप इस तथ्य से अवगत होंगे कि राष्ट्रीयकृत पुस्तकों का मुद्रण एवं प्रकाशन समय पर तो होता ही नहीं साथ ही मुद्रण एवं तथ्य सम्बन्धी इतनी भीषण भूलें होती हैं कि छोटे-बड़े बालकों को असत्य एवं आधारहीन ऐसी जानकारी दी जाती है जो कि नवोदित पीढ़ी के लिए घातक है (राष्ट्रीयकृत पुस्तकों की मुद्रण-सम्बन्धी अशुद्धियाँ एवं भ्रामक तथ्यों-सम्बन्धी प्रमाणस्वरूप राष्ट्रीयकृत पुस्तकें संलग्न हैं)।

२. राष्ट्रीयकरण हेतु पुस्तकें विशेषज्ञों से लिखाई जाती हैं। विषय का विशेषज्ञ अपनी विशिष्टता से पाण्डुलिपि तैयार करता है किन्तु फिर भी उक्त पुस्तक उतनी श्रेष्ठ नहीं होती जितनी कि निजी प्रकाशकों की। इसका कारण यह है कि प्रकाशक भी मुक्त प्रतियोगिता के कारण श्रेष्ठ विशेषज्ञ लेखक से पाण्डुलिपि तैयार कराते हैं। सभी प्रकाशकों द्वारा तैयार की गई पुस्तकें शिक्षा विभागीय पाठ्य-पुस्तक समिति द्वारा तुलनात्मक आधार पर स्वस्थ प्रतियोगिता के बीच चयन की जाती है। ऐसी स्थिति में निश्चय ही श्रेष्ठ पुस्तक का चयन होता है, जो कि अधिकारियों पर अवलम्बित पाण्डुलिपियों द्वारा सहज सम्भव नहीं है।

३. राष्ट्रीयकृत पुस्तकों की वितरण-व्यवस्था पूर्णतः शासकीय कर्मचारियों पर निर्भर रहती है। प्रजातन्त्र के लिए नौकरशाही कितना बड़ा अभिशाप है इससे आप भली-भाँति अवगत ही हैं। पुस्तकों के वितरण की दोषपूर्ण व्यवस्था के कारण बालक एवं पालक परेशानी अनुभव

करते हैं। शैक्षणिक सत्र आरम्भ होने पर भी महीनों शासकीय प्रकाशन बाजार में उपलब्ध नहीं होते हैं। वितरण-व्यवस्था के अभाव में राष्ट्रीयकृत पुस्तकें बाजार में उपलब्ध नहीं होती हैं। परिणामतः एक ओर तो शासकीय प्रकाशन शासकीय गोदामों में व्यर्थ पड़ा रहकर रद्दी हो जाता है और दूसरी ओर बालकों को कुंजियों के सहारे अध्ययन करने को मजबूर होना पड़ता है; ऐसी स्थिति में शैक्षणिक स्तर की गिरावट सहज स्वाभाविक है। राष्ट्रीयकृत पुस्तकें उपलब्ध नहीं होने पर बाजार में जाली पुस्तकें आ जाती हैं। इस प्रकार शासकीय अक्षमता एवं अव्यवस्था से समाज में अनैतिक प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन मिलता है।

इस सम्बन्ध में एक तथ्य यह भी है कि कस्बों, ग्रामों और छोटे-छोटे नगरों में फैले हुए सैकड़ों पुस्तक-विक्रेताओं का सीधा सम्बन्ध पुस्तक-प्रकाशकों से होता है। ग्रामीण पुस्तक-विक्रेता जो केवल दस-पाँच प्रतियाँ बेचने की क्षमता रखता है; वह शासकीय प्रकाशन क्रय करने में अनेक कठिनाइयों का अनुभव करता है। प्रकाशकों से व्यावसायिक सम्बन्ध होने के कारण छोटा पुस्तक-विक्रेता सहज ही प्रकाशकों से पुस्तकें प्राप्त कर सकता है किन्तु शासकीय स्टोर्स से नहीं।

४. राष्ट्रीयकृत पुस्तकों पर राजनीति का कितना दूषित प्रभाव रहता है, इस सम्बन्ध में भी हम कुछ निवेदन करना चाहते हैं। सत्तारूढ़ दल सदा अपने दल की रीति-नीतियों का प्रचार-प्रसार पाठ्य-पुस्तकों के माध्यम से करता है। पंजाब में एक दिन बालक जिस पुस्तक को पढ़ता था और जिस चित्र के प्रति उसे श्रद्धा-भावना दी जाती थी, दूसरे दिन उसी पुस्तक से कई पाठ अलग कर दिये जाते हैं और श्रद्धास्पद चित्र को नफरत की दृष्टि से निकाल दिया जाता है। (श्री कैरों के चित्र पाठ्य-पुस्तकों में रखे गये और फिर निकाले गये)। इसी प्रकार केरल में साम्यवादी दल के सत्तारूढ़ होते ही सभी पुस्तकें परिवर्तित कर दी गईं। साम्यवादी दल की शिक्षा-दीक्षापूर्ण पुस्तक प्रचलित की गईं और फिर बाद में वे सभी पुस्तकें परिवर्तित कर दी गईं। केरल में साम्यवादी सरकार के शासन-काल में लेनिन और स्तालिन के चित्र लगाये गये और राष्ट्रपिता बापू तथा नेहरू जी आदि के चित्र निकाल दिये गये। इस प्रकार पाठ्य-पुस्तकें राजनीति के उतार-चढ़ाव में ही डूबती-तैरती रहीं।

माननीय! राष्ट्रीयकृत पुस्तकों से अरोचक शासकीय प्रगति का मूल्यांकन पढ़ने को विवश होना पड़ता है। इसी प्रकार दलीय नेताओं के जीवन-चरित्र तथा राजनैतिक दलों के कार्यक्रम भी सम्मिलित किये जाना बालकों के लिए घातक साबित होता है।

विनम्र सुझाव :

(१) पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण के सम्बन्ध में हम विनम्र निवेदन करते हैं कि शिक्षा आयोग द्वारा एक प्रश्नोत्तरी तैयार की जाय और प्रकाशकों, पुस्तक-विक्रेताओं, शिक्षकों, शिक्षाविदों, समाज-शास्त्रियों तथा विदेशी विशेषज्ञों की राय आमन्त्रित की जाकर उसके प्रकाश में निर्णय किये जाएँ।

(२) पुस्तक व्यवसाय का राष्ट्रहित में राष्ट्रीयकरण नहीं किया जाए।

(३) शासन राष्ट्रीयकरण की योजना यदि क्रियान्वित करता है तो आवश्यक है कि केवल पाण्डुलिपि तैयार करने का कार्य शासकीय संरक्षण में किया जाय। टेन्डर आमन्त्रित कर मुद्रण तथा वितरण-व्यवस्था प्रकाशकों को सौंपी जाय। इससे लाभ यह होगा कि हर विक्रेता तक पुस्तकें सहज ही पहुँचाई जा सकेंगी तथा विक्रेता और उपभोक्ता परेशानी से बचने के साथ ही शासन की वितरण-व्यवस्था से मुक्त रह सकता है।

(४) मुद्रण एवं वितरण-व्यवस्था प्रकाशकों को दी जाने से प्रकाशन-व्यवस्था में लगे हुए हजारों कर्मचारियों की रोजी-रोटी सुरक्षित रह सकेगी।

मान्यवर! राष्ट्र एवं समाज के हित में उपरोक्त सत्य एवं तथ्य को प्रस्तुत करते हुए एक बार पुनः आपके अभिवादन एवं अभिनन्दन के साथ हम यह आशा अपेक्षा करते हैं कि आप पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण के प्रस्ताव को अस्वीकार कर पुस्तक-प्रकाशन व्यवसाय में संलग्न हजारों नागरिकों की कठिनाई को ध्यान में रखते हुए ऐसी सिफारिश करेंगे जिससे पुस्तक-प्रकाशन व्यवसाय स्वतन्त्र भारत में पल्लवित हो सके।

पुस्तकों की बिक्री और प्रचार का प्रोत्साहन

—श्री सी० एस० एस० थाटाचारी

मोटे तौर से बिक्री बढ़ाने का अर्थ है सभी उपलब्ध साधनों और सभी आवश्यक कार्यविधियों का इस प्रकार उपयोग करना कि लोग किसी माल को खरीदने की ओर प्रवृत्त हों। इसका प्रमुख उद्देश्य होता है कि व्यवसाय से अधिकतम लाभ उठाया जाए। बिक्री-प्रवर्द्धन के लिए समस्त नियोजन और विविध कार्यविधियां इसी ध्येय की पूर्ति के लिए होती हैं। किन्तु सदैव ऐसा नहीं होता कि अधिकतम बिक्री से अधिकतम लाभ प्राप्त हो, जैसा कि चतुर व्यवसायी जानते हैं कि बिक्री-संवर्द्धन पर आने वाली लागत को बिक्री के साथ सम्बद्ध करना पड़ता है। बिक्री-संवर्द्धन एक समन्वित प्रक्रिया है जिसमें महज़ किसी वस्तु की बिक्री के अतिरिक्त और बातें भी शामिल होती हैं। इसके अन्तर्गत अनेक प्रकार की गतिविधियाँ समाहित होती हैं, जैसे कर्मचारियों का प्रशिक्षण, विज्ञापन, प्रचार और जन-सम्पर्क।

पुस्तक-व्यवसाय में बिक्री-प्रवर्द्धन का उद्देश्य यही होता है कि अधिक-से-अधिक लोगों को अधिक-से-अधिक पुस्तकें खरीदने के लिए प्रवृत्त किया जाए। सामूहिक रूप से विज्ञापन और प्रचार के द्वारा विक्रेताओं के मन और प्रवृत्तियों को प्रभावित करके इस रुझान की शुरूआत की जाती है। प्रकाशक अथवा पुस्तक-विक्रेता द्वारा अपनी पुस्तकों को बाजार में बिक्री के लिए जनता तक पहुँचाने की सीधी विधि है अखबारों व पत्रिकाओं में प्रकाशित विज्ञापन। प्रचार के अन्तर्गत जनता को सूचित करने व पुस्तकों के प्रति दिलचस्पी पैदा करने और अनुकूल धारणाएँ बनाने के उद्देश्य से किये गए अन्य विविध साधन सम्मिलित हैं।

पुस्तकों की बिक्री-संवर्द्धन में प्रकाशक का दायित्व अधिक होता है। वैसे तो प्रकाशक ही पुस्तकों की प्रारम्भिक मांग पैदा करता है, किन्तु पुस्तक-विक्रेता को इस मांग को बनाये रखना और बढ़ाते रहना होता है। और जबकि प्रकाशक केवल अपने प्रकाशनों का प्रचार करता है, पुस्तक-विक्रेता को विभिन्न प्रकाशकों की अगणित पुस्तकों की माँग की वृद्धि के लिए प्रयास करना होता है। इसलिए प्रकाशक को विज्ञापन, सूची-पत्र, पुस्तक-सूचियों, प्रचार-परिपत्रों, पोस्टर, इश्तहार और अन्य साधनों द्वारा बिक्री-संवर्द्धन के कार्य को पूरी क्षमता से करके पुस्तक-विक्रेता की सहायता करनी चाहिए। पुस्तक-विक्रेता को भी अपनी ओर से गश्ती-पत्र, पुस्तक-सूची आदि भेजकर तथा अन्य साधनों से बिक्री बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए।

कोई भी पुस्तक-विक्रेता महज इस बात से संतोष नहीं कर सकता है कि वह चुपचाप बैठकर अपने ग्राहकों की प्रतीक्षा करे और उन पुस्तकों की सप्लाई करके सन्तुष्टि महसूस करे जिनकी समय-समय पर लोग माँग करें। उसे अपने क्षेत्र के सभी सम्भावित ग्राहकों को अपना बनाने का प्रयास करना चाहिए और निरन्तर नये-नये ग्राहक बनाने चाहिए। नियोजित संवर्द्धन के द्वारा ही बिक्री-वृद्धि सम्भव है।

पुस्तक-विक्रेता को चाहिए कि उसकी दुकान के सभी सम्भावित ग्राहक परिचित हों, उनका ध्यान दुकान की ओर आकर्षित हो और वह उन्हें वहाँ आने के लिए प्रोत्साहित करे। दुकानदार की जनता की सेवा करने की इच्छा और तत्परता उसके ग्राहकों के प्रति किए जाने वाले विनम्र व्यवहार से प्रकट होनी चाहिए। उसे ग्राहकों के पास नवीनतम और आगामी प्रकाशनों की सूचना बराबर भेजते रहना चाहिए। सुनियोजित संवर्द्धन में दुकान की

[प्रस्तुत लेख श्री सी० एस० एस० थाटाचारी बुक इण्डस्ट्री कौंसिल आफ साउथ इण्डिया मद्रास द्वारा यूनेस्को की सहायता से प्रकाशित पुस्तक 'बुक ट्रेड मैन्युअल' के आठवें अध्याय से प्रकाशन समाचार द्वारा साभार प्रकाशित किया जा रहा है—सं०]

समुचित साज-सज्जा, पुस्तकों का आकर्षक प्रदर्शन, तत्पर और कार्यकुशल सेवा, ग्राहकों के प्रति मृदु व्यवहार और सुमधुर सम्बन्ध अपना निश्चित योगदान दे सकते हैं।

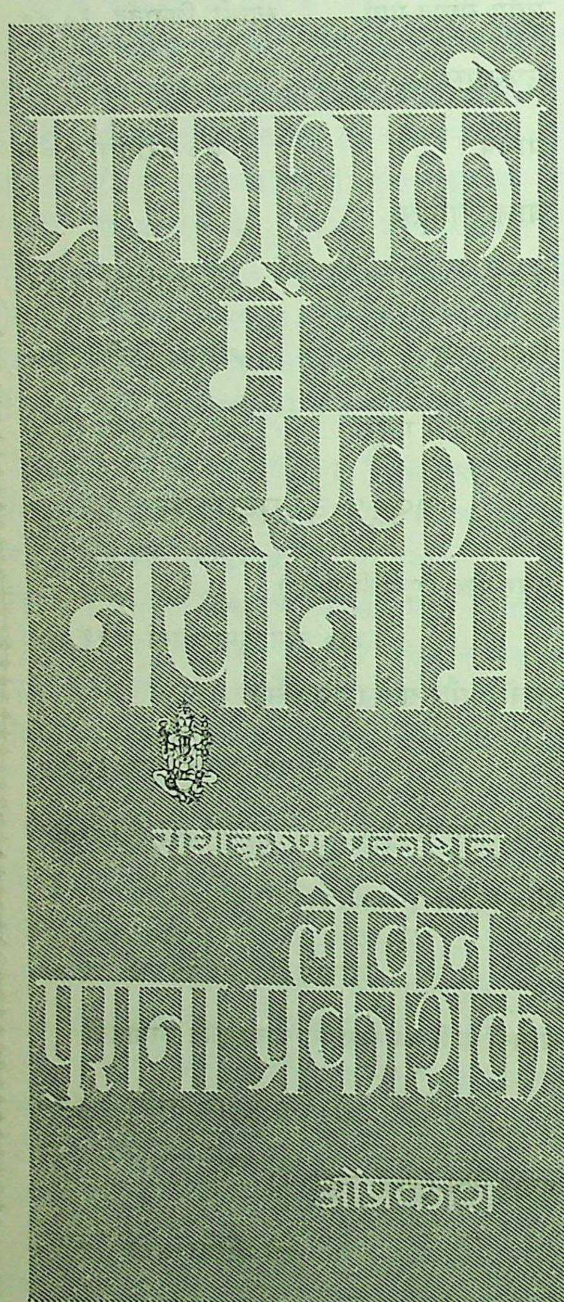
दक्षिण एशिया के देशों के औसत पुस्तक-विक्रेता विज्ञापन पर अधिक खर्च कर सकने की स्थिति में नहीं होते हैं। किन्तु चूंकि उनका व्यवसाय बड़ा नहीं है और लाभ भी अधिक नहीं है, इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि ऐसे औसत पुस्तक-विक्रेता भी कुछ-न-कुछ हद तक विज्ञापन की व्यवस्था करें। बेशक, आर्थिक स्थिति का ख्याल रखना पड़ेगा, लेकिन विज्ञापन के बहुत-से तरीके हैं और अपनी हैसियत के अनुसार प्रत्येक पुस्तक-विक्रेता ऐसी विज्ञापन की व्यवस्था अपना सकता है जो उसके साधनों और बाजार की आवश्यकताओं के अनुकूल हो।

विज्ञापन देने की अनेक विधियाँ हैं जैसे समाचारपत्रों, लोकप्रिय साप्ताहिक पत्रिकाओं, साहित्यिक अथवा अन्य पत्रों, व्यावसायिक पत्रिकाओं, सिनेमा स्लाइडों, पोस्टर, पर्चियों, ग्राहकों को सीधे प्रचार-सामग्री आदि के माध्यम से पुस्तकों की बिक्री बढ़ाने के लिए विज्ञापन दिए जा सकते हैं। इनमें से प्रत्येक साधन अपने में उपयोगी है और पुस्तक-विक्रेता अपने दृष्टिकोण से व्यावहारिक साधन का चुनाव कर सकता है।

समाचार-पत्रों में विज्ञापन प्रकाशित करना व्ययसाध्य होता है और इस साधन का प्रकाशक भी बहुत कम उपयोग करते हैं। बड़े-बड़े पुस्तक-विक्रेता कभी-कभी समाचार-पत्रों में पुस्तक-समीक्षा अथवा अन्य वर्गीकृत स्तम्भों में चुनी हुई पुस्तकों के विज्ञापन देते हैं। इस प्रकार के प्रचार से ऐसी ही पुस्तकें स्टाक में रखने वाले अन्य पुस्तक-विक्रेताओं को भी अप्रत्यक्ष रूप से लाभ होता है। वस्तुतः छोटे पुस्तक-विक्रेताओं को बड़े पुस्तक-विक्रेताओं के विज्ञापन का लाभ उठाकर विज्ञापित पुस्तकों को बिक्री के लिए अपने स्टाक में मँगाना चाहिए। इसी प्रकार प्रकाशकों और थोक विक्रेताओं द्वारा समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं और अन्य पत्रों में दिए गए विज्ञापनों का भी छोटे पुस्तक-विक्रेता लाभ उठा सकते हैं। पुस्तक-व्यवसाय क्षेत्र में

वितरण के हेतु प्रकाशित व्यापारिक पत्र-पत्रिकाओं में पुस्तकों के विज्ञापन अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध हो सकते हैं। व्यावसायिक पत्रों में अधिकांश विज्ञापन प्रकाशक ही देते हैं, किन्तु हज़ारों विदेशी पुस्तकों की अत्यधिक माँग के कारण पुस्तक-विक्रेता भी अपने स्टाक में उपलब्ध विदेशी पुस्तकों के विज्ञापन व्यावसायिक पत्रों में प्रकाशित करवाना उपयोगी समझते हैं। इस प्रकार न केवल प्रचार होता है वरन् पुस्तक-विक्रेताओं के बीच इस सूचना का भी आदान-प्रदान हो जाता है कि उनके पास कौन-सी पुस्तकें हैं और इस प्रकार व्यवसाय को नियन्त्रित व नियमित करने में सहायता मिलती है। दक्षिण एशिया के देशों में पुस्तक-व्यवसाय की वर्तमान परिस्थितियों में छोटे-छोटे पुस्तक-विक्रेताओं के लिए नियमित रूप से प्रकाशित व्यावसायिक पत्रों में विज्ञापन देने की अधिक सम्भावनाएँ नहीं हैं। लेकिन वे स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं और विशेष रूप से एक निर्दिष्ट क्षेत्र में वितरित होने वाली प्रादेशिक भाषाओं की पत्रिकाओं में विज्ञापन दे सकते हैं। छोटे पुस्तक-विक्रेता प्रमुख स्थानीय घटनाओं के अवसर पर आजकल बहुतायत से प्रकाशित होने वाले विविध प्रकार के स्मृति-चिह्न परिपत्रों में छोटे-मोटे विज्ञापन दे सकते हैं।

विज्ञापन तैयार कराते समय यह उद्देश्य दिमाग़ में रहना चाहिए कि वह लोगों का ध्यान आकर्षित कर सके। विज्ञापन-सन्देश में पूर्ण विवरण होना चाहिए और यदि गुंजाइश हो तो यह भी उल्लेख होना चाहिए कि पाठकों को विज्ञापित पुस्तकें क्यों खरीदनी चाहिए और फिर उसी पुस्तक-विक्रेता से क्यों प्राप्त करनी चाहिए। यदि पुस्तक-विक्रेता का अपना कोई विशिष्ट चिह्न हो तो ऐसे विज्ञापनों में उसका उपयोग किया जा सकता है। पोस्टरों से भी पुस्तक-विक्रेता को काफी सहायता मिल सकती है, बशर्ते कि वे मोटे-मोटे अक्षरों और आकर्षक रंगों में मुद्रित किये गए हों। वह उन्हें अपनी दुकान के बाहर और अपने समीपवर्ती क्षेत्र व नगर के उपयुक्त स्थलों पर प्रदर्शित कर सकता है। छोटे-छोटे शहरों में पोस्टर आदि लगाने के लिए आवश्यक स्थल के लिए अधिक व्यय नहीं करना पड़ता। बड़े-बड़े शहरों में सार्वजनिक परिवहन की



अगस्त में
चार पहले प्रकाशन !

छात्रोपयोगी तीन विशिष्ट पुस्तकें !

महादेवी

संपादक : डॉ० इन्द्रनाथ मदान
पंजाब विश्वविद्यालय

कबीर

संपादक : डॉ० विजयेन्द्र स्नातक
दिल्ली विश्वविद्यालय

जायसी

लेखक : डॉ० रामपूजन तिवारी
शान्ति निकेतन

वद्वान् प्राध्यापकों द्वारा प्रस्तुत इन पुस्तकों में संबंधित कवियों पर उत्कृष्टतम लेखन का संयोजन।

● ● ●

रात की बाँहों में

दस लोकप्रिय लेखकों द्वारा देश के दस प्रमुख नगरों की रातों पर रोशनी ...... दिलचस्प नजारे ... ललित कथामय लेखन की नई परम्परा ... दस उल्लेखनीय रेखाचित्रों सहित।

● ● ●

व्यवसाय के लिए भरपूर कमीशन।

विक्रेता स्थायी ग्राहकों को दी जाने वाली सुविधाओं के लिए पत्र-व्यवहार करें।



राधाकृष्ण प्रकाशन

४/१४, रूपनगर, दिल्ली-७

बसों के भीतरी स्थान को विज्ञापन के लिए प्राप्त किया जा सकता है।

सिनेमा स्लाइडों के माध्यम से विज्ञापन का तरीका प्रचार का अत्यन्त प्रभावपूर्ण साधन है। विशेष रूप से यह छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में उपयोगी साबित हो सकता है। आजकल प्रत्येक गाँव के निवासी दौरा करने वाले सिनेमा के प्रदर्शन देख सकते हैं। निश्चित रूप से सिनेमा स्लाइड के विज्ञापन बहुत अधिक संख्या में लोग देखते हैं और इनके द्वारा सारे देश में पुस्तकों का संदेश पहुँचाने का सबल माध्यम उपलब्ध होता है। ऐसी स्लाइडें जहाँ तक सम्भव हो विरोधी रंगों में अत्यन्य कौशल के साथ तैयार की जानी चाहिए और दुकान अथवा किसी विशेष पुस्तक के सम्बन्ध में दी गई जानकारी स्पष्ट और प्रभावपूर्ण होनी चाहिए।

पुस्तक की दुकान के लिए बिक्री-संवर्द्धन का सबसे अच्छा और कदाचित् अधिकतम प्रभावपूर्ण तरीका है सूची-पत्रों, विषयानुसार सूचियों, पाठ्यक्रम-निर्देशिकाओं और विशेष गश्ती-पत्रों को सम्भावित ग्राहकों के पास भेजना। सूचियाँ और गश्ती-पत्र साइक्लोस्टाइल कर लिये जाने चाहिए; बेहतर होगा कि इस काम के लिए स्टेण्डर्ड साइज का ऐसा कागज़ इस्तेमाल किया जाए, जिस पर विशेष चिह्न और पुस्तक-विक्रेता का नाम व पता पहले से ही मुद्रित हो। सूची-पत्र समय-समय पर साफ़-सुथरे तरीके से छपवाने चाहिए। छोटे-छोटे पुस्तक-विक्रेता भी सादे तथा सस्ती लागत के सूची-पत्र भेजने की व्यवस्था कर सकते हैं।

सूची-पत्र बनाते समय विषयों का सूक्ष्म वर्गीकरण करने की आवश्यकता नहीं है; किन्तु लेखक, पुस्तक, आकार, पृष्ठ, संस्करण और मूल्य आदि का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए। केवल जहाँ आवश्यक हो, वहीं पुस्तक का संक्षिप्त विवरण देना चाहिए। छपाई में जगह और टाइप के उपयोग का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए। सूची-पत्रों में कुछ पुस्तकों के साथ कहीं-कहीं चित्र आदि दिए जा सकते हैं और इसके लिए प्रकाशक से आवश्यक ब्लाक भी प्राप्त किये जा सकते हैं। यह बहुत ही अच्छा होगा यदि सूची-पत्र के प्रत्येक पृष्ठ पर पुस्तक विक्रेता का नाम, पता व टेलीफ़ोन नम्बर आदि छपे हुए हों।

पुस्तक-विक्रेता को अपने सूची-पत्र प्रति छः मास के बाद और विषय-सूचियाँ समय-समय पर संशोधित करते रहना चाहिए। वर्ष में कम-से-कम एक बार नया सूची-पत्र तो अवश्य ही प्रकाशित होना चाहिए। विशेष सूचियाँ और नई तथा आगामी पुस्तकों की सूचियाँ भी समय-समय पर जारी की जानी चाहिए। इनके अतिरिक्त बड़े-बड़े पुस्तक-विक्रेता मासिक या त्रैमासिक बुलेटिन भी जारी कर सकते हैं, जिनके माध्यम से न केवल नई पुस्तकों का टिप्पणी सहित सूची-पत्र प्राप्त होगा बल्कि पाठकों के लिए नये प्रकाशनों के सम्बन्ध में निर्देशिका भी उपलब्ध होगी। सूची-पत्रों और सूचियों के साथ आर्डर शीट भी भेजने की सलाह दी जाती है, बेहतर होगा अगर ग्राहकों की सुविधा के लिए आर्डर शीट को आसानी से अलग करने की व्यवस्था रहे। यदि प्रत्येक सूचीबद्ध पुस्तक की क्रम-संख्या भी दे दी जाए तो ग्राहक आर्डर देते समय केवल क्रम-संख्या दे सकते हैं और इस प्रकार दोनों ही ओर समय की बचत हो सकती है।

किसी विशेष पुस्तक के सम्बन्ध में पत्रक या सीरीज़ से सम्बद्ध फोल्डर आकर्षक रूप में तैयार किए जाने चाहिए। विशेष प्रचार के लिए ऐसे पैम्फ़लेट प्रायः प्रकाशक ही जारी करते हैं। किन्तु इन पर पुस्तक-विक्रेता अपने नाम व पते आदि की मोहर लगाकर इनका सदुपयोग कर सकते हैं।

पुस्तक-विक्रेता को विभिन्न प्रकार की पुस्तकों के सिलसिले में नियमित व सम्भावित व्यक्तिगत और संस्थागत ग्राहकों की सूची तैयार करनी चाहिए। कुछ ग्राहक एक से अधिक विषय की पुस्तकों में दिलचस्पी रखते हैं, इसलिए विशेष रूप से संस्थाओं और पुस्तकालयों के सम्बन्ध में मोटे तौर पर वर्गीकरण करना चाहिए। ग्राहकों की अभिरुचि के अनुसार उनके पते के साथ अकारादि-क्रम से तालिकाबद्ध सूची भी तैयार की जानी चाहिए। मेलिंग सूची को बराबर संशोधित करते रहना चाहिए और ऐसे ग्राहकों के नाम उस सूची से हटा दिए जाने चाहिए जो लगातार सूची-पत्र आदि भेजने पर भी कोई दिलचस्पी नहीं प्रदर्शित करते। किन्तु यह काम बड़ी सावधानी से किया जाना चाहिए, क्योंकि अनेक ऐसे

ग्राहक होते हैं जिनसे लम्बे अन्तराल के बाद काफ़ी अच्छे आर्डर प्राप्त होते हैं। ऐसे नामों को सूची में से हटाने का एक अच्छा तरीका यह है कि इन्हें सूची-पत्रों के साथ जवाबी कार्ड या डाक-खर्च अदायगी की गारण्टी के बिज़नेस रिप्लाई कार्ड (या अपने पते लिखे हुए सादे कार्ड) भेजकर यह सूचित करने के लिए आग्रह किया जा सकता है कि पुस्तकों की सूचियों में उनकी दिलचस्पी है या नहीं। शायद इनमें से कुछ ही कार्ड वापस प्राप्त होंगे, लेकिन इससे यह पता चल जाएगा कि कितने लोग ऐसी सूचियों में अभिरुचि रखते हैं। इस प्रणाली से पुस्तक-विक्रेता को अपनी सूचियों को वास्तविक रूप से प्रभावपूर्ण बनाने में सहायता मिलेगी। किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि सूची में ग्राहकों के नाम बढ़ाये नहीं जाने चाहिए। समीपवर्ती और दूरस्थ क्षेत्रों के सम्भावित ग्राहकों के सम्बन्ध में प्राप्त सूचना के आधार पर इस सूची में बराबर नये नाम जुड़ते रहने चाहिए। व्यक्तियों की परिचयात्मक सूची, टेलीफ़ोन डायरेक्टरी, प्रसिद्ध क्लबों व संस्थाओं की सदस्य-सूची आदि विविध सन्दर्भ-ग्रन्थ, निर्देशिकाओं और सूचियों के आधार पर विभिन्न विषयों और अभिरुचियों के सम्भावित विक्रेताओं की सूची तैयार की जा सकती है।

सूची-पत्रों, सूचियों और विवरण-पत्रिकाओं को यथासमय भेजने का अत्यधिक महत्त्व होता है। ऐसी सामग्री ऐसे दिन भेजी जानी चाहिए जिससे कि वह सप्ताहान्त में सम्भावित ग्राहक को मिले, जबकि उनके पास उन्हें ग़ौर से देखने की फ़ुर्सत हो या फिर पुस्तकों की सूचियाँ मास के अन्त में भेजी जानी चाहिए जब कि लोग वेतन प्राप्त करते हैं। जहाँ तक शिक्षा संस्थाओं और पुस्तकालयों का सम्बन्ध है, सूची-पत्र और पुस्तकों की सूचियाँ उस समय भेजी जानी चाहिए जब ऐसी संस्थाएँ काफ़ी संख्या में किताबों की खरीद करती हैं। किन्तु इन्हें यथावत् समय-समय पर नई पुस्तकों की सूचियाँ भेजी जाती रहनी चाहिए।

डाक से पुस्तकों की सूचियाँ भेजने के अलावा दुकान में आने वाले ग्राहकों को नई पुस्तकों और आगामी प्रकाशनों से सम्बद्ध सूचियाँ तथा पत्रक आदि भी विवेकपूर्ण तरीके से वितरित किये जा सकते हैं। साथ-ही-साथ दुकान में बिकी हुई प्रत्येक पुस्तक के साथ ग्राहक को सम्बद्ध पुस्तक का परिचय-पत्रक या संक्षिप्त पुस्तक-सूची भी दी जा सकती है। इसी प्रकार बाहर के ग्राहकों को भेजे जाने वाले पुस्तकों के पार्सलों में प्रचार-सामग्री अथवा सूची-पत्र और विषय-सूचियाँ भी रखी जा सकती हैं। ऐसा करने से ऐसी सामग्री पर होने वाले पृथक् डाक-व्यय की भी बचत होगी।

राष्ट्रीय या स्थानीय महत्त्व की गतिविधियों, प्रतिष्ठित व्यक्तियों की यात्राओं आदि अवसरों का उपयुक्त पुस्तकों के बिक्री-संवर्द्धन के लिए उपयोग किया जा सकता है। यदि कोई लोकप्रिय लेखक नगर में पधारता है तो उस अवसर पर 'ऑटोग्राफ़' पार्टी की व्यवस्था करके उस लेखक की पुस्तकों में ग्राहकों की और भी अधिक दिलचस्पी पैदा की जा सकती है। इसी प्रकार प्रसिद्ध पुस्तकों पर आधारित फ़िल्मों के स्थानीय सिनेमाघरों में प्रदर्शन के अवसरों पर ऐसी पुस्तकों की बिक्री को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

यह अत्यन्त सुन्दर विचार होगा कि यदि पुस्तक-विक्रेता पास के स्कूल के बच्चों के जन्म-दिवस के विवरण और अभिभावकों के पते नोट कर लें और जन्म-दिवस के एक-दो सप्ताह पहले अभिभावकों को पत्र लिखकर सुझाव दें कि वे अपने बच्चों को उपहार स्वरूप पुस्तकें प्रदान करें। साथ में चुनाव के लिए उपयुक्त पुस्तकों की सूची भी भेजी जानी चाहिए।

साफ़-सुथरे छपे हुए पतों के कार्ड भी दुकान में रखने चाहिए। ग्राहकों से निवेदन किया जा सकता है कि वे इन कार्डों में अपना नाम, पता व अभिरुचि आदि का उल्लेख कर दें। यदि इन कार्डों का विवेकपूर्ण उपयोग किया जाए तो इससे पुस्तकों के बिक्री-संवर्द्धन में पर्याप्त योग मिल सकता है।

ग्राहकों द्वारा खरीदी गई पुस्तकों में पुस्तक-विक्रेता की सेवाओं का विज्ञापन करने वाले आकर्षक पुस्तक-चिह्न भी रखे जा सकते हैं। इसके अलावा पुस्तक पर

दुकान के नाम-पते की रबर की मुहर लगाने के बजाय सुन्दर और छोटे-छोटे लेबल उसके पिछले कवर के भीतरी भाग में चिपकाए जा सकते हैं।

दुकान में ग्राहकों द्वारा खरीदी गई पुस्तकों को अच्छी तरह से पैकिंग करके देना चाहिए। सम्भव हो तो इन्हें दुकान का नाम छपे हुए आकर्षक कागज़ में लपेटना चाहिए। यदि दुकानदार पारदर्शी पालीथेन कवर की लागत बरदाश्त कर सके तो इस कागज में पुस्तकों को लपेटना और भी बेहतर होगा। कुछ भी हो, बिकी हुई पुस्तकें मज़बूत बादामी कागज़ में तो लपेटी ही जानी चाहिए और ग्राहक को देने के पूर्व उन्हें अच्छे धागे से बंधा हुआ होना चाहिए। सादे धागे के स्थान पर ऐसे पतले रंग-बिरंगे फ़ीते का भी इस्तेमाल किया जा सकता है जिस पर लम्बाई में पुस्तक की दुकान का नाम छपा हुआ हो। छोटे-छोटे बंडल बांधने के लिए चिपकाने वाली पट्टियों का भी उपयोग किया जा सकता है, बशर्ते कि पुस्तक-विक्रेता का नाम-पता लपेटने वाले कागज या कवर पर दर्ज हो। उपहार के रूप में ग्राहकों द्वारा दी जाने वाली पुस्तकों की पैंकिग की ओर विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है।

सद्भावना बढ़ाने के लिए ग्राहकों को कभी-कभी छोटी-छोटी चीज़ों का उपहार देने में कोई हर्ज़ नहीं है। यदि नियमित ग्राहकों और किसी विशेष अवसर पर अतिथियों को केवल बिक्री-संवर्द्धन की दृष्टि से छोटी और कम खर्च वाली चीज़ें उपहार के रूप में दी जाएं, तो ऐसा करना आपत्तिजनक नहीं समझा जाना चाहिए, क्योंकि वास्तव में उद्देश्य तो पुस्तकों की बिक्री का संवर्द्धन ही होता है और यह भी प्रचार का एक साधन ही है। हां, यह ध्यान में रखना बहुत ज़रूरी है कि इस प्रकार के उपहार देने में अतिरेक नहीं होना चाहिए और ऐसे उपहार केवल कभी-कभी ही देने चाहिए तथा औचित्यपूर्ण सीमाओं का उल्लंघन नहीं होने देना चाहिए।

पुस्तक-विक्रेता को यथासम्भव पुस्तक-विक्रेता संघ अथवा अन्य संस्थाओं की ओर से आयोजित पुस्तकों की प्रदर्शनियों और शिक्षा-संस्थाओं द्वारा संचालित पुस्तक-मेलों में भाग लेना चाहिए। इनके अलावा किसी क्षेत्र, नगर अथवा शहर के पुस्तक-विक्रेता लोगों की पुस्तकों में अभिरुचि बनाए रखने और बढ़ाने के लिए महत्त्वपूर्ण अवसरों पर संयुक्त रूप से पुस्तक-प्रदर्शनियों का आयोजन कर सकते हैं।

ऐसी प्रदर्शनियों को पोस्टर अथवा प्रचार के अन्य साधनों द्वारा समुचित रूप से विज्ञापित किया जाना चाहिए। प्रकाशकों से उपलब्ध होने वाली प्रदर्शन-सामग्री का पूरा लाभ उठाना चाहिए।

पुस्तक-विक्रेता अपने क्षेत्र में प्रकाशकों के सहयोग से उनकी पुस्तकों की बिक्री के विशेष संवर्द्धन के लिए समय-समय पर प्रचार-आन्दोलन की व्यवस्था कर सकते हैं; इस व्यवस्था पर आने वाला व्यय आपस में बराबर-बराबर बांटा जा सकता है। राष्ट्रीय समारोह और अन्य महत्त्व-पूर्ण अवसरों पर भी ऐसी ही संयुक्त प्रचार-व्यवस्था की जा सकती है। ऐसे मौक़ों पर सावधानी पूर्वक सज्जित पुस्तकों के प्रदर्शन और उपयुक्त पोस्टर आदि के माध्यम से लोगों का ध्यान आकर्षित किया जा सकता है। दक्षिण एशिया के देशों में ऐसी सहकारी प्रचार-व्यवस्था बहुत ही उपयुक्त होगी, क्योंकि इन देशों में व्यक्तिगत आधार पर प्रचार के लिए निर्धारित धनराशि अधिकतर बहुत ही सीमित होती है।

पुस्तकों के प्रति अभिरुचि बढ़ाने के लिए सामान्य प्रचार-आन्दोलन भी चलाए जा सकते हैं—जैसे "अधिक पुस्तकें पढ़िए", "अधिक पुस्तकें खरीदिए" आदि के प्रभाव-पूर्ण पोस्टरों का प्रदर्शन। इस प्रकार का संवर्द्धन पुस्तक-विक्रेताओं और प्रकाशकों के संघों के आपसी सहयोग के द्वारा काफी सफल रूप में किया जा सकता है। हां, जहां सम्भव हो, लेखकों और पुस्तकालयों के संघों का भी सहयोग प्राप्त किया जा सकता है।



इस मास के प्रकाशन

★ भारत की संस्कृति और कला — राधा कमल मुकर्जी १२.००

सभ्यता और संस्कृति के अधिकारी विद्वान् श्री राधा कमल मुकर्जी का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ—जो एक लम्बे अरसे से अंग्रेजी में, उक्त विषय के विद्वानों, विद्यार्थियों और सामान्य पाठकों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहा है। अब पहली बार हिन्दी में प्रकाशित हुआ है। अनुवादक हैं श्री रमेश वर्मा।

★ संघर्ष [उपन्यास] — अनु० रामचन्द्र तिवारी ६.००

हरमन मेलविले के सुप्रसिद्ध उपन्यास Mobi Dick को समरसेट माम ने संसार के दस श्रेष्ठतम उपन्यासों में से एक माना था और स्वयं लेखक ने इस रचना के बारे में लिखा था, "मैंने धूर्तताओं से पूर्ण एक पुस्तक लिखी है लेकिन वह एक भेड़ की तरह दूधिया, स्वच्छ और पवित्र है।" व्हेल मछली के एक शिकारी जहाज और उसके जीवन की अत्यन्त रोमांचकारी कहानी।

★ नागमणि [उपन्यास] — अमृता प्रीतम २.५०

यह पंजाब की काव्य-कोकिला अमृता प्रीतम का नवीनतम उपन्यास है। प्रेम को कला के मार्ग में बाधक मानने वाले एक चित्रकार और प्रेम तथा उसकी अलौकिक शक्ति पर अगाध आस्था रखने वाली एक स्वाभिमानिनी, विवश होकर भी स्थिर और बदले में बिना कुछ पाए ही सब कुछ दे देने की भावना से भरी एक तरुणी की अभिभूत कर देने वाली कहानी।

★ नया समाज — डा० लक्ष्मीनारायण शर्मा १.००

इसमें सहकारिता आन्दोलन और उपभोक्ता भंडारों पर आधारित नये समाज की एक झलक प्रस्तुत की गई है।

★ हिन्दुस्तान हमारा — धर्मपाल शास्त्री १.५०

इस बालोपयोगी सचित्र पुस्तक में 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा, हम बुलबुले हैं इसकी ये गुलिस्तां हमारा' को अत्यन्त रोचक शैली में प्रमाणित जानकारी सहित चरितार्थ किया गया है।

राजपाल एण्ड सन्ज़

कश्मीरी गेट, दिल्ली-६



अ० भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ वर्ष १९६५-६६
के लिये कार्य-समिति

अध्यक्ष	श्री ओमप्रकाश	दिल्ली
उपाध्यक्ष	श्री रामलाल पुरी	,,
	श्री कृष्णचन्द्र बेरी	वाराणसी
	श्री मार्तण्ड उपाध्याय	दिल्ली
	श्री दीनानाथ मल्होत्रा	,,
	श्री दिनेश खरे	जयपुर
प्रधानमन्त्री	श्री कन्हैयालाल मलिक	दिल्ली
संयुक्त मन्त्री	श्री रघुवीरशरण बंसल	,,
	श्री पुरुषोत्तम दास मोदी	वाराणसी
	श्री राधेनाथ चोपड़ा	इलाहाबाद
कोषाध्यक्ष	श्री दयानन्द वर्मा	दिल्ली
सदस्य	श्रीमती प्रकाशवती पाल	लखनऊ
	श्री श्यामलाल गुप्त	दिल्ली
	श्रीमती कौशल्या अश्क	इलाहाबाद
	श्री सिंहासन राय	कलकत्ता
	श्री रमेश संत	दिल्ली
	श्री भोलानाथ अग्रवाल	आगरा
	श्री मदनमोहन पाण्डेय	पटना
	श्री तेजनारायण टन्डन	लखनऊ
	श्री लक्ष्मीचन्द जैन	कलकत्ता
	श्री रामतीर्थ भाटिया	दिल्ली
	श्री वाचस्पति पाठक	इलाहाबाद
	श्री देवनारायण द्विवेदी	वाराणसी
	श्री श्रीराम मेहरा	आगरा
	श्री दिग्दर्शन जैन	दिल्ली

नोट—विधान की धारा ५ (आ) के अन्तर्गत पांच पुस्तक-विक्रेताओं का सहयोजन, कार्यकारिणी की आगामी १७ अगस्त १९६५ को होने वाली बैठक में किया जायगा। १ अगस्त ६५ की कार्यसमिति की बैठक कोरम के अभाव में स्थगित करा दी गई थी। अब यह बैठक १७ अगस्त को होगी।

सम्पादक के नाम पत्र

महोदय,

प्रकाशक संघ ने समय-समय के अपने सद् प्रयासों द्वारा जहाँ इस व्यवसाय के सुनियोजन में योगदान दिया है और दे रहा है, वहां मेरा एक निवेदन है कि इस व्यवसाय में फैली पेमेन्ट की अस्थिरता, अनिश्चितता के क्षेत्र में भी कुछ ठोस कार्य करे।

कुछ पुस्तक-विक्रेता जो पेमेन्ट देने के मामले में बुरे पाये जायें तथा पेमेन्ट के लिए अनावश्यक टाल-मटोल करते-करते लेने वाले को उस स्थिति तक पहुँचा दें कि उसके सामने अदालती कार्रवाई के सिवा अन्य चारा न रह जाय। यद्यपि श्रम और समय की परेशानी देखते हुए लेने वाला सहज ही अदालती कार्रवाई का झंझट उठाने को तैयार नहीं होता।

यह बात निश्चित है कि देने वाला हमेशा मजबूर ही नहीं रहता। और नहीं तो मार्च-अप्रैल में तो वह पेमेन्ट कर ही सकता है। पर कुछ दूकानदार तो नीयतन जान बूझ कर टालते रहते हैं। कभी बोगस चेक देकर टाल दिया। कभी पिछली वसूली के लिए और माल का आर्डर देकर बैंक से बिल्टी भेज कर पिछला वसूलने की बात कह दी और वैसा करने पर महीनों बाद बिल्टी बैंक से वापस आ जाने पर माल की वापसी पर डैमरेज आदि के रूप में १०) १५) का दण्ड ऊपर से भरना पड़ता है।

इस प्रकार के मामले को मैं समझता हूँ कि देने वाला एक प्रकार से बेवकूफ बनाता है। उस दूकानदार को अपनी इस करतूत का कोई ऐसा फल नहीं भोगना पड़ता कि जिससे वह महसूस करे कि उसे इस कारण कहीं अन्य से भी माल नहीं मिलेगा। यद्यपि एक-एक करके वह अपनी इस वृत्ति का शिकार सभी को बनाता है।

संघ को चाहिये कि इस सम्बन्ध में किसी के खिलाफ शिकायत मिलने पर उसके औचित्य की जांच कर सही पाने पर आवश्यक कदम उठाये। पहले तो उस पुस्तक-विक्रेता पर भुगतान करने का दबाव डाले। इसमें सफलता न मिलने पर समस्त प्रकाशक सदस्यों को इस बात की सूचना देकर, कोई भी उसे पुस्तक न भेजे ऐसा अनुरोध करे। कुछ प्रकाशकों को, जिन्हें उस समय तक उस दूकानदार से ऐसी कोई शिकायत नहीं होगी, अपने थोड़े हित का त्याग थोड़े ही समय के लिए अवश्य करना होगा। उनके इस सहयोग से जहाँ संघ की शक्ति, महत्त्व तथा प्रतिष्ठा बढ़ेगी, वहाँ इस व्यवसाय में फैली इस कुप्रवृत्ति को भी बढ़ावा न मिलेगा।

इस सम्बन्ध में मैं अपने निज का एक अनुभव आपकी सेवा में भेज रहा हूँ—

······लखनऊ से हमने पैसे लेने हैं। अप्रैल ६४ में उसने आंशिक पेमेन्ट के रूप में रु० १००) का पोस्ट डेटेड चेक दिया जो बैंक से 'रेफर टू ड्राअर' लिख कर वापस आ गया। इस सम्बन्ध में किए गए पत्र-व्यवहार के उत्तर तक देने की सौजन्यता या खेद प्रकाश उक्त पार्टी ने नहीं किया। जनवरी ६५ में जब फिर मेरा लखनऊ जाना हुआ तो उस चेक का भुगतान करने की बजाय उन्होंने कहा कि अभी तो भुगतान होना कठिन है। आपको हम एक आर्डर देते हैं। १५ फरवरी ६५ के बाद इस माल को भेज कर बिल्टी बैंक से भेज कर पिछला बाकी वसूल कर लें। पार्टी की सुविधा देखते हुए हमने वैसा किया तो महीने भर बिल्टी बैंक में पड़ी रहने के बाद रु० २.६० पै० की वी० पी० द्वारा बैंक से वापस आ गई। माल की वापसी पर डैमरेज आदि का १५) रु० अलग से देना पड़ा। इस सम्बन्ध में किए गए पत्र-व्यवहार पर फिर वही पहले जैसी ही उपेक्षा मिली।

अप्रैल ६५ में जब फिर मेरा लखनऊ जाना हुआ और इस सम्बन्ध में पार्टी से मिला तो बात तथा व्यवहार में बड़ी उपेक्षा मिली। उत्तर की उद्दण्डता तो यहां तक बढ़ गई कि सीधे कह दिया, 'ज्यादा बोलने की जरूरत नहीं। अदालतें तो खुली हैं। जो मरजी हो कर लीजिये।'

इस प्रकार का उत्तर मिलने पर आप स्वयं सोचिए कि उस पेमेन्ट की वसूली के लिए कानूनी शरण के सिवा कोई चारा नहीं रहा।

ऐसी स्थिति में संघ इस सम्बन्ध में कुछ आवश्यक कार्रवाई करे तो उत्तम हो।

अमर नाथ शुक्ल
विद्या प्रकाशन मन्दिर, दिल्ली-६

[श्री शुक्लजी ने अपने इस पत्र में लखनऊ की उक्त पार्टी का नाम भी लिखा है। हमने इस आशा से वह रोक लिया है कि वह अपने व्यवहार पर खेद प्रकट करेगी और मामला सुलझा लेगी। यदि ऐसा न हुआ तो हम उसका नाम सब के सामने प्रस्तुत कर देंगे।—सं०]

हिन्द पॉकेट बुक्स

नए प्रकाशन

- **पत्थर की नाव** (उपन्यास) — मन्मथनाथ गुप्त — १.००
  हिन्दी के महान क्रान्तिकारी लेखक मन्मथनाथ गुप्त का यह सामाजिक उपन्यास है जिसमें सामाजिक विषमताओं का बड़े ही रोचक ढंग से चित्रण किया गया है।

- **फागुन के दिन चार** (उपन्यास) — पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' — १.००
  'उग्र' जी के इस उत्कृष्ट उपन्यास में नाम और पैसे की भूखी, नई उम्र की चंचल कामिनियों की हसरत-भरी कहानी है।

- **पराई डाल का पंछी** (उपन्यास) — अमरकान्त — १.००
  मनचले नवयुवकों के मनोविज्ञान पर आधारित इस उपन्यास की कथावस्तु दिल की गहराइयों को छू लेती है।

- **काग़ज़ के फूल** (हास्य-व्यंग्य) — वीरेन्द्र कुमार — १.००
  'कागज़ के फूल' में हमारे नेताओं, कवियों, धर्म के ठेकेदारों, फिल्म एक्टर बनने के इच्छुक नवयुवकों, विवाह की प्रतीक्षा करने वाली नवयुवतियों की अंतरंग मुँहबोलती तस्वीरें हैं। यह एक अत्यन्त मनोरंजक पुस्तक है।

- **मौत की छाया** (जासूसी उपन्यास) — कॉनन डायल — १.००
  विश्व-विख्यात जासूसी उपन्यासकार कॉनन डायल का रोमांचक उपन्यास, जिसमें क़दम-क़दम पर दिल दहला देनेवाली रहस्यपूर्ण घटनाओं और हत्याओं का चक्रव्यूह आपको मिलेगा।

- **ज़मीन आस्मान** (उपन्यास) — पर्ल बक — १.००
  नोबेल-पुरस्कार-विजेता श्रीमती पर्ल बक के अत्यन्त रोचक उपन्यास 'अदर गॉड्स' का हिन्दी रूपान्तर।

- **स्वस्थ रहने के सरल उपाय** — डा० लक्ष्मीनारायण शर्मा — १.००
  यों तो स्वास्थ्य-संबंधी बहुत-सी पुस्तकें आपने देखी-पढ़ी होंगी किन्तु इस पुस्तक को पढ़कर स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिए आपको नई सूझ और नई दृष्टि प्राप्त होगी।

- **कारवां गुज़र गया** (काव्य) — नीरज — १.००
  आपके प्रिय कवि 'नीरज' के इस संकलन में नीरज की अधिकांश नई कविताएं संकलित हैं।

- **कब तक पुकारूं** (उपन्यास) — डा० रांगेय राघव — २.००
  हिन्दी के इने-गिने सर्वश्रेष्ठ उपन्यासों में अद्वितीय तथा उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत इस उपन्यास की कहानी में इतना 'ग्रिप' है कि एक बार पढ़ना आरम्भ करने के बाद बिना समाप्त किए छोड़ा नहीं जा सकता। यह उस बृहद् उपन्यास का संपादित संस्करण है किन्तु रस-परिपाक में कहीं भी अन्तर नहीं आया है। पृष्ठसंख्या २५०

- **पिता और पुत्र** (उपन्यास) — तुर्गनेव — २.००
  रूस के महान उपन्यासकार तुर्गनेव का वह महान उपन्यास जिसके प्रकाशन पर रूस में प्रतिबन्ध लगाने की मांग की गई थी। दो पीढ़ियों की विचारधारा तथा मानसिक द्वन्द्व की सशक्त कहानी जिसे पाकेट बुक्स के लिए श्री प्रकाश पण्डित ने संक्षिप्त किया है।

- **विश्व भ्रमण** (यात्रा संस्मरण) — (डा०) सेठ गोविंददास — २.००
  लोकसभा के सदस्य (डा०) सेठ गोविंददास द्वारा लिखित इस पुस्तक में मिस्र, यूनान, इटली, फ्रांस, इंगलैंड, अमेरिका, जापान, चीन, आदि संसार के चौदह प्रमुख देशों की यात्रा का ऐसा रोचक वर्णन है, कि पुस्तक समाप्त करते हुए आपको लगेगा जैसे आप स्वयं उन देशों की यात्रा किए चले आ रहे हों।



हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा० लि०, शाहदरा, दिल्ली-३२

भारतीय हिन्दी-परिषद्

कुरुक्षेत्र में इक्कीसवां अधिवेशन

भारत के सांस्कृतिक स्थान कुरुक्षेत्र में ३१ मई एवं १ जून सन् १९६५ को भारतीय हिन्दी परिषद् का इक्कीसवाँ वार्षिक अधिवेशन प्रयाग विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा० रामकुमार वर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

अधिवेशन का उद्घाटन कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री सूर्यभानु ने किया। उन्होंने अपने संक्षिप्त एवं सारगर्भित भाषण में कहा कि आज विश्व की भाषाओं में हिन्दी का तीसरा स्थान है। इस दृष्टि से हिन्दी भारत की नहीं विश्व की समृद्ध भाषा है। हमें प्रथम हिन्दी को अपने देश में राष्ट्रभाषा के रूप में उचित स्थान देना है जिसकी वह अधिकारिणी है। वह समय दूर नहीं जब हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में उचित सम्मान मिलेगा।

अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष आचार्य विनयमोहन शर्मा ने कहा कि कुरुक्षेत्र प्राचीन काल में धर्म-क्षेत्र के साथ-साथ विद्या-क्षेत्र भी रहा है। उस समय भी विद्वन्मण्डली समय-समय पर विचार-गोष्ठियाँ आयोजित किया करती थी। खड़ी बोली के प्रारम्भिक विकास में कुरुक्षेत्र (कुरु प्रदेश) का महान योग है।

अधिवेशन के अध्यक्ष डा० रामकुमार वर्मा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हिन्दी के पठन-पाठन एवं अध्यापन के महत्त्व पर प्रकाश डाला और इस बात पर बल दिया कि हिन्दी के पाठ्यक्रम में अखिल भारतीय स्तर पर एकरूपता लाने का प्रयास किया जाय।

इस अधिवेशन के अवसर पर एक पुस्तक प्रदर्शनी का

आयोजन भी किया गया। प्रदर्शनी में हिन्दी में प्रकाशित एवं उपलब्ध शोधग्रन्थ, सन्दर्भग्रन्थ, काव्य, नाटक, उपन्यास, कथासाहित्य, आलोचना, हिन्दी साहित्य का इतिहास एवं भारतीय प्रादेशिक भाषा का हिन्दी लिपियों में उपलब्ध साहित्य प्रदर्शित किया गया था। इस अधिवेशन में आये हुए प्रतिनिधियों ने इस प्रदर्शनी की भूरि-भूरि प्रशंसा की। प्रदर्शनी का उद्घाटन परिषद् के अध्यक्ष ने किया था।

सायंकाल इसी अधिवेशन में डा० व्रजेश्वर वर्मा की अध्यक्षता में 'भारतीय भक्तिसाहित्य की मूलभूत एकता' पर गोष्ठी हुई। रात्रि में पंजाब राज्य के सम्पर्क विभाग ने एक पंजाबी आपेरा प्रस्तुत किया। करनाल के जिला सम्पर्क अधिकारी श्री देवीशंकर प्रभाकर ने २ घन्टे का सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसमें हरियाणवी लोक-संस्कृति की सुन्दर छटा प्रस्तुत की गई थी।

अगले दिन १ जून, सन् १९६५ को प्रात: दो 'निबन्ध-गोष्ठियाँ' हुईं जिनमें गुरुमुखी लिपि में 'हिन्दी काव्य,' 'दक्खिनी हिन्दी' तथा 'हिन्दी साहित्य और शोध' विषयों पर विभिन्न-विभिन्न विद्वानों की अध्यक्षता में निबन्ध पढ़े गये। सायंकाल डा० सावित्री सिनहा की अध्यक्षता में 'रस सिद्धान्त और नयी कविता' पर सफल गोष्ठी हुई। इस गोष्ठी का समापन डा० नगेन्द्र ने इन शब्दों में किया, "रस भाव की कल्पनात्मक अनुभूति है तथा कविता भाव की कल्पनात्मक अभिव्यक्ति। इस कारण रसरहित कविता का अस्तित्व सम्भव ही नहीं है। अब यह निर्णय नयी कविता वालों को करना है कि वे नयी कविता को कविता बनाये रखना चाहते हैं अथवा नहीं।"

नये वर्ष के लिए भारतीय परिषद् के अध्यक्ष, अलीगढ़ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा० हरवंशलाल शर्मा निर्वाचित हुए हैं। परिषद् को अगले वर्ष के लिए उज्जैन एवं हैदराबाद से निमन्त्रण प्राप्त हुए हैं।

●

पुस्तक व्यवसायी संघ, भोपाल का परिपत्र : व्यापारिक संबंधों को सुधारने का प्रयास

पुस्तक व्यवसायी संघ, भोपाल के मंत्री श्री रमेशचन्द्र सिंहल ने निम्नलिखित प्रेषित किया है :

१. संघ की साधारण सभा के मतानुसार संघ के सदस्यों की तालिका प्रेषित की जा रही है।

२. समस्त सदस्यों से संघ यह निवेदन करता है : जो संघ के सदस्य नहीं हैं उनसे किसी भी प्रकार का व्यापाराना संबंध न रखा जावे। जो सदस्य इसका पालन न करेगा वह संघ के नियमानुसार उचित दण्ड का भागी होगा।

३. भोपाल तथा बाहर के समस्त प्रकाशकों एवं पुस्तक-विक्रेताओं से सानुरोध प्रार्थना है कि वह भी उन सदस्यों से जो संघ के सदस्य नहीं हैं तथा जिनका नाम इस तालिका में नहीं है किसी प्रकार का लेन-देन न करें तथा यह निर्देश अपने-अपने प्रतिनिधियों को भी देने की व्यवस्था करें कि प्रतिनिधि उनके यहाँ से आर्डर प्राप्त करने की चेष्टा न करें, जिससे अन्य पुस्तक-विक्रेताओं को जो संघ के सदस्य नहीं हैं अनुचित 'कम्पीटीशन' करने तथा बाजार भाव बिगाड़ने का अवसर न मिले।

आवश्यक : यदि किसी भी प्रकाशक या पुस्तक-विक्रेता के प्रतिनिधि ने ऐसे सदस्य से जो तालिका में नहीं है आर्डर प्राप्त किया तो समस्त भोपाल के पुस्तक-विक्रेता उनके द्वारा दिये गये आर्डरों के छुड़ाने में बाध्य नहीं होंगे, तथा भविष्य में किसी भी प्रकार से व्यापाराना सम्बन्ध नहीं रखेंगे।

४. पुस्तक व्यवसायी संघ के बनाये गये नियमानुसार प्रत्येक प्रतिनिधि को भोपाल में आर्डर प्राप्त करने के लिए

दो रुपये अंकेन रु० २.०० या ग्यारह रुपये अंकेन रु० ११.०० की रसीद जो क्रमश: सात दिन और एक साल की अवधि तक मान्य होगी लेनी पड़ेगी। साल की अवधि १ अप्रेल से ३१ मार्च तक की होगी। इसके बाद ही वह किसी भी दुकानदार से जो तालिका में है आर्डर लेने के अधिकारी होंगे।

विशेष : चिह्नित पुस्तक विक्रेताओं से प्रमाण-पत्र (रसीद) लेने का प्रावधान रखा गया है।

५. संघ के जो सदस्य उन प्रकाशकों की जो नियमानुसार फीस दे चुके हैं आर्डर देने के बाद बिल्टी नहीं छुड़ाते हैं तो प्रकाशक यदि चाहें तो बिल्टी सीधी रजिस्ट्री से मंत्री, श्री पुस्तक व्यवसायी संघ, भोपाल को भेज सकते हैं। संघ दोनों पार्टियों से बात करके विवाद का निर्णय करेगा तथा जो पार्टी डिफाल्टर होगी वह तमाम खर्चों, डेमरेज आदि की जुम्मेदार होगी। संघ का निर्णय दोनों पार्टियों को मान्य होगा।

३१ जनवरी १९६५ तक बने संघ के सदस्यों की तालिका निम्नलिखित है :

१. श्री अरुणोदय प्रकाशन, ६ साउथ टी० टी० नगर, भोपाल
२. " अग्रवाल बुक डिपो, इब्राहीमपुरा, भोपाल
३. " आज़ाद बुक डिपो, जवाहर चौक, भोपाल
४. " इण्डिया बुक डिपो, इब्राहीमपुरा, भोपाल
५. " कमल बुक डिपो, आज़ाद मार्केट, भोपाल
६. " कॉलेज बुक डिपो, इब्राहीमपुरा, भोपाल
७. " कैपीटल स्टेशनरी मार्ट, जुमेराती, भोपाल
● ८. " कैलाश पुस्तक सदन, हमीदिया रोड, भोपाल
९. " गर्ग बुक डिपो, जुमेराती, भोपाल
१०. " गयाप्रसाद एण्ड संस, मोती मस्जिद, भोपाल
११. " गोविन्द बुक डिपो, बैरागढ़
१२. " गुप्ता बुक डिपो (उज्जैन), ललवानी प्रेस के सामने, भोपाल
१३. " जैन ब्रदर्स, सुलतानिया रोड, भोपाल
१४. " दीपक साहित्य सदन, चांदबड़ भोपाल

१५. श्री नरेश पुस्तक सदन, बैरागढ़
१६. " पीपिल्स पब्लिशिंग हाउस, ग्रांड होटल के नीचे, भोपाल
१७. " प्रेम पुस्तक मंदिर, मोती मस्जिद, भोपाल
१८. " भारत स्टेशनरी मार्ट, इतवारा रोड, भोपाल
१९. " भार्गव एण्ड कम्पनी, बालबिहार, भोपाल
२०. " भोपाल साहित्य सदन, ललवानी प्रेस के सामने, भोपाल
२१. " मध्य प्रदेश पुस्तक प्रकाशन, हमीदिया रोड, भोपाल
२२. " महेन्द्र बुक डिपो, एच० ई० एल०, भोपाल
२३. " महावीर जनरल स्टोर्स, स्टेशन रोड, भोपाल
२४. " यूनाईटेड ट्रेडिंग कार्पोरेशन, इतवारा रोड, भोपाल
२५. " यूनीवर्सल बुक डिपो, सुलतानिया रोड, भोपाल
२६. " लायल बुक डिपो, सुलतानिया रोड, भोपाल
२७. " शांति निकेतन, श्री जैन मंदिर रोड, भोपाल
२८. " सरस्वती प्रकाशन, सुलतानिया रोड, भोपाल
२९. " साधना बुक्स, एच० ई० एल०, भोपाल
३०. " साँची प्रकाशन, बालबिहार, भोपाल
३१. " सिंहल साहित्य निकेतन, जुमेराती, भोपाल
३२. " सुभाष साहित्य सदन, इब्राहीमपुरा, भोपाल
३३. " स्टेन्टर्ड स्टेशनरी स्टोर्स, टी० टी० नगर, भोपाल

५ जून १९६५ तक बने संघ के नये सदस्यों की तालिका निम्नलिखित है :

३४. श्री कलकत्ता जनरल स्टोर्स, जहाँगीराबाद
३५. " भारतीय विद्या भवन, भारत टाकीज
३६. " आक्सफोर्ड बुक कंपनी, हमीदिया रोड
३७. " एजूकेशनल सेन्टर, सुलतानिया रोड
३८. " फ्रेन्ड्स बुक हाउस, बुधवारा
३९. " गुरुनानक जनरल स्टोर्स, टी० टी० नगर
४०. " नया किताबघर, लोहाबाज़ार
४१. " गोरेलाल रमेशकुमार मारवाड़ी रोड

हमारे पाठ्य ग्रन्थ

हिन्दी साहित्य

काव्यशास्त्र— डॉ. भगीरथ मिश्र ७.५०
साहित्य का मूल्याङ्कन— ले.डब्लू. बी. वर्सफोल्ड, अनु. डॉ. रामचन्द्र तिवारी ३.००
समीक्षालोक—डॉ. भगीरथ दीक्षित २०.००
मध्ययुगीन काव्य-साधना —डॉ. रामचन्द्र तिवारी ४.५०
कामायनी-विमर्श—डॉ. भगीरथ दीक्षित १०.५०
हिन्दी भाषा और लिपि का ऐतिहासिक विकास—श्री सत्य नारायण त्रिपाठी ४.००
निबन्ध-नवनीत–सं. डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ४.००
निबन्ध-नीहारिका—सं.डॉ. रामचंद्र तिवारी २.५०
संस्कृति प्रवाह—सोमेश्वर सिंह २.५०
काव्यधारा—सं. डॉ. गोपीनाथ तिवारी तथा डॉ. रामचन्द्र तिवारी ३.००
त्रिधारा— ,, ,, ३.००
भूषण मञ्जूसा— डॉ. ब्रजकिशोर मिश्र १.५०
संक्षिप्त रामचन्द्रिका—डॉ. रामचन्द्र तिवारी २.००
बिहारी वैभव—डॉ. रामचन्द्र तिवारी १.२५
तन्दुल (कृष्ण-सुदामा) —श्री रामअधार त्रिपाठी 'जीवन' १.००
भारतदुर्दशा (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र)— सं. डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय १.००
श्री चन्द्रावली (,, ,,)—चतुर्थ संस्करण १.५०
वैज्ञानिक अनुसंधान और आविष्कार— डॉ. रवीन्द्रप्रताप राव १.५०

इतिहास और संस्कृति

INDIA UNDER WELLESLEY —by P. E. Roberts 12.50
DUPLEIX AND CLIVE —by H.H. Dodwell 12.50
विश्व की प्राचीन सभ्यताएं–श्री श्रीराम गोयल २०.००
प्रागैतिहासिक मानव और संस्कृतियां —श्री श्रीराम गोयल ६.५०
आधुनिक यूरोप का इतिहास (१४५३ ई० से १७८९ ई० तक)—श्री राधाकृष्ण शर्मा ३.५०
भारतीय संस्कृति—डॉ. लल्लनजी गोपाल तथा डॉ. ब्रजनाथ सिंह यादव ५.००
भारतीय संस्कृति (प्रश्नोत्तर)–डॉ. वात्स्यायन ३.००

अर्थशास्त्र समाजशास्त्र

राजस्व, राष्ट्रीय आय, रोज़गार और आर्थिक प्रणालियाँ—डॉ. ब्रजकिशोर सिंह ७.५०
सामाजिक मनोविज्ञान (Social Psychology by V.V. Akolkar) ९.००
SOCIAL PHILOSOPHY OF MAHATMA GANDHI by Dr. Mahadeva Pd. 12.50

युद्ध विद्या

युद्ध-कला (The Art of War—by Arthur Birnie) —आर्थर बिरनी ७.५०

शिक्षा

A STUDY OF EDUCATIONAL PSYCHOLOGY —by R. P. Bhatnagar 6.00
शिक्षा-सिद्धान्त एवं दर्शन—सत्यदेव सिंह ६.००

संस्कृत

प्रारम्भिक-रचनानुवाद कौमुदी— डॉ. कपिलदेव द्विवेदी १.४०
रचनानुवाद-कौमुदी— ,, ,, ३.५०
प्रौढ़ रचनानुवाद-कौमुदी— ,, ,, १०.००
संस्कृत शिक्षा, भाग १ ,, ,, ०.७५
संस्कृत शिक्षा, भाग २ ,, ,, १.००
संस्कृत शिक्षा, भाग ३ ,, ,, १.२५
वेदचयनम्—श्री विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी ४.५०
कादम्बरी : महाश्वेतावृत्तान्त—डॉ. देवर्षि सनाढ्य तथा विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी ३.००
भामिनी विलास : अन्योक्ति —जनार्दनस्वरूप शास्त्री ३.५०
नलोपाख्यान (वनपर्व)— १.५०
लघुसिद्धान्त कौमुदी (संज्ञा, सन्धि और सुबन्त प्रकरण)—श्री गौरीशंकरसिंह १.५०
भोज प्रबंध (संक्षिप्त) —डॉ. देवर्षि सनाढ्य १.५०

Mathematics

THEORY OF AGGREGATES OF REAL NUMBERS by Dr. K. B. Lal 10.00
VECTOR ANALYSIS —by Dr. K. B. Lal 1.50

General English

FUNDAMENTALS OF GENERAL ENGLISH —by Prof. B. M. Singh 3.00
CONSTRUCTIVE GUIDE TO GENERAL ENGLISH Vol. I & II —by P. S. Mishra, each 1.00

प्रकाशक

विश्वविद्यालय प्रकाशन

भैरवनाथ, वाराणसी-१

सूचना सार

सर्व-सेवा पाकेट-बुक्स

सर्व-सेवा संघ प्रकाशन राजघाट, वाराणसी ने अपने प्रकाशन व्यवसाय में एक पाकेट, बुक योजना, 'सर्व-सेवा पाकेट बुक्स' को सम्मिलित किया है। इस योजना में संघ सर्वोदय विचारधारा एवं सांस्कृतिक साहित्य का प्रकाशन करेगा।

नये पुस्तक विक्रेता—बुक कॉलेज, कलकत्ता

मैसर्ज बुक कॉलेज १६ सिकदर पारा स्ट्रीट, कलकत्ता-७ ने सूचित किया है कि प्रकाशक महोदय अपने प्रकाशन तथा व्यापारिक नियम भेजने की कृपा करें।

पुस्तक व्यवसायी संघ, भोपाल

पुस्तक व्यवसायी संघ, भोपाल ने अपने सदस्यों के लिए एक आचार संहिता का निर्माण किया है। इसी के साथ प्रकाशकों से भी अनुरोध किया है कि वे केवल सदस्यों के साथ ही व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करें, गैर सदस्यों से नहीं। संघ ने प्रकाशक एवं पुस्तक-विक्रेताओं दोनों के माध्यम को ठीक रखने के लिए भी कुछ योजना तैयार की है। ५ जून, सन् १९६५ तक संघ के सदस्यों की ४० संख्या हो गई है।

राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

राजकमल प्रकाशन के श्री ओमप्रकाश अपनी संस्था से लगभग २० वर्ष का सम्बन्ध विच्छेद करके अब अपनी एक निजी प्रकाशन-संस्था 'राधाकृष्ण प्रकाशन' ४-१४ रूपनगर, दिल्ली-७, प्रारम्भ कर रहे हैं। राधाकृष्ण प्रकाशन द्वारा प्रकाशन एवं पुस्तक-विक्रय दोनों प्रकार का कार्य होगा। प्रकाशक बन्धु अपने नये प्रकाशनों की सूचना राधाकृष्ण प्रकाशन को भेजते रहें।

कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी बुक शाप, कुरुक्षेत्र

बंसल एण्ड कम्पनी दिल्ली के संचालक श्री रघुवीर-शरण बंसल ने सूचित किया है कि उन्होंने अपनी फर्म **कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी बुक एण्ड स्टेशनरी शाप, कुरुक्षेत्र,** को समाप्त कर दिया है और वह दिल्ली से पूर्ववत् बंसल एण्ड कम्पनी, नवीन शाहदरा-दिल्ली ३२ से प्रकाशन एवं पुस्तक विक्रय का कार्य कर रहे हैं।

सब्मीशन सूचनाएं

सैन्ट्रल सैकेन्ड्री बोर्ड दिल्ली ने पाठ्य-पुस्तकों के सब्मीशन की तिथि ३१ अगस्त के स्थान पर ३० सितम्बर तक के लिए बढ़ा दी है।

पंचायत एवं समाज-सेवा संचनालय मध्यप्रदेश, इंदौर ने अपनी प्रेस विज्ञप्ति द्वारा सूचित किया है कि १९६५-६६ की लोककथा प्रतियोगिता की पुस्तक सब्मीशन तिथि १५ अगस्त सन् १९६५ है। पुस्तकों पर प्रथम तीन पुरस्कार क्रमशः ७५, ६०, ५० रुपये के प्रदान किये जायेंगे।

बाल-साहित्य-सूची

राष्ट्रीय-शिक्षा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् के पाठ्यक्रम पद्धति एवं पाठ्य पुस्तक विभाग ने हिन्दी में उपलब्ध बाल-साहित्य की सूची बनानी प्रारम्भ की है। जिसमें पुस्तकों का परिचय एवं टिप्पणी भी दी जा रही है। सूची पुस्तिका विभिन्न राज्यों के स्कूलों एवं शिक्षाधिकारियों के पास भेजी जायेगी। यह सूची वर्ष में दो बार प्रकाशित होती रहेगी।

श्री पंतजी का सम्मान

महाकवि सुमित्रानन्दन पंत के महाकाव्य लोकायतन पर उत्तरप्रदेश सरकार ने १०,००० रुपये का एक विशिष्ट पुरस्कार महाकवि पंत को प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया है।

सस्ती पुस्तकें

भारतवर्ष में तकनीकी एवं चिकित्सा की पुस्तकों की मांग दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। भारत सरकार पत्राचार करके इस बात का प्रयास कर रही है कि इन विषयों की पुस्तकों के भारतीय एवं सस्ते संस्करण प्रकाशित हो जायं और वह सुलभ रूप में विद्यार्थियों को सुलभ हो सकें।

भेंट की गई पुस्तकें

भारत सरकार ने शिक्षा-संस्थाओं पर से भेंट में आयात की जानेवाली पुस्तकों पर से प्रतिबन्ध हटा लिया है और उसमें राशि की सीमा भी समाप्त करदी है।

राष्ट्रीयकृत पुस्तकें

बिहार राज्य की पाठ्य-पुस्तक निगम की व्यवस्था की कमी के कारण विद्यार्थियों को अपनी श्रेणी की पाठ्य-पुस्तकें नहीं मिल रही हैं। सरकार की इस नीति के कारण शिक्षा-क्षेत्र में काफी परेशानी है।

मद्रास शिक्षा विभाग संचालक ने सूचित किया है कि इस वर्ष १९६५-६६ में वही पाठ्य पुस्तकें रहेंगी जो सन् १९६४-६५ में चालू थीं।

पंजाब शिक्षा विभाग द्वारा राष्ट्रीयकृत पुस्तकों में प्राथमिक एवं माध्यमिक श्रेणी की १३ पुस्तकें उपलब्ध नहीं हैं। विद्यार्थी, पुस्तक-विक्रेता एवं अध्यापक इस कारण तीनों ही दुःखी हैं।

उड़ीसा राज्य के शिक्षा-मन्त्रालय ने पाठ्य-पुस्तकों की बिक्री योजना में कुछ परिवर्त्तन किये हैं। पहिले ये पुस्तकें राज्य के व्यापार विभाग द्वारा बेची जाती थीं किन्तु अब इन पुस्तकों की बिक्री केवल पुस्तक-विक्रेताओं द्वारा होगी।

सहयोगियों से निवेदन

आजकल पाठ्य-पुस्तकों का सीजन चल रहा है। आप को राष्ट्रीयकृत पुस्तकों के मिलने में जो असुविधाएं हों उनकी सूचना सम्पादक के पास भेजने की कृपा करें। इस प्रकार के समाचार हिन्दी प्रकाशक में सहर्ष प्रकाशित किये जायेंगे। इसी के साथ आपके पास जो पुस्तक प्रकाशन व्यवसाय सम्बन्धी सूचना अथवा समाचार प्राप्त हों और जिनका प्रकाशन आप सार्वजनिक रूप में उचित समझते हों उन्हें भी सम्पादक हिन्दी प्रकाशक के पास भेजने की कृपा करें।

पुस्तक-परिचय : प्रकाशक का नया स्तम्भ

'हिन्दी प्रकाशक' सितम्बर के अंक से 'पुस्तक-परिचय' शीर्षक के अन्तर्गत हिन्दी लिपि में प्रकाशित पुस्तकों का व्याख्यात्मक एवं परिचयात्मक विवरण प्रकाशित किया करेगा। सन् १९६५ के साहित्य को इसमें विशेष स्थान दिया जायेगा। प्रकाशकों से निवेदन है कि वे इस स्तम्भ के लिए अपने प्रकाशनों की २ प्रतियाँ भेजें।

महान् पत्रकार का निधन

राजधानी के पुराने प्रतिष्ठित पत्रकार भाई सत्यदेव विद्यालंकार का गत जून को देहावसान हो गया है। भाईजी के निधन से समस्त हिन्दी पत्रकार-जगत की एक महान् क्षति हुई है। भाईजी ने राजधानी दिल्ली के विश्वमित्र, हिन्दुस्तान, नवभारत, अमर भारत तथा मध्यप्रदेश के नवप्रभात पत्र का सम्पादन किया था। आपने हिन्दी वाङ्मय के भण्डार की अपनी कृतियों से विशेष रूप में अभिवृद्धि की है।

नये प्रकाशन

साहित्य—(खण्ड १)

अमृता प्रीतम	नागमणी	उपन्यास	—	दिल्ली, राजपाल एण्ड संज़	२.५०
अमृता प्रीतम	संघर्ष	उपन्यास	—	दिल्ली, राजपाल एण्ड संज़	६.००
गुप्ता, सत्या	खड़ी बोली का लोक साहित्य	शोधग्रन्थ	—	इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकादमी	१५.००
गौतम, मनमोहन	साहित्यालोचन सिद्धान्त	आलोचना	पु.मु.	दिल्ली, हिन्दी साहित्य संसार	२.५०
चक्रवर्त्ती	प्रसाद की दार्शनिक चेतना	शोधग्रन्थ	—	कानपुर, ग्रन्थम	२५.००
चौरसिया, केशनीप्रसाद	मध्यकालीन हिन्दी सन्त विचार और साधना	शोधग्रन्थ	—	इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकादमी	१५.००
जगदीश	दयानन्द दर्शन	काव्य	—	अटरू, (राज०) अरविन्द प्रकाशनगृह	१.००
वरेरकर, मामा	अभागिन का भाग्य	उपन्यास	—	दिल्ली, विद्या प्रकाशन मन्दिर	३.५०
वरेरकर, मामा	कुलदेवी	,,	—	दिल्ली, विद्या प्रकाशन मन्दिर	४.००
वरेरकर, मामा	संन्यासी का व्याह	नाटक	—	दिल्ली, विद्या प्रकाशन मन्दिर	२.००
राकेश	निबन्ध दर्शन	निबन्ध	—	ग्वालियर, किताबघर	४.५०
रांगेय राघव	कब तक पुकारूँ	उपन्यास	पा० बु०	दिल्ली, हिन्द पाकेट बुक्स	२.००
रामधारीसिंह 'दिनकर'	दिनकर की सूक्तियाँ	सूक्तियाँ	—	पटना, उदयाचल	३.००
रेड्डी, बालशौरि	भग्न सीमाएँ	उपन्यास	—	दिल्ली, राजकमल प्रकाशन	४.००
वाजपेयी, नन्द दुलारे	प्रकीर्णिका	निबन्ध	—	कानपुर, अनुसंधान प्रकाशन	८.००
शर्मा, गोवर्धन लाल	डिंगल साहित्य	भाषा विज्ञान	—	कानपुर, अनुसंधान प्रकाशन	१६.००
शर्मा, जगदीश	बाप बेटी	नाटक	—	दिल्ली, देहाती पुस्तक भण्डार	१.२५
शर्मा, विष्णुचन्द्र	आकाश विभाजित है	काव्य	—	वाराणसी, जगत शंखधर	३.००
शर्मा, विष्णुचन्द्र	तालमेल	उपन्यास	—	वाराणसी, साहित्य केन्द्र	३.००
शर्मा, रामाधार	आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी व्यक्ति और साहित्य	आलोचना	—	कानपुर, अनुसंधान प्रकाशन	२०.००
शुक्ल, प्रेमनारायण	संत साहित्य	शोधग्रन्थ	—	कानपुर, अनुसंधान प्रकाशन	२०.००
शोलोखोव	धीरे बहो दोनरे (अनु०) गोपीकृष्ण गोपेश	उपन्यास	—	दिल्ली, राजकमल प्रकाशन	८.००
श्रीवास्तव, परमानन्द	हिन्दीकहानी की रचना प्रक्रिया	शोधग्रन्थ	—	कानपुर, ग्रन्थम	१२.५०

साहित्येतर—(खण्ड २)

कपूर, बद्रीनाथ	अंग्रेजी हिन्दी पर्यायवाची कोष	कोष	—	दिल्ली, राजकमल प्रकाशन	९.००
कोकर	आधुनिक राजनैतिक चिन्तन	राजनीति	पु.मु.	आगरा, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल	१५.००

गार्नर	राज्य विज्ञान और शासन	राजनीति	पु.मु.	आगरा, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल	१८.००
जायसवाल, सीताराम	शिक्षा मनोविज्ञान	शिक्षा	—	दिल्ली, विद्या प्रकाशन मन्दिर	१०.००
जैन तथा कोठारी	मुद्रा तथा बैंकिंग	अर्थशास्त्र	—	आगरा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल	११.००
मेहता, ब्र० न०	आधुनिक यूरोप (१८७१-१९५६)	इतिहास	—	आगरा, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल	९.००
मैटिल	राजनीतिक चिन्तन का इतिहास	राजनीति	—	आगरा, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल	१५.००
शर्मा, श्रीराम	भारत में मुगल साम्राज्य	पु० मु०	—	आगरा, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल	१५.००
शर्मा, श्रीराम	भारत में मुस्लिम शासन	पु० मु०	—	आगरा, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल	१०.५०
शर्मा, श्रीराम	भारत की विदेश नीति : एक संक्षिप्त अध्ययन	राजनीति	—	ग्वालियर, किताबघर	८.००

संस्कृत, दर्शन एवं संस्कृति—(खण्ड ३)

जोशी, हरिशंकर	सांख्य योगदर्शन का जीर्णोद्धार	दर्शन	—	वाराणसी, चौखम्भा	१५.००
दीक्षित	भास के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन	संस्कृत-शोध	—	दिल्ली, आर्य, बुक डिपो	१२.००
मिश्र, रामचन्द्र	कादम्बरी (उत्तरभाग)	संस्कृत	—	वाराणसी, चौखम्भा	१०.५०
मुकर्जी, राधा कमल	भारत की सांस्कृतिक कला	संस्कृति	—	दिल्ली, राजपाल एण्ड संज़	१२.००
राम कुमार राय (सं०)	मूल संस्कृत उद्धरण	संस्कृत	—	वाराणसी, चौखम्भा	२०.००
लूनिया, बी० एन०	भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का विकास	संस्कृति	सं०सं०	आगरा, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल	८.५०
व्यास, भोलाशंकर (अनु०)	संस्कृत भाषा	संस्कृत	—	वाराणसी, चौखम्भा	३०.००
शर्मा, बदरीनाथ	ध्वन्यालोक	संस्कृत	—	वाराणसी, चौखम्भा	९.००

बाल तथा प्रौढ़-साहित्य—(खण्ड ४)

चौहान, मनहर	कहानियों की कहानियाँ	बाल-कथा	—	दिल्ली, आर्य बुक डिपो	२.५०
झा, कमलनारायण 'कमलेश'	हमारा नेफा : हमारा लद्दाख	सामान्य ज्ञान	—	दिल्ली, हिन्दी सा० संसार	०.७५
थानी, योगराज	माँ की ममता	बाल-उपन्यास	—	दिल्ली, आर्य बुक डिपो	२.००
धर्मपाल शास्त्री	हिन्दुस्तान हमारा	सामान्य ज्ञान	—	दिल्ली, राजपाल एण्ड संज	१.५०
नरेन्द्र प्रसाद 'नवीन'	गद्दार दोस्त	उपन्यास	—	दिल्ली, हिन्दी सा० संसार	०.७५
शर्मा, लक्ष्मीनारायण	नया समाज	सामान्य ज्ञान	—	दिल्ली, राजपाल एण्ड संज	१.००

हमारे उत्कृष्ट प्रकाशन

नए प्रकाशन

स्व० गोपाल सिंह 'नेपाली' का कविता संग्रह

उमंग मूल्य ३.००

[नेपाली जी के अन्य संग्रह भी हमसे मंगावें]

सुप्रसिद्ध लेखकों की श्रेष्ठ हिन्दी कहानियाँ

सम्पादिका—वीना जैन एम० ए०, बी० एड०

मूल्य २.००

[दिल्ली (बी०ए०पास) विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमानुसार]

ऋषभचरण जैन के मौलिक एवं अनूदित उपन्यास

मन्दिर दीप	...	७.००
हिज़ हाइनेस	...	५.००
हर हाइनेस	...	३.००
गदर	...	२.५०
रहस्यमयी	...	२.५०
सत्याग्रह	...	२.००
राजकुमार भोज	...	१.००
कंठहार	...	८.००
वह कौन थी	...	५.००
षड्यन्त्रकारी	...	३.००
अफीम का अड्डा	...	२.००

आने वाले प्रकाशन

१.	यशपाल :	लेनिन और गांधी	१०.००
२.	टॉल्स्टॉय :	डायरी	१०.००
३.	ड्यूमा :	विफल-विद्रोह	१०.००
४.	ऋषभचरण जैन :	मयख़ाना	३.००
५.	,, :	चम्पाकली	३.००
६.	,, :	कहानी भाग १	३.००

अन्य प्रकाशन

तपोभूमि	जैनेन्द्र कुमार	५.००
अमर अभिलाषा	चतुरसेन	५.००
परीक्षा गुरु	श्रीनिवास दास	६.२५
तलाक़	प्रफुल्लचन्द्र ओझा	४.००
चारुलता	योगेश गुप्त	३.००
वसंत मञ्जरी	तुर्गनेव	३.५०
नया मनुष्य	श्यामू सन्यासी	७.५०
गीताञ्जली	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	२.००
अपनी दुनिया	,, ,,	२.००
महापाप	टॉल्स्टॉय	२.००
देवदूत	,,	२.००

हिन्दी की सब प्रकार की पुस्तकों के लिए हमें लिखें :

ज्ञान प्रकाशन

२१ दरियागंज, दिल्ली

विविध—(खण्ड ५)

कोकचा, हरनारायण	कुशल चिकित्सा	चिकित्सा	—	दिल्ली, देहाती पुस्तक भण्डार	५.०
कोकचा, हरनारायण	नपुंसक चिकित्सा	"	—	दिल्ली, देहाती पुस्तक भण्डार	६.००
गुप्ता, कालीचरण	गाइड आफ इण्डस्ट्री	तकनीकि	—	दिल्ली देहाती पुस्तक भण्डार	८.२५
गुप्ता, श्रीकृष्ण	चित्रपट की परियाँ	कला	—	दिल्ली, देहाती पुस्तक भण्डार	४.५०
गुप्ता, श्रीकृष्ण	फिल्म एक्टिंग गाइड	कला	—	दिल्ली, देहाती पुस्तक भण्डार	४.५०
जगन्नाथ	लोक परलोक सुधार	धर्म	—	दिल्ली, देहाती पुस्तक भण्डार	१.२५
जगन्नाथ	सप्तवार व्रत कथा भाषा	"	—	दिल्ली, देहाती पुस्तक भण्डार	१.२५
जीवाराम	ब्रह्म ज्ञान भक्ति प्रकाश	"	—	दिल्ली, देहाती पुस्तक भण्डार	३.००
ठाकुर, सुखरावदास	श्रीहनुमान जीवन चरित्र	"	—	दिल्ली, देहाती पुस्तक भण्डार	४.५०
द्विवेदी, रामकुमार	सूचीवेध विज्ञान	चिकित्सा	—	वाराणसी, चौखम्भा	२.५०
मोहनलाल	बड़ा भक्ति सागर	धर्म	—	दिल्ली, देहाती पुस्तक भण्डार	४.५०
रामकृष्णदास	कृष्ण उपासना	धर्म	—	दिल्ली, देहाती पुस्तक भण्डार	४.००
रामकृष्णदास	राम उपासना	धर्म	—	दिल्ली, देहाती पुस्तक भण्डार	४.५०
विजय, आर० सी०	ट्रांजिस्टर गाइड	तकनीकि	—	दिल्ली, देहाती पुस्तक भण्डार	२२.५०
शर्मा, कृष्णानन्द	मोटर मैकेनिक टीचर	"	—	दिल्ली, देहाती पुस्तक भण्डार	६.००
शरण प्रसाद	उपवास	चिकित्सा	—	वाराणसी, सर्व सेवा संघ प्रकाशन राजघाट	१.२५
सहगल, ललित	कागज की दीवार	प्रहसन	—	दिल्ली, आर्य बुक डिपो	३.००
हरिश्चन्द्र विद्यालंकार	सामवेद (गुटका)	धर्म	—	दिल्ली, देहाती पुस्तक भण्डार	४.००
हुक्म चन्द	शर्बत विज्ञान	उद्योग	—	दिल्ली, देहाती पुस्तक भण्डार	२.५०

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के निमित्त, प्रधानमंत्री कन्हैयालाल मलिक द्वारा सम्पादित, उद्योगशाला प्रेस, किंग्सवे, दिल्ली-९ में मुद्रित एवं २६-ए, चन्द्रलोक जवाहरनगर, दिल्ली से प्रकाशित

रजिस्टर्ड नं० डी० 1318

हि प्र

हिन्दी प्रचारक

* हिन्दी पुस्तक-व्यवसाय का मुख-पत्र *

हिन्दी कोश परंपरा में एक अन्यतम प्रयास

• डॉ. बद्रीनाथ कपूर द्वारा संपादित वैज्ञानिक परिभाषा कोश मैंने देखा है। कार्य स्तुत्य है। अभी तक जो पारिभाषिक कोश हमारे देखने में आये हैं वे प्रायः अंग्रेजी हिन्दी क्रम में दिये गये हैं और केवल शब्दावलियों के रूप में हैं। वैज्ञानिक परिभाषा कोश को हिन्दी अंग्रेजी क्रम सव्याख्या देकर डॉ० कपूर ने एक वास्तविक कमी की पूर्ति कर दी है।

—डॉ० ब्रजमोहन

वैज्ञानिक परिभाषा कोश

सम्पादक—बद्रीनाथ कपूर

अर्थशास्त्र, विधिशास्त्र, भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र, दर्शनशास्त्र, साहित्यशास्त्र, राजनीति शास्त्र, जीव-विज्ञान, प्राणि-विज्ञान, भूमि-विज्ञान, भूगोल, वाणिज्य आदि में प्रयुक्त होनेवाले शब्दों का इस कोश में संकलन हुआ है और उनकी मान्य परिभाषाएँ इसमें दी गयी हैं।

आकार: डिमाई; पृ. सं. लगभग ३७५; मोनो-टाइप में मुद्रित एवं आकर्षक साज-सज्जा से युक्त पुस्तक का मूल्य १०)



हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

वाराणसी—१

भू-रूप विज्ञान एवं भू-स्वरूप विधान



लेखक

प्रो. प्रताप सिंह, एम. ए.

अध्यक्ष : भूगोल-विभाग

रामदयालु सिंह कॉलेज, मुजफ्फरपुर

सकाय-सदस्य कला

चेयरमैन, भूगोल बोर्ड, बिहार विश्वविद्यालय

आकार : डिमाई   मूल्य : १०·००



उपरोक्त भौतिक भूगोल के सिद्धान्त एवं भूस्वरूप विधान नामक पुस्तक भारतीय विश्वविद्यालयों के स्नातक वर्ग के विद्यार्थियों के हेतु लिखी गई है। प्रायः सभी विश्वविद्यालयों के पाठ्य-क्रमों को ध्यान में रखकर भौतिक भूगोल के सिद्धान्तों तथा स्थलाकृतियों के क्रमिक विकासों की विवेचना की गई है। हमारी पृथ्वी सौर-मंडल की सदस्या है अतः ब्रह्माण्ड के रहस्य तथा सौर-प्रबन्ध के ढांचे पर सम्यक् प्रकाश डाला है। महाविश्व की उत्पत्ति पर प्राचीनतम कान्ट इत्यादि के मतों से वर्तमान सर्वमान्य श्री ओटोस्मिड तक के विचार सुबोधगम्य भाषा में वर्णित हैं। पृथ्वी के अन्तराल की अवस्थाओं का सांगोपांग विवेचन है। महासागर एवं महाद्वीपों की उत्पत्ति से सम्बन्धित सभी सिद्धान्तों का आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। सन्तुलन के सिद्धान्त, महादेशीय अपसरण के सिद्धान्त एवं पर्वत निर्माण आदि के सभी सिद्धान्तों का समावेश बड़ी कुशलता से किया गया है। भूगर्भिक अवधियों के विवरण में भारतीय एवं यूरोपीय अवधियों एवं कालों का समावेश है। भूपटल संचलनों तथा भूकम्पनों के रहस्यों का उद्‌घाटन वैज्ञानिक पद्धति पर किया गया है। शिलाओं के भौगोलिक अध्ययन तथा उन पर हुए मौसमीकरण द्वारा उत्पन्न स्थलाकृतियों एवं भूआकृति तत्वों को चित्रों, मानचित्रों एवं रेखाचित्रों द्वारा स्पष्ट किया गया है। नदियों के कार्य, सामुद्रिक मैदानों के क्रमिक विकास, आवरणक्षय-चक्र एवं नदी संक्षरित तराई के विकास के विश्लेषण में भी अनुभवी लेखक ने बड़ी दक्षता का परिचय दिया है।

पातालजल, चूनापत्थर, मरुभूमि, ज्वालामुखी तथा गलेश्वरीकरण द्वारा उत्पन्न भूदृश्य को, सरल भाषा में तथा उपयुक्त चित्रों एवं रेखाचित्रों द्वारा प्रतिपादित किया गया है।

सामुद्रिक तलहटियों तथा तट-रेखा एवं प्रवाल और वृत्ताकार प्रणाली इत्यादि के विवरण भी रक्खे गये हैं और सारे कई विषयों पर लेखक ने प्रकाश डाले हैं। आशा है, आप सभी प्राध्यापकगण स्वागत करेंगे।



हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

पो॰ बॉ॰ नं॰ ७०. सी॰ २१/३० पिशाचमोचन, वाराणसी-१

हिन्दी प्रचारक

वर्ष : १३ अंक : ६

[मासिक]

मूल्य

सम्पादक
श्रीकृष्णचन्द्र बेरी

सितम्बर : १९६५

वार्षिक : ३.००
एक प्रति २५ पैसे

प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता कर्त्तव्य निर्वाह करें

कश्मीर पर पाकिस्तान के आक्रमण के परिणामस्वरूप आज युद्ध की विभीषिका भारत में पंजाब तक विस्तृत होती जा रही है। आक्रामक पाकिस्तान के विरुद्ध सारा राष्ट्र प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री और भारत सरकार के पीछे है। लड़ाई के मोर्चों से लेकर घरेलू व्यवस्था के मोर्चों तक सक्रियता व्याप्त है और देश का प्रत्येक नागरिक अपने कर्त्तव्य-निर्वाह के लिए सन्नद्ध दीखता है। इस सन्दर्भ में प्रकाशकों तथा पुस्तक-विक्रेताओं की भूमिका भी महत्वपूर्ण होना आवश्यक है। जनता में आत्मबल और उत्साह की भावना उत्पन्न करने में हमारा वर्ग काफी सहयोग दे सकता है। पुस्तक-विक्रय की प्रत्येक यूनिट प्रचार के एक मोर्चे का काम दे सकती है। इस सम्बन्ध में हमारे निम्न सुझाव हैं : (१) प्रकाशक प्रदेश के प्रचार-विभाग से सम्पर्क स्थापित करें और छोटे-छोटे सरकारी पैम्फलेट यथाशक्ति निःशुल्क प्रकाशित कर अपने से सम्बद्ध पुस्तक-विक्रेताओं को जन-साधारण में वितरित करने को भेजें। (२) पुस्तक-विक्रय केन्द्रों पर रोजमर्रा की ताजी खबरें साइन-बोर्डों पर लिख कर लगायी जायें। (३) आस-पास के फौजी दफ्तरों को नयी या पुरानी पुस्तकें एकत्र कर जवानों को पढ़ने के लिए पहुँचायी जायें। (४) रेड-क्रॉस से सम्पर्क स्थापित कर घायलों के अस्पतालों में पुस्तकें निःशुल्क भेजने का दायित्व प्रकाशक संघ ले। (५) साहित्यिक सूझ-बूझ वाले प्रकाशक तथा विक्रेता उन सभाओं और गोष्ठियों में भाग लें, जिनमें जनमत को देश की रक्षा के लिए जाग्रत किया जा रहा हो। (६) खर्चों में मितव्ययिता की जाय और जो धन जुटे, उसे सुरक्षा कोष में दिया जाय। (७) जन-चेतना को उद्बुद्ध करनेवाला साहित्य प्रकाशित किया जाय तथा कम-से-कम मूल्य पर अथवा निःशुल्क वितरित किया जाय।

हमें आशा है कि पुस्तक-जगत से सम्बन्धित प्रत्येक व्यक्ति और संस्थान देश के इस आपद्-काल में अपने कर्त्तव्य के निर्वाह में पीछे नहीं रहेगा।

आज की स्थिति में साहित्यकार का कर्तव्य

❖ लालधर त्रिपाठी 'प्रवासी'

प्राचीन भारतीय परम्परा के अनुसार पूज्यों में प्रथम स्थानीया माता होती है और उसके समानान्तर ही स्थान होता है जन्मभूमि का। जिसकी धरती पर हम जन्म लेते हैं, जिसकी वायु हमें प्राण देती है, जिसका जल जीवन प्रदान करता है, जिसका आकाश हमें वाणी देता है और जिस पर निवसित मानव-समाज हमें संस्कृति और सभ्यता का उपहार प्रदान करके क्षमा, दया, करुणा, मैत्री, आत्मोत्सर्ग, पर-दुःख-कातरता आदि सात्त्विक भावनाओं का हमारे अन्तःकरण में संचार करता है, वह देश हमारा आत्म-सर्वस्व होता है। इसी को हम जन्मभूमि कहते हैं। विश्व के आदिम-साहित्य वेद भी राष्ट्र के सामूहिक अभ्युत्थान की कामना करते हैं और राष्ट्र-रक्षण को सब का प्रधान कर्तव्य घोषित करते हैं। इसका उज्ज्वल आदर्श हमारा गौरवपूर्ण प्राचीन इतिहास पग-पग पर प्रस्तुत करता है। दैव-दुर्विपाक से पारस्परिक फूट,—गृह-कलह के कारण लम्बी अवधि तक हमारे देश को पराधीन रहना पड़ा, यद्यपि पराधीनता के पाश से मुक्त होने का संघर्ष उद्बुद्ध मनीषियों द्वारा बौद्धिक और शारीरिक (सशक्तिक) रूप में निरन्तर चलता रहा। परिणामस्वरूप हमने छल-छद्म-युक्त विदेशी शासन की शृंखला तोड़ फेंकी, हमें अपनी धरती मिली, अपना आकाश मिला, स्वदेश के पवन ने अपनी बाहुओं को फैलाकर हमें गले लगाया। इस प्रकार हमें अपना स्वत्व प्राप्त हुआ। देश स्वाधीन तो हुआ किन्तु अभिशापस्वरूप पाकिस्तान को अपने साथ लेता आया। स्वाधीनता के प्राप्ति-काल से ही पाकिस्तान हमारे साथ कोई-न-कोई खुराफात पैदा करता रहा और भारत बराबर उसके निन्द्य कर्मों को उपेक्षा की दृष्टि से देखकर टालता रहा। भारत के नेतृ-वर्ग ने पाकिस्तान का अहित कभी नहीं चाहा, परिणाम जो होना था वह आज हम सबके सामने है। भारत के एक प्रमुख अंग कश्मीर पर उसने सशस्त्र आक्रमण कर दिया। सहनशक्ति की भी एक सीमा होती है। रगड़ने पर चन्दन भी चिनगारियाँ उगलने लगता है। भारत के नेता अन्त में यह सोचने को विवश हो गए कि 'कतहुँ सुधाइहुँ ते बड़ दोषू!' अपरिमेय शक्तिशाली भारतीय सैन्य को भारत का परम्परागत मंत्र याद आया—

जो रन हमहिं प्रचारै कोऊ। लरहिं सुखेन काल किन होऊ॥

आज भारत की विजय-वाहिनी शत्रु-सेना को रौंदती दृढ़ता के साथ आगे बढ़ रही है। देश के सभी वर्गों में नव-जागरण आ गया है, सबके हृदय में उत्साह लहरें मार रहा है। ऐसी स्थिति में देश के साहित्यकारों पर भी

बहुत बड़ा और महत्त्वपूर्ण दायित्व आ गया है। केवल सेना ही नहीं, साहित्यकार भी स्वदेश का सजग प्रहरी होता है। वह काल की गति को देखकर तदनुकूल क़दम उठाने की प्रेरणा का संचार जनता में करता है। साहित्य की शक्ति विश्व-विदित है। वह समुचित दिङ्-निर्देश करके शक्ति के सद्व्यय की राह दिखाता और उसके अपव्यय का मार्गविरोध करता है। आदिकाल से भारत के कवियों ने शासकों को देश-रक्षा के लिए उत्प्रेरित किया, परम्परागत संस्कृति और महान् आदर्शों के परित्राण की भावना जगाई है। महाकवि भास, कविगुरु कालिदास से लेकर चंद-बरदाई, गोस्वामी तुलसीदास, भूषण, लाल और सूदन से होते हुए महाकवि जयशंकर प्रसाद तथा महाकवि निराला तक की वाणी ने देश के लिए सर्वस्व-समर्पण की प्रेरणा देश-वासियों को दी है। कवि, नाटककार, कहानीकार, उपन्यासकार चाहे कोई भी साहित्यकार हो, आज सबको मातृभूमि के प्रति अपनी प्रतिभा का विनियोग करना होगा। आज अनित्यशरीर का मोह त्याग कर अमर यशःशरीर प्राप्त करने के लिए सब को संगठित और जागरित करें।

आज प्रतिदिन नगरों के विभिन्न स्थानों पर, गाँवों में, स्टेशनों पर साहित्यिक राष्ट्रीय आयोजन होने चाहिएँ, जिनमें स्थानीय साहित्यकार अपनी शक्ति-संचारिणी वाणी द्वारा लोगों में मोहन-मंत्र फूँकें। प्रत्येक नगर और प्रत्येक गाँव को दुर्ग में परिणत करने की शक्ति साहित्यकारों में है। सभी भारतवासी भाई-भाई हैं, सबके उत्कर्ष में सबका उत्कर्ष है, सब को कंधे-से-कंधा मिलाकर चलने में ही गंतव्य की प्राप्ति संभव है। यदि हमारा पारस्परिक भ्रातृ-भाव सुरक्षित रहेगा तो बर्बर से बर्बर शत्रु को भी हमारे समक्ष पराजय प्राप्त होगी। आज धर्म, संप्रदाय, पेशा आदि की विभिन्नता को भूल कर सब को एक ही माला के फूल बनना होगा, एक ही हार के मोती बनना होगा, एक ही आकाश के तारे और एक ही सिंधु की तरंगें बनना होगा। अनेकता में एकता की दृष्टि विशुद्ध भारतीय दृष्टि है। माला से विद्रोह करनेवाले फूल को पद-दलित होना होगा, और आकाश का साथ छोड़नेवाले तारे को अपना अस्तित्व गँवा देना होगा, इसे किसी को भी भुलाना नहीं चाहिए।

यदि साहित्यकार आज अपने समयोचित कर्तव्य से पराङ्मुख होगा तो उसे साहित्यकार कहने या मानने से जमाना कतरा जायगा और वह सबकी घृणा का पात्र हो जायगा। साहित्यकार पत्रों और पत्रिकाओं में वैसी कृतियाँ दें, जो आज की विकट समस्या को सुलझाने और संकट को दूर करने में सहायक हों। सभी साहित्यकारों को यह स्मरण रखना होगा कि हम इस धरती के ही प्राणी हैं, आकाश हमें हमेशा के लिए शरण नहीं दे सकता। ✤

अपरिहार्य, अप्रतिम और मौलिक

शोध-प्रबन्ध

जुलाई '६५ के नवीन प्रकाशन

१. प्रसाद की दार्शनिक चेतना : डॉ. चक्रवर्ती २५.००

२. संत-साहित्य : डॉ. प्रेमनारायण शुक्ल २०.००

३. हिन्दी कहानी की रचना-प्रक्रिया : डा. परमानन्द श्रीवास्तव १२.५०

अन्य प्रकाशन

४. मलिक मुहम्मद जायसी और उनका काव्य : डॉ. शिवसहाय पाठक १८.००

५. आधुनिक हिन्दी कविता में ध्वनि : डॉ. कृष्णलाल शर्मा १५.००

६. छायावाद : काव्य तथा दर्शन : डॉ. हरनारायण सिंह १५.००

७. प्रगतिवादी समीक्षा : श्रीरामप्रसाद त्रिवेदी १०.००

उच्चकोटि की विषय-विवेचना : आकर्षक रूपसज्जा

कलात्मक मुद्रण

प्रकाशक :



ग्रन्थम

[उच्चकोटि के शोध-प्रबन्धों के प्रकाशक]

१०४ए/२१५, रामबाग, कानपुर

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ
के
कार्य समिति का विवरण

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ की १९६५-६६ सत्र की प्रथम कार्य-समिति की बैठक दिनांक १७-८-६५ को सायंकाल ३-३० बजे संघ कार्यालय चन्द्रलोक, जवाहर नगर में संघ के अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में निम्नांकित सदस्यों ने भाग लिया :—

१. श्री रामलाल पुरी
२. श्री वाचस्पति पाठक
३. श्री देवनारायण द्विवेदी
४. श्री कन्हैयालाल मलिक
५. श्री ओम प्रकाश
६. श्री रघुवीर शरण बंसल
७. श्री दिग्दर्शन लाल जैन
८. श्री दयानन्द वर्मा
९. श्री नर्मदेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी (विशेष आमन्त्रित)
१०. श्री चम्पा लाल राँका (विशेष आमन्त्रित)

सर्व-प्रथम नये सदस्यों के प्रवेश-पत्रों पर विचार किया गया और सर्वसम्मति से राधाकृष्ण प्रकाशन, रूपनगर दिल्ली तथा यंग मैन एण्ड कम्पनी, नई सड़क, दिल्ली को अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का सदस्य स्वीकार किया गया।

कार्य समिति ने कार्यालय द्वारा प्रेषित पत्र दिनांक १७-७-६५ पर विचार किया और यह सर्व-सम्मति से निर्णय हुआ कि श्री ओमप्रकाश जी ही अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के अध्यक्ष बने रहें। संघ के प्रारम्भ के सदस्यों ने ऐसी स्थिति में पूर्व की पुरानी परम्परा का भी उल्लेख किया। संघ के सामान्य सदस्यों का बहुमत भी इसी पक्ष में था।

कार्य-समिति ने निर्णय किया कि जहाँ प्रान्तीय स्तर पर पुस्तक-विक्रेताओं के संघ बन गये हैं उन संघों के अधिकारियों से पत्र-व्यवहार कर उनके द्वारा मनोनीत व्यक्ति को, जो संघ के विधान में दी गई व्याख्या के अनुसार पुस्तक-विक्रेता अवश्य हो, कार्य-समिति में लिया जाये। इस वर्ष बिहार तथा राजस्थान में प्रान्तीय स्तर पर संघ की स्थापना हो गई है, अतः प्रथम वहाँ से दो प्रतिनिधि लिये जायें, शेष तीन स्थानों के लिए अग्रांकित व्यक्ति कार्य-समिति में लिये गए :—

१. श्री सोहन लाल भार्गव, लखनऊ
२. ठाकुर अयोध्या सिंह, कलकत्ता
३. श्री गोकुल दास धूत, इन्दौर

कार्य-समिति ने निर्णय किया कि पुस्तक प्रकाशन एवं वितरण प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन इसी वर्ष के नवम्बर अथवा दिसम्बर मास में यदि संभव हो तो किया जाये। इसके लिए एक उप-समिति गठित की गई। जो सरकारी अथवा यूनेस्को से अनुवाद मिलने पर इसका आयोजन करे, तथा इस योजना की रूपरेखा संघ की आगामी कार्य समिति में प्रस्तुत करे। उप-समिति में निम्नांकित व्यक्ति मनोनीत किये गये :—

१. श्री रामलाल पुरी
२. श्री दीनानाथ मलहोत्रा
३. श्री रघुबीर शरण बंशल
४-५. अध्यक्ष एवं प्रधानमंत्री (पदेन)

निर्णय किया गया कि हिन्दी क्षेत्र के पुस्तकालयों की, विश्वविद्यालयों के प्राध्यापकों एवं अन्य सन्दर्भ-सूचियों के प्रकाशन के विषय में एक उप-समिति का गठन किया जाए, जो केन्द्रीय सरकार से अनुदान प्राप्ति के पश्चात इनका प्रकाशन करे। इन सूचियों के विषय में उप-समिति अपनी योजना कार्य-समिति में प्रस्तुत करे। उप-समिति के लिए निम्नांकित सदस्य मनोनीत किये गये :—

१. श्री दयानन्द वर्मा
२. श्री रघुवीर शरण बंशल
३-४. अध्यक्ष एवं प्रधान मन्त्री (पदेन)

राष्ट्रीय-पुस्तक-समारोह के विषय में कार्य-समिति ने निर्णय किया कि इस अवसर पर संघ कार्यालय एक विशेष प्रकार का 'बुक मार्क' का रेखाचित्र तैयार कराये। इस रेखाचित्र के ब्लाक अथवा 'बुक मार्क' को छाप कर लागत मूल्य पर सदस्यों को बेच दिया जाय। संघ कार्यालय इस अवसर पर गत वर्ष की भाँति पुस्तक-प्रकाशन एवं विवरण विषय पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन करे। एक आकर्षक पोस्टर का भी प्रकाशन करे। संघ की कार्य-समिति ने इस कार्य के लिए प्रधान मन्त्री को ५०० रु० व्यय करने की अनुमति दी है।

एक सफल और सार्थक प्रकाशन-संस्था

परिमल प्रकाशन

१६४, सोहबतियाबाग, इलाहाबाद—६

के

इस मास के सात नये प्रकाशन

अक्तूबर तक प्राप्त नकद आर्डरों पर विशेष कमीशन

फूलों की सुगन्ध : काँटों की चुभन

डा. कंचनलता सब्बरवाल

हिन्दी की सुप्रसिद्ध उपन्यास लेखिका डॉ. कंचनलता सब्बरवाल का नवीनतम उपन्यास जिसमें रूमानी युवक-युवतियों के सहज भावोद्वेलन की एक मार्मिक कथा का रोचक अंकन हुआ है। मूल्य : ८.००

अकेली आकृतियाँ

प्रयाग शुक्ल

यह हिन्दी के महत्वपूर्ण कवि और कहानीकार श्री शुक्ल जी की कहानियों का पहला प्रकाशित संकलन है। मूल्य : ३.५०

अमर क्रान्तिकारी

उदयनारायण सिंह

बहुज्ञ और अनुभवी पत्रकार श्री सिंह द्वारा लिखित भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम के २६ क्रान्तिकारी सेनानियों की सचित्र प्रामाणिक और ओजस्वी जीवनी।

मूल्य : ४.००

रंगमंच

ज्ञानकुमारी अजीत

प्रयाण-गीतों, समवेत गीतों, गीत संवादों से भरा हुआ तथा अनेकधा अभिनीत सात बाल-नाट्यों का संग्रह। मूल्य : २.००

फूल नहीं रंग बोलते हैं

केदारनाथ अग्रवाल

नयी हिन्दी कविता के इस महान सर्जक और शिल्पी का पहला प्रकाशित काव्य संकलन। परिमल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित यह बहुप्रतीक्षित संकलन श्री अग्रवाल की कविताओं का महत्वपूर्ण प्रतिनिधि संकलन भी है। इसमें उनकी सामाजिक विद्रोह-भरी कविताएँ, प्राकृतिक सौन्दर्य से प्रेरित ललित गीत, चार-चार छह-छह पंक्तियों की छोटी कविताएँ और अधिक सूक्ष्म संवेदना वाली बाद की कविताएँ, सभी संकलित हैं। मूल्य : ४.००

बंधन के सेतु

प्रवासी

व्यंग्य लेखक प्रवासी जी की यथार्थभेदिनी दृष्टि उनके कवि से संपृक्त होकर इस संग्रह में एक नये आयाम में प्रस्फुटित हो उठी है। मूल्य : ३.००

दिनकर : एक पुनर्मूल्यांकन

प्रो. विजेन्द्रनारायण सिंह

दिनकर के सम्पूर्ण काव्य और गद्य साहित्य पर पक्ष या विपक्ष के आग्रहों से मुक्त पहला तलगामी आलोचना-ग्रन्थ। यह पुस्तक विद्यार्थियों के लिए जितनी उपयोगी है, उतना ही साहित्य के मर्मज्ञ पाठकों के लिए भी पठनीय है। मूल्य ४.००

इसी के साथ यह भी निर्णय किया गया कि भारत के विभिन्न नगरों में शिक्षाधिकारियों से मिलकर पुस्तक सम्बन्धी विषयों पर वाद-विवाद-प्रतियोगिता का आयोजन किया जाये। विभिन्न नगरों में देने के लिए शील्ड-ट्राफियाँ अथवा पुरस्कार योग्य पुस्तकें संघ के सदस्यों द्वारा दान में ले ली जायँ।

कार्य-समिति ने श्री वाचस्पति पाठक द्वारा प्रस्तावित एवं श्री दिग्दर्शन लाल जैन द्वारा अनुमोदित निम्नलिखित प्रस्ताव को सर्व-सम्मति से स्वीकार किया और यह निश्चय किया गया कि यह प्रस्ताव विश्वविद्यालयों के अधिकारियों के पास कार्यालय से शीघ्र ही भेज दिया जाये।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ की कार्य-समिति विश्वविद्यालयों के उपकुलपतियों तथा कर्म सचिवों से अनुरोध करती है कि पाठ्य-पुस्तकों के रूप में प्रकाशित किये जाने वाले संग्रहों को वे सम्बधित कापी राइट अधिकारों को, चाहे वे लेखक के पास सुरक्षित हों अथवा प्रकाशक के प्राप्त किये बिना प्रकाशित न किया करें। यदि पाठ्य-पुस्तकों को निर्धारित करने वाले अधिकारियों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया जाय, कि किसी विशिष्ट संग्रह में, जो पाठ्य-पुस्तक के रूप में पाठ्य-पुस्तक स्वीकृत है, कापी राइट अधिकारों का उल्लंघन हो रहा है तो उस पुस्तक को पाठ्य-पुस्तक सूची से निकाल दिया जाना चाहिए।

कार्य-समिति ने प्रधानमन्त्री द्वारा प्रस्तुत संघ की आर्थिक स्थिति पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया और निश्चय किया गया कि संघ की सामान्य सदस्यता बढ़ायी जाए, और हिन्दी प्रकाशक को विज्ञापन दे कर तथा ग्राहक बनकर आर्थिक बल दिया जाए।

कार्य-समिति ने निर्णय किया कि शिक्षा विषयक पुस्तकों की सूची का प्रकाशन गत वर्ष में होना था, स्थगित किया जाए और इसके मद्द में जो शुल्क अथवा विज्ञापन के लिए धन प्राप्त हो चुका है, उसे वापिस कर दिया जाए।

कार्य-समिति ने श्री पुरुषोत्तम दास मोदी द्वारा भेजे गये सुझाव पर विचार किया और यह निश्चय किया कि संघ का कार्यालय हिन्दी के पुस्तक-विक्रेताओं की तथा पुस्तकालयों की साइक्लोस्टाइल्ज सूचियाँ तैयार करे, जो एक ओर ही अंकित हो। ऐसी सूचियाँ केवल संघ के सदस्यों को लागत मूल्य पर बेची जायँ। सूची तैयार करने के लिए एक उप-समिति का गठन हुआ, जिसमें निम्नांकित सदस्यों को मनोनीत किया गया :—

१. श्री दिग्दर्शन लाल जैन,

२. श्री रघुवीर शरण बंसल

३-४. अध्यक्ष एवं प्रधानमन्त्री (पदेन)

कार्य-समिति के अनुरोध पर श्री दयानन्द वर्मा द्वारा अपना त्याग-पत्र वापिस लेने पर कार्य-समिति ने हर्ष प्रकट किया।

सभापति को धन्यवाद देने के पश्चात कार्रवाई समाप्त की गई। ***

श्रीरामकृष्ण-विवेकानन्द साहित्य

श्री रामकृष्ण लीला प्रसंग—स्वामी सारदानन्दकृत सुविस्तृत मूल बंगला जीवनी से अनुवादित
प्र. ख. ६.००; द्वि. ख. १०.००; तृ. ख. ७.००

श्रीरामकृष्णलीलामृत—(जीवन चरित्र)
प्रथम भाग ५.०० द्वितीय भाग ५.००

श्रीरामकृष्णवचनामृत—'म' कृत; श्रीरामकृष्णदेव के अमृतमय उपदेशों का अपूर्व संग्रह;
प्र. भा. ६.५०; द्वि. भा. ६.५०; तृ. भा. ७.००

श्रीरामकृष्ण उपदेश— स्वामी ब्रह्मानन्द द्वारा संकलित, (पॉकेट साइज) १.००

माँ सारदा—श्रीरामकृष्णदेव की लीलासहधर्मिणी की विस्तृत जीवनी, स्वामी अपूर्वानन्दकृत ४.५०

श्रीरामकृष्ण और श्री माँ—स्वामी अपूर्वानन्द ३.४०

विवेकानन्द चरित—सत्येन्द्रनाथ मजुमदारकृत ६.००

साधु नागमहाशय—श्रीरामकृष्णदेव के अन्तरंग गृही शिष्य का जीवन चरित १.५०

धर्म-प्रसंग में स्वामी शिवानन्द—श्रीरामकृष्णदेव के अन्तरंग शिष्य द्वारा धर्म के गूढ़ तत्वों पर वार्तालाप ५.००

भगवान रामकृष्ण, धर्म तथा संघ १.५०

रामकृष्ण-संघ—आदर्श और इतिहास—
स्वामी तेजसानन्दकृत (पाकेट साइज) ०.७५

स्वामी विवेकानन्दकृत योग सम्बन्धी

विख्यात पुस्तकें

राजयोग (पातंजल योग सूत्र, सूत्रार्थ और व्याख्यासहित) ३.४०
ज्ञानयोग ३.५० कर्मयोग १.७५
भक्तियोग १.५० प्रेमयोग २.००
सरल राजयोग ०.६० ज्ञानयोग पर प्रवचन ०.६०

स्वामी विवेकानन्दजी की अन्य लोकप्रिय पुस्तकें

विवेकानन्द संचयन—विवेकानन्द जी की बृहत् साहित्य सामग्री से चुने हुए महत्वपूर्ण व्याख्यान, लेख, पत्र, कविताओं आदि का प्रातिनिधिक संचयन ७.५०

भारत में विवेकानन्द (भारतीय व्याख्यान) ५.००

पत्रावली (धर्म, दर्शन, शिक्षा, समाज, राष्ट्रोन्नति इत्यादि सम्बन्धी स्फूर्तिदायक पत्र) प्र. भा. ५.२५
द्वितीय भाग ४.२५

विवेकानन्द जी के संग में ५.२५
देववाणी (उच्च आध्यात्मिक उपदेश) २.७५
स्वामी विवेकानन्दजी से वार्तालाप २.१५
विवेकानन्दजी की कथाएँ १.७५
भगवान श्रीकृष्ण और भगवद्गीता १.७०
आत्मानुभूति तथा उसके मार्ग १.६०
महापुरुषों की जीवनगाथाएँ १.५०
स्वाधीनभारत ! जय हो ! १.५०
परिव्राजक (मेरी भ्रमण कहानी) १.५०
व्यावहारिक जीवन में वेदान्त १.५०
विवेकानन्दजी के सान्निध्य में १.३५
जाति, संस्कृति और समाजवाद १.२५
प्राच्य और पाश्चात्य १.२५
नारद-भक्ति-सूत्र एवं भक्ति विषयक प्रवचन और आख्यान १.००
धर्मतत्त्व १.७०
हिन्दू धर्म के पक्ष में ०.७५
मन की शक्तियाँ तथा जीवन गठन की साधनाएँ ०.५८

वेदान्त	२.००	धर्मविज्ञान	२.००
कवितावली	१.६५	हिन्दू धर्म	१.५०
भारतीय नारी	१.३०	चिन्तनीय बातें	१.३०
धर्म रहस्य	१.२५	विविध प्रसंग	१.१२
मेरे गुरुदेव	१.००	शिक्षा	०.८५
शिकागो वक्तृता	०.६५	हमारा भारत	०.६५
पवहारी बाबा	०.६०	मरणोत्तर जीवन	०.५०
वर्तमान भारत	०.५०	ईशदूत ईशा	०.४०

पाकेट साइज पुस्तकें (स्वामी विवेकानन्दकृत)

सूक्तियाँ एवं सुभाषित १.००
विवेकानन्दजी के उद्गार ०.६५
शक्तिदायी विचार ०.६५
मेरी समर नीति ०.६५
मेरा जीवन तथा ध्येय ०.६०

श्रीरामकृष्णदेव के अन्तरंग शिष्य

स्वामी शारदानन्दकृत महत्वपूर्ण पुस्तकें

गीतातत्व २.५०
भारत में शक्तिपूजा १.२५
वेदान्त—सिद्धान्त और व्यवहार ०.५०

श्री रामकृष्ण आश्रम (प्रकाशन विभाग) धन्तोली, नागपुर-१.

पाकिस्तान के आक्रमण के संदर्भ में साहित्यकार का दायित्व

डॉ० बद्रीनाथ कपूर

युद्ध का प्रत्यक्ष सम्बन्ध तो योद्धाओं से होता ही है, पर उसका दूसरा बड़ा सम्बन्ध साहित्यकारों से होता है।

साहित्यकार और युद्ध का सम्बन्ध तीन रूपों में होता है। पहला युद्ध से पूर्व काल में, जबकि वह युद्ध की भूमिका का उपस्थापन करता है और अन्याय, आक्रमण आदि के विरोध के लिए जनमानस को उद्वेलित करता है। दूसरा युद्ध-काल में जबकि वह योद्धाओं को उनकी परम्पराओं, मर्यादाओं का स्मरण कराते हुए उनमें अदम्य उत्साह और शक्ति का संचार करता है। और तीसरा युद्ध की समाप्ति पर जब कि वह मार्गदर्शक और इतिहास-वेत्ता के रूप में युद्ध के परिणामों का उल्लेख करता है और आनेवाली सन्तति के लिए पथप्रदर्शन करता है।

हमारा साहित्यकार निश्चय ही सदा से जागरूक रहा है। आज का साहित्यकार भी अपने को वेदव्यास, कालिदास, चंदबरदायी, विद्यापति, गुरु गोविन्द, भूषण आदि की परंपरा में मानता है। आज का साहित्यकार निश्चय ही वेदव्यास के शब्दों को सुन और सुना रहा है कि, भारतीयो तुम अपने धर्म को देख कर भी भय करने के योग्य नहीं हो क्योंकि धर्म-युद्ध से बढ़ कर दूसरा कोई कल्याणकारक कर्तव्य क्षत्रिय के लिए नहीं है।*

कालिदास के शब्दों में आज का कवि भी कह रहा है कि हमारा प्रताप इतना अधिक है कि सेना के पहुँचने से पहले ही शत्रु काँप जाते हैं और इस प्रकार आगे-आगे हमारा प्रताप चलता है और पीछे-पीछे सेना का कोलाहल सुनाई पड़ता है।† चन्दबरदायी जैसी कवि परम्परा की रणभेरी का गंभीर घोष योद्धाओं के रक्त में आज भी संचार कर रहा है—

भए सेल मेलं दुहुं मार मारं
बढ़ी संग लग्गी बजी धार धारं
सुभट्टं सुपट्टं सुरी संसमेकं
भई सेल मेलं अनी एकं एकं
परे धाइ अघ्घाइ केकेन सुद्धं
कहै अद्ध अद्धं कमद्धं कमद्धं
परे सर सम्झं उतंगं सुवारं
भ्रमै व्योम विम्मान आरंभ दारं

हमारा साहित्यकार युद्ध में तलवार लेकर उतरा है—इसके प्रमाण हैं, चंदबरदायी, विद्यापति, भूषण, गुरु गोविन्द सिंह आदि। देश की रक्षा के लिए हमारे साहित्यकार ने बलिदान होना सीखा है और अपनी बलि देकर उसने देश की रक्षा भी की है।

आज के साहित्यकार का दायित्व तो और भी बड़ा है उसे पाकिस्तानी धूर्तता और बदनीयत का परदाफाश तो

* स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते।

† प्रतापोऽग्रे ततः शब्दः परागस्तदनन्तरम्।
ययौ पश्चाद्रथादीति चतुःस्कन्धेव सा चमूः ॥

करना ही है। विश्व को यह भी बतलाना है कि हम जिन उद्देश्यों के लिए लड़ रहे हैं उनकी सिद्धि में हर राष्ट्र की सरकार का हमें योग देना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है। 'प्रजातन्त्र की ज्योति' सदा प्रकाशित रहे, हम इसलिए लड़ रहे हैं। साम्प्रदायिकता के विष से जन-जन पीड़ित न हों हम इसलिए लड़ रहे हैं। आन पर जान देने वाले वीरों की परम्परा सदा बनी रहे, हम इसलिए लड़ रहे हैं। अन्याय से कोई किसी का गला न रेतें हम इसलिए लड़ रहे हैं। हम इसलिए लड़ रहे हैं कि हमें अपनी स्वतन्त्रता और अखण्डता की रक्षा करनी है।

यह तथ्य निश्चित रूप से जन-जन तक पहुँचाने की आवश्यकता है कि हमारा शत्रु संसार के कुचक्री देशों में से एक है जिसने कभी अपने वचन का पालन नहीं किया। 'कच्छ' के मामले में उसने ब्रिटिश प्रधान मंत्री की मन्त्रणा से युद्ध-बंदी की और आगे युद्ध न करने का आश्वासन दिया परन्तु कुछ ही दिनों बाद इस आश्वासन को ताक पर रखते हुए कश्मीर पर हमला कर दिया। 'कच्छ' के मामले में ही उसने अमेरिका को आश्वासन दिया कि भारत के विरुद्ध आगे से सहायता में प्राप्त अमेरिकी शस्त्रास्त्रों का प्रयोग नहीं करेंगे लेकिन उसने कश्मीर में पुनः अमेरिकी अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग किया। उसने राष्ट्र-संघ से कहा कि कश्मीर में पाकिस्तानी नहीं बल्कि मुजाहिद लड़ रहे हैं जबकि लड़ा वह अपने सैनिकों को रहा था।

सच्चा साहित्यकार देश भक्त होता ही है वह जनजीवन का मार्गदर्शक भी होता है और जनहित का सच्चा रक्षक भी। श्यामनारायणजी पाण्डेय की ये पंक्तियाँ आज के साहित्यकार के लिए आदर्श होनी चाहिए—

अब देर न कर सज जाने दे
रण भेरी भी बज जाने दे
अरि मस्तक पर चढ़ जाने दे
हम को आगे बढ़ जाने दे

—:०:—

साहस दिखलाकर दीक्षा दो
अरि को लड़ने की शिक्षा दो
जननी को जीवन भिक्षा दो
ले लो अति वीर परीक्षा दो

—:०:—

यदि सके शत्रु को मार नहीं
तुम क्षत्रिय वीर कुमार नहीं
मेवाड़ सिंह मरदानों का
कुछ कर सकती तलवार नहीं

—:०:—

अरि सागर तो कुम्भज समझो
वैरी तरु तो दिगज समझो
आँखों में जो पट जाती वह
मुझको तूफानी रज समझो

पुस्तक परिचय

आन्ध्र भागवत परिमल

लेखक : महाकवि पोतन्ना, अनु० : श्री वाणसि राममूर्ति 'रेणु'; प्र०—आन्ध्र प्रदेश साहित्य अकादमी, हैदराबाद; आकार : डिमाई; मूल्य ५.०० मात्र।

तेलुगु के महाकवि पोतन्ना रचित 'आन्ध्र भागवतम्' अपनी सरसता के लिए तेलुगु-भाषियों में अत्यन्त समादृत काव्य है। उसके चार उपाख्यानों का अत्यन्त सरल अनुवाद प्रस्तुत करके श्री राममूर्ति 'रेणु' ने हिन्दी-भाषियों के लिए उसके रसास्वादन का द्वार उन्मुक्त कर दिया है। श्री 'रेणु' तेलुगु-भाषी होते हुए भी हिन्दी के अधिकारी विद्वान् और सफल लेखक हैं। दोनों भाषाओं पर समान अधिकार रखने के कारण ही वे इतना ललित अनुवाद देने में समर्थ हो सके हैं। भावुक बालक इस काव्य को पढ़ कर शान्त रस की धारा में अवगाहन करने लगेगा, इसमें सन्देह नहीं। तेलुगु भाषा में संस्कृत शब्दावली की अधिकता होती है। विद्वान् अनुवादक ने रूपान्तर में उस को लेकर विज्ञता का परिचय दिया है। मुक्त छंद को अपना कर उसने सूक्ष्म सूझ-बूझ का परिचय दिया है। इस ग्रन्थ के अनूदित हो जाने से राष्ट्र-भाषा-साहित्य की श्रीवृद्धि हुई है, इसे सभी सुधीजन स्वीकार करेंगे।

—**प्रवासी**

वाह बनारस (कविता संग्रह)—**लेखक** : बड़े गुरु, **प्रकाशक** : भारतीय भाषा प्रकाशन, काशी; **मूल्य** : १.२५ पै.।

श्री बड़ेगुरु की काव्यकृति 'वाह! बनारस' पढ़कर हार्दित प्रसन्नता हुई विशेषतः इसलिए कि अब इस युग में काशी की मस्ती का विवेचन, विश्लेषण, निरूपण और प्रतिपादन करनेवालों की वेग से कमी होती जा रही है। कवि महोदय ने अत्यन्त निष्ठा के साथ काशी की स्वाभाविक निर्लिप्ततापूर्ण मस्ती के सब पक्षों को भावुकता

एवं तन्मयता के साथ प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है और इस प्रयत्न में वे निश्चय ही सफल भी हुए हैं। पान, भाँग-बूटी, साफा-पानी, माँझा-मालिस, गहरेबाजी और गुरुता के वर्णन का अत्यन्त प्रौढ़ता तथा सटीकता के साथ निर्वाह किया गया है।

मैं इस प्रयास का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ। भाषा, शैली और विषय निरूपण सभी दृष्टियों से यह श्लाध्य है।

—सीताराम चतुर्वेदी

जीवन में सफलता का रहस्य—लेखक : श्री स्वामी शिवानन्द सरस्वती, प्रकाशक : योग वेदान्त फारेस्ट एकेडेमी, पो०, शिवानन्द नगर, टेहरी गढ़वाल, मूल्य ६.०० मात्र।

लेखक के शब्दों में पुस्तक में प्रत्येक व्यक्ति के लिए उन आवश्यक बातों का वर्णन किया गया है, जिनका व्यवहार कर वह अन्दर प्रथमतः शक्ति को जगा सकेगा और बाद में उस शक्ति के सहारे जीवन में निश्चित सफलता को प्राप्त कर सकेगा। पुस्तक प्रत्येक घर में संग्रणीय है।

राधाकृष्ण मूल्यांकन माला—(१) जायसी, (२) कबीर तथा (३) महादेवी, सम्पादक : क्रमशः रामपूजन तिवारी, विजयेन्द्र स्नातक तथा इन्द्रनाथ मदान, मूल्य : क्रमशः ३.७५, ६.२५ तथा ५.५०, प्रकाशक : राधाकृष्ण प्रकाशन ४-१४, रूप नगर, दिल्ली-७। यह पुस्तक-माला विद्यार्थियों के लिये हिन्दी के प्राचीन व नवीन कवियों, साहित्यिकों तथा विशिष्ट कृतियों के अध्ययन के लिये परम सहायक होगी। विद्वान अधिकारी व्यक्तियों द्वारा सम्पादित होने के कारण निश्चय ही इस पुस्तक माला का सभी क्षेत्रों में स्वागत होगा।

रात की बाँहों में—सम्पादक : प्रकाशक स्वयं, प्रकाशक उपरोक्त, मूल्य ३.५०। विभिन्न नगरों की रात की जिन्दगी को कहानियों के रूप में प्रस्तुत किया गया संभवतः यह प्रथम प्रयास है। ख्वाजा अहमद अब्बास, मोहन राकेश, कृश्नचन्दर प्रभृति कहानीकारों की कलम से लिखी हुई कहानियाँ मानव जीवन के विभिन्न रूपों पर प्रकाश डालती हैं।

श्रीनाथद्वारा दर्शन—ले० : भगवती प्रसाद देवपुरा, प्रकाशक : सत्येश पुस्तक भंडार, नाथद्वारा, मूल्य : १.७५। नाथद्वारा भारत के तीर्थ-स्थानों में से एक है। उपरोक्त पुस्तक नाथद्वारा के मन्दिरों आदि के वर्णन से सज्जित है। स्थान-स्थान पर चित्रों द्वारा बहुत ही आकर्षक बन गई है। थोड़े समय में ही पुस्तक के तीन संस्करणों का निकल जाना इसकी लोक-प्रियता का प्रतीक है। हमें आशा है कि धर्मप्रिय जनता इसका हृदय से स्वागत करेगी।

प्रिय महोदय,

अगस्त १९६५ के 'हिन्दी प्रचारक' के पृष्ठ ५ पर 'कॉलेज की पुस्तकों का हिन्दी में लेखन' शीर्षक से जो लेख प्रकाशित हुआ है, और उसमें जो विचार व्यक्त किया गया है, उससे हम सभी सहमत हैं। हिन्दी में न लिखने का सबसे बड़ा कारण यह अवश्य है कि हिन्दी पुस्तकों द्वारा लेखक यथेष्ट रूप से समाज में सम्मान नहीं पाता। किन्तु उसके साथ शोध-सम्बन्धी कार्य पर उल्लिखित विचार सत्य से परे है। उस स्थान पर मेरे विचार से इस बात का उल्लेख आवश्यक है कि जो विद्वान् विषय जानते हैं, वे हिन्दी भाषा में विचार व्यक्त करने में समर्थ नहीं हैं।

इतिहास के विषय में आप जानते ही होंगे कि श्री काशी प्रसाद जयसवाल ने सर्वप्रथम हिन्दी में लिखना आरम्भ किया। श्री गुलेरी जी एवं श्री गौरीशंकर हीराचन्द ओझा के नाम भी गर्व से लिये जा सकते हैं। श्री जयसवाल के साथ काम करनेवाले श्री राखालदास बनर्जी अथवा डॉ० मजुमदार आदि ने हिन्दी में लिखने के लिए उन्हें प्रोत्साहन भी नहीं दिया। यह सही है कि वे हिन्दी से अनभिज्ञ थे परन्तु भारत के स्वतंत्र हो जाने पर भी अंग्रेजियत का इतना बोलबाला है कि इतिहास के तथाकथित विद्वान् यह समझते हैं कि हिन्दी में कोई प्रामाणिक ग्रंथ लिखा ही नहीं जा सकता। हिन्दी-भाषा के लेखक भी राष्ट्र-भाषा से कुछ घृणा करते हैं और अपने बच्चों को कॉन्वेण्ट में पढ़ने के लिए भेजते हैं। अब तो संस्कृत तथा हिन्दी के विद्वान् भी कोट, पैंट तथा टाई पहनने में बड़प्पन समझते हैं। हिन्दी में लिखने का अर्थ यह होता है कि व्यक्ति कुछ बलिदान करे। भविष्य को ताक पर रख दे। स्थान या पद की उन्नति की ओर उदासीन हो जाय; यानी 'स्थित-प्रज्ञ' हो कर उसे हिन्दी में काम करना चाहिए। परीक्षा की कापियों से विद्वानों को कुछ पैसे अवश्य मिलते हैं, परन्तु हिन्दी में न लिखने का यह कोई कारण नहीं। यदि एक उदाहरण प्रस्तुत करूँ तो अप्रासंगिक न होगा। पटना विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति के प्राध्यापक डॉ० वासुदेव जी उपाध्याय हिन्दी के ख्याति-प्राप्त विद्वान हैं। उनकी पुस्तकें मंगला प्रसाद पारितोषिक तथा बंगाल हिन्दी-मण्डल के पुरस्कारों से पुरस्कृत हैं। पुरातत्व विषयक पुस्तकों पर नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा हीरालाल स्वर्णपदक तथा गुलेरी-पदक दिये गए हैं। उत्तर प्रदेश सरकार ने कई वार उनकी पुस्तकों पर पुरस्कार दिया है। शोधपूर्ण लेख भी पत्रों में निकलते रहते हैं। हिन्दी में लिखने की एक प्रकार से उन की प्रतिज्ञा है। पदोन्नति की लिप्सा छोड़ कर श्री उपाध्यायजी हिन्दी में काफी कार्य कर रहे हैं। यदि ऐसे ही कुछ व्यक्ति प्रतिज्ञाबद्ध हो कर हिन्दी-क्षेत्र में लग जायँ, तो कॉलेज की पुस्तकों की कमी न रहेगी। खेद तो यह है कि उत्तर प्रदेश, मध्य-प्रदेश, राजस्थान आदि हिन्दी प्रदेशों में हिन्दी की पुस्तकों का जिस रूप में सम्मान है, उन्हें पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है, वैसा बिहार में नहीं है। अंग्रेजियत को छोड़ कर, कुछ त्याग कर यदि विद्वान् हिंदी की सेवा करें, तो प्रामाणिक पुस्तकों की कमी न रहेगी।

—रामदीन त्रिवेदी

भागलपुर

सूचनाएँ एवं समाचार

नेशनल बुकट्रस्ट द्वारा पुस्तक-मेले और गोष्ठी का आयोजन

'ट्रस्ट' द्वारा इस वर्ष दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में बम्बई में एक पुस्तक-मेले का आयोजन करने का निर्णय किया गया है। यह मेला लगभग दो सप्ताह तक लगेगा। इस अवधि में देश के प्रमुख प्रकाशकों तथा पुस्तक-विक्रेताओं की एक कान्फ्रेन्स भी आयोजित की जायेगी, जिसमें पुस्तक जगत से सम्बन्धित विषयों पर विचार-विमर्श होगा। विशेष जानकारी के लिए लिखें—श्री एम. सी. पिनोचा, मंत्री नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, २३ निजामुद्दीन ईस्ट, नयी दिल्ली—१३। ***

++ ++ ++ ++ ++ ++ ++ ++ ++ ++ ++ ++ ++ ++ ++ ++ ++ ++ ++

मित्रों के लिए मेघकलश, नीर हैं हम लोग,
दुश्मनके लिए आग बुझे तीर हैं हम लोग।
ये रंग, ये कपड़े इन्हें मतभेद न समझो,
हम एक हैं सब देशकी प्राचीर हैं हम लोग।

—रामअवतार त्यागी

++ ++ ++ ++ ++ ++ ++ ++ ++ ++ ++ ++ ++ ++ ++ ++ ++ ++ ++

लेखकीय मंच

[पांडुलिपि तैयार है, प्रकाशक सम्पर्क स्थापित करें।

* **नरेन्द्रकुमार, ज्योतिषी,** अध्यापक, राजाराम हरिदीन गुप्ता, शा. उ. मा. विद्यालय, शाहपुरा (माण्डला) म. प्र.।

  चिनगारी : राष्ट्रीय कविता संग्रह

* **डॉ. रामदयालु कृष्ण शर्मा,** निकट डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, बरेली।

  १. मानवता के प्रति प्रेम और शान्ति (गद्य-काव्य)
  २. कोई क्या कहेगा (उपन्यास)
  ३. प्रेम का द्रोही (लघु उपन्यास)

* **कौशलकुमार राय,** सी. २७/७४ ए, जगतगंज, वाराणसी

  १. नगरीय समाजशास्त्र (समाजशास्त्र)
  २. भारतीय सामाजिक विचारों का इतिहास (इतिहास)

* **महावीरप्रसाद 'मुकेश',** विद्यार्थी भवन, सिरसा, पंजाब।

  १. सरल संगीत मंजूषा (संगीत)

नई

प्रचारक पॉकेट बुक्स

★ दूरान्तर	विभूतिभूषण बन्द्योपाध्याय
★ सईदा	जिया अजीमाबादी
★ शायरी की रंगीनियाँ	विजय प्रकाश
★ आकाश का राक्षस	नवलबिहारी मिश्र
★ पचास साल बाद	धर्मचन्द सरावगी
★ योगायोग	रवीन्द्रनाथ ठाकुर
★ मिसेज लाल	मनमोहन मदारिया
★ अकथ कहानी	सर्वदानन्द वर्मा
★ मौत के पंजे में	आचार्य चतुरसेन शास्त्री
★ निर्लज्ज	आरिगपूडि



प्रत्येक का मूल्य 1/-



प्रचारक पॉकेट बुक्स

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

पोस्ट बॉक्स नं. ७०, पिशाचमोचन

वाराणसी–१



1/-

जुलाई '६५ में प्रकाशित आलोचनात्मक पुस्तकें

- आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी : व्यक्ति और साहित्य—सं० : डॉ. रामाधार शर्मा
- प्रकीर्णिका—लेखक : आचार्य पं. नन्ददुलारे वाजपेयी
- आचार्य द्विवेदी और उनके संगी-साथी—लेखक : आचार्य पं. किशोरीदास वाजपेयी
- डिंगल साहित्य—लेखक : डॉ. गोवर्द्धन शर्मा



संग्रहणीय अभिनव शोध-ग्रन्थ

हिन्दी-उपन्यास की शिल्पविधि का विकास—डॉ. (श्रीमती) ओम् शुक्ल

हिन्दी निबन्ध का विकास—डॉ. ओंकारनाथ शर्मा

अज्ञेय का काव्य—सुश्री सुमन झा

हिन्दी की नई कविता—श्री वी. नारायण कुट्टी

आ० हि०-कविता में अलंकार-विधान—डॉ. जगदीशनारायण त्रिपाठी

नया हिन्दी-काव्य—डॉ. शिवकुमार मिश्र

हिन्दी की सैद्धान्तिक समीक्षा—डॉ. रामाधार शर्मा

रामचरितमानस : काव्यशास्त्रीय अनुशीलन—डॉ. राजकुमार पाण्डेय

हिन्दी-उपन्यास : समाजशास्त्रीय विवेचन—डॉ. चण्डीप्रसाद जोशी

तुलसीदास : जीवनी और विचारधारा—डॉ. राजाराम रस्तोगी

कविवर बिहारीलाल और उनका युग—डॉ. रणधीर सिन्हा

निराला का परवर्ती काव्य—श्री रमेशचन्द्र मेहरा

छायावाद : स्वरूप और व्याख्या—श्री राजेश्वरदयाल सक्सेना

प्रयोगवाद—श्री नरेन्द्रदेव वर्मा



अनुसन्धान प्रकाशन, आचार्य नगर, कानपुर : ३

(शोध-ग्रन्थों के प्रकाशक)

'हिन्दी प्रचारक' कार्यालय, सी. २१/३० पिशाचमोचन, वाराणसी–१ से श्री ओम्प्रकाश बेरी द्वारा प्रकाशित तथा
विद्यामन्दिर प्रेस (प्रा.) लि., मानमन्दिर, वाराणसी–१ में श्रीकृष्णचन्द्र बेरी द्वारा मुद्रित।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का मुखपत्र



हिन्दी प्रकाशक

वर्ष ३ अक्तूबर, १९६५ अंक ११

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष ३, अंक ११ अक्तूबर, १९६५ मूल्य, वार्षिक ३.००

सम्पादकीय

राष्ट्र की स्वतंत्रता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए जिस संघर्ष में पाकिस्तान और चीन की आक्रामक कार्यवाहियों के कारण आज हमें जूझना पड़ा है, उसमें प्रकाशक, समाज के अन्य अंशों की तरह, महत्वपूर्ण हिस्सा बँटा सकते हैं। बड़े पैमाने पर ऐसे साहित्य की आवश्यकता है जो आम जनता को अपने कर्तव्यों के प्रति सचेत करता रहे, नागरिक सुरक्षा के सही तौर-तरीके जिससे उन्हें पता लगें और जो देशवासियों को राष्ट्रीय भावना के एक-सूत्र में बँध जाने की प्रेरणा दे।

युद्ध आजकल दूर मोर्चों पर जवानों द्वारा लड़ाई की घटना-मात्र नहीं रह गया है, देश के प्रत्येक नागरिक को अपना कामकाज भली भाँति कर के और अपना दायित्व पूरी तरह से निबाह कर युद्ध में सहयोग पहुँचाना आवश्यक होता है।

संभव है कि शान्तिकाल में जिस प्रकार की और जिन विषयों की जनरल पुस्तकें बिकती रहती हैं, उनकी बिक्री इस संघर्ष काल में कुछ कम हो जाय लेकिन इन दिनों अनेक नये विषयों पर भी पुस्तकें प्रकाशित की जा सकती हैं। विविध विषयक साहित्य की माँग एकाएक छितर न जाय, इसके प्रति जागरूक रहना समाज के नेताओं तथा सरकार का कर्तव्य है। एक प्रजातंत्रीय समाज में पुस्तकों के प्रचार-प्रसार में कमी खतरे का सूचक हो सकती है। आवश्यक है कि यदि आर्थिक तंगी के कारण जन-साधारण व्यक्तिगत रूप से पुस्तकें खरीदने में समर्थ न रहे तो सब तरह की प्राप्य पुस्तकें उनके लिए पुस्तकालयों में उपलब्ध की जाएँ।

१९६२ में चीन द्वारा भारत की सीमाओं पर विश्वासघात पूर्ण आक्रमण के समय सरकार की ओर से जो मितव्ययता का आन्दोलन चला था, उसका सर्व प्रथम, दुर्भाग्यपूर्ण शिकार पुस्तकों की सार्वजनिक खरीद के लिए नियुक्त धनराशि ही हुई थी। यह बात भारतीय समाज की प्रजातंत्रीय प्रकृति के विरुद्ध पड़ती है—किसी भी प्रजातंत्र में विचारों की स्वतंत्र वाहक केवल पुस्तकें ही होती हैं; उनकी सार्वजनिक उपलब्धि अथवा उपयोग में किसी भी दशा और किसी भी रूप में बाधा का उपस्थित होना प्रजातंत्र के मूल सिद्धान्तों और उनके कार्यान्वियन पर कुठाराघात के समान ही है—ऐसा सरकार के हाथों हो, यह तो और भी दुर्भाग्य की बात है। हमें पूर्ण विश्वास है कि हमारे प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री सतर्क रहेंगे कि आज के संघर्ष की घड़ी में वैसा न होने पाएगा और पुस्तकों के प्रचार-प्रसार में सरकारी कोश का सदुपयोग न केवल यथापूर्व होता रहेगा वरन् निरन्तर बढ़ेगा।

हिन्दी राजभाषा कैसे बने

—श्री रघुवीरशरण बंसल

हमारा देश एक स्वाधीन गणराज्य है। यहाँ पर प्रत्येक समस्या का निर्णय जनता द्वारा जनतंत्रीय पद्धति से होता है। भारत की राजभाषा हिन्दी हो यह जनता ने उच्च स्वर में कहा और हमारी सरकार ने उसको सिद्धान्त रूप में स्वीकार कर लिया किन्तु उसका प्रारम्भ कब से होगा यह बात आगे के लिए छोड़ दी गई। समय की अवधि का परिणाम आज भारतवासियों के लिए कुछ विपरीत सा दिखाई देने लगा है।

'क्या हिन्दी भारत की राजभाषा होगी' ? शीर्षक से मैंने एक लेख सन् १९६३ में लिखा था जो इसी पत्र में प्रकाशित भी हुआ था। उस लेख में मैंने कहा था कि स्वाधीनता के पश्चात् जितनी अवनति हिन्दी-क्षेत्रों में हुई है उतनी किसी क्षेत्र में नहीं हुई। किसी भी भाषा को राजभाषा के रूप में जब ही प्रतिष्ठित किया जा सकता है जबकि वह उच्चतर श्रेणी की परीक्षाओं में अनिवार्य हो। राज्य अथवा केन्द्रीय सरकार की परीक्षाएँ भी आवश्यक हों। आज भारतवर्ष में कहीं-कहीं तो कक्षा ३ से अन्यथा कक्षा ६ से अंग्रेजी अनिवार्य है किन्तु हिन्दी नहीं। फिर भी हम हिन्दी को राजभाषा बनाने की बात करते हैं—यह कोरी कल्पना अथवा स्वप्न नहीं तो और क्या है?

हमारे देश में जन-आन्दोलनों की कमी नहीं है। हमारा पड़ौसी राज्य पंजाब द्विभाषी राज्य है। जहाँ पर हिन्दी तथा पंजाबी के लिए कोई न कोई आन्दोलन चलता ही रहता है। इन आन्दोलनों के कर्णधारों से कोई पूछे कि भाई क्या पंजाब में विद्यार्थी पंजाबी अथवा हिन्दी पढ़ते भी हैं। जबसे पंजाब में पंजाब विश्वविद्यालय में इन्टर-मिडियेट की परीक्षा समाप्त होकर थ्री-इयर डिग्रीकोर्स की शिक्षा प्रारम्भ हुई है उसमें एक हजार से अधिक विद्यार्थी हिन्दी नहीं लेते और ८०० से अधिक विद्यार्थी पंजाबी नहीं लेते। अंग्रेजी समस्त विद्यार्थी लेते हैं। यदि पंजाबी सूबा बना और पंजाबी उसकी राज्यभाषा बनी तब क्या ये ८०० विद्यार्थी ही जो प्रति वर्ष बी० ए० की परीक्षाएँ पंजाबी लेकर पास हो रहे हैं समस्त पंजाब का कार्य सम्हाल लेंगे और इसके विपरीत १५ हजार से अधिक छात्र जिन्होंने अंग्रेजी ली है हिन्दी अथवा पंजाबी का विरोध न करेंगे।

आज हिन्दी तथा प्रादेशिक भाषाओं का विरोध राजनैतिक स्वार्थों के आधार पर हो रहा है। इसमें जन-कल्याण की किसी भावना का प्रश्न नहीं है किन्तु आगे चलकर इसका विरोध जन-कल्याण के लिए ही होगा क्यों कि हिन्दी एवं प्रादेशिक भाषा के जानने वाले तो होंगे नहीं फिर वह किस प्रकार यह स्वीकार करेंगे कि अंग्रेजी भारत की राजभाषा तो बने नहीं अपितु हिन्दी या प्रादेशिक भाषा बने जिसके जानने वाले नहीं हैं।

प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा की प्राप्ति भी व्यावसायिक दृष्टि-कोण से ही करता है। वह सोचता है कि उसको इस विषय का पठन-पाठन करके क्या लाभ होगा। सन् १९५० के प्रारम्भ में जनता को यह विश्वास हो गया था कि हिन्दी अवश्य ही भारत की राजभाषा बनेगी और हिन्दी की शिक्षा के बिना हमारा कार्य नहीं चलेगा। इसका परिणाम यह हुआ कि पंजाब यूनीवर्सिटी के दिल्ली स्थित कैम्प कालेज के विद्यार्थियों की एम०ए० हिन्दी के छात्रों की संख्या ८०० से अधिक हो गई थी। यह संख्या २-३ वर्ष तक रही और जब यह विश्वास कम हो गया कि हिन्दी का भारत में कोई स्थान नहीं है और हिन्दी के पढ़ने से हमारी जीविका अच्छी प्रकार से नहीं चल सकती तो उन्होंने धीरे-धीरे हिन्दी का पल्ला छोड़ दिया। आज सम्पूर्ण पंजाब में १०० से अधिक (एम०ए०) हिन्दी के विद्यार्थी नहीं हैं; और ७५ से अधिक पंजाबी (एम०ए०) नहीं जब-कि अंग्रेजी के एम०ए० के विद्यार्थी २५० से अधिक हैं। आज हिन्दी के प्रथम श्रेणी में पास छात्र जो डाक्ट्रेट भी अपने परिश्रम से प्राप्त करते हैं नौकरियों के लिए भटकते फिरते हैं और कितने ही विद्यार्थियों से जब मेरा साक्षा-त्कार हुआ तब उन्होंने कहा कि देखो अमुक छात्र अंग्रेजी

एम०ए० द्वितीय श्रेणी में अथवा अमुक छात्र अंग्रेजी एम०-ए० की हाई रायल डिवीजन में पास हुआ था किन्तु वह अमुक कालेज में लैक्चरार लग गया। मैं प्रथम डिवीजन में प्रथम श्रेणी का हिन्दी एम० ए० का छात्र होकर भी नौकरी के लिए दर-दर भटक रहा हूँ। काश मैंने भावावेश में आकर हिन्दी न ली होती तो आज मेरी यह अवस्था न होती क्योंकि हिन्दी तथा अंग्रेजी की पढ़ाई में तो खर्चा एक जैसा ही था।

एक बार मेरी चर्चा इसी विषय पर हिन्दी के विद्वान् पंडित जो विश्वविद्यालय के अध्यक्ष भी हैं, से हुई। उन्होंने कहा कि "बंसल व्यर्थ की भावना में पड़ने से कोई लाभ नहीं। हिन्दी का पचड़ा छोड़कर कुछ ऐसी बात करो जिससे हित-चिन्तन हो। आज न तो हिन्दी पढ़ने वाले हैं, फिर वे पढ़ें भी क्यों? जो गरीब पढ़ भी लेते हैं उनको कोई नौकरी नहीं मिलती तो फिर हिन्दी क्यों पढ़ें। प्रथम तुम हिन्दी के एम० ए० छात्रों के लिए नौकरी की व्यवस्था करो। मेरे यहाँ से प्रतिवर्ष १००० छात्र हिन्दी के निकलते रहेंगे। जो आजकल हिन्दी में एम० ए० करते हैं उनको अपनी नौकरी के लिए पी-एच० डी० भी करनी पड़ती है फिर भी नौकरी नहीं मिलती।" वे आगे कहने लगे "तुम्हारी हिन्दी प्रकाशनों की बिक्री ही कैसी है! अगर तुमने अंग्रेजी में प्रकाशन किया होता तो उसका मार्केट सम्पूर्ण भारत एवं विश्व होता। हिन्दी के प्रकाशनों की स्थिति यह है कि आज मूर्धन्य विद्वानों की कृति का प्रथम संस्करण (११०० प्रतियाँ) चार अथवा पाँच वर्षों में समाप्त होता है।"

अब प्रश्न उठता है कि इतना सब कुछ होने पर भी क्या कुछ उपाय है। केवल नारे लगाने से तो कोई कार्य होता नहीं फिर यदि हिन्दी को राजभाषा बनाना है तो क्या करना चाहिए। मैं तो इसके लिए एक ही प्रस्ताव सभी शिक्षा-विशारदों एवं भारतीय कर्णधारों के सम्मुख रखता हूँ; यदि हम इस पर रचनात्मक कार्य करेंगे तो मैं यह विश्वास करता हूँ कि हिन्दी का प्रश्न शीघ्र ही सुलझ जायेगा—

१. मिडिल (कक्षा ८) करने के पश्चात् हाई स्कूल/हायर सैकेन्ड्री (कक्षा ९-१० अथवा ११) में कोई भी

भाषा अनिवार्य न हो। प्रत्येक विद्यार्थी को यह छूट हो कि वह अपनी रुचि के अनुसार कोई सी भी दो भाषाओं का अध्ययन करे। विद्यार्थी को दो भाषाओं में परीक्षा पास करना अनिवार्य हो। ये भाषाएँ निम्न होनी चाहिए :

क— अंग्रेजी

ख— हिन्दी

ग— प्रादेशिक भाषा

यदि किसी प्रदेश में एक से अधिक भाषाएँ हैं तो समस्त प्रादेशिक भाषाओं में से एक भाषा लेने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए। ऐसा नहीं कि एक विद्यार्थी दोनों भाषाओं के अध्ययन के समय दोनों प्रादेशिक भाषाएँ ही ले लें। यह योजना १९६७ से बिना किसी विवाद के प्रारम्भ हो सकती है। १९७० में जब इस प्रकार की योजना से परीक्षा परिणाम घोषित होंगे तो देश के इस ट्रैन्ड का पता चल जायेगा कि वह किस भाषा के प्रति अधिक उत्साही है। यही योजना २ वर्ष पश्चात् (सन् १९६९ से) बी० ए० में प्रारम्भ हो जानी चाहिए।

यदि बी० ए० में हिन्दी के पढ़ने वालों की संख्या अधिक है तो हिन्दी को राजभाषा बनाया जाए और यदि अंग्रेजी के जानने वालों की संख्या अधिक है तो अंग्रेजी को राजभाषा बनाया जाए। आज कितनी विडम्बना है कि जिन प्रादेशिक भाषाओं अथवा केन्द्रीय भाषा हिन्दी को सम्मानित किया जाना है वह तो शिक्षा में अनिवार्य नहीं है और इसके विपरीत जिस अंग्रेजी को आज नहीं तो कल भारत से जाना ही है वह आज भी अनिवार्य होने के कारण हम पर राज कर रही है।

भारतीय संविधान के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति अपनी शिक्षा प्राप्त करने में स्वतन्त्र है फिर विधान की मर्यादा का पालन शिक्षाधिकारी क्यों नहीं करते ? मुझे अंग्रेजी नहीं पढ़नी है, हानि होती है तो मेरी, फिर मुझे अंग्रेजी क्यों बलात् पढ़ाई जाय ? मैं नहीं चाहता कि हिन्दी बलात् किसी पर लादी जाए; जिसकी इच्छा हो वह हिन्दी पढ़े जिसकी इच्छा हो वह नहीं पढ़े, किन्तु इसके विपरीत यह

भी न्यायोचित नहीं है कि हमें अंग्रेजी अपनी इच्छा के विरुद्ध पढ़नी पड़े ।

जहाँ तक प्रादेशिक भाषाओं के उत्थान का प्रश्न है वह इस योजना में अवश्य ही शक्तिशाली होगी । इस योजना में दक्षिण वालों को भी कोई विरोध नहीं होगा । जहाँ तक दक्षिण के राज्यों का प्रश्न है उनके राज्यों की राजभाषा वही होनी चाहिए जिस भाषा को अधिक पढ़ा जाता है । केन्द्र का निर्धारण समस्त देश के आंकड़ों से होगा और प्रदेश की भाषा का प्रदेश के आंकड़ों से । इसी प्रकार राजकीय आयोग परीक्षा की भाषा हिन्दी, अंग्रेजी अथवा वह प्रादेशिक भाषा होगी जिसकी संख्या उस प्रदेश में अधिक है । केन्द्रीय राजसेवा आयोग में भी यही नियम व्यवहार में लाया जाय ।

मुझे आशा नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि इस योजना को यदि शिक्षाशास्त्री एवं देश के कर्णधार स्वीकार करलें तब सन् १९७३ से हमें यह शिकायत सुनने को नहीं मिलेगी कि हिन्दी जानने वाले नहीं मिलते, हिन्दी का वाङ्मय अधूरा है । जब हिन्दी के पढ़ने वाले बढ़ेंगे तो हिन्दी की उन्नति होगी और किसी भी व्यक्ति में उस समय यह साहस नहीं होगा कि वह हिन्दी का अहित कर सके क्योंकि :—

यातनाओं से कभी क्या भावनाएँ मिट सकी हैं ॥

यदि मेरी इस योजना में किसी प्रकार की व्यावहारिक कठिनाई अथवा असुविधा हो तो उसके लिए पाठकगण अपने मन्तव्य हिन्दी प्रकाशक के पास भेजने की कृपा करें । भविष्य में इस प्रकार के मन्तव्यों का यथोचित समाधान किया जायेगा ।

●

साहित्य की परिभाषा

साहित्य के उत्कर्ष या अपकर्ष के निर्णय की एक मात्र कसौटी यही हो सकती है कि वह मनुष्य का हित साधन करता है या नहीं ।

—डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी

हिन्दी-मुद्रण-कला का प्रारम्भिक विकास

—कृष्णाचार्य

हिन्दी भाषा और नागरी लिपि में कोई पुस्तक संभवतः १८०२ से पहले नहीं छपी। आधुनिक मुद्रण-कला की जन्मभूमि योरप में छपाई का काम १४५० ई० के लगभग आरम्भ होकर १५०० ई० के आसपास अपना बाल्यकाल पूरा कर चुका था। मुद्रण-कला के क्षेत्र में इस आरम्भिक अवस्था को संपालन-युग (इंक्युनाब्युला पीरीयड) नाम दिया गया है। इस समय टाइप, काग़ज़, स्याही और छापने वाली मशीन भी प्रायः एक ही व्यक्ति या एक ही निर्माण-केन्द्र से बनी। दूसरे शब्दों में, हम मुद्रण के इस युग को सृजनात्मक युग भी कह सकते हैं। मुद्रण-कला अपनी आरम्भिक अवस्था में एक ही व्यक्ति की लगन, कल्पनाशीलता और प्रयोग-क्षमता पर निर्भर थी। इस दृष्टि से मुद्रण-कला के संपालन-युग का विशेष महत्त्व है।

अपने देश में संपालन-युग की सृजनात्मक शक्ति प्रधान रूप से टाइप-निर्माण के प्रयत्नों से व्यक्त हुई। श्रीरामपुर प्रेस द्वारा ही भारत में संपालन-युग का श्रीगणेश हुआ और यह परम्परा ही आगे बढ़ी। किन्तु बाद में नागरी के बम्बइया टाइप ही हिन्दी-प्रदेश में अधिक लोकप्रिय हुए।

संपालन-युग में पुस्तकें कितनी छपती थीं? किन आवश्यकताओं से प्रेरित होकर मुद्रित होने वाली पुस्तकों की मुद्रण-संख्याएं निर्धारित होती थीं? सांख्यकीय अध्ययन से मुद्रक-पाठक आदि के स्तर बाज़ार-माँग आदि उपयोगी तत्त्वों पर प्रकाश पड़ता है। योरप में १५वीं शती के संपालन-युग में पुस्तकों की प्रायः २०० प्रतियाँ छपती थीं। केवल विशेष कारणों से अधिक प्रतियाँ छपने के विवरण मिलते हैं। हिन्दी संपालन-युग की पुस्तकों पर, विशेषकर संस्कृत प्रेस की पुस्तकों पर मुद्रण-संख्या नहीं मिलती है। किन्तु फ़ोर्ट विलियम कॉलेज के विवरणों और श्रीरामपुर प्रेस के वार्षिक अनुवाद विवरणों में मुद्रित प्रतियों की संख्याओं का उल्लेख है। बाद की, मिशन युग (१८२२-१८४४) की पाठ्य-पुस्तक क्रम में छपने वाली पुस्तकों पर कहीं-कहीं मुद्रण-संख्या मिल जाती है।

१८०२ के पूर्व हिन्दी की किसी मुद्रित पुस्तक का पता नहीं लगा है। इस वर्ष केवल कलकत्ता के तीन प्रेसों से हिन्दी की पुस्तकें सम्भवतः पहली बार छपीं। १८०२ और १८०३ के बीच अख़लाक़ए-हिन्दी, बैताल पचीसी, मिस्कीन का मर्सिया, माधोनल, सकुन्तला नाटक, और सिंहासन बत्तीसी (मर्सिया को छोड़ प्रायः सब पुस्तकें अधूरी छपीं) का प्रकाशन हुआ था। विवरणों से ज्ञात होता है कि ये पुस्तकें पाँच-पाँच सौ की संख्या में छापी गयी थीं। प्रत्येक पुस्तक के छापने के पीछे दो प्रकार की प्रवृत्तियाँ काम करती थीं: पहली आशा यह रहती थी कि कुछ प्रतियाँ एक मुश्त कॉलेज खरीदेगा। फ़ोर्ट विलियम कॉलेज लगभग सौ प्रतियाँ खरीदता भी था, और कभी-कभी सम्पूर्ण प्रतियों को लागत मूल्य देकर भी खरीद लेता था। उर्दू, हिन्दी की पुस्तकें प्रायः पाँच सौ ही छपती थीं। १७ जनवरी, १८१२ को माँगे गये कॉलेज के विवरणों से ज्ञात होता है कि राजनीति, बिहारी सतसई, प्रेमसागर, प्रिन्सिपिल्स ऑव ब्रजभाषा ग्रामर आदि की सौ-सौ प्रतियाँ खरीदी गयीं। मिस्कीन का मर्सिया पाँच सौ की संख्या में छपा था। यह सब प्रतियाँ कालेज ने ले लीं।

मुद्रण-कार्य और पुस्तकें खपाने की दृष्टि से लेखकों को सबसे अधिक प्रेरणा देने का कार्य गिलक्रिस्ट करते थे। कभी-कभी, इस कारण, इन्हें अधिकारियों का कोपभाजन भी बनना पड़ता था। किन्तु गिलक्रिस्ट कुछ निर्भीक स्वभाव के थे। कहा यह भी जा सकता है कि ये हिन्दुस्तानी प्रेस को चलाने की दृष्टि से भी इन कामों में रुचि लेते थे। गिलक्रिस्ट लेखकों को पुरस्कार तथा पारिश्रमिक दिलाने की भी व्यवस्था करते थे।

हिन्दुस्तानी प्रेस की १८०५ में छपी माधोनल, सिंहासन

नये प्रकाशन (प्रेस में)

शाकुन्तल : श्री मोहन राकेश

कालिदास की अमर कृति का, आज के पाठकों के लिए, आज की भाषा में प्रस्तुतीकरण। यह मात्र अनुवाद नहीं है। सुन्दर, उपहार पुस्तक।

तुलसी : संपादक डा० उदयभानुसिंह

'राधाकृष्ण मूल्यांकन माला' की चौथी पुस्तक। पहली तीन पुस्तकों की माँग प्रायः सभी विश्वविद्यालयों से सतत आ रही है।

हमारे पथ प्रदर्शक : श्री भारतभूषण अग्रवाल

धर्म, संस्कृति, समाज, साधना, शौर्य, विज्ञान और राष्ट्र के पथों को जिन २२ भारतीयों ने प्रशस्त किया है, उनकी प्रेरणाप्रद जीवनियाँ। सचित्र।

ये अनजाने : शंकर

'चौरंगी' के 'शंकर' का श्रेष्ठतर उपन्यास। अतीव पठनीय और रोचक! बंगाल के अंतिम अंग्रेज बैरिस्टर के मुंसिफ़ की ज़बानी मानवीय करुणा की अनन्य धारा बही है।

मुक्तियज्ञ : श्री सुमित्रानन्दन पंत

भारत के स्वतंत्रता-संग्राम की छन्दोबद्ध, ओजस्वी गाथा। डा० सावित्री सिन्हा द्वारा लिखित कवि-परिचय, इस खण्ड-काव्य की पृष्ठभूमि और इसके विश्लेषण के साथ।

मेरे प्रिय कवि : श्री भगवतीचरण वर्मा

श्री भगवती बाबू द्वारा अपने प्रिय कवियों का (मैथिलीशरण गुप्त, प्रसाद, पन्त, महादेवी, नवीन, आदि तथा अपना) परिचय एवं विवेचनात्मक रेखांकन।

हिन्दी साहित्य : एक आधुनिक परिदृश्य : श्री अज्ञेय

हिन्दी साहित्य पर एक समीक्षात्मक, आधुनिक दृष्टि—सुधी पाठकों के लिए नये, उद्बोधक अनुभव की महत्त्वपूर्ण पुस्तक।



अपने स्थायी आर्डर रजिस्टर करवाएं।

राधाकृष्ण प्रकाशन

४-१४, रूप नगर, दिल्ली-७

बत्तीसी और बैताल पचीसी की मुद्रित प्रतियों की संख्या का पता नहीं लग पाया है। किन्तु विवरण के आधार पर यह कहना आपत्तिपूर्ण नहीं होगा कि ये पुस्तकें भी पाँच-पाँच सौ की संख्या में छपी थीं। श्रीरामपुर प्रेस से छपी हिन्दी बाइबिल और अन्य स्फुट बाइबिल साहित्य की संख्याओं का पता प्रति वर्ष छपने वाले अनुवाद मेमॉएर्स से लगता है। इस ओर सबसे पहले ध्यान दिया जॉर्ज ग्रियर्सन ने। संस्कृत प्रेस से छपी हिन्दी क्लासिक्स—रामायण, विनय पत्रिका, बिहारी के दोहे, सभा विलास, माधव विलास, सुदामा चरित और ब्रजवासीदास कृत ब्रज-विलास आदि की भी सौ-सौ प्रतियाँ कॉलेज-द्वारा ख़रीदी जाती थीं। फुटकल प्रतियाँ भी बेचने की व्यवस्था थी।

इस प्रकार, इन विवरणों के आधार पर कहा जा सकता है कि १८०२ से १८२१ तक पाठ्य-क्रम की दृष्टि से छपने वाली पुस्तकों की संख्या पाँच सौ होती थी। प्रचार-कार्य के लिए मिशनरियों द्वारा प्रायः एक हज़ार पुस्तकें छपती थीं। पर्याप्त धन और साधन जुटाकर छापी जाने वाली बाइबिलें दो हज़ार से कम नहीं छपती थीं। कभी-कभी ये बाइबिलें चार हज़ार तक छपती थीं। उर्दू से अधिक हिन्दी बाइबिलें छपती थीं। श्रीरामपुर प्रेस ने तो हिन्दी की कई बोलियों में भी बाइबिलें छापीं। बैप्टिस्ट मिशनरियों ने भी हिन्दी को अधिक महत्त्व दिया।

(ज्ञानपीठ पत्रिका से साभार)

साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद-३

द्वारा

एक विशेष घोषणा

सुरक्षा-कोष के सहायतार्थ

१ली अक्टूबर से ३१ अक्टूबर १९६५ तक अपने निजी प्रकाशनों की बिक्री पर
२।। प्रतिशत सुरक्षा-कोष को देने का संकल्प

मान्यवर,

कहने की आवश्यकता नहीं कि इस समय राष्ट्र पर राष्ट्रीय सुरक्षा व युद्ध संचालन का जो असाधारण व आवश्यक भार आ पड़ा है, उसकी पूर्ति का समस्त उत्तरदायित्व हम सभी पर है। ऐसे अवसर पर हमने इस निश्चित तिथि के भीतर प्राप्त समस्त छोटे-बड़े आदेशों की बिक्री पर २।। प्रतिशत की दर से प्राप्त राशि राष्ट्रीय सुरक्षा कोष को देने का निर्णय किया है।

अतः इस पत्र द्वारा हम आपको सूचित करते हैं कि उपर्युक्त निश्चित अवधि में प्राप्त अपने प्रकाशनों के आदेशों पर हम ५ प्रतिशत अतिरिक्त कमीशन आपको भी देंगे। यह छूट उस कमीशन के अतिरिक्त दी जायेगी जो अब तक स्कूलों, पुस्तकालयों, सरकारी विभागों, सार्वजनिक पुस्तकालयों, पुस्तक-विक्रेताओं आदि को दी जाती रही है।

हमने संकल्प तो किया है इस निर्धारित समय के भीतर की अपनी समस्त बिक्री पर २।। प्रतिशत राष्ट्रीय सुरक्षा कोष को देने का परन्तु हमारा यह संकल्प तभी पूर्ण होगा जब हमें आपका पूर्ण सहयोग भी इसी समय के भीतर प्राप्त हो। स्पष्ट है कि हमारे संकल्प की पूर्णता आपके सहयोग पर ही निर्भर करती है।

अतएव हमारा आपसे अनुरोध है कि आप उपर्युक्त निर्धारित समय के भीतर ही हमारे प्रकाशनों का आदेश देकर हमें अवसर प्रदान करें कि हम आपके सहयोग से वर्तमान स्थिति में राष्ट्रीय सुरक्षा कोष को अधिक से अधिक राशि देकर अपने देश की स्थिति सुदृढ़ बनाने में एक हिन्दी प्रकाशक की हैसियत से सहयोग दे सकें।

सहयोग की कामना सहित।

भवदीय

साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड के लिए,

पुरुषोत्तमदास टण्डन

मन्त्री

नोटः—इस घोषणा के अंतर्गत प्राप्त आदेशों की सप्लाई केवल नक़द बैंक अथवा वी० पी० द्वारा ही की जायेगी।

सम्पादक के नाम पत्र

अप्रकाशित राहुल साहित्य

मुझे तो इसी बात में सन्देह है कि हिन्दी के पाठकों को और काफ़ी लेखकों को भी—प्रकाशित राहुल-साहित्य का ठीक-ठीक पता है या नहीं। बातचीत की बात छोड़ दीजिए राहुलजी पर लिखे जाने वाले लेखों में भी प्रायः पढ़ने को मिल जाता है—राहुलजी ने दो सौ ग्रन्थों की रचना की। कभी-कभी तो यह संख्या तीन सौ के ऊपर भी पहुँच जाती है। मैं समझती हूँ कि यह संख्यातिरेक राहुलजी की विविध विषयों पर चलने वाली द्रुत कलम तथा उनके बृहदाकार ग्रन्थों के दर्शन से जनित एक स्वाभाविक परिकल्पना है। राहुलजी के नाम से किन ग्रन्थों का सम्बन्ध है और उनकी संख्या कितनी है इसके बारे में अभी कुछ दिन पहले एक लेख लिखकर मैंने सम्मेलन-पत्रिका में प्रकाशनार्थ भेज दिया है।

राहुलजी का अप्रकाशित साहित्य, आज केवल राहुल-संग्रहालय की सम्पत्ति होने पर भी, मैं समझती हूँ हिन्दी-संसार की एक अमूल्य निधि है। जब तक वह सब सामग्री प्रकाशित नहीं होती, उसका संक्षिप्त परिचय भी बहुतों के लिए उपादेय हो सकता है। इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर मैं हिन्दी संसार के सामने राहुलजी के अप्रकाशित साहित्य का परिचय यहाँ प्रस्तुत कर रही हूँ :

राहुलजी ने स्वतन्त्र रूप से और अनेक विद्वानों के सहयोग से हिन्दी-जगत् को अनेक शब्दकोश प्रदान किये हैं। उनका 'तिब्बती-हिन्दी कोश' साहित्य-अकादेमी छाप रही है। उनका एक और कोश 'तिब्बती-संस्कृत कोश' अप्रकाशित है। इस कोश की सजिल्द पाण्डुलिपि के प्रथम पृष्ठ पर राहुलजी ने स्वयं लिखा है—समाप्तिः ल्हासानगरे, २५-२-३०, ८ बजे सायंकाल। इस पर लगे हुए सीलों से ज्ञात होता है कि यह पाण्डुलिपि देवली जेल का भी चक्कर लगाकर लौटी है। मैं समझती हूँ कि राहुलजी का यह पहला कोश है। आश्चर्य यही है कि यह अब तक अप्रकाशित कैसे रह गया। इसके प्रकाशन के लिए कुछ दिक़्क़तें हैं ही, जैसे, तिब्बती टाइप और तिब्बती तथा संस्कृत जानने वाले सम्पादक का प्राप्त होना।

राहुलजी के 'जीवन-यात्रा' के तीन खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं—'जीवन-यात्रा' भाग-१, 'जीवन-यात्रा' भाग-२ और 'रूस में पच्चीस मास'। इनमें १९४७ तक की जीवनी का समावेश है। १९५६ तक की जीवनी को राहुलजी ने उसी वर्ष लिख डाला था। किन्तु यह पाण्डुलिपि अभी तक प्रेस में नहीं पहुँच पायी है।

यदि हिन्दी के प्रबुद्ध पाठक राहुलजी के महायथार्थ का दर्शन करना चाहें तो उन्हें एक दिन राहुलजी की डायरियाँ भी प्रकाशित रूप में पढ़नी होंगी। यदि असली राहुल के दर्शन करने हों तो केवल उनकी डायरियों में ही सम्भव है। १९२७ से लेकर १९६१ के अन्तिम दिन तक की केवल आधे वर्ष को छोड़कर, सभी डायरियाँ राहुल संग्रहालय में सुरक्षित हैं। १९४२ के आधे वर्ष की डायरी, राहुलजी के कहने के अनुसार, डाक में से ब्रिटिश सरकार के गुप्तचरों ने उड़ा ली। राहुलजी की डायरियों में अनेक भाषाओं के और अनेक लिपियों के दर्शन होते हैं। कई वर्षों की डायरियाँ तो संस्कृत भाषा और ब्राह्मी लिपि में हैं। राहुलजी ने नियमित रूप से ८ दिसम्बर १९६१ तक डायरी लिखी है। १९६२ की डायरी पर केवल उनका नाम ही है। अपने सिंहल निवास-काल में राहुलजी ने 'संस्कृत काव्य-धारा' के ढाँचे की और उतने ही बड़े आकार की एक पुस्तक पालि काव्य-धारा तैयार की थी। यह भी अभी अप्रकाशित ही है। राहुलजी ने १९५३ में नेपाल पर एक बृहदाकार ग्रन्थ लिखा था। 'नेपाल' में नेपाल का भौगोलिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विशद विवरण तो है ही, कहीं-कहीं राजनैतिक सत्य भी है।

राहुलजी ने हिमालय क्षेत्र पर कई ग्रन्थ लिखे हैं। फिर भी, हिमालय पर उनका सर्वोत्तम ग्रन्थ—हिमालय-परिचय—अभी तक अप्रकाशित ही है। यह ग्रन्थ ज्ञान-

मण्डल से प्रकाशित कुमायूँ के आकार-प्रकार का तो होगा ही। राहुलजी ने १९५९-६१ के बीच अपने पुत्र जेता और पुत्री जया को बहुत-से लम्बे पत्र लिखे हैं। इन पत्रों का विषय है सरल और सुबोध भाषा में—बच्चों की भाषा में—कहानियों के रूप में पृथ्वी पर मानव के क्रमिक विकास की कथा। यदि इन पत्रों का प्रकाशन हो जाये, तो भारत के बच्चों को भी महापण्डित का साहित्य पढ़ने को मिल जायेगा। मेरे पास इन पत्रों की प्रेस-कापी तैयार है।

अपने अत्यधिक व्यस्त, साथ ही अस्त-व्यस्त, जीवन के बावजूद राहुलजी ने १९२८ के बाद के उन सारे महत्त्व-पूर्ण पत्रों को सुरक्षित रखा था जो समय-समय पर उनको बड़े-बड़े लोगों ने लिखे थे। 'राहुल-संग्रहालय' में ये सभी पत्र सुरक्षित हैं। मैं समझती हूँ कि इन सारे पत्रों का प्रकाशन अत्यन्त उपयोगी होगा। और, उन सारे पत्रों का भी संग्रह करना है जो राहुलजी ने अपने मित्रों तथा परि-चितों को लिखे हैं। कुछ मित्रों ने मुझे पत्रों की प्रतिलि-पियाँ भेजी हैं। उचित अवसर आने पर मैं इन्हें प्रकाशित रूप में देखना चाहूँगी।

राहुल के लिखे हुए ऐसे अनेक फुटकल निबन्ध भी हैं जिन्हें यदि पुस्तकाकार छापा जाये तो राहुल-निबन्धावली के कम से कम पाँच खण्ड तो तैयार हो ही सकते हैं। एक खण्ड संस्कृत निबन्धों का तैयार हो सकता है और एक खण्ड अंगरेजी निबन्धों का। मैं आजकल इन निबन्धों का संग्रह कर रही हूँ।

राहुलजी के इस अप्रकाशित साहित्य को प्रकाश में लाने के लिए, मुझे आशा है, हिन्दी-सेवी-संसार सहयोग प्रदान करेगा।

—डा० कमला सांकृत्यायन

समस्त राष्ट्र को एक सूत्र में आबद्ध करने का एकमात्र साधन हिन्दी ही है। हिन्दी का पठन-पाठन हमारा पुनीत कर्तव्य है। अपने समस्त कार्य-व्यवहार में राष्ट्र-भाषा हिन्दी ही को अपनाकर राष्ट्रीय विकास में योग दें।

हिन्दी की वर्तनी में एकरूपता

—आचार्य किशोरीदास बाजपेयी

पहले हिन्दी-व्याकरण की बहुत चर्चा थी। 'ने' विभक्ति के प्रयोग को लेकर हंगामा था कि यह क्या झमेला है कि 'राम रोटी खाता है' और 'राम ने रोटी खाई'! डाक्टर सुनीतिकुमार चटर्जी ने भी हिन्दी को 'व्याकरण-हीन भाषा' कहकर इसके प्रति लाघव प्रकट किया था। परन्तु अब व्याकरण की अपूर्णता की कोई शिकायत नहीं। डाक्टर चटर्जी भी मान गये हैं और कह दिया है कि हिन्दी को सर्वश्रेष्ठ व्याकरण प्राप्त हो गया है। 'ने' विभक्ति के प्रयोग की भी शिकायत नहीं। परन्तु अब शिकायत है कि :

हिन्दी की वर्तनी सुव्यवस्थित नहीं है!

अभी पिछले दिनों दिल्ली में जो राजभाषा सम्मेलन हुआ था, उसमें भी वर्तनी विषयक शिकायत उठी थी। वर्तनी में एकरूपता तो संस्कृत में भी नहीं है। 'हरयिह' भी चलता है और 'हरइह' भी चलता है। उसी तरह हिन्दी में 'आयी' भी चलता है और 'आई' भी चलता है। परन्तु दोष केवल हिन्दी पर है! हिन्दी ने तो सदा ही अपने रूप को सुव्यवस्थित रखा है और व्यापकता का ध्यान रखा है। इसीलिए संस्कृत का (शब्द विषयक) 'विस्तर' न लेकर 'विस्तार' लिया है—'तत्तु विस्तरेण तत्रैव प्रतिपादितम्' का 'विस्तर' न लेकर 'अहो महावनस्य विस्तार' का 'विस्तार' लिया है—'वह सब तो विस्तार से वहीं प्रतिपादित है।' 'विस्तार से' हिन्दी में गलत है। जैसे 'विकार', 'विचार', 'विभाग' आदि, उसी तरह 'विस्तार'। 'हिन्दी-संघ' की अन्य भाषाओं ने भी मेल रखा है। अवधी भाषा में 'आवा' भूतकाल की क्रिया है; हिन्दी में 'आया'। 'आया' का स्त्री-वर्गीय प्रयोग 'आई' अधिक प्रचलित रहा है और इसी से प्रभावित होकर 'आवा' का स्त्री-वर्गीय रूप 'आई' वहाँ चला; 'आवी' नहीं। ब्रजभाषा में भी 'आई' ही चलता है। अंग्रेजी में वर्तनी की एकरूपता है; पर उच्चारण-भेद बहुत है—'एजुकेशन' एड्यूकेशन' एक ही वर्तनी के उच्चारण हैं। 'वी० पी० पैकेट' और 'व्ही० पी० पैकेट' भी एक ही वर्तनी के उच्चारण हैं। परन्तु हम किसी की कमजोरी देखकर अपनी कमजोरी का समर्थन न करेंगे।

हिन्दी-वर्तनी पर विचार

देश स्वतन्त्र हुआ, हिन्दी ने संविधान में सम्मान प्राप्त किया, तब वर्तनी की एकरूपता की माँग हुई। इस माँग पर ध्यान दिया गया, विचार किया गया। वैज्ञानिक पद्धति पर विचार किया गया, भाषा की अपनी प्रकृति-प्रवृत्ति को आधार मानकर। वर्तनी में एकरूपता लायी गयी, जिसका अनुगमन 'नवभारत टाइम्स' और 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' जैसे दिल्ली के पत्र भी बराबर कर रहे हैं। और अब 'दैनिक हिन्दुस्तान' भी करने लगा है। काशी का 'आज' भी 'राष्ट्रिय' की जगह व्यापक 'राष्ट्रीय' लिखने लगा और 'अन्तःराष्ट्रिय' की जगह 'अन्तरराष्ट्रीय'। परन्तु फिर भी अभी तक, अन्यत्र लोग 'अन्तःप्रान्तीय' जैसे प्रयोग कर रहे हैं! अनेकरूपता के और भी बहुत उदाहरण हैं; यद्यपि विचार प्रायः सब पर हो चुका है। परन्तु इस विषय में एक ही व्यक्ति के विचार (राजाज्ञा की तरह) सबको मान्य कैसे हों?

'सम्मेलन' का उद्योग

हिन्दी साहित्य सम्मेलन (प्रयाग) के नये सचिव श्री मोहनलाल भट्ट गुजराती हैं। उनका ध्यान इधर गया है और उन्होंने हिन्दी की वर्तनी पर विचार करके निर्णय देने के लिए एक विद्वत्समिति का गठन किया है, जिसके सदस्यों में डा० धीरेन्द्र वर्मा, बाबू रामचन्द्र वर्मा, डा० बाबूराम सक्सेना, डा० उदयनारायण तिवारी, डा० भोलानाथ तिवारी, पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी, डा० रामविलास शर्मा, डा० आर्येन्द्र शर्मा, भदन्तआनन्द कौसल्यायन जैसे विद्वान् हैं। डा० सुनीतिकुमार चटर्जी भी इस समिति में मनोनीत हैं, जो इस समय भाषा-विज्ञान के मूर्द्धन्य विद्वान् समझे जाते हैं। डा० चटर्जी के राजभाषा-सम्बन्धी विचार सर्वविदित हैं; परन्तु भाषा-परिज्ञान अलग चीज़ है। वे भारतीय भाषाओं के मर्मज्ञ हैं। मैं उनके इस प्रकार के सहयोग प्राप्त करने का स्वागत करता हूँ। मुझे भी इस समिति में रखा गया है और मैंने सहर्ष अपनी स्वीकृति दे दी है और 'सम्मेलन' को लिखित रूप में यह वचन भी दे दिया है कि "यह विद्वत्समिति सर्वसम्मति से या बहुमत से हिन्दी की वर्तनी तथा शब्दों की एकरूपता-सम्बन्धी जो भी निर्णय करेगी, वह सब मुझे मान्य होगा और उसके किसी भी निर्णय के प्रति मेरी कोई भी विप्रतिपत्ति न उठेगी। हाँ, समिति में विचार-विमर्श पूरी तरह करने-कराने में मेरा पूर्ण सहयोग रहेगा।"

मुझे आशा है, समिति के सभी मनोनीत विद्वान् इस विषय को गंभीरता से ग्रहण करेंगे और सौ काम छोड़कर यह काम कर लेंगे। खर्च सब 'सम्मेलन' सहन करेगा। इस ओर कदम बढ़ाने के लिए सम्मेलन के अधिकारी साधुवाद के पात्र हैं। विद्वानों को इस सुअवसर से हिन्दी का एक बड़ा काम कर लेना चाहिए।

विश्व-शान्ति और अपने आदर्शों के लिए बलिदान हो जाने वाले

अमरीका के भूतपूर्व स्व० राष्ट्रपति

जॉन एफ० केनेडी

की

नयी, प्रेरक और विचारोत्तेजक पुस्तक

विश्व-शान्ति की ओर

मूल्य : रु० ४.५०

पत्र-पत्रिकाओं की कुछ सम्मतियाँ

ये भाषण पढ़कर केनेडी के उदार एवं प्रगतिशील दृष्टिकोण, तार्किक विचार तथा उनकी मुहावरेदार भाषा-शैली का परिचय प्राप्त होता है। पुस्तक स्वर्गीय केनेडी के सम्बन्ध में अच्छी जानकारी प्रदान करती है।

—कादम्बिनी, नई दिल्ली

श्री केनेडी एक युवा राष्ट्रपति थे, जिनकी नीतियाँ अमेरिका के लिए क्रान्तिकारी रहीं। जो दृढ़ता, जो स्वाभिमान, जो विश्वास और लगन उनके कार्य तथा शब्दों में नज़र आती थी वह उनके हृदय की भावनाओं को प्रकट करती थी। यही कारण था कि अल्पावधि में ही वे अमेरिका ही नहीं सारे विश्व में लोकप्रिय हो गये थे।''''''पूरा संग्रह गंभीरता के साथ अध्ययन करने योग्य है।

——युगधर्म, नागपुर

श्री केनेडी ने देश-विदेश की अनेक समस्याओं पर अपने विचार बहुत ही स्पष्ट और प्रभावशाली ढंग से इस पुस्तक में व्यक्त किए हैं। अमेरिका के इतिहास में शायद ही किसी राष्ट्रपति ने इतनी विकट समस्याओं का सामना इतने दृढ़ संकल्प, धैर्य, आशा, साहस और विवेक से किया हो जैसा कि स्वर्गीय केनेडी ने किया। ग्रंथ से अमेरिका की देश और विदेश-नीतियों को समझने में भी काफी सहायता मिलती है।

—सेनानी, बीकानेर

आत्माराम एण्ड संस

काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

पुस्तक-परिचय

वाणी-अंजलि

प्रस्तुतकर्त्ता आकाशवाणी विभाग; प्रकाशक—प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली। मूल्य एक रुपया पच्चीस नये पैसे (प्रकाशन वर्ष १९६४)।

प्रस्तुत पुस्तक में भारतीय आकाशवाणी से प्रचारित मई सन् '६४ से नवम्बर सन् १९६४ तक आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से प्रसारित राष्ट्रनायक श्री जवाहर लाल नेहरू के प्रति कुछ भावभीनी श्रद्धांजलियाँ संकलित की गई हैं। इन श्रद्धांजलियों में कविता, संस्मरण, रूपक एवं बालरूपक की छटा प्राप्त होती है। पुस्तक में देवराज दिनेश की कविता 'सत्ताईस मई' की पक्तियाँ देखिए :—

क्या सौन्दर्य और यौवन का चिर प्रतीक वह—
लाल जवाहर नहीं रहा है इस धरती पर?
युग की सभी समस्याएँ सुलझाने वाला—
वह नर-नाहर नहीं रहा है इस धरती पर?

इसी के साथ नवयुवक कवि श्री गोपाल दास नीरज की कविता 'हम तुम्हें मरने न देंगे' की पंक्तियाँ देखिए :—

खो दिया हमने तुम्हें तो पास अपने क्या रहेगा।
कौन फिर बारूद से सन्देश चन्दन का कहेगा?
मृत्यु तो नूतन जन्म है हम तुम्हें मरने न देंगे।

प्रस्तुत पुस्तक में सर्वश्री भवानी प्रसाद तिवारी, सोहन लाल द्विवेदी, शम्भुनाथ सिंह, डा० रामकुमार वर्मा, शिवमंगल सिंह, नरेन्द्र शर्मा, हरिवंशराय बच्चन, गिरिजा कुमार माथुर एवं कमला चौधरी की भावमयी कविताएँ हैं जिनके द्वारा नेहरू के कृतित्व एवं व्यक्तित्व का रेखाचित्र स्पष्ट हो जाता है।

पुस्तक में श्री महावीर त्यागी का संस्मरण 'अब कहाँ जाऊँ' बड़ा ही मार्मिक है। इस संस्मरण के अन्तिम तीन पैराग्राफ पत्थर हृदयों को भी पिघलाने में सशक्त हैं। डा० सम्पूर्णानन्द, रामधारीसिंह दिनकर, रघुपतिसहाय फिराक, कमलापति त्रिपाठी, यूसुफअली एवं हरिभाऊ उपाध्याय के संस्मरण इतने प्रभावोत्पादक हैं कि कुछ लिखते नहीं बनता।

रूपकों में चिरंजीत, विष्णु प्रभाकर, गोविन्द चातक, मुद्राराक्षस एवं ओंकारनाथ श्रीवास्तव का बालरूपक श्रव्य एवं दृश्य दोनों प्रकार से ही उत्तम है।

आकाशवाणी का यह प्रयास सफल है। इस पुस्तक से महान् राष्ट्रनायक श्री नेहरू के जीवन का बहुत-सा अंश प्रामाणिक रूप में प्राप्त होता है।

●

गजानन शास्त्री

लेखक—रामेश्वरनाथ तिवारी; भूमिका-लेखक—कपिल देव पाण्डेय, प्रकाशक—ज्ञानपीठ(प्रा० लि०) पटना; मूल्य दो रुपये (प्रकाशन वर्ष १९६५)।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने १४ हास्य कहानियाँ दी हैं। इन कहानियों की एक विशेषता है कि सभी कहानियों का नायक गजानन शास्त्री है। पुस्तक पढ़ने से ज्ञात होता है कि गजाननशास्त्री शास्त्री होने के साथ-साथ एम. ए. पास करने वाला लैक्चरार है। उसके घर में लीला जैसी साध्वी पत्नी है, सुन्दर पुत्र है, फिर भी वह अपने आप को बाल-ब्रह्मचारी ही समझता है और अपने आपको अखिल भारतीय ब्रह्मचारी संघ का सदस्य मानता है।

गजानन शास्त्री को प्रोफेसरी और पत्रकारिता का भी अनुभव है, चाहे वह असफल ही रहा हो। गजानन शास्त्री का चमत्कार आपको मानना ही पड़ेगा। वह भारत-भारती के छन्दों का पाठ करके विवाह-संस्कार सम्पन्न कराने में भी सफल है। उन्हें जो इन्टरव्यू का अनुभव हुआ है वह भी उनके समान ही निराला है। शास्त्री जी रसिक हैं और प्रेमी भी। इसी कारण वह चलती बस में प्रेम करने से भी

नहीं चूकते, किन्तु उन्हें इस प्रेम की कीमत महँगी देनी पड़ी । प्रेम के कारण ही उनका मनीबैग गायब हो गया और उस रात घर में दीपावली को वास्तविक रूप में अमावस्या का रूप दिया गया ।

पुस्तक की सभी कहानियाँ सजीव हैं । भाषा में ताज़गी और खानगी है । तिवारीजी का यह प्रयास सफल है ।

जीवन में सफलता के रहस्य

लेखक—स्वामी शिवानन्द सरस्वती; प्रकाशक—योग वेदान्त फारेस्ट अकादमी, शिवानन्द नगर (टिहरी गढ़वाल), उत्तर प्रदेश; मूल्य ६ रुपये; द्वितीय संस्करण (प्रकाशन वर्ष १९६५) ।

प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन चरित्र-विकास एवं अध्यात्मवाद के प्रचार के लिए महान् उपयोगी-सा प्रतीत होता है । सम्पूर्ण पुस्तक को आठ भागों में विभाजित किया गया है । प्रथम भाग जिसको पुस्तक में प्रयोग की संज्ञा दी गई है 'स्कल्प और स्मृति का विकास' दूसरे भाग में 'राजयोग महा विद्या, तृतीय 'आत्म शक्ति के प्रभाव,' चतुर्थ—'सद्गुणों का उपार्जन', पंचम, 'दुर्गुणों का निराकरण', षष्टम 'योग की अभ्यास माला', सप्तम उपसंहार, एवं अष्टम 'प्रयोग' में दो कथाएं दी गई हैं । पुस्तक में परिशिष्ट-रूप में बीस आध्यात्मिक नियम, विश्व प्रार्थना, श्री स्वामी शिवानन्द एवं दिव्य जीवन संघ पर प्रकाश डाला गया है।

प्रकाशकीय वक्तव्य में कहा गया है कि इस पुस्तक में जो कुछ स्वामी जी ने लिखा है वह उनके दीर्घ कालीन आध्यात्मिक जीवन का रक्षित अनुभव है क्योंकि स्वामीजी ने स्वयं इस पुस्तक में वर्णित नियमों का अपने सम्पूर्ण जीवन में पालन किया था । इस वक्तव्य से पुस्तक की प्रामाणिकता और भी अधिक स्पष्ट हो जाती है ।

लेखक ने पुस्तक की भूमिका में 'शिवानन्द की वाणी' में कहा है, "भौतिक जीवन को ही परम जीवन समझने वाला व्यक्ति कभी भी सुखी और सफल नहीं बन सकता।

जो लोग भौतिक जीवन में ही सन्तुष्ट न रहकर आतम-चेतनामय जीवन को प्राप्त करना चाहते हैं उनके लिए अनेकों मार्ग हैं जिनका अनुसरण कर वे अवश्य सफलता की प्राप्ति कर सकते हैं। विज्ञान एवं धर्म तथा राजनीति एवं धर्म परस्पर अभिन्न हैं। इस कारण दोनों का विकास एक जैसा और एक साथ होना चाहिए। यदि किसी भी दिशा में एकांगी विकास किया गया तो वह हानिकर भी प्रमाणित हो सकता है।''

प्रस्तुत पुस्तक में जीवन को सुखी एवं सफल बनाने के लिए कितने ही प्रयोग एवं उपाय दिये गये हैं। पुस्तक की भाषा सरल एवं जनसाधारण के लिए ग्राह्य है। हमें आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक आज के वैज्ञानिक युग में आध्यात्मिक रूप को सरल स्वरूप में प्रकट करने में सफल होगी।

मिस इड़ा

कवि—रंजन वर्मा; प्रकाशक—ज्ञानपीठ प्रा० लि० पटना; मूल्य दो रुपये; (प्रकाशन वर्ष जुलाई १९६५)

प्रस्तुत पुस्तक एक काव्यात्मक व्यंग्य है जिसमें 'कामायनी' की प्रमुख पात्रा इड़ा को आज के युग, वातावरण एवं सभ्यता के अनुसार प्रस्तुत किया गया है। कवि ने अपनी भूमिका में लिखा है कि, ''आज का युग रंगीन है जिसमें मनु भी अपने आप को रोक नहीं सका। वह भी टाई बाँधकर सामने आ गया। आज के युग में इड़ा का पलड़ा भारी है। आज तो केवल इड़ा ही इड़ा है श्रद्धा कहीं दिखती ही नहीं। इसी कारण इस पुस्तक का नामकरण भी उसी के नाम पर हुआ है।''

पुस्तक में कवि ने पात्र एवं वातावरण के अनुकूल ही भाषा का प्रयोग किया है। अंग्रेजी शब्दों को वह हिन्दी में इस प्रकार पचा गए हैं कि देखते ही बनता है :—

घर-घर-घर ऊपर चलता है फोन
तभी वह बज उठता है
ट्री ऽऽन, ट्री ऽऽन, ट्रि ऽऽन।
हैलो डियर, क्या शो ना है ?

इन पंक्तियों में 'फोन' 'हैलो डियर' और 'शो' अंग्रेजी के शब्द होने पर भी हिन्दी के शब्दों की भाँति कविता में घुल-मिलकर ऐसे लगते हैं कि मानो वे हिन्दी के परिवार के सदस्य है। इसी प्रसंग में और भी देखिए :—

मनु विक्टोरिया चेयर पर बैठा है।
सामने टी-टेबुल पर
ऐश ट्रे रक्खी है
देखकर ऐसा ही लगता है
किया है रात भर
अनवरत् हवन यज्ञ मनु ने
हाई क्लोजप फेस का
किन्तु यह कहता है
हवन यज्ञ व्यर्थ गया
व्यर्थ गया हविस भी।

इन पंक्तियों में भाषा के साथ-साथ आज की सभ्यता पर कवि ने बड़ा करारा व्यंग्य किया है। १०८ पृष्ठ की इस छोटी पुस्तक में, चाहे इसे खण्डकाव्य कहें अथवा प्रबन्ध-काव्य, सर्वत्र हास्य एवं व्यंग्य की झाँकी मिलती है। कवि की भाषा वर्तमान युग की प्रचलित भाषा है और कविता अतुकान्त। आप इससे काव्य एवं हास्य-विनोद, व्यंग्य एवं परिहास आदि का आनन्द प्राप्त कर सकते हैं।

भारत की विदेश नीति

लेखक—श्रीराम शर्मा; अनुवादक—नन्नूलाल खण्डेलवाल; प्रकाशक—किताबघर ग्वालियर; मूल्य ८ रुपये (प्रकाशन वर्ष मई १९६५)।

प्रस्तुत पुस्तक लेखक के अंग्रेजी शोधग्रंथ का हिन्दी अनुवाद है। इस शोधग्रंथ पर सन् १९५९ में लन्दन विश्वविद्यालय ने लेखक को पी-एच० डी० प्रदान की थी। लेखक की भूमिका से पता चलता है कि यह पुस्तक सर्व साधारण के लिए प्रस्तुत की गई है जिसमें मूल पुस्तक की समस्त जटिल सामग्री को नहीं दिया गया है।

लेखक ने पुस्तक में इस बात पर प्रकाश डाला है कि भारत अवसरवादिता के कारण किसी गुट में सम्मिलित नहीं होना चाहता और न वह चाहता है कि तटस्थ होने के कारण उसे सभी का सहयोग मिलता रहे अपितु वह अपनी प्राचीन सांस्कृतिक परम्पराओं के कारण ही विश्व के प्रत्येक गुट से पृथक् है। भारतीय तटस्थता का आधार नैतिक है, सत्य और न्याय की रक्षा करना है।

सम्पूर्ण पुस्तक को १३ अध्यायों में विभाजित किया गया है। १. युद्धोत्तर विश्व राजनीति के सन्दर्भ में तटस्थतावादी नीति २. तटस्थतावाद—भारतीय तथा पश्चिमी दृष्टिकोण ३. भारतीय तटस्थतावाद की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि ४. भारतीय तटस्थतावाद एक आलोचना ५. तटस्थता क्यों? ६. तृतीय शक्ति सम्बन्धी विचारधारा—और तीन तटस्थ देश ७. सहअस्तित्व तथा पंचशील ८. क्षेत्रीय संधियाँ तथा भारतीय तटस्थतावाद ९. विदेशी सहायता का भारतीय तटस्थतावाद पर प्रभाव १०. राष्ट्रमण्डल ११. संयुक्तराष्ट्र संघ को भारत की देन १२. काश्मीर विवाद—भारत की विदेश नीति एक समस्या तथा १३. चीनी आक्रमण के सन्दर्भ में भारत की विदेश नीति।

पुस्तक की विषय सामग्री से पता चलता है कि इसमें अन्तिम तीन परिच्छेद अंग्रेजी शोध-ग्रन्थ के पश्चात् के हैं। काश्मीर विवाद में १९६२ तक तथा चीनी विवाद में १९६३ तक की घटनाओं का उल्लेख है जबकि लेखक को शोध-ग्रन्थ पर १९५९ में पी-एच० डी० की उपाधि प्रदान हो गई थी।

भारत किसी भी गुट में सम्मिलित क्यों नहीं हुआ इसके प्रमाण में लेखक ने बांडुंग सम्मेलन सन् १९५५ में श्री नेहरू के मन्तव्य को इस प्रकार दिया है, "क्या हम एशिया और अफ्रीका के देश साम्यवाद-समर्थक या साम्य-वाद विरोधी होने के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकते। क्या हम इतने भर के लिए ही रह गये हैं कि विश्व के समस्त क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा की दुंदुभी बजाने वाले हमारे नेता इस प्रकार के गुट या उस प्रकार के गुट से गाँठ बाँधकर बैठ जाएं और इस दल या उस दल का बोझा लादे रहें और उनकी इच्छाओं को पूरा करते रहें।

किसी भी आत्मसम्मानी व्यक्ति या राष्ट्र के लिए यह अत्यन्त लज्जास्पद तथा अपमानकारी बात है—और मैं अपने आपको इस अपमान के साथ नत्थी नहीं करूंगा ।"

पंचशील और नेहरूजी के सम्बन्ध में पुस्तक में इस असंगति का भी उल्लेख किया है कि नेहरूजी जहाँ एक हाथ से पंचशील पर हस्ताक्षर करते थे वहाँ दूसरे हाथ से हैदराबाद रियासत पर कब्जा भी करते थे। काश्मीरी जनता को आत्म-निर्णय का अधिकार देने से इन्कार भी करते थे और नेपाल के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप भी करते थे। यह सब पंचशील की उस भावना के एकदम विरोध में थे, जिसका सर्वत्र प्रतिपादन करने में नेहरूजी कभी नहीं अघाते थे ।

सम्पूर्ण पुस्तक का अध्ययन करने के पश्चात् कहा जा सकता है कि लेखक ने अपना शोधग्रंथ खुले मस्तिष्क से लिखा है। वह सही बात कहने में किसी के लिए भी चिन्तित नहीं हुआ। पुस्तक के अनुवाद की एक विशेषता है कि इसमें कठिन भाषा का प्रयोग नहीं है। पुस्तक की भाषा ऐसी है जिससे सर्वसाधारण 'भारत की विदेश नीति' का परिचय प्राप्त कर सकता है ।

●

आओ साथ चलें

कहानीकार–कान्तिलाल ठाकरे 'नलिनीश', भूमिका लेखक—श्यामू संन्यासी; प्रकाशक—नवयुग साहित्य सदन, इन्दौर; मूल्य दो रुपये पचास पैसे; (प्रकाशन वर्ष अगस्त १९६५) ।

प्रस्तुत पुस्तक में कहानीकार ने १७ सामाजिक कहानियाँ संकलित की हैं । श्री संन्यासी ने लेखक के विषय में लिखा है कि, "कहा जाता है कि कवि और कहानी लेखक बनने के लिए दिल की चोट सहनी पड़ती है। श्री ठाकरे ने इस निर्मम दुनिया में खूब चोटें खाई

हैं और उनका हृदय घायल हुआ है। हर चोट ने उन्हें नई कहानी दी है और वह कहानी उनकी अपनी न होकर उनके युग की पीड़ा की कहानी बन गई है। इसीलिए मुझे ठाकरे की कहानियाँ अच्छी लगती हैं।"

'आओ साथ चलें' पुस्तक की प्रथम कहानी है जिसके नाम पर पुस्तक का नामकरण हुआ है। इस कहानी में प्राचीनता एवं नवीनता का विरोधाभास है। ग्राम्य जीवन और वहाँ के हठवादी संस्कारों का नगर के विचारों एवं संस्कारों के साथ आमूलचूल अन्तर है। इतना कुछ होने पर भी दोनों एक होकर नया पथ बनाते हैं।

'नया इतिहास' कहानी में 'मृतक भोज' जैसी कुप्रथा पर करारा व्यंग किया है जिसके कारण ग्रामीण समाज की अर्थ-व्यवस्था और भी जटिल हो जाती है। 'आत्मा के आँसू' कहानी में मृत आत्मा इधर-उधर भटकती रहती है पर कथानक का निर्माण किया गया है। 'निरा पोस्ट बाक्स' कहानी में रियासतों में अंग्रेज शासकों द्वारा अत्याचार पर प्रकाश डाला गया है।

'आओ साथ चलें' पुस्तक की कहानियों की भाषा सरल है। कहानीकार ने अपनी कथा को सीधे-सादे शब्दों में बिना किसी आडम्बर के स्पष्ट कर दिया है। भाषा सरल है और कहानियाँ सोद्देश्य हैं।

कुरुक्षेत्र : एक सांस्कृतिक परिचय

लेखक—कुंवर बालकृष्ण मुज़तर; प्रकाशक—विश्वविद्यालय प्रकाशन गृह, नवीन शाहदरा, दिल्ली ३२; मूल्य १२.५०; (प्रकाशन वर्ष सन् १९६५)।

प्रस्तुत पुस्तक में भारत के प्राचीनतम सांस्कृतिक स्थल 'कुरुक्षेत्र' का सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक परिचय दिया गया है। संस्कृति खण्ड में कुरुक्षेत्र का वैदिक एवं पौराणिक काल में क्या महत्त्व रहा है। सरस्वती का कुरुक्षेत्र से सम्बन्ध, कुरुक्षेत्र का तीर्थस्थान की दृष्टि से महत्त्व, कुरुक्षेत्र कहाँ और कब—के साथ महाभारत के कुरुक्षेत्र प्रदेश की चर्चा की गई है।

पुस्तक के दूसरे भाग में कुरुक्षेत्र के ऐतिहासिक महत्त्व पर चर्चा की गई है जिसमें कुरुक्षेत्र का मौर्यकाल, गुप्तकाल, सम्राट् हर्षवर्धन, महमूद गजनवी से क्या सम्बन्ध रहा है—की विस्तृत जानकारी दी गई है। मुस्लिम, मुगल एवं अंग्रेज़ी काल के इतिहास में कुरुक्षेत्र का क्या योग रहा है इस पर लेखक ने संक्षिप्त रूप से प्रकाश डाला है।

कुरुक्षेत्र की सांस्कृतिक परम्पराएँ, कुरुक्षेत्र की रक्षा के लिए समय-समय पर अंग्रेजों द्वारा जारी किये गये फर्मान एवं कुरुक्षेत्र के क्षेत्र में स्थित प्राचीन धर्मस्थानों का परिचय सर्वसाधारण की जानकारी के लिए दिया गया है। लेखक ने अपनी पुस्तक में प्रमुख स्थानों के फोटोग्राफ़ देकर पुस्तक को उपयोगी बनाने का प्रयास किया है। सांस्कृतिक खण्ड में कुरुक्षेत्र के विषय में लेखक ने जो कुछ कहा है उसके लिए प्राचीन स्तोत्र दिये हैं जिससे पुस्तक की महत्ता बढ़ जाती है। इस पुस्तक के अध्ययन से कुरुक्षेत्र के सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व का पता चलता है और जो व्यक्ति केवल कुरुक्षेत्र को एक धार्मिक स्थान ही समझते रहे हैं उनके लिए एक नयी दृष्टि है।

'रागरंग में डूबे हुए कुरुक्षेत्र' शीर्षक के अन्तर्गत लेखक ने कुरुक्षेत्र के कुछ अप्रकाशित साहित्य का वर्णन किया है। यदि यह साहित्य प्रकाशित हो जाए तब सम्भवतया कुछ नयी बातें पता चलें। अहमद की रामायण तथा उसके द्वारा रचित जयमल फत्ता का लोकनाट्य हिन्दी की उत्तम कृति प्रतीत होती हैं। दूसरी पुस्तक तीरीखे छप्पना काल—लेखक मीर इनायत अली—भी विषय एवं काव्य की दृष्टि से उपयोगी प्रतीत होती है।

पुस्तक की भाषा हिन्दी एवं उर्दू मिश्रित समूचे रूप में हिन्दुस्तानी है। ऐसा लगता है कि लेखक ने वर्णन के अनुसार पुस्तक में भाषा का प्रयोग किया है। सांस्कृतिक खण्ड में पुस्तक की भाषा संस्कृतनिष्ठ हिन्दी है और यवन काल तथा आंग्ल काल के इतिहास के समय भाषा उर्दू एवं अंग्रेज़ी मिश्रित है। लेखक का प्रयास सफल है।

हमारा नवीनतम प्रकाशन

लोक देव नेहरू

ले० श्री दिनकर



इस पुस्तक का अंश आप धर्मयुग में प्रकाशित 'पंडित जी के संस्मरण' शीर्षक लेखमाला के अन्तर्गत पढ़ चुके हैं। मगर दो बृहदाकार लेख—'गांधी और जवाहर लाल' तथा 'स्तालिन और जवाहरलाल'—इनको पढ़े बिना लेखमाला अधूरी रह जाती है। फिर, लेखों को पढ़े बिना पंडित जी के व्यक्तित्व का पूर्ण ज्ञान सहज ही नहीं प्राप्त हो सकता है। पुस्तक सुन्दर छपाई और बँधाई के साथ प्रस्तुत है। मूल्य—४.५० रुपये।

हमारे अन्य मूल्यवान् प्रकाशनों के लिए हमारा बृहत् सूचीपत्र अवश्य मँगावें।



उदयाचल

राजेन्द्र नगर, पटना-४

महादेवी : चिन्तन व कला

सम्पादक—डा० इन्द्रनाथ मदान, (राधाकृष्ण मूल्यांकन माला) प्रकाशक—राधाकृष्ण प्रकाशन, रूप नगर, दिल्ली ७; मूल्य—७ रुपये ५० पैसे; (प्रकाशन वर्ष १९६५)।

प्रस्तुत पुस्तक में महादेवी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विषय में १८ विद्वान-मनीषियों के आलोचनात्मक निबन्ध संग्रहीत हैं। इन निबन्धों के माध्यम से हमें महादेवीजी के सम्पूर्ण साहित्य का आलोचनात्मक परिचय मिल जाता है।

प्रथम निबन्ध महाकवि सुमित्रानन्दन पंत का है जिसमें उन्होंने 'महादेवी के काव्य' की विवेचना की है। पुस्तक के दूसरे निबन्ध 'काव्य-कला' की रचना स्वयं कवयित्री महादेवी वर्मा ने की है। तीसरा निबन्ध स्वयं सम्पादक महोदय का है जिसमें उन्होंने महादेवी के सम्पूर्ण साहित्य का सर्वेक्षण प्रस्तुत किया है। सम्पादक ने अपने लेख के प्रारम्भ में ही लिखा है कि, "छायावादी कवियों में महादेवी का विशिष्ट स्थान है। उन्होंने छायावादी काव्य के भावपक्ष तथा कलापक्ष को विकसित किया है।" आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ने महादेवी का काव्य-व्यक्तित्व शीर्षक से उनकी काव्य-कृति 'यामा' की विशद आलोचना प्रस्तुत की है तो डा० नगेन्द्र ने 'दीपशिखा' पर चर्चा की है। महादेवी के काव्य पर पुस्तक में विश्वम्भर 'मानव', रामरत्न भटनागर, कमला कान्त पाठक, विजयेन्द्र स्नातक, जयनाथ नलिन, आनन्द प्रकाश दीक्षित, कुमार विमल एवं डा० पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' के महत्वपूर्ण निबन्ध संकलित हैं।

पुस्तक में महादेवी के काव्य के साथ-साथ उनके गद्य साहित्य पर भी निबन्ध संग्रहीत हैं। गोपाल कृष्ण कौल का लेख, महादेवी के रेखाचित्र, तथा आशा गुप्ता का निबन्ध गद्य गरिमा में महादेवी जी के गद्य की विशद आलोचना प्रस्तुत की गई है।

पुस्तक के दो अन्य निबन्ध स्वप्न-संयोग : एक मनोविश्लेषण (केवल धीर) तथा पीड़ा में प्रेम तत्व (मधु-भारती) महादेवी के भावपक्ष की ओर विशेष प्रभाव डालते हैं। सम्पादक ने महादेवी के सम्बन्ध में जो अमूल्य सामग्री इधर-उधर पृथक्-पृथक् रूपों में पड़ी थी, को संग्रहीत कर एक स्थान पर एकत्रित कर दिया है। प्रस्तुत पुस्तक से महादेवी के सम्बन्ध में अध्ययन करने वाले छात्रों एवं साहित्यिकों को विशेष सहायता प्राप्त होगी ऐसा हमारा विश्वास है।

●

नेहरूजी का महाप्रस्थान

लेखक—रघुनाथसिंह, प्रकाशक—नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली; मूल्य—१० रुपये (प्रकाशन वर्ष सितम्बर १९६५)।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक भारतीय संसदीय कांग्रेस दल के मन्त्री हैं और उनका स्वर्गीय नेहरू से बड़ा ही समीप का सम्बन्ध रहा है। लेखक की इस पुस्तक की सामग्री 'मासिक तर्पण' लेखमाला के नाम से 'दैनिक हिन्दुस्तान' नई दिल्ली में निरन्तर एक वर्ष तक प्रकाशित होती रही है।

प्रस्तुत पुस्तक में पंडित जी की अंतिम बीमारी के आक्रमण काल से उनके मूक हो जाने तथा प्रयाग एवं भारतभूमि में भस्म-विसर्जन तक की घटनाओं को दिया गया है। 'वे' शीर्षक के अन्तर्गत लेखक ने महामना नेहरू के व्यक्तित्व पर बड़े ही मार्मिक शब्दों में प्रकाश डाला है। 'मर्माहत संसद' का वर्णन इतना सजीव है कि उसको पढ़कर बरबस ही नेत्र छलक पड़ते हैं। 'आकुल जनार्णव' शीर्षक में नेहरू और जनता का जो भावविभोर सम्बन्ध रहा है, विशेषकर दिल्लीवासियों का, उसकी झलक मिलती है। पुस्तक में २३ अध्याय हैं; किसको कितने क्रमांक दिये जायं यह समझ में नहीं आता क्योंकि प्रत्येक एक दूसरे से कसौटी पर खरे उतरते हैं।

'विश्व की वेदना' अध्याय पुस्तक की अमूल्य सामग्री है

जिसमें महामना के प्रति विश्व की सम्वेदनाएँ एकत्रित की गई हैं। पुस्तक की भाषा सरस, सरल एवं प्रवाहमयी होने के साथ-साथ सभी के लिए ग्राह्य है।

मीडिया

लेखक—विराज; प्रकाशक—साहित्य मन्दिर, कमलानगर दिल्ली ७; मूल्य दो रुपये; (प्रकाशन वर्ष दिसम्बर १९६४)।

लेखक ने इस पुस्तक की रचना प्रसिद्ध यूनानी नाटक मीडिया के आधार पर एक कथा के रूप में की है। इसी कारण इसको उन्होंने नाटकोपन्यास शीर्षक दिया है। मौलिक पुस्तक में मीडिया के चरित्र के दोनों ही रूपों का चित्रण हुआ है जिसमें निन्दा भी है और प्रशंसा भी। विराज जी के शब्दों में, "मीडिया की अदम्य तेजस्विता और शठ के प्रति क्षमाहीन शठता ऐसी गौरवपूर्ण लगी कि उसके प्रति मन में आदर ही उत्पन्न हुआ।"

लेखक ने इस उपन्यास में अनेक साहसिक घटनाओं को संकलित किया है जिसमें शूरता, वीरता एवं बलिदान की भावना भरी हुई है। वर्णन में कुछ चमत्कारी घटनाएं बड़ी ही सजीव हैं जैसे दोनों चट्टानों का आपस में टकराना तथा चिड़िया की पूंछ के एक छोटे से पंख के कारण दोनों चट्टानों का यथास्थान पहुँच जाना। पुस्तक में मीडिया के जादू, चमत्कार एवं साहस के साथ बलिदान, प्रेम और क्रूरता की अनेक घटनाएँ हैं जो बड़ी ही रोचक हैं।

पुस्तक की भाषा किशोरावस्था के छात्र-छात्राओं के लिए है जो रोचक है।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के आय-व्यय का वार्षिक विवरण

चिट्ठा (३१-३-६५)

देनदारियाँ			लेनदारियाँ	
लेनदार		५०४०.२६	देनदार	५०६०.७०
सेमीनार खाता			**बैंक में जमा :**	
पिछले वर्ष का शेष		१५२७.८१	पंजाब नेशनल बैंक दिल्ली	२४०४.२९
ग्राहकों से अग्रिम			इलाहाबाद बैंक वाराणसी	२४६.६१
एजूकेशनल पुस्तकों की सूची छापने के वास्ते	२५४.७५		नकद	८.५३
विज्ञापनों के वास्ते	२१०.००			७७२०.१३
		४६४.७५		
सामान्य कोश				
पिछले वर्ष के अनुसार शेष	३७९६.४३			
वर्ष में प्राप्त दान	२१५४.००			
	५९५०.४३			
इस वर्ष का घाटा	५२६३.१२			
		६८७.३१		
		७७२०.१३		

आय-व्यय लेखा (३१-३-६५)

			आय		
कार्यालय-व्यय					
वेतन	१५५१.५०		सदस्यता शुल्क		१५९९.००
डाक व्यय	२४८.९६		हिन्दी प्रकाशक चंदा	१९५.००	
स्टेशनरी	४६८.०८		विज्ञापन	१४४९३.१०	
यातायात	३२.१०				१४६८८.१०
विविध व्यय	१८६.५३		संघ प्रकाशन बिक्री		३.००
आडिट फी	१००.००		सहायता के रूप में		
मनोरंजन व्यय	६५.७६		राष्ट्रीय पुस्तक समारोह (१९६४-६५) के वास्ते एजूकेशन डिपार्टमेन्ट से प्राप्त		२७९०.००
		२६५२.९३	घाटा :		
हिन्दी प्रकाशक के प्रकाशन सम्बन्धी व्यय		१३९९५.३९	सामान्य कोश से पूरा किया गया		५२६३.१२
राष्ट्रीय पुस्तक समारोह (१९६४-६५) नकद व्यय		७६९४.९०			
		२४३४३.२२			२४३४३.२२

आडिटर की रिपोर्ट

प्राप्त पुस्तकों और दी गई रचना के आधार पर हिसाब सही पाया।

२१, लक्ष्मी इंश्योरेंस भवन,
आसफअली रोड, नई दिल्ली
१२-१०-६५

एम. पाल एण्ड कम्पनी
चार्टर्ड एकाउन्टेंट्स

★ दो खण्डों में एक साथ प्राप्य ★ कपड़े की पक्की तथा आकर्षक जिल्द ★ बहुरंगा आवरण ★ बड़ा आकार

★ पृष्ठ संख्या : १३५०



विमल मित्र

का नवीन श्रेष्ठतम उपन्यास

खरीदी कौड़ियों के मोल

बंगाल सरकार द्वारा पाँच हज़ार रुपए के 'रवीन्द्र पुरस्कार' से सम्मानित

मूल्य : दोनों खण्ड रु० ४२.५०

इस उपन्यास में प्रथम विश्व महायुद्ध से लेकर भारत की आजादी तक के सम्पूर्ण भारतीय जीवन की प्रतिच्छवि अंकित की गई है

•

इस उपन्यास के बंगला भाषा में केवल तीन वर्ष के भीतर आठ संस्करण बिक चुके हैं

•

यह उपन्यास प्रत्येक संस्था तथा पुस्तकालय की शोभा में श्रीवृद्धि करेगा

•

पुस्तक-विक्रेताओं के लिए विशेष सुविधाएँ

आत्माराम एण्ड संस

पोस्ट बाक्स–१४२९, काश्मीरी गेट, दिल्ली—६

सूचना सार

जवानों के मनोरंजनार्थ उपयुक्त साहित्य भी इन संस्थाओं की ओर से भेंट-स्वरूप भेजा जा रहा है।

पुस्तक बैंक की स्थापना

उच्च तथा तकनीकी शिक्षा पाने वाले छात्रों की सहायता के लिए असम राज्य के समाज-कल्याण विभाग में अन्य सामाजिक संस्थाओं की सहायता से एक 'पुस्तक बैंक' की स्थापना करने का निश्चय किया गया है।

समाज-कल्याण विभाग के एक प्रतिनिधि-मंडल ने हाल ही में मैसूर तथा बंगलौर का दौरा किया था और वहाँ 'बुक प्रोजेक्ट' का अध्ययन करके उक्त योजना को यहाँ भी लागू करने का सुझाव दिया था।

'सुरक्षा-कार्यों में नागरिकों का योग'

पुस्तिका वितरित

दिल्ली प्रशासन के जनसम्पर्क विभाग ने एक पुस्तिका 'सुरक्षा-कार्यों में नागरिकों का योग' जनसाधारण में वितरित की है। ये पुस्तिकाएँ जनता में निःशुल्क रूप से वितरित करने के लिए ५०,००० हिन्दी में तथा २५,००० प्रतियाँ उर्दू में प्रकाशित की गई हैं।

सुरक्षा-कोष में योग

हिन्दी पुस्तकों के प्रमुख प्रकाशक राजपाल एण्ड संज़ तथा उनसे सम्बद्ध हिन्द पाकेट बुक्स, प्राइवेट लि०, शिक्षा भारती, और शिक्षा भारती प्रेस आदि संस्थाओं के समस्त कर्मचारियों ने सम्मिलित रूप से अपना एक दिन का वेतन कुल १५०० रुपये 'राष्ट्रीय रक्षा-कोष' के लिए रक्षामन्त्री श्री यशवंतराव चह्वाण को समर्पित किया है और भविष्य में भी समय-समय पर जवानों के लिए रक्षा-कोष में दान देते रहने का दृढ़ संकल्प किया है।

उपरोक्त संस्थाओं के प्रायः सभी कर्मचारियों ने घायल जवानों के लिए अपना-अपना रक्त भी स्वेच्छापूर्वक दान में देने का निश्चय किया है।

प्रादेशिक साहित्य का नागरी लिपि में प्रकाशन

नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ने विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं की पुस्तकों का हिन्दी लिपि में प्रकाशन करने का निश्चय किया है। सभा इस कार्य में अन्य संस्थाओं का सहयोग प्राप्त कर अपने केन्द्र मद्रास, दिल्ली एवं कलकत्ता में खोल रही है। सभा को अपनी इस योजना में श्री राजगोपालाचार्य, कन्हैयालाल मुंशी एवं श्री आर० आर० दिवाकर का सहयोग प्राप्त हो चुका है।

पुस्तकों के आयात के लिए समिति

केन्द्रीय सरकार के उद्योग मंत्री श्री मनुभाई शाह ने बताया कि १९६५-६६ के लिए पुस्तक आयात नीति के सम्बन्ध में एक उपसमिति की नियुक्ति की गई है। इस समिति के अध्यक्ष श्री गुणदेविया हैं। समिति की शिफारिश पर सरकार यदि आवश्यक समझेगी तो पुनः विचार करेगी।

गुजराती शब्दकोष

गुजरात सरकार ने प्रशासन में गुजराती भाषा को पर्याप्त स्थान देने के बाद दैनिक कार्य में उपयोग के लिए गुजराती शब्दों का एक शब्दकोष तैयार किया है, जिसमें ४५ सौ गुजराती शब्द दिये गये हैं। इस शब्दकोष में कई अंग्रेजी शब्द ऐसे हैं, जो जनता में वर्षों से काफी प्रचलित हैं।

गुजरात सरकार के भाषा संचालन तंत्र ने गुजराती टाइपराइटर का की-बोर्ड भी निश्चित कर लिया है। शब्द-कोष तैयार करने के लिए गांधीवादी विचारक श्री मगन भाई देसाई की अध्यक्षता में गुजरात सरकार ने एक समिति नियुक्त की थी।

पुस्तक-विक्रय में नया प्रयोग

इटली के एक प्रकाशक ने अपने प्रकाशनों की बिक्री बढ़ाने में एक कार्ड से जितना काम निकाला है, उतना

१५०) के नकद आर्डर पर १० प्रतिशत अतिरिक्त कमीशन तथा F. O. R. की सुविधा

हमारे कुछ श्रेष्ठ प्रकाशन

आलोचना

१. मानस दर्शन —डा० श्रीकृष्ण लाल ४.००
२. दिनकर के काव्य —लालधर त्रिपाठी 'प्रवासी' ८.००
३. रसखान —देवेन्द्र प्रताप उपाध्याय ५.००
४. मानस का कथा शिल्प —डा० श्रीधर सिंह ४.५०
५. कवि समीक्षा —श्यामलाकान्त वर्मा ४.५०
६. लेखक समीक्षा " " ४.५०
७. कुरुक्षेत्र एक अध्ययन —'प्रवासी' ०.७५

हास्य-व्यंग्य

१. लफ्टंट पिगसन की डायरी —बेढब बनारसी ४.००
२. जब मैं मर गया था " २.५०
३. टनाटन " २.००
४. महत्व के गुमनाम पत्र " १.५०
५. महाकवि चच्चा —स्व० अन्नपूर्णानन्द २.५०
६. मंगल मोद " २.५०
७. मेरी हजामत " २.५०
८. मगन रहु चोला " २.५०
९. एकलौता जूता —जी. पी. श्रीवास्तव २.५०
१०. कलम की कमाई —कौतुक बनारसी २.५०
११. कलम कुल्हाड़ा " २.५०
१२. समाज के समोसे —रामावतार सिंह १.५०
१३. छलांग —शौकत थानवी २.००
१४. मिस्टर उनसठ " ३.००
१५. झलक —शौकत थानवी २.२५
१६. मुर्गे —आनन्द प्रकाश जैन २.००

उपन्यास

१. बेकसी का मजार —प्रताप नारायण श्रीवास्तव १३.००
२. चेतसिंह का सपना (दो भाग) —गिरिजा शंकर पाण्डेय ८.५०
३. विदिशा की देवी —जगदीश कुमार 'निर्मल' ५.००
४. नारी तुम केवल श्रद्धा हो —दीनानाथ 'शरण' ३.००
५. कीर्ति मन्दिर —चन्द्रकांत काकोडकर ३.५०
६. मुक्त नारी " २.५०
७. जमींदार की बेटी —श्री शि० चौगुले ३.५०
८. क्रांति काल —व० ह० पिटके ३.५०
९. शाही कमरबन्द —बाबूराव अनीलकर ३.००
१०. मुझे जला डालो —'पागल' ३.७५
११. रेशमी साड़ी —'नादान' २.५०

विविध

१. जयभारत (काव्य) —मुख्तार सिंह 'दीक्षित' ४.००
२. सन्तुलित गोपालन —गोपाल कृष्ण मल्लिक ५.००
—मू० ले० स्व० राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद
३. गाँव की ओर (नाटक) —'लमगोड़ा' २.००
४. प्रणय पल " २.५०
बाल-साहित्य के १२ सेट —प्रत्येक का मूल्य १.००

नोट—कमीशन तथा वेतन पर कार्य करने वाले एजेन्ट सम्पर्क स्थापित करें।

आनन्द पुस्तक भवन

कौसानगंज, वाराणसी-१

शायद सैकड़ों एजेण्ट रखकर तथा हज़ारों रुपयों के विज्ञापन देकर भी नहीं निकल सकता था।

यह प्रकाशक अपनी किताबों में एक छपा कार्ड डाल देता है जिस पर यह लिखा रहता है : 'यदि आपको यह पुस्तक पसन्द न आये तो कृपया किसी और को दे दें। रुचियाँ भिन्न होती हैं। हो सकता है, कोई दूसरा व्यक्ति इसे पसन्द करे, पर यदि आपको यह पुस्तक रुचिकर लगे तो इसे किसी को पढ़ने के लिए मत दीजिए। ऐसा करके आप अपने प्रिय लेखक के प्रति अन्याय करेंगे। दूसरों को बता भर दें, वे स्वयं अपनी प्रतियाँ ख़रीद लेंगे।'

एक लाख रुपये का साहित्यिक पुरस्कार

भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी द्वारा तृतीय पुरस्कार (१९६७) के प्रस्ताव-पत्र आमन्त्रित किये जाने वाले हैं। नये प्रस्ताव-पत्र तथा अद्यतन संशोधित-समन्वित योजना पुस्तक छप रही है। इस पुरस्कार के लिए सन् (१९३५-१९६०) में प्रकाशित साहित्य पर विचार किया जायेगा।

नेशनल बुक फेयर

नेशनल बुक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में इस वर्ष नेशनल बुक फेयर दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह एवं जनवरी के प्रथम सप्ताह तक बम्बई में होगा। इस मेले में समस्त भारतीय भाषाओं के प्रकाशनों की एक प्रदर्शनी आयोजित की जायेगी। जिसमें १९६४ तथा १९६५ का प्रकाशित साहित्य प्रदर्शित किया जायेगा।

इस मेले में प्रकाशक अपने-अपने स्टॉल भी पृथक् रूप से लगा सकते हैं। जिनका किराया ४०० रुपये तथा २५० रुपये है। इसी अवसर पर पुस्तक-विक्रेताओं एवं प्रकाशकों का एक सम्मेलन भी होगा जिसमें पुस्तकों की बिक्री, कापीराइट की खरीद, अनुवादों की खरीद, एवं अन्य समस्याओं पर विचार होगा।

प्रदर्शनी के लिए पुस्तकें भेजने की अंतिम तिथि १५-१०-६५ है। इसके लिए अन्य जानकारी नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, २३ निजामुद्दीन ईस्ट, नई दिल्ली से प्राप्त की जा सकती है।

११वीं नवसाक्षर प्रतियोगिता का परिणाम घोषित

केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय द्वारा आयोजित ११वीं नवसाक्षर पुस्तक-प्रतियोगिता में श्री जयप्रकाश भारती, श्री राधेश्याम शर्मा प्रगल्भ, श्री शिवकुमार गोयल, श्री श्रीकृष्ण, मेरठ, श्री सतीश, श्री व्यथित हृदय, डा० इन्द्रसेन एवं श्री विश्वम्भर प्रसाद आदि लेखक पुरस्कृत हुए हैं। पुरस्कार-प्राप्त कृतियों के नाम हैं :—अंधेरे का शत्रु प्रकाश, हिमालय के प्रहरी, कस्तूरबा, सरदार भगतसिंह, पत्थर बोलते हैं, जिन्दगी की कदरें, हिन्दी साहित्य के सितारे, आबादी रोको बरबादी रोको, हीरे-मोती, भोजन क्यों, क्या और कितना आदि हैं।

नया केन्द्रीय संस्कृत मंडल

भारत सरकार शिक्षा मन्त्रालय ने गत सप्ताह 'केन्द्रीय संस्कृत मण्डल' का पुनर्गठन किया है। इस बार मण्डल के अध्यक्ष-पद पर जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल महाराज कर्णसिंह को नियुक्त किया गया है।

केन्द्रीय संस्कृत मण्डल का गठन छह वर्ष पूर्व संस्कृत आयोग की सलाह पर आरंभ किया गया था। इस संगठन का कार्य सरकार को संस्कृत शिक्षा की उन्नति, शोध, छात्रवृत्तियाँ और संस्कृत पाठशालाओं व शिक्षण-संस्थाओं को सहायता आदि की दिशा में सहायता देना रहा है।

संस्कृत सलाहकार बोर्ड के सदस्यों की नामावली निम्नानुसार है :—

सर्वश्री डा. कर्णसिंह, राज्यपाल जम्मू-कश्मीर, अध्यक्ष, श्री सूरतमणि त्रिपाठी, उपकुलपति, वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी; श्री श्रीधर वासुदेव सोहोनी, उपकुलपति, दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगा; श्री पी.एम., मोदी विश्वविद्यालय प्राध्यापक, बड़ौदा, श्री ता. ता. चारी, संपादक, उद्यानपत्रिका तिरुपति; डा. गौरीनाथ शास्त्री, प्रिंसिपल गवर्नमेंट संस्कृत कालेज, कलकत्ता; श्री के. माधवकृष्ण शर्मा, डाइरेक्टर संस्कृत एजूकेशन, राजस्थान; डा. राघवन, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, मद्रास विश्वविद्यालय, मद्रास; डा. रोजारिया, संयुक्त शिक्षा सलाहकार, शिक्षा विभाग, भारत सरकार; श्री के. सच्चिदानन्दन, वित्त सलाहकार, भारत सरकार।

आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी—उपकुलपति के पद पर

विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के उपकुलपति पद के लिए हिन्दी साहित्य के प्रखर विद्वान् एवं सागर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी की ५ वर्ष के लिए नियुक्ति की गई है।

आचार्यजी के आगमन से हिन्दी साहित्य की इस विश्वविद्यालय द्वारा प्रगति होने की आशा प्रतीत होती है।

सेन्ट्रल बोर्ड आफ हायर एजूकेशन केन्द्रीय सरकार से सम्बन्धित नहीं

नई दिल्ली के एक सेन्ट्रल बोर्ड आफ़ हायर एजूकेशन और इसकी परीक्षाओं के बारे में केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय से बहुत पूछताछ की जा रही है। जन-साधारण को सूचना दी जाती है कि २७ सितम्बर, १९५६ को 'दी सेन्ट्रल बोर्ड आफ हायर एजूकेशन' के नाम से एक निजी संस्था की रजिस्ट्री दिल्ली में कराई गई थी। यह सरकारी मान्यता-प्राप्त संस्था नहीं है। पहले यह बोर्ड उत्तमनगर, नई दिल्ली में था और अब ५-बी/३६, तिलक-नगर, नई दिल्ली-१८ में चला गया है। इसका दिल्ली सर-कार के शिक्षा निदेशक या केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय से कोई सम्बन्ध नहीं है।

उक्त बोर्ड ने आगरा, एल्लोर (आंध्र प्रदेश), बिहार, कानपुर, इन्दौर, जयपुर, पश्चिम बंगाल आदि में भी शाखाएँ खोली हैं।

जनता को भली भांति समझ लेना चाहिये कि यह बोर्ड और इसकी परीक्षाएँ भारत सरकार द्वारा मान्य नहीं हैं। इस बोर्ड को 'सेन्ट्रल बोर्ड आफ़ सेकेण्डरी एजूकेशन' २७-बी, इन्द्रप्रस्थ मार्ग, नई दिल्ली वाला बोर्ड समझने की भूल नहीं करनी चाहिए, जो सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है और हायर सेकेण्डरी परीक्षाएँ लेता है।

नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

विचार एवं सुझाव

इस मास लोकसभा एवं राज्यसभा में नेहरू विश्व-विद्यालय की स्थापना के सम्बन्ध में विचार-विमर्श हुआ है। कुछ सदस्यों ने कहा कि इस विद्यालय के साथ श्री नेहरू का नाम है अतः यह विश्वविद्यालय सामान्य विश्वविद्यालयों की भाँति न होकर श्री नेहरू के आदर्शों के समान है।

इस विश्वविद्यालय के प्राध्यापक, एवं छात्र दोनों ही विशेष योग्यता प्राप्त वाले होने चाहिए। एक सदस्य ने इस विश्वविद्यालय के उपकुलपति पद के लिए आचार्य विनोबा भावे अथवा डा० जयप्रकाश नारायण का नाम प्रस्तावित किया।

शिक्षा उपमन्त्री श्री भक्तदर्शन ने बताया कि इस विश्वविद्यालय में विज्ञान एवं टेक्नालोजी की अपूर्व व्यवस्था होगी। एक सदस्य ने सुझाव दिया कि इस विश्व-विद्यालय की शिक्षा का माध्यम हिन्दी होना चाहिए।

पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

इस विश्वविद्यालय ने अगले वर्ष से दर्शनशास्त्र, भूगोल, सार्वजनिक प्रकाशन, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, एवं गृह विज्ञान की बी० ए० तथा एम० ए० में पंजाबी भाषा के माध्यम से शिक्षा देना स्वीकार किया है।

अश्लील साहित्य की रोकथाम

हिन्दी साहित्य के प्रख्यात कथाकार एवं दार्शनिक जैनेन्द्रकुमार जैन की अध्यक्षता में सर्वोदय साहित्य मंडल की एक गोष्ठी हुई। इस गोष्ठी में डा० युद्धवीरसिंह, धर्मदेव शास्त्री, श्री केदारनाथ, एवं राजबहादुरसिंह ने इस बात पर बल दिया कि आज अश्लील साहित्य का जो प्रचार एवं मनोवृत्ति तेज़ी के साथ बढ़ रही है, उसका रोकना नितान्त आवश्यक है। इस कार्य में सरकार विधि मन्त्रालय के सहयोग से कोई ऐसा पग उठाये जिससे इस प्रकार के प्रकाशन पर एकदम कार्यवाही की जा सके।

वर्तमान-शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन ज़रूरी

प्रयाग विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं की एक गोष्ठी में आचार्य विनोबा भावे ने कहा कि शिक्षा-प्रणाली में परिवर्तन निहायत ज़रूरी है। अंग्रेज़ी केवल उसी को पढ़ाई जानी चाहिए जिसकी अंग्रेज़ी पढ़ने में रुचि हो। अंग्रेज़ी सीखने में विद्यार्थी का जितना समय लगता है उतने श्रम में भारतीय विद्यार्थी भारत की चौदह प्रादेशिक भाषाएँ सीख सकता है।

सभी भाषाओं की लिपि नागरी हो

प्रयाग में कुम्भ मेले के अवसर पर आयोजित सर्व भाषा सम्मेलन में भारत के प्रमुख भाषा-शास्त्री श्री मध्वणि शम्भु भट्ट ने कहा—सभी भारतीय भाषाओं के ५० प्रति शब्द समान हैं और उनकी वर्णमाला भी समान है। प्रादेशिक भाषाओं की लिपि भी देवनागरी के समान है। यदि समस्त प्रादेशिक भाषाओं की लिपि देवनागरी हो जाए तो प्रादेशिक भाषाएँ एक-दूसरे के निकट आकर अधिक उन्नतिशाली हो सकेंगी।

प्रादेशिक भाषाओं के लिए छः करोड़ रुपये

केन्द्रीय सरकार के सांस्कृतिक मन्त्रालय के राज्य मन्त्री श्री हाजरनवीस ने लोकसभा में बताया कि चौथी योजना में भारत की प्रादेशिक भाषाओं के विकास के लिए ६ करोड़ की राशि निर्धारित करने का प्रस्ताव है।

'नवीन' विशेष कवि स्वीकृत

सागर विश्वविद्यालय ने एम. ए. हिन्दी में विशेष कवि के अध्ययन के रूप में स्व० बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' एवं डा० माखनलाल चतुर्वेदी को अपने पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर लिया है। सागर विश्वविद्यालय का यह कदम सराहनीय है क्योंकि सम्पूर्ण भारतवर्ष में प्रथम बार इस विश्वविद्यालय ने यह पग उठाया है।

पुस्तक-प्रदर्शनी

पश्चिमी रेलवे, मण्डल कार्यालय मालरोड, अजमेर ने रेलवे विसेट इन्स्टीच्यूट अजमेर में ३०अक्तूबर सन् १९६५ से २ नवम्बर सन् १९६५ तक हिन्दी पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं की प्रदर्शनी का आयोजन किया है। राजस्थान पुस्तक व्यवसायी संघ ने इस प्रदर्शनी के लिए पूर्ण सहयोग दिया है। इस अवसर पर मण्डल के संयोजकों ने प्रकाशकों से अनुरोध किया है कि वे अपने स्टाल लगायें। स्टाल के लिए स्थान देने की व्यवस्था संयोजकों ने की है।

× × ×

भारत १९६५ प्रदर्शनी के अवसर पर भारत की प्रमुख पुस्तक व्यवसायी संस्था ए० एच० व्हीलर ने इलाहाबाद में ३० दिसम्बर सन् १९६५ से १२ फरवरी १९६६ तक एक विश्व पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया है जिसमें सन् १९६३ तथा उसके पश्चात् का साहित्य प्रकाशित किया जायेगा। इस विषय में अन्य जानकारी ए० एच० व्हीलर एण्ड कं० (प्रा०) लि० १५ एलिगन रोड इलाहाबाद से प्राप्त की जा सकती है।

शब्दपीठ : नये पुस्तक-विक्रेता

परिमल प्रकाशन इलाहाबाद ने कर्नल गंज, इलाहाबाद में (आनन्द भवन के सामने) 'शब्दपीठ' नाम से पुस्तक विक्रय संस्थान का प्रारम्भ किया है जिसमें साहित्यिक एवं पाठ्य-पुस्तकों का विक्रय होगा। प्रकाशक बन्धु अपने सूची-पत्र एवं व्यापारिक नियम आदि इस नवीन संस्था को भेजने की कृपा करें।

प्रकाशक बन्धु अपने प्रकाशनों के सूची-पत्र भेजें

प्रकाशक बन्धुओं से हमारा निवेदन है कि वे अपने नवीनतम सूची-पत्र की एक प्रति राजस्थान पुस्तक व्यवसायी संघ के चौड़ा रास्ता, जयपुर स्थित केन्द्रीय कार्यालय को भिजवाने की कृपा करें। सूची-पत्र कार्यालय में उपलब्ध रहने पर राजस्थान के पुस्तक व्यवसायी उनसे बाहर के प्रकाशनों के बारे में आवश्यक जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। हमें आशा है, इससे दोनों पक्षों को सुविधा के साथ लाभ भी होगा।

चम्पालाल रांका
मंत्री, राजस्थान पुस्तक व्य० संघ, जयपुर

जवानों को २१२५) रु० की पुस्तकों का उपहार

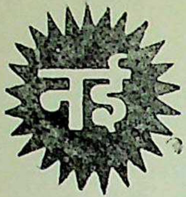
राजस्थान पुस्तक व्यवसायी संघ ने हाल की लड़ाई में मोर्चों पर आहत हुए बहादुर भारतीय जवानों के लिए, जयपुर के पुस्तक व्यवसायियों की ओर से २१२५) रु० (इक्कीस सौ पच्चीस रुपये) की पुस्तकों का उपहार भेजा है। जयपुर से ४० पुस्तक व्यवसायियों द्वारा सैनिक कल्याण कोष के लिए भेंट की गई ये १११० पुस्तकें केन्द्रीय नागरिक परिषद् की अध्यक्षा, श्रीमती इन्दिरा गांधी को ३० सितम्बर को भिजवा दी गई हैं।

आचार संहिता

राजस्थान पुस्तक व्यवसायी संघ ने पुस्तक व्यवसायियों में एकरूपता लाने, पुस्तक व्यवसाय को उन्नत करने तथा व्यवसाय में लगे सभी बन्धुओं को व्यावसायिक आचरण की पवित्रता के लिए एक आचार-संहिता बनाने का काम हाथ में लिया है। आचार-संहिता की प्रस्तावित रूपरेखा पर सदस्यों के विचार आमंत्रित किये गए हैं।

शिक्षा प्रसार कार्यालय, इलाहाबाद

शिक्षा प्रसार कार्यालय, इलाहाबाद में पुस्तकें सबमिट करने की अन्तिम तिथि ३० अक्तूबर सन् १९६५ है। प्रकाशक एवं पुस्तक-विक्रेताओं को चाहिए कि वे जिन प्रकाशनों को इस के लिए भेजना चाहें वे अपने प्रकाशनों की ६-६ प्रतियाँ शिक्षा प्रसार अधिकारी, महात्मा गांधी रोड, इलाहाबाद के पते पर भेज दें।



हिन्द पॉकेट बुक्स

- **तब और अब** (उपन्यास) — गुरुदत्त २.००
  विविध घटनाओं, अनेकानेक परिस्थितियों और पचीसों पात्रों के माध्यम से प्रौढ़ कलाकार ने हमारे समाज का एक यथार्थ किन्तु परिपूर्ण चित्र इस उपन्यास में प्रस्तुत किया है। (पृष्ठ लगभग २५०)
- **एक औरत की ज़िन्दगी** (उपन्यास) — मोपासां २.००
  यह विश्व-विख्यात फ्रांसीसी लेखक मोपासां का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। एक हृदय-द्रावक कहानी, जिसमें लेखक ने यह दिखाने की चेष्टा की है कि पुरुषों के समाज में निरीह और अबला नारी को कितने अन्यायों, दुःखों और वेदनाओं का शिकार होना पड़ता है। (पृष्ठ लगभग २५०)
- **जर्मनी : देश और निवासी** (सचित्र) — उदयनारायण तिवारी २.००
  साहित्य, संगीत, कला, विज्ञान की अनेक विश्वविख्यात प्रतिभाओं के देश पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी का अत्यन्त रोचक और निष्पक्ष परिचय प्रस्तुत किया है युवक पत्रकार उदयनारायण तिवारी ने, जो लगभग दो वर्ष तक बर्लिन में रह चुके हैं।
- **फिल्मी फुलझड़ियां** (हास्य व्यंग्य) — कृश्न चन्दर १.००
  इस पुस्तक में सुप्रसिद्ध लेखक श्री कृश्न चन्दर ने अ, आ से लेकर ज्ञ तक के अक्षरों के क्रम से फ़िल्मी दुनिया के लतीफ़ों के नायाब नमूने पेश किए हैं। ऐसे दिलचस्प लतीफ़ों की यह पहली पुस्तक है।
- **मैली चांदनी** (उपन्यास) — गुलशन नन्दा १.००
  हिन्दी के लोकप्रिय उपन्यासकार गुलशन नन्दा का चिरप्रतीक्षित नवीनतम उपन्यास—पैसे और प्रेम की पृष्ठभूमि में दो युवतियों और एक पुरुष का अनोखा त्रिकोण।
- **जाड़े की धूप** (उपन्यास) — रजनी पनिकर १.००
  श्रीमती रजनी पनिकर ने अपने इस उपन्यास में दो प्रेमी हृदयों के माध्यम से आज के समाज का यथार्थ चित्रण किया है।
- **अंतिम परिचय** (उपन्यास) — शरत्चन्द्र १.००
  'अन्तिम परिचय' महान् उपन्यासकार तथा नारी हृदय के चतुर चितेरे शरत्चन्द्र के अनन्य उपन्यासों में से एक है। त्यागिनी का जैसा विवश किन्तु मार्मिक चित्र इस उपन्यास में अंकित हुआ है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।
- **तेलुगू की श्रेष्ठ कहानियाँ** — सं० बालशौरि रेड्डी १.००
  बालशौरि रेड्डी द्वारा अनूदित एवं सम्पादित श्रेष्ठ तेलुगू कहानियों का संकलन।
- **मौत की मांद में** (शिकार-साहित्य) — महन्त धनराजपुरी १.००
  खूंखार शेरों के शिकार की इन सच्ची कहानियों के लेखक हैं शिकार-साहित्य के प्रसिद्ध लेखक महन्त धनराजपुरी, जिनकी राइफ़ल और कलम की खूबियों को देखकर आप दंग रह जाएंगे।
- **काका के कारतूस** (कविता) — काका हाथरसी १.००
  हिन्दी साहित्य के हास्य कवियों में काका ऐसे प्रसिद्ध हो गए हैं, जैसे पादरियों में 'पोप' और साबुनों में पियरसोप। इन्हीं काका के कारतूस आपके हाथों में पहुंच रहे हैं।
- **हिन्दी कवयित्रियों के प्रेमगीत** (काव्य) — सं० क्षेमचन्द्र 'सुमन' १.००
  महादेवी वर्मा से लेकर आज तक की ६० कवयित्रियों के प्रेमगीत। इन गीतों में जहां आपको नारी हृदय के अनुराग, विराग, समर्पण और उत्सर्ग की झांकी मिलेगी वहाँ आप मिलन और विछोह, पीड़ा और पुलक का असीम आनन्द भी ले सकेंगे।



हिन्द पाकेट बुक्स प्रा० लि०, जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२

नये प्रकाशन

इन्द्र चन्द्र शास्त्री	लोकतन्त्र का लक्ष्य	नीति	—	नई दिल्ली	सस्ता साहित्य मण्डल	४.००
उपाध्याय, हरिभाऊ	मेरे हृदय देव	संस्मरण	--	नई दिल्ली	सस्ता साहित्य मण्डल	२.५०
कपिल आचार्य	सूरतें और सीरतें	,,	—	मुजफ्फरपुर	बेनीपुरी प्रकाशन	२.२५
कृष्णलाल	चिन्तामणि विवेचन	आलोचना	पु० मु०	दिल्ली	अशोक प्रकाशन	२.५०
खण्डेलवाल, गणपतलाल	साबुन उद्योग	इन्डस्ट्रीयल	—	,,	देहाती पुस्तक भंडार	२.५०
,,	रेडियो शब्दकोष	टैक्नीकल	—	,,	,,	१.२५
गुप्त, गणपतिचन्द्र	हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास	सा०इतिहास	—	चन्डीगढ़	भारतेन्दु भवन	२२.५०
गुप्त, रमेशचन्द्र	गबन-समीक्षा	आलोचना	—	दिल्ली	अशोक प्रकाशन	२.५०
गोविन्द चातक	आका दानी दे पानी	लोककथा	—	नई दिल्ली	सस्ता साहित्य मण्डल	२.५०
गुप्त, कृष्ण	मन्नाडे की तान	फिलमी	—	दिल्ली	देहाती पुस्तक भंडार	१.५०
,,	तलअत महमूद की तान	,,	—	,,	,,	१.५०
,,	किशोर कुमार की तान	,,	—	,,	,,	१.५०
जुखलाल	जैन धर्म का प्राण	धर्म	—	नई दिल्ली	सस्ता साहित्य मंडल	२.००
जैन, यशपाल	पड़ौसी देशों में	यात्रा	—	,,	,, ,,	६.००
त्रिपाठी, रामसागर	मुक्तक काव्य परम्परा और बिहारी	शोध	पु० मु०	दिल्ली	अशोक प्रकाशन	१२.५०
नगेन्द्र (डा०)	कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ	आलोचना	,,	,,	नेशनल पब्लिशिंग हाउस	३.००
नगेन्द्र (डा०)	सियारामशरण गुप्त	,,	,,	,,	,, ,,	७.५०
निर्मोही	चांद उतर आओ धरती पर	काव्य	—	चन्डीगढ़	भारतेन्दु भवन	४.५०
न्यादर सिंह बेचैन	ग्राम सुधार	नाटक	—	दिल्ली	देहाती पुस्तक भंडार	०.७५
,,	भक्त ध्रुव	नाटक	—	,,	,, ,,	१.२५
पुरोहित, इन्द्र कुमार 'नवाब'	एहसासे दर्द	काव्य	—	वाराणसी	भारतीय प्रकाशन मण्डल	२.५०

नये प्रकाशन



१ नेहरूजी का महाप्रस्थान : रघुनाथसिंह

नेहरूजी के अन्तिम क्षणों की मार्मिक कहानी
अनेक दुर्लभ चित्रों सहित । १०.००

२ शतघ्नी : वीरेन्द्र भट्टाचार्य

'धर्मयुग' में धारावाहिक रूप में प्रकाशित
अब पुस्तक रूप में उपलब्ध है । ४.५०

३ वैदिक व्याकरण : डा० रामगोपाल एम०ए०, पी-एच० डी०

देश-विदेश में की गई सभी शोधों के
सार से समन्वित । १५.००

छपकर तैयार हैं :

- सियारामशरण गुप्त : डा० नगेन्द्र ७.५०
- कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ : डा० नगेन्द्र ३.००
- नष्ट नीड़ : उषादेवी मित्रा ५.००
- आदर्श विद्यार्थी : बालकृष्ण एम० ए० १.००



नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली-७

वरेरकर मामा	नाश का विनाश	नाटक	—	नई दिल्ली	सस्ता साहित्य मण्डल	३.००
बिड़ला, घनश्यामदास	कुछ देखा : कुछ सुना	संस्मरण	—	,,	,, ,,	३.००
बिड़ला, घनश्यामदास	जमनालालजी	जीवन-चरित्र पु०मु०		,,	,, ,,	२.००
बेनीपुरी, रामवृक्ष	उड़ते चलो, उड़ते चलो	यात्रा संस्मरण	—	मुजफ्फरपुर	बेनीपुरी प्रकाशन	५.२५
बेनीपुरी, रामवृक्ष	बेनीपुरी बाल ग्रन्थावली भाग १	बाल साहित्य	—	मुजफ्फरपुर	,, ,,	१५.००
भाटी, देशराजसिंह	मुद्राराक्षस	आलोचना	—	दिल्ली	अशोक प्रकाशन	३.००
रघुनाथ प्रसाद	नेहरू और काशी	संस्मरण	—	वाराणसी	भारतीय प्रकाशन मण्डल	१.००
रघुनाथ सिंह	नेहरूजी का महाप्रस्थान	,,	—	दिल्ली	नेशनल पब्लिशिग हाउस	१०.००
राजेन्द्र प्रसाद (डा०)	आत्म-कथा	जीवनचरित्र पु० मु०		नई दिल्ली	सस्ता साहित्य मण्डल	१२.००
रामगोपाल (डा०)	वैदिक व्याकरण	संस्कृत	—	दिल्ली	नेशनल पब्लिशिंग हाउस	१५.००
पं० रतीराम शास्त्री	श्री बापू राष्ट्रीय जन्त्री	ज्योतिष	—	,,	देहाती पुस्तक भण्डार	०.६०
,,	अकबर बीरबल विनोद	कहानियाँ	—	,,	,,	०.५०
लक्ष्मीराम शास्त्री	हमारे संस्कार सूत्र	सांस्कृतिक	—	नई दिल्ली	सस्ता साहित्य मण्डल	२.५०
वर्मा, मुकुट बिहारी	पञ्जाबकेसरी ला० लाजपतराय	जीवनचरित्र	—	,,	,, ,, ,,	१.००
विजय कुमार	साहित्यालोचन	आलोचना	—	दिल्ली	अशोक प्रकाशन	३.००
विराज	मीडिया	नाटक	—	दिल्ली	साहित्य मन्दिर	२.००
विष्णु प्रभाकर	कुछ शब्द : कुछ रेखायें	संस्मरण	—	नई दिल्ली	सस्ता साहित्य मण्डल	३.५०
शर्मा, श्रीनिवास	तुलसीदास जीवन और काव्य	आलोचना	—	दिल्ली	अशोक प्रकाशन	३.५०
,, ,,	रामनरेश त्रिपाठी और उनका स्वप्न	,,	—	,,	,, ,,	२.००
,, ,,	सूरदास और उनका भ्रमरगीत	,,	—	,,	,, ,,	७.००
शेवड़े, अनन्त गोपाल	ज्वालामुखी	उपन्यास	—	नई दिल्ली	सस्ता साहित्य मण्डल	३.५०
सुरेश सिंह	रेंगने वाले जीव	विज्ञान	—	,,	,, ,,	३.००
सतीश डे	कांटा दामन फूल	नाटक	—	दिल्ली	देहाती पुस्तक भंडार	१.५०
,,	हिमालय ने पुकारा	नाटक	—	,,	,, ,, ,,	१.५०

साहित्य खण्ड

कृष्णनारायण प्रसाद	हिन्दी साहित्य युग और धारा	सा० इतिहास	— पटना,	भारती भवन	८.५०
गुरुदत्त	तब और अब	उपन्यास	— दिल्ली,	हिन्द पाकेट बुक्स	१.००
क्षेमचन्द्र सुमन	हिन्दी कवियों के प्रेम-गीत	काव्य	— ”	” ”	१.००
नन्दा, गुलशन	मैली चान्दनी	उपन्यास	— ”	” ”	१.००
पन्निकर, रजनी	जाड़े की धूप	”	— ”	” ”	१.००
महन्त धनराजपुरी	मौत की माँद में	शिकार-साहित्य	— ”	” ”	१.००
मोपासां	एक और जिन्दगी	उपन्यास	— ”	” ”	१.००
रेड्डी बालशौरि	तेलुगु की कहानियां	कहानियाँ	— ”	” ”	१.००
शर्मा आनन्द नारायण	हुकावे-समीक्षा	आलोचना	— पटना	भारती भवन	४.००
शर्मा रामगोपाल 'दिनेश'	अध्ययन और अन्वेषण	आलोचना	— उदयपुर,	उदयपुर विश्वविद्यालय	५.००
” ” ”	बदलती रेखायें	उपन्यास	— जयपुर,	राजस्थान प्रकाशन	२.५०
” ” ”	विश्व ज्योति बापू	काव्य	पु०मु० आगरा,	उमेश प्रकाशन	२.००
” ” ”	सदानीरा	नाटक	— आगरा,	प्रीतम प्रकाशन	२.००
” ” ”	हिन्दी साहित्य का आदर्श इतिहास	सा० इति०	पु०मु० ”	रत्न प्रकाशन मन्दिर	१.५०
शरतचन्द्र	अन्तिम परिचय	उपन्यास	— दिल्ली	हिन्द पाकेट बुक्स	१.००
सिन्हा, अमरनाथ	हिन्दी गद्य शैली और विधाओं का विकास	आलोचना	— पटना	भारती भवन	२.५०

साहित्येतर खण्ड

इकबाल नारायण	हायर सैकेन्ड्री नागरिक शास्त्र	नागरिकता	— आगरा	शिवलाल एण्ड कं०	७.००
कृश्न चन्दर	फिल्मी फुलझड़ियाँ	विविध	— दिल्ली	हिन्द पाकेट बुक्स	१.००
चतुर्भुज, मामोरिया	हायर सैकेन्ड्री भूगोल	भूगोल	— आगरा	शिवलाल एण्ड कं०	७.००
दूबे, सत्यनारायण श्रीवास्तव आशीर्वादीलाल	भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास १-२	इतिहास	— आगरा	शिवलाल एण्ड कं०	१०.००
न्याती जानकीलाल	माध्यमिक भूगोल १-२	भूगोल	— ”	” ”	६.००
शर्मा, गोपीनाथ	भारत का संपूर्ण इतिहास	इतिहास	— ”	” ”	७.००
सारस्वत, एच० सी०	रसायन शास्त्र	रसायन	— ”	” ”	४.००
सेठ, एम० एल०	हायर सैकेन्ड्री वाणिज्य अर्थशास्त्र	अर्थशास्त्र	— ”	” ”	६.००

हिन्दी प्रकाशक के विषय में कुछ सूचनाएँ

१. हिन्दी प्रकाशक प्रत्येक मास की ७ तारीख को प्रकाशित होता है ।

२. आप अपने नये प्रकाशनों की सूचना हिन्दी प्रकाशक को २० तारीख तक भेजने की कृपा करें । २० तारीख के पश्चात् जो भी नये प्रकाशनों की सूचनाएँ आयेंगी उनका उपयोग अगले अंक में हो सकेगा ।

३. हिन्दी प्रकाशक के लिए लेख, सभा-गोष्ठी सम्बन्धी समाचार, आलोचना के लिए जो सामग्री १० तारीख तक प्राप्त हो जायेगी उसका उपयोग उसी अंक में होगा । शेष सामग्री का अवसरानुकूल उपयोग किया जायेगा ।

४. सूचना सार तथा विज्ञापनों के लिए अन्तिम तिथि प्रत्येक मास की २५ तारीख निश्चित है । जब तक हम इन नियमों का पालन नहीं करेंगे, हिन्दी प्रकाशक समय पर नहीं प्रकाशित होगा ।

५. हिन्दी प्रकाशक का वार्षिक शुल्क तीन रुपये है । हिन्दी प्रकाशक के अधिक ग्राहक बनाकर संघ को सहयोग प्रदान करने की कृपा करें ।

हिन्दी प्रकाशक की विज्ञापन दरें

१. प्रथम पृष्ठ (आवरण)	१०० रुपये
२. चतुर्थ ,, ,,	९० ,,
३. द्वितीय, तृतीय ,,	८० ,,
४. साधारण पृष्ठ	६० ,,
५. आधा पृष्ठ	४० ,,
६. चौथाई पृष्ठ	२५ ,,

विशेष सुविधा—

(अ) वर्ष में ६ अंकों के विज्ञापनों के अनुबन्ध पर १५ प्रतिशत छूट प्रदान की जायेगी ।

(आ) वर्ष में १२ अंकों के विज्ञापनों के अनुबन्ध पर २० प्रतिशत छूट प्रदान की जायेगी ।

केवल अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के सदस्यों के लिए

(अ) उपरोक्त साधारण दरों पर १५ प्रतिशत छूट प्रदान की जायेगी ।

(आ) विशेष सुविधाएँ ६ अंकों के अनुबन्ध पर ३० प्रतिशत तथा सम्पूर्ण वर्ष के अनुबन्ध पर ३५ प्रतिशत छूट प्रदान की जायेगी ।

नोट—विज्ञापनों की ये दरें नवम्बर सन् १९६९ से प्रारम्भ होंगी ।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के निमित्त, प्रधानमंत्री कन्हैयालाल मलिक द्वारा सम्पादित, उद्योगशाला प्रेस, किंग्सवे, दिल्ली-९ में मुद्रित एवं २६-ए, चन्द्रलोक जवाहरनगर, दिल्ली से प्रकाशित

M. A. M.Sc.